मित्र संवाद

(केदारनाथ अग्रवाल और
रामविलास शर्मा के पत्रों का संकलन)

सम्पादक
रामविलास शर्मा • अशोक त्रिपाठी

मित्र संवाद

मित्र संवाद

(केदारनाथ अग्रवाल और रामविलास शर्मा के पत्रों का संकलन)

सम्पादक

रामविलास शर्मा

अशोक त्रिपाठी
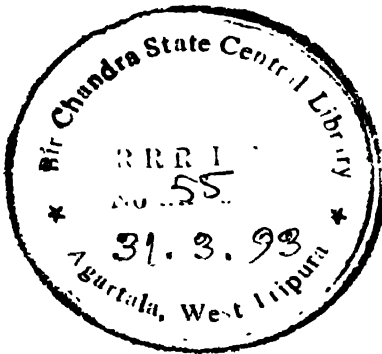
परिमल प्रकाशन

१७, एम० आई० जी०, बाघम्बरी आवास योजना
अल्लापुर, इलाहाबाद-२११ ००६

प्रकाशक :
परिमल प्रकाशन
17 एम० आई० जी०
बाघम्बरी आवास योजना,
अल्लापुर, इलाहाबाद-211006

मुद्रक :
शांति मुद्रणालय
29/62, गली नं० 11
विश्वासनगर, दिल्ली-110032

आवरण :
इम्पैक्ट
इलाहाबाद-211002

मूल्य : तीन सौ रुपये

MITRA SAMVAD Edited By Ram Bilas Sharma Ashok Tripathi
Rs. 300.00

सम्पादन-दृष्टि

प्रस्तुत संकलन को संपादित करते समय पहली और अंतिम कोशिश यही रही है कि पत्र अपने मजमून के साथ, अपनी प्रस्तुति शैली में भी मूल पत्रों की-सी अनुभूति दें। इसके लिए पुस्तक में एकरूपता के सिद्धान्त की बलि देनी पड़ी है।

अगर पत्र-लेखक ने अपना पता और दिनांक पत्र के दाहिने हिस्से में लिखा है तो पुस्तक में भी दाहिनी ओर, बायीं ओर लिखा है तो बायीं ओर और मध्य में लिखा है तो मध्य में ही दिया गया है। पत्र समाप्त होने पर पत्र-लेखक के हस्ताक्षर में भी यही नीति अपनायी गयी है। यह वैविध्य केदारजी के ही पत्रों में अधिक है रामविलासजी के पत्रों में केवल अपवाद स्वरूप।

दिनांक और अन्य अंक अगर मूल पत्र में रोमन में हैं तो उन्हें रोमन में और अगर देवनागरी में हैं तो उन्हें देवनागरी में ही दिया गया है। कुछ पत्र लेटर-हेड पर हैं। उनमें अक्सर दिनांक के हिस्से में उन्नीस रोमन में छपा रहता है। रामविलासजी ने सामान्यत: देवनागरी अंकों का ही प्रयोग किया है, इस कारण वर्ष उन्होंने देवनागरी में ही दिया है, वैसा ही छापा गया है, जैसे 19५५।

विशेष रूप से केदारजी के पत्रों में, एक ही पत्र में कहीं रोमन अंक का प्रयोग है कहीं देवनागरी का—पुस्तक में भी ऐसा ही दिया गया है।

पत्रों के बीच-बीच में अंग्रेजी के शब्द, वाक्यांश या वाक्य आए हुए हैं उन्हें भी उसी तरह रखा गया है।

कुछ पत्र लेटरहेड पर हैं, कुछ अंतर्देशीय पर कुछ पोस्टकार्ड पर। जो पत्र लेटरहेड पर हैं, कोशिश की गयी है कि लेटरहेड की मुद्रित इबारत ज्यों की त्यों, उसी शैली में प्रस्तुत हो। हालाँकि टाइप की अनुरूपता नहीं हो सकी है—ऐसा तभी हो सकता था जबकि लेटरहेड का ब्लॉक बनवा कर छापा जाता। लेटरहेड में पत्र लेखक के नाम जिस तरह छपे है, उसी तरह पुस्तक में भी हैं। उदाहरण के लिए केदारजी के लेटरहेड में, कुछ में 'केदार' अलग और 'नाथ' अलग छपा है और कुछ में मिलाकर—पुस्तक में भी इसी तरह दिया गया है। कुछ लेटरहेड में बाँदा में अनुस्वार [ं] का प्रयोग है और कुछ में अनुनासिक [ँ] का—इसे भी ज्यों का त्यों दिया गया है।

पत्रों को तिथि-क्रम में संयोजित किया गया है—संवाद शैली में—जिसमें कहीं-कहीं एकालाप भी मिलेगा।

पत्र लिखते समय अक्सर कहीं-कहीं बीच में कुछ शब्द छूट जाते है, कहीं शब्द

के बीच के वर्ण, कहीं वर्तनी में असावधानीवश त्रुटि रह जाती है, कहीं परसर्गों का प्रयोग छूट जाता है, कहीं अनावश्यक प्रयोग हो जाता है, कहीं क्रिया में लिंग सम्बन्धी भूलें हो जाती हैं, कहीं अनुनासिक की जगह अनुस्वार और अपवाद स्वरूप अनुस्वार की जगह अनुनासिक का प्रयोग हो जाता है तथा अक्सर 'ब' की जगह 'व' का प्रयोग होता है—आदि-आदि। 'मित्र संवाद' भी इसका अपवाद नहीं है। इससे यह निष्कर्ष निकालना निरी मूर्खता होगी कि इन्हें भाषा का ज्ञान नहीं है—फिर भी कोई ऐसा निष्कर्ष निकालता है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी अगर वह मूर्ख बनने को प्रस्तुत है। खैर ! पत्रों में जहाँ भी ऐसा है वहीं ठीक उसकी बगल में बड़े कोष्ठक—[ ]—में उसके संशोधित रूप दे दिये गए हैं। इससे मूल रूप और संशोधित रूप एक साथ देखे जा सकते है। इस तरह की कार-गुजारियाँ मैंने ही की हैं, रामविलासजी ने नाममात्र को की है; इसलिए संशोधन के जोम मे अगर कही शुद्ध को अशुद्ध कर दिया गया हो तो उस अपराध का सेहरा मेरे ही सिर बाँधा जाय।

पत्रों के बीच-बीच में कुछ शब्द या वाक्यांश या वाक्य छोटे कोष्ठक—( )—में हैं। ये सब मूल पत्रों में ही हैं, संशोधन की सामग्री सिर्फ बड़े कोष्ठक में ही है।

कही-कही तिथि-सम्बन्धी भूलें भी हुई है। उन्हें पत्र के सदर्भ के आधार पर या आगे-पीछे के पत्रो के आधार पर या फिर डाक की मुहर के आधार पर या उस पत्र का उत्तर देने की तिथि के आधार पर संशोधित करके संशोधित तिथि [ ] के अंदर दी गयी है।

पत्रों में कही-कही कुछ संदर्भों को स्पष्ट करने के लिए पाद-टिप्पणियाँ दी गयी है। ये टिप्पणियाँ रामविलासजी ने और मैंने लिखी है। रामविलासजी का आदेश था कि मैं जहाँ टिप्पणियाँ दूँ उसके आगे अपना नाम दे दूँ, ताकि मेरा 'योगदान' पहचाना जा सके। इसलिए जिन टिप्पणियो के आगे कोई नाम नही है, वे टिप्पणियाँ रामविलासजी की हैं और जिन टिप्पणियों के आगे [अ० त्रि०] लिखा है, वे मेरी है। सभव है कुछ आवश्यक टिप्पणियाँ रह गयी हों और अनावश्यक टिप्पणियाँ दे दी गयी हों। काम के दबाव में इसकी पूरी गुजाइश है क्योंकि पत्रों का टंकण, टंकित सामग्री का संशोधन, छपाई आदि सारे काम समानांतर रूप से एक साथ चल रहे थे

पत्रों में 'ब' के स्थान पर 'व' मिलता है। यह प्रवृत्ति केदारजी के पत्रों में बहुत है लेकिन रामविलासजी के पत्रों में अपवाद रूप मे है। इनका संशोधित रूप ही दिया गया है क्योंकि अगर मूल और संशोधित दोनों रूप देता तो पत्र पढ़ने के प्रवाह में ये संशोधन 'गति अवरोधक' का काम करते। सिर्फ़ 'बीवी' का ही मूल और सशोधित रूप दिया गया है—'ब' 'व' की भूलो से सम्बन्धित भूलों के संशोधन मे।

इसी तरह अनुनासिक की जगह अनुस्वार का प्रयोग भी प्रचलन में है। पत्र-लेखन में, इनके प्रयोग के सम्बन्ध में भी बहुत सचेतता नहीं बरती जाती। यहाँ भी ऐसा ही है। रामविलासजी ने अनुनासिक [ँ] की जगह अनुनासिक का भी प्रयोग किया है और अनुस्वार [ं] का भी। लेकिन अधिकतर अनुस्वार का ही प्रयोग किया है। केदारजी ने अनुनासिक की जगह अनुनासिक का प्रयोग अपवाद रूप में ही किया है। एकाध जगह अनुस्वार की जगह अनुनासिक का प्रयोग किया है और जहाँ आवश्यक नहीं है, वहाँ अनुनासिक का प्रयोग किया है। ऐसे अपवाद प्रयोगों का तो संशोधित रूप दिया गया है, पर शेष को जस का तस छापा गया है।

विदेशी शब्दों में नुक्ते [.] वाले शब्दों को केवल मूल रूप मे ही छापा गया है— संशोधन नहीं किया गया है। एक ही शब्द में अगर एक जगह नुक्ता है और दूसरी जगह नुक्ता नहीं है तो जहाँ जैसा है उसे वैसा ही जाने दिया गया है।

रामविलासजी योजक चिह्न [-] का प्रयोग लगभग न के बराबर करते हैं जैसे 'बार बार', क्षण भंगुर' आदि। केदारजी कहीं करते हैं – कहीं नहीं। पुस्तक में भी इन्हें ज्यों-का-त्यों दिया गया है—बिना संशोधन के।

'ए' और 'ये' तथा 'ई' और 'यी' के प्रयोगों में दोनों मित्रों ने सावधानी नहीं बरती है। इसे भी संशोधन-रहित छापा गया है।

विरामचिह्नों का प्रयोग केदारजी जितनी ही उदारता से करते है, राम-विलासजी उतनी ही कंजूसी से – ज़रूरत से रंचमात्र भी अधिक नहीं। इसे भी एकाध अपवादों को छोड़कर जस-का-तस छापा गया है।

इस तरह 'व' 'ब', अनुस्वार —अनुनासिक, नुक्ता, 'ए'— 'ये', 'ई'—'यी', और विराम-चिह्नों में अपवाद रूप में ही संशोधन किया गया है। इनका मूल और संशोधित रूप दोनों एक साथ न देने का एक कारण तो यह है कि उसमे प्रवाह में बाधा पड़ती है और दूसरा कारण यह है कि इससे पूरी किताब संशोधन के घावों से लैस दिखाई पड़ती।

पत्रों में 'वसन्त' और 'बसन्त' दोनों रूप हैं। दोनों ही प्रचलन में हैं, इसलिए इन्हें संशोधित नहीं किया है।

रामविलासजी सहायक क्रिया 'गा', 'गे', 'गी' का प्रयोग मुख्य क्रिया से अलग करते हैं, जैसे -- जाये गी, हो गा, आयें गे आदि। इस बात को प्रारंभ में लक्ष्य नहीं कर सका, लेकिन बाद में जब इस पर ध्यान गया तो इस बात की सावधानी बरती गयी और प्रयास यही किया गया कि वह अलग ही रहे। केदारजी ने इनका प्रयोग मिलाकर ही किया है। इसे मिला हुआ ही छापा गया है।

सामान्य रूप से 'फरवरी' लिखा जाता है रामविलासजी ने 'फर्वरी' लिखा है —'फर्वरी ही छापा गया है। रामविलासजी ने 'सुसरे' का प्रयोग किया है और केदारजी ने 'ससुरे' का। इसे भी ज्यों-का-त्यों दिया गया है।

केदारजी ने 'मालूम' को हर जगह 'मालुम' लिखा है और 'तैयार' को 'तयार'। इन्हें मूल रूप में ही दिया गया है।

रामविलासजी २७-२-८१ तक के पत्रों में पूर्ण विराम [।] का प्रयोग करते है, पर आगे चलकर २७-११-८१ के पत्र से लेकर उसके बाद के पत्रों में फुल स्टाप [.] का प्रयोग करने लगते है, हालाँकि ५ जून, १९९१ को लिखी भूमिका में पूर्ण विराम चिह्न का ही प्रयोग करते है। पुस्तक में सर्वत्र पूर्ण विराम चिह्न [।] का ही प्रयोग किया गया है।

रामविलासजी के छोटे भाई श्री रामशरण शर्मा 'मुशी' के पास लिखे हुए कुछ पत्र भी 'मित्र सवाद' में सकलित है। लेकिन मुशीजी के लिखे पत्र इसमें नही है। इनके उल्लेख यथास्थान कर दिये गए है।

कुल मिलाकर, कहने का तात्पर्य यही है कि भरसक कोशिश यही रही है कि इन पत्रो को पढते समय यही लगे कि मूल पत्रो का ही रसास्वादन हो रहा है। पाठक और पत्र-लेखक के बीच संपादक का हस्तक्षेप कम-से कम हो। वह दाल-भात मे मूसरचद न बने। इस प्रयत्न की पूरी सफलता का दावा तो नही करता पर इस ओर निरन्तर सचेत रहा हूँ, इसका दावा जरूर करता हूँ। यद्यपि, अतिरिक्त सचेतता, कभी-कभी भयंकर भूले करवा देती है।

रामविलासजी ने अपने १२-९-९१ के पत्र मे मुझे लिखा कि 'पुस्तक के भीतर या बाहर मेरे नाम के साथ 'डॉ०' मत लगाना।' उनके उस आदेश का पालन करते हुए ही मैने उनके नाम के साथ 'डॉ०' न लगाने की धृष्टता की है—न चाहते हुए भी।

१७ जुलाई, १९९१ के पत्र में उन्होंने लिखा कि 'पत्र-संग्रह के साथ तुम जो परिश्रम कर रहे हो, पत्र पढते समय तुम्हारी जो प्रतिक्रिया हुई, उस पर अपना वक्तव्य पुस्तक मे दे दो।' उनके इस आदेश का अनुपालन भी मैं कर रहा हूँ, लेकिन यहाँ नही —पुस्तक के अन्त में ताकि पूरी पुस्तक पढ़ने के बाद आप अपनी 'प्रतिक्रिया' और मेरी 'प्रतिक्रिया' का मिलान कर सकें तथा मेरी प्रतिक्रिया से अपनी प्रतिक्रिया और अपनी प्रतिक्रिया से मेरी प्रतिक्रिया की परख कर सकें।

भूमिका मे रामविलासजी ने अपनी और विशेष रूप से केदारजी की हस्तलिपि की विशेषताओं की ओर संकेत किया है। आप उसे चाक्षुष रूप में ग्रहण कर सकें इसलिए मित्रद्वय की हस्तलिपियों के अद्यतन नमूने भी पुस्तक में दिये जा रहे हैं।

—अशोक त्रिपाठी

भूमिका

मित्र संवाद अर्थात् दो मित्रो की बातचीत। दो मित्र है केदारनाथ अग्रवाल और इन पंक्तियों का लेखक रामविलास शर्मा। यह बातचीत पत्रों के माध्यम से होती है। लिखने और बोलने मे थोड़ा फर्क जरूर होता है पर अपना अंदाजा यह है कि हम दोनो के लिखने और बोलने मे यह फर्क कम-से-कम होता है। वैसे भी लोग मित्रों और सगे-सम्बंधियों को चिट्ठियां बातचीत की शैली मे ही लिखते है, कोई बाहर का आदमी उनकी बातें सुन रहा है या उनकी चिट्ठियां प्रकाशित होगी, यह भय उन्हे नहीं होता, इसलिए ज्यादा सावधानी बरतने की जरूरत उन्हें नही होती। खुलकर बात करने की आदत ही न हो तो जो बेखुलापन लिखने में होगा, वही बोलने मे होगा। हर हालत मे चिटिठयो की सामग्री को हम संवाद की संज्ञा दे सकते है। औपचारिक और व्यावसायिक पत्रो की बात अलग है।

ऐसा कम होता है कि पते पर जिसका नाम लिखा है और जो पता लिख रहा है, दोनो की चिट्ठिया एक साथ पढने को मिले। **निराला की साहित्य साधना** के तीसरे खंड मे निराला के लिखे पत्र है और उन्हें लिखे गए पत्र है पर ये एक-दूसरे से जुड़े हुए नही है। जैसे निराला को लिखे नददुलारे वाजपेयी के पत्र तो है पर वाजपेयी जी को लिखे निराला के पत्र नही है। कही किसी का लिखे निराला के दो-चार पत्र उसके पत्रो मे जुडे हों तो वे अपवाद है। इसके विपरीत **पाया पत्र तुम्हारा** में नेमिचंद्र जैन और मुक्तिबोध के पत्र परस्पर संबद्ध है और इन्हे संवाद की संज्ञा दी जा सकती है। सवाद लगातार चलता रहे, ऐसा कम होता है। पहली अगस्त, १९५७ से लेकर १८ जून, १९५८ तक मुक्तिबोध के पांच पत्र है, नेमिचंद्र जैन का एक भी पत्र नही है। कही-कही समय का लंबा अतराल आ जाता है जैसे कि १८ जून, १९५८ के बाद ९ जून, १९६२ तक कोई पत्र नही है, न नेमिचंद्र का, न मुक्तिबोध का। दोनो तरफ से पत्र-व्यवहार लगातार जारी रहे, ऐसा कम होता है। जारी रहे तो वह पत्र-व्यवहार सुरक्षित रहे, ऐसा और भी कम होता है। फिर भी **पाया पत्र तुम्हारा** मे जितना संवाद बच गया है, वह परम उपयोगी है।

मित्र संवाद में केदार से मेरी बातचीत जुलाई १९३५ मे शुरू होती है और नवंबर, १९४३ तक अकेले मै ही बोलता रहता हूं। इसका कारण यह है कि इस बीच केदार के लिखे सारे पत्र नष्ट हो गए है। जुलाई १९४३ मे जब मै अध्यापन

के लिए आगरे गया तब घर का सारा सामान लखनऊ छोड़ आया था। जब दुबारा लखनऊ पहुंचा तब कमरा बहुत साफ-सुथरा दिखा, सारा 'कूड़ा' बाहर निकालकर फेंक दिया गया था। दुख तो हुआ पर बहुत ज्यादा नहीं। निराला को म० प्र० द्विवेदी आदि के लिखे पत्र और मुझे तब तक के लिखे निराला के पत्र मैं अपने साथ लेता गया था। यह सोचकर कुछ तसल्ली हुई कि ये भी फेंक दिए जाते तो मैं क्या करता।

आगरे मे ४३ से ६१ तक बराबर मकान बदलते रहना पड़ा, इस नये-नये घरों में गिरिस्ती जमाने के क्रम में कुछ चिट्ठियां गुम हो गई पर उनके खोने का मुख्य कारण मेरी असावधानी थी। और ऐसा भी होता है कि जो चीज़ मैं बहुत सावधानी से रखता हूं, वह बड़ी कठिनाई से मिलती है और कभी तो मिलती ही नहीं है। केदार के पचहत्तरवें जन्मदिवस समारोह पर वहां मित्रों को सुनाने के लिए उनके कुछ पत्र साथ ले गया था। लौटकर उन्हें मैंने बहुत संभाल कर रख लिया था। नतीजा यह कि भूमिका लिखने तक तो वे मिले नही। मिलेंगे जरूर लेकिन शायद इस संग्रह के छप जाने के बाद!

केदारनाथ अग्रवाल ने जब मे बादा में वकालत शुरू की, वह एक ही मकान में रहते आए है। उनके चाचा जी नामी वकील थे, जब तक वह बादा में थे, तब तक शायद केदार बगल के मकान में रहते थे। उनके जीवन का अधिकांश समय एक ही मकान में बीता है। पर इससे बड़ी बात यह कि उनका जीवन बहुत ही नियमबद्ध और व्यवस्थित रहा है। सवेरे उठकर किताबो की धूल झाड़ना उनका अटल नियम है। बैठक में बड़ी-बडी कानून की जिल्द बधी किताबें है। उन्हे शायद ही कभी पढ़ते हो। पर उनकी धूल ज़रूर झाडते है। उनकी साहित्य की पुस्तके उनके (बांदा के) मित्रो की आंखो से ओझल ही रहती है। बैठक की बगल मे एक कोठरी है, इसमे ताला लगा रहता है। चिट्ठी-पत्री सब इसी में रहती है और इसमे अशोक त्रिपाठी को छोड़कर औरो का प्रवेश वर्जित है। यहां से मेरे कुछ पत्र अशोक इलाहाबाद उठा ले गये थे, केदार मे पूछकर ले गए थे या बिना पूछे ले गए थे,[1] यह बात महत्वपूर्ण नही है। महत्वपूर्ण बात यह है कि जब इस संग्रह के प्रकाशन की बात चली, तब उन्होने पत्रो की फोटो कापी मुझे भेज दी। सन् ३५ से ४४ तक और उसके बाद भी मेरे जो पत्र आप इस संग्रह मे देखते है, वे बरसों तक उस कोठरी में सुरक्षित बने रहे थे।

सन् ६१ मे निराला की मृत्यु के बाद जब मैं उनकी जीवनी लिखने के बारे में सोच रहा था, तब इस बात पर ध्यान गया कि निराला की हालत के बारे में जब तब अपने मित्रो को लिखता रहता था। वे पत्र मिल जायें तो जीवनी के लिए

1. पत्र के साथ अन्य सामग्रियां मैं पूछकर ही ले गया था। (अ० त्रि०)

उनका उपयोग किया जा सकेगा। केदार ने सूचना पाते ही मेरे सारे पत्र मुझे भेज दिए। इस कारण हमारी मैत्री के प्रारंभिक दशक के मेरे पत्र आप यहा देखते है। यद्यपि इस दशक मे केदार ने जो पत्र मुझे लिखे, वे यहा नही है पर मेरे पत्रो से आप केदार के बारे मे बहुत कुछ जान सकेगे, इसलिए उन्हे दे रहा हू। इस दशक के बाद के पत्रो मे कई जगह सवाद क्रम टूट जाता है। कही आप समय का अतराल देखेगे, कही एक साथ केदार के या मेरे ही कई पत्र एक साथ देखेगे। कभी लगेगा दोनो मे एक न कुछ समय तक पत्र लिखा ही नही। हो सकता है, उस समय के पत्र मुझसे खो गए हो। अपवाद रूप मे ही कही आप देखेगे कि केदार बोले चले जा रहे है और मै चुप हू। हम दोनो मे मेरे पत्र ही अधिक सुरक्षित रह पाये है। कुछ पत्र डाक की अव्यवस्था मे भी खोये है। फिर भी इस सकलन मे काफी पत्र ऐसे है जहा बातचीत का सिलसिला टूटता नही है और आप देर तक हमारा सवाद सुन सकते है। जहा तक मै जानता हू, इस तरह मित्रो का सवाद सुनने का अवसर आपको अन्य किसी पत्र सग्रह मे न मिलेगा।

सवाद एक ही तरह के दो व्यक्तियो के बीच हो तो सुनने वाले को मजा न आएगा। दोनो व्यक्ति एकदम भिन्न स्वभाव के हो तो सवाद होना ही मुश्किल होगा, हुआ तो खटपट के अलावा सहानुभूतिपूर्ण विचार विनिमय की गुजाइश कम होगी। राग विस्तार के लिए वादी के साथ सवादी स्वर जरूरी है, कही-कही विवादी स्वर झलक दिखा जाए तो उससे राग विस्तार की प्रक्रिया भग न होगी। इस पत्र सग्रह मे जहा-तहा विवादी स्वर आप सुनेगे पर आयु के साथ ये स्वर धीमे पडते गए है और कुल मिलाकर राग विस्तार को स्वर सामजस्य ही बाधे रहता है। हम दोनो मित्र है, अपने-अपने व्यक्तित्व की विशेषताओ के साथ। इनमे कुछ का पता मुझे अभी लगा इन पत्रो का सपादन-सकलन करते समय। ऐसा बहुत कम होता है कि केदार ने पत्र पर तारीख, महीना और सन् न लिखा हो। कभी-कभी वह लिखने का समय भी सूचित कर देते है। इसके विपरीत मेरे बहुत-से पत्र ऐसे है जिनमे तारीख और महीना है, सन् गायब है, कुछ मे तारीख, महीना, सन् तीनो गायब है। इसलिए सन्, महीना आदि का पता लगाने मे मुझे काफी समय खर्च करना पडा। आमतौर से आपको ऐसा लगेगा कि केदार फुर्सत मे चिट्ठिया लिख रहे है, दरअसल ज्यादा फुर्सत मुझे रही है, केदार को फुर्सत का समय निकालना होता था। वह वकील थे, दिन-भर कचहरी करते थे, रात मे उन्हे पढने-लिखने का अवकाश मिलता था। मेरे पास अवकाश ही अवकाश था। सन् ३८ से ४३ तक लखनऊ विश्वविद्यालय मे दस बजे गए, डेढ बजे लौट आए। सबेरे का समय अपना, तीसरे पहर का समय अपना। कुछ दिन तक आगरे मे यही क्रम रहा, फिर सबेरे गए, ग्यारह बजे लौट आए, यह क्रम बरसो चला। पर जल्दबाजी के चिह्न मेरे पत्रो मे ही ज्यादा मिलेगे। मेरे कुछ पत्र, आमतौर से पोस्टकार्ड, बहुत जल्दी मे

लिखे गए है। साहित्यिक आदोलन सबधी लेखन, पत्र-व्यवहार और भाग-दौड, यह आपाधापी सन् ४६ के पहले कम थी, सन् ५३ के बाद और कम हो गई। फिर भी पत्र न लिखने की ज्यादा शिकायत केदार की ओर से है। पहले तो आलस्य के कारण पत्र लिखने का समय जल्दी न आता था, बाद को लिखाई-पढाई मे व्यस्तता के कारण देर हो जाती थी। पर कभी-कभी केदार भी महीनो तक मौन साध लेते थे। उनकी एक ही पेटेन्ट दलील थी -तुम पुस्तक लिखने मे व्यस्त होगे, इसलिए डिस्टर्ब करना उचित न समझा। एक ही काम केदार ने जल्दी मे किया था, वह था मुझसे दोस्ती करना। मै उनसे कहता था, जल्दी क्या है, मुझे परख लो, मेरी कमजोरिया पहचान लो, जिससे बाद मे दोस्ती न टूटे। पर केदार को अपने सहज बोध का भरोसा था। जैसे उनकी कविता सहज थी, वैसे ही उनकी मैत्री थी।

सन् ३५ मे जब उनसे परिचय हुआ, तब वह कानपुर मे वकालत पढ रहे थे, मैं क्लासवाली पढाई पूरी करके रिसर्च मे लगा हुआ था। शायद इस कारण मुझमें बडप्पन का भाव आ गया था। बहुत दिन बाद मैने इस बात पर ध्यान दिया कि वह उम्र मे मुझसे बडे है, बातचीत और पत्र-व्यवहार मे मुझे उनके बडप्पन का ध्यान रखना चाहिए। पर ऐसा कभी हुआ नही, अधिक-से-अधिक यह हुआ कि बडप्पन छुटपन की बात छोडकर हम लोग बराबरी के स्तर पर आ गए। फिर भी मेरे पत्रो मे 'प्रिय केदार' तो बराबर मिलेगा, केदार के पत्रो मे 'प्रिय रामविलास' एक बार भी नही। अधिक-से-अधिक 'प्रिय शर्मा'—वह भी शुरुआती दौर के पत्रो मे। वैसे मौका मिले तो मुझे बनाने से कभी चूकते नही है।

केदार को हास्य-विनोद से सहज प्रेम है। प्रेम ही नही, हसना, प्रसन्न रहना, उनकी सहज वृत्ति है। वह हास्य-विनोद की सामग्री वहा ढूढ लेते है जहा कवियो की निगाह कम जाती है। यहा उनके पत्रो का गद्य उनकी कविता से भिन्न है। कविता मे एक छोर पर तीखा मारक व्यग्य है (इसकी अनोखी मिसाले **कहे केदार खरी-खरी** मे है), दूसरे छोर पर **फूल नहीं रंग बोलते है** की दुनिया है। हँसने-हँसाने के लिए कविता मे उन्हे कम समय मिलता है। पर यह उनके व्यक्तित्व का बहुत महत्त्वपूर्ण पक्ष है। इस दृष्टि मे पत्रो का गद्य उनकी कविता का पूरक है। वह कवि केदारनाथ अग्रवाल का गद्य है, यह तथ्य भुलाकर भी आप उसका आस्वादन कर सकते है। और हास्य-विनोद तो उसका एक पक्ष है, बहुत जगह तो वह कविता बन जाता है, छायावादी शब्दावली मे रचा हुआ गद्यकाव्य नही, यथार्थवादी कविता, ऐसा गद्य जो अपनी गद्य की जमीन नही छोडता, फिर भी कविता बन जाती है और कही-कही तो कविता से आगे बढ जाता है। केदार जो कुछ भी कविता मे कहना चाहते है, उसे गद्य मे भी कहते है और इतने सहज भाव से कहते है कि उस अभिव्यक्ति की पूर्णता को कविता नही छू पाती। हमेशा ऐसा नही होता पर कभी-कभी ऐसा भी होता है।

केदार के गद्य में बहुत-सी भाव दशाएं हैं—'भाव भेद रस भेद अपारा' की उक्ति को चरितार्थ करती हुई। पता लगाना दिलचस्प होगा कि उनकी कविता में इतनी भाव दशाएं हैं या नहीं। कहीं वह. रीझते हैं, कहीं खीझते हैं, कहीं उत्तेजित कहीं स्थितिप्रज्ञ, कहीं दुखी, कहीं प्रसन्न, कहीं किसी व्यक्ति अथवा वृत्ति से तादात्म्य, आपा खोये हुए, बेसंभाल, कहीं एकदम तटस्थ, विवेकशील, तर्क का सूत कातते हुए मन ही मन हंसते हुए। उनकी अनेक मुद्राएं हैं, अनेक भंगिमाएं हैं, मेरे लिए उनकी सबसे प्रिय मुद्रा वह है जब वह मन ही मन हंसते हैं। सजल नयन गदगद गिरा गहबर मन पुलक शरीर--कभी कभी यह स्थिति भी होती है। विश्वास न हो तो उनका ५ मार्च सन् ६६ का पत्र पढ़कर देख लीजिए। सारंगी उनका प्रिय वाद्य है (बजाते नहीं, सुनते है)। अन्य किसी भी वाद्य यंत्र से ज्यादा सारंगी मनुष्य के स्वरों का अनुकरण करती है। केदार का गद्य सारंगी की तरह उनकी सूक्ष्म भावदशाएं ज्यों की त्यों शब्दों में बांध लेता है। यहां बात केवल उनके पत्रों के गद्य की है, उनमें भी केवल मुझे लिखे हुए उनके सबसे अच्छे पत्रों की। (यहां 'केवल' में गर्वोक्ति का आभास हो सकता है; दूसरों को लिखे हुए उनके बहुत कम पत्रों से मैं परिचित हूं।) मेरे पत्र उत्तेजक का काम करते है—अनेक प्रकार से। मेरे किसी पत्र से उन्हें क्षोभ हुआ तो यह एक तरह का उत्तेजक हुआ। कहीं किसी दुःख की गहराई में उन्होंने मेरी आवाज़ सुन ली और मन थोड़ा भी हल्का हुआ तो यह दूसरी तरह का उत्तेजक हुआ। केदार को सारंगी प्रिय है, मुझे उसमे नाद की गंभीरता नहीं मिलती। केदार के गद्य में सारंगी के स्वरों की सुकुमारता है, वायलिन का नाद गाम्भीर्य और जहां तहां मृदंग की थाप भी। केदार संघर्ष और चुनौतियों के कवि है। गद्य में जहां उदात्त स्तर पर उनके स्वर फूटते हैं, वहां सारंगी की पहुंच नही है। 'राम की शक्तिपूजा' की संगीतमय व्यंजना वीणा, वायलिन और मृदंग से संभव है, सारंगी से नहीं।

'राम की शक्तिपूजा' को आत्मसात् करने में केदार के सामने कुछ कठिनाइयां रही है। उन्हें आप २७.११.५८ के पत्र में देख सकते हैं। प्रश्न उस कविता को आत्मसात् करने का नही है, प्रश्न है गद्य में उस कविता के स्तर को छू लेने का। मेरी समझ में जहां-तहां केदार का गद्य 'राम की शक्तिपूजा' के उदात्त स्तर को स्पर्श कर आता है। केदार का मूल स्वर लिरिक कवि का है, वही उनके गद्य का मूल स्वर भी है। कविता में वह बाहर की दुनिया देखते है, मन के भीतर झांकते भी रहते हैं। अपने मन के भीतर पैठने की यह क्रिया उनके गद्य में और भी ज्यादा होती है। उनके पत्र आत्मवक्तव्य का श्रेष्ठ साधन हैं। यह आत्माभिव्यक्ति परिवेश से कटी हुई नही, दृढ़तापूर्वक उससे जुड़ी है। कवि के व्यक्तित्व-निर्माण की प्रक्रिया का अध्ययन करना हो तो इन पत्रों से ज्यादा अच्छी सामग्री दूसरी जगह न मिलेगी। व्यक्ति का मन और उसका परिवेश, इनका परस्पर घात

प्रतिघात—यह परिदृश्य है इन पत्रो मे। कही पारिवारिक परिवेश की झलक है, कही(कचहरी केन्द्रित) सामाजिक परिवेश की, सबसे अधिक साहित्यिक परिवेश की। यह बादा का परिवेश है और बादा से बाहर व्यापक हिन्दी का परिवेश। यदि कहे, केदार के पत्र एक युग का इतिहास ह तो अत्युक्ति हो सकती है। परतु एक युग के साहित्यिक परिवेश मे स्वय केदार के जीवन का अतरग इतिहास उनके पत्र निश्चय ही हैं। यह परिवेश बदलता रहा है, उसके साथ केदार भी बदलते रहे है, सदा उसके अनुरूप नही। परिवेश की गिरावट से बचने का प्रयास यहा देखा जा सकता है। कुल मिलाकर केदार का व्यक्तित्व निरतर विकसित और परिपक्व होता गया है और हर मजिल मे उनके व्यक्तित्व की अपनी पहचान अपारवर्तनशील रही हे।

केदार के कवि जीवन के आदिकाल से मैं उनके गद्य का प्रशसक रहा हू। पद्य की नुक्ताचीनी, गद्य की प्रशसा बरसो तक—यह व्यापार देखकर केदार ने यह समझा हो कि मुझे उनकी कविता पसद नही है तो इसमे आश्चर्य ही क्या। **केदारनाथ अग्रवाल और प्रगतिशील काव्यधारा** के प्रकाशन के बाद उनका वह भ्रम बहुत कुछ मिट गया हे लेकिन शायद पूरी तरह नही क्योकि मै उनके गद्य का प्रशसक अब भी हू। सभव है, **मित्र सवाद** की यह भूमिका पढकर वह पुराना भ्रम बुढापे मे उन्हे फिर सताने लगे। अत मैं घोषित करता हू कि केदारनाथ अग्रवाल अपने युग के सर्वश्रेष्ठ कवि हे और मुझे उनकी कविता बेहद पसद है। यह भी कि उनका काफी गद्य मुझे नापसद है। जब वह दिनकर की **उर्वशी** को लेकर मुझमे जिरह करने बैठ जाते हे तब मुझे उनका गद्य बिल्कुल अच्छा नही लगता। आप इस मुद्दे पर यो विचार करे, केदार ने जो अच्छी कविताए लिखी है, उनके आस पास नागार्जुन, निराला या किसी अन्य महाकवि की पक्तिया पहुच जायेगी पर केदार ने पत्रो मे जो बढिया गद्य लिखा हे, उस तक किस कवि का बढिया से बढिया गद्य पहुचता है, विचार करे। ऐसा नही है कि हिन्दी मे अच्छे गद्य लेखक नही है। है, और एक से एक बढकर ह। सवाल गद्य के मिजाज का हे। केदार अपने पत्रो मे जिस तरह का गद्य लिखते ह, उस तरह का गद्य हिदी म और किसी ने नही लिखा। दरअसल केदार अपन हुनर म बेखबर हे। जो सहज हे, उमे ऐसा होना भी चाहिए। बहुत स पत्रो मे साधारण बातो का उल्लेख मात्र हे। सभव है, उनका ध्यान आने पर वह सोचते हो, ऐसा इनमे क्या है जो प्रशसा के योग्य है। मैं भी कहूगा, ऐसा कुछ खास नही हे परन्तु केदार जैमे साहित्यकार के जीवन और परिवेश क बारे मे हम जितना ही जाने उतना ही थोडा हे। हा साधारण बातो का उल्लेख पढते पढत अचानक आप उनके किसी अनूठे उपमान से चौक पडे, यह सभव है। आप चाहे तो ऐमे उपमानो की सूची बना ले, फिर देखे, ऐसे अनूठे सहज उपमान कविता म भी कितने हैं। वैमे तो उन्हे अपनी कविताए बहुत अच्छी

लगती हैं और मैं उनकी अपेक्षित तारीफ न करूं तो वह नाराज भी होते है पर कभी-कभी आत्मालोचन के मूड में वह कविताओं को बटोरकर उसी जगह रख देते हैं जहां उनकी समझ में उनके पत्र है। ऐसे में दोनों का स्थानान्तरण बहुत जरूरी है। कविता जाये तो जाये, पत्रों में रचा हुआ गद्य तो रहे! (देखें २८.८.७४ का पत्र।)

केदार में आस पास की चीजों को देखने और उनका वर्णन करने की अद्भुत क्षमता है। निराला से अंतिम भेंट करके उन्होंने जो अंतिम पत्र लिखा था, उसमें यह क्षमता देखी जा सकती है। ऐसे पत्रों का ऐतिहासिक महत्व है। वह पुस्तकों के बारे में कम लिखते हैं, अपने भीतर और आस पास देखकर ही अधिक लिखते है। इसके विपरीत मेरे पत्रों में पुस्तक चर्चा बहुत रहती है। मेरी इच्छा रही है कि पढ़ने में जो कुछ मुझे अच्छा लगा है, उसकी जानकारी केदार को भी हो जाये। पर वह काफी पढ़ते है; जो पढ़ते हैं, कलाकार के भाव से, सीखते समझते हुए, फालतू चीज़ें एक तरफ हटाते हुए। मेरे उनके काव्य बोध में अन्तर है, यह आप पत्रों में अनेक [illegible] देखेंगे। उनकी अपनी कविताओं को लेकर मतभेद रहा है। दिनकर, निराला, सूरदास की रचनाओं को लेकर भी मतभेद रहा है कविता से सामाजिक यथार्थ के संबंध को लेकर, पुरानी साहित्य-परपराओं के मूल्यांकन को लेकर, छंद और काव्य शिल्प को लेकर मतभेद रहा है। दो मित्रों के, एक दूसरे की हां में हा मिलाने वालों के, ये पत्र नही है। जहां भी ऐसे मतभेदों का विवरण है,आज के आलोचकों और कवियों को अपने काम लायक कुछ सामग्री अवश्य मिलेगी। पर ये मतभेद गौण हैं। उनसे हमारी मैत्री कभी नही डगमगायी। जीवन में असह्य दुःख के क्षण भी आते हैं। ऐसे क्षणों में हम सदा एक-दूसरे के पास रहे हैं। व्यक्तिगत रूप में यह मैत्री मेरे लिए कविता से भी अधिक मूल्यवान है। ये पत्र उस मैत्री के साक्षी दस्तावेज है।

हम दोनों में एक बात सामान्य है—बीते दिनों के बारे में हम बहुत कम सोचते है। क्या कर रहे है, आगे क्या करना है, अधिकतर ध्यान उसी पर केंद्रित रहता है। हमारी मैत्री का लंबा इतिहास है, इस पर भी ध्यान कम ही जाता है। लगता है, सारे तथ्य सिमट कर गुणात्मक रूप से भावशक्ति में परिवर्तित हो गए हैं—वह भावशक्ति जो रचनात्मक क्षमता का स्रोत है।

इस संग्रह में केदार के कुछ पत्र मेरे भाई मुंशी को लिखे हुए हैं। मुंशी पत्रकार है। लोकयुद्ध (फिर जनयुग), हिन्दी टाइम्स जैसे प्रकाशित पत्रों के अलावा वह अनेक हस्तलिखित पत्रों के संपादक रहे है। हमारे पारिवारिक पत्र **सचेतक** को निकालते उन्हें दस साल हो गए हैं। केदार इसके नियमित पाठक हैं। उनकी कुछ कविताएं सबसे पहले **सचेतक** में छपी हैं। इनमें अपनी मां पर लिखी केदार की कविता विशेष उल्लेखनीय है। मुंशी को लिखे हुए पत्रों में संप्रेषण की वेव-लेन्थ

दूसरी है, आप पढ़ते ही पहचान लेंगे। मुझसे उपन्यासों की चर्चा शायद ही उन्होंने कभी की हो पर मुंशी के नाम एक पत्र में उन्होंने अपने पढ़े हुए उपन्यासों की चर्चा काफी विस्तार से की है। मुंशी से उपन्यासों की चर्चा और मुझसे नहीं—कारण यह हो सकता है कि मुंशी और केदार दोनों ने उपन्यास शुरू किये, पूरा दोनों में किसी ने नहीं किया।[1] तब इन्हें आपस में उपन्यासों की चर्चा करनी ही चाहिए। हां, मुंशी के अधूरे उपन्यास का कुछ अंश **सचेतक** में छपा है।

केदार का जीवन जितना ही व्यवस्थित है, उनकी लिखावट उतनी ही बहु-आयामी है। उनके अक्षर ज्यामिति के अनेक पैटर्न बनाते चलते हैं। अशोक त्रिपाठी उनकी कविताएं कापियों और डायरियों से खोज-खोजकर संकलित और संपादित करते रहे हैं। वह उनकी हस्तलिपि के विशेषज्ञ हैं। प्रेस के लिए पत्र-संग्रह की कापी तैयार करने की जिम्मेदारी उनकी है। यह काम आसान नहीं है। इतनी बड़ी पांडुलिपि की प्रेस कापी उन्होंने पहले कभी तैयार नहीं की। फिर मेरी लिखावट की अपनी विशेषताएं हैं। आमतौर से साफ-सुथरी होने पर भी कहीं-कहीं अपना लिखा खुद से नहीं पढ़ा जाता। कुछ पत्र अंग्रेजी में हैं, वहां अशोक को और अधिक कठिनाई हो सकती है। हिन्दी से अलग हम लोगों की अंग्रेज़ी की लिखावट की अपनी विशेषताएं है। सुपाठ्य रूप में यह संग्रह आप तक पहुंच जाये, तो इसका श्रेय आप अशोक त्रिपाठी को दें। मैंने पत्रों की फोटो कापी कराके कालक्रमानुसार उन्हें व्यवस्थित कर दिया है, जहां ज़रूरत समझी, वहां आवश्यक सूचना देने वाली छोटी-छोटी पाद टिप्पणिया लिख दी है। अशोक से मैंने कहा है, जरूरत समझो तो अपने नाम से और टिप्पणियां भी लिख सकते हो।

एक बात और। केदार से बातें करते समय कहीं-कहीं मेरी भाषा असंयत हो गई है। इसके लिए पाठकों से मैं क्षमा मांगता हूं।

पहली अप्रैल १९९१ को केदार ने अस्सी पूरे किए। आशा है, साल पूरा होने के पहले यह संग्रह उनके हाथों में होगा।

सी-३५८, विकासपुरी, **रामविलास शर्मा**

नयी दिल्ली

५ जून, १९९१

1. केदार का 'पतिया' उपन्यास 1985 में प्रकाशित हुआ था। इसके प्रकाशकीय वक्तव्य के अनुसार उनका अधूरा उपन्यास 'बैल बाजी मार ले गये' शीघ्र प्रकाशित होगा—मुंशी का अधूरा उपन्यास 'दीनू की दुनिया' हमारे पारिवारिक पत्र 'सचेतक' में छप रहा है; पर जिस समय केदार मुंशी से उपन्यासों की चर्चा कर रहे थे, उस समय उनके उपन्यास अप्रकाशित थे।

पुनश्च :

मित्रों को सुनाने के लिए जो पत्र मैं बांदा ले गया था, सौभाग्य से पुस्तक छपने से पहले ही वे मिल गए। पुराने महारथियों के कुछ पत्रों के साथ मैंने इन्हें संभाल कर रख दिया था।

केदार के गद्य शिल्प के बारे में मुझे और बहुत कुछ लिखना चाहिए पर वह एक भूमिका में संभव नहीं है। उसके लिए अलग एक पुस्तक चाहिए। मैं आशा यह करता हूं कि गद्य को भाष्य की जरूरत नहीं है, पाठक उसकी खूबियां खुद ही पहचान लेंगे। पत्र पढ़ते समय आप यह न भूलें कि वे प्रकाशित होने के लिए न लिखे गए थे। "तुम जानते हो कि मैं किसी अन्य से इस तरह खुलकर बात नहीं करता।" (८.२.५७)। ये पत्र इतने आत्मीयतापूर्ण हैं कि इन्हें प्रकाशित करने में मुझे संकोच होना चाहिए था। केदार का व्यक्तित्व अब अकेले उनका नहीं रहा, कविता के माध्यम से वह उसे हिन्दी जनता को सौंप चुके है। कविता में वह खुलकर बोलते हैं, फिर भी जो वहा नहीं कहा, वह यहां है। जिस कारखाने में उनकी कविता ढलती है, उसे आप भीतर से यहां देख सकते हैं। जो सामग्री कविता में नहीं ढाली गई, पर कविता से घटकर नहीं है, वह भी आपको यहां मिलेगी। "सामने नल चल रहा है। बाल्टी भर रही है। पानी बोल रहा है। आंगन के कच्चे कोने मे, पहले की कटी, रातरानी ने पत्तिया निकाल दी हैं।" (२३.७.५८)। अदृश्य काल के एक क्षण को उसके पार्थिव परिवेश के साथ केदार ने अमर कर दिया है।

बहुत साल पहले उन्होंने कहा था, "सांस का ज़ोर पंक्तियों में आवे, मेरी यह साधना है।" (५.११.४३)। आदमी के सांस लेने की तरह उनकी कविता सहज है; उनके सास लेने की आवाज़ आप उनके पत्रों मे सुन सकते हैं। जब वह कचहरी से बाहर होते हैं तब उनकी हर सांस कविता होती है। लेकिन सताकर भी कचहरी उन्हें कविता दे जाती है। "११/५ से सुबह की कचहरी हो जाएगी। साढ़े छः बजे सुबह से १ बजे दिन तक। तब तो समझो कि घिर जाऊंगा। चूर-चूर हो जाऊंगा। पर किया [क्या] जाये। पेट को लिए लिए गर्भवती की तरह जिऊंगा। न खा पाऊंगा, न घूम-फिर सकूंगा।" (४.५.६४)। विरोधी परिवेश से लंबी टक्कर—यह है केदार का जीवन। पर वह इस परिवेश को अपने ऊपर हावी नहीं होने देते। और केवल कचहरी का परिवेश नहीं, साहित्य का परिवेश भी अक्सर उनके प्रतिकूल होता है। वह उससे दूर नहीं भागते, निगाह जमाकर उसे देखते है। और यहां भी उनकी प्रतिक्रिया कविता बन जाती है। " 'प्रतीक' श्मशान का रंगीन धुआं रहा।" (११.८.४७)। धुआं रंगीन है पर है श्मशान का।

जो अप्रत्याशित है, अनपेक्षित है, पत्र में अकस्मात् वह सामने आकर हमें चौंका देता है। साधारण बातें करते-करते अचानक ऐसे बोल फूटते हैं कि सुनकर हम

दंग रह जाते हैं। ऐसे बोल कब कहां सुनने को मिल जायेंगे, आप कुछ कह नहीं सकते। "मै तो अपने को खोजता रहा हूं कि कहां हूं और क्या सच है और मैं उसे पकड़कर जी रहा हूं अथवा नही। मुझे काठ होकर या रहकर मरने में दुःख होगा। मरो तो इस शान से कि मौत भी ऐसे फूले-फले पेड़ को कंधे पर रखकर चले कि जिधर से निकले रूप-रस और गध बरस पड़े। हमे यश न चाहिए। हमे चाहिए पूर्ण विकसित मनुष्य की मौत।" (१७ १२.५८)। पूर्ण विकसित मनुष्य की मौत—मानव जीवन का यह सबसे बड़ा दार्शनिक सत्य है। केदार ने उसे अपने अनुभव से, चितन और मनन से प्राप्त किया है।

इति।

शिवकुमार सहाय हिन्दी प्रकाशकों मे परम सौभाग्यशाली है कि केदारनाथ अग्रवाल की सारी पुस्तके उन्ही ने छापी है। यह प्रसन्नता की बात है कि यह पत्र संग्रह भी वही छाप रहे है। मै उनके प्रकाशन कार्य की सफलता के लिए मंगल कामना करता हूं।

१८ जून १९९१ —रामविलास शर्मा

मित्र संवाद
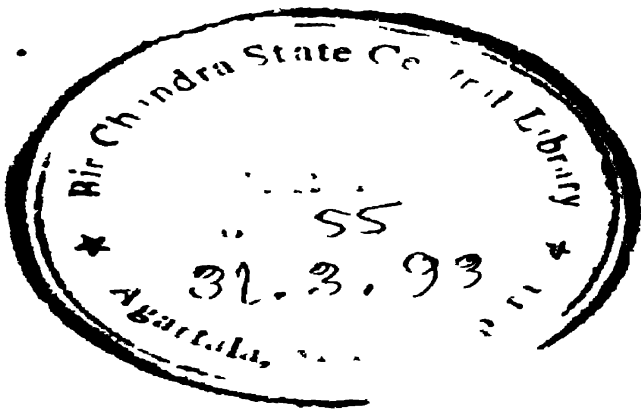
५८, नारियल वाली गली
लखनऊ,
२९-७-३५

प्रिय भाई केदार,

तुम्हारा कार्ड मिला। यथावकाश निराला जी को लेकर पं. शुकदेवबिहारी जी मिश्र के यहां कल सायंकाल गया था। निराला जी के लिखाये लेख पर उन्होने हस्ताक्षर कर दिए हैं। पहले वाक्य पर उन्होने आपत्ति की थी कि उनका आपसे कोई व्यक्तिगत परिचय न था। अस्तु, वह सब ठीक हो गया। किस जगह तुम कोशिश कर रहे हो ? आशा है, इससे तुम्हारा काम चल जाएगा, साथ मे भेज रहा हूं।

और अपने विषय मे लिखना हम सब लोग अच्छी तरह है।

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

112 Maqboolganj
Lucknow
13-8-35

प्रिय भाई केदार,

तुम्हारा कार्ड मिला। कानपुर में रहकर अपना खर्च चलाने के साधन क्या तुम्हें कुछ मिले है ? तुमने अपनी पुस्तक की भूमिका लिखने के लिए मुझे लिखा था या निराला जी को। इस समय तुम्हारा वह कार्ड पास नहीं। मेरे लिखने के विषय में तो पूछना अनावश्यक है। कहोगे तो लिख ही दूगा किंतु इससे तुम हास्यास्पद तो न बनोगे ? तुम्हारी पुस्तक कहाँ से छप रही है, क्या Terms तै हुए है, in detail लिखो। ता० ७ को हम निरालाजी के यहा से उठ आए है, ऊपर के पते पर। निराला जी अभी वही है। अपने हालचाल और लिखना। कोई कविता नई लिखी हो तो भेजना—बस।

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

112, Maqboolganj
Lucknow
3-1-36

प्रिय मित्र केदार,

आज बहुत दिनो के सचित आलस्य को हठात् दूर कर तुम्हारा 15-11-35 का पत्र सामने रख तुम्हे उत्तर लिखने बैठा हूँ, अथवा एक नया पत्र लिखू गा। तुम्हे पत्र लिखने का विचार सदा दिमाग मे चक्कर मारा करता था, इसलिए तुम समझ सकते हो, इस देरी का कारण मेरी उदासीनता नही। प्रत्युत पत्र न लिखने से तुम्हारा मुझे सदा ही ध्यान रहा।

क्या नये वर्ष के लिए तुम्हे बधाई दू ? पहले तो कुछ ऐसा दिखाई नही देता जो नया हो गया हो। ता० की सन् मे अलबत्ता परिवर्तन हुआ है और लिखने मे बहुधा पुराना सन् लिख जाता है। ठड पहले की अपेक्षा कुछ अधिक ही पडने लगी है। दूसरे यह हमारे वर्ष का आरभ नही। विद्यार्थियो का वर्ष तो जुलाई या अगस्त मे ही शुरू होता है। अथवा हम हिंदुओ का चैत्र मे जो बधाई देने के लिए अधिक उपयुक्त अवसर जान पडता है। फिर भी मै समझता हूँ तुम नये उत्साह मे नये प्रोग्राम बनाकर काम करना नव वर्षारभ के लिए न छोडते हो गे। यह तो प्रतिदिन प्रति सप्ताह, प्रति मास होना चाहिए।

तुम्हारा पत्र पूरा गद्य-काव्य है। लिखने के पूर्व सलाप, अतस्तल, अतर्नाद-- आदि मे मे तो कुछ नही पढा था ? उसका बहुत-सा भाग Sentimental है--शब्द के निम्न अर्थ मे। फिर भी उसके नीचे शायद तुम्हारा स्वच्छ हृदय देख सकता हूँ, तुमने लिखा है—"मै तो स्वय साफ हूँ।"--ऐसा विश्वास दिलाने की चेष्टा न करो, किसी को भी। शब्दो मे ऐसा कहने से किसी को विश्वास होगा भी, इसमे सदेह है। मित्रता करो, मुझसे ही नही, जिस किसी से भी हो सके। "जिन खोजा तिन पाइयाँ" को चरितार्थ करने का एक ही ढग है। अपने को थोडा-थोडा व्यक्त करते हुए, दूसरो को भी जानने की चेष्टा करो। ये दुनियादारी की बाते है, पर उस दिन विक्टोरिया पार्क की बाते स्मरण कर विश्वास होता है, उन्हे तुम पहले से ही जानते हो गे। तुमने लिखा है—"न जाने कैसे तुम भी जीवन मे समा गए।"—इस पर लिखा। मेरी अच्छाइयो को जानने के पहले धीरे-धीरे मेरी बुराइयो को पहले जान लो, जिससे बाद मे उनका ज्ञान होने पर तुम मुझे अपने हृदय मे सहसा निकाल न फेको। सच जानो, एक मनचाहे मित्र की न जाने मुझे कब म कितनी आकाक्षा है, और उसके लिए यथाशक्ति चेष्टा की है। परतु अभी तक वह साध जैसी की तैसी बनी है। तुम यदि उसे पूरी कर सके तो इससे अधिक सौभाग्य और क्या होगा ?

बड़े दिन की छुट्टियों में घर चला गया था। दसहरे से मेरी मालकिन यहीं थीं—उन्हें छोड़ने गया था। तुमने अपनी सुखानुभूतियों का जिक्र न कर मुझे ललचा कर ही छोड़ दिया। यहां तुम जब चाहो आ सकते हो, स्वागत के लिए दरवाजा सदा खुला है। लालकुवें के पास मेरा मकान है। ऊपर पते वाला। कानपुर मैं स्वयं अभी तो नहीं भविष्य में शायद आ सकूँ, तो लिखूँगा। तुम क्या होस्टल में खोजने पर मिलोगे?

पत्र के साथ थोड़ी-सी कविता भेज दिया करो तो संतोष हो जाया करे। मैं उनका आरंभ किये देता हूँ

गीत

देख रे क्षुद्र गान की तरी,
आज निःसीम वेदना-भरी;

सिहर जड़ जग सागर में वही
लहर पर लहर जहां उठ रही
और सौ-सौ फन में फुफकार, साथ
झंझा भी प्रलयंकरी!

अंध खोजती सिंधु का पार
और गुरुतर होता गुरु भार
कौन वह दूर देश अज्ञात, ज्ञान की
परी जहाँ सुंदरी!

तुम्हारा
रामविलास

112 Maqboolganj
Lucknow
12-2-36

प्रिय केदार,

देखो कितने बढ़िया पेपर पर तुम्हें पत्र लिख रहा हूँ। गुलाब के फूल के नीचे उसकी लाजभरी गुलाबी में मैंने तुम्हारा नाम लिखा है। पर तुम कहोगे, कितने

दिनों बाद ! वास्तव में प्रायः एक महीने बाद। तुम्हारे [तुम्हारा] 15-1-36 का पत्र सामने है। कारण यही, कभी उचित अवकाश न था, कभी टिकक [टिकट] को पैसे न थे। अब भी निब टेढ़ा है। पर अधिक विलंब उचित न था। पारकर फाउंटेन पेन से मोती से अक्षर चुनने के बजाय इस पेपर पर मेरा रेंडिक निब और नीले रंग का यह गोदना ही सही। वास्तव में सफेद लिफाफे रहे नहीं, इसलिए प्रिया को पत्र लिखने को दिए मित्र के तोहफ़े का प्रयोग तुम्हारे लिए।

तुम कहोगे, "कितनी/ही बातें बनाओ; पर/यहाँ असर नहीं होने का।/अब की वह फटकार लिखूं..." वास्तव में मुझे कुछ-कुछ भय हो/रहा है; इस बार नाराज़ हो न जाने क्या/लिखो।

तुमने लिखा है —"जितना एक झलक में जाना जा सकता है, उतना ही जीवन भर में।" यह किन्ही पुरुषों के लिए सत्य हो सकता है, उनमें से मैं नही। मैने अपने स्टैंडर्ड से तुम्हे लिखा था। यदि तुम उनमें से हो तो गर्व की बात है।

मालकिन के एक और छोटा मालिक होने वाला है, इसी अप्रैल के अंत तक। घर की परिस्थितियाँ कुछ ऐसी है कि इच्छा होने पर भी उन्हे अधिक दिनों तक पास नही रख सकता। इसीलिए कुछ सुख के दिन बिता फिर उसी पुराने ढर्रे में पड़ गया हूँ।

बुराई बुराई मे भी मिलती है, यह क्या तुम नही देखते। मुझे तो दुनिया में संगठित बुराई असंगठित अच्छाई को सताती देख पड़ती है।

मैं सबके पत्र हिफाजत मे रखता हूँ। संपादकों के भी, जिनमें प्रायः सभी से मैं घृणा करता हूँ, पत्र मै रख छोड़ता हूँ, जिसमे मौका पड़ने पर ठीक बदला ले सकूँ।

इसी तरह बुराइयाँ जानते जाओ गे; पत्र तो देर में लिखा ही है। उस बुराई का उल्लेख करने की आवश्यकता नही। यदि एक झलक में मुझे पहचान गए हो, तो क्या बुराइयाँ छिपी रही हो गी।

जनवरी के अंत मे किसी दिन मैं एक पड़ोसी की दाह-क्रिया में कानपुर गया था परंतु अवकाश न होने और साथ मे होने के कारण गंगा के इसी ओर से लौट आया। एक कानपुर के सज्जन से जो यहाँ है और साथ गए थे, केवल यह पूछ सका कि डी० ए० वी० कालेज किस ओर है। उन्होंने पश्चिम की ओर उँगली उठाकर कहा, उधर बड़ी दूर। कुछ चिमनियों का धुआँ उधर आकाश को धुँधला कर रहा था। मैंने सोचा वही कही होस्टल के कमरे में शायद तुम लेटे कोई पुस्तक पढ़ रहे हो गे या किसी का ध्यान कर रहे हो गे।

तुमने लॉ किया है या एम० ए० किया है, मुझे कुछ स्मरण नही, लिखना। अनेक कठिनाइयाँ हैं, इधर आना संभव नही दिखाई देता। परंतु कभी आऊँ गा अवश्य, यह आशा किया करता हूँ।

दिन रात में क्या क्या करते हो, लिखना। प्रिया के ध्यान से पढ़ने में अधिक बाधा तो नही होती ? तुम्हारे गीत का दूसरा बंद विशेष सुंदर लगा। क्या लिख सकता हूँ, पत्र का उत्तर जल्दी देना।

तुम्हारा ही
रामविलास शर्मा

112, Maqbool Ganj
Lucknow
3-4-36

प्रिय मित्र बालेंदु[1]

आज इतने दिनों के बाद लिखने बैठा हूँ। शायद परीक्षा समाप्त होने पर तुम घर चले गए हो गे; मैं नही जानता, तुम्हे किस पते मे यह पत्र भेजूं गा। तुम्हारा पत्र 9-3-36 का सामने है। रानी ने कैसा परीक्षाफल दिया ? मालकिन ने पुत्र रत्न को जन्म दिया है।

माधुरी के मार्च-अप्रैल के अंकों में क्रमश: तुम्हारे लेख और कविता प्रकाशित हो चुके हैं। तुम्हें शायद मालूम हो। मैं माधुरी आफिस मुद्दतों से नही गया, न संपादकों के दर्शनों की इच्छा होती है। अपने आप तुम्हारी चीजें छप जाने मे बड़ी प्रसन्नता का अनुभव हुआ, न जाने से जो Pricks of Conscience होते थे, उनसे पीछा छूटा।

निराला जी कुछ दिन अलाहाबाद रहे; उसके बाद मार्च के अंत में यहाँ आ गए, तब से यहीं है। उनका उपन्यास प्रभावती लखनऊ के सरस्वती पुस्तक भंडार से निकल चुका है। 'निरुपमा' दूसरा लिख रहे हैं; अलाहाबाद, शायद लीडर प्रेस में छपेगा। वहीं से उनकी गीतिका भी।

मैं गर्मी की छुट्टियों में यहीं रहूँ गा। जून के आरंभ मे शायद कुछ दिन को घर जाऊँ।

शेष कुशल। अपने और घरवालों की हाल देना।

तुम्हारा लेख मुझे और अनेक मित्रों को यहाँ बहुत पसंद आया।

बस, तुम्हारा ही
रामविलास शर्मा

1. केदार जी शुरू में 'बालेन्दु' उपनाम भी लिखते थे। [प्र० वि०]

११२, मकबूलगंज,
लखनऊ
२४-९-३६

प्रिय मित्र,

तुम्हारा कृपा पत्र मिला। मैं इसे तुम्हारी कृपा ही समझता हूँ क्योंकि किसी पत्र की स्वयं मुझे आशा न थी। धैर्य से प्रतीक्षा करते मैने भी लिखने का कष्ट न उठाया था। कानपुर तक तुम्हे मेरी कविता याद रहीं, धन्यवाद। सच तो यह है कि रोटियों और परवर की तरकारी का तुम्हारा स्मरण मुझे उससे अधिक सुख देता है। दुर्भाग्य से आँखों के कष्ट के कारण अब एक महाराज रख लिया है, अब वे आनंद कहाँ ?

परंतु अपनी स्मरण शक्ति का एक अद्‌भुत नमूना तुमने अपने पत्र में ही दिया है। तीसरे पेज में श्री बलदुवा का गीत उद्धृत करने की बात कह अपने लेखो की चर्चा छोड देते हो। चौथा पन्ना कोरा ही आया इसका अफसोस। श्रीमती होमवती का पत्र तुमने अनधिकार मेरे पास भेजा। वह भी चार लाइनों को छोड़ कोरा। पोस्ट आफिस को जो पैसे दिए जाएँ उनका पूरा उपयोग होना चाहिए।

मालूम होता है, तुम अपनी कविताएं हममे जल्दी छपवाओगे। आशीर्वाद देने के मैं योग्य नहीं। तब तक यहीं से उन्हें मेरा प्रणाम स्वीकार करो।

यह शायद तुम्हारा आख़िरी साल Law का है। सोच-समझकर Essay लिखने पर तुलना। वैसे तो तुम्हारे इस कार्य मे मुझे आनद होगा ही। सलाह देने से बढ़िया मैं बहुत कम काम कर सकता हूँ, इसमें अपनी ज्ञान गरिमा का मधुर अनुभव होता है, साथ ही हल्दी फिटकरी भी नही लगती। सलाह जब लिखने के बजाय मुँह से दी जावे तब तो और भी आनंद।

"हिंदी काव्य की कोकिलाएँ" पुस्तक शायद तुमने देखी हो, न देखी हो तो कोशिश करके देख लेना। उसमें एकत्र पंचम स्वर सुन पड़ेंगे। चाँद की छः महीने की फाइले देखना अत्यंत लाभदायी होगा। तुम किस दृष्टिकोण से यह लेख लिखोगे, मैं नहीं जानता। मेरी क्षमता में उनके भावों का यथासंभव वैज्ञानिक विश्लेषण हो तो अच्छा। पर्दे के उठने से किसी के कोमल भावों ने सहसा करवट बदली है, तो कोई उन्हें डंके की चोट पर कहती आई है, किसी ने रहस्यवाद द्वारा अपनी भावुकता को प्रकट किया है, अनेकों [अनेक] ने घरेलू अनुभवों की बात कही है। दिनेशनंदिनी के गद्य गीत शायद देखे हों, प्रचण्ड जाग्रति [जागृति] है। सुधा में मीरा मित्रा के गीत विशेष Representative होते हैं। एक में लिखा था—

प्रियतम एक बार बतला दो
कब होगा तेरा सहवास !

कल "उद्गार" मिली। ज़ोर से चिपकाने से तीन पैसे से बैरंग हो गई थी। इस पुस्तक में व्यक्तिगत दुःख का खुला उल्लेख है, उसके साथ सभी को संमवेदना हो गी। मुझे भी है। कवि अपनी कला द्वारा इन्हीं निजी बातों के ऊपर हावी हो जाता है। इसलिए दुःखी आदमी को देख दया आती है पर दुख की कविता पढ़ने पर आनद भी आता है। यहाँ कुछ कविताओं को छोड़ वे इस दुख के ऊपर नहीं उठ सकी है। ऐसी Sincere पुस्तक को काव्य आलोचना का विषय बनना मुझे खटकता है, उसे तो private circulation के लिए छपाना चाहिए था। परंतु लेखिका में प्रतिभा है और वह मार्जित हो अच्छी कृतियाँ दे सकती हैं, इसमें संदेह नहीं। मेरी समझ मे उन्हें छंद ज्ञान के लिए कोई छोटी पुस्तक पढ़ लेनी चाहिए, छंदो का नाम याद रखने के लिए नहीं, वरन् जो लिखती है उसे ठीक लिखने के लिए। वही तब उनको अधिक सांत्वना करेगा और आनंद भी देगा। कविता की पुस्तकें पढ़ें तो कुछ ही चुनी हुई—सुभद्राकुमारी का "मुकुल" मैथिलीशरण का जयद्रथवध आदि। आजकल की कविताएँ पढ़ने से उनकी मौलिकता के लोप हो जाने का भय है। भाषा सुधारने के लिए गद्य की पुस्तकें भी पढ़ें। यह सब मैं इसलिए नहीं लिखता कि वे कवयित्री ही बनकर रहें या अन्य महत्त्वाकांक्षाएँ पालें; केवल इसलिए कि जो कार्य करती हैं, अधिक सुचारु ढंग से करें।

पृ० २ पर 'परिचय' कविता मुझे सबसे अच्छी लगी। निर्दोष और सुंदर। ११—पर ऊषा की 'किरण कलम' मुझे बड़ी अच्छी लगती है। १४—पर आँसुओ से घावों का धोना सुंदर भाव है। १७—पहेली का Burden बड़ा अच्छा आता है। २८—पर के दो बंद सुंदर है। ३२—शायद इसी के लिए तुमने लिखा है—सुदर से भी आगे —हृदय सिंधु का मोती आँसू, नैन सीप से निकल गया। ३६—पूजा की जून अच्छा मौलिक प्रयोग है। तुम चाहो तो यही बातें आलोचना में भी प्रकाशनार्थ लिख सकता हूँ।

६.१०.३६

29 सितंबर को निराला जी यहाँ आये। परसों अलहाबाद [इलाहाबाद] गये। वहीं से बनारस जायेंगे। 'गीतिका' और 'निरुपमा' छप गई हैं। मैं परसों से सर्दी जुकाम से अस्वस्थ हूँ। इस समय भी जी अच्छा नहीं है। ईस पत्र को यहीं समाप्त कर, उत्तर आने पर फिर लिखूँ गा।

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

10.10.36

अभी तुम्हारा पत्र मिला। बड़ी ग्लानि हुई। बड़ा गधा हूँ। दिन-भर घर में रहता हूँ। शाम को ६ बजे बाहर निकलता हूँ। टिकट न होने से यह पत्र पड़ा रहा,

यद्यपि रोज़ सबेरे उठकर टिकट लाने की प्रतिज्ञा करता था। आज सबेरे चौबे जब स्कूल गया तो उसने कहा—मैं आज जल्दी डेढ़ बजे आऊँ गा और साइकिल पर जा पो०आ० से टिकट ला दूँ गा। अगर वह न लाया तो मैं आज जरूर जाकर ले आऊँ गा और यह पत्र तुम्हें कल जरूर मिल जायगा। बस क्षमा करना। बीबी [बीवी] भी नाराज़ है। अधिक नाराज़गी न सह सकूँ गा। निराला जी अलहाबाद हैं। सॉनेट फिर

विलास

११२, मकबूलगंज
लखनऊ
१८.३.३८

प्रिय केदार,

मैं कल्पना नहीं कर पा रहा, तुम मुझसे कितना नाराज हो गे, मुझे कितनी गालियाँ सुनाई हों गी, मुझे कितना नीच समझा हो गा···।

जब तुम्हारा पत्र आया था, मै बीमार था···।

बीमारी मे उठने पर मैं फिर Thesis में ऐसा जुट गया कि हर रोज याद कर भी तुम्हें पत्र लिखने क लिए दिमाग को ठंडा न कर सका। बीच में दो पत्रिकाएँ युनिवर्सिटी मे देखने इलाहाबाद भी गया था। वहाँ नरेन्द्र[1] से मिला और तुम्हारा जिक्र भी किया। कुछ झेंप झेंप कर बोल रहा था; शमशेर से मिलना चाहा परंतु Mr. Dev, painter[2] के यहाँ देर होने से Lea 'er Buildings[3] लौट आया और न मिल सका। इसका दुख है कि H..du B arding दो दफा गया परंतु पहले से न मालूम होने से मिल न सका। यदि उन्हें पत्र लिखो तो लिख देना, मैं उनसे मिलने के लिए कितना उत्सुक था। बलदुआ[4] को पत्र लिखो तो लिख देना, मैं उनसे मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ था और उन्हें याद किया करता हूँ।

Thesis खत्म कर Sidh.nt[5] को दे दिया है। अब देखकर दे दें तो फिर आखिरी बार छापूँ। क्या पत्र जल्दी दो गे?

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

---

1. मार्च सन् 38 तक नरेन्द्र, शमशेर और केदार कवि रूप में काफी विख्यात हो चुके थे। तीनों आपस में मित्र थे।
2. चित्रकार देव इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे अंग्रेजी के अध्यापक थे, बाद को प्रोफेसर हो गये थे।
3. लीडर बिल्डिंग में वाचस्पति पाठक के यहाँ मैं ठहरा था।
4. बलदुआ केदार के मित्र और उस समय के उदीयमान गद्य लेखक थे।
5. सिद्धान्त लखनऊ विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्रोफेसर थे।

तुम्हारी कविताओ की नरेंद्र से खूब तारीफ की थी, उसे ऐतबार ही न होता था !

रा० वि०

112 Maqboolganj,
Lucknow
31.8.38

प्रिय केदार,

जरा साँस लेकर जल्दी ही मैं तुम्हे पत्र लिखने बैठा हूँ। दो महीने से समझो दौड मे ही हूँ जिसमे साँस लेने की फुर्सत नही मिली। जुलाई मे एक महीने का युनिवर्सिटी मे पढ़ाने का काम मिला। उसके बाद ही छः महीने का फिर मिला। दोनों दफें अलग अलग क्लासें पढ़ानी थी। इसलिए Preparations आदि और कॉलेज के काम मे व्यस्त हो जाता था। दूसरी बार तो ऐसा हुआ कि शाम को खबर लगी और दूसरे दिन मे क्लास लेना पडा। इकदम से इसलिए बहुत काम करना पडा।

रूपाभ मे कविताएँ देखी हो गी। तुम्हारी 'शारदीया' प्रकाश मे आ गई। चकल्लस का भाभी अंक निकल गया। अक— भाभी के ही साथ सार्थक है। देखा कि नही ? निराला जी का 'देवर का इन्द्रजाल' मजेदार है। उच्छृंखल का विज्ञापन भी निकल गया है। दिवाली तक मित्रों का विचार है निकालने का।

अपने हाल लिखो। खूब नाराज हो गए हो गे। इस आलस्य मे इस समय इतनी आत्मग्लानि हो रही है कि लिख नही सकता बस, अंतिम बार क्षमा करना। कान पकड़ता हूँ, अब देर नही हो गी। तुम्हारा पत्र बहुत सुदर था। गद्य-काव्य। गद्य पर सुदर आधिपत्य। बाद मे ये पत्र प्रकाशित होने चाहिए। मुर्गा[1] भेजो।

रामविलास

112, Maqboolganj,
Lucknow,
6.9.38

···आप भी क्या मौके से चिट्ठी लिखने बैठे थे जब जवाब आने ही वाला था। और आपकी समझदारी की क्या तारीफ करूँ। समझते है कि चिट्ठी पढ़ने की फुर्सत भी न मिले गी। जब कि दो दफे तो अभी ही उसे पढ़ गया हूँ···। तुम्हारे

1. केदार जी का एक लेख। [प्र० त्रि०]

पत्रों में भला क्या रिसर्च करूँ गा ? जितने पुराने पड़ गये हैं, वह तक याद हैं। टेढ़े हर्फों वाले[1] मसूरी में मिले, रेल की पटली की [के] किनारे के···।

पद्य न मिलने से तुम्हारे गद्य-काव्य से ही संतोष, पर आगे ऐसी गुस्ताखी न करना। तुम गद्य बहुत सुंदर लिखते हो, कुछ Discriptive Essays लिख रखो। जब प्रकाशन शुरू हो गा तब धडल्ले से। इक दम से हिंदी संसार को सर पर उठा लें गे (चाहे वह हमें पैरों के नीचे ही कुचलना चाहे)!···

चकल्लस भिजवाने का प्रबंध करूँ गा। उसी में उच्छृंखल का विज्ञापन है, तुमने उसका नक्कारा न सुना हो तो आश्चर्य क्या जब भाभी अक ही नही देखा। थीसिस खुद छापने का दम नही, इसलिए एक साहब के मार्फत कुछ पैसा देकर छापने के लिए दे रहा हूँ। वाकई, इस बला से आजिज आ गया हूँ···।

तुम्हे वकालत में दिलचस्पी है, यह सुनकर प्रसन्नता हुई। यहाँ तो युनिवर्सिटी जाना भी खलता है। आराम से लेटना, पढ़ना, लिखना, घूमना, सब पर प्रनिबध लगा है। सोचता हूँ, क्या ऐसे ही जीवन गुजारना पड़े गा!···

[रामविलास शर्मा]

112, Maqboolganj,
Lucknow,
8.11.38

डियर केदार—

तुम्हारा पोस्ट कार्ड मिला। उसका उत्तर लिख रहा हूँ जैमे आज ही मिला हो। नरोत्तम इलाहाबाद है, वही रहे गा। उमका पता 259 Shahganj है (या c/o Pathak Leader) लेख और कहानी उसी के पते से भेज दो। उच्छृंखल नवंवर के अंत तक निकल जाय गा। 'देवताओ की आत्महत्या' थोड़ी इधर उधर

1 कुछ दिन केदार के दाये हाथ में तकलीफ हो गयी थी। तब वह बाये हाथ मे पत्र लिखा करते थे। उन्ही के टेढे हर्फों का जिक्र है। जुलाई 1943 मे लखनऊ छोड़कर मे आगरे गया तब मेरी अनुपस्थिति मे वे पत्र नष्ट हो गये। प्रोफेसर सिद्धान्त के आदेश मे मैं मसूरी गया था। मैं उनके परीक्षा कार्य में सहायता करता था। और वह मेरी थीसिस पढ़वाकर सुनते थे। केदार के पत्र वहाँ भी पहुंचते थे। केदार का घर बांदा के रेलवे स्टेशन के पास है। उनके गद्य-पद्य दोनो मे रेल की पटरियो का जिक्र रहता था। अमृतलाल नागर लखनऊ मे साप्ताहिक "चकल्लस" निकालते थे और उनके सहयोगी नरोत्तम नागर "उच्छृंखल" निकालने की योजना बना रहे थे।

बदल कर दे दी है। आजकल D···d Thesis type कर रहा हूँ। इससे अभी इतना ही।

देर के लिए······

तु०
रामविलास

P. S. Send your things
soon to Nagar

259, Shahganj
alld,
[20.12.38]

भाई,[1]

पत्र मिला। शर्माजी आ गए हैं। आपकी कसर है। तुरंत चले आइए। पूरा उच्छृंखल मण्डल जमा हो जाए।

शेष बातें मिलने पर

25 को जरूर।

तुम्हारा
नरोत्तम

दोस्त —

२३ तक रहेंगे। यह तार पाते ही घर से कोर्ट से कर्त्ती से लीडर प्रेस इलाहाबाद चले आओ।

आज सबेरे यहाँ आया हूँ

तुम्हारा
रामविलास

1. कार्ड का ऊपरी हिस्सा नरोत्तम नागर का लिखा है नीचे का मेरा। दोनों के बीच मे "25 को जरूर" नरोत्तम ने लिखा था।

मसानीलाल भवन,

सुंदरबाग—लखनऊ

२६-७-३६

प्रिय केदार,

सब ठीक है। चिंता न करो। तुम्हारा पहला पत्र मिला तो सोच रहा था कि उत्तर लिखूं कि नरोत्तम का पत्र आया कि वह यहाँ २१ को (शुक्रवार) आ रहा है। मैंने मोचा कि आ जाए तभी उत्तर लिखूं। जब तक वह रहा, लिखने की फुर्सत न मिली। कल जब चला गया, तब तुम्हारा दूसरा कार्ड मिला। मैंने तुम्हें शिवपुरी से एक पत्र लिखा था, सो मिला कि नही ?

बापू अंक प्रेस की गड़बड़ी से नही निकला। उच्छृंखल मासिक के रूप में न हो [कर] अलग अलग पुस्तकें बन कर निकले गा। यानी प्रत्येक पुस्तक एक ही विषय पर। बापू अंक इस तरह दो भागों में निकले गा। एक study नरोत्तम ने लिखी है जो खुद एक किताब हो जाय गी। पुस्तक की कीमत १) हो गी। १) प्रवेश फीस देकर स्थायी ग्राहकों को ।।) में मिले गी। सदा की भाँति इस स्कीम से भी नरोत्तम को बड़ी-बड़ी आशाएँ है।

मैं एक साल के लिए युनिवर्सिटी में फिर काम कर रहा हूँ। ६ सितंबर को कुछ किताबो की आलोचना ब्राडकास्ट करने का निमन्त्रण मिला है। शायद अनामिका, युगवाणी, और प्रवासी के गीत पर बोलूँ।

तुम्हारी कुल कविताएँ कितनी हुई ? लिखते रहो ५-६ महीने मे रुपया इकट्ठा कर छपाये गे। कुछ नया लिखा हो तो भेजो।

कल पानी खूब बरसा है। आनंद है।

तु० रामविलास

Telegram : 'Chakallas' Lucknow

CHAKALLAS

(*Weekly Magazine*)

The only exponent of the lighter vein in Hindi Journalism with distinction

Good humour is the
health of the Soul
—Stanislaus

Ref. your letter of 28-7-39
9 P. M.

Masani Lal Bhawan
Sunderbag, Lucknow
13-8-39—8 P. M.

प्रिय केदार,

तुम्हारा पत्र मिला। यहाँ इस कदर बादल थे कि पत्र ही न लिख सका। अब भी आसमान में छाये ही रहते हैं। शमशेर का पत्र आया था और उसने इलाहाबाद के बारे में भी यही लिखा था।

शायद अपना पत्र तुम खुद पढ़ो तो अब आश्चर्य करो। आखिर इतना रंजोगम सिर्फ इसलिये कि उच्छृंखल बंद हो गयी और वह भी केवल मासिक पत्र के रूप मे। नागर का पत्र आया है कि सितबर में वह तीन किताबों का सेट निकाल रहा है। कीमत १) होगी फी किताब १) देकर मुस्तकिल ग्राहक बनने वालों को फी किताब ।।) [आठ आना] मे पड़े गी। मै समझता था कविता तुम मेरे लिए लिखते हो। पब्लिसिटी का कोई साधन न होने पर ये पत्र तो है, इनमे तो लिखा करोगे लेकिन मालूम होता है कि पत्रो मे भी तुम्हारा गद्य काव्य समाप्त हो गया। इस पत्र मे तुमने वह छायावादी वेदना प्रकट की है कि महादेवी वर्मा भी मात हो जायें। वाह मर्दे, तेरा लिखना न लिखना अगर एक मासिक पत्र के निकलने न निकलने पर निर्भर है तो तेरा न लिखना ही अच्छा। मेरी खुद की बहुत सी स्कीमे है लेकिन अभी नही बताऊँ गा जरा तुम्हारा मूड ठीक हो जाय।

अमृत के यहाँ बैठा हूं। हजरत है नही नौकर से कमरा खुलवा लिया है। पास पढ़ीस जी भी है। गोमती की तरफ से ऐसी बढ़िया हवा आ रही है कि कुछ गभीर लिखना नामुमकिन मालूम होता है। मैने एक भी कविता नही लिखी। प्रेमचद पर २ अध्याय लिखे है। आजकल खाने कसरत करने और सोने के सिवा और कुछ अच्छा नही लगता।

तुमने जो कुछ लिखा हो जरूर भेजो। तुम्हारा "चंदगहना" मालवीय जी (मेरे मित्र) को बेहद पसद है। कविता का जिक्र छिड़ते ही वह उसका नाम लेते है। बुरी तरह उनके दिल मे तुमने घर कर लिया है।

मोटे से नही मिल सका। आओ तो लखनऊ। बीबी [बीवी] से ही मिलने के बहाने आओ।

तुम्हारा रामविलास शर्मा

आपका [आपकी] चंदगहना मुझे भी बेहद पसंद है। यहाँ तक कि मैंने 'रूपाभ' मे जो कुछ छपा था वह भी देखा। — पढ़ीस[1]

---

1. प बलभद्रप्रसाद दीक्षित 'पढ़ीस'—अवधी के क्रांतिकारी कवि और लेखक। यह अंश पढ़ीस जी ने डॉ० रामविलासजी के इसी पत्र के ऊपर के शेष हिस्से मे लिखा था। [अ० त्रि०]

मसानीलाल भवन, सुंदरबाग,
लखनऊ
(सितंबर १६३६)

प्रिय केदार,

ऐसा लगता है जैसे अभी कल ही तुम्हारा कार्ड आया है और मैं उसका जवाब लिखने बैठा हूँ। उस पत्र में तुम्हारे हाथ की लिखी तारीख देखी तो अचंभे में पड़ गया। न जाने कब से कल-कल करते आज सबेरे लिखने बैठा हूँ।

सबेरे उठ कर घूमने जाता हूँ। उसके बाद एक घंटा अखबार पढ़ता हूँ। उसके बाद थोड़ी देर तक कुछ अपना पढ़ना, उसके बाद कालेज का काम। ८ बजे उठ-कर—कसरत—नहाना—खाना—सवा दस बजे कालेज। ढाई बजे आकर खाना। कुछ पढ़ना बच्चों को पढ़ाना। फिर सोना। सोकर आध घंटे पढ़ना—घूमना—रात को प्रेमचंद वाली किताब लिखना। आज कल जीवन की बैलगाड़ी इसी गति से चल रही है।

निराला जी साहित्य सम्मेलन में साहित्य परिषद् के सभापति हुए है। मुझसे भी वहाँ चल कर एक पेपर पढ़ने को कहा है। नरोत्तम भी वहाँ रहे गा। अमृत भी जाय गा। तुम भी आओ तो अच्छा रहे। मैंने सोचा है "हिंदी साहित्य और राज-नीति" पर बोला जाय—हिंदुस्तानी राजनीति की कमजोरियाँ, क्या साहित्य उससे सहानुभूति रख सकता है ? और हि० राजनीति के घातक प्रभाव से अपनी रक्षा कर साहित्य ने राजनीतिज्ञों के चलने के लिये एक स्वतंत्र और आत्म-सम्मान युक्त मार्ग छोड़ दिया है।

कविताएँ ज़रूर भेजो। जितनी भी लिखी है। आजकल अमृत का कुछ हाथ माधुरी में है। हो सका तो एक आध दिसंबर के अंक में जा सकें गी। नवंबर के अंक से "हमारे नये साहित्यिक" एक सीरीज अमृत शुरू कर रहा है। पहला लेख मैंने "बलभद्र दीक्षित" पर लिख कर दिया है। सितंबर वाली में प्रेमचंद पर एक लेख मेरा निकला है। तुम कोई Humorous sketch या लेख माधुरी के लिए भेजो। पैसा भी दिलाये गे। Sex को खुले रूप में avoid करते हुए कुछ कुछ जैसे "अमरूद" था। Reflective-reminiscent—local colouring लेता हुआ जैसे अक्सर तुम्हारे पत्र होते हैं। उत्तर जल्दी देना।

तु०
रामविलास

112, Maqboolganj
Lucknow
18-10-39

प्रिय श्री केदार दोस्त,

तुम्हारी चिट्ठी मिली। न लिख सकने योग्य रहने पर भी लिखवाने के लिए, लिखने वाले को भी धन्यवाद। थीसिस में फँसा रहने से जल्दी जवाब न दे सका। उम्मीद है दिसम्बर के अंत तक सब खत्म हो जाए गा। उधर झाँसी आऊँ गा और तुम्हें देखने भी। केन देखने की बड़ी इच्छा है। निराला जी मेरे उस मकान में रहते हैं, जिसमें तुम मुझसे मिले थे; मैं पास के दूसरे मकान में। बीवी-बच्चों के साथ। चौबे मजे में है।

तु०
रामविलास

Tele. 'Uchchhrinkhal', Alld

UCHCHHRINKHAL

(Monthly Magazine)

The only agressive publication among the progressive ones devoted to Sex, Psychology nnd Literature

Ref No...... २१-२-४०

कैलाशचंद्र दे लेन—मकबूलगंज
लखनऊ

प्रिय केदार,

सोचते-सोचते कि फुर्सत मिले तो लंबा-सा पत्र लिखूँ—यह दिन आ गया। तुम्हारी दूसरी चिट्ठी भी आ गई। तुम्हें चिट्ठी लिखने की बात रोज सोचता ज़रूर था। इधर धर्मपत्नी जी कुछ बीमार हो गई थीं—बच गईं—अब सब ठीक है।

अब भी फुर्सत में नहीं लिख रहा। छुट्टियों के बाद आज कालेज खुला है। खाना खाकर नींद लगी है। इस बंसत में नव जीवन की जागृति निद्रा में होती है। धूल उड़ती है और गर्मी आ रही है। दिन-रात के पहरों में ढूंढ़ने से शायद कहीं बसंत मिले।

नागर कलकत्ते गया था। वहाँ से उसका एक पत्र आया था—मालूम नहीं वह

अब वहाँ है या नहीं। मैंने प्रेमचंद पर अपनी किताब लिख ली है और शायद एक महीने में छप जाए गी। तुम्हारा उपन्यास नहीं देखने को मिला। तुम्हारी बहन के विवाह में आने की कोशिश करूँ गा यद्यपि उस समय तुम्हें फुर्सत तो क्या हो गी?

बहुत दिनों से एक कविता की किताब लिखने की सोच रहा हूँ। शायद मार्च तक खतम कर डालूँ।

माताव्रत[1] की Review भेज सकते हो। बाँदा का जो हाल हो लिखो।

तु०

रामविलास

अच्छी चिट्ठी लिखो गे तो जवाब जल्दी पाओ गे। हम लोगों ने जो 'Crime' के उपन्यास के बारे में बात की थी, लिखो तो उसके प्रकाशन के बारे में प्रबंध कर दूँ गा।

बाल साहित्य संघ

बच्चों को मनोरंजक, राष्ट्रीय और वैज्ञानिक
साहित्य देने की नई योजना

स०—

K. C. Dey Lane
मकबूलगंज
लखनऊ
२७-५-४०

प्रिय केदार,

जब तक तुम्हारे पहले पत्र के उत्तर की तैयारी कर रहा था तब तक तुमने एक दूसरा और भेज दिया। मैं बहुत दिनों से एक कविता की पुस्तक आरंभ कर रहा था परंतु उसके श्री गणेश की शुभघड़ी दूर ही खिसकती जा रही थी। उसका समर्पण बड़ी मुश्किल के बाद अब लिख पाया हूँ। इसलिए आशा है कि अब शीघ्र ही चल निकले गी। इसके कुछ अंश तुम्हे भेजना चाहता था इसीलिए बिलंब हुआ। परसों दीक्षित (पढ़ीस) जी की लड़की की शादी थी। बहुत से साहित्यिक और कांग्रेस के कार्यकर्ता पधारे थे। निराला जी भी गए थे।

मेरी प्रेमचंद वाली पुस्तक तो समाप्त कब की हो गई थी परंतु प्रकाशक महाशय न जाने किस क्षीरसागर मे सो गए कि तब से खबर ही न ली। मैं भी

1. मातांव्रत—नरोत्तम नागर की व्यंग्य पुस्तक 2. क्राइम सबंधी कोई जासूसी उपन्यास लिखने की योजना थी।

कुछ उदासीन-सा पड़ा रहा।

श्रीमती जी एक विवाह में उन्नाव गई हैं जिससे गिरस्ती [गृहस्थी] का यह हाल है कि आँगन में अँगीठी पर दाल चढ़ी है और मेरे हाथों में पसीना चुचुआ रहा है और यों तुम्हें कार्ड मिलते ही पत्र लिख रहा हूँ।

आजकल मैं अपनी उसी कविता पुस्तक "अवतार" पर जुटा हूँ। यह एक प्रकार का प्रबंध काव्य है पिछले आंदोलन को लेकर लिख रहा हूँ। गाँधी जी अवतार हैं। अभी इसके बारे में और किसी को कुछ न लिखना। इलाहाबाद से आते-जाते लोगों से नरोत्तम का समाचार मिलता है परंतु पत्र नहीं आया।

यह समर्पण तुम्हारे लिए ही है।

अवतार······
एक सतत संघर्ष,
बंधु उड़ते झंझा से मास-मास दिन वर्ष
वेदना दुख दारिद्र्य शोक में भी अक्लांत,
—नैश निर्धूम लपट जैसे मसान में -
अप्रतिहत चेतना सहन करती कठोर आघात।
कौन वह जीवन से प्रिय जीवन का आदर्श ?
क्रुद्ध जब ज्येष्ठ प्रभंजन, त्रस्त पत्र, संत्रस्त
धरित्री धूलिभरा आकाश
•कुसुम बिखरा समीर में गंध,
धूलि में मिल जाता भावी वसंत
का दूत।
पूर्ण कर कौन अमर उल्लास ?
अनागत की असंख्य संतति में बन उत्कर्ष
चिरंजीवी हो यह संघर्ष !

बहुत दिनों के बाद कविता लिखनी शुरू की है। पहले से इन पंक्तियों में काफी परिवर्तन जान पड़ना चाहिए यद्यपि मुझे जान नहीं पड़ता। तुम अपनी राय लिखना।

शेष कुशल।

तुम्हारा
रामविलास

कैलाशचंद्र दे लेन—सुंदरबाग,
लखनऊ
३०-१२-४०

प्रिय केदार,

पत्र मिला। आनंद हुआ। अपनी-अपनी मुसीबत सबके साथ है। यही देखो, पत्र लिखने के लिए भी कठिनता से समय निकाल पाता हूँ। आज रेडियो पर निराला जी की Talk है। पता नहीं तुम सुनो गे या नहीं।

चौबे आज काशी गया है। एम० ए० के एक पेपर के लिए थीसिस लिख रहा है, उसी के लिए पुस्तकें देखने। "हंस" वालों से "प्रेमचंद" पर बातचीत चल रही है। उन्हें पुस्तक भेज दी है। उसी को ठीक करने में इधर लगा हुआ था। ६ जनवरी को भारतेन्दु पर रेडियो से Talk है, कल उसे लिखना है। जनवरी के 'हंस" में शरत् के उपन्यासों पर मेरा एक लेख छप रहा है। पढ़ना। यूरुप के साहित्य का आदि से अध्ययन कर रहा हूँ। उस पर एक पुस्तक लिखने का विचार है। अपनी रचनाएँ भेजो तो कुछ कविताएँ मैं भी भेजूँ गा।

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

लखनऊ। सुंदर बाग—के० सी० डे लेन
१२-७-४१

केदार,

तुम्हारा कार्ड मिला। कई महीने पहले तुम्हें एक चिट्ठी लिखी थी, परंतु उसका उत्तर न मिला। आलस से फिर न लिखा। [तुम] मुझे भूल सकते हो लेकिन मैं तो तुम्हें सदा याद करता रहता हूँ। भविष्य में मासिक पत्रिकाएँ निकालने के जो आयोजन बना करते हैं, उनमें शेष [शीर्ष] लेखक का स्थान तो तुम्हे ही प्राप्त है। मैं तुम्हारी रचनाएँ पढ़ता रहता हूँ और सचित्र वार, तूफान[1] आदि में भी कुछ देखा था। तुम्हारी कविताओं का Rhythm मुझे अब भी टूटा हुआ मालूम होता है। चौबे[2] अखाड़े जाता है। हिन्दी में एम० ए० कर लिया है। मालवीय जी तुम्हें बहुत याद करते हैं। पुत्र सं० ४ है। आजकल पुरवाई के झोंकों पर सफेद बादल उड़े जाते हैं, पर बरसते नहीं; नाज महँगा है। तुम कुछ Essays क्यों नहीं लिखते? मैंने तुम्हें जो Essays की किताब दी थी, वह पढ़ी या खो दी?

सबको नमस्कार।

तम्हारा
रामविलास

---

1. "सचित्र—वार", "तूफान" आदि उस समय के साहित्यिक पत्र हो गे।
2. चौबे—मेरे भाई रामस्वरूप।

सुदरबाग, लखनऊ
१०-९-४२

प्रिय भाई,

एक पत्र भेजा कोई उत्तर नही। अभ्युदय मे अपने Rural Sketches क्यो नही भेजते। तुम्हारी कविताएँ मैने नरोत्तम[1] के पास भेज दी है। मैंने हस मे वीरेश्वर[2] जी की एक कविता देखी। बहुत पसद आई। तुम मुझे उनका पता भेज सकते हो तो भेज दो। उन्हे कविता लिखने के लिए उकसाओ। लखनऊ Radio से "नये जाविये" (New Angles) कहकर एक प्रोग्राम शुरू हुआ है—once a month उसमे नये ढग की चीजे[3] Broadcast की जाती है। तुम मुझे अपनी कोई बढिया Rural Sketch या Calender सुदरी-सी चीज, या माधुरी मे "अमरूद" सा criticism भेजो। छोटा (4 mts तक का) और सरल, हास्य-व्यग्य पूर्ण जरूर। अभ्युदय मे बराबर लिखो। मै भी लिखूँगा।

तु०
रामविलास

१६-९-४२

प्रिय केदार,

पत्र मिला और "समोसे" भी। "समोसे" मजेदार है। Radio के लिये ठीक होगे या नही, कह नही सकता। average listener को पत नि० [निराला] मे उतना interest नही जितना हमे। मै इमे दिखा लूँगा। न ठीक हुआ तो अभ्युदय को भेज दूँगा या हस को। तुम लिखते रहो। कोई ऐसी Skit भेजो जिसमे average educated listener interested हो—व्यग्य और हास्य लिये—शैली जैसे किसी को कोई चीज सुना रहे हो। वीरेश्वर जी ने अब तक कितनी कविताएँ लिखी हैं, और वे कहाँ छपी है या मिल सकती है। उनसे कहिए कि 'लेखनी दधीची ले कर में' दूसरो के लिए ही है क्या? करवी मे निराला जी सख्त बीमार हैं। प० रामलाल गर्ग के यहाँ ठहरे है। उन्हे देख आ सको और मुझे हाल लिखो तो बडा अच्छा हो। मै भी बाँदा आने की कोशिश कर सकता हूँ। लेकिन तुम उन्हे invariably देख आओ। शेष कुशल।

तु०
रामविलास

1. अभ्युदय में कुछ समय के लिए नरोत्तम नागर काम कर रहे थे।
2. वीरेश्वर वकील थे, बाँदा मे ही रहते थे, कुछ समय तक प्रगतिशील लेखको के साथ थे।
3. नये ढग की चीजे—हिन्दी, उर्दू के प्रगतिशील लेखको की रचनाएँ।

१७-९-४२

प्रिय केदार,

आज नरोत्तम का पत्र आया है—निराला जी इलाहाबाद मे है। मैने तुम्हे कर्वी[1] आने के लिए लिखा था, उसकी जरूरत नही रही। कद्दू शाह के समोसे[2] नरोत्तम को भेज रहा हूँ। उसे मैटर की जरूरत है।

तु०
रामविलास

के० सी० डे लेन—सुंदरबाग
लखनऊ
२२-९-४२

प्रिय केदार,

मै नरेन्द्र के लिए एक आधुनिक कविताओं का संग्रह कर रहा हूँ। तुम्हारी और श्री वीरेश्वर की रचनाएँ– सब एक साथ --देखना चाहता हं जिससे ठीक चुनाव हो सके। कहो ये कैसे संभव हो ? इधर आ तो नही रहे हो ? अगर आओ तो सब लेते आओ। 'रूपाभ" में एक श्री रामदुलारे की कविता चंद्रग्रहण छपी थी। उनका पता क्या तुम्हे मालूम है ?

तु०
रामविलास

संग्रह छपने मे अभी विलंब हो गा ही। अगर नये-नये ढग की कुछ कविताएँ और लिख सको तो बेजा नही। तुम्हारी १० कविताओ तक लेना उचित समझूँ गा।

रा० वि०

११-१-४३

प्रिय केदार,

तुम्हारा लेख-पत्र आदि मिले। यहाँ एक बहुत दु:खद घटना हो गई। ८ जनवरी की रात को स्वर्गीय बलभद्र दीक्षित जी[3] के लड़के बुद्धिभद्र का भी देहात हो

1. कर्वी में कुछ समय क लिए निराला थे।
2. कद्दू शाह के समोसे'—केदार की कोई व्यग्य रचना।
3. बलभद्र दीक्षित पढ़ीस—अवधी के कवि और हिंदी के समर्थ गद्य लेखक। बुद्धिभद्र सरोद बजाते थे, कुछ दिन पिता, पढ़ीस जी, के साथ बॉम्बे टाकीज में काम कर आये थे। फिर पिता पुत्र लखनऊ के देहाती कार्यक्रम का संचालन करते थे। बुद्धिभद्र ने बच्चों के लिए कुछ अच्छी कहानियाँ लिखी थी।

गया। खेतों में सर्दी लग जाने से निमोनिया हो गया था। केवल पाँच दिन बीमार रहे। बीमारी की खबर पाकर मैं गया लेकिन विलम्ब से पहुँचा, भेंट न हो सकी। मौखिक सहानुभूति के बदले मैं चाहता हूँ कि उनके मित्र उनके परिवार के लिए कुछ मासिक बचाया करें, परंतु इसका विज्ञापन न होना चाहिए। यह अपने मित्रो तक ही रहे। उनके परिवार में बुद्धिभद्र तथा कक्कू[1] की विधवा स्त्रियों तथा पाँच छोटे बच्चे हैं।

तुम्हारा
रामविलास

Ram Bilas Sharma,
M. A. Ph. D.
Dept. of English
Lucknow University

१०-२-४३

प्रिय केदार,

तुम्हारा पत्र मिला। आश्वासन मिला। किन शब्दों में अपने हृदय के भाव प्रकट करूँ?

"साहित्यिकों के परिवारों पर यदि परमात्मा गाज गिराता है तो हम उसे रोकेंगे ही।" इस वाक्य को पढ़ा और फिर पढ़ा। अब याद हो गया है।

सच्ची बात यह है कि मुझे तुम पर गुस्सा आ रहा था। मन कहता था—केदार को रुपये के लिए लिखा तो कम्बख्त सोंठ हो गया। पत्र का उत्तर तो देता।

अब साबित हो गया यह मेरा अहमकपन था। तुमसे ऐसे ही पत्र की आशा थी। रुपये पैसे की बात बाद को। तुम्हारा वह वाक्य नहीं भूलता। इसी Spirit में हिन्दी की विजय है। बिना इसके न हिन्दी है, न हम हैं। तुम मेरे हृदय के बहुत निकट थे। अब उसमें मिल कर एक हो गये हो। मुझे दृढ़ विश्वास है कि जीवन की यह झलक चिरस्थायी हो गी।

"कक्कू" की मृत्यु ने अनेक लेखकों की प्रतिभा को या उनके सोते हुए मनुष्यत्व को जगा दिया है। नरोत्तम ने मुझे इधर इतने सुंदर पत्र लिखे है, जिनकी मै स्वप्न में भी आशा न करता था। मेरा नरोत्तम से काफी मतभेद था। परंतु उस तरह के मतभेदों के ऊपर वह मेरे हृदय से आ मिला है—कक्कू की मृत्यु के बाद।

तुम्हारा लेख माधुरी में छप गया है। एक हफ्ते में अंक तुम्हें मिल जाये गा। 'आग आँसू और जीवन की कहानी' तुमने बहुत अच्छा लिखा है। अभ्युदय में

1. कक्कू—पढ़ीस जी।

तुम्हारी चीजें पढ़ता रहा हूँ, हंस में भी। कहीं-कहीं दृष्टिकोण आदि से थोड़ा-सा असहमत हूँ। परंतु तुम्हारी चीजें मुझे बहुत पसंद हैं। 'प्रगति अंक' के लिए मैंने एक लेख भेजा है—"हिंदी में प्रगतिशील साहित्य"। उसमें तुम्हारा उल्लेख है। लोकयुद्ध में हिंदी कवियों पर लिखा था। उसी का नरोत्तम ने उल्लेख किया था। कटिंग भेज रहा हूँ। वापस कर देना।

आज चुन्नी-उच्चन (बुद्धिभद्र) का छोटा भाई और उसका चचेरा भाई शिव-बिहारी यहाँ पर है। मैं कालेज नही गया। सबेरे से बैठा बातें कर रहा हूँ। मेरा विचार दीक्षित पिता पुत्र पर एक पुस्तक लिखने का है। आशा है, यह मेरी सब पुस्तकों से बढ़िया हो गी।

तुम कविता में 'नारी' पर लिखना कुछ कम कर दो। गाँव देहात पर अधिक लिखो और छंद-बद्ध कविताएँ भी अधिक लिखो। काटो कोटो काटो करवी मुझे बहुत पसंद है। रेखाचित्रों में विषय की गंभीरता और होना [होनी] चाहिए। अर्थात् कोई विशेष सामाजिक तथ्य सामने रखा जाय। 'लौंग' पसंद है लेकिन जरा हल्की चीज है। अभ्युदय में भेज दूं गा। नये जाविये में जो चीज़ें जाती हैं उनके बारे में अनेक कठिनाइयाँ हैं। इसलिए 'लौंग' न जा सकी तो नाराज न होना। और ग्रामीण जीवन को लेकर भी स्केच लिखो। इनका संग्रह युद्ध के बाद जरूर निकले गा। नरेंद्र और मैं एक प्रगतिशील कविताओं का संग्रह निकालने जा रहे हैं। तुम्हारी कविताओं में ५ से १० तक रहें गी। अपनी पसंद लिखो। वीरेश्वर की जितनी कविताएँ मिल सकें भेज दो। 'सत्यशूल' कमाल है। उनसे कहो कि 'प्यारे लेखनी सफल कर ले' यह दूसरों के लिए ही लिखा था! उन्हें अवश्य लिखना चाहिए, न लिखें गे तो मैं बाँदा आकर उनके यहाँ धरना दूं गा।

पढ़ीस अंक एक हफ्ते में निकल जाय गा, तब उसे देखो गे ही। पढ़ीस जी की रचनाएँ पढ़कर अपनी राय लिखना।

मैंने कविताएँ लिखना फिर शुरू किया है। गद्य तो लिखता ही हूँ। कहानी-उपन्यास नाटक लिखने का भी इरादा है। निराला जी पर पुस्तक लिखना आरंभ करने वाला हूँ। भारतेंदु-युग का समर्पण 'श्री केदारनाथ अग्रवाल' को बड़े अक्षरों में छपा है। एक महीने हुए पुस्तक छप गई थी परंतु अभी बँधी नहीं है।

१७-२-४३

तुम्हें पत्र का पहला पन्ना कब लिखा था। भेजने की अभी तक नौबत नहीं आई। संभवतः २४ या ३१ जनवरी के लोकयुद्ध में वह लेख था जिसमें तुम्हारा जिक्र था। कहीं खो गया है, नहीं तो कटिंग भेज देता। कविताएँ इधर कई लिखी हैं। क्रमशः देखो गे। आज पढ़ीस अंक भिजवाया है। पहुँच लिखना।

नरेंद्र के साथ नये कवियों की एक anthology कर रहा हूँ। तुम्हारी कौन सी कविताएँ हों। anthology progressive verse की होगी।

अमृतलाल नागर के साथ New Writing के ढँग का एक छामाही [छमाही] प्रकाशन शुरू करूँ गा। नये लेखको की रचनाओ का संकलन साहित्यिक पत्र, कविताएँ आदि उनमे बहुत कुछ रहे गा। तुम देहाती जीवन के बारे मे कुछ Prose pieces तैयार करो। नरेंद्र की Anthology के लिए अपनी और वीरेश्वर जी की कविताएँ शीघ्र भिजवाओ।

तु०
रामविलास

एक कविता देखो—

चाँदी की झीनी चादर सी
फैली है वन पर चाँदनी।
चाँदी का झूठा पानी है,
झूठी है फीकी चाँदनी।
खेतो पर ओस भरा कुहरा,
कुहरे पर भीगी चाँदनी।
आँखो मे कुहरे मे आँसू
हँसती है उन पर चाँदनी।
दुख की दुनिया पर बुनती है
माया के सपने चाँदनी।
मीठी मुस्कान बिछाती है
भीगी पलको पर चाँदनी।
लोहे की हथकड़ियो सा दुख
सपनो की झूठी चाँदनी।
लोहे से दुख को काटे क्या
सपनो की मीठी चाँदनी।
यह चाँद चुराकर लाया है
सूरज से अपनी चाँदनी।
छिप गया चाँद सूरज निकला,
अब कहाँ [illegible]ी वह चाँदनी ?
दुख और कर्म का जीवन यह
वह चार दिनों की चाँदनी।
यह कर्म सूर्य की ज्योति अमर,
वह अंधकार थी चाँदनी।

Telegram : 'Chakallas' Lucknow

CHAKALLAS

(Weekly Magazine)

The only exponent of the lighter vein in Hindi Journalism with distinction.

Good humour is the health of the Soul

—Stanislaus

Khunkhun ji Road
Lucknow

Ref....... .

Serrah villa
Cadel Road p. o.
Shivaji Park
Dadar, Bombay
[मई १९६३]

प्रिय केदार,

तुम्हारा पत्र लखनऊ मे मिला परन्तु उत्तर यहाँ बबई मे दे रहा हूँ। तुम्हारा पत्र मिलने के पहले मै दो दिन को इलाहाबाद गया था और वहाँ नरोत्तम को लिखे हुए तुम्हारे पत्र मे यह ज्ञान आया था कि तुम कागज पर गोदना गोदकर मुझे भेजने वाले हो।

पहली बात तो यह कि २३, मई को सवा सात बजे लाहौर मे कविताओ मे यथार्थवाद पर मेरी बातचीत सुनना है। उसमे तुम्हारा कई जगह और काफी उल्लेख है। आशा है कि २३ मई तक तुम्हे पत्र अवश्य मिल जाय गा।

दूसरी बात—एक दिन लखनऊ मे तुम्हे उत्तर लिखने बैठा और तुम्हारा कविताओ वाला पत्र ढूंढा तो मिला नही, इसलिए सोचा बबई से ही लिखूँ गा। तुम्हारा ख्याल गलत है कि तुम्हारी कविताए पसन्द नही थी, इसलिए मैने जवाब नही दिया। असल मे तुम्हारी कविताओ के बारे मे तुम्हे विस्तार से लिखना चाहता था, इसके लिए अवकाश खोज रहा था, और अवकाश नही मिल रहा था, इसीलिए देर पर देर होती गई। और अब भी जैसा चाहता था वैसा लिख नही पा रहा हूँ।

तुम्हारी अधिकांश कविताओ मे जल्दबाजी के चिन्ह विद्यमान रहते हैं। शब्द और गति को सँवारने की ओर ध्यान कम रहता है। तुम्हारी कविताओ की विशेपता उनका संकेत है—शेष आयु का धुआँ उड़ाता आदि में जैसे। परंतु कुछ

कविताओं में इस संकेत का अभाव या उथला संकेत रहता है। 'जैसे नारी तुम गंदी हो' में। दूसरी बात यह है कि 'नारी' को obsession बनाने से बचो। तुम उस पर काफी लिख चुके हो और यद्यपि अभी काफी लिखा जा सकता है, फिर भी समाज की अन्य महत्वपूर्ण समस्याओं की ओर भी ध्यान दो। कुछ दिन हुए कलकत्ता रेडियो से धान काटने पर एक प्रोग्राम विस्तार किया गया था। उसमें धान कटाई से संबंध रखने वाले गीत स्त्री पुरुषों ने मिलकर बहुत बढ़िया गाए थे। तुमने एक कटई का गीत लिखा था परंतु वह गीत है किसानों को "दिया" गया है, उन्हीं के कंठ से नहीं फूट निकला। यहाँ मैं देख रहा हूँ कि गुजराती और मराठी ग्राम गीतों को लेकर बहुत बड़ा काम हो चुका है, उनके ढंग पर, उनसे भाव लेकर मराठी और गुजराती में काफी साहित्य लिखा जा चुका है। हमारे यहाँ इसका अभाव है। तुम ग्रामगीत एकत्र करके उनके भाव आदि लेकर नये गीत लिखो जिनका संबंध किसान जीवन के विभिन्न पहलुओं से हो। मैंने वीरेश्वर को भी इसके बारे मे लिखा है।

मैंने तुम्हें कुछ छंदोबद्ध कविताएँ लिखने की सलाह दी थी। मुक्त छंद लिखने मे तुम्हें आसानी होती है, और उसका एक अपना आनन्द भी है लेकिन बहुधा मुक्त छंद की पक्तियाँ उस तरह जनता के कंठ में नहीं उतरती जिस तरह छंदोबद्ध कविताएँ। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी कविता ऐसी भी हो जो साधारण जनता को यों ही याद हो जाए। लोकगीतों के ढंग की कविता छंद में होगी ही। तुम मुक्त छंद में लिखो परन्तु इसका भी ध्यान रखो।

लोकगीतों के अलावा बाँदा, बुंदेलखंड, चित्रकूट आदि पर यथार्थवादी ढंग की कविताएँ भी हो। तुलसीदास ने चित्रकूट पर वर्षा का वर्णन किया है परन्तु उससे कौन चित्रकूट को पहचान सकेगा ! नयी हिंदी कविता में ऐसे यथार्थ प्रकृति चित्रण की आवश्यकता है जिससे हम अपने देश को पहचान सकें। दिल्ली की शाम, यमुना, अस्पताल आदि पर भी कविताएँ भेज सकते हो। हंस में कविता-भाग का संपादक मैं ही हूँ, यद्यपि अभी हंस निकलना बन्द है, इसलिए कविताएँ यहीं भेजो और लड़ाई के जमाने में जो महँगी है, गाँवों में जो हाय-हाय मची है, बर्लिन रेडियो लगाकर बाबू जी जो जर्मन की जीत मनाते है, इसलिए कि ठाकुरशाही के दुश्मन रूस को जर्मनी खत्म करना चाहता है, इन पर भी कविताएँ लिखो। हम अगस्त तक एक छमाही प्रकाशन आरंभ करने के विचार में है। अंग्रेजी के New writing के ढंग का—पुस्तक रूप में (डिमाई), एकाकी, कथा, कविता, आलोचना आदि रचनात्मक साहित्य को लेकर। उसके लिए मसाला एकत्र कर रहा हूँ। चीज ऐसी हो जो अन्य प्रांतो के सामने रखी जा सके और केदार की कविताएँ पढ़कर लोग कहें कि हाँ, बँगला और मराठी में ऐसी चीज नहीं है। क्या अनुभूति की तीव्रता है और कैसी सजीव मुहावरेदार भाषा है !

तुम अपनी कविताएँ बराबर भेजते रहो, हाँ अपने पास उनकी एक कापी भी रख लिया करो। दिल्ली में गिरिजाकुमार का पता लगा सको तो उससे मिलना और उससे भी कविताएँ भिजवाना। तुम आजकल क्या पढ़ रहे हो, यह भी लिखना। बाहरी साहित्य से, विशेषकर आधुनिक साहित्य से संपर्क बनाए रखना बहुत जरूरी है। तुम महीने में कुछ न कुछ पढ़ा करो जरूर—अपनी वकालत के अलावा भी।

निराला जी पर कविता इसी दृष्टिकोण से लिखी गई है। वह छायावादी स्वप्न द्रष्टा है, अब वह स्वप्न नही रहे। स्वप्नो का वह सौदर्य उनके यथार्थ जीवन पर व्यग्य करता है। यह वैषम्य मैने व्यक्त करने की चेष्टा की है। परन्तु स्वप्न-द्रष्टा होते हुए भी उन्होने सामाजिक रूढ़ियो के प्रति विद्रोह किया है। उन्होने ही लिखा था—तुझे बुलाता कृषक अधीर और सिहो की माँद मे आया है आज स्यार। उनके इस विद्रोही भाग से हम लोगो की सहज सहानुभूति है और हम उस परिपाटी को अधिक विकसित करके हम आगे बढ़ाना चाहते है। आज जब परिस्थितियो के कारण और स्वार्थी भाइयो के विरोध के कारण वह ध्वस्त और त्रस्त हो गए है, तब कौन ऐसा कृतघ्न होगा जो उनके साथ सहानुभूति प्रकट करना भी अनुचित समझे गा। सहानुभूति प्रकट करना हमारा धर्म है, हमारी कृतज्ञता का प्रकाशन है क्योकि उन्होंने उस विद्रोही परपरा को जन्म दिया है जिसके हम अनुयायी है। और जब निराला जी ने लिखा था, तुझे बुलाता कृषक अधीर, चूस लिया है उसका सार, हाड़ मात्र ही है, आधार ओ विप्लव के पारावार— तब इस परपरा का अत कहाँ हो गा ? उस जन राज्य मे ही जहाँ कृषक इस तरह आसमान की ओर फिर दुर्बल हाथ न उठाए गा। नये कवियो का सामाजिक आदर्श कौन-सा है ? वही जिसका सकेत निराला की कविताओ मे मिलता है। वह आज ध्वस्त और व्यथित हैं और तुम और जो भी उस विद्रोह पथ पर बढ़े गा, उसे कठिनाइयो से जूझना हो गा। उस पथ पर चलने के लिए मर मिटने को लगन चाहिए। इसीलिए तुम जैसों मे विश्वास करके मैने लिखा था कि साथी अपने विद्रोही स्वर को दबाओ मत। तुम्हारे पीछे और और नये कवि भी आ रहे है। वे उस जनता के राज्य की स्थापना करे गे। संभव है कविता मे यह सब व्यक्त न हुआ हो, शायद हो न सकता हो। परंतु मेरा दृष्टि-कोण यही था।

खैर, मैंने तो कविता लिखना बंद ही कर दिया है। तुम और वीरेश्वर और नरेंद्र वगैर. को चाहिए कि आधुनिक बँगला, अग्रेजी और मराठी आदि भाषाओ के साहित्य को देखते हुए अपनी कविता को ऐसा समृद्ध करो कि हम उनसे दस हाथ आगे ही रहे, पीछे नही। मैं चाहता हूँ कि जब कोई मराठी या बंगाली साहित्यिक तुमसे या किसी अन्य हिंदी कवि से मिले तो कविता के अलावा तुम्हारे

अध्ययन, विचार गंभीरता, चिंता, और साहित्यिक संस्कृति से भी प्रभावित हो। अनेक बाधाओं के होते हुए भी तुम्हें और अन्य हिंदी कवियों को यह सब करना ही होगा।

बंबई शहर नये ढंग का सुंदर है। समुद्र के किनारे बड़ी अच्छी हवा लगती है। मैं अमृत (नागर) के साथ ठहरा हूँ। १५-२० दिन तो हूँ ही पत्र का उत्तर देना।

तुम्हारा
रामविलास

पु० : इस पत्र में कही उपदेश या गुरुडम की गंध आये तो मुझे अपना ही समझ कर क्षमा करना। वि०

बलवंत राजपूत कालेज
आगरा।
१८-८-४३

प्रिय केदार,

बहुत लज्जित हूँ कि तुम्हें इतने दिनो मे पत्र न लिख सका और इसलिये तुम्हारे सुंदर पत्रों से वंचित रहा।

आगरे आया और बीमार हो गया। लखनऊ मे दो टाक थी, कमजोरी में गया और कमजोर हो गया। अभी recoup नही कर पाया।

तुमने शायद आगरा पहले देखा होगा। अजीब मनहूस जगह है। यहाँ क्यों आ गया? लखनऊ यूनिवर्सिटी की पालिटिक्स की वजह से। फिर वापस जाना चाहता हूँ लेकिन सम्भव नही दिखता।

नागरी प्रचारिणी सभा और बेलनगंज की लायब्रेरी मे हिंदी की काफी किताबें हैं लेकिन और विषयो में प्रायः सब कही सफाचट्ट है। इस साल तुलसीदास पर एक किताब लिखने की सोच रहा हूँ। अभी मकान नही मिला, न शायद साल भर या लडाई भर मिलेगा। इस लाज में एक टीचर और स्टूडेंट्स के साथ हूँ। यही गनीमत है।

अपना हाल लिखो। जुलाई का हंस देखा? 'चार भले आदमी' पर अपनी राय लिखना। बंगाल के किसानों के गीत जैसी कोई चीज़ हिंदी में लिखना पसंद करोगे? लिख सको तो तुरंत भेजो। और जो गीतों की स्कीम बनाई थी? किसान जीवन के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्ध रखने वाले? वीरेश्वर भाई का क्या हाल है? हंस के लिये उन्होंने मुझे अभी तक कुछ नही भेजा। भाई कुछ जरूर भिजवाओ।

शिवदान सिंह तीन महीने के लिये पैरोल पर छूटा है। शायद एक आध दिन के लिये आगरे आये। वैसे इलाज के लिये उसे कलकत्ते जाना है।

एकांकी अगर लिख सको तो भेजो। 'आगामी कल' खंडवा से निकलता था, फिर निकलेगा। उसके लिये Pe्ronal Essays लिखो। मै भी लिखूँगा। तुमने जैसे कद्दूशाह के समोसे लिखे थे, वैसी चीजें भेजना।

आशा है तुम प्रसन्न हो। वीरेश्वर सिंह जी को नमस्कार।

पत्र जल्दी देना।

तुम्हारा
रामविलास

Balwant Rajput College
Agra.
3-9-43

प्रिय केदार,

कार्ड मिला मुद्दत के बाद। मैं सहमत हूँ जरूर आऊँगा।

कविताएँ भेजो— एकाकी और स्केच भी लिखो। दुर्भिक्ष, अकाल और बाढ़ पर भी। तुम्हें "भारतेदु युग" मिला या नही ? वीरेश्वर से पुल्लिग की ही आशा ह, लेकिन दादा, कुछ आज की दुनिया पर भी। मैं यहाँ मजे मे हूँ। लोकयुद्ध या पीपल्स वार न पढ़ते हो तो मँगाया करो ५) चदा है साल का। बंबई को अखबार का नाम लिखकर एक कार्ड डाल दो।

तु०
रामविलास

बंबई मे अमृत नागर को भी बुलाओ।

पता : सेरा विला—शिवाजी पार्क Road No. 2, Dadar, Bombay.

और नरोत्तम को भी। वीरेश्वर की कविता मिली।

राजपूत कालेज, आगरा,
१९-१०-४३

प्रिय केदार,

बाँदा नही आ सका। आगरे मे खाना बहुत खराब मिलता है। काम ज्यादा, तंदुरुर्न्ता [तंदरुस्ती] खराब। जरूरत पड़ने पर ही सफर करता हूँ।

क्या-क्या हुआ बाँदा मे ?

तुम्हारी दोनों कविताएँ[1] कोयले और धरती है किसान की बहुत पसंद की गई हैं। और भेजो। वीरेश्वर को भी मनाकर और लिखवाओ और भेजो। छमाही प्रकाशन "जन-साहित्य" की पूरी तैयारी है। उसके लिये कविताएँ और स्केच, अपने Personal Essays यथा शीघ्र भेजो। २०० पृष्ठों की पुस्तक हो गी। विलंब न करना। हिन्दी साहित्य के विरोधियों को नये खून की यह चुनौती हो गी। इसलिए चीजें बढ़िया हों।

तुम्हारा
रामविलास

२२-१०-४३

प्रिय केदार,

एक कार्ड लिख चुका हूँ। सभापति तो मैं वैसे भी बनना पसंद न करता। १३ ता० तक तुम्हारा जलसा था, १३ को कालेज खुल रहा था, यानी ११ को ही शामिल हो पाता। रेडियो टाक के बाद आने की कोशिश की, लेकिन स्वास्थ्य खराब होने के कारण Cancel करना पड़ा। मुझे खुद सब लोगों से मिलने की बड़ी उत्सुकता थी। लेकिन लाचार था। आगरे में अभी तक मकान नहीं मिला। मेस का खाना[2] खाकर किसी तरह जी रहा हूँ। कविताओं के परिवर्तन को पसंद किया, धन्यवाद। बड़ा डर रहा था, आगे से भी थोड़े हेर-फेर का बुरा न मानना। अगर उसका मौलिक रूप ज्यादा अच्छा लगे तो पुस्तक में वही छपाना। १५ नवंबर को दिल्ली से टाक सुनना और ७ दिसंबर को भी वहीं से। लखनऊ आओ। मैं शायद २७ को पहुँचूँ गा। हो सके तो वीरेश्वर भाई को भी लाओ और उनसे लिखवाओ नही तो तुम गाली खाओ गे। अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखना।

शेष O. K.

तुम्हारा
रामविलास

Banda
2-11-43

प्रिय शर्मा,

पत्र मिल गया पर लखनऊ न आ सका। क्योंकि फिर से ज्वर महाराज ने चार दिन तक कृपा कर दी थी। आज अभी तक बचा हूं—शाम की राम जाने।

1. ये कवितायें मैं 'हंस' के लिए मंगवाता था। कभी-कभी उनमें से कुछ कम्युनिस्ट पार्टी के साप्ताहिक 'लोकयुद्ध' को भेज देता था।
2. आगरे में राजपूत कालेज के पास बैंक हाउस में मैं छात्रों के साथ रहता था और उन्हीं के साथ खाना खाता था।

पर विश्वास है कि मरूंगा नहीं। काम काफी करना है।

मेरी पुस्तक तैयार है। निराला जी ने कहा था कि वह युग मंदिर से छपवावेंगे। क्या यह उचित होगा? कुछ Payment हो जाए तो अच्छा है। पर इसकी चरचा नही की। यदि तुम कोई प्रकाशक तय करो तो उसे दू पर पेमेट कराना। Dedicate तुम्हें हुई है। लाजवाब पुस्तक है दोस्त। तुम्हारे छमाही प्रकाशन[1] के लिए भी कई रचनाएँ (तुकान्त) तैयार कर ली है। मेरी समझ में वे अपनी ही चीजें हैं—खूब है। तुम्हें भेजूगा जैसे ही ताकत आई। स्केच भेजूगा। एक गांधी पर किसान की दृष्टि से लिखी है। 100 पंक्तिया अतुकांत हैं दूसरी किसान पर है—करीब उतनी ही।

तुम्हारा
केदार

बादा
११-११-४३

प्रिय शर्मा,

मेरी पुस्तक —पहला कविता सग्रह— तयार [तैयार] है पाडुलिपि के रूप मे। तुम्हे देखने को भेजूगा तुम्हारा उत्तर आते ही। उसकी रूपरेखा देखना।

यह [ये] कई रचनाए भेजता हू—जो अच्छी लगे छमाही प्रकाशन के लिए रख लेना। जो न जचे उन्हे 'हस' मे न देना क्योंकि दूसरा सग्रह अप्रकाशित कविताओ का निकलवाना चाहता हू। इन रचनाओ पर अपनी राय भेजना।

निराला पन्त— महादेवी के Sketches ही तयार कर सका हू—कहो तो भेजू। उत्तम ही है। नई दृष्टि की नई जबान है।

कोई प्रकाशक मेरे पहले सग्रह के लिए खोजो। मै मूल्य लूगा अवश्य। मुफ्त न दूगा। यह समझे रहना।

तुम्हारी Talk Radio मे सुनूगा १५-११-४३ को दिल्ली से।

क्या तुम लखनऊ दिवाली मे आये थे? मैं नही जा सका।

आजकल श्रीमती जी वही है। अकेला हूं इसी से साहित्य लिख-पढ़ लेता हूं। कुशल है। स्वस्थ तो क्या हू पर चल फिर लेता हू।

तुम्हारा
केदार

1. छमाही प्रकाशन योजना कार्यान्वित नही हुई।

Banda
5-12-43

प्रिय शर्मा,

मैंने तो तुम्हें लम्बा पत्र लिखा और भेजा, तुमने एक छोटा-सा "टुटरूं टू" पोस्टकार्ड ही मेरी खिदमत में पेश किया। मैं नहीं जानता कि सिवाय साहित्यिक जबान में तुम्हें गाली दूं और क्या कहूं। कविताए नहीं अच्छी रहीं जाने भी दो। दोस्त खत को तो बसन्त की बहार स भर देते। लिखने वाले साले लिखा ही करते हैं पर बेचारों की दो ही तीन चीजें पूरी उतरती हैं। मैं तो कलम पकड़ना सीख रहा हूँ। मुझे तुम्हारे [विचार] बिल्कुल बुरे नहीं लगते। हां, इतना जरूर कहूंगा. कि इन कविताओं को भी एक प्रकार के पाठक वेहद पसंद करते हैं। मैं उन्हीं का कवि हूँ—सबका कवि नहीं। दो रचनाएं और भेजता हूं चाहे जिसमें छाप लो, पर राय देना जरूर।

रही बात Free Verse की —यह मुझे मेरी जान ही मालूम होती है। जो चाहता हूं वही उन शब्दों मे कह लेता हू—ऐसा नहीं होता कि लिखने कुछ बैठूं और तुकांत के दाव पेंच में पकड़कर कुछ दूसरा ही लिख डालूं। मेरा ऐसा अनुभव है कि तुकांत में यही होता है। उसमें मेरी हत्या होती है। Free Verse में मैं पनपता हूं। मुझे तुम्हारी सलाह तुकांत में लिखने की पसन्द है पर ग्राह्य नही है। मैं उसे ग्रहण तो तब करूं जब वह मुझे धोखा न दे। वह दगाबाज है। वह केदार को नहीं साहित्यिक मानव के पुरातन भावों को ही शब्दों के गर्भित अर्थ गौरव से प्रकट करना जानती है। मुझे Free Verse का माध्यम जानदार और जोरदार मिला है। यह पिटाघिसा नहीं है। न इसमें पंक्ति के अन्तिम भाग का एक-सा अवसान है। यहां प्रवाह है, रोज़ की बोली का सजीव रूप है। शर्मा मेरी राय मानो तो तुम मुझे तुकात लिखने की यह सलाह न दो। मैं तुम्हारा केदार हूं। वैसे तो मै मानूंगा ही पर तनिक और सोच लो। लोग गधे होत हैं—हरामज़ादे होते है, उन्हें तो तुम जितने घूंट जैसा पानी पिलाओगे वह उतने घूट वैसा पानी पियेंगे। उनका (की) खुद की रुचि ही क्या है। वह लेखक की कलम के साथ नाचते हैं। ताब भर हो मेरी कलम में मैं तो उन्हें ऊबने न दूंगा। ऐसे तरीके से लिखूंगा जो नई होंगी। मैं पुराना तरीका आने ही नहीं देता। सांस का जोर पंक्तियो में आवे, मेरी यह साधना है। जिन लोगों को तुम कहते हो कि ऊब गये हैं Free Verse से वे लोग ही कौन हैं? तुम्हारे घनचक्कर साहित्यिक होंगे। नए साहित्य की सृष्टि अतुकांत मुक्त छन्दों के प्रवाह में है, मै यही देख रहा हूं। जब दुनिया वाले तुकांत छन्दों को युगों से घोखते रहने पर भी आज तक नहीं ऊबे तब भला वे इस कुछ काल की अतुकांत Free Verse से कैसे ऊब सकते हैं। वह जब इसी के आदी हो जावेंगे तब इसका स्वागत करेंगे, अभी उनकी सब भावनाओं का प्रकटीकरण

नहीं है इसी से इस Free Verse से बिचकते हैं जैसे मेरा बूढ़ा बैल नेता लोगों को देखकर बिचकता है। फिर यह तो Free Verse की मुठभेड़ है, तुकांत की जीत नहीं हो सकती, नही हो सकती। अपनी लम्बी चौड़ी टांगो और मजबूत कलाइयों का पूरा जोर Free Verse गोलमटोल तुकांत के शरीर पर अजमावेगा और खून निकाल लेगा। Free Verse की कविता नए दृष्टिकोण की कविता है। वह केवल कल्पना की परी के उरोज़ों पर चढ़ी चोली अथवा भावुक नायिका की नाक पर बैठे हुए श्रम बिन्दु का प्रतिबिम्ब नही है। वह अनगढ़ लोगों के जमात की, टाट पर बैठने वालों की सोहबत में रहने वालों की, ऊबड़-खाबड़ देह की एक मात्र मजदूरिन है। उसे नफासत की उंगलियां कैसे छू सकती है। सभ्य समाज के पोषक उसे कैसे पास बुलाकर निहार सकते है। वह साहित्य में 'भदेस[पन]' लाई है किंतु उस 'भदेस[पन]' मे खून की लाली है, गरमी है ताकत है। शर्मा तुम न ऊबो और सालों को ऊबने दो। मैं गाली इससे देता हूं कि वह वे तुम्हारा स्वाद बिगाड़ रहे है। तुम पूरे 'साधु' (साहित्यिक) होते जा रहे हो यह प्रगति तुम्हे बहका रही है। जानते हो दुनिया उसी की है जिसका हथियार (चाहे वह जिस प्रकार का हो) गहरा घाव करता है। मै सोचता हूं तुकांत काम कर चुकी। नई दुनिया के बाशिन्दो की [को] वह चीज नही दे सकती— वह निकम्मी और कायर है। तुम कहोगे संसार की तुकांत कविता ने ही संसार बदला है, रंग जमाया है, खून तक बहाया है। बहुत अंशो मे यह सत्य है। किन्तु यह भूतकाल का सत्य है। सत्य मैंने गलत कहा भूतकाल का अनुभव मात्र है। जब सम्पूर्ण राज्य व्यवस्था ही उलट-पुलट रही है, हंसिया हथौड़ा की हड्डी पसलियां नव निर्माण कर रही है तब क्या यह सम्भव नहीं है कि पुरानी कविता की 'तरकीबें' भी रद्द कर दी जाएं और नई निकाली जाएं। तुकांत कविता एक फल का चाकू जैसी है। अतुकांत Free Verse सौ लाख फलो जैसी है।

दोस्त, तुम यह न सोचना कि मैंने यह सब अपनी कविता के Defence में लिखा है। यह मेरे साथ अन्याय होगा क्योंकि मैं तुम्हारे साथ यह 'कपट' नही कर सकता। मैं अपनी कविताओं की कमजोरियां मानता हूं—मैं प्रयत्न करता हू कि जोरदार चीजें दू। तुम्हें कायल कर दू। पर यह जरूर है कि जहां सब उस तरह लिखते हैं, मुझे मेरी तरह ही लिखने दो। मेरा यह Experiment है। इसे बीच में ही न बन्द करने को कहो। यदि सफल हुआ तो हिन्दी का फायदा है। यदि न हुआ तो नुकसान नही है। तुम्हारी बात मान जाऊंगा।

शायद तुमने देखा होगा कि छन्द वाली कविता ग्राम्य कंठ से नही निकलती। उसमें Free Verse ही रहना है। मैं शहरी गवैयों या गज़ल गाने वालों की बात नही कहता न आल्हा या ब्रजवासी गाने वालो की बात कहता हूं। ये कवियों की कृतियो के मौखिक अनुकरण है। जब पिसनहारी गाती है, तो सासे लम्बी-छोटी

चलती हैं Free Verse में खैर···

कहो, क्या बड़े दिन में इधर आओगे ? सख्त जरूरत है। तुम्हारी मैं। कोशिश करने पर भी शायद प्रयाग न आ सकू —यदि तुम न आओगे तो सूचित करने पर फिर मैं ही प्रयत्न करूंगा। तुमसे मिलना है। नागर ने लिखा है कि तुम प्रयाग आओगे। कृपया मुझे भी इत्तला दो सही-सही। तुम नियत तिथि पर नही पहुँचते।

मै कोई Controversy नहीं raise कर रहा। किन्तु तुमसे अपने विचारो पर प्रकाश चाहता हूँ। केवल उनकी कमजोरी या मजबूती नापना चाहता हूँ। मेहरबानी करके मुझे Convince कर दो।

तुम्हारा नाटक[1] पढ़ा। खूब पसन्द आया। उसे एक दिन बड़े दिन मे घर में खेल कर देखूगा। अशोक साहब[2], कुछ कविताएं तो आपकी जमी।

केदार

८-१२-४३

फीवर्स मेरी जान !

जीते रहो। पत्र पढा। तबियत खुश हुई। उससे भी ज्यादा 'स्वप्नद्रष्टा' कविता से। मैने हंस मे भेज दी है। बहुत सुदर है, बधाई। तुम्हे इतने मे संतोष न होगा। और सुनो छंद के प्रवाह मे गभीरता है। मथर गति मे चलता हुआ स्वप्नद्रष्टा को खूब कोसता है। क्या सादगी मे तुमने उसे गरियाया है। "जिदगी की भीड़ म कधा रगड़ने और चलने मे परे हो।" यह पिसनहारियो की आवाज है या केदार की ? सिर्फ निराला जी ने इस सादगी मे लिखा था —"जब कड़ी मारे पड़ीं दिल हिल गया।" लेकिन क्या जबर्दस्त हथौडे की चोट है इस लाइन में यार !

यह कविता इसलिये अच्छी है कि कहने का ढंग सादा लेकिन पुरजोश और बात भी कहने लायक है। तुकात और अतुकात की—। म्यॉ, जिन्ना का गाना भी तुकांत है। लेकिन मै उसके लिये धेला भी देने को तैयार नही हूँ। चूरन वालों का लटका, कोई भी बात तुक की नही, जोश नहीं, तुम्हें बंगाल की सब बातो की पूरी जानकारी भी नही।

तो फ्रीवर्स मेरी जान ! तुम फ्रीवर्स लिखो। पिसनहारियो की तरह स्वर को घटा-बढ़ा कर लिखो। और जिन्ना के गाने मत लिखो। जैसे पहले गीत भेजे थे, वे भी 3/10 ही है। इनसे चंदगहना किस भकुए को ज्यादा पसंद न होगी।

मेरी बात समझो प्यारे ! स्वप्नद्रष्टा और जिन्ना का गाना·· दोनों तुकांत;

1. जनयुग में प्रकाशित कोई नाटक।
2. मैंने इस नाम से कुछ कविताएँ लिखी थी।

लेकिन पहली कविता १०/१० तो दूसरी बेतुकी है। चंदगहना और किसान··· दोनों अतुकांत। लेकिन चंदगहना ६/१० है और किसान ४/१०।

एक दूसरे ढंग की तुकांत रचनाएँ कोयले, काटो-काटो करवी है। दोनों १०/१०! क्या समझे?

तुम कविताएँ ६/१० और ११/१० के बीच की लिखो चाहे तुकांत हों चाहे अतुकांत। तुमसे एक चंदगहना पाने के लिए तुम्हारे वे गीत सब १०-२० जितने हों दे सकता हूँ। और "काटो-काटो करवी" में जो किसानपन है 'किसान' मे नहीं आ सका।

जानता हूँ कि हमेशा ६/१० या ११/१० नहीं मिल सकते। असंभव है। लेकिन आदर्श वही होना चाहिए। तुम मेरे कहने से कुछ लिखने लगो, यह तो अन्याय होगा, दोनों के साथ। तुम अंचल नहीं हो।

मेरी राय एक दोस्त की राय है। उसे सुनो; झगड़ो। करो हमेशा वही जो जँचे। कलाकार की यही परख है। और समझदार की यह कि औरों की भी सुने।

पहले यह विश्वास कर लो कि "चंदगहना" और "यह धरती है उस किसान की" जैसी कविताएँ मुझे बेहद पसंद है। तुम खूब लिखो। लेकिन "काटो काटो करवी" भी उतनी ही पसद है।

तुकात लिखने की सलाह का यह मतलब नहीं है कि अतुकांत लिखना छोड दो। तुकात लिखने को क्यो कहा था? इसलिये नही कि साहित्यिकों की आलोचना से, "प्रगतिवाद" मे, प्रभावित हो गया हूँ। वरन् इसलिये कि तुम्हारी रचनाओं का "भेदसपन" भदेसी भाइयो की समझ मे तब ज्यादा आ सकता है जब उनके लिये सुगम छंदों की राह से उन तक पहुँचो। क्या तुम समझते हो कि भदेसी भाई जिनके हृदय की बात तुम उन्ही की बोली में कहते हो, तुम्हारे मुक्त छंद को तुम्हारी तरह पढ सकते है? मुक्त छंद को पढ़ने के लिए Rhythm का ज्ञान, एक Literary Culture की जरूरत होती है। मुक्त छंद भदेस नहीं है, वह एक Literary माध्यम है। भदेसी भाइयों को पढ़ा कर देखो। तुम्हारी बाते किसान हृदय की होती हैं। बोली में वही सरलता होती है। फिर किसान के लिए छंद की रुकावट क्यो हो? उसके लिये ऐसा लिखो कि हल जोतते करवी काटते वह गुनगुना सके। तुम्हारा गीत उसके जीवन को ही न व्यक्त करे, उसे नया जीवन भी दे। मुक्त छंद में भदेसपन पूरा नहीं होता। इसकी एक ही कसौटी मैं जानता हूँ—भदेसी भाइयों को सुन कर देख लो। जो Intellectuals declassed होकर उनकी तरफ जा रहे हैं, वे भी तुम्हारे 'काटो काटो करबी' को ही ज्यादा गुनगुनाते हैं।

केवल Free verse में हम तब लिखेंगे जब भदेसी भाइयों को सुनाने की,

उन्हें ये कविताएँ सिखाने की जरूरत न होगी। केवल तुम किसान से खड़ी बोली में बात कर सकते हो। उसी के ढंग से अपनी बात कह सकते हो। मैं चाहता हूँ, नव शिक्षित और अशिक्षित किसान तुम्हारी कविता पढ़ कर कहे, यह मेरे भाई ने लिखी है। मेरी ही बात कही है। उसे याद कर ले और अपने भाइयों को सुनाये। उसकी राय मेरी राय से बहुत महत्वपूर्ण होगी।

लेकिन जोर नहीं, जब्र नहीं, कतई नहीं। सिर्फ प्यार। तुम जो कुछ भी लिखो सिर माथे पर।

तु०
रामविलास

Banda
17-12-43

प्रिय शर्मा,

तुमने ऐसा धोखा दिया कि कुछ कहते नही बनता। तुम्हें सभापति बनाता। तुम मौका नही देखते, अवसर खो देते हो। बेचारा नागर इन्तजार करते-करते मर गया। खूब गालियाँ दी है मैने। रेडियो वाला Programme क्या हुआ आफत हो गया।

आशा है तुमने College Join कर लिया होगा।

सम्मेलन अच्छा रहा। सब काम सुचारु रूप से समाप्त हो गया।

तुमने "हंस" मे मेरी कविताएँ जो छापी है उनमें परिवर्तन कर दिया है। यह बहुत ही अच्छा हुआ। मैं तुम्हें किन शब्दों में धन्यवाद दू। रेडियो की पत्रिका में तुम्हारा लाहौर का यथार्थवाद पर ब्राडकास्ट छपा है—मेरा उल्लेख है। धन्यवाद। कृपया "भारतेन्दु युग" भिजवाना। दिवाली में लखनऊ जाना चाहता हूं। क्या तुम आओगे?

Prose में Sketches लिखना शुरू किया है। "हंस" में दूंगा। तुम्हारा भी एक होगा। अभी pts. jot कर लिए हैं। छोटे-छोटे होंगे। वह भी Personal होंगे। राय देना जब छपने पर पढ़ना। योग्य सेवा लिखना।

"निराला" जी उन्नाव गए। इस बार निराला जी ने मेरी तारीफ के पुल बांध दिए यहां। क्या बात है? मै इस योग्य तो था नहीं।

बुखार से उठा हूं— कमजोर हूं। नहीं तो और लिखता।

तुम्हारा
केदार

बांदा
10-2-44

प्रिय शर्मा,

तुम्हारा (कार्ड) परसो दस बजे मिल गया था। इसी से दो कविताए नकल करके तुरत ही तुम्हारे पास भेज रहा हू -किंतु वही अतुकात है। शायद तुम पसंद करो। बहुत जोरदार तो नही है फिर भी नए touches जरूर है। लिखना कैसी है।

दोस्त यदि हो सका तो एक दिन को आगरे आऊगा २६ के इधर-उधर— अकेले या बहन के साथ। ठहरूंगा तुम्हारे ही पास। केवल तुमसे मिलना है। कहो घर का पता क्या है ! जल्दी ही भेजो। क्योकि मुझे तुम्हारा पत्र मेरठ जाने से पहले ही मिल जाना चाहिए।

शेष कुशल है।

कानपुर मे कोई प्रगतिशीलों की बैठक क्राइस्ट चर्च में हो रही है। पत्र आया था। मैने इन्कार कर दिया है। क्या बात है ?

शायद बीबी [बीवी] बच्चे आगरे पहुच गए है इसी से एक पंक्ति का पोस्ट कार्ड भेजा है आपने। मैने भी सोचा था कि केवल कविताए भेज— कुछ भी और न लिखूं।

इधर कोई Radio Talk नही हो रही है ?

तुम्हारा ही
केदार

Banda
20-2-44

प्रिय शर्मा,

मैं बादा मे २६-२-४४ को रात को चलूगा और निश्चित रूप मे आगरा २७-२-४४ को तुम्हारे घर पहुचूगा। राजा मडी उतरूगा। सम्भवत: वहा से तुम्हारा घर निकट ही होगा। "हम" मिला। कविताए देखी। तुम से बात करूगा। मैं सानद हू। निराला जी का पत्र आया है वे सानद है।

तुम्हारा
केदार

Civil Lines, Banda (U.P.)
26-3-44

प्रिय शर्मा,

मैं दौरे से आज ही वापस आया हूं। मनीआर्डर की रसीद से पता चलता है कि तुम्हें ११/रु० मिल गए है। दस्तखत तो तुम्हारे ही हैं।

'प्रात के शर' के छपाने की बात किताब महल प्रयाग वालो से हो रही थी। वह मुझे रुपया लगा कर, 2/8 Per page 1000 कापी के भाव से, सौदा तय करना चाहते हैं और मुझे ३३.३३% Royalty देगे। आज ही मैने उन्हें सूचित कर दिया है कि यह असम्भव है। मेरे साले और मित्र मिस्टर सीताराम नैनी वाले मेरी पांडुलिपि मांगते है। मैं इन्हें भेजने वाला हूं। वे छपाने का विचार जोर से कर रहे है, किन्तु पता नहीं वह बिचक न जायें। मौक़ा आया है भेज कर देखूगा। तुम्हारी क्या राय है?

निराला जी को भी पत्र भेज रहा हूं कि वह पांडुलिपि ले लें किताब महल वालों से।

तुमसे लाई पुस्तकें पढ़ी हैं, खूब है। एक "पाकिस्तान" पर कविता भी लिखी है। उत्तर आने पर ही भेजूगा।

"तारसप्तक" मे तुम्ही सबसे ऊंचे हो। सब रचनाएं पकी और ए० क्लास हैं। रोज पढता हूं। मालकिन को नमस्कार-- बच्चों को प्यार।

तुम्हारा
केदार

बांदा
११.४.४४

दोस्त,

मुझे अफसोस है कि अपने चाचा के कारण से मैं प्रयाग उस समय न पहुंच सका जब तुमसे मिल सकता। अब गया और कल ही वापस आया हूं। सब हाल नागर ने मुझे बताया।

मुझे खुशी इस बात की है तुमने उस फिराक को खूब मारा बातों से। मैं होता तो मैं भी दुलत्तियाता [,] वह इसी के योग्य है।

अपना संग्रह "निराला" जी के पास छो- आया हूँ। नाम "प्रात के शर" रखा है। कैसा है? सर्मपित तुम्हें ही किया है—आशा है तुम स्वीकार करोगे। नरेन्द्र की तरह मैंने तीन को एक साथ भवसागर से पार नहीं उतारा।

वीरेश्वर की 'दिल्ली अब भी दूर है' छपाना। खूब मजे की है। न छपाना

तो उसे वापस कर देना ताकि वह कहीं और छप जावे।

तुम्हारा पिछला पत्र इतना सुन्दर है कि मैं बिक गया। अन्तिम वाक्य बार बार याद करता हूं। शर्मा तुमने जादू कर दिया है।

नया कुछ नही लिखा, वरना भेजता। तुमने मेरी बेहद तारीफ प्रयाग में कर रखी है। यह क्यों, समझ में नहीं आता।

जनाब अशोक से इस्तेदुआ हुआ है कि ज़रा कलम मनमानी न रगड़े बल्कि ज़ोरदार करके चलावे।

तुलसीदास पर बहस सुनी [।] खूब अन्त किया तुमने। अब लौं नमानी अब न नसैहो। यह व्यङ्ग [व्यंग्य] गुलाबराय जी के खूब चिपका। तुम्हारी भी समझ में प्रेम नही आता, मेरी भी समझ में नहीं आता।

कुशल से हूं। तुम वीवी [बीवी] बच्चो के साथ हो अथवा अकेले ही डंड पेलते हो।

आगरा के ताजमहल के संगमरमर पर अपना हाथ फेरना चाहता हूं और मुमताज की शीतलता को गरमाना चाहता हूं। न जाने कब और कैसे यह हो सकेगा।

तुम्हारा
केदारनाथ

बादा
१९-८-४४

प्रिय शर्मा,

आज झासी से सम्मेलन का निमत्रण आया है। उसके देखने से पता चला कि तुम अवश्य ३१-८-४४ को झासी मे होओगे। यदि अनुचित न समझो और अवकाश हो तो एक दिन के लिए बादा आ जाओ। मैं किसी तरह भी झासी नही पहुच सकता। कारण मेरा केस २८ से ३१ तक को लगा है। बड़ी मुसीबत है।

"हंस" मिला। मेरी एक कविता मलखान सिह सिसौदिया के नाम दे दी है। यह शायद प्रेस की असावधानी होगी।

पत्र शीघ्र ही देना अभी समय पर्याप्त है। आशा है कि तुम यहां आओगे ही। एक कविता बगाल पर लिखी है। जब आओगे तभी दिखाऊंगा। उम्दा है।

सुमन को पत्र भेजा था— उत्तर नहीं आया। वह तो झासी आवेगा ही। सूचित करना।

तुम्हारा
केदारनाथ अग्रवाल

Banda
11-9-44

प्रिय शर्मा,

पत्रों के पढ़ने से पता चला कि हैजे की वजह से झांसी में सम्मेलन की मनाही कर दी गई है यह अच्छा नहीं हुआ। कोई दूसरा अवसर देखा जायेगा। अब तुम क्यों झांसी के बहाने बांदा आओगे ? न मेरे पत्र का उत्तर ही तुमने दिया। बंगाल पर दो रचनाएं लिखी हैं उत्तर मिलने पर भेजूंगा। परसों से बुखार आ गया है पर precaution ले रहा हूं।

नागर का उत्तर आया था, उसका जवाब दे रहा हूं।

तुम्हारा
केदार

Banda
15-9-44

प्रिय शर्मा,

तुम्हारे दोनों पोस्ट कार्ड ठीक समय पर आ गये थे किन्तु मैं एक केस में चरखारी गया था इससे उत्तर विलम्ब से दे रहा हूं। माफ करना।

"भूखा बगाल" एक अतुकांत मुक्त छंद की रचना भेज रहा हूं। अपनी राय अवश्य लिखना। मैं उत्सुक हूं। पाकिस्तान वाली रचना कहीं रखी है खोजने पर भी नहीं मिली इसमे अभी नहीं भेज सकता। वह कोई खास नहीं थी··· Communistic Song था। मिलने पर भेजूंगा।

बांदा आओ और बिना किसी काम के। दशहरे में ही सही। चित्रकूट चलेंगे। घूमेंगे। एक तफरीह होगी। तुमसे बातें होंगी। दृष्टिकोण में परिवर्तन आवेगा।

पुस्तकें नागर ने भेज दी हैं। दाम नहीं लिखा तुमने। लिखना। कुछ और भी Poems की उम्दा पुस्तकें भिजवाओ। मैं चाहता हूं कि उम्दा लिखूं।

वीरेश्वर परेशान है बच्चों की बीमारी से। क्या कहूं उनसे ?

पुस्तके जो तुमने कहा था और नागर ने भेजी हैं मैंने पढ़ ली हैं। कुछ तो पहले ही पढ़ चुका हूं।

Review करके भेजना है "हंस" में। जन प्रकाशन की पुस्तकों की।

सानंद हूं। तुम भी लिखना। मलकिन[1] को नमस्ते। बच्चों को प्यार।

तुम्हारा
केदारनाथ अग्रवाल

1, मलकिन—मेरी पत्नी 'मालकिन'।

KEDAR NATH AGRAWAL
B A. LL. B.

BANDA (U. P)
विजय दशमी
Dated 26-9-1944

प्रिय शर्मा,

"भूखा बंगाल" कविता भेज ही चुका हू। पहुच ही गई होगी।

मेरा [मेरे] कविता संग्रह का प्रकाशन निन्यान्वे फीसदी सम्भव हो गया है। एक आर्टिस्ट भी चित्रित करने को मिल गए है। विश्वास है कि संग्रह सुन्दर निकलेगा। प्रकाशक मेरे सम्बन्धी और मित्र नैनीवाले श्री सीताराम जी है। उन्हे कला मे पेम है। उन्होने स्वय मुझसे मेरी कविताओ के प्रकाशित होने के बारे मे चर्चा की थी। इसी मे मैने अपनी पाडुलिपि उनके पास भेज दी है। आज ही उनका पत्र आया है कि मै तुम्हारा एक उत्तम चित्र भेजू क्योकि वह पुस्तक मे जा रहा है। कृपया मेरे खातिर अपना एक हाल का चित्र शीघ्र ही भेज दो ताकि मै उसे उनके पास भेज दू। वह Block बनाने वगैरह को दे दे। पुस्तक तुम्ही को समर्पित है।

मालूम होता है तुम बादा न आओगे। दिवाली मे ही आ जाओ।

बीवी [बीबी] लखनऊ जाने वाली है। तब कही फिर कविता और कहानी के पीछे पड़ूगा। अभी तो वकालत और श्रीमती मे घिरा रहता हू। बच्चो को प्यार। मालकिन को सादर नमस्ते। चौबे कहा है ?

पत्र व फोटो भेजो।

तुम्हारा
केदार

6/10/[44]

My Dear Kedar,

Got your [Letters] after coming from Lucknow. Dedication to me wrong I have already dedicated one to you This mutual respect quite wrong Send the mss. [manuscript] to me if possible before sending to press. Take suggestions from as many friends as possible I offer my self as one

Yours
Rambilas

Banda
10-10-44

My Dear Sharma,

I am in receipt of your two letters, one from LKO and the other from Agra. I must tell you that I am very busy for the whole month and there is no possibility at present that I should join the gathering on 21 & 22/10-44 at Lucknow. I express my sincere request. I hope you will excuse me, I shall send my typed suggestions on जनपद & Failure of Gandhi & Jinna Talks.

You know that I had already dedicated the book to you 4 or 5 yrs ago. I can not change that dedication. It is a crime, I think, to dedicate it some other person. And there is no other friend of mine better than you. I can't throw my book to any and every body. I am not at all afraid of what others will say about our mutual appriciation of each other. It is by the way that I informed you about this dedication. In fact I had teken your permission nearly 5 yrs back. You cant retrach and withdraw it. Do approve and send a copy of your latest photo. Don't forget you will simply harm me by not sending it. I had sent the message to the man concerned. You will see it before finally it takes the printed form.

Nagar has already seen it. Niralaji will see at Allahabad. Who else is there whom I should show.

Reply soon & send Photo soon.

Yours
Kedar Nath Agrawal

Banda
15-10-44

My dear Sharma,

Yours tohands, I must tell you that the book if it at all come out, will be dedicated to you inspite of your strong protest. No question of forfeiture of my rights.

I am going to Cawnpore on 24th and there I shall remain on 25th. I don't think I shall be at LKO on 28th or 29th. My wife is there with my relation where I used to stay.

Wish you good luck in this Dewali.

Yours
Kedar Nath Agrawal

12/10 [44]

My Dear K;

Since I put my book first, you have forfeited your right. Whom will you dedicate your second book if this is not to be your last ? Dedicate this to him. I suggest Vireshwar. I wanted your mss [= manuscripts] only for suggestions re. [= regarding] language & metre. So glad, you are sending it. Lucknow meeting dates are now 28-29.

Can you come ?

Ram B.

Banda
5-11-44

प्रिय शर्मा,

तुम्हारा पोस्ट कार्ड मिला। उत्तर दे रहा हूं कि तुम्हें लखनऊ से वापस होते ही मिल जावे।

कविता कुछ दिन में भेजूंगा। अभी हरपालपुर Case में जा रहा हूं। लौटने पर लिखूंगा नई ही।

Writers Conference की चहल-पहल लिखूंगा। निर्णय भी। जनपदीय आंदोलन और रेडियो पर क्या हुआ ?

लखनऊ गया था। तुम्हारे घर भी गया था। तुम्हारा इन्तज़ार था। कितने दिन लखनऊ रहे ?

अब स्वस्थ हूं। कमज़ोर हूं पर चंगा हूं। फोटो की सख्त जरूरत है खिंचवा कर भेजो। No delay please.

तुम्हारा
केदार

Banda
27-11-44

प्रिय शर्मा,

आज ही लखनऊ रेडियो स्टेशन से ३० दिसम्बर के लिए कवि सम्मेलन का निमंत्रण आया है ६०/ मय खरचा वगैरह के [।] मैं Contract Form भर कर भेज रहा हूं। तुम्हारी राय हो तो जाऊं। पत्रोत्तर जल्दी देना। अभी तक तुम्हारी फोटो नहीं आई। निमंत्रण गिरजाकुमार माथुर का है। कौन कविता सुनाऊं ? लिखना भूलना नहीं। तुम भी आ रहे हो या नहीं। छुट्टी तो रहेगी। एक कविता "कुहरा" पर लिखी है। तुम्हें पसंद आयेगी। झांसी जा रहा हूं—वापस आने पर भेजूंगा। पत्र दो ताकि उसे जवाब में पा सको।

बच्चों को प्यार।

तुम्हारा
केदार

Banda
29-1-45

प्रिय शर्मा,

तुमने आगरे पहुंचते ही मुझे फोटो[1] भेजने का वादा किया था पर जब मैं इतने दिनों तक ऊब कर थक गया और वह नहीं मिला तब यह पत्र हैरान होकर लिख रहा हूं। मैं जानता हूं कि "निराला" लिखने में व्यस्त होओगे। पर ज़रा सूट पहन कर फोटोग्राफर के घर तुम चले जाओ और मेरे खातिर एक फोटो खिंचवा आओ। बड़ी इनायत करोगे।

"लोकयुद्ध" का स्वतंत्रता दिवस अंक देखने को नहीं मिला। पता नहीं मेरी वह कविता छपी या नहीं जिसे लखनऊ में मैंने सुनाया था। तनिक लिखना। २८-१-४५ के अंक में पढ़ीस पर तुम्हारा लेख पढ़ा। खूब अच्छा और चुस्त है। कृपया वह पुस्तक भी भेजवाओ जो मुझे अनुवाद करने को देना चाहते हो। Payment भी करा सको तो अच्छा है। वह सब रुपया मैं पुस्तकों के क्रय में व्यय करूंगा।

'हंस' का अंक ही नहीं आया महीनों से। किस माह का अंक आखिरकार छप कर निकल चुका है?

मेरी अच्छी खबर अखबार वालों ने ली है। पर और लोगों से कम। मुझे तुम्हारी सलाह प्रिय है। मैं अब न जाऊंगा।

तुम्हारा
केदारनाथ

Banda
13-2-45

प्रिय शर्मा,

पत्र लिख ही चुका हूं, दूसरा फिर लिख रहा हूं क्योंकि तुम्हें होली में चित्र-कूट[2] घूमने के लिए निमंत्रण देना है। कृपया तुरन्त उत्तर दो कि कब से कब तक छुट्टी है और किन-किन तारीखों में यहां आकर घूम सकोगे। निराला जी को भी लिखा है मैंने। तुम भी यदि आओ तो लिख कर मजबूर करो। नागर[3] को भी

1. केदार अपना कविता संग्रह मुझे समर्पित करना चाहते और उसमें मेरा फोटो भी देना चाहते थे। इससे पहले मैं उन्हें 'भारतेंदु युग' समर्पित कर चुका था, इसलिए मेरा आग्रह था, कविता संग्रह मुझे समर्पित न करें।
2. चित्रकूट यात्रा की योजना कार्यान्वित नहीं हुई।
3. नागर—नरोत्तम नागर।

लिखो। यहां नुमायश चल रही है। २०/२१-२-४५ को कवि सम्मेलन होगा। झा[1] साहब पधारेंगे और १००००/ लेकर Guest House प्रयाग में बनवायेंगे।

तुम्हारा
केदार

पुनश्च—फोटो भेजो।

केदार

Swadeshi Bima Nagar,
Agra 16-2-45

My dear K,

I shall send you the photograph and books for Trans. next week. I am leaving for Allahabad tomorrow to see Niralaji. I had a very disturbing letter from Narottam. Meet me there Sunday morning if possible. Do try to come.

yours
Ramvilas.

Banda
1-3-45

प्रिय शर्मा,

तुम्हारा पत्र पाकर घबड़ा गया था। उत्तर मे निराला जी को तथा नागर को भी जवाब दे दिया था। नागर का उत्तर फिर आ गया है। चिन्ता की बात नहीं रही फिलहाल।

आइन्दा क्या करोगे? कुछ करना चाहिए। प्रकाशकों को approach करना आवश्यक है। उनसे लिखवाओ और Pay कराओ। जहां वह कहें उन्हें रखा जावे।

मैंने अपने प्रकाशक को लिखा है कि वह निराला जी को इस संकट काल में १०१/ दे दे भूमिका के लिए। जब आवश्यकता होगी लिखा ली जावेगी।

प्रकाशक के पत्र का इन्तजार है। नागर को भी एक पत्र लिख दिया है। 'लोकयुद्ध' में भी नोट पढ़ा है। ऐसे नोट तो हर पत्र पत्रिका में जाना चाहिए।

1. झा साहब—अमरनाथ झा

माधुरी, सरस्वती आदि आदि में।

तुम्हारे पत्र से कुछ विशेष हाल जानना चाहता हूं निराला जी के बारे में।

तुम्हारा
केदार

Agra
7-3.45

My dear Kedar,

Niralaji is here for a few days. Come this saturday if possible. I have called Suman also. We will go to Surdasa's Runekta[1] on Sat. Do come.

your
Ramvilas

Banda
8-3-45

प्रिय शर्मा,

तुम्हारा पोस्टकार्ड अभी-अभी ६ बजे शाम को जब मैं कचहरी से आया मिला। तुम नही सोच सकते कि मुझे कितनी अपार खुशी हुई यह पढ़ कर कि निराला जी तुम्हारे पास पहुच गए। मुझे तो ऐसा मालूम हो रहा है जैसे तुमने एक बड़ा समर जीत लिया है। कृपया उन्हे वहां से न जाने देना। उनकी जिन्दगी regulate करवाओ और लिखने को कहो। उन्हे किसी वस्तु का अभाव नहीं होना चाहिए। वह हृदय सम्राट हैं करोड़ो के।

मैं इस शनीचर को तब ही पहुंच सकता हूं जब कल रात को चल दूं। कल चलना यों असम्भव है कि जो सेशन मुझे आज करना था वह आज नहीं शुरू हुआ; कल से शुरू होगा वह भी दूसरे पहर से और परसों तक जरूर चलना है। मैं इसे छोड़ कर नही आ सकता, पर मेरा वही हाल हो रहा है जो बिधे पक्षी का। भग कर पहुंचना चाहता हूं पर पक्षाघात जो एक तरह का हो गया है। साली वकालत भी बेड़ियों की तरह पैर में पड़ी है। रोटिया क्या देती है मुझे खरीद लिया है। मुझे अपनी गुलामी पर खीझ होती है। ऐसा लगता है जैसे अपने ही जूते अपने सर पर मारकर खून निकाल लू। छोड़ कर जाता हू तो मुअक्किल मरता है। नही मालूम क्या-क्या मेरे मन मे इस समय गुजर रहा है। मैं हूं तो यहां पर तुम्हारे कमरे में

1. हम लोग सूरदास का स्थान रुनकता देखने नहीं गए।

मच्छड़ की तरह ही भनभना रहा हूं जब तक दो-तीन दिन न बीत जायेंगे। सुमन से भी मुलाकात हो जाती पर वाह रे अभाग्य !

देखो भाई ३०, ३१ मार्च १ और २ अप्रैल को ईस्टर की छुट्टिया है। कृपया या तो यह लिखो कि तुम यहा आ रहे हो चित्रकूट चलने को या मै ही वहा आऊ। निराला जी भी रहेगे। कह देना। सुमन को भी लाना है। खूब मिलने का अवसर है। पहले ही से तय करके लिखो ताकि चित्रकूट मे खूब बढिया इन्तजाम कराऊ। धर्मशाला (ऊपरी भाग) ठीक करा लू। महन्तो से सामान वगैरह का प्रबन्ध करा लू। भूलना नही इसका तय करके जवाब देने मे।

तुम्हारे पत्र की दो लाइनें समझ ही मे नही आती। क्या लिखा है, कहाँ जाओगे ? न जाने क्या लिख मारा है। बीच मे लिखा है Come ıt possıble बाद मे और अन्त मे लिखा है Do come दोनो एक-दूसरे का गला घोट रहे है। मेरा बन्धन बुरा है। वरना उछल कर ट्रेन मे बैठ कर आगरे पहुच जाता और तुम्हारा गला घोटता।

मै इस समय इतना प्रसन्न हू जैसे नई जिन्दगी पाई है। वह भी तुम्हारे कारन। पत्र क्या है जान है। निराला जी से मेरा भी कहना वही ।

इधर वीरेश्वर ने दो कविताए लिखी है। खूब है। एक होली पर दूसरी हिन्दी उर्दू पर। दूसरी प्रारम्भ होती है –

कोयल ने किया कू
कबूतर ने गुटरगू
अब तुम ही बताओ कि
यह हिन्दी है या उर्दू।

कुछ ऐसी ही है।

मैने भी कुछ कलम चलाई है। भेजूगा। दूसरा पत्र पाओगे तब पढना। उपन्यास भी वकालत ने रोक रखा है। कुछ कम लिखने का कारण श्रीमती जी भी है। वह जबर नही करती सिर्फ पलग पर आ विराजती है। कलम भवानी रुक जाती है। मेरी तो अजीब छीछालेदर है। तुम ही अच्छे हो। अच्छा होता यदि वेब्याहा होता और फटेहाल होता। इस गरीबी अमीरी के खच्चडपने ने मुझे भी खच्चर बना रखा है। न हिन्दू हू, न मुसलमान। रामै राखै मोरी लाज।

भाई माफ करना गैर हाजिरी से। ईस्टर का प्रोग्राम लिखो। मै इसके लिए बेकरार हू। नरोत्तम को भी लिख रहा हू। उसका हाल सुना ही होगा। "अभ्युदय" इडियन प्रेस मे मालवीय के पास जा रहा है। वह (नागर) वहाँ न जायेगा। अब उसकी भी रोटी मारी जायगी। हर तरफ चोट है। पता नहीं वह क्या सोच रहा है। दशा हम सबकी खराब है।

निराला जी को प्रणाम।

सुमन आए तो उसे भी।

तुम्हारा
केदार

पुनश्च —

बांदा मे २००००/ प्रयाग गये है। झा साहब ले गए है इसका चिट्ठा मिलने पर बताऊंगा। यह अन्याय हुआ है। बांदा की जनता और उसके बच्चों के साथ। यहां का डी० ए० वी० स्कूल मोहताज है। एक Govt. High School है। बच्चे कुत्ते से पूंछ हिलाते फिरते हैं। पढ़ाई का प्रबन्ध नहीं है। विश्वविद्यालय में Guest House बना है। राम राम। यह हैं राव साहब।[1]

केदार

Swadeshi Bima Nagar
agra
14-3-45

प्रिय केदार,

पत्र तुम्हारा मिला। ब्रज भाषा परिषद् के सिलसिले में निराला जी दिल्ली आए थे। वहाँ से वे यहाँ भी आये लेकिन en route to allahabad वे यहाँ मंगल को आए थे, शनिवार को मेरे और सुमन के साथ ग्वालियर गये। मैं कल लौट आया। दो एक दिन में प्रयाग जायें गे। जुलाई से मेरे यहाँ रहने को कहा है। महादेवी जी ने एक साहित्यकार संसद स्थापित की है। वह नि० जी के [की] पुस्तकों का प्रकाशन करें गी और उन्हें अभी से आर्थिक सहायता कर रही है। उसके लिए तुम कम-से-कम ५००/- एकत्र करके महादेवी जी के पास शीघ्र भिजवाओ और निराला जी के जो पत्र तुम्हारे या वहां और किसी के पास हों, उन्हे तुरन्त (Registered) मेरे पास भेज दो। उन पर मेरी किताब चल रही है। आशा है प्रसन्न हो गे। नि० जी के पत्र भेजो गे तो लंबी चिट्ठी लिखूं गा।

रा०

Banda
2-3-45

प्रिय शर्मा,

तुम्हें एक पत्र लिख चुका हूं। दूसरा फिर लिख रहा हूँ क्योंकि आज ही नागर का पत्र आया है। वह तुमसे और मुझसे मिलकर यह तय करना [चाहता]

1. श्री बालकृष्ण राव—उन दिनों बांदा के जिलाधीश थे। [प्र० त्रि०]

है कि वह सिनेमा में जावे या सरस्वती में रहे अथवा दिल्ली जावे। बहुत जरूरी है। यदि तुम चित्रकूट आओ तो वह भी यहाँ आवे। यदि न आओ तो हम दोनों आगरे आवें। जैसा हो फौरन लिखो।

साहित्यकार संसद का विशेष वर्णन लोकयुद्ध में पढ़ लिया है। एक सेशन कर रहा हूँ उससे निजात पाते ही कल तक ५००/- का प्रबंध[1] करूंगा और भेजवाऊंगा। मेरी ओर से निश्चिंत रहो। यह बड़ी अच्छी संस्था होनी चाहिए।

शेष खैरियत है। छुट्टियां ३०, ३१, १ व २ तक हैं। इसी से उत्तर की प्रतीक्षा है।

तुम्हारा
केदार

[मार्च, १९४५]

प्रिय शर्मा,

तुम्हारे लिये ये पांच पत्र (निराला जी) के भेज रहा हूं—किन्तु मुझे यह पता नहीं चलता कि तुमने मेरे चित्रकूट के निमंत्रण को स्वीकार किया अथवा नहीं। लिखो तो क्या इरादा है। तुम्हारा पोस्ट कार्ड इतना गुमसुम था कि कुछ हवा ही नही मिली तुम सबकी।

न फोटो भेजी तुमने न पुस्तकें भेजीं। मैंने तो समझा था कि निराला जी एकाध दिन को यहां उतरेंगे। किन्तु आज तक कोई पता नहीं चला।

५००/- की बात ठीक है। मैं दो-एक दिन में प्रयत्न करना प्रारम्भ करूंगा। अभी किसी से नही कह सका। कृपया एक विशेष विवरण भेजो क्या है और कैसा है। कौन क्या है—कहां है ? तब तो लोग देंगे।

उत्तर का प्रार्थी।

तु०
केदार

Banda
13-4-45

My dear Sharma,

Excuse me for being late in giving you reply. I shall write to you later on in full detail. At present I am very busy with a

1. ५००/- का प्रबंध—साहित्यकार संसद के लिए।

murder case which is to last for a fortnight Where is Nagar ? Has he gone to Bombay for the job ? I am sorry to have failed in seeing you there at Agra as I could not reach there. What news ? Where will you go to in Summer Holidays ? reply soon.

Yours
Kedar

RAM BILAS SHARMA
M. A. Ph. D.
Head of the English
Department

B. R. COLLEGE
Agra 13.4.1945

प्रिय केदार,

निराला जी प्रयाग पहुँच गए हैं। तुम्हारे पत्र मिल गए हैं। आगे आयें तो सुरक्षित रखना। मेरा ख्याल है, तुम्हारी किताब मेरे चित्र के बिना ही छपे गी। कब तक छप रही है। तुम्हें अनुवाद के लिए पुस्तक भिजवाने वाला हूँ। उसके साथ तुम कुछ किताबें खरीदना चाहो तो और भेज दूं। पहले जो किताबें नरोत्तम ने भेजी थीं पहले उन्हें या तो भेज दो या जो रखना चाहो उनके पैसे भेज दो। इस समय तुम्हें ये किताबें भेज सकता हूँ—

1. History of the Oct. Revolution	5-0-0
2. Historical writing of Karl Marx	7-8-0
3. Lenin on Religion	0-12-0
4. Stalin—War of Liberation	0-12-0
5. Stalin on Leninism	1-8-0
6. Marx –Letters on India	1-0-0
7. Lenin –To the Rural Poor	0-12-0
8. Marx & Engle –Historical Materialism	0-10-0
9. Constitution of the USSR	0-12-0
10. Soviet Writer looks at the War (Imp articles from the Soviet Journal War & the working class)	2-0-0
11. Who Threatens China's Unity	0-10-0

12. Landsmark in the Life of Stalin 0-10-0
13. Critique of China's Destiny 2-0-0
14. Congress and Communists 0-6-0
15. They must meet again 0-8-0
16. The Imperialism alternative 0-3-0
17. Maker of New China 2-4-0
18. Yugoslav Partisans 0-14-0
19. Orel (Defence of Soviet City Illustrated) 2-8-0
20. Reminiscences of K. Marx 0-8-0
21. Marx—Wage, Labour and Capital 0-12-0
22. Stalin Reports 3-0-0
(Stalins reports to party)
23. राहुलजी—सं० पृथ्वी सिंह 2-8-0
24. Landmarks on the life of stalin 2-0-0
25. I. Stalin-Biography 0-12-0
26. Spotlight on Yugoslavia 0-8-0
27. France fights for freedom 0-10-0
28. French Peoples Struggle against Hitler 0-8-0
29. A New Germany in Birth 0-12-0
30. Polish Conspiracy. 0-10-0
31. Calender 0-8-0
32. Army of Heroes 5-8-0

बोलो कितनी की भेज दे। अगर २०/- अडवांस भेजो गे (अगले हफ्ते में) तो वादा आकर खुद किताबे दे जाऊ गा। वीरेश्वर जी तथा अन्य मित्रों से भी बातें करना। लेकिन बीम की शर्त में तुम्हारा आर्डर ही शामिल है, सबके मिला कर नहीं।

उत्तर जल्दी देना।

तुम्हारा
रामबिलास

निराला जी पर पुस्तक चल रही है। तु० पो० का० मिल गया।

रा०

Banda
23-4-45

प्रिय शर्मा,

तुम्हारा १३.४.४५ वाला (धोखेवाला) पत्र मिल गया था। धोखेवाला इससे कहता हूं कि खूब स्थूलकाय तो था लेकिन Matter न था सिवाय पुस्तकों की लम्बी सूची के।

शर्मा, तुम्हारे आने की शर्त मुझे मंजूर है। मैं बीस का मनीआर्डर भेज दूंगा लेकिन अगर तुम यहीं आकर लो तो अधिक अच्छा हो। विश्वास तो कर ही सकते हो। मैं इस पर भी तैयार हूं कि M.O. मे भेज दूं। जैसा कहो वैसा करूं।

यह विश्वास रखो कि यदि मेरी पुस्तक वहीं से छपेगी जहां गई है, तो तुम्हारा चित्र जब मिलेगा तब ही छपेगी वरना छपेगी ही नहीं। कोई खबर इधर हाल में प्रकाशक ने नहीं भेजी। कमलाशंकर चित्र के चक्कर में डाले हैं उन्हें। न बना कर देते है, न छपने पाती है। अगर तुम कहो तो कड़ी चिट्ठी लिख कर पांडुलिपि मंगवा लूं। ऐसी तैसी में गई ऐसी छपाई।

अमृत का ब्याह २६/४ को हो रहा है। मैं नहीं जा सकूंगा। एक केस ऐसा मिल गया।

निराला जी का एक पत्र आया था। उत्तर मैंने दे दिया है। उन्होंने बांदा में रेडियो विरोधी एक कवि सम्मेलन करने को लिखा था। चूंकि यहां सरकारी तौर से दो हो चुके थे इससे अब तीसरा करना अजीर्ण पैदा कर देगा। मैंने फिलहाल अनुचित समझा इसी से उन्हें वैसा उत्तर भेज दिया है।

साहित्यकार संसद के लिए रुपया इकट्ठा करना है। अभी तक व्यक्तियों के पास नही पहुच सका। देखूं कितना उसूल हो सकेगा।

यह जानकर हर्ष हुआ कि "निराला" जी पर पुस्तक चल रही है। कब तक समाप्त करोगे ? Chapters के नाम तो बता सकोगे।

इधर कुछ लिखा नहीं गया। वरना भेजता। गद्य का मन चाहता है; अनुवाद करूंगा। तुम्हारी पुस्तकों का इन्तजार है।

जो पुस्तकें तुम फायदे की समझो वह बीस की लेते आना। तारीख लिखो कब आ रहे हो।

वीरेश्वर जी चैन मे हैं। सलाम कह दिया था। पुस्तकों के मोल लेने का भी जिकर कर दिया था। वह न लेगा। बच्चे खैरियत से होंगे ही।

तुम्हारा
केदार

569, Wright Town
Jubbulpore. 5-5-45

My dear K,

I have overstayed here. I have to go to Allahabad & Lucknow. Then if I find time, I shall come to Banda. It is likely. I may have to postpone this visit. Hope you will excuse. Leaving here on 9th.

yours
Ram Bilas

Banda
19-6-45

प्रिय शर्मा,

इतने दिन तक इन्तजार मे रहा कि तुम नही आये तो पत्र जरूर भेजोगे । मै चुप यों था कि तुम न जाने कहा हो, किस पते से खत दू । प्रयाग को लिखा तो वहा से भी सूचना न आई कि तुम कहा हो । नागर भी कहा और किस पते से है मुझे पता नही है । शाहगज २५६ नम्बर के पते से ही लिखा है उसे । उत्तर नही आया । शायद उसे पत्र ही नही मिलते । मई की सरस्वती देखी ही होगी । सुना है कि खूब जहर उगला है ·आलोचक ने हम पर . अगर कटिंग भेज सको तो अच्छा हो ।

शेष कुशल है । कुछ कवितायें लिखी है एक नरेन्द्र को भेजी है । दो हंस को । एक आज को ।

केदार

mehtab Mahal
Wajirpura Agra
11/7/[45]

प्रिय केदार,

युकलप्टस[1] के पेडों वाला सुन्दर मकान बदलना पडा—मकान मालिक का तबादला होने से । यहाँ पर तो कब्रें है और गधे ।

1. युकलप्टस के पेड़ों वाला मकान स्वदेशी बीमा नगर आगरा में था ।

तुम्हारे लिए तस्वीर खिचवाई। लेकिन अच्छी नही आई। फिर ट्राई करूँगा। नरोत्तम फिर अभ्युदय निकाल रहा है। तुम क्या लिख रहे हो ? निराला जी के पत्र आये थे। इलाहाबाद मे पानी बरसा है और इतना कि जमुना का पानी गगा मे भरने लगा। बाँदा का क्या हाल है ? श्रीमान और श्रीमती वीरेश्वर से नमस्ते कहना। यहाँ तो अभी बादलो की राह ही देख रहे है। बाकी राजी खुशी —

तुम्हारा
रामविलास

Banda
23-7-45

प्रिय शर्मा,

तुमने यह दुखद समाचार सुनाया कि युकलप्टस के पेडो वाला मुन्दर मकान बदलना पडा और अब तुम उस जगह पहुच गये हो जहा कब्रे है और गधे है। यह भारतीय जीवन के अनुपम प्रतीक है।

जब तुम मेरे लिए तसवीर खिचवाते हो तब अच्छी नही आती। आशा है कि तुम झूठ न बोलोगे और न बहाना करोगे। यह Chance ही है कि खराब हो ही जाती है। भई, जैसे हो वैसी ही तो आवेगी। मै तो वैसी ही एक चाहता हू। मेरे [मेरी] पुस्तक के चित्रकार ने दगा दिया और अव सग्रह भी रुक गया है। कोई प्रकाशक खोजो तब काम बने। मैं तो किसी हरामजादे को नही जानता। गाली दे गया माफ करना।

मैने जो लिखा वह 'नया साहित्य" मे भेज चुका हू देखोगे ही। तुम्हारा नाम भी है। निराला जी का पत्र आया है। अब पानी बरसा या नही ?

दोनो श्रीमान-श्रीमती वीरेश्वर से नमस्ते कह दिया है। तुमने क्या लिखा ? "हस" देखा होगा ?

केदार

RAM BILAS SHARMA
M A Ph D
Head of the English Department

B R College
Agra ...194

महताब भवन,
वजीरपुरा, आगरा
१२-३-४६

प्रिय भाई,

बहुत दिनो से तुम्हारा कोई समाचार नही मिला। क्या लिख रहे हो, क्या पढ़

रहे हो ? पार्टी का नया साहित्य तुमने क्या-क्या पढ़ा है और वह कैसा लगा ?

निराला जी की हालत काफ़ी खराब है। रामकृष्ण वहीं जा कर रहें गे और उनकी देखभाल करें गे। इसके लिए मैं मित्रों में धन संग्रह कर रहा हूँ। क्या तुम कुछ भेज सकते हो ? भेजना तो यहीं मेरे पते से और उसे अपने तक रखना। यह प्रबन्ध निराला जी से गोप्य रखा जाय गा।

तु०
रामविलास

Kedar Nath Agarwal
B. A. LL. B
Advocate

Banda (u.p.)
Date-15-3-1946

प्रिय भाई,

कल खत मिला मेरी जिन्दगी मे चौगुनी खुशी आ गई। सोचा था कि लिफाफा है, हालचाल लम्बा लिखा होगा। पर कलम कम ही चली थी। फिर भी कुछ न आने से, कुछ आया यही क्या कम है।

तार से फौरन ही २५/ निराला जी वाले हिसाब में भेज रहा हूं। पहुंच लिखना। अधिक भेजता पर है नहीं। यही मेरी थाती है। इससे छुटकारा पाने मे बेहद खुशी हो रही है। मुरदा पैसा जिन्दा हो रहा है इसी कारण से। अपने त्याग से नहीं। यह मेरा कर्तव्य है।

निराला जी की हालत तो लिखते कैसी है। Short Cut न हुआ करो। मुझे चिन्ता हो गई है। लिखो क्या हाल है ? प्रयाग से नागर का पत्र भी नही आया कि कुछ जान सकू। तुम बिना हवा के पेड़ जैसे आगरे में गड़े हो। इधर हिलते तक नहीं। इसी से बड़ी बेचैनी रहती है।

एक तो बहुत कम लिखता हूं। फिर पत्र न आने पर और भी पत्थर हो जाता हूं।

जो कुछ लिखा है वह सब हंस [हम] व नया साहित्य में देख ही चुके हो। शायद तुम्हें पसन्द नहीं आया वरना मेरी पीठ ठोकते ही स्याही के अक्षरों में। पर विश्वास है कि उम्दा लगा होगा। बुरा होता तो तुम तड़ाक से कागजी चपत जमा देते।

१---"नया साहित्य" में कई बहुत उम्दा लेख थे। डा० मोती चंद का नया था। तुम्हारा आदि काव्य भी। जन नाट्य पर रमेश का। सीपियाई की (पहली) सिनेमा वाली आलोचना। कविताओं में मेरी ही मुझे रुची। सफदर का आल्हा था तो बढ़िया, पर अधिक प्रिय न लगा। वजह न समझ में आई।

२— "नया साहित्य" भी अच्छा है। बहुत तो नहीं पर कुछ कम। आल्हा

की सिरीज चली है। उम्दा है। कविताओ मे माथुर की कविता "जनयुगीय" नहीं है। वैसे बढिया है। नया साहित्य मे जीवन चाहिए। केवल कल्पना नही। वीरेश्वर बाजी मार ले गए है। "बोल अरी ओ धरती बोल" भी खूब है। अब की तुम्हारा, "उप. काल" भाषा का लोहा लगड ले कर पढ़ते-पढ़ते भेजा खौद देता है। यह डिशकशन भी ज्यादा Scholarly हो गया है। मालूम होता है कि पहले का लिखा धरा था। और भी सामग्री बेहतरीन है।

कुछ चित्तप्रसाद के व अन्य चित्रकारो के powerful sketches (दैनिक जनजीवन के) निकलवाओ। इसकी कमी महसूस होती है।

कहानियां अभी नही जंची। वैसे अच्छी है।

तीसरा "नया साहित्य" कब तक छपेगा। शमशेर की चोट कैसी है? अब वह कहां है? पत्र दिए पर जवाब नही आया।

"टीटो का आल्हा" देस की आगा खा गयी है। दुख हुआ। कापी देखने को उत्सुक हू। पाडुलिपि एक दूसरी तो होगी ही।

मजदूर सभा का आल्हा पास है। बडा मजे का है।

यहा peoples age की प्रति लेता हू। बहुत ही लाजवाब निकल रहा है। Local agency हो गयी है। sale अभी सब १० तक है।

अगिया बैताल तुम्ही हो न।

किताबे वही पढता हूं जो तुम मुझे पढाना चाहते। भई खब निकलती है।

कहो कब बादा आओगे। मलिकिन कहा है? नमस्कार। बच्चे अच्छे होगे। प्यार। खूब लम्बा पत्र लिखना।

तुम्हारा
केदार

हिन्दी साहित्य सभा

सभापति
श्री बालकृष्ण पाडेय, एम० ए०
मत्री
श्री रामविलास शर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी०
श्री मदनगोपाल मिश्र, एम० एस-सी०

लखनऊ
ता०.........
महताब भवन
वजीर पुरा— आगरा
१९-३-४६

प्रिय केदार,

तुम्हारा पत्र मिला। बुरा न मानो, तुम्हारी कविताओ से तुम्हारे पत्रो मे मुझे ज्यादा रस मिलता है। इधर की कविताओं मे एक ठहराव महसूस होता है। यानी जहाँ थे, वहाँ से तुम आगे नही बढ़ रहे हो। तुम्हारी कविता मे जो नये-नये

भाव-चित्र देने की क्षमता है, उसका दायरा संकुचित-सा होता जा रहा है। नये हंस में तुम्हारी 'गुम्मा ईट' देखी।

"न कच्ची है

न मेवर है

न कोई खोखलापन है"

खूब ठस और सुन्दर है। लेकिन इसी बात को तुम 'कानपुर' और 'कोयलों' में ज़्यादा खूबसूरती से और जोरदार शब्दों में कह चुके हो। अब तुम उसी बात को सिर्फ दोहरा रहे हो। यानी निम्नवर्ग के प्रति तुम्हारी सहानुभूति विभिन्न प्रतीकों से प्रकट हो रही है लेकिन उस अशरीरी सहानुभूति से तुम आगे नही बढ रहे हो। क्यों, मेरा विचार गलत है ?

'चन्दगहना', 'काटो काटो करबी' वगैरह मे यह सहानुभूति सशरीर है। उस परम्परा को आगे बढाना जरूरी है ? नये ठोस अनुभव मे-- जो प्रतिक्रिया-वादियो के सिर मे गुम्मा ईट जैसे लगे।

आज हिन्दी कविता में आमतौर से एक ठहराव नजर आ रहा है। कुछ लोग जहाँ थे, वहाँ मे पीछे जा रहे है, कुछ वही पैर टेके हुए है। इस ठहराव को जल्द तोडना है— अपनी जनता की आज की हालत को समझ कर, उसके नजदीक जा कर। इसलिए तुम्हें यह लिखा —कागज़ी चपत न समझना।

नये हंस मे माचवे और वीरेश्वर की रचनाएँ एक साथ पढ़ने मे असली और नकली का फर्क साफ दिखाई देता है। माचवे की सहानुभूति गहराई से कविता मे नहीं प्रकट हुई, वीरेश्वर की आनबान, पैतरेबाजी और खम ठोंकना देखते ही बनता है।

'कहाँ के हो महेश, रच रहे नया मसान हो' इस पक्ति को हिन्दी मे वीरेश्वर के सिवा दूसरा कोई न लिख सकता था। मेरी तरफ से बधाई दे देना। अगर उसने दस-पाँच लाइने और ऐसी लिख दी तो मुझे उनके दर्शन करने बाँदा आना ही पड़े गा। मुझसे खफा तो नही है ?

निराला जी का हाल क्या लिखें ? राशन का ज़माना, खाना-पीना अस्त-व्यस्त। कभी साग उबाल कर खा लिया, कभी कुछ फटे हाल पहले जैसे या बदतर। दिमाग उन्ही के शब्दो में फुल स्विंग पर है। लेकिन इधर उनकी कविताएँ ज्यादा साफ और निखरी हुई मिली।

मैं इस साल विदेशी भाषाओं से कुछ कविताएँ अनुवाद कर रहा हूँ। गर्मियों में मुलाकात हो गी तो दिखाऊँ गा। लेकिन सब गद्य में है।

अपना रुटीन क्या लिखूं ? कालेज का काम, बच्चों को पढ़ाना, कुछ पार्टी के लिए लिखना-पढ़ना, कुछ अपना अध्ययन। साल बीत गया पता ही न चला। डंड

बैठक बदस्तूर है। नरोत्तम का पत्र आया है, बीवी [बीबी] के प्रेगनेंट होने से परेशान है।

तुम्हारा
रा० वि०

RAM BILAS SHARMA
M. A. Ph. D.
Head of the English Department

B. R. College
Agra··· 194

महताब-भवन
बजीरपुरा-आगरा
२२-४-४६

प्रिय केदार,

तुम्हार गालों की सुर्खी और उस पर बालों की सफेदी खूब है। जरूर देखने आऊंगा। लेकिन अभी गाय, भैंस लगती है, फिर भी यह सफ़ेदी क्यों? क्या रात को चिराग जल्दी ही गुल हो जाता है?

तुम्हारी आलोचनाओं से अधिकाशतः सहमत हूँ। पत्र बंबई भेज रहा हूँ। बच्चन के बारे में पार्टी की कोई नीति नही है। न इस तरह किताबों के बारे में पार्टी की नीति निर्धारित ही हो सकती है। क्या तुमने हंस में मेरी लिखी आलोचना देखी थी? एक बात साफ़ है कि 'सतरंगिनी' में पहले से उसकी कविताएँ अच्छी है और उनके दृष्टिकोण में भी काफ़ी अतर है।

तुम्हारे आल्हा[1] का अन्तिम बन्द खूब जारदार है। मेरी समझ में आल्हा की खूबी थोड़ी-सी बात को बढ़ाकर और विस्तार मे कहने मे है। लेकिन तुम्हारी कहानी मे बात बहुत बड़ी और कहने को स्थान कम रहा है। इसलिए घटनाओं का स्पष्ट चित्र हृदय पर अंकित नही होता, वे द्रुतगति से एक-दूसरे के बाद सपाटा मरती [मारती] चली जाती है। तुम्हारी खूबी है Lyricism, उसका मौका तुम्हे आखिर मे ही मिला है।

नया-साहित्य[2] में तुम्हारी कविताएँ खूब अच्छी लगी।

वादा तोड़ने पर तुम्हारी गालियाँ न मिले, इसलिए आने का अवकाश

1. आल्हा—बंबई के नाविक विद्रोह पर।
अब यह आल्हा 'बबई का रक्तस्नान' नाम स परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद से पुस्तकाकार प्रकाशित हो चुका है। [अ० वि०]
2. नया साहित्य—बम्बई से प्रकाशित द्वैमासिक।

मिले गा, तभी सूचित करूँ गा। कोशिश करूँ गा कि मई के दूसरे हफ्ते तक ही आऊँ। घी, दूध की सख्त जरूरत हे, मै भी कमजोर हो गया हूँ। दोस्तो का प्यार और खातिर ही पहले जैसा स्वास्थ्य दे सकती हे।

लेकिन मेरे बाल सफेद नही है श्रवण समीप भी नही। चिन्ता न करना।

वीरेश्वर जी को सप्रेम। तु०

रामविलास

बादा

२-५-४६

प्रिय शर्मा,

तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। यह जानकर खुशी हुई कि मई के द्वितीय सप्ताह मे आ रहे हो। मेहरबानी करके सूचित करना कब किस तारीख को आओगे। हाँ, खूब सामग्री लाना। खूब बाते होगी।

गरमी खूब पड रही है। लेकिन चिता न करना।

आल्हा को तुमने कही न कही भेज ही दिया होगा। लिखा नही। "नये पत्ते"[1] का प्रकाशन हो गया है। अभी देखने को नही मिला। मँगाऊगा।

वीरू[2] चैन से है। वकालात तो ठप्प ही सी हे। बुरा जमाना है। खत देना। प्रोग्राम क्या है?

तुम्हारा ही

केदार

महताब भवन

वजीरपुरा, आगरा

२८-५- [४६]

प्रिय केदार,

बच्ची ने टायफाइड ने सब प्रोग्राम फिस कर दिया। फिर रही—'प्राण जाहि पर बचन न जाई।' आऊँ गा जरूर और आने के दो दिन पहले सूचना भी दूँ गा। वीरेश्वर भाई को वन्दे।

तुम्हारा रामविलास

---

1. नये पत्ते—निराला जी का कविता सग्रह।
2. वीरू—वीरेश्वर सिंह।

Banda
3-6-46

प्रिय शर्मा,

कृपा कार्ड मिला। जी को शांति मिली। मुझे तो ऐसा हो गया था कि तुम कहीं उड़ गये हो इसी से गुमसुम हो गये हो।

यह जानकर दुख हुआ कि बच्ची को Typhoid हो गया है। पूर्ण विश्वास है कि हमारे तुम्हारे प्रेम से वह स्वस्थ हो जायगी।

"प्राण जाहिं पर वचन न जाहीं" वाली बात खूब कही। धन्यवाद। कृपया १० जून के बाद ही तशरीफ लाओगे। ७-६-४६ को मैं प्रयाग एक बारात में जाऊंगा। शायद ८-६-४६ को वहां से वापस होऊँ। अभी परसों वहां से लौटा हूं। नागर बहुत पूछ रहा था। खैरियत है। 29-5-46 को Radio में गया होगा।

तु०
केदार

Banda
15-9-46

प्रिय शर्मा,

यह पत्र इसमें भेज रहा हूं कि तुम कहीं यह न सोच बैठना कि केदार मर गया है। अपने जिंदा होने का सबूत है यह छोटा पत्र।

बहुत दिनों से खामोश हो क्या बात है? कुछ लिखो तो मै कवितायें नई नई भेजूं। सकुशल हूं। अपनी हरकतें लिखना।

बच्चों को प्यार।

तुम्हारा ही
केदारनाथ

Banda
7-12-46

प्रिय भाई,

हाल में, मोहर्रम की छुट्टियों में, प्रयाग गया था। वहां प्रिय मुंशी[1] के पास

1. मुंशी—मेरे छोटे भाई रामशरण कवि और पत्रकार, नरोत्तम नागर के साथ काम कर रहे थे। शीघ्र ही 'लोकयुद्ध' तथा जन प्रकाशन गृह के काम में हाथ बंटाने बंबई जाने वाले थे।

ही ठहरा था। चार दिन वहाँ रहा किन्तु चारों दिन बहुत वढ़िया बीते। तरह-तरह की बाते हुई। तुम होते तो तुम से कविता पर अधिक बात करते घबडाता पर मुशी से खूब-खूब बातें हुई। तमाम कविता पाठ हुआ। मुशी भी कमाल का लिखता है। मैने पहली बार कवि मुंशी के दर्शन किये। आगे खूब निकलेगा।

वहाँ कुछ नये लोगों से मुलाकात भी हुई।

तुमसे मिलने की उत्कंठा तीव्रतम है। एक युग हो गया तब मिला था। अब पुन: बात करना चाहता हूँ। इस बार बड़े दिन में चित्रकूट आओ सकुटुम्ब, मैं आमत्रित करता हूँ। ऊपरी शिष्टाचार का निमंत्रण न समझना। दिल से बुलाता हू। मुशी और नागर को भी बुला आया हू। तुम आओगे तो वह भी आवेगे। लिखो कव रेलवे स्टेशन में तुम्हारा स्वागत करूँ। अब तो काफी टालमटूल कर चुके हो।

हा, तुम्हें यह जानकर बेहद दुख होगा कि वीरेश्वर के सिर मे एक बदमाश ने लाठी मारकर वडा घाव कर दिया है अतर्रा[1] में, केवल विला बात की बात पर। दवा हो रही है। लाभ है। खतरा की घड़ी निकल गयी है।

कोई नये हाल नही है। बच्चो को प्यार। मलकिन को नमस्ते।—नही, लाल सलाम।

तु०
केदार

New Years Day
[1-1-47]

प्रिय केदार,

साथ का खत पढ कर वीरेश्वर को दे देना। तुम देखो गे कि अब मै जल्दी-जल्दी खतो का जवाब देता हूँ। न यकीन हो तो ढेर से खत लिख कर देख लो।

दो-तीन रोज से यहाँ खूब सर्दी है। आज सबेरे घूमने गये तो ठड का हिसाब नही था। फिर भी उस पाले की सर्दी में हम सीचे हुए नाज की तरह बदन हरे [हरे बदन] हो गए।

अमृतराय मे मालूम हुआ था कि तुम्हारा कविता-संग्रह बनारस से निकल रहा है। लेकिन यह तो बहुत धीमी प्रगति है। तुम्हें और वीरेश्वर को साल में कम-मे-कम दो किताबें लिखनी चाहिए। हम लोग लेखक है और कलम से देश की सेवा करने है। हमारी कलम को झख मार कर बैठ न जाना चाहिए। लेकिन

1. बाँदा से लगभग 30 किलोमीटर दूर, बाँदा की तहसील। [प्र० शि०]

तुम्हारी कलम पर यह दावा नहीं कर रहा हूँ—वकील हो, हिम्मत भी कैसे कर सकता हूँ। सवाल हमारे-तुम्हारे और बहुत सों के सामने प्रकाशन का है। इसके लिए हम लोगों को मिल कर कोशिश करनी चाहिए।

मेरा प्रस्ताव यह है। हम लोग कुछ लेखकों की कंपनी, यूनियन या संघ बनायें। Paper Controller को apply करके कागज का कोटा लेकर प्रकाशन शुरू करें। कागज के प्रबन्ध में—और प्रकाशन की आज्ञा लेने में— तुम मदद करो, बाकी इन्तजाम मैं कर लूँ गा। बुनियाद डालने के लिए अमृत नागर, मै, तुम वीरेश्वर और नरोत्तम है। इसके अलावा जिसे चाहो अपने संगठन को आगे विस्तृत भी कर सकते हैं। कौन-कौन सी किताबें छापनी है, इसकी मैंने योजना बना ली है। लेकिन वह गौण है। पहले Paper Controller से कागज लेना है और अपना छोटा-सा संगठन बनाना है। तुम इस पर सोच कर लिखो और जल्दी कदम उठाओ।

काफ़ी पूँजीपति नयी संस्थाएँ चला रहे है। हम लोगों को काफ़ी देर हो गई है। और देर होने पर घर मे ही लिख कर रखने लायक हो जायँ गे।

तु० रामविलास

agra
15-1-47

प्रिय केदार,

इस समय कालेज मे बैठे हुए हम तुम्हें खत लिख रहे हैं। बहुत ही मनहूस वातावरण है। 80 लड़के इम्तहान दे रहे हैं। यानी मेरी आँख बचा कर बात करने, डेस्क में रखी हुई किताब देखने और जेब से कागज निकालने की कोशिश कर रहे हैं। कुछ लोग छत की तरफ देख रहे है। कुछ रात की घोटी हुई चीजें जल्दी से कागज पर उतारने की कोशिश में हैं।

नन्ददुलारे जी का कोई खत इधर नही आया, उम्मीद है निराला जी का अभिन्दन विज्ञापित तिथि को हो जाय गा। क्या तुम काशी आओ गे ? मुझे भरपूर आशा है कि मैं खुद जरूर पहुँचूँ गा। आओ तो वहाँ बातचीत हो।

Wife की तबियत अब ठीक है। खाना पकाने के लिए मिसरानी रख ली है। चौका बर्तन को एक मेहरी लेकिन पहले के Strain से मेरी एक आँख मे तकलीफ हो गई और १० दिन बीतने पर अभी भी ठीक नहीं हुई। इसलिए तुम्हे और जल्दी खत भी न लिख पाया।

मैं समझता था कि तुम्हारा वकील दिमाग कुछ काम करे गा और तुम फौरन

कागज वगैरह का इन्तजाम कर सको गे। लेकिन तुम भी निकले साहित्यिक! मैं तुमसे सलाह ले रहा हूँ और तुम उल्टा मुझसे सवाल कर रहे हो।

Paper Controller तो इलाहाबाद मे हो गा। सबसे पहले जरूरी चीज यह है कि हम लोग Publication शुरू करने की अनुमति प्राप्त कर ले। इसके लिए यह जरूरी है कि हम लोग एक कपनी या अपनी प्रकाशन-सस्था वगैरह बनाये। क्या तुम्हारे साहित्य-परिषद बाँदा को पेपर कोटा मिल सकता है ? पता लगाओ।

मै चाहता हूँ कि तुम कानूनी शब्दावली मे अपनी प्रकाशन सस्था का मसौदा बना लो जिसे हम लोग विज्ञापित आदि कर सके।

शेष कुशल

Remember me to Vireshwar

तु० रामविलास

Banda
3-3-47

प्रिय भाई,

मै बनारस न पहुँच सका क्योकि पहुँच ही नही सकता था। तुमने निराला जयन्ती देखी ही होगी। हम लोग उसमे वचित रह गये। हिन्दी के अखबार भी नही पढते इससे कुछ विशेष हाल भी नही मालूम हो सके।

आजकल हम लोग भी Dull पड रहे है। 'पारिजात' मे चल रही लेखमाला लिख कर शेर मार लिया करता हूँ हालाँकि एक भी मच्छड नही मरता। कहो तो वह लेख कैसे लगे ? इधर क्या लिख रहे हो ? मुशी तो बम्बई पहुँच गया। कोई पत्र नही मिल सका।

घर मे तो कुशल हे। आजकल एकान्तवास है। India Today[1] पढ रहा हूँ। Fine—।

नरोत्तम का कोई पत्र नही मिला। होली की अबीर।

केदार

1. इडिया टुडे—रजनी पामदत्त की प्रसिद्ध पुस्तक।

गोकुलपुरा-आगरा
१५-३-४७

प्रिय मित्र,

कविता की साध इस पत्र से ही पूरी हो। पूरी हो तुम्हारे प्रिय मुक्त वर्णवृत्त मे।

पढ़ता था पत्र कुछ पुराने जब
देखा एक लम्बा सा defence मुक्तछंद का
दे रहा हूँ वैसे कुछ पत्र एक संग्रह में।
पत्र है निराला के,
स्वयं में खोये हुए,
सधे हुए, मोतियों से अक्षर रचे हुए,
कविवर गंगा के किनारे जहाँ
बैठ कर झरोखे मे देखते है नीलाकाश !
पत्र है कविवर पंत के,
सन्' २६ के, छायावादी प्रत्यूष काल के,
पत्र और पुष्प जैसे आये जब हिन्दी
के उद्यान में,
कोमलकान्त कवि पंत रुपहले और लिये,
महाकवि निराला—एक कान पर शेफाली
दूसरे पर अमल—
कोमल – तनु तरुणी—जुही की कली।
डूबे हुए प्रथम नवयौवन के स्नेह मे,
पुलकित हो उठो गे पढ़ कर तुम वह
उत्कट आत्मनिवेदन !
पत्र है नरोत्तम के,
सफल जो शास्त्रकार शुतुर्मुर्ग पुराण का,
जीवन की मही में तप कर जो बन गया है
मानव प्रगतिशील !
गोर्की के जीवन का चित्र देख कर जिसे
हो गया था ज्ञान, कैसे स्वर्ग का निर्माण होगा
इसी संसार में।
पत्र है अमृत के—अमृतलाल नागर के—
जीवन की नदी में पैठ गया मित्र वह
गहरे में,

मोतियों के साथ ही बघेर लाया ढेर सारी,
गीली रेत !
अपने ही जीवन के कर्दम को अर्पित किया
मुझे—
बाट जोहता है कब खिले इस पंक से···
पंकज साहित्य का !
—इसी समय छोटी बिटिया मेरी —
नाम है सेवा, लोग कहते है पप्पन या पपुआ उसे,
पञ्चम में गा रही है राग स्वच्छंदता का।
सुनता हूँ उसे और याद आ जाती है
कविता तुम्हारी मुझे।
वैसी ही स्वाभाविक, बिखरी हुई लड़ियाँ है
इस मुक्त काव्य की !
पत्र है तुम्हारे भी—
प्रेम भरे, हठ भरे, कही-कही रोष भरे,
हर जगह जीवन से भरे हुए, बोलते से
अक्षरों में, पंक्तियों में और शब्द-शब्द में !
सोच लो,
गुणात्मक रूप से तो
बहुमूल्य होगा यह पत्र संग्रह,[1]
किन्तु परिमाण में, अभी है अवतार वामन का
दिखाओ चाँद इसे
उठाये बाँह और विस्तृत आकार करे।
'भूतो न भविष्यति'...कह उठे लोग सब,
तब तो तारीफ है मेरे सपादन की,
वर्ना तो घास कूड़ा रोज़ छपा करता है।
लेख 'पारिजात' का
एक ही देख पाया
आता है कालिज मे
मार ले जाते है मित्र लोग !

---

1 पत्र मग्रह—इम समय माहित्यकारों के चुने हुए पत्रो का एक मकलन निकालने की योजना थी, कार्यान्वित नही हुई।

लेख वह अच्छा था
किन्तु अब खो गया है स्मृति के उस पार !
आशा है प्रसन्न हो ।
देर तक रात में लैम्प जले कवि का,
मायावी मरीचिकाएँ जीवन से दूर हों ।
तथास्तु ! एवमस्तु ! मित्रवर !

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

B. R. College
Agra......194

RAM BILAS SHARMA
M. A. Ph. D.
Head of The English Department

गोकुलपुरा
आगरा
२०-५-४७

प्रिय मित्र,

तुम्हारे आग्रह से भेजा हुआ 'युग की गंगा' संग्रह मिला । प्रथम प्रकाशन के लिए बधाई । किताब का गेटअप मुझे पसन्द आया । छपाई कुछ गहरी ज़रूर हो गई है ।

लखनऊ में गोराबादल[1] के एक संबंधी विद्यार्थी योगेन्द्रकुमार मिले थे । शायद तुम से मुलाकात हुई हो, उनसे बाँदा के हाल मिले । गर्मी की छुट्टियों में मेरा बाँदा आने का प्रोग्राम अब भी है । शायद जून के दूसरे पखवारे में आ सकूँगा । शायद यह खबर ग़लत नहीं है कि तुम्हारे यहाँ गाय भी लगती है ।

यहाँ से २८ ता० को सिकन्दरा राव जा रहा हूँ । हो सके तो तुम और वीरेश्वर दोनों किसान कानफ्रेंस में आओ ।

आजकल मैं एक आलोचना संबंधी पुस्तक से युद्ध कर रहा हूँ । अपनी कविताओं के बारे में तुम्हारी सम्मति सुन कर बड़ा उत्साह हुआ ।

बाक़ी जवाब आने पर···

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

1. गोराबादल—वीरेश्वर सिंह

खिन्नी गली, गोकुलपुरा-आगरा
१६-६-४७

प्रिय केदार,

वीरेश्वर

हमारा प्रोग्राम था तुम्हारे यहाँ आने का जून के दूसरे पखवारे में लेकिन यहाँ दूसरा प्रोग्राम तै हुआ मुशी की शादी का जो २८ जून को यही हो रही है। इस लिए साग्रह निवेदन है कि जनाबमन् तशरीफ लाये। नरोत्तम और निराला जी को भी लिखा है। आओ तो मामला जमे।

तुम्हारा
रामविलास

Banda
17-7-47

प्रिय मुंशी,

मुझे उतना दुख है जितना तुम्हें भी न होगा क्योंकि मैं तुम्हारी शादी मे शरीक न हो सका। इतना सुदर अवसर था कि शायद अब इस जिन्दगी में कभी न आयेगा।

अगर बाँदा में 'इप्टा' देखने तक ही बात होती तो मैं आगरा को चल देता लेकिन उसे तो मैंने ही यहां के वातावरण मे जान और हिम्मत डालने को निमंत्रित किया था। मैं ही अगर न रहता तो फिर बड़ी भद्द होती। मुझे नागर ने सब हाल बताया है तुम्हारी शादी का। खूब मजा आया उसे सुन कर।

मेरा रोब तो मेरी बीवी नहीं मानती तब तुम और दूसरे लोग क्या मानेंगे। कहती है इन किताबों को बाहर रख कर आया करो। आँखे बहुत फालतू नही है। भैया चुप रह जाता हूँ। घर की आग बड़ी बुरी हो सकती है।

तुम सब का केदार कभी भी रोब नहीं गाँठता। वही बूद्धू की तरह चुप रहना जानता है।

बहुत आकुल हूं कि तुम कभी तो मेरे पास भी पत्र लिख दिया करो। नागर के पास लिखते हो पर वह दूर है इससे पता नहीं चलता। बहुत बड़े पत्र भेजो। क्या लिखा है ? जरूर लिखो। अब की बार तस्वीर देखी जनयुग मे।

सस्नेह केदार

बाँदा
११-८-४७

प्रिय शर्मा,

वीरेश्वर ने एक पत्र में परिषद् की ओर से तुम्हें सितम्बर के लिए बाँदा आने का निमंत्रण दिया था। किन्तु अभी तक निरुत्तर हो। कुशल मंगल है न? मौसम अच्छा नही है? इससे चिंता हुई। पत्र पाते ही मुझे उत्तर दो कि क्या कारण है?

तुम्हें आना है। यह टालना अच्छा न होगा. तुम्हारी आलोचना पुस्तक समाप्त हुई कि नहीं। तुम पत्रों की एक पुस्तक तयार कर रहे थे। उसका भी क्या हुआ?

"प्रतीक" श्मशान का रंगीन धुआँ रहा। इधर कुछ लिखता हूँ पर जोर नहीं पकड़ पाता। गाड़ी चलाए जा रहा हूँ। तेज़ गति नहीं हो पाती।

मेरे एक सम्बन्धी आगरे आ रहे हैं, तबादला होकर। वह आप ही मिलेंगे।

सितम्बर में प्रयाग भी तो आओगे.?

यात्रा मेरा लिखना।

तु०
केदार

केदार नाथ अग्रवाल
एडवोकेट

बान्दा (यू० पी०)
तिथि—26-8-47

प्रिय मुंशी,

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला। बम्बई के हाल सुन कर तुमसे ईर्षा [ईर्ष्या] होती है। तुम वहाँ हो जहाँ मनुष्य को बड़े भाग्य से स्थान मिलता है।

लिफाफों का पगार न मिलने की बात भी खूब मालूम हुई। इस तरह की तमाम चीजें लिखा करो तो मेरे लिए उपन्यास का सजीव मसाला इकट्ठा हो जाय। पर तुम तो इतना इतिवृत्तात्मक पत्र लिख देते हो कि नई दुनिया की हवा भी नही मिलती। तुम्हारे जीवन की अजीब रफ्तार है, उसी को जानने-समझने को मैं उत्सुक हूँ। कैसे क्या-क्या किया करते हो? फिर वहाँ तो इतने अच्छे कलाकार भी हैं कि उनका जीवन अति निकट से देखकर मज़ा आ जाता होगा। हमारे शमशेर[1] भाई क्या करते रहते हैं? उनकी ख़बर नहीं मिलती। 'जनयुग' में इस बार उनका नाम

1. शमशेर इन दिनों कम्युनिस्ट पार्टी के केन्द्रीय कार्यालय मे थे।

देखा कि वह 15 August को नाच रहे थे। काश मैं होता और उनका चित्र खींच लेता। चित्तप्रसाद जी के Posters लाजवाब ही तो होते हैं। ज़रा उनके बारे मे भी बहुत ज्यादा (देख-देख कर) लिखा करो। ज़ीवन का ज़ोर उन्ही में उभरा मिलता है। कवियो में रामविलास और चित्रकारों में चित्तप्रसाद दोनों एक ही रफ्तार मे आगे बढ रहे है और दोनों ने ही सही अर्थ में साहित्य और जीवन को समझा हे। मुझे तो इतनी खुशी होती है कि छाती फूल कर बहुत चौड़ी हो जाती है। हम सब तो घिघियाते है, कविता नही करते। पर कुछ लोगों ने हमे सर पर चढा दिया है इससे इतरा रहे है। सच मानो यही लगता है कि अब गिरे तब गिरे। कलम को जबरदस्ती कान पकड़ कर, खरेदता हूँ तब भी स्याही नहीं उगलती। बड़े-से-बड़े अवसर आते हैं मानसिक प्रक्रिया के व्यक्त करने के किंतु मूक ही रहती है। बेचारी करे तो क्या करे। जब मेरा दिमाग ही नही हाँकता तब वह चले तो कैसे चले। वह तो कहो कि भौतिकवाद के हल की मुठिया पकड़ ली है मैंने और जीवन की परती-धरती को रात-दिन जोते जा रहा हूँ, बीज बोये जा रहा हूँ और हर वक्त ताके जा रहा हूँ, इससे साहित्यिक अकाल से बचा हूँ वरना मैं भी बंगाल के ३५ लाख भूखे मृत व्यक्तियों में एक होता।

तुमने इधर 'शुद्ध साहित्य' की चर्चा 'हंस' में पढ़ी होगी। भाई, यह एक बड़ी बेवकूफी की समस्या पेश की जा रही है। 'प्रतीक' वाले भी इसी का दम भरते है। पर मेरी समझ में खाक नही आता। मजा तो यह है कि प्लैखानोव जैसे बड़े-बड़ों का नाम भी उद्धृत किया जाता है। ऐंगल्स की दुहाई दी जाती है तो लेनिन की। मैं कमर कस कर इन महापुरुषों से हाथापाई कर ही बैठता हूँ और बार-बार इन्हें परास्त करके जमीन पर धर पटकता हूँ। वह जरा भी उठते है तो फिर एक लँगडी मार देता हूँ। सच मानो यह 'शुद्ध-साहित्य' की आवाज ग़लत है। इससे न जीवन का कल्याण होता है न समाज का। फिर जब भौतिक जगत का ही अंश यह मस्तिष्क है तब हमारी विचार और भावधारा भी तो भौतिक जगत की अंश है। मानसिक जगत ऐसी कोई जगह है नहीं। फिर यह कहना कि उस जगत की ही सत्ता की वजह से यह भौतिक जगत स्थित है सर्वथा भ्रममूलक है। थोड़े में कहूँ तो यही कहूँगा कि पिनक का साहित्य ही 'शुद्ध साहित्य' में गिना जाता है। कहो तुम्हारी राय क्या है? अगर सलाह हो तो चाबुक चटकाया जाए।

जहाँ तक मेरी धारणा का सवाल है वह यही है कि वर्णहीन समाज की ओर अग्रसर करने वाला निर्व्यक्तिक [निर्वैयक्तिक] साहित्य ही अपनी महत्ता रखता है। शेष साहित्यतो 'शून्य' साहित्य है।

P. A[1]. में Writers Freedom पर एक लेख माला शुरू हुई है। तुम्हारे भाई

1. 'पीपुल्स एज,' साप्ताहिक।

साहब ने तो वह हथौड़ा दिया है कि कोई जवाब क्या देगा। विष्णु दे ने उत्तर दिया है पर वह सिवाय मिमियाने के और कुछ नहीं है। मुझे तो कोई भी तथ्य नहीं मिलता उसमें।

राहुल जी के दर्शन हो गए। खूब रहा। मैं तो तरसता ही रहूँगा। तुमने तो बहुत-बहुत बातें की होंगी। कुछ साहित्यिक तथा जीवन सम्बन्धी बातें। मुझे भी लिख कर भेज दो। यह स्मृतियाँ अपने तक ही सीमित न रक्खो, उन्हें मुझे भी देखने दो।

Book News मिली है। जी चाहता है कि सब पुस्तकें खरीद लूँ पर जेब फटा है इससे दमड़ी भी नहीं टिकती। एक भी उपन्यास पढ़ने को नही मिलता। यह कितना ख़राब है।

मेरी कविता कमजोर रही, यह मैं नहीं मानता। वह तो एक गीत के रूप में थी। ख़ैर। न छपने मे मुझे कोई दुःख नही हुआ। न हो ही सकता था।

[केदार][1]

Banda
16-9-47

प्रिय भाई,

मुझे चिन्ता थी कि तुम आगरे न पहुंच पाये होगे ट्रेनों की अनियमितता के कारण। पर पता चला कि आगरे के बाद वह प्रारम्भ होती है। इससे कुछ शान्ति हुई।

लिखो, सकुशल पहुंच तो गये। अब तुम्हारा ज्वर कैसा है? हाँ, मालकिन का हाल कैसा है? घर में तुम्हारी गैरहाज़िरी में ठीक ही ठाक रहा होगा।

मैं ९-९-४७ को ही रात बांदा पहुंच गया था। पंत से मुलाकात हुई होगी। क्या रहा? रसवाद के बारे में तुम्हारा क्या मत है? सूक्ष्म संकेत दे दो।

मैं रमेश[2] से बिल्कुल सहमत हूँ साहित्य की वर्तमान दिशा के बारे में। तुम्हारा दृष्टिकोण जान नही पाया। पर वह सहमत होगा ही।

कमलेश[3] भी खैरियत से घर पहुंच गये होंगे।

1. इस पत्र में केदारजी के हस्ताक्षर नही हैं। संभव है इसका अंतिम पृष्ठ खो गया हो। [अ० वि०]
2. रमेश—रमेश सिन्हा पत्रकार, कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ता।
3. कमलेश—आगरे के साहित्यकार पद्म सिंह शर्मा 'कमलेश'।

भाई, खूब रही कान्फरेन्स[1]। मुंशी का कोई पत्र नहीं आया।

वीरेश्वर ने पत्र लिखा ही होगा आना जरूर और मेरे लिए पुस्तकें जरूर लेते आना। भूल न जाना।

बच्चों को प्यार। सस्नेह
केदार

गोकुल पुरा, आगरा
२०-९-४७

डियर दोस्त

तुम्हारी चिंता बिल्कुल बेकार थी कि मैं आगरे पहुँचा कि नहीं। जिनकी तकदीर में आगरे रहना लिखा है, उन्हें ज़ंजीर खीचकर कौन रोक सकता है ?

ज्वर तो उतर गया है लेकिन, खुमार बाकी है। मालकिन के शरीर में खून की कमी है। दवादारू कर रहा हूँ। पंत जी मे मुलाकात हुई। अरविन्द घोष से नई-नई बातें सीखकर आए है। 'लोकायतन' खोलेंगे जिसमें ज्योतिद्वार, संस्कृति-द्वार, साहित्यद्वार आदि अनेक द्वार हों गे। बुद्धि का प्रवेश सभी मे निषिद्ध हो गा। चोबदार अज्ञेय, बच्चन, नरेन्द्र वगैरह होंगे···पंत जी खुद हैड जमादार। उम्मीदवारों में मेरा भी नाम लिख लिया है लेकिन मैं यहीं से काम करना चाहता हूँ।

रस के बारे में --उसके मनोरंजन पक्ष को हम स्वीकार करते है लेकिन वह लोकोत्तर आनंद ऐसा है कि उससे सामाजिक संस्कार नहीं बनते, इसे गलत मानते हैं। मुझे नहीं मालूम साहित्य की वर्तमान दशा के बारे में रमेश ने क्या कहा था। तुम विस्तार से लिखो, खास तौर से जो तुम खुद मोचते हो तो मैं उस पर राय दूँ। वीरेश्वर से तय हो गया था कि बाँदा नहीं आऊँ गा। हमारी तरफ से भेंट-भेंट कहना।

तुम्हारा
रामविलास

---

1. कान्फ्रेंस—इलाहाबाद में प्रगतिशील हिन्दी लेखकों का सम्मेलन।

केदार नाथ अग्रवाल
एडवोकेट

बान्दा (यू० पी०)
तिथि 18-10-47

प्रिय शर्मा,

मैं भी इधर घर की झंझटों में फँसा रहा हूँ और अब भी हूँ इसमे सुचित्त हो कर तुम्हें पत्र नही लिख सका। पोस्टकार्ड मिला था। वह उत्तर का आदेश देता रहा है पर घर के होहल्ला में उसकी मैं सुनागी ही क्या करता !

कल वीरेश्वर ने तुम्हारा नया लिफाफा पढ़ने को दिया। हाल मालूम हो गया। खुशी तो बेहद हुई कि लाला साहब[1] ठाकुर साहब[2] के बराबर मोटे हो गये ! पर जब पुस्तकें छप कर दिखायी दे जाएँ तब जानूँ। मुझे तो तुम्हारी कोई भी पुस्तक पढने को आज तक न मिली। न भारतेंदु पर न प्रेमचन्द पर। मोल भी लूँ तो कहाँ से ? पता ही नहीं मिलता।

तुमने मेरी भूमिका पर कुछ लिखा है। वह सब सही है। मैं अपनी भूमिका में संत-कवियों को Omit कर गया था। एक वाक्य में उन पर कुछ कह गया था। वह ठीक तो था परन्तु मैंने उन्हें जन-कवियो के रूप में व्यक्त नही किया। यह मेरी गलती जरूर थी। किन्तु मैंने अभी हाल में एक लेख लिख कर समाप्त किया है। उसमें मैंने उन्हे Mention किया है। यदि तुम यह पढ़ लोगे तो कभी भी मुझे दोष न दोगे। मैं उसे, कहो तो, भेज दूँ। इसलिए कृपया पुस्तक की भूमिका को अधूरी समझ कर इसको मेरी 'ठोंक पीट' का कारण न बना देना।

हाँ तुमने वस्तु जगत की आर्थिक प्रक्रिया के बारे में भी दो एक बातें लिखी है। तुम साहित्य में उस प्रक्रिया को घुमाव-फिराव के साथ रूप बदल कर साहित्यिक रूप में व्यक्त किये जाने की बात लिखते हो, मैं उसे साहित्यिक रूप में नहीं, जीवन के रूप में व्यक्त होने देना चाहता हूँ। सम्भवत: यही मतभेद है। बिना ऐसा किये हमारी पिछड़ी जनता हमारे स्तर तक नहीं आ सकती। पहले वह वहाँ आ जाये फिर आगे बढ़िये। इसलिए आज का साहित्य जीवन को अधिक अपनाये और उसी के अधिक अनुरूप हो, चाहे उसे साहित्यिकता खोनी ही पड़े तो मैं लाभ ही लाभ देखता हूँ।

प्रिय मुंशी के पत्र आते हैं। पर खूब नहीं लिखता। शायद व्यस्त रहता है। मैं उसे आजकल कई पत्र लिख चुका हूँ और अब भी लिखूंगा।

तुमने वह पुस्तक नहीं भेजी जो डाक द्वारा भेजने को कहा था। मैं बड़ी ही

1. केदारनाथ अग्रवाल
2. वीरेश्वर सिंह [ग्र० वि०]

उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ । वह पुस्तक पढ कर शीघ्र ही वापस कर दूंगा । खराब न होने दूंगा । इधर कई प्रतियाँ Soviet Lit की खरीदी है । पढ़ रहा हूँ ।

यह जान कर दुख हुआ कि मलकिन जी बीमार है । गृह-जजाल कठिन है पर इसी मे जीवन भी है । मलकिन की सेवा ससार की सेवा है । ऊब जरूर रहे हो प्रकृति के पत्तो मे छिप रहने को परन्तु वहाँ भी चैन न पाओगे । हम सबके लिए कर्म का क्षेत्र ही है जहा मरे और जिये ।

मै तो बार-बार बुला चुका बाँदा आओ । पर तुम आते ही नही । तुम्हे दोष नही देता, पर लाचारी पर खीझ उठता हूँ । कृपया घर की बीमारी से चिन्तित न होना । योग्य सेवा लिखना । मै तयार हूँ खिदमत करने को ।

हाँ, गोरा बादल अब Revenue Officer हो गये है । साधारण Citigen नही रहे, अब अफमर हो गये है और तनख्वाह पायेंगे और कुर्सी पर बैठकर माल के मुकदमे फैसल करेगे । कृपया उन्हे "खलीसा" भर के बधाई भेज देना । मैने अपनी ओर से दे दिया है ।

अब मै ही अकेला यहाँ की साहित्य-परिषद् का सक्रिय सदस्य रह गया । वीरेश्वर से सहयोग तो मिलेगा ही पर अफसरी की दुम जरा टेढी होती है । सीधा करूँगा पर वह फिर टेढी हो ही जायगी ।

सस्नेह
केदार

(कार्ड न० १)

गोकुलपुरा, आगरा
२७-१०-४७

प्रिय केदार,

छपे हुए 'लेटर पैड' पर तुम्हारा दुपन्नी खत मिला । यह जानकर हर्ष-विषाद कुछ न हुआ कि श्रीमान् गोरा बादल रेवेन्यू आफीसर हो गये है । मेरी तरफ से पीठ पर हाथ रखकर बधाई दे देना । तुमने मेरी कोई पुस्तक अभी तक नही पढी—इसमे ज्यादा नुकसान नही हुआ । जब पढने लायक किताबे लिखने लगूँगा तब तुम तक पहुँच ही जायेंगी । तुमने लिखा है कि सत कवियो पर 'एक वाक्य' मे कुछ कह गया था । अजी हजरत, आपकी भूमिका मे मध्यकालीन हिन्दी साहित्य के नाम पर सिर्फ रीतिकालीन कविता दिखाई देती है और तुलसी और सूर एक लबे पैराग्राफ मे पलायनवादी सिद्ध किये गये है । गलती तो थी ही, जिस

लेख में उसका मार्जन किया है, उसे मेरे पास भेज दो। मैं उसका ज़िक्र करके बैलेन्स बराबर कर दूंगा। ठोंकने-पीटने लायक तुम नहीं हो। जो कुछ कहूंगा मुहब्बत से। 'चोली चीर' वाली बात याद है न ?

समाज की आर्थिक व्यवस्था और उसका साहित्य पर प्रभाव, इस बारे में मैंने जो कुछ लिखा था, वह शायद साफ नही हुआ। इससे मुझे कब इंकार है कि आज का साहित्य जीवन को अधिक अपनाये और उसी के अधिक अनुरूप हो। लेकिन यह जीवन संश्लिष्ट रूपों मे प्रकट होता है। उसे Oversimplify नहीं किया जा सकता।

(शेष दूसरे कार्ड में)

(कार्ड नं० २)

साहित्य को आर्थिक व्यवस्था का सीधा प्रतिबिम्ब समझना हकीकत से इन्कार करना है। मिसाल के लिए तुलसीदास ने राजा दशरथ और राजा रामचन्द्र का नाम लिया है; इसलिए तुम उन्हें राजसत्ता का पोषक कह कर ही छोड़ दोगे— लेकिन 'भ त' के चरित्र में उन्होंने जो करुणा भर दी है, उसके मानववादी महत्व को बिल्कुल भूल जाओ गे। तुम यह भी नही बता सको गे कि तुलसीदास ने यह क्यों लिखा — 'दारिद दसानन दबाई दुनी दीनबन्धु दुरित दहन देखि तुलसी हहा-कारी।' दरिद्रता को रावण कहना क्या सिर्फ धार्मिकता है। इस तरह के लेखकों में अपने युग की असंगतियाँ झलकती है। तुलसीदास के सामने –समाज का वही ढाँचा था जो शास्त्रों में लिखा हुआ था लेकिन उनकी सहृदयता बार बार उससे बग़ावत करती थी। इस असगति को पकड़ना आलोचक का काम है। इसी तरह मिल्टन का शैतान दुर्गुणों से भरा हुआ है फिर भी वह Renaissance के विद्रोह का सबसे बड़ा प्रतीक है। तोल्स्तोय ने धर्म की घूंटी दी थी फिर भी पूंजीवाद के खिलाफ किसानों के असंतोष को प्रकट करने वाला सबसे बड़ा लखक वही था। रूसो और वोल्टेयर राज्यतंत्र के विरोधी नही थे। फिर भी फ्रांसीसी राज्य क्रांति के सबसे बड़े विधायक वही थे। तुम एक पहलू देखते हो, दो विरोधी पहलुओं से मिल कर जो यथार्थ बना है, उमे भूल जाते हो। इति

तुम्हारा
रामविलास

यह पत्र दो अलग-अलग पोस्टकार्डों पर एक ही साथ एक ही क्रम में लिखा गया था। यह परम्परा आगे भी मिलेगी। [अ० त्रि०]

मुख्य-केन्द्र-भवन
हिन्दी-साहित्य-परिषद्
बाँदा
४-१२-४७

प्रिय भाई,

तुम्हारी भेजी पुस्तक यथासमय मिल गयी थी। पढ़ रहा हूँ। पहले भी लिख चुका हूँ।

इधर कई कविताएँ लिखी है। तुम होते तो तुम्हें सुना कर गालियाँ सुनता। कुछ अच्छी, कुछ खराब है। पर प्राय सभी तुकान्त है। यही बुरी बात है !!

इस वर्ष राहुल जी ने हमारी परिषद् का सभापति होना स्वीकार कर लिया है। कल स्वीकृति आ गयी है। कृपया लिखो क्या कार्य परिषद् की ओर से सांस्कृतिक क्षेत्र मे किया जाय ? कुछ तो राय दो।

अब नागर "हस" मे आ गया है। पर कब तक रह पावेगा, राम ही जाने।

तुमसे एक कहानी माँगी थी। क्या भेजोगे ? संग्रह छपेगा ही। भेज दो तो अच्छा हो।

"नीद के बादल" को देखा या नही ? मेरा विकास स्पष्ट हो जाता होगा।

कब आ रहे हो इधर सैर-सपाटे को। क्या बम्बई जाओगे साहित्य सम्मेलन में ? लिखना।

तु०
केदारनाथ

मुख्य-केन्द्र-भवन
हिन्दी साहित्य परिषद्
बाँदा
४-१२-४७

प्रिय भाई,[1]

तुम चुप हो। सम्भवत मुझमे कविता न पा सकने के कारण नाराज हो। ठीक ही है। पर याद रखना, मिलने पर वह कविताएँ सुनाऊँगा जो किसी हिन्दी वाले [ने] नही लिखी। इधर कई लिख चुका हूँ। लेख भी तैयार किया है। 'हंस' मे देखना। "जनयुग" मे तो कविता निकलना बड़े प्रताप की बात होती है। इससे

1. यह पत्र श्री रामशरण शर्मा 'मुशी' को बम्बई भेजा गया था। [प्र०त्रि०]

"हंस" में ही छपा कर संतोष कर लेता हूँ। एक कविता —मेरी आवाज़ —आने को है। हिन्दू-मुस्लिम समस्या पर लाजवाब है। अब नरोत्तम "हंस" में ही पहुँच गए हैं। उन्होंने यही लिखा है मेरी कविता के बारे में।

तुम्हारे न लेख पढ़ने को मिलते है न कविताएँ। क्या किया करते हो ? कुछ तो कलम चलाते रहो, कई उपन्यास खरीदे है। Soviet Literature के पिछले Volumes भी है। इन्हीं में लिप्त रहता हूँ। इधर अनुवाद रुका है।

आगरा से "Don Flows Home to the Sea" आया है। वह भी पढ़ रहा हूँ।

अब हमारी परिषद् के सभापति राहुल जी हो गए हैं। मैं मंत्री हूँ। कृपया उनका एक सुन्दर चित्र बंबई के दफ्तर मे लेकर भेजवाओ। उसे चित्रकार से बनवाना है।

केदार

गोकुलपुरा, आगरा
९-१२-४७

प्रिय केदार,

कल तुम्हारा कार्ड मिला। 'नीद के बादल' छप कर उड़ने लगे, यह जान कर खुशी हुई। लेकिन अभी तक हमारे पास नहीं आये। नरोत्तम हंस में पहुँच गया है। अमृत नागर का यहाँ काफी साथ रहा लेकिन आजकल वह लखनऊ में हैं। वीरेश्वर मे अपनी कवितायें भेजने को बहुत कहा लेकिन वह न पसीजा। 'जनयुग' पर बम्बई के ban की बात सुनी होगी। एक महीने के ban से ताक़त आज़माना चाहते हैं जिससे कि अगले हमले की तैयारी कर सकें। विप्लव मे शुभकामनायें और 'हंस' में शिवचन्द्र की आलोचना वाले लेख देखे या नहीं। रानी में तुम्हारी गंगा की शुभ आलोचना निकली है। न देखी हो तो कटिंग भेज दूं। साहित्य परिषद् में जाना इस बात पर निर्भर है कि बड़े दिन की छुट्टियों में वाइफ के पेट का Operation होना है या नहीं। परिषद् के साथ-साथ ग्राम कवि सम्मेलन जरूर करना।

बाकी कुशल है।

तुम्हारा
रामविलास

केदारनाथ अग्रवाल
एडवोकेट

बान्दा (यू० पी०)
तिथि 29-12-47

प्रिय शर्मा,

दो कविताएँ भेज रहा हूँ। पढ़ना और मेरी ही तरह कंधे में राइफल धरे दौड़-दौड़ कर फिर उसे सीने के पास ला कर आगरे की अपनी छत से ज़ोर-ज़ोर से धाँय-धाँय दागना ताकि काश्मीर के बैरियों के सीने फट-फट जाएं और जनता का काश्मीर जीते। मैं तो इसे लिखते समय यही अनुभव कर रहा था। इंडियन यूनियन का कोई भी सेनानी वीरता से न लड़ा होगा जितनी वीरता से मैंने लिखते-लिखते और बाद को भी राइफलें चलाने का अनुभव किया है। मन होता है कि टिकट कटा कर वहीं जाऊँ और पल्टन में भरती हो कर बर्बरता के विरूद्ध युद्ध में शामिल हो कर अपनी और अपनी कलम की जीवन की सबसे बड़ी प्यास बुझा दूँ।

गोरा बादल अब दो वर्ष को मौन धारण करेंगे। फिर साहित्यिक सूर्य बन कर प्रकट होगे। उन्हें अब तुम भूलने का प्रयत्न करो अर्थात् चिट्ठी चपाती मे।

मुंशी कहाँ है ?

क्या हुआ Operation का ? पटने गये अथवा नही ?

भाई। खूब पढ़ रहा हूँ। कविताएं बहुत-सी लिखी है। मन पसन्द की है। मिलो तो दिखाऊँ। कहाँ तक कागज पर अपनी चमड़ी उतार उतार कर भेजूँ।

पुनश्चः श्री चन्द्र [शिवचंद्र] पर तुम्हारा नोट पढ़ा। बढ़िया है। अच्छा मारा। माफ करना मेरे लेख की असंगतियों को। वैसे कैसा जँचा ?

तु० केदार

गोकुलपुरा—आगरा
३०-१२-[४७]

प्रिय केदार,

भारत की सूखी धरती पर नीद के बादल ही मँडरायें; उसका रूखापन तो दूर हो। इसके बारे मे Apologetic होने की क्या बात है ? सपनों के बिना आदमी जिन्दा कब रह सकता है ? नींद से ज्यादा जागने के सपनों की जरूरत होती है। तुम्हारे नीद के सपनों में मिठास है, कहीं-कही बिल्कुल गुड़ की भेली की तरह। उम्मीद है कि जागने के सपने शक्कर जैसे हो गे जो control के भाव ही बिकें गे, decontrol के नाम खुले ब्लैक मार्केट के भाव पर नहीं। यह इसलिये कि नींद के बादलों की छपाई-सफाई दुअन्नी भर लेकिन कीमत बीस आना है।

तु० रामविलास

Banda
20-5-48

प्रिय भाई,

इधर एक लम्बे अर्से से तुम्हारी चिट्ठी नहीं आई। कारण नहीं जानता क्या है? न तुम्हारी रचनायें ही (पद्य) पढ़ने को मिल रही हैं। नागार्जुन की रचनायें बहुत बढ़िया आ रही हैं।

कब कहाँ रहोगे? मैं लखनऊ आना चाहता हूँ दो दिन को। क्या तुम वहाँ जाने वाले हो? यदि आओ तो लिख देना। और अगर न लिखो तो पत्रवाहक से ही कह देना वह लिख देंगे। मिलने पर बातें होंगी।

मुंशी तो बम्बई ही होगा। उसकी पार्टी पर प्रहार हो रहा है इससे वह परेशान होगा ही। मैं भी चिन्तित हूँ।

अब तुम्हारे प्रकाशन का क्या हो रहा है? तुम्हारी पुस्तकें कब तक निकलने वाली हैं?

"हंस" देखते ही होगे! कुछ राह बता दिया करो। गलत पथ पर तो नहीं चल रहा? कुतुबनुमे का काम कभी-कभी तो कर दिया करो।

यहाँ तो गरमी पड़ रही है। हम सब सूखे जा रहे है। पानी न मिले तो खलरी मात्र रह जाय। अन्धड़ बेहद उड़ता है।

बच्चे कैसे है? प्यार।

योग्य सेवा लिखना।

तु०
केदार

बाँदा
४-६-४८

प्रिय नागर[1] भाई,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं अभी तक अपने कुछ कतल के केसों से अवकाश ही नहीं पा रहा इस हेतु आता ही कैसे।

मैं सोमवार को अथवा मंगल को यहाँ से चलूंगा और बनारस को अवश्य ही पहुंचूंगा। तब तक तुम शर्मा को तथा निराला जी को अवश्य रोके रहना। मेरे साथ इतना अवश्य करना वरना मजा किरकिरा हो जायेगा। इससे पहले यों नहीं

1. श्री नरोत्तम नागर [प्र० त्रि०]

चलना चाहता क्योंकि अमावस की भीड़ भी तो आ रही है। श्रीमती जी को प्रयाग छोड़ना है।

सबको नमस्कार।

सस्नेह
केदार

४ जु० ४८

प्रिय केदार,

हंस मिल गया ना? आखिर कविता समय पर न पहुँची। ख़ैर, अगले अंक में जाय गी।

आजकल श्रीमती जी बच्चों के साथ मायके हैं। इसलिये खीर फल खाकर निबाह करते है। अ० बै०[1] की कई कविताएँ लिखी हैं; भेज दीं। मुंशी की चिट्ठी आई है। जिन्दगी के पुराने दिन गुना करता है।

गरमी अभी घनघना रही है।

तुम्हें भारतेन्दु युग और निराला भेज रहे है।

उम्मीद है—कलम माँज रहे हो गे।

तुम्हारा
राँमविलास

गोकुलपुरा—आगरा
६-१०[५०]

प्रिय केदार,

तुम्हारा ३/१० का कार्ड मिला। जरूर आओ। १७ के पहले-पहले जब भी आ सको, उत्तम है। १८-२५ तक मैं बाहर रहूँगा। अपनी कविताएँ लाना। नागर-मुंशी सब खूब मजे में है। मेरे घर का पता—नाले वाली गली (जानकी बाई नागर का मकान) गोकुलपुरा, आगरा है। तारीख समय लिखना, मैं स्टेशन पर मिल जाऊँ गा।

तुम्हारा
रामविलास

1. अ० बै०—अगिया बैताल, मेरा एक उपनाम।

Gokulpura, Agra
13-10-50

प्रिय केदार,

तुम्हारा खत मिला। तुम जिस रोज चाहो, आ जाओ। यहाँ पढ़ने-लिखने की सामग्री पाओ गे। मैं २० तक वापस आ जाऊँ गा। और कहीं जाने का इरादा नहीं है।

तुम्हारा
रामविलास

चन्द्रबली सिंह भी यहीं हैं। २५ तक रहें गे। —रा०

गोकुलपुरा—आगरा
७-८-५१

प्रिय केदार —

तुम्हारा २६/७ का कार्ड मिला। २३/८ को दिल्ली आना मुमकिन न हो गा। मिलने पर कारण बताऊँ गा। आजकल मुंशी यहीं है। वह इस बात से सख्त नाराज़ है कि तुम रेल पर बैठे हुए सीधे निकल जाना चाहते हो। हम दोनों की राय है कि उस दिन तुम यहाँ रुको; यहाँ ठहर कर गपशप के बाद जाना।

तुमने जब कविता लिखना शुरू किया था, तब देहाती जीवन के अनुभवों की पूँजी तुम्हारे पास थी। उसे आगे बढ़ाने की तरफ़ शायद तुमने कभी ध्यान नहीं दिया। दूसरे भाषा और शैली में जो खामियाँ पहले भी थी, वे और उभर आयी हैं। मेरी राय में तुम्हारे एक हद तक deteriorate होने का यही कारण है।

तु०
रामविलास

गोकुलपुरा—आगरा
१४-६-५१

प्रिय केदार—

तुम्हारा ३१/८ का कार्ड मिला। तुम्हारे कार्ड से मालूम होता है कि उसके पहले भेजा हुआ मेरा कार्ड तुम्हें मिल गया था। तुमने लिखा क्यों नहीं कि तुम्हारे लिये यहाँ उतरना मुमकिन न हो गा। मैंने तुम्हें यहाँ उतरने और ठहरने के लिये लिखा था। उसके बाद निश्चिन्त हो गया था। बहरलाल मैं अक्तूबर में किसी वक्त बाँदा आऊँ गा। तब इसकी कमी पूरी कर दूँ गा। तभी तुम्हारी कविता के

बारे में बातचीत हो गी। मुंशी तुमसे नाराज़ नहीं है लेकिन अब वह एक लड़की का बाप हो गया है।

उम्मीद है कि तुम सपत्नीक स्वस्थ हो गे।

तुम्हारा
रामविलास

गोकुलपुरा—आगरा
२१-१०-५१

प्रिय केदार—

सारा वक्त मध्य भारत घूमने में निकल गया—उज्जैन, ग्वालियर, भोपाल, रतलाम। २५ ता० को अलीगढ़ जा रहा हूँ। तुम कितनी उत्कंठा से मेरा रास्ता देख रहे हो, मैं जानता हूँ। लेकिन नवंबर में कलकत्ते जाना है और दिसंबर में छुट्टियाँ नहीं हैं। मैं तुमसे यही कह कर माफी माँग सकता हूँ कि देखो घर में बंद नहीं हूँ, काम से ही बराबर इधर-उधर आता जाता रहा हूँ। बाँदा तो मुझे आना ही है, अभी नहीं तो फिर, मुमकिन है, जनवरी मे एक हफ्ते की छुट्टियों मे। उज्जैन से लौट कर ग्वालियर रुकना था, इसीलिये नही आ सकता। मुशी आजकल भरत-पुर में है।

तुम्हारा
रामविलास

Gokulpura, Agra
15-5-52

प्रिय केदार—

छोटे हाथों का करतब[1] देखा। नया रंग है; चटक भी है। बधाई।

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

आगरा
१० जून ५२ की शाम, ५ बजे।

हवा सन्नाटा खींचे है। पसीने से बदन भीग गया है। अस्वाभाविक अँधेरे से

1. छोटे हाथों का करतब—हाथों पर केदार की कविता।

५ का वक़्त ८ का लगता है। धूल और गर्द की आँधियाँ आ चुकीं। ये पानी से भरे बादल है जो अपने दबाव से हवा का साँस लेना बन्द कर चुके है। ये बरसें गे और इस धरती को वहाँ तक सींच दें गे जहाँ से हर दरख़्त और सब्ज़े की जडों को रस मिले गा—इसमें किसे सन्देह हो सकता है। हम अपने दोस्तों को कैसे भूल सकते हैं जब धूल की आँधियाँ ख़त्म हो चुकी है और पानी से भरे हुए नीले बादल बरसने को है।

तुम्हारी शायरी हरी रहे, मिलें गे जरूर लेकिन कुछ दिन बाद।

केदार के लिए : रामविलास

गोकुलपुरा, आगरा

१५-११-५३

प्रिय केदार —

'नया पथ' में तुम्हारी 'मगनमस्तचोला' पढ़ी, तुम्हे बधाई दी, तुम्हारी छवि को प्यार किया।

प्यारे, आजकल क्या लिख रहे हो? तुमसे मिलने को बेहद उत्सुक हूँ। लेकिन यह भारतेन्दु वाली पुस्तक पूरी नही हो रही। वाह, क्या ग़ज़ब का आदमी था। कविवचन सुधा से दिये हुए उद्धरण पढ़ो गे तो खुश हो गे। दस साल में पत्रकार, नाटककार, कवि, इतिहासकार, वह क्या नहीं रहा; और नयी चाल की हिंदी ढालने वाला अलग से।

ठहरो, मैं भी कुछ कविता लिख लूँ फिर बाँदा आऊँ गा और तुम्हे सुनाऊँ गा। और उपन्यास लिखने का विचार ख़त्म कर दिया क्या?

आज मुंशी आया है। उपन्यास का मसाला इकट्ठा कर रहा है। लेकिन कभी लिखे गा, मुझे अभी सन्देह है। चेखब की कहानियाँ पढ़ी है? न कोई कहानी लिखना चाहे तो लिखने लगे। उस्ताद है। उस्ताद।

बस प्यार। बाक़ी जगह चार लफ़्ज़ मुंशी के लिए।

तुम्हारा रामविलास

मैंने कहा—

मैं ज़िंदा हूँ। खुरजा, (जि० बुलन्दशहर) में रह रहा हूँ। पता है c/o Kalyan Das Munim, Bari Holi, Khurja। पत्र लिखिये।

आगे हाल यह है कि अनुवाद वग़ैरा में इतना व्यस्त रहता हूँ कि और चीज़े

खटाई में पडी हैं। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि दिमाग फोड़ कर चीजें निकल पड़ेंगी। पर सोचता हूँ कि मेरी मरजी से निकलें तो अच्छा है, नहीं तो जाने शकल-सूरत कैसी हो। सचमुच यह डर भी एक रोड़ा बना हुआ है। मगर, मालूम है ?—हमारे खुरजा के विद्यार्थियों ने एक हस्तलिखित पत्रिका निकाली है जिसके लगभग १००० पाठक हैं (१०० नहीं)। उसमें जभी मौक़ा मिला लक़ीरें खींच देता हूँ। उपन्यास का भी सामान इकट्ठा है, कुछ लिखा भी गया है; पर कब पूरा होगा, नहीं कहा जा सकता। कभी खुरजा आओ, यहाँ की खुरचन और घी खिलाऊँगा। पत्र तो लिखो ही—सविस्तार।

तु०
मुंशी[1]

बाँदा
३-१२-५३

प्रिय मुंशी !

तुम जिन्दा हो, सचमुच यह बहुत दमदार खबर है। मैं [मैंने] तो समझा था कि अब तुम्हें न पा सकूँगा, शायद मेरे लिये खो गये हो। अहोभाग्य, कि मेरे लिए तुम फिर प्रकट हो गये। कई बार डाक्टर को खत भेज कर तुम्हें खोजता रहा, पर कुछ भी पता न लगता था। कहो, पिछले दिन कैसे गुजरे ? अब कितनी औलादों के पिता हो ? शरमाओ मत, हंस कर जबाव दो। पिता होना कोई गुनाह नही है। नई जान को, नन्हा-मुन्ना गुलाब-सा गोल-मटोल बच्चा बुला लेना, बहुत उम्दा होता है। रहने भी दो सन्तति-निरोध को। भारत की सरकार बेकार अड़ंगा डालती है इस फुलवारी के लगाने में। तुम कहोगे बुरा है, बखेडा है पैदावार बढ़ाना; ग़रीबी की निशानी है। हाँ, मौजूदा समाज में है---जहाँ एक कमाये, दस खायें। लेकिन सोचो तो कि घर में बीस हाथ– नये-नये जन्म लें और भविष्य सुंदर न हो। होगा, और फिर सुन्दर होगा। हाँ, तो कितनों के पिता हुए ? हम वहीं है, जहाँ लखनऊ में मिलने के वक्त थे। उस तीसरे स्टेशन मे गाड़ी आगे बढ़ी ही नहीं। १२ वर्ष से जहाँ-के-तहाँ रुके खड़े हैं। तुम्हें पता है ही कि डिब्बा बोझा ले कर आगे चलने में असमर्थ है।

बहुत व्यस्त हो अनुवाद में। क्या-क्या अनूदित हो गया ? कुछ विवरण तो लिख भेजो। सुन ले हम भी कि कहाँ तक उछाल ले चुके हो।

इधर मैंने कविताएं लिखी हैं, उम्दा हैं; खूब उम्दा। अगर पत्र लिखोगे तो

1. यह पत्र भी रामविलास जी वाले अंतर्देशीय पर लिखा गया है। [प्र० नि०]

जरूर भेजूंगा पर इस पत्र में नही भेजूंगा क्योकि उन्हें पा लेने पर तुम फिर चुप्पी साध लोगे। यही तो आज के मित्रो का हाल है।

उपन्यास—"Students"—एक रशन नावेल, पढा हे[,]कई पढ़ूंगा। रोज रात को आँखे फोडता हूँ। समय तो जरूर खराब होता है पर जिस्मानी और रूहानी ताकत भी बला की मिलती है। बढ़िया है यह उपन्यास! इसमे वादिम नाम का चरित्र है। वह ऊँचा गया हे। उसने मर्गजियार्ड की असली शक्ल को स्पष्ट रूप से सबके सामने पेश किया और इस कमाल के लिए धन्यवाद हे लेखक को। वाहिम ने Formalism की भी बखिया उघाड़ी है। मुझे तो वादिम मे रामविलास का रूप मिला। वही पैनापन। वही बेलौस वार जिससे हमारे साहित्यिक बधु घबडा गये थे। किन्तु भाई, रूस मे इसकी कदर हे, हमारे भारत मे ईमानदारी का अभी मूल्य नही है। यदि पढ चुके हो यह उपन्यास तो राय लिखना। ऐसा बढिया है कि बस। न भगवतीचरण को सफलता मिली है, न धर्मवीर भारती को। एक ने "३ वर्ष" लिखा। बिल्कुल कमजोर, बीमार! दूसरे ने "गुनाहो का देवता।' वह भी घृणास्पद। "Students" मे १००% यथार्थ है। दुर्बलतायें है चरित्रो मे। किन्तु वे उपन्यास की बिक्री को बढाने के लिये नही। "बीज" अमृत राय का उपन्यास है। उसे पढ गया हूँ। मौजूदो मे यह हमारी सफाई का दावेदार है। इसलिए स्वस्थ है, सबल है और एक कदम आगे हे। पिछले दशक के निरूपण मे यह सफल है। खामियाँ है, पर इसे नीचे नही गिराती। इधर मैने लेख भी लिखे है। वे 'नई दुनिया" मे छप रहे है। पर कहाँ से देख पाओगे।

हाँ, अपनी हस्तलिखित पत्रिका के लिये बहुत बहुत बधाई लो। तुम्हारे हजार पाठको को मेरा राम-राम। कभी आया तो सबसे मिलूगा। जी देखने को ललक रहा हे। यहाँ आओ तो दूध, दही, घी मै भी (घर का ही बना) खिलाऊँ।

तु० सस्नेह, केदार

Gokulpura, Agra
30-12 [53]

प्रिय केदार—

एक आवश्यक काम से बाहर गया था। इसलिये नही आ सका। बुरा न मानना। नये साल के पहले महीने जरूर आऊँ गा। मकर सक्रान्ति को या वसन्त पञ्चिमी [पचमी] को।

तुम्हारा
रामविलास

गोकुलपुरा—आगरा
८-१-५४

प्रिय केदार,

तुम्हारा १/१ का कार्ड मिला। इसमे स्पष्ट है कि तुम्हें मेरा पत्र नहीं मिला। लेकिन मैंने तुम्हें न आ सकने के बारे में लिखा था और जनवरी में आने का वादा भी किया था।

फरवरी के पहले हफ्ते में वसन्त पंचमी है। निराला जी का जन्मदिन भी हो गा। तभी आऊँ तो कैसा रहे?

तुम्हें कितनी निराशा हुई है, समझ रहा हूँ। प्यारे फरवरी में आऊँ गा और गर्मियों में भी। ब्याज भर दूँ गा।

तुम्हारा
रामविलास

अभी तुम्हारा ७/१ का कार्ड मिला। आना संक्रान्ति ही को चाहता हूँ। लेकिन कालेज week भी है उसमें मेरी duty लगे गी या नहीं, यह अनिश्चित है। इसलिये गोलमाल। संक्रान्ति में आया तो चार दिन रहूँ गा, वर्ना वसन्त पर दो दिन।

रा०

गोकुलपुरा, आगरा
२१-१-५४

प्रिय केदार,

तुम्हारा ११/१ का कार्ड मिला। वसन्त पञ्चिमी [पंचमी] को निश्चित आऊँ गा।

मुंशी का कोई ख़त यहाँ भी नहीं आया।

तुम्हारा
रामविलास

मदीया कटरा,
आगरा,
२४-१-५४

प्रिय केदार,

तुम्हारे पत्र की राह देख रहा हूँ। मेरा पिछला पत्र मिल गया हो गा।

९ फर्वरी को नरोत्तम की बिटिया की शादी है। आओ गे क्या? मैं शनिवार को तूफान से दिल्ली जाने की सोच रहा हूं (यानी ९ फर्वरी को)।

कीट्स की और कविताएं कौन-कौन सी पढ़ीं। उसकी Ode to a Nightingale ज़रा इस दृष्टि से पढ़ो कि वह कितने प्रकार के इन्द्रिय बोध जगाता है। रूप, रस, गंध, स्पर्श, शब्द—सबकी चरम परिणति कहां करता है।

अभी मैं चंद्रबली के ससुर को एक पत्र लिख रहा था। वह अब काशी में ही हैं। उसमें एक वाक्य लिख कर मुझे लगा, Time वाली समस्या हल हो गई। वाक्य यह था : Every thing does not die and nature endures; progress, decay and change are one aspect of nature while unchangeability, duration and eternity are its other aspect. तुम्हें याद होगा, शायद मैंने Engels का उद्धरण दिया था कि Nature के particles अपरिवर्तनशील है (कम-से-कम बौद्धों के तर्कशास्त्र का खंडन करने के लिए New Age में बुद्ध के सदेश पर अपने लेख में मैंने उसे उद्धृत किया था)। यदि Nature ए. रूप में अपरिवर्तनशील है तो उस रूप में समय भी अनादि, अनंत और अपरिवर्तनशील है। प्रकृति एक अन्य रूप में जहां गतिशील और परिवर्तनशील है, वहां समय भी सापेक्ष और इतिहास की सीमाओं के अंतर्गत है। यदि Dialectics के अनुसार प्रकृति गतिशील और अपरिवर्तनशील दोनों है तो उसके duration का माप काल भी सीमित और असीम दोनों होना चाहिये। समय के बारे में यह हुई Dialectics की Unity of Opposites. क्या राय है?

चन्द्रबली ने १९५६ की कविताओं की रिव्यू 'आज' में लिखी है। रूपतरंग के लेखक से कविताएं कम लिखने की शिकायत की है। अगस्त (५६) की अजंता में एक आलोचना छपी है जिसमें और कविताएं लिखने के लिए आग्रह है। कैथावा (इटावा) के एक मित्र ने खेतों की मेंड़ पर 'किसान कवि और उसका पुत्र' पढ़ने की बात लिख कर अपने आलस्य और उदासीनता पर मुझे बेहद लज्जित कर दिया है। और शारदा देवी है कि कृपा करने का नाम नहीं लेती। कविताएं अनहद नाद की तरह मन मे गूंजती रहती हैं। सुनता हूं, प्रसन्न होता हूं, लेकिन शब्दों में बाँध नही पाता। तरंग है, रूप नही। लेकिन छोड़ूंगा नही। देखें, कब तक कृपा नही करतीं।

पाँच फर्वरी के सबेरे निराला जी के दर्शन करने का विचार है। क्या तुम आओ गे? वैसे एक विचार अभी मन में और उठा है। १८ मार्च को लखनऊ से निराला जी के संस्मरण ब्रॉडकास्ट करना है। सोचता हूं, उधर से इलाहाबाद होता आऊँ गा तो यात्रा की कुछ असुविधा बच जाय गी। अपना विचार लिखो।

तुम्हारा—रामविलास

गोकुलपुरा, आगरा
4-2-54

प्रिय केदार,

७, इतवार को सबेरे ११ बजे पहुँचने का विचार है।

तु० रामविलास

गोकुलपुरा, आगरा
१८-२-[५४]

प्रिय केदार,

तुम्हारा पत्र मिला। फोटो भी। अन्धे के हाथ बटेर की खूब कही। जनाब, इसे कहते हैं आर्ट। मैंने कह कर फोटो खींची थी कि बढ़िया आये गी। वैसे तुम बटेर बनो तो मुझे अन्धा बनने में कोई ऐतराज़ नहीं।

मैंने कौन-सी किताबें भेजने का वादा किया था, भूल गया हूँ, याद दिलाओ।

बाँदा पर एक कविता लिखी है। कल बनारस जा रहा हूँ। लौटने पर भेजूँ गा। आरामकुर्सी पर बैठे हुए मेरा जो फोटो है, (without Railway Time Table) उसकी दो प्रतियाँ और भिजवा सको गे ?

तु० रामविलास

Gokulpura, Agra
12-4-54

प्रिय केदार,

निराला जी का स्वास्थ्य गिर रहा है। Blood Pressure भी है; हाथ पैरों मे तकलीफ भी। मैं उधर १० मई तक जाऊं गा। मेरी सिफारिश है कि इस इतवार को चंद घंटों के लिये तुम ज़रूर हो आते और जैसा हो, पत्रों में (जनयुग आदि) लिखो, ज़रूर। उनका पता 21, Sahrarabagh Alld. है।

तुम्हारा —रामविलास

भाई केदार, तुम्हारी चिट्ठी २०/४/५४ की मिली। मैं कविता यत्र तत्र पत्रों में भेज रहा हूं, प्रयाग के पत्रकार और साहित्यकार निराला जी की सेवा से संबंध न रखकर एक-दूसरे पर अर्थारोप छापने-छपाने में मस्त हैं। मुझे तो कुछ समझ में नहीं आता कि आखिर क्या होगा। सुनता हूं कि सरकार रुपये को इसलिए देती है कि

वह व्यवस्था से बचे, यह वाञ्छित नहीं क्योंकि महाकवि तो रुपया बाँट बहादुर हैं। अपनी सूझ समाचार शीघ्रातिशीघ्र दो। इति

जयगोपाल[1]

गोकुलपुरा, आगरा
१७-१-५५

प्रिय केदार,

सवेरे छः बजे हैं। लैंप की रोशनी में मैंने तुम्हारी सब कविताएं अभी पढ़ कर खत्म की हैं। सामने 'हंस' के पुराने अंक है जब प्रेमचंद उसके संपादक थे। हैदराबाद प्रेमचंद सोसायटी के लिये प्रेमचंद पर एक पुस्तिका लिखनी है। रात को एंगेल्स के नाम मार्क्स का एक खत पढ़ते-पढ़ते सोया था जिसे मार्क्स ने कैपिटल के आखिरी पन्नों का प्रूफ देखकर लिखा था : So this volume is finished. It was thanks to you alone that this became possible. I embrace you full of thanks. Greetings, my dear beloved friend. मुझे लेनिन की बात याद आई कि मज़दूर-वर्ग ने मार्क्स और एंगेल्स की दोस्ती का जो नमूना रखा है, उसकी मिसाल दुनिया के इतिहास में नहीं है।

तुम्हारी सबसे बढ़िया कविताएं वह लगीं जहां तुमने जीते-जागते रेखाचित्र दिये है जैसे दफा ११० के मुजरिम के, पूँजीपति के बेटे के। उसके बाद बढ़िया लगीं वह कविताएं जहां तुमने प्रकृति के चित्र दिये हैं—धरती पर उतरती धूप के, शिव के जटाजूट पर उतरती गंगा, फूल कटोरों सी मुस्काती [नगरी] ! उसके बाद तुम्हारी आह्वान वाली कविताएं हैं जैसे छोटे हाथ।

तुम्हारी कविताओं में सबसे बड़ा गुन यह है कि वह लोक-कला के इतने नजदीक है कि उसका एक अंग सा बन गई है। वह जनता द्वारा तुरंत अपनाई जा सकती है और उसके जीवन मे बहुत बड़ा परिवर्तन ला सकती है इसलिये तुम बाबू लोगो की राय की चिन्ता न करके उन्हीं भूमिसुतो के लिये लिखो जिनके तुमने गीत गाये है, जिन्होने बांदा की वकालत में भी तुम्हारे विश्वास को जीवित रखा है।

ये कविताए लोक-कला है, जनता के लिये है, इसलिये खूब सावधानी से लिखो। छन्द और भाषा में कही कोताही न दिखे। समय की कमी का बहाना किससे करो गे? उनसे जो आज संपत्तिशाली वर्गों की कला पर लोक-कला के

---

1. यह पत्र श्री जयगोपाल मिश्र ने 12.4.45 के डॉ० रामविलास जी के पोस्टकार्ड पर ही ऊपर की शेष जगह में लिखा था। यह पत्र पहले श्री मिश्र के पते पर इलाहाबाद भेजा गया था। श्री मिश्र ने इसे *Redirect* करके अपनी उपर्युक्त इबारत के साथ बाँदा भेजा था। [अ० वि०]

विजयी होने की बाट जोह रहे है ?

'क्रान्ति हो लेकिन पले [पली] हो पायलो मे'—विरोधी उपमानो का जोडा चमत्कारी है। ये दधीचो ठीक न लगा, शब्द दधीचि है न ! नाग वाली उपमा भी काफी जोरदार नही है। कुल कविता खूब सशक्त है। 'छोटे हाथ' की जितनी तारीफ़ की जाय थोडी। तुम्हारे हाथ चूमता हूं। श्रम पर बहुत ही बढ़िया रचना है। खेत का दृश्य -आसमान की ओढनी ओढे बहुत सुदर है—सिर्फ़ किसान मेरी निगाह मे धरती का पुत्र है, राधा का कृष्ण नही। धूप के गीत की फिर दाद देता हूँ। Keats ने लिखा था —Poetry should come like leaves to a tree or it had better not come at all. यह रचना कोंपलों जैसी आप ही फूट निकली है। बधाई ! जल्दी-जल्दी हांक किसनवा तुम्हारे उद्बोधन गीतो मे सबसे बढ़-कर है। इसमें अगर 'आगामी सन्तति' 'शोषण की प्रत्येक प्रथा का सब तमतोम' जैसे कुछ टुकडे न हों तो यह हर किसान की जबान पर चढ सकता है। तुमने लिखा है —"श्रमजीवी अपने बेटे को, गोठिल हसिया दे जाता है।" तुम श्रमजीवी वर्ग के कलाकार हो, अपनी लेखनी को कही भी गोठिल न होने देना। लेकिन तुम्हे यह सब लिखना बेकार है क्योकि तुममे तुम्हारे गुनाह हारे है और असफलताओ को हरा कर तुमने अपनी सुन्दरता सवारी है।

साढे छ बज गया है। अब घूमने जाऊ गा। 'नया पथ' मे लेख लिखता रहू गा। इलाहाबादी दरबो मे क्या कोलाहल होता है, इसकी चिन्ता नही है।

हाँ, तुम्हारे और महेन्द्र[1] के अलावा किसी ने कविताए नही भेजी। उस प्रस्तावित सकलन का क्या हो गा ?

तुम्हारा
रामविलास

बादा
२-२-५५

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिला। रोज पढता हू और उम्दा लिखने का भरसक प्रयास करने की ओर अग्रसर हू।

हां, मेरी बेटी किरन का ब्याह दिनाक १७/२ को प्रयाग से (२४ हैम्लिटन रोड से) हो रहा है। चाचा के घर मे। क्या तुमसे आशा करूं कि तुम इस समय आकर अनुगृहीत करोगे। इच्छा प्रबल है। सुविधा हो तो आ जाना। बगले का पता लिख ही दिया है ऊपर।

सस्नेह
केदार

1. महेन्द्र—महेन्द्र भटनागर।

पुनश्चः—

महेन्द्र को पत्र लिख रहा हू। अभी लोग (हमारे कवि भाई) हम सबसे गाल फुलाए बैठे है। होगा भी। कभी तो हम पर यकीन करेगे हमारी ईमानदारी पर।

तु०
केदार

बांदा
२६-६-५५

प्रिय डाक्टर,

रतलाम से तुम्हारे लिये वहा के साहित्यिक समारोह मे सम्मिलित होने के लिए आमत्रण पहुचा होगा। तुम उसे स्वीकार कर लो और कृपा कर वहा चले जाओ। मेरे पास उन लोगो (प्रान गुप्ता) का तार तुम्हे खटखटा कर भेजवाने का आया है। वाह, मै तुम्हारा कोई समझा जाता हू। देखो, न जाने पर मेरी नाक कट जावेगी। जाना जरूर! बडे आदमी बन कर घर मे ही मेरी तरह न बैठे रह जाना।

शेष खैरियत है।

जनयुग में रचनाएं भेज रहा हू। कुछ छपी है। शायद कुछ छपेगी। देख ही लोगे।

वे फौजी आर्डर पर लिखी जा रही है। कौन कहता है कविता कुछ और होती है और मूड्स पर आती-जाती है। सबका सलाम। बच्चो को प्यार।

सस्नेह तु०
केदार

गोकुलपुरा, आगरा
२-१०-५५

प्रिय केदार,

चलो इस बहाने तुम्हारे दर्शन तो हुए। रतलाम कैसे जाऊ? ग्वालियर वाले एक महीने से बाधे बैठे है और पिछले हफ्ते यहा आ कर फिर पक्का कर गये है। तुम हमारे बहुत कुछ हो और इसलिये छोटी-मोटी बातो से तुम्हारी नाक न कटे गी। मै खूब घूमता हूँ, इधर कलकत्ता, प्रयाग, पटना, काशी, लखनऊ, हैदराबाद भरतपुर, ग्वालियर, अलीगढ आदि हो आया हूं पिछले चौमासे में। इसलिये घर बैठे रहने का दोष नही लगा सकते। तुम कविताएं आर्डर पर लिखो चाहे

डिस आर्डर पर, लेकिन लिखो कविताएं ही, अपने को तुलसी और निराला का योग्य शिष्य प्रमाणित करते हुए। और क्या हाल है ?

तु० रामविलास

Banda
26-12-55
6 P M.

प्रिय डाक्टर,

आज ही डाक से "पाडुलिपि" प्राप्त हुई। देख गया उन कविताओ को जिनको तुमने लाल रेखाओ से चिह्नित किया है। शायद वे ही अधिक प्रिय है। धन्यवाद है दोस्त।

तुम तो दिल्ली से अत्यन्त समीप हो और वहा पहुचे भी होगे। खूब आनन्द रहा होगा स्वागत-समारोह के समय।

मै तो पाव बाध कर यहा रुपये चुगने की टोह मे रोज न्यायालय के चक्कर काटता हू। परन्तु एक भी मुअक्किल आजकल नजर नही आता। पता नही अब क्या काम करना पडे। कुछ तो राय दो। वरना धूल फाक कर पेट पालना असम्भव है।

प्रयाग लिख रहा हू कि पाडुलिपि आ गई है। प्रकाशक चाहे तो मै उसे भेज दू। देखो क्या होता है।

इधर कुछ नया नही लिख रहे क्या ? देखा नही मैंने। सुना है कि शुक्ल जी पर तुम्हारी पुस्तक निकली है। रीवा के मेरे मित्र ने लिखा है। वहा पुस्तकालय में पहुची है।

और सब खैरियत है।

आशा है कि तुम सानद हो। बच्चो को नये साल का प्यार। तब तक नया साल आ ही जावेगा।

तु० सस्नेह
केदार

गोकुलपुरा, आगरा
९-१-५६

प्रिय केदार,

जब तुम्हारा कार्ड यहां आया तब मैं दिल्ली में जवाहर के यहां तुम्हारा लंबा खत पढ़ रहा था। तुमने लोगों के बारे में ठीक राय जाहिर की है। लेकिन समस्या अब यह है कि ठीक राय वाले लोग रचनात्मक साहित्य में क्या दे रहे हैं। जवाहर बहुत दिन से उपन्यास लिखने की बात कर रहा है लेकिन अभी शायद लिखा कुछ नहीं है। मैं कई साल से कविताएं लिखने की सोच रहा हूं लेकिन मन में बहुत-सी कविताएँ रच डालने के बाद भी भाषा और छन्द में उन्हें बांधने की नौबत नहीं आई। स्पष्ट विचार होते तो देर न लगती लेकिन thrill, excitement, अव्यक्त सी संवेदनाओं को प्रकट करने में दिक्कत होती है। हां, एक बार गाड़ी चल निकली तो फिर चल निकले गी। पिछले साल शुक्ल जी पर किताब निकल गई थी। एक लेख-संग्रह भी—"लोक जीवन और साहित्य" के नाम से, जिसमें माधुरी वाले फिराक संबन्धी लेख भी हैं। एक लेख हिन्दी भाषियों की जातीयता पर अश्क के 'संकेत' के लिये लिखा है। 'नया पथ' के लिये 'रीतिकाल' पर भेजा है और New Age को Art as Superstructure. पिछली गर्मियों में कलकत्ते गया था और वहां National Library से भाषा विज्ञान की सामग्री लाया था। लेकिन अभी "हिन्दी भाषा का विकास" लिखने की नौबत नही आई। फुटकर लेख, पुस्तकों पर सम्मतियां और भूमिकाएं बहुत समय ले जाती है। यह सब कम कर रहा हूं, बहुत से दोस्तों को नाराज़ करके।

यह पढ़ कर आश्चर्य और दुख दोनों हुए कि इतने दिन वकालत करने के बाद तुम्हारी स्थिति चिन्ताजनक है, तुम्हे मुवक्किल नही मिलते और तुम पेशा बदलने की सोच रहे हो। इस बारे में और विस्तार से लिखो—अब तुम्हारे ऊपर भार कितना है और क्या अब बिल्कुल यह स्थिति आ गई है कि वकालत छोड़ कर और कोई धन्धा अपनाओ। इस विषय में जवाहर को भी लिखो। वह शायद दिल्ली से अनुवाद वगैरह का काम दिला सके।

मैं ने तुम्हारी जिन कविताओं में निशान लगा दिये हैं वे मुझे ज्यादा अच्छी लगी। तुम बांदा जैसी जगह में वकालत जैसा पेशा करते हुए कविता को ज़िन्दा बनाये हुए हो, यह कम सराहनीय बात नही है। तुम्हारी कविताओं में अब भी ताजगी है, अनूठापन है, उपमानों का चमत्कारी प्रभाव है, तीक्ष्ण और कोमल संवेदनाएं है। लेकिन अपनी अनुभूति को बराबर refresh करते रहना ज़रूरी है और भाषा, imagery, छन्द वगैरह पर और मेहनत करना ज़रूरी है। कविता कला है, सुन्दर है। उसके कलात्मक सौन्दर्य पर और ध्यान देना जरूरी है। तुम्हारी कविताओं में जहां-तहां शिथिल पंक्तिया, भरती के शब्द, हल्के भाव,

जल्दबाज़ी के चिह्न, ये सब दिखाई देते हैं।

इसलिये काव्य रचना को और कठिन साधना के रूप में ग्रहण करो।

स्वागत समारोह का आनन्द लेने के लिये दिल्ली जाना आवश्यक न था। ताज के नगर का अपना महत्व है। फोर्ट के स्वागत में मैं भी शामिल था। बहुत निकट से और देर तक मैं अतिथियों को देख सका। बुल्गानिन की आंखें गहरी नीली हैं, बाल अभी पूरे पके नहीं। रंग खूब सुर्ख और गोरा (सफेद नहीं); देख कर लगता है, आदमी बहुत खूबसूरत है यद्यपि फोटो से यह impression नहीं पड़ता। ख्रुश्चेव और भी स्वस्थ हैं; उक्रैनी जाट हैं पूरे। कामदार टोपी लगाये क्या फब रहे थे! रेल के पुल के नीचे इतनी भीड़ थी कि रेल-पेल में मैं ज़मीन से उठ-उठ जाता था। जब कि आधी भीड़ अतिथियों के चले जाने के बाद फोर्ट के अन्दर चली गई थी।

हां, मेरे कविता संग्रह के छपने की बात भी चल रही है। नरेन्द्र शर्मा ने इधर फिर बहुत अच्छी कविताएं लिखी हैं।

तुम्हारा—रामविलास शर्मा

बांदा

१-३-५६

प्रिय डाक्टर!

"रूप तरंग" की प्रति प्राप्त हुई। तब से अब तक साथ लिये-लिये जब जहां मौका लगता है, पढ़ता हूं और गुनता हूं एक-एक पंक्ति।

यदि अपनी प्रशंसा न समझो तो कहूंगा कि तुम्हारी यह प्रथम काव्य-पुस्तिका काव्य और कला-दोनो की दृष्टि से नये युग के साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इतनी सबल काव्यमय जीवनानुभूति शायद ही किसी अन्य पुस्तक में मिलेगी। दृष्टिकोण युगान्तरकारी है। यदि आज्ञा हो तो कहूं कि प्रत्येक पंक्ति साहसी के माथे की चमकती रेखा है और प्रत्येक कविता पनघट से लौटती हुई सुन्दरी के सिर पर धरी कनक-कलसी है—जिसमें नीर नहीं रस और राग ही राग भरा है। बधाई स्वीकार हो।

वाह! क्या सर्वांग सुन्दर रचना-क्रम का निर्वाह करते हो कि भाषा में क्लासिकल, रोमांटिक तथा प्रगतिशील तत्वों का एक साथ पूरा-पूरा आनंद मिल जाता है। "कुहरे के बादल" की सादगी लामिसाल है। "चांदनी" की कलाकारिता अपनी ओर अद्वितीय है। "अमर सरस्वती" का स्वर देश की अमर आत्मवाणी की गुंजार है। "बंजर" के बजाय "बज्जर" का प्रयोग करते तो जान पड़ जाती। परन्तु मेरे बाँदा को वह स्थान कहां दोगे। मजदूर पर लिखी कविता लासानी है।

निराला वाली की बात करना ही बेकार है। "श्रेष्ठियों के देवता" -वाह क्या व्यंग[व्यंग्य]है धार धरा ! चिदम्बरम् छोटी है परन्तु चित्र अनुपमेय है। "काल बँध गया है चरणों के छन्दों में"। धन्य है मित्र ! "वंदिनी कोकिला" कौन हैं ये ? मैं नहीं जानता। क्या सरसता है प्रवाह में—"पुरवाई पर उड़ते मेघों से है कुन्तल"। "भ्रूभंगों से शान्त करे सागर की लहरें।" न भूलेगी यह पंक्ति। "महाबलिपुरम् का समुद्र तट"—यह "चिदम्बरम्" का ही स्वरूप है। देखो न : "बूढ़े द्रोण अभी तक समर भूमि में धनुष चढ़ाये हैं।" "आजाद पताका" की कला "चांदनी" की कला ही है। हम लिखते तो इसे चौपट कर देते। तुमने खूब सम्हाला है इस पताका को। फिर देखो यह पंक्ति : तड़प-तड़प कर टूट रही है जाँघों से मोटी शहतीरें ! यह तुम्ही लिख सकते हो। मैं भी पूछता हूं तुम्हारे ही स्वर में—

क्या होगा ऐसा भी मानव,
कमलपत्र की छाहीं में बैठा गाता हो !

"ऋतुसंहार" का प्रथमांश अधिक प्रिय है।

धुआ भी तुमने खूब देखा है। "उठा छान से धुआं, कुंडली खोले फन-सा छाया-डसा हुआ-सा गांव"—इत्यादि ! कमाल है इस कवित्व को।

"किसान कवि और उसका पुत्र" अत्यन्त मार्मिक है। पहले भी द्रवित कर चुकी थी।

अभी इतना ही। न लिखता लेकिन कलम न रोक सका। पास होते तो तुम्हें इन्हें सुनाता और तुम्हारा जादू तुम्हें ही दिखाता। पर पारखी बड़े कच्चे है। न जाने क्या कहें।

साधारणजन के लिए तो है, परन्तु असाधारण काव्य-प्रतिभा का स्वरूप सर्व-साधारण न पकड़ पायेगा। यह उन लोगों के लिए है जो ४० के पार पहुंच कर गम्भीर हो गये हैं। मैं झूठ तो नहीं कह रहा ? तुम जानते हो।

मुंशी चुप हो गए न ? बहुत-बहुत प्यार सबको।

तु०
केदार

Banda
2-4-56

जनाब डाक्टर साहब,

२ लिफाफे भेज चुका। अब तक किसी का जवाब नही आया। इन्तज़ार रोज करता हूँ। शायद कुछ नाराजगी है क्या ? हो सकता है कि पर्चे जांच रहे हो ?

1-3-56 का पत्र दो पोस्टकार्डों पर लिखा गया है। [प्र० वि०]

बहरहाल मुझे भुलाये पडे हो।

आज Milton वाली भेजी हुई पुस्तक मिली। ऐसी जरूरत ही क्या थी डाक से भेजने की। कोई मै परीक्षा मे तो बैठ नही रहा था। यह उतावली नाराजगी ही जाहिर करती है। यह भी सही। गुस्सा भी बरदास्त करूगा। अब तक तो स्नेह ही पाता रहा हू।

मगर यकीन रक्खो कि कितना भी रूठो, बच कर नही जा सकते बच्चू।

अचानक आगरे आ टपकूगा तब दग रह जाओगे।

"नया पथ" कल आया है। उसमे दूसरे अक के "समालोचक" पर कुछ खराब नोट है। मैने तो "नया पथ" मे लिखना ही बद कर दिया है क्योकि उसमे "कुत्ते" की उपाधि रहती है।

प्रिय ललित की परीक्षा समाप्त हो गई क्या? कैसे Papers किये है यार मेरे ने?

और बीवी बच्चो का क्या हालचाल है जरूर लिखना।

सस्नेह तु०
केदार

बादा
४-८-५६
१० प्रात:

प्रिय मुणी,

अभी-अभी तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला। यह जान कर कि प्रिय भुवन को किसी ने धतूरा खिला दिया था बडी चिन्ता हुई। मैं समझता हू कि होली के अवसर पर किसी ने भग मे पिलाया होगा। आखिर ये बच्चे ऐसी चीजो को क्यो पी लेते है? खैर। अब यह लिखो कि भुवन ठीक है या नही? डाक्टर साहब बडे परेशान रहे होगे। काश मै वही होता और ऐसे समय तुम सब लोगो का दुख बाट सकता। मेरा बहुत-बहुत प्यार भुवन को देना और कहना कि वह जल्दी ठीक हो जाये और अब आइन्दा ऐसा न होने पाये। डाक्टर साहब को तथा अपनी भाभी जी को समझा देना, मेरी ओर से।

और बच्चे कैसे है? अच्छे तो है? सब को मेरा प्यार।

जी हो उठा है कि एक बार फिर अब तुम लोगो से मिलू। कसमसा कर रह जाता हू।

मेरी wife की तबियत अब तो ठीक है। कल आखिरी इन्जेक्शन लगा है।

परन्तु बूढ़े बाबा बीमार हो गए। अब कुछ ठीक हो रहे हैं।

जैसा समाचार हो देना।

डाक्टर सा० को स्नेह।

तु० केदार

बांदा

८-५-५६

प्रिय डाक्टर,

तुम्हें पत्र लिख रहा हूं कि मैं अपनी प्रिय पुत्री किरन का पति खो बैठा, अभी इसी हफ्ते। यह वज्रपात मुझे ढहा रहा है। रोता हूं। केवल इसलिए पत्र लिख रहा हूं कि तुम्हारी सहानुभूति पा कर शांति पा सकू। पारसाल ही तो शादी की थी।

अभी भी कमला नेहरू अस्पताल में आपरेशन कराये पड़ी है। ज्वर भी है। अभी आज ही प्रयाग से लौटा हूं। अभी उसे यह दुखद समाचार नही बता पाया था। परन्तु हल्का-सा आभास दे आया था।

दामाद जबलपुर में जंगल विभाग में अफसर था। ३/४ दिन के भीतर ही cerebral हैमरेज के कारण मृत्यु हो गई नागपुर की Lunatic Asylum मे।

बल और विश्वास से प्रेरित करो कि इस दुख को झेल जाऊ।

तु०
केदार

गोकुलपुरा, आगरा

१६-५-५६

प्रिय केदार,

तुम्हारा कार्ड मिला। पढ़ कर बहुत दुख हुआ। प्रियजन के वियोग के लिए कोई सांत्वना नही है। जब तक हम उन्हें प्यार करते रहते है; तब तक वे हमारे लिए मृत नहीं है लेकिन उनका अभाव हृदय को क्लेश देता ही है। मनुष्य का कर्म ही दुख का एकमात्र उपचार है। तुम्हें अपनी पुत्री के स्वास्थ्य की ओर ध्यान देना चाहिए और उसके भविष्य की चिन्ता करनी चाहिए। इसके लिए धैर्य और परिश्रम दोनो आवश्यक हो गे। ये बड़ी निर्मम चोटें है लेकिन इन्हें सहना ही हो गा और हृदय को दृढ़ करना ही होगा। दुख सहने से तुम्हें अपने और समाज के लिए शक्ति मिले गी—दुख का संभवतः यही एक मात्र गुण है।

आसू पोछ डालो। तुम्हारे प्रियजन की स्मृति के साथ मै भी तुम्हारे पास हूं। मै तुम्हे हृदय से लगाता हू और कहता हू, प्रिय मित्र, तुम्हारे हृदय मे शक्ति है, धैर्य है, उससे काम लो। तुम दुख का सामना करने वाले हो, उससे सिहरने वाले नही।

तुम्हारा—रामविलास

अजीब आदमी हो। किताब मैने भिजवाई और कृतज्ञता का प्रकाशन कर रहे हो, प्रकाशक से। हा, पढ कर राय लिखना। तत्व की बाते तो किताब लिख चुकने पर हाथ लगी। उन्हे विस्तार से कभी दूसरी किताब मे लिखू गा। आजकल भाषा-विज्ञान की उधेडबुन मे लगा हू। मुशी-जवाहर तुम्हारे दोस्त यो ही है। मुझे देखो, कितनी जल्दी जवाब देता हू। आजकल मुशी का खानदान दिल्ली मे ही है इसलिए बेचारे को कम फुर्सत मिलती है। किरन को जरूर पढाओ। यही तो तुम्हारी दृढता की परख हो गी। हो सके तो तुम भी एम० ए० कर डालो। फिर प्रौफेसरी ढूढो—अगर वकालत का अब भी वही हाल हो। तुम्हारे लिए अब दूसरी रूप-तरग लिखूगा– वैसी तो नही लेकिन कुछ रग तो होगा ही।

रामविलास
मदीया कटरा, आगरा, २६-३-५६

R B Sharma,
M A Ph D (Luck)
Head of The Department of English
B R College, Agra

१२ अशोकनगर
आगरा, २२-८-[५६]

प्रिय केदार,

१५ अगस्त कों जब कृष्ण जी तशरीफ लाये तब —

आजु तौ वधाई बाजै मदिर महर के।

किस-किम को प्रसन्नता हुई ?

फूले फिरै गोपीग्वाल ठहर-ठहर के।

गोपी ग्वालां को तो प्रसन्न होना ही था। किन्तु—

फूली फिरै धेनु धाम, फूली गोपी अग-अग,
फूले-फले तरुवर आनद लहर के।

देखा ? आनंद की लहर में गायों, गोपियों और तरुवरों को—जड़ और जंगम, चर और अचर—दोनों को सूर ने कैसे लपेटा है ! और ज़रा इस पंक्ति का मुलाहज़ा हो—

उमँगे जमुनजल, प्रफुलित कुंज पुंज,
गरजत कारे-भारे जूथ जलधर के।

सौ बार माथा टेको इस पंक्ति के सामने। यहीं तो ब्रजवासी तुलसी से आगे बढ़ गया है। अमृत नागर की शब्दावली में यहां Wordsworth भी फौक्स है। और नतीजा —

नृत्यन मदन फूले-फूले रति अंग-अंग,
मन के मनोज फूले हलधर वर के।

इस कवि ने ज्ञान या अज्ञात में प्रकृति के मर्म में उस अन्ध इच्छाशक्ति का स्पंदन सुना है जो आगे चल कर मनुष्य की चेतना के रूप में विकसित हुई।

सूर का समकालीन फ्रांसीसी कवि Ronsard उजड़ते जंगलों को देख कर कहता है—

Farewell, oaks, fair crown of bravest hill-sides,
Jupiter's trees sprung form old Dadona,
Who first gave men a tree for their delight.

जो इन वृक्षों को काट रहे हैं, उनके लिये कहता है—

a monstrous people
To slaughter so those who had cherished them !

मुझे आश्चर्य और प्रसन्नता इस बात पर हुई कि भूत प्रकृति की अपरिवर्तनशीलता के बारे में मैंने तुम्हें जो Engels की बात लिखी थी वह इसने बहुत पहले पकड़ ली थी; साथ ही डार्विन ने Journal of Researches में जिन Geological changes का वर्णन किया है और जिनकी चर्चा काव्य में टेनीसन ने Maud और In Memoriaw में की है, उन्हें इस महाकवि ने बहुत पहले देख लिया था। कवि और वैज्ञानिक का हृदय (अथवा चेतना) कितनी समान हैं, देखो। दोनों ही द्रष्टा हैं, युगद्रष्टा ही नहीं, अतीत- अनागत के भी द्रष्टा !

Oh hopless man that trusteth in the auld !
You gods, how true is that philosophy.

(देखो, सचेत विचारक है !)

Which says that all things perish in the end,
And, changing from one form, assume onother !

(यह है, सही द्वंद्वात्मक भौतिकवाद। वस्तुएं perish भी करती हैं लेकिन यह perishing की क्रिया भूत का नितान्त अभाव नहीं है।)

Some day Tempe's vale will be a hill,

(Tempe की घाटी का हवाला Keats के Ode on a Grecian Urn के आरंभ मे देखो।)

Mount Althos peak will be an open plain;
Neptune (समुद्र) Sometime will wave with growing Corn :
(ईर्ष्या होती है, इस पंक्ति के लिखने वाले से !)
Matter endures though form be lost for ever.

मानते हो Ronsard का लोहा ! निस्सन्देह Marx और Engels से पहले भी उच्चकोटि के भौतिकवादी विचारक थे।

घर गिरस्ती का कुछ हाल तो ललित[1] से मिल गया होगा। Lady syall मे जब wife की premature delivery हुई, तब उनकी ठीक जाच न हुई और पेट की सफाई न की गई। वह काम परसो Sarojini Naidu Hospital मे ऑपरेशन करके पूरा हुआ। हालत ठीक है। आजकल मे आ जायँ गी।

ललित को भेज दिया है। विश्वास है Post permanent होगी और वह जम जाएँगे। सुना है, अतर्रा जलवायु की दृष्टि से भी अच्छा है। बरसात के बाद चित्रकूट देखना है लेकिन सन् 57[2] के लिए अभी कलकत्ता जाना चाहता हूँ।

तुम्हारी पत्नी, पुत्रादि को सस्नेह

तुम्हारा
रामविलास

मदीया कटरा, आगरा
२८-६-५६

प्रिय केदार,

तुम्हारा और नागा बाबा[3] का सयुक्त कार्ड मिला। लेकिन नागा बाबा के दर्शन अभी तक नही हुए। पता नही बाँदा मे अब भी अटके है या हमारे पुराने पते मे टकरा कर दिल्ली रवाना हो गये ! जो खबर हो, लिखना।

चार दिन संगत रही और हर पांचवे घटे पर मेरी याद ! धत् तेरे नागार्जुन की ! पाच घंटे तक भूले रहने के बाद एक बार याद आयी तो क्या ? चार दिन मे कुल जमा सात-आठ बार याद किया होगा, बस ! इससे नागा को तसल्ली हो तो हो, अपन को तो होने से रही ! फिर चार दिन की सगत केदार के साथ, और मेरे साथ कुल २४ घंटे की, यानी एक दिन की ! वह भी "संभावना" है कि

1. ललित—मेरे बड़े पुत्र।
2. सन ५७ के लिए—सन् ५७ पर पुस्तक लिखने के लिए।
3. नागा बाबा—नागार्जुन।

आप आगरा होते हुए दिल्ली पहुँचें गे ! इस संभावना को क्या शहद लगाकर चाटूं ?

हां, यह देख कर प्रसन्नता ज़रूर हुई कि केदार के परिवार के बच्चे और मुंशी मथुराप्रसाद भी मुझे याद कर लेते है। और कार्ड के अंत में है—"शेष मिलने पर ही"—। वाह रे आपका शेष मिलन !

प्यारे दोस्त, तुम्हें बिसराये नहीं बैठा। इधर गृहस्थी के झंझटों में फँसा रहा। उनसे इस समय मुक्त हूँ, इसलिए उनकी चर्चा करना बेकार है। इधर बालकृष्ण-राव ने कई पत्र हंस में लिखने के लिये भेजे। सो "न दैन्यं न पलायनम्" शीर्षक से एक छोटा लेख भेज दिया है। इधर कालिदास पढ़ता रहा हूं। एक लेख 'आलोचना' (अब नंददुलारे जी वाजपेयी हैं उसमें) के लिये लिखा है (कालिदास : साहित्य के स्थायी मूल्यों की समस्या।) और एक New Age (Monthly) के लिये भी (कालिदास पर ही)। November के New Age के लिये Slavery in Ancient India पर लिखने का वादा किया है। 'हिन्दी भाषा का विकास' लिखने की नौवत अब आ रही है। कविताएं कई घुमड़ रही है; जब बरसें तब जानो। लिखूंगा तो ॐ गागी ही लिखूगा।

कालिदास में सुरतवाद बहुत है, वर्ना वह भी आदमी था काम का। सोंधी मिट्टी उसे बहुत पसंद है। अप्सराओं की लड़कियाँ ही उसकी प्रेमिकाए है या उन्ही मे से एक रही होगी। अपने सीमित क्षेत्र में कला की जो पूर्णता उसमें है, वह किसी मे नही। परिष्कृत इन्द्रिय बोध में सब उसके सामने पानी भरते हैं।

अयं सुजातो नु गिरं तमालः प्रवाल मादाय सुगन्धि यस्य।
यवांङकुरापाण्डु कपोल शोभि मयावतं सः परिकल्पितस्ते।

पर्वत के समीप तमाल वृक्ष है। उसके सुगन्धित किसलय लेकर राम ने सीता के जौ के अंकुर जैसे पीले गालों के लिय आभूषण रचा था।

किसलय की कोमलता, साथ ही उसका सुगन्धित होना, जौ के अंकुरों का पीतवर्ण और सीता के कपोल। Keats के Eve of st Agnes में अर्द्धनग्न Madeline के वर्णन में Hothouse plants का सा सौन्दर्य है—तरुण कवि की शृंगारी कल्पना की अतिशयता। कालिदास के उपर्युक्त छंद में खुली हवा का आनन्द है, कांच के टुकड़ों के रंग-बिरंगेपन के बदले प्रकृति की सुकुमारता संचित है। इसलिये उस महाकवि को सुरतवाद के दलदल से निकाल कर तमाल पत्रों की छाया में पढ़ना आवश्यक है।

तु० रामविलास शर्मा

[३०-९-५६][1]

प्रिय डाक्टर,

वाह तुमने खूब कहा, "नागा बाबा"। मजा आ गया। दरअसल मे नागार्जुन भी एक हीरा आदमी हे। ४ दिन रहे वह यहा। घर भर से मिले-जुले। बाते भी हुई तमाम इधर-उधर की—घर से लेकर साहित्य और राजनीति तक की। मैने अपना उपन्यास भी सुनाया। उन्होने कहा जरूर लिखो वरना डडा मारेगे। कुछ ही अश लिख सका था। अतएव अब उसे शुरू कर चुका हू। लिखने पर भेजूगा तुम्हे पढने के लिए। विषय है तीन रास्ते[2] १हला है एम०एल०ए० रामनाथ [का]। २सरा है बिन्दा का जो ईमादार आदमी है लेकिन देहात की परिस्थितियो ने उसे मजबूर कर दिया कि बदमाश हो जाये। वह हो गया भ्रष्ट-पथिक। ३सरा हे मनमोहन कुमार का। वह एक पत्रकार है। इन्ही के चरित्रो के सम्पर्क मे कथा का विकास होता हे ओर यथार्थ खुलता है। पता नही कि लिखने पर कैसा हो ोर तुम्हे पसन्द आये या नही। खैर देखा जायेगा।

जरूर लिखो "हस" के लिए। आज लीडर मे तुम्हारे "सकेत" वाले लेख की तो C B Rao ने तारीफ की है। शीर्षक "न दैन्य न पलायनम" उम्दा हे।

कालिदास सफल कवि है। सुरतवाद निस्सदेह बहुत हे उसके काव्य मे। लेकिन शान का कवि है—जिसे तुमने सोधी मिट्टी की महक कहा है। मै तो सस्कृत नही जानता लेकिन अनुवाद से ग्रन्थावली पढते समय उसके श्लोको के सस्वर पाठ का बहुत मजा ले चुका हू। मुझमे भी वही मोह है इसलिए मै सुरत-वाद की मिठास मे पग जाता था। भाई जान, चीज ही ऐसी है वह। मुझे तो उसकी Classical कला से बहुत कला मिली है। मैने सीखा हे इस महान कवि से थोडे मे बात या भाव को व्यक्त करना, श्रेष्ठ कला सहित। आज तो हिन्दी मे बहुत कम नये कवि उसे पढते हे इसलिए गद्य के गुम्फन मे कविता को जन्म दे रहे ह। शायद काव्य की कला ही लोप होती जा रही हे। इस पर भी आलोचक तक इस बात से अवगत नही जान पडते। वे कहते है कि नये मनुष्य की कला का गद्यमय होना अनिवार्य हो गया है इसलिए हमे उनके प्रति नम्र होना चाहिए। नम्र होने का मै विरोधी नही। किन्तु सही बात बताना [बतानी] ही पडेगा [पडेगी] इन कवियो को अन्यथा वे भटकते रहेगे और हमारी पीढी काव्य के नाम पर कुछ न दे पायेगी। मैं भी इस दोष से बचा नही। लेकिन प्रयत्नशील हू—काव्य का वह रूप ग्रहण करने को। मै चाहूगा कि कालिदास के ऊपर लिखे तुम्हारे लेखो

---

1 मेरे पत्र पर उत्तर देने की तारीख केदार ने लिख दी।

2 अब इसका नामकरण मैंने किया है 'बैल बाजी मार ले गए'। इसका एक अंश 'साक्षात्कार' मे छप चुका है। अभी अधूरा है। केदारजी ने पूरा करने का वायदा तो किया है, पर पूरा नही कर रहे हैं। [रा० वि०]

को देखू । पाने का प्रयत्न करूगा ।

"हिन्दी भाषा का विकास" लिखो । जरूर दो यह पुस्तक [।] तुम्ही कुहासा चीरो । और तो हल्के-फुल्के उडते रहते है ।

कविताए लिखना न भूलो, मेरा यह विनम्र निवेदन है । तुम बहुत खूब लिखते हो । वह रस कही मिल ही नही पाता । "गलते है हिम उपल" वाला स्वर और भाव श्रेष्ठ रुचि का परिचय देता हैं । काश मै भी ऐसा लिख पाता ।

कीट्स की याद दिला कर तुमने मुझे फिर काव्य लोक मे पटक दिया । उपन्यास का भूत उतर रहा है । अब आज शायद ही लिख सकू एक परिच्छेद । नाम मात्र से ही कविता के रस मे नहा गया । तुमने जो उद्धरण दिया है कालिदास का वह लाजवाब है । क्या कहना है । फिर तुम्हारी व्याख्या ने उसे चमका दिया है । हाय रे भाग्य, कि मै सस्कृत नही जान पाता । गधा हू जो मैने इसे नहीं पढा । पढता तो रस-विभोर हो लिया करता । तुम बडभागी हो कि प्रयत्न करने मे नही चूकते और नयी नयी भाषा सीख कर विश्व के समस्त काव्य का रस लेते जाते हो । भाई, फौलाद हो तन से और मक्खन हो मन से । खूब रस लो । हम तो तुमसे मिल कर ही रसमग्न हो लेगे ।

एक बार [फिर] याद आ गयी तुम्हारी पक्तिया "गगा की उर्वर घाटी मे, निर्धन जनता ने गाडा है अपनी आजादी का झडा/आजादी की सरिता मे कितनी भवरे है / पर अदम्य अन्तर्धारा-सी, इस धरती पर बहती है पावन जन-गगा ।" क्या दाद दू तुम्हे इस लिखने पर । पता नही कब तुम्हारे काव्य पर कुछ लिख सकूगा । अधूरा लेख पडा है । मैने छोटे-छोटे छदो मे कुछ लिखा है । एक लम्बी कविता "मेरा गाव कमासिन" शुरू हो चुकी है । चाल अच्छी है । देखो कब पूरी हो ।

तु० केदारनाथ

नागार्जुन २४ को प्रयाग गये । वहा से वह आगरा-दिल्ली जायेगे । तुम से जरूर मिलेगे । वचन दे गये हे । शायद अब पहुच गये हो और चले भी गये हो । पत्र प्रयाग से आया था किन्तु कब आगरा जा रहे है, यह न लिखा था ।

हा,[1]

श्री हरीश, सम्पादक 'मुरलिका' साहित्य-सदन ४२, पजाबी मारकेट बरेली को एकाध रचना जरूर भेज देना । वह पत्र लिखेगे । बेचारा उत्साही विद्यार्थी है एम० ए० का । यह पत्रिका निकाल रहा है ।

केदार

1. यह अश अन्तर्देशीय पत्र के उस भाग मे लिखा है जहाँ पत्र भेजने वाले का नाम और पता होता है । [प्र० वि०]

बांदा
१६-१०-५६

प्रिय डाक्टर,

"नागा बाबा" बांदा आये और यहां ४ दिन रह कर फिर प्रयाग चले गये २४-६-५६ को। हम लोगों ने खूब घुल-मिल कर बातें की। बार-बार तुम याद आते रहे। काश साथ होते।

बांदा से वापिस जा कर "नागा बाबा" ने "मैंने तुमको पहचाना" शीर्षक एक लम्बी-सी ६५ पंक्तियों की बड़ी शानदार प्यारी कविता लिखी है। नकल भेजूगा। उन्होंने बांदा को चमचमा दिया है। हम सब उनके कृतज्ञ हैं। फिर मेरे लिए तो उन्होंने कलम ही तोड़ दी है। इतना गौरव अब शायद मुझे कभी न मिलेगा। कभी-कभी उसे पढ़ कर यह अनुभव करता हूं कि हम जन-कवियों सा इतना अटूट प्रेम शायद ही पिछले कवियों में रहा होगा। फिर इस कविता का स्वर इतना सरल और स्वाभाविक है कि मुग्ध हो गया मैं स्वयं ही अपने इस वर्णन पर? कुछ पंक्तियां है।

"श्याम सलिल सरवर है बांदा !
नीलम की घाटी मे उजला श्वेत कमल-कानन है बांदा !
....
बांदा नहीं, अरे यह तो गंधर्व नगर है !"
....
केनकूल की काली मिट्टी, वह भी तुम हो
कालिंजर का चौडा सीना, वह भी तुम हो
ग्राम वधू की दबी हुई कजरारी चितवन, वह भी तुम हो
कुपित कृषक की टेढ़ी भौहैं, वह भी तुम हो
खड़ी सुनहली फसलों की छवि-छटा निराली, वह भी तुम हो
लाठी लेकर काल-रात्रि में करता जो उनकी रखवाली वह भी तुम हो।"

आदि—

मेरा ख्याल है कि वह अब तक आगरा पहुंच गये होंगे। उन्होने कविता जरूर सुनाई होगी। कहो कैसी पसन्द आयी। प्यारे! बड़ा मज़ा रहा। अविस्मरणीय थी हम दोनों की यह भेंट।

लिफाफा नही है शाम हो गई है। इसलिए अपने भाव मजबूर होकर P. C. पर लिख रहा हूं।

तु० केदार

बांदा
२७-१०-५६
रात्रि ६ बजे

प्रिय बंधु !

पोस्टकार्ड मिला। आगरे आने का निमंत्रण स्वीकार है। आ रहा हूं २/११ को सबेरे पहर। यहां से १/११ की शाम की गाड़ी से चलूंगा—रात टूंडला पहुचूंगा - सबेरे तक आगरा। नागाबाबा को भी आज ही पत्र लिखा है कि वह भी पहुंचे। २ व ३ रुक ४ की किसी समय की एक गाडी से चलूगा। ताकि बादा ५/११ को किसी समय पहुंच जाऊ। परिस्थितिया तो ऐसी नही है कि पहुंचूं पर जी नहीं मानता इसलिए चलने को विवश हूं। मिलने पर बातें होगी। बडी रद्दी-रद्दी कविताएं है छोटी-छोटी। सब लाऊगा। उपन्यास भी ३०/४० पेज लिख चुका हूं, लाऊंगा। लम्बी कविता -मेरा गाव की १०० पक्तिया है, वे भी लाऊंगा। देखना नागा बाबा की तथा अपनी, उन्ही के सम्बन्ध की लम्बी रचना भी लाऊगा। मुशी आ रहे है, बडी खुशी हे। जरूर बुला लो। तुम्हारे बच्चे तो रहेगे ही। उनसे बाते कभी नही हुई, इस बार जरूर करूगा।

लिफाफा लिखने की बात भी खूब कही तुमने ! अब तो स्वयं आ रहा हू। जी भर कर कई कापियो के भर जाने तक का मसाला मेरे मुह से स्वयं सुन लेना। कहो खुश हो न ?

तुम्हे भी कविताए सुनाना [सुनानी] पड़ेगा [पडेगी]। आलोचकपना का बहाना न काम आयेगा। चाहे तो रूप-तरंग मे ही सुना देना।

तु०
केदार

बांदा
१३-११-५६

प्रिय डाक्टर,

आगरे से चल कर बांदा पहुचे बहुत दिन हो गये। पत्र नही लिख सका इसका खेद है। आते ही एक कतल केस के करने में जुट गया हूं। समय सरक जाता है। पत्र नही लिख पाया। मैं तो प्रिय ललित से वादा कर आया था चिट्ठी देने को। वह भी क्या कहता होगा। माफी मांगता हूं तुम सबसे इस विलम्ब के लिए। गृह-स्वामिनी ने कई बार कहा भी तब भी न लिख सका। मुन्ना[1] तो बीमार हो गया

1. मुन्ना—केदार के पुत्र।

आते ही। डाक्टर आते रहे। अब ठीक हुआ है।

आचार्य शुक्ल वाली पुस्तक पढ़ रहा हूं अकिल पैनी करने को। खूब लिखा है तुमने। भारतेन्दु युग पर—भक्ति का विकास और सूरदास और जायसी पर। शुक्ल जी को तुम्हीं ने परखा है और चमकाया है। मैं इतना अज्ञ था कि अब तक इस महान् हिन्दी आलोचक का बल और पौरुष नही देख सका था। गजब की बुद्धि है। मैं उन्हें सस्नेह प्रणाम करता हूं। आशा है कि वह जहां भी होंगे वहां मेरा प्रणाम स्वीकार करेंगे। परन्तु दुनिया ने उन्हें छिपाये रखा स्वार्थवश। तुमने डाक्टर नगेन्द्र पर भी खूब बल्लम मारी है। वह चित्त हो गये हैं। तुलसीदास पर जो लेख है वह अभी पूरा नहीं जमता। मुझे शंकायें है। लिखूगा। समझाना।

लखनऊ Project में आ रहे हो या नहीं। प्रयास करूंगा कि पहुंचूं पर राम ही जाने। मलकिन को रामराम। बच्चों को प्यार। सेवा, शोभा, स्वाती[1] [स्वाति] को बहुत प्यार।

तुम्हारा
केदार

मदीया कटरा आगरा
२१-११-५६

प्रिय केदार,

"समय सरक जाता है।" समय नहीं सरकता; हम सरकते जाते हैं। गति केवल Matter में है और Time duration है, Matter नही। क्या Matter का कभी आदि था? आदि था तो अन्त भी होगा। आदि था तो Matter को जन्म किसने दिया? अगर अनादि है तो जो Energy Consume होती जाती है, उसकी पूर्ति कहां से होगी। तब क्या अनादि है, अनन्त नहीं। Engels के अनुसार (और यह वैज्ञानिको की कल्पना भी है) Matter पहले Nebulous Mass थी; Engels का कहना है, उसके भी पहले उसका इतिहास रहा है। अच्छा इतिहास है—जिसका न आदि, न अन्त। लेकिन इस Matter में सबसे सुन्दर हैं—मनुष्य के हृदय की भावनाएं जो फूल के रंग की तरह उड़ जाती हैं। रंग तो किरणों में अन्तर्निहित है; क्या भावसत्ता भी प्रकृति की [के] किन्हीं कणों में अन्तर्निहित है? रात को नींद टूट जाती है और उधेड़बुन में पड़ जाता हूं।

खैर मुन्ना की तरफ और ध्यान दिया करो, यानी अपनी बीवी के रूढ़िवाद से लड़ कर। उसकी आदतों की जिम्मेदारी तुम पर है और line of least resista-

1. सेवा, शोभा, स्वाति—मेरी पुत्रियां।

nce ठीक नहीं। सबेरे-सबेरे नहाना, अंट-संट खाना, अनियमित जीवन बिताना, यह सब बंद कराओ। कवि हो, मनुष्य के निर्माता हो कि मज़ाक। शुक्ल जी तक तुम्हारा प्रणाम पहुंचा दूगा।

तु० रामविलास

बांदा,
२३-११-५६,
रात्रि ७ बजे।

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिला, अभी शाम जब कचहरी से साढ़े चार बजे लौटा। इसे पढ़ कर चित्त प्रसन्न हो गया। प्रश्न गम्भीर है जो तुमने उठाया है। शायद मेरी मोटी बुद्धि के परे है। इन प्रश्नों पर मनुष्य ने पहले भी बहुत सोचा-विचारा है परन्तु समस्या एक समय के लिए हल-सी हो तो जाती है—मगर आगे फिर ज्यों-की-त्यों जटिलतर बन कर उभर आती है। यह यही सिद्ध करता है कि अभी सत्य की खोज शेष है और सत्य को पाते ही चलना चाहिए।

बोलचाल की भाषा मे "समय सरक जाता है।" वैसे यह स्थापना सही है कि वह सरकता नही। समय भी एक diamension[1] है, जो बराबर बना रहता है। उस समय मे हम कहां है, क्या कर रहे है, वहां क्या-क्या हो रहा है—इस सबको उस Dimension में स्थान देने के लिए ही हमने घड़िया आदि बनाई हैं। तभी तो इतिहास भूतकाल का रूप ले लेता है, वर्तमान सामने आकर सांसें लेने लगता है और भविष्यत् होने को है यह आभास हमे मिलता रहता है। समय matter नही है। न हो ही सकता है। हम सरकते भी है तो उसी dimension मे ही रहते है। हम भी आखिरकार matter ही तो है। matter इस dimension से बाहर जा ही नही सकता। इससे नतीजा यह निकलता है कि उस dimension में, जिसे हम समय कहते है, न कमी होती है, न बढ़ती। इसी से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि उस dimension के अन्दर जो कुछ भी है—वह matter हो या energy—उतना ही बना रहता है। यह कहना कि वह matter या energy exhaust हो गया या हो गई या Consume हो गया या हो गई, ग़लत होगा। यह matter न कहीं बाहर से आ सकता है, न बाहर कही जा सकता है; न कभी आया है, न गया है। matter था और है और रहेगा। इसलिए यह आदि-अन्त का (उसके) प्रश्न ही भ्रामक है और सर्वथा अनुचित है। साधारण भाषा में यह भले ही कह लिया जाये कि जिस रूप में matter पहले था (आदि में—समय के dimension के किसी एक बिन्दु पर या बिन्दुओ पर) उस रूप में अब नहीं है।

1. Dimension

Engels ठीक ही कहते हैं कि matter पहले Nebulous mass थी—उनका यह कहना भी ठीक ही है कि उसका उसके पहले भी इतिहास रहा है। तुम्हारा यह कहना कि यह "अच्छा इतिहास है—जिसका न आदि है, न अन्त" इस बात को व्यक्त करता है कि तुम "आदि" और "अन्त" को इस समय के dimension से परे ले जाना चाहते हो। जो समय के अन्दर है उसका "आदि", "अन्त" हो ही नहीं सकता। भले ही उस matter की एक-न-एक दशा का, हम आदि-अन्त मान लें। matter तो वही रहेगा, वह चाहे परिवर्तित हो कर जिस रूप में रहे। उसका परिवर्तित रूप भी matter ही होगा।

इसी प्रकार यह प्रश्न कि matter को जन्म किसने दिया, बड़ा महत्त्वपूर्ण है। किन्तु ज़रा सोचो कि जो है—चीज या वस्तु या matter—उसका जन्म कैसा ? वह तो पहले से है और सदा रहेगी। matter रहा है और रहेगा। जब हम स्वयं समय के dimension से बाहर नहीं जा सकते और हम स्वयं "मैटर" हैं तब हम भला यह कैसे जान सकते हैं कि इस dimension के बाहर भी कोई है जो dimension के अन्दर matter को जन्म दे रहा है या देता रहेगा। फिर किसी के बाहर से dimension के अन्दर आने और matter को जन्म देने की कल्पना या विचार भी गलत है। इस dimension से बाहर न कुछ है, न हो सकता है। तभी तो "अनादि" और "अनन्त" की कल्पना भी न्यायोचित नहीं है। साधारण बोलचाल में कोई भले ही "अनादि" और "अनन्त" कह ले। जिस प्रकार dimension का न आदि है और न अन्त है और न वह अनादि है, न अनन्त है उसी प्रकार matter का भी न आदि है, न अन्त है, न वह अनादि है और न अनन्त है।

वास्तव में यह दोनों शब्द "अनादि और अनन्त" हमारी दार्शनिक बुद्धि की असमर्थता की सीमा मात्र व्यक्त करते है। हम भले ही प्राप्त तथ्यो के आधार पर, ज्ञान की महती अनुकम्पा के बल पर, जिस समय मनुष्य नही थे उस समय के matter की सत्ता के रूप का आभास पा लें किन्तु क्या हमारे लिए यह सम्भव है कि हम पूरे dimension में व्याप्त matter का वह रूप जान लें जो पहले था ? नही।

प्रश्न उठता है कि क्या dimension कल्पना तो नहीं है। नहीं, कदापि नहीं। वह सत्य ही है। इसी dimensional theory के आधार पर तो matter-energy की समस्या हल होती है।

अब आओ energy consume होने के प्रश्न पर और उसकी पूर्ति के प्रश्न पर।

जिसे हम-तुम energy consume होना कहते वह तो energy का दूसरे रूप मे परिवर्तित हो जाना मात्र प्रतीत होता है। वास्तव में वह energy म

समाप्त होती है, न हो सकती है। वह तो रही है और रहेगी। बल्ब में energy consume होती-सी मालूम होती है किन्तु क्या ऐसा होता भी है ? नहीं। vacuam में consumption का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। वह energy प्रकाश-तरंग बन कर पुन: कायम रहती है। हमारे हाथ के हिलाने में जो energy consume होती है वह हमारे हाथ के हिलने-डुलने का रूप लेकर उतनी ही energy का रूप ले लेती है। कहीं भी देखो, यही होता पाओगे। अतएव उसकी पूर्ति उसी के consumpti n के साथ जुड़ी हुई है। इसलिए इस प्रश्न को दूसरी दृष्टि से हल किया जा सकता है। जब हम पत्थर फेंक कर किसी पदार्थ को मारते हैं तब जितनी energy हम पत्थर फेंकने में लगाते है उतनी ही energy हम दूसरे पदार्थ को उस पत्थर के टकराने से दे देते है। वह स्थानान्तरण कर जाती है। इसे चाहे consume करना कह लो, चाहे spent करना कह लो।

अब आओ "हृदय की भावनाओं" पर। क्या भावसत्ता भी प्रकृति के किन्हीं कणों में अन्तर्निहित है ? यह प्रश्न गूढ़ है। इम प्रश्न के साथ कई प्रश्न जुड़े है। भाव क्या है ? कैसे आते है ? क्यों आते हैं ? फिर वह व्यक्त कैसे होते हैं और वे क्या हो जाते हैं व्यक्त हो कर ? यह सब प्रश्न matter और energy से ही सम्बन्धित है। matter और energy के ही रूप भाव हैं, विचार है।

अब सोचते-सोचते आगे नहीं बढ पा रहा। इसलिए यहीं पर यह विचार-चिन्तन समाप्त करता हू। जब तुम मेरी इन बातों पर पत्र, विस्तार से लिखोगे तो मैं पुन: सोच-विचार करूंगा। यदि चुप्पी मार गये तो फिर जड़ हो जाऊंगा। अतएव यह सिलसिला आगे चलाओ। चिन्तन का अवसर दो। समझाओ और समझो। तुम पंडित हो, मैं पोंगा। फिर भी बहस में साथ दूगा।

शुक्ल जी वाली तुम्हारी आलोचना की किताब पढ़ गया। केवल अन्तिम चैप्टर रह गया है। पूरी पुस्तक खूब है। बधाई लो। तुमने जो निष्कर्ष निकाले है वह ही हमारी [हमारे] प्रगतिशील साहित्य के लिए सत्य है। इस पुस्तक के द्वारा भ्रमों और भ्रान्तियों का दूर होना लाजिमी है। जिन-जिन के विचारों को तुमने ढहाया है वह वास्तव में इसी लायक थे। साहित्य में इस प्रकार [के] चिन्तन की परंपरा की बहुत आवश्यकता है। सही दृष्टिकोणो का प्रतिपादन होना ज़रूरी है। डाक्टर हजारीप्रसाद द्विवेद्वी की कलम ने जो काम किया है वह उनकी चिन्तन की कमजोरी ही जाहिर करता है। मौलिक विवेचन करना कोई आसान नही है। वह समय देकर सोचें-विचारें तब तो सही लिख सकते है, वरना इधर का उधर रख देने से साहित्य का इतिहास नही बन सकता। शुक्ल जी इस क़दर सही सोचते थे मैंने इसी पुस्तक से जाना। उनके विचारो मे जो असंगतियां है वह भी तुमने जगह-जगह दिखाई है। इसलिए यह कहना कि तुम पक्षपात से काम ले रहे हो, सर्वथा अन्याय करना है तुम्हारे साथ। जिस शैली में यह लिख सके हो उसका जादू सिर

पर चढ़कर बोलता है। सच बात तो यह है कि इस तरह का मौलिक आलोचनात्मक चिन्तन कोई आलोचक कर ही नहीं सके। स्पष्ट विचार कर पाना परिश्रम और चिन्तन चाहता है। टके सेर भाजी बेचने वाले भला उस तह तक कैसे जा सकते हैं।

तुम्हारी "रूप-तरंग" के ६२वें पेज तक पहुंच गया हूं। प्रत्येक कविता पर उसी पेज में मैंने तुम्हारी कला-कविता पर अपने विचार व्यक्त कर दिए हैं। अब इन रचनाओं की खूबियाँ सामने आ गई हैं। पूरा पाठ कर लेने पर, हरेक पर लिख लेने पर, लेख बद्ध करूंगा। गर्व है कि तह तक पहुंचा हूं और अब कह सकता हूं कि तुम काव्य-क्षेत्र में भी अमर रहोगे। यह रचनाएं किसी स्वतंत्र देश के साहित्य में सर्वोपरि स्थान पाने की अधिकारिणी हैं। मुझे कहीं-कहीं कमजोरियां भी मिली हैं। उनका भी उल्लेख मैंने पृष्ठों पर कर दिया है।

तु० केदार

R. B. Sharma
M. A., Ph. D. (Luck)
Head of The Department of English
B. R. College, Agra.

६-१२-१९५६

प्रिय केदार,

शाम की बदली है। फुहार भी पड़ रही है। Keats की कविताएँ तुम्हारे पास हैं या नही ? 1817 के संग्रह में उसने अपने भाइयों पर एक Sonnet लिखा है। साधारण बातो को कविता में बांधने में एक ही है—Wordsworth की तरह गांवों में या पहाड़ों पर जा कर नहीं, शहर के कमरे में fire place के पास। न पढ़ी हो तो पढ़ना। जरूर, इस तरह की ज्यादा कविताएं उसने नहीं लिखीं लेकिन गतिशील क्षणों को पत्थर पर टाँक दिया है उस कवि ने।

विज्ञान वाले कहते है कि matter की गति को नापने का नाम है—TIME. कितनी देर यह गति रही—यह है काल। किन्तु यदि matter अनादि और अविनाशी है जैसा कि Engels ने माना है तो समय भी—Matter का duration भी—अनादि और अनन्त है।

Nature के संबंध में एक स्थापना यह है :

"Nature is a whole, moving in narrow circles and remaining immutable."

दूसरी स्थापना यह है : "Nature also has its history in time, the celestial bodies, like the organic species···coming into being and passing away ··(Anti Duhring का पहला अध्याय)

एंगेल्स ने पहली स्थापना का खंडन किया है, दूसरे का समर्थन। अब बताओ, Nature has history in time, तो प्रकृति अनादि कैसे हुई ? अगर celestial-bodies और organic being का passing away निश्चित है तो Tempest में Shakespeare की यह उक्ति ठीक नहीं है क्या ?

> The great globe it self,
> Yea, all which it inherit, shall dissolve
> And, like this in substantial pageant faded,
> Leave not rack behind.

और Prospro कहता है :

"my old brain is troubled." अपना भी वही हाल है यद्यपि brain उतना old नहीं है।

तुमने time को Eternal dimension माना है। इस dimension की व्याख्या तो करो, प्यारे। इसके लिए तुमने लिखा है, न आदि है, न अन्त है; न वह अनादि है न अनन्त है। आदि भी नहीं है; फिर भी अनादि नही है, -- यह कैसे समझ में आये ?

तुम कहते हो Energy, Cunsume नही होती। जब सूर्य ठंढा हो जाय गा, धरती जीवहीन हो जाय गी—तब वह Energy परिवर्तित हो कर कहां स्थित हो गी ?

इस विषय पर कुछ और पढ़ कर एकाध लेख-वेख लिखूं गा तब तुम्हें विचार के लिए भेजू गा। अच्छा, अब पकौड़ियां आ रही हैं। पहली तुम्हारे नाम की —गप्।

रा० वि०

बांदा
९-१२-५६
रात्रि साढ़े सात बजे

प्रिय डाक्टर,

जनाब आपको मालूम होना चाहिए कि Keats का काव्यसंग्रह मेरे पास नहीं है। आपने यह गुस्ताखी की है कि मुझे कविता लिख कर नहीं भेजी। तड़प कर रह गया। जल्दी भेजो वरना सब मज़ा चला जायेगा। यदि हो सके तो उसका संग्रह वहां के किसी पुस्तक भंडार से मेरे नाम बी० पी० भेजवा दो। मै छुड़ा लूगा। भूल न करना। अपने सामने ही भिजवा दो। तुम्हें मेरी क़सम। पकौड़ी खाते ही न रह जाना। वरना बुरा होगा।

एक कविता लिखी है ताजमहल पर। पत्र के अंतिम पृष्ठ पर है। पढ़ो और कस कर उसकी आलोचना करो। पर चाहे जो भी कहो चीज़ अच्छी ख़ासी बन गयी है।

एंगेल्स का कहना मुझे सही प्रतीत होता है कि प्रकृति का भी समय के अंतर्गत एक इतिहास है। इस कथन का तात्पर्य यह कभी नहीं होता कि वही प्रकृति उसी रूप में सतत बनी रहेगी। हो सकता है कि यह न रहे---कोई[किसी]दूसरे रूप में रहे। फिर कभी ऐसा ही रूप ग्रहण कर ले। यह क्रम तो निरंतर होता रहेगा।

जब मैं समय को न अनादि कहता हूं---न अनंत कहता हूं तब मेरा मतलब होता है कि उसका आदि से आदि क्षण भी अपने से पहले से भी रह चुका होता है। इसीलिये समय के किसी छोर की कल्पना करना तर्कसंगत नहीं होगा। तभी तो मैं उसे अनंत भी नहीं मानता। हो सकता है कि जो आदि क्षण है वही अंत क्षण भी हो। यहां आदि और अंत एक ही बिन्दु पर मिले होते हैं। इसीलिए आदि और अनंत की कल्पना ही असंगत है क्योंकि जिसका आदि है वह अनादि कैसे और जिसका अंत है वह अनंत कैसे? अतएव समय आदि और अत से परे हो कर भी आदि और अनंत नहीं कहा जा सकता। वैसे तो प्रतीत तो यही होता है कि जिसका आदि नहीं है वह अनादि है और जिसका अंत नही है वह अनंत है। किन्तु मुश्किल यह है कि उस समय के Dimension के अंदर समय है, आदि और अंत के रूप में नहीं, न अनादि और अनंत के रूप में। समय सत्तात्मक है। सत्ता के आदि और अत का प्रश्न ही नहीं उठता---जब प्रश्न ही नहीं उठता तब अनादि और अनंत की बात सोचना भी गलत जान पड़ती है।

समय को मैंने eternal dimension कहा है। इस dimension की व्याख्या नही---अनुभूति होती है। यदि व्याख्या ही करना चाहो तो कह सकते हो कि समय वह है जिसके अन्दर सब कुछ होता रहा है, होता रहेगा, और हो रहा है। समय तो स्पेस के साथ ही जुड़ा है। समय और स्पेस का एक ही dimension है।

Energy consume नहीं होती। यह ठीक है। सूर्य ठंढा पड़ जायेगा---मगर वह energy space & time के dimension में कहीं-न-कहीं विराजती रहेगी। पृथ्वी ठंडी पड़ जायेगी तो क्या इस पृथ्वी के अलावा अन्यत्र कोई नक्षत्र या ग्रह हैं ही नहीं? हैं तो।

शेक्सपियर की उक्ति एक हद तक ठीक ही है। यह दुनिया न रहेगी। मगर पदार्थ रहेगा शक्ति ---रहेगी ही। शेक्सपियर इस गोल दुनिया के नष्ट होने की बात कह रहे हैं मगर उससे पदार्थ और शक्ति के सर्वनाश हो कर न रहने की बात नहीं कह रहे। Prospero का कथन दार्शनिकों का कथन नहीं---हम जैसों का कथन है। बस। स्पेस समाप्त हुई---कलम भी रुकती है।

केदार

ताजमहल

शिल्प-कला की कोमल कृति यह ताजमहल है
कभी नहीं मुरझाने वाला श्वेत कमल है
निर्मल नक्षत्रों की छवि से भी निर्मल है
चन्द्रोदय लगता इसके आगे धूमिल है

आंखों से उमंड़ा [उमड़ा] यह मानव-मन का जल है
करुणा-सागर का उज्ज्वल-सा यह बादल है
पत्थर हो कर भी सदियों से यह विह्वल है
विह्वल हो कर भी यह सुन्दर मुख-मुण्डल है

ऐसा लगता है जैसे यह अभी बना है
अन्तर के उर से प्रकटित, सस्मित सपना है
अविनश्वर यह ताजमहल नश्वर प्रस्तर का
मूर्तिमान अक्षुण्य [अक्षुण्ण] प्रेम है अभ्यंतर का

वे शिल्पी जो इसे बना कर चले गये है
नहीं लौट सकते हैं ऐसे छले गये हैं
उन्हें आज भी हम लखते है रीढ़ झुकाये
अपने कंधों पर अपना ही ताज उठाये

इसीलिए यह यमुना नीली—श्याम गगन है
ताजमहल की छाया में भी सांवरपन है
ओस और आंसू का भू पर गीलापन है
और मनुष्यों के सनेह में पीलापन .है

२६-११-५६
रात्रि, ११ बजे

केदार

To my brothers

Small, busy flames play through the fresh laid coals [1],
And their faint cracklings o'er our silence creep[2]
Like whispers of the household gods that keep
A gentle empire o'er our fraternal souls.[3]
And while, for rhymes, I search around the poles,
Your eyes are fixed, as in poetic sleep,[4]
Upon the love so voluble and deep,[5]
That age at fall of night our cane candales.
This is your birthday Tom,[6] and I rejoice.
That thus it passes smoothly, quietly.
Many such eves of gently, whisp'ring noise
May we together pass, and calmly try
What are this world's true joys,[8]—eve the great voice,[9]
From its fair face, shall bid our spirits fly.

Nov. 18, 1816

—John Keats

---

1. हाल के कोयलो के जलने मे भी कविता है। सवेदना चाहिए।
2. *Silence* पर *crack lings* को *creep* करना—सूक्ष्म *sensations* की इति है।
3. ये तीन भाई थे—मातृहीन, पितृहीन; कवि *Keats* इनमें सबसे बड़ा था।
4. *Poetic sleep* में आंखें खुली रखने का वर्णन *Keats* ने कई जगह किया है। वातावरण की *intense awareness* में और *sensations* खो गये हैं।
5. यह उनकी परस्पर काव्य चर्चा है।
6. यह सबसे छोटा भाई था जिसकी *Consumption* से मृत्यु हुई और जिसकी परिचर्या कवि ने की थी।
7. कवि की यह आशा अपूर्ण रही; *Tome* की मृत्यु हुई और *George* अमरीका चला गया।
8. वह जीना चाहता था; मृत्यु अभी दूर लगती थी।
9. मृत्यु आयेगी, मालूम था; कितनी जल्दी यह पता न था। *Joy* पर विषाद की छाया यहा भी पड़ रही है।

इसे लिखते समय Keats २१ वर्ष का था। इसके टक्कर की दो Sonnets उसने और लिखी हैं। वे तुम पुस्तक में पढ़ो गे, जिन पर निशान लगा कर, पुस्तक सोमवार को भेज दूं गा।

तुम्हारी कविता सुन्दर है लेकिन बराबर नहीं उतरी। पहली पंक्ति गद्य है। श्वेत कमल की उपमा सुन्दर है लेकिन निर्मल नक्षत्रों की चर्चा से कमल की image बहुत जल्दी ओझल हो जाती है—चन्द्रोदय, नक्षत्र, कमल-- तीनों के एक साथ आने से पाठक किसी भी image पर जम नही पाता। चन्द्रोदय वाली image पर पूरा बन्द होना चाहिए। दूसरे बंद में– मानव मन का जल और करुणा-सागर का बादल एक ही बात कहते हैं। पत्थर की विह्वलता सुन्दर है लेकिन बाद वाली पंक्ति बहुत कमज़ोर है—विह्वल हो कर भी मुखमंडल होना—यह बात स्पष्ट नही हुई। तीसरा बन्द—अभी बना है—उसकी ताज़गी की अनुभूति। सुन्दर। पत्थर में सपना। ठीक। तीसरी पंक्ति व्याख्यात्मक है; चौथी अनावश्यक टिप्पणी। इस बन्द में केवल उसकी ताज़गी और प्रस्तर के सस्मित सपने पर मन जमाना था। तीसरा बंद—शिल्पियों को किसने छला है? क्या ताज का सौदर्य उन्हीं का हृदय सौंदर्य नही है? फिर ताज उन पर भाररूप क्यों है? चौथा बंद बिल्कुल अस्पष्ट है। यह दुख, किसका, किसके लिए; ताज से उसका संबंध; चन्द्रोदय और सस्मित सपने से ताज का संबंध—यह सब कविता के किसी संकेत द्वारा नही जाना जा सकता। अतिम पंक्ति —पीलापन? क्या निर्जीव प्रेम से अर्थ है? साधारण मनुष्यों का प्रेम निर्जीव क्यों? इसके सिवा नीली यमुना, श्याम गगन, छाया के साँवरपन के साथ पीलापन colour harmony भंग कर देता है। कविता से यह अनुमान तो होता है कि तुमने क्या अनुभव किया है लेकिन वह अनुभूति mature होकर symmetrical नहीं हो पाई। श्वेत कमल, करुणा सागर का उज्ज्वल बादल, विह्वल प्रस्तर, सस्मित स्वप्न— इन images पर और ध्यान केन्द्रित होना चाहिए— यानी कविता में उनके लिए और भी space और time चाहिये। और कविता के दोनों भागों में inner harmony आवश्यक है जिससे संपूर्ण रचना मन में गूंजती रहे। जिस समय हम कविता लिखते हैं आवेश में रहते हैं। हम कविता नहीं देखते, वह भावचित्र देखते हैं जो हमारे मन में है। लेकिन पाठक तो वह नहीं देखता। वह कलाकृति के रूप को देख कर ही भावचित्र तक पहुंच सकता है।

15-12-56 तुम्हारा रामविलास

बांदा
२०-१२-५६

मेरे प्यारे दोस्त रामविलास,

लिफाफा मिला। तबियत खुश हो गई कि तुमने मेरी ताजमहल कविता को इतने गौर से पढ़ा। तुम्हारे पत्र में जान और जादू दोनों हैं।

मैं तुम्हारी आलोचना से प्रभावित अवश्य हुआ हूं लेकिन सहमत नहीं हूं [कि] पहले स्टैन्जा की पहली लाइन गद्द [गद्य] है। यह सही है मैंने ताज को कमल कहा है और उस कमल की छवि को नक्षत्रों की छवि से निर्मल बताया है। चन्द्रोदय को मैंने उस कमल की छवि से धूमिल दिखाया है ताकि चांदनी के खुलाव की ओर इशारा हो सके और उस कमल का खुलाव भी व्यक्त हो सके। इस स्टैन्जा में कमल ही कमल है न, न नक्षत्र है न चन्द्रोदय है। यदि मैं पूरा स्टैन्जा कमल से ही भर देता तो उसमें अलंकारों की छटा जरूर आ जाती मगर वह कैसा कमल है यह न व्यक्त हो पाता। यह ताज धरती का कमल है और इसकी खूबी यही है कि यह आकाश के तारों की छवि से अधिक सुन्दर छवि का है और यह चन्द्रोदय को भी मात करता है। पाठक को इस बात की अनुभूति प्राप्त करने में कोई प्रयास नहीं करना पड़ेगा।

दूसरे स्टैन्जा की पहली लाइन में मैंने ताज को मानव मन का उमड़ा जल कहा है। जल तरल होता है और इसकी तरलता ताज में लानी थी। ताज स्वयं तरल नहीं है [।] आंसू सुन्दर होता है। और हृदय से निकल कर हृदय को व्यक्त करता है। इसलिए ताज को आंसू कह कर मैंने हृदय से निकाल कर बाहर रखे जाने को व्यक्त किया है। फिर मैंने आंसू की तुलना में इस ताज को बड़े आकार का देख कर उसकी बड़ाई व्यक्त करने के लिए करुणा के सागर का हवाला दिया है। किन्तु वह सागर भी तरल है इसलिए उसे बादल बना कर ताज के संगमरमर का रूप देने के लिए उज्ज्वल कह दिया है। तीसरी लाइन में ताज के पत्थर पने की ओर इशारा है लेकिन वह पत्थर साधारण पत्थर नहीं विह्वल होने वाला पत्थर है। इसीलिए इस विह्वलता को सजीव करने के लिए और रूप देने के लिए मैंने उसे मुख मंडल कहा और उस विह्वल मुख मंडल को सुन्दर बताया। सुन्दरता क्षणिक होती है इसलिए मैंने उसे सदियों से कायम बता कर स्थायित्व बना [प्रदान] दिया [किया]। तुम्हारा यह कहना कि आंसू भी जल है और बादल भी जल है इसलिए मेरी कविता लचर है मुझे गलत मालूम होता है। मेरे अनुसार जल और बादल में दो दशाओं का अन्तर है जिसे बिसार कर दोनों को एक नहीं माना जा सकता है।

पहले और दूसरे स्टैन्जाज़ में पारस्परिक सम्बन्ध है। पहला स्टैन्जा केवल सौन्दर्य को व्यक्त करता है और वह सौन्दर्य असाधारण सौन्दर्य है और दो सो

रही आत्माओं के कारण करुणा जनित हो गया है। बस इसीलिए 'कमल' के बाद ही जल और सागर की बात लानी पड़ी। कमल भी तो जल-जात कहलाता है।

दूसरे स्टैन्जा की आखिरी पंक्ति का अन्त सुन्दर मुख मंडल में होता है जिसे सब देखते रह जाते हैं और कभी नहीं अघाते। इस देखने में कुछ-न-कुछ नयापन निरंतर मिलता रहता है। अतएव तीसरे स्टैन्जा की पहली लाइन में मुझे यह दिखाना जरूरी हो गया कि ताज अभी बना है और तुमने इस कहने से उसकी ताज़गी की अनुभूति पाई है। तुम कह सकते हो कि मैंने पहली पंक्ति में ताज को अभी बना कहा है फिर दूसरी पंक्ति में मैंने उसे पत्थर के हृदय से प्रगटित होना कहा है जो सर्वथा असंगत मालूम होता है। लेकिन बात यह है कि जब ताज बन कर खड़ा हो गया तब के उसके सौन्दर्य को व्यक्त करने के लिए मैंने उसे पत्थर के हृदय से निकाल कर बाहर रखा हुआ दिखा दिया है। और उसको सपने का रूप दे कर उसके इस सौन्दर्य को और भी अनुपमेय बना दिया है कि उसमें लेशमात्र भी मनुष्य के विकार का आरोप तक न हो सके। इसीलिए ताज सम्मित सपना हो गया है। तीसरी लाइन व्याख्यात्मक मालूम होती है लेकिन यह व्याख्या अगली पंक्ति का आधार है। तुम कहोगे कि हजरत सपना बना कर ताज को तुमने पत्थर क्यों बना दिया ? मैं कहूंगा कि जनाब मन मेरी ऐसी ही अनुभूति है और यही ताज सपना होकर भी पत्थर बना रहता है और गायब नहीं होता। अतएव सपने को अविनश्वर ताज कह कर पत्थर की नश्वरता के समक्ष मैंने सौन्दर्य बोध कराया है। यही नहीं मैंने उसे प्रेम का सहारा देकर अक्षुण्ण कर दिया है।

चौथे स्टैन्जा मे मैंने उन शिल्पियों की बात कही है जिन्होने ताज बनाया। मैं उन्हें धन्यवाद नही देना चाहता था बल्कि यह बात कहना चाहता था कि वे लोग ऐसी सुन्दर इमारत बना कर मर गये और जीवित न रह सके। मृत्यु के द्वारा छले जाने की बात इसी हेतु मैंने कही है। मृत्यु का नाम अवश्य मैंने नही लिया लेकिन ध्वनि उसे व्यक्त कर देती है। यहां पर मैंने उन शिल्पियों के शोषित होने की ओर संकेत भी नहीं किया। मैंने उनके कन्धों पर ताज का होना दिखाया है और उसे उनका ही ताज बना कर व्यक्त किया है तभी तो मैंने अपना शब्द लिख दिया है। ताज के नीचे उन शिल्पियों को रीढ़ झुकाये होने वाली बात केवल इस ध्येय से कही गयी है कि वे लोग ताज को त्यागने के पक्ष में नहीं हैं बल्कि उस पत्थर के बोझिल सौन्दर्य को इतना प्यार करते है कि अपनी रीढ़ झुक जाने पर भी उठाये रहते हैं और सदियों से उठाये हुए हैं। इसमें उनका प्रेम ही व्यक्त होता है। यह स्टैन्जा उन्हीं के प्रेम का प्रमाण है।

पांचवें स्टैन्जा पर तुम्हें बहुत आपत्ति है। मुझे बिल्कुल नहीं है [।] यह सच है कि वे लोग रीढ़ झुकाये हुये सदियों से ताज के नीचे खड़े दिखते हैं और उनके कन्धों पर उनका अपना बनाया हुआ ताज अक्षुण्ण सौन्दर्य का प्रतीक हो कर खड़ा है फिर

भला यह दृश्य सुन्दर हो कर भी क्यों न करुणा जनक हो। इसी समस्त दृश्य की करुणा से प्रभावित हो कर मैंने यह पांचवां स्टैन्जा लिखा है कि यमुना इसे देख कर नीली हो गई है, आसमान श्याम हो गया है, ताज की छाया स्वयं भी सांवली है और धरती ओस और आंसुओं मे गीली है। पीलापन मनुष्य के उस दुर्बल प्रेम को व्यक्त करता है जो ताज के इर्द-गिर्द रहने वाले अपने जीवन में अनुभव करते रहते हैं। इस स्टैन्जा की परिसमाप्ति इसी में होती है कि एक ओर ताज का अमर सौन्दर्य और प्रेम है तो दूसरी ओर जन-साधारण के प्रेम का पीलापन है।

जहां तक कि रंगों के हारमोनी का प्रश्न है वहां तक तुम चाहे जो कह लो लेकिन मेरा उद्देश्य रंगों के प्रकाशन का नहीं था बल्कि यह उद्देश्य को व्यक्त करना था। अब अगर तुम्हें इस पर भी कोई आपति हो तो साफ-साफ लिखो। मैं समझता हू कि यह मेरी बडी अच्छी कविता है। सस्नेह तु० केदार

बांदा
२१-१२-५६
११ बजे

प्रिय डाक्टर,

कल एक लिफाफा भेज चुका हूं। आज अभी पुस्तक मिली। बेहद खुशी हुई। अनेकानेक धन्यवाद। परन्तु यह V.V.P. नही थी। क्या कारण है। अन्दर देखा तो तुम्हारा हस्ताक्षर देखने को मिला। व्यर्थ ही मैंने तुम्हें यह दण्ड दिया। खैर, इस लिखने के लिये मुझे क्षमा करोगे। तु० सस्नेह

अब फिर कचहरी खड़ी है.। केदार

मदीया कटरा, आगरा
२५-१२-५६

प्रिय वकील साहब,

ईसामसीह के जनम लेने में तीन घंटे बाकी है। वैसे सुना है वह आज तशरीफ न लाए थे। यह दिन रोमन जनता की होली (Saturnalia) का पर्व है। काली स्याही सूख गई है, सो लाल से कागज रंग रहा हूँ।

तुम मेरी आलोचना से सहमत नही हो? कोई मुज़ायका नही। ऐसे दोस्त जो हर बात से सहमत हों, बेजायका हो जाते हैं। मेरे पास अपनी आलोचना की कोई कापी नहीं, इसलिए तुम्हारी दलीलों को सामने रख कर ही जिरह करूंगा।

मैंने कविता का पहला बद पढ़ा और तुम्हारी दलीलें भी। ताज धरती का कमल है नक्षत्रों से भी सुदर है, चंद्रोदय को भी मात करता है। अगर किसी को तर्क से उसकी खूबसूरती का कायल करना हो तो तुम्हारी वकालत सही है। लेकिन डियर वकील साहब, कविता और तर्क में अंतर है। आप मेरी कल्पना के सामने ऐसा भव्य चित्र खड़ा कीजिए कि मैं उसमें डूब जाऊं। मुझे चाहिये सूक्ष्म इंद्रिय बोध, सुदर मूर्ति विधान, कमल या चंद्रोदय का ऐसा रूपक जिसमें मन कुछ क्षणों को डूब कर रह जाय। शेली की Sky Lark में अनेक उपमाएं हैं लेकिन दृष्टि हर एक पर ठहरती चलती है:

Like a poet hidden
In the light of thought
Singing hymns unbidden.
Till the world is wrought,
To silent hopes and fears it heeded not,

तुम्हारे तर्क में कोई कमज़ोरी नहीं है, कमज़ोरी है मूर्ति विधान में। कविता की भाषा इंद्रियों की भाषा है। संगीत और मूर्ति विधान द्वारा कवि वह सब कह देता है जो तर्क द्वारा दार्शनिक कह नहीं सकता। मेरी आपत्ति यह है कि तुम्हारी कविता में किसी Image पर ध्यान ठहरता नहीं, इसलिए कविता Suggestive न हो कर अभिधात्मक कथन बन गई है।

दूसरा बंद। आंसू भी करुण, करुणासागर का बादल भी करुण। इसलिए आंसू का उपमान निरर्थक। तुम्हारा तर्क कमज़ोर है, प्यारे यहां पर। वैसे करुणा-सागर के उज्ज्वल [उज्वल] बादल की उपमा सार्थक है। बादल के बाद उसके अचानक पत्थर बन जाने से कल्पना को धक्का ज़रूर लगता है। फिर भी विह्वल पत्थर—अच्छा ख्याल है। लेकिन मुखमंडल? "विह्वलता को सजीव करने और रूप देने के उसे लिए मैंने उसे मुखमंडल कहा"। अरे साहब जो विह्वल है, वह सजीव तो हो गा ही, निर्जीव कब विह्वल होता है? इसके सिवा आंसू, बादल, पत्थर, मुखमंडल—यहां भी एक बंद में चार images ताबड़तोड़ आ गई हैं।

तीसरा बंद। जिन तर्कों की कल्पना करके तुमने उत्तर दिए हैं, उनकी चर्चा अनावश्यक है। 'अभी बना है' में ताज़गी की अनुभूति पुनः स्वीकार है। तीसरी पंक्ति व्याख्यात्मक है, आप भी मानते है। 'अक्षुण्ण प्रेम' 'कहने पर 'अविनश्वर' कहना अनावश्यक हो जाता है। इसलिए तीसरी पंक्ति को चौथी का आधार कहना —ग़लत।

चौथा बंद। साहब अजब दलील है। शिल्पी मर भी गए हैं और आप उन्हें रीढ़ झुकाये देखते भी हैं! क्या आपने उनके प्रेत देखे थे? रीढ़ झुकने के कारण क्या हैं? अतिशय भार से ही रीढ़ झुकती है? क्या यह सौंदर्य की अतिशयता प्रकट करने के लिए है? रीढ़ झुकने में साफ शोषण की ओर संकेत मिलता है, भले ही वह तुम्हें अभीष्ट न हो।

पांचवा बंद। रीढ़ झुकाए ताज उठाए मानवों का दृश्य तुम्हें करुणाजनक लगता है। क्यों? ताज भी अमर। उसे उठाने वाले भी अमर। और अगर मर गए तो ग़म क्या, ऐसी निशानी तो छोड़ गए। इस बंद में जिस करुणा की ओर संकेत है उसका कोई भी कारण समझ में नहीं आता। यहां तुम्हारी कविता आजकल के अधिकांश कवियों की तरह incoherent और अस्पष्ट हो गई है। ताज के इर्द-गिर्द रहने वालों का प्रेम दुर्बल और पीला क्यों है? फिर तुम्हारी कविता के 'मनुष्य' ताज के इर्द-गिर्द के मनुष्य कैसे हो गए? तुमने ताज के अमर सौंदर्य और प्रेम से "जन-साधारण के प्रेम का पीलापन" contrast किया है। आश्चर्य है! तुम्हें जनसाधारण का प्रेम दुर्बल और पीला क्यों जान पड़ा, समझ में नहीं आया। जिन शिल्पियों

ने ताज बनाया, उन्होंने क्या जनसाधारण के हृदय के सौंदर्य बोध को ही नहीं आंका ?

तुम्हारी बड़ी अच्छी कविता मेरी समझ में छोटे हाथों वाली, धूप धरा पर उतरी वाली है। जो छाप मन पर छोडना चाहता हो, सारी कविता उसी की प्रत्येक रेखा को सँवारने में सफल होती है।

तुमने अपना पहला पत्र जिसमें कविता भेजी थी ११ बजे समाप्त किया था, मैं भी इसे १० बजे समाप्त कर रहा हूं।

तुम्हारा
रामविलास

कीट्स की कविताएं वी० पी० [वी० पी० पी०] से इसलिए नहीं भेजीं कि उन्हें पढ़ते समय मुझे भी याद कर लिया करो। शोभा के गले में फोड़ा हो गया था, आपरेशन के बाद अब ठीक है।

[दिसंबर का अंतिम सप्ताह, १९५६]

प्यारे दोस्त,

पत्र मिला। इस बार का विवेचन बहुत खूब है। अब तुम्हारी आलोचना से पूर्णतया सहमत हूं। मालूम हो गया कि तुम काव्य के सिद्ध पारखी हो। सच मानो झूठ नहीं कहता, तुम्हारी इस कसौटी पर कस कर मेरी 'ताजमहल' की कविता अब अच्छी हो गयी है। अपनी राय अवश्य देना। इस बार का प्रयास संतुष्ट तो कर ही देगा।

कुछ और भी स्फुट छंद भेज रहा हूं। उन्हें भी देखना। निर्मम हो कर विवेचन करो, मुझे बल और विवेक मिलेगा। तुम ठीक ही लिखते हो कि तर्क काव्य नहीं है। मेरी वकालत तुम्हारे सामने न चल सकी, यह मेरे हित में ही है। तुम जीते मैं हार कर भी न हारा क्यों कि नई कविता लिखने का मार्ग खुला।

कीट्स की पुस्तक लगभग रोज पढ़ता हूं। रोज तुम्हें याद करता हूं। बड़ा प्रभावपूर्ण काव्य है। इसकी शक्ति लाजवाब है। बायरन पर इसका सानेट गजब का है। राग मूर्तिमान हो जाते हैं। कहीं कुछ अनकहा नहीं रह जाता।

"Through the dark robe off amber rays prevail
And like fair veins in sable marble flow."

"शांति" पर भी उसका Sonnet खूब है। देखो न "Soothing with placid brow our late dstress" तुमने भी कहा है—भ्रूभंगों से सागर के शांत करने की बात अपनी "वंदिनी कोकिला" कविता में।

कीट्स का वह सानेट जो उसने Blue पर लिखा है। पढ़ते-पढ़ते नील में डूब

गया। रगो का इतना चतुर चितेरा शायद ही कोई दूसरा हो।

तुम्हारी भेजी पुस्तक-कीट्स के सग्रह पर—पर मैंने यह चार पक्तिया लिखी है।

साथी की यह भेट मुझे साथी-सी भाती
कविताओ से भरी हुई है जिसकी छाती
मै साथी को इस पुस्तक से हृदय लगाता
अपनी छाती को छदो का निलय बनाता

२१-१२-५६

छुट्टी के दिन है। काव्य है और मै हूँ। सब भूला हूँ।
नये साल की बधाई।

तु० केदार

बिटिया का आपरेशन[1] हो चुका था—अब तो वह ठीक होगी। मैंने ललित की चिट्ठी मे फोटो भेजे थे। मिली होगी।

केदार

ताजमहल

हरियाली का श्याम सरोवर सदियो से फैला है भू पर
श्वेत कमल-सा खिला हुआ यह ताजमहल है उसके ऊपर
नील गगन को छू कर भी यह नही हुआ है नीला अब तक
अमल धवल यह खडा हुआ है भूतल पर गर्वीला अब तक

नभ का चाद निकल कर, बढ कर, जग को कर देता है निर्मल
फिर भी क्रमश घट कर वह तो हो जाता है पूरा ओझल
लेकिन ऐसा चाद नही यह अपना प्यारा ताजमहल है
अमर यशस्वी सदा चमकने वाला छवि का चाद विमल है

यह मानव के मन से उमडा मानव की आखो का जल है
इस करुणा की शिल्प-कला से पत्थर भी हो गया विकल है
हम यह आसू देख रहे है आखो मे ही आसू ला कर
ताजमहल मे लीन हुए हम ताजमहल को सम्मुख पा कर

1 मझली बेटी सेवा का अपेन्डिसाइटिस का ऑपरेशन

यह हमको ऐसा लगता है इस क्षण जैसे अभी बना है
प्रस्तर के उर से यह प्रकटित जैसे अति सस्मित सपना है
इस सपने की सुदरता पर न्यौछावर तन मन अपना है
इस सपने की छाया-छवि को अवलोकन करते रहना है

वे शिल्पी है धन्य जिन्होंने प्रस्तर में यह कमल खिलाया
कभी न घटने, सतत् चमकने वाला छवि का चांद उगाया
पत्थर को भी अश्रु बना कर हम जैसा ही विकल बनाया
पत्थर से सस्मित सपने की बांकी झांकी को प्रकटाया।

दिसम्बर १९५६

'रूप-तरंग' के छंदों से प्रभावित होकर

१ मंद्र मृदन्गम् के स्वर से छंदों के स्वर हैं
स्वर से कूजित कविताओं के बिम्बाधर हैं
बिम्बाधर पर चित्रांकित अवनी अंबर है
अवनी-अम्बर के अधिकारी राग अमर है

२२-१२-५६

२ निर्झर-सी छंदों की बाहें राग रचित हैं
बाहों से लिपटी कविताएं भाव-भरित हैं
कविताओं में उपमाओं के कुज कलित हैं
उन कुंजों मे जन-जीवन के गीत ध्वनित हैं

२२-१२-५६

३. 'रूप-तरंग' को पढ़ते-पढ़ते

सोया है संसार, निशा रवि पर फैली है
केवल एक दिया है मेरा—जो जगता है
जिसकी लघु लौ नहीं हुई किंचित मैली है,
जिसको छू कर अँधियारा गलने लगता है
मैं भी अपने दीपक का साथी — एकाकी,
नैनों को खोले कविता पुस्तक पढ़ता हूं,
और निरखता हू वाणी की बांकी झांकी
'पद-पद' पर मैं पुष्प सदृश प्रतिपल चढ़ता हूं
होता है कल्याण, सुबह मेरी होती है
तमसावृत जीवन की जड़ता खोती है

२१-१२-५६

४. मरकत पातो की श्यामलता को सरसाए
सूर्यातप मे पेड खडे छवि-क्षीर नहाये
मुझको प्यारे लगते हे मेरे भ्राता से,
नाता जोडे है मेरी धरती माता से ॥

२५-१२-५६

सॉनेट

जडीभूत काठिन्य भूमि का बदल गया है हरियाली मे
हरियाली को अग लगा सुस्पदित है तरु-लतिकाए
श्यामलता की इस पुल्कन से मदविह्वल है दिवस-दिशाए
मुग्ध, मगन-मन नव दिन का है नीलम की निर्मल प्याली मे
राग-मुखर झरने झरते ह तरु पातो की वाचाली मे
हरियाली सगीत-ध्वनित है, रस रजित हे स्वर शाखाए
शाखाओ र आभूपित है पुष्पो की मजुल मालाए
वासती रगो की होली विस्तारित है बनमाली मे
मेरे मन मे व्याप गई है तरु-लतिकाओ की श्यामलता
मेरा भी अस्तित्व ध्वनित है तरु-पातो की मृदु ध्वनियो मे
मै भी जी भर खेल रहा हू फूलो के रगा की होली
इसीलिए तो अब आई हे, मेर भावो मे कोमलता
रगो को आकार मिला है मरी कविता की कलिया मे
चमक उठी है रग बिरगी ललित कला की चूनर-चोली ।

२८-१२-५६

R B. SHARMA
M. A , Ph D

९-१-1957

Head of the Department of English
B R College Agra

प्रिय केदार,

साल-भर कविताए लिखो, कविताओ मे डूबे रहो । नये वर्ष के साथ तुम्हारा आत्मीयता से भरा पत्र और केदारपन से भरी कविताए मिली । धन्यवाद ।

मै दो दिन के लिए अलीगढ गया था । आज कई दिन बाद आसमान खुला है । तब तुम्हे धूप और हवा की तेजी और ताजगी के बीच यह पत्र लिख रहा हू । कीट्स की पुस्तक पर जो तुमने चार पक्तिया लिखी है, उससे अपनी छाती दूनी हो

गई। पुस्तक भेजना सार्थक हो गा, मैं पहले ही जानता था। 'छाती' और 'थाती' के भदेसपन के साथ 'निलय' जमा नहीं प्यारे। वैसे तुम्हारी पंक्तियां खूब जोर से बोल रही हैं। 'लगता' में 'हूं' और जोड़ा जाय तो पूरी क्रिया बने। खैर, यह छोटी-सी बात है। 'ताजमहल' वाली कविता बिल्कुल बदल गई है और संवेदनाओं की दृष्टि से बड़ी सुघर बन पड़ी है। हरियाली और श्वेत कमल की Harmony सुन्दर है। दूसरी पंक्ति में 'हुआ' और 'है' एक-दूसरे से बिछुड़ कर दूर जा पड़े हैं। 'अमल धवल' का टुकड़ा मुझे कुछ छायावादियों का संस्कृत गर्भितपन लिए लगता है। तीसरे बंद के आंसूवाद से मैं प्रभावित नहीं हूं। मुझे न ताज में करुणा दिखाई देती है न उसे देखते हुए आंखों में कभी आंसू आये। लेकिन यह तो अपनी संवेदनाओं का अंतर है। तुम्हारा बंद सुन्दर है! 'प्रकटित' और 'प्रकटाया' प्रयोग मुझे खटकते है 'अति सस्मित' में 'अति' अनावश्यक लगता है। 'सपने की छाया-छवि' में डबल लक्षणा भी अनावश्यक लगती है।

अतिम बंद में कमल चांद, आंसू और सपने की images दोहरायी गयी हैं। इनमें यदि इतना परस्पर भेद न होता तो कविता के अंदर जबर्दस्त Harmony पैदा होती हैं। फिर भी अन्तर दे कर हम ऊपर इन images से परिचित हो चुके हैं, इसलिए उनका एक साथ आना कुछ विशेष खटकता नहीं है। अस्तु, अब यह कविता तुम्हारे संग्रह में उच्च स्थान प्राप्त करे गी, इसमें संदेह नहीं।

'रूपतरंग' पर पहले बद की पहली पंक्ति बहुत अच्छी है यद्यपि अत्युक्ति-पूर्ण है। 'कूजित बिम्बाधर' बहुत अच्छा टुकड़ा नहीं, 'कूजित कंठ' तो समझ में आता है। अंतिम दो पंक्तियों में images अस्पष्ट हो गई हैं।

दूसरा बन्द निर्दोष है। भावभंरित चल जाता है। निर्झर, लिपटी कविताएं (लिपटी से मैं लताओं का चित्र देखता हूं), उपमाओं के कुञ्ज, कुञ्जों में ध्वनित गीत - तुम देखो गे images मे कितनी Harmony और उस पूरे बंद में गूंजते रहने की कितनी क्षमता है। वधाई। लेकिन यह न समझना कि मैं तुम्हारी विषय-वस्तु—यानी अपनी तारीफ़—से भी पूरी तरह सहमत हूं।

'सोया है संसार' आदि पंक्तियां···। तुम्हें स्नेह चुंबन। अबे वकील, ज़रा देख। तू कहां डूबा है? ताजमहल देख कर या 'रूपतरंग' पढ़ते हुए। श्रीमान् अभी जितना कविता से प्रभावित होना सीखे हो, उतना शिल्प से नहीं। तुम जिस तरह दाद देते हो, मैं चाहूं तो भी तुम्हें उचित —और समुचित —दाद नहीं दे सकता। इतना ही कहूं गा, तुम जैसा कवि मित्र एकांत में दिया जलाये मेरी कविताएं पढ़े (और अपनी रसिकप्रिया से दिए की रक्षा करता हुआ उसकी जोत जगाये रहे) और अपने अनुभव को कविता के सांचे में यों अप्रयास ढाल भी दे, इससे, मुझे सदा प्रेरणा मिले गी और मैं अपने आलस्य को अंधेरे की तरह तुम्हारे दिये से जला कर और नयीं कविताएं लिखू गा, अवश्य लिखूं गा, तुम्हारे लिए लिखूं गा।

अब नुक्स देखो। दूसरी पंक्ति- -'जो जगता' है। दो जकार टकराते हैं। तीसरी पंक्ति --'हुई' और 'है' में फासला है। मैली के साथ 'किंचित' फिट नहीं है। 'पुष्प सदृश' के बाद 'सुबह' शब्द हल्का पड़ता है, विशेष कर जब बाद को 'तमसावृत्त जीवन की जड़ता' जैसा टुकड़ा आ रहा हो लेकिन ये बहुत मामूली नुक्स हैं। दर्पन पर सांस के निशान जैसे।

"मरकत पातों' आदि पंक्तियों में प्रकृति के रगों के साथ तुमने उसका जीवन-स्पन्दन भी सुना है। (By the way, 'आलोचना' नं० १८ में कालिदास पर मेरा लेख छप गया है। कही से ले कर पढ़ना। उसमें इस जीवन स्पंदन की मैंने चर्चा की है।) इस बंद मे केवल क्षीर और भ्राता दो शब्द अनुपयुक्त लगे।

तुम्हारी सॉनेट की पहली पंक्ति लाजबाव है। 'मरकत पातों' वाले बंद की छवि ने यहां विस्तार और गंभीरता पाई है। मनुष्य पशु और वनस्पतियों के जीवन में एक तार कहीं समान रूप से गूजता है, इसमें संदेह नही। लगता है, हम तुम दोनों उसे साथ ही सुन रहे है। तुम्हारे भावो में अब कोमलता आ रही है ? अरे, चट्टानों में जब युग की गगा वही थी, तब भी कोमलता थी। 'और सरसों की न पूछो···'। लेकिन तुम्हारी ललित कला ने रंग-बिरंगी चूनर-चोली पहनना कब से शुरू कर दिया ? सॉनेट के पहले हिस्से में हरियाली और संगीत का राज्य है। दूसरे हिस्से में 'फूलों के रंगो की होली' अचानक आ जाती है और इसीलिए 'चूनर-चोली' वाली ललित कला की कल्पना पहली पंक्ति की उदात्त अभि-व्यंजना से बहुत दूर जा पड़ती है। शब्दों के प्रयोग में 'दिवस दिशाएं', 'वाचाली', 'संगीत ध्वनित', 'रसराजित,' 'विस्तारित' और 'वनमाली', चित्य लगते हैं। लेकिन ये सब तुम्हारी हरियाली मे डूबे हुए हैं, यह फिर कहूं गा। कविता की भाषा हमें निराला जी के शब्दों मे और मांजनी चाहिये, इतनी कि साधारण पाठकों के कंठ में बस जाय और वे उसे गुनगुनाते रहें। लेकिन मैं जानता हूं, यह सब करना कितना कठिन है। तुम्हारी प्रतिभा निखर कर स्वयं तुम्हें सिद्ध कवि बनायेगी। मेरी बातें 'पर उपदेस कुसल बहुतेरे' कोटि की है (मेरी अपनी आलोचक दृष्टि के सामने)।

कीट्स की Odes पढ़ो। Eve of St. Mark, Eve of St Agnes, Lamia, Hyperion और Revised Version of Hyperion (Hyperion A Dream) Fancy, Bands of Passion of Mirth. पढ़ो। हर पत्र में एक कविता की चर्चा करना। मैं फिर अपनी Comments भेजूं गा।

शोभा का आपरेशन हो गया था। अब वह बिल्कुल चंगी है। फोटो मिल गये है। इस समय शाम के पांच बजे है। अंधेरा छा गया है। आसमान में बादल दौड़ रहे हैं। चौके में बर्तनों की खनखन हो रही है। एक मित्र घूमने के लिए बुला कर पत्र लिखने का तार तोड़ रहे है, कुर्सी पर जमे बैठे हुए 'आलोचना' और

'युग चेतना' *के पन्ने पलट रहे हैं ? मेज पर टेबल लैंप जल रहा है,* तुम्हारे दिये जैसा रोमांटिक तो नहीं लेकिन पत्र लिखने के लिए काफी प्रकाश देता हुआ। बस, प्यार। शेष फिर मिलने पर।

तु० रामविलास

बांदा
१-२-५७

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिला। कल ही प्रयाग से भाई की शादी से वापिस आया हूं। नरोत्तम की बिटिया की शादी में चलने का प्रयास कर रहा हूं पर जज सा० मुकदमा मुल्तवी नहीं कर रहे क्योंकि इधर १० दिन तक पहले ही उनसे अपने केस मुल्तवी करा चुका था। उम्मेद कम ही है।

कीट्स के Hyperion का प्रथम Stanza खूब जमता है। उसके आगे नहीं बढ़ पाता। उसका अनुवाद कर चुका हूं। अब आज रात फिर पढ़ूंगा तब Ode to a Nigtingale [nightingale] पर अपने भाव व्यक्त करूंगा।

तुम्हारी इतनी स्पष्ट पहुंच है यह समय और प्रकृति पर कि मज़ा आ गया। बात सवा सोलह आने की है। यही Dialectics की Unity of apposites है।

'आज' तो यहां पढ़ने को नसीब ही नहीं होता। मैं तो स्वयं तुम्हें नयी कविताएं लिखने को कहता रहता हूं। पर तुम हो कि टस से मस नहीं होते। लेकिन मैं तुम्हें क्षमा करता रहता हूं क्योंकि अन्य जरूरी काम भी तो तुम करते ही हो।

मैं इस बार अब प्रयाग न आ सकूंगा। तुम मार्च में Talk दे रहे हो तभी लखनऊ से बांदा होते हुए प्रयाग चले जाना। फिर मुलाकात हो जायेगी। अभी नाहक प्रयाग जा रहे हो नरोत्तम की बिटिया के ब्याह में जाना भी तो जरूरी है। लखनऊ से गाड़ी बांदा को सीधी चली आती है।

यह पोस्टकार्ड फिलहाल इसलिए लिख रहा हूं कि तुम परेशान होओगे पत्र न मिलने के कारण। कल या परसों फिर लम्बा-सा पत्र लिखूगा। और मजे में हूं।

बच्चों को प्यार।

तु० केदार

Agra
6-2-(57)

प्रिय केदार,

कार्ड मिला।

आज कल पत्नी अस्वस्थ है। इसलिए दिल्ली जाने का विचार छोड दिया है। तुम्हारे लम्बे पत्र की प्रतीक्षा मे···

रामविलास

बांदा
८-२-५७
रात्रि ९ बजे
प्यारे दोस्त,

लम्बा खत देर से लिखने के लिए माफी चाहता हू, हालांकि मैने कोई गुनाह नही किया। बहरहाल तबियत करती है कि क्षमा मागो इसीलिए माग रहा हू।

मैने Keats की कुछ पक्तियो का अनुवाद किया है। वे "I stood Tip-toe upon a little Hill" की 127 लगायत 130 पक्तिया है। लो देखो

कविता की गभीर पक्ति के शान्त विभव के सुस्पदन मे
हम निहारते है लहराते देवदार का पेड मेरु पर
और कथानक जब रूपायित हो जाता है सुन्दरता से
हम अनुभव करते है रक्षित हुए किसी हाथो निकुज का
लेकिन जब वह अपने चित्रित पख पसारे आगे चलता
उसके मनमोहक आलेखन मे आत्मा अपनी खोती है।

अब Hyperion का प्रथम स्टैन्जा मेरे अनुवाद मे इस प्रकार उतरा है। यह भी पढो।

गिरि-गह्वर के गहन-छाह-छाये विषाद मे
पूरा डूबा, दूर प्रात की स्वस्थ श्वास से,
दूर प्रखर मध्याह्न-ताप—सध्या-तारा से,
शिलाखड सा जड बैठा था श्वेत-केश शनि
निज निवास के अनालाप-सा वाणी-वचित,
वन-पर-वन सिर के समीप थे घन-पर-घन-से।
जीवन भी ऐसा अक्षय था जैसा अक्षय
ग्रीष्म-दिवस मे हो कि हटाये नही बीज लघु
पखिल शाद्वल के शरीर को धीमे छू कर

उपरत पात पड़ा था भू पर जहां गिरा था।
निर्झर भी निःस्वन बहता था वहीं निकट से
अधिकाधिक जड़-जठर रूप धर तम-सा फैला,
निज देवत्व-पतन, पीड़न के कटु कारण से।
जल की परी घिरी नरकुल के बीच अकेली
ओठों पर तर्जनी हिमानी धरे खड़ी थी।

कहो, डियर! कैसा रहा यह अंग्रेजी कविता का हिन्दी रूप? पसन्द आया अथवा नही। हो सकता है कि अन्याय हुआ है कीट्स के साथ। फिर भी उसकी आत्मा का स्वर हिंदी के छंदों में बोलने तो लगा ही है। अपनी निष्पक्ष राय जरूर देना, बिना रू-रियायत के। अगर पसन्द आये तो पीठ भी ठोंक देना।

अब एक (शेली की) कविता का अनुवाद भी देखो—

कर्ण प्रिय कोमल स्वरों के पतन पर भी
गीत का संगीत स्मृति में गूजता है।
नैन-प्रिय मनहर सुमन के निधन पर भी
सरस सौरभ सांस में नित घूमता है।।
रम्य-रूप गुलाव के अवसान पर भी
रूप शय्या पर पंखुरियां राजती है।
प्रेमिका के त्याग पर—प्रस्थान पर भी
प्रेम को सुधियां प्रिया की पालती हैं।।

अब लो मेरी कविताओं की बानगी।

१. हम लघु दीपो के समान ही जले ज्योति ले
और ज्योति से ज्योति मिला कर रहे जागते
क्षण-क्षण के संशय-सम्भ्रम जो मिले सामने
पराभूत हो कर वे हम मे रहे भागते
अमा-निशा के अंधकार के अंतराल में
हम सस्मित स्वप्नों की सुषमा रहे पालते
•बुझने के पहले प्रयाण करने से पहले
शुभागमन हम सूर्योदय का रहे माजते

२०-१२-५६

२. हम उन लहरो के समान है जो आती है
गोल बांध कर नाच-नाच कर जो गाती है
गीतो की धन्वा-ध्वनियों सी लहराती है
सावन के झूलो की पेगे हो जाती है

मूंगे मोती की सौगातें जो लाती हैं
तट को दे कर तट पर ही जो सो जाती हैं
तट को तन की निर्मलता से धो जाती हैं
कोई जीत नहीं पाता है खो जाती है

२०-१२-५६

३. हिम से हत, संकुचित प्रकृति अब फूली।
रूप-राग-रस-गंध-भार भर झूली।।
रंगों से अभिभूत हुई चट्टानें।
जड़ता में जागीं जीवन की तानें।।
नभ में भी आलोक-नील गहराया।
सागर ने संगीत तरगित गाया।।
आठ रूप शिव के, समाधि को त्यागे।
मृन्मय अवनी के अंगों में जागे।।
वासंतिक वैभव यौवन पर आया।
काव्य-कला का कृती वेश मनभाया।।

१५-१-५७

हमीरपुर गया था। बेतवा के खड़े कगार पर ऊपर फूली सरसो देख कर आठ पंक्तियां लिख सका हूं। वे ये है।

४. सतत होते प्रखर कोर के संस्पर्शों से
काट रही है दृढ़ कगार को जल की धारा।।
सांसें लेता हुआ समीरण प्रश्वासों से
तोड़ रहा है कण-कण का संसर्ग-सहारा।
फूले खेतों से फिर भी फूली है छाती
सरसो को उसने —सरसों ने उसे संवारा।
देख रहा हूं उसे देख कर मैं अपने को
भूल रहा हूं अन्तकाल का मैं अंधियारा।

१८-१-५७

इससे पहले रात को ट्रेन में घने अंधेरे मे यह सरसों मुझे दिखी थी। उसी का वर्णन सुनो।

५. अंधकार-आकार अकायिक का आच्छादन,
सूक्ष्म, तरल, पार्थिव तत्वों पर आरोपित है।
ज्ञान-गम्य, आलोक-विलोकित छवि की सत्ता,
केवल सांसों में सुधियों में परिपोषित है।।
हरे पात की परी प्रतनु तन पीली सरसो

ओझल हो कर भी गोचर है ऐसे तम में।
आवेगों में संवेदों में वह जीवित है,
अक्षय है उसकी सुन्दरता कालक्रम में।।

१४-१-५७

यह तब लिखी थी जब कानपुर जा रहा था 'आलोचना' का वह अंक खरीदने जिसमें तुम्हारा बढ़िया लेख कालिदास पर छपा था।

कहो, अब तो खुश हो मेरी मेहनत से। अगर दोष हों तो उन्हें लिखो। मैं फिर सुधारूं। वरना डियर। मुझ बेवकूफ व्यक्ति के इस किये पर थोड़ी वाह वाह जरूर दे दो। वह भी किसी मजमें में नहीं, केवल अपने पत्र में चुपके से। वही काफी होगी प्रेरणा के रूप में।

तुम्हारा लेख इतना जम कर और उभर कर आया है कि पढ़ कर अक्किल ठिकाने हो गयी, मेरी नहीं—तमाम पोंगों की। मैं तो तुम्हारा दोस्त हूं न। मुझ में तो वह पहले ही से थी। तुम्हारी खूबी यही है कि जो लिखते हो, वह आंखों से लिखते हो, दिल से लिखते हो, दिमाग से लिखते हो और उसे सबेरे के लाल सूरज की तरह तपा कर—अंगार बना कर घने-मे-घने वनों के ऊपर फेंक देते हो। अधकचरे लोग ही तो वे वन है।

'क्षीरोद वेले व सफेन युञ्जा'—बार-बार गूजती है। साथ ही मे निराला की यह पंक्ति भी : —

'अशिव उपलाकार मंगल द्रवित जल नीहार'

काश एक ऐसी पक्ति मैं भी लिख पाता ? पर भाई, ऐसे पारखी भी तो कम ही है जैसे तुम हो। सब लोग तो "रपट-पड़े की हर गगा" में रहते है। कौन टोता है कला की उभरी हुई नसों को। वे तो सिर के कुंचित कुंतल देख कर ही झूम जाते हैं। सच मानो डियर ! कविता को गले वही लगा पाते हैं जो साधक हैं। शेष लोग तो उसकी फूहड़ आकृति के जनाजे लिये डोलते रहते हैं और समझते हैं कि प्यार कर रहे—प्यार पा रहे हैं।

तुम्हारी मलकिन की बीमारी की बात पढ़ कर गम हुआ लेकिन मुझे विश्वास कि वह उस बीमारी को एक लात मार कर रफू-चक्कर कर देंगी। उनकी-सी मेहनत की स्त्री बीमारी से भी पानी भरवा लेगी। पर भाई, उनसे मेरी यह राय है न जाहिर करना, वरना न अच्छी लगी तो खतरा मुझे भी है। मैं उनके शीघ्र अच्छे होने की बात जानने का अभिलाषी हूं।

मेरी बीवी [वीवी]—साहबा अभी प्रयाग ही हैं। न जाने कब आयेंगी। कमी महसूस हो रही है। सच पूछो तो उन्हीं को प्यार करने का मन हो रहा है। न कविता छूटेगी, न वह छूटेंगी। पर इस स्पष्ट कथन को बुरा न मान कर यह समझ लेना कि मुझे भी बसन्त आ गया है। शायद इन्हीं तरह के क्षणों में मैंने उन पर

पिछली कविताए लिखी थी।

तुम जानते हो कि मैं किसी अन्य से इस तरह खुल कर बात नही करता। तुम्ही हो जिससे दिल अपना राज़ कह देता है।

कविताए जरूर लिखो। कलम चलाओ और भेजो। वह अच्छी हो या बुरी। इसकी फिकर न करो। तुम खराब लिखोगे ही नही। अच्छा है कि तुम्हे चारो तरफ से लोग-बाग कह-सुन रहे है। तुम हो कि बर्फ की तरह जम जाते हो और हिमालय की चोटी पर ही पडे रहते हो। मिया, नीचे भी उतरो। जरा हमारे पोखर का गदला पानी भी बन लो और गाव की स्त्रियो के आचलो मे भी लहरा लो। न हो तो उसमे तैरती हुई बत्तखो के पख ही सहला लो। बडा मजा आयेगा। अगर चुप ही बैठे रहोगे तो गूगे हो जाओगे। देवी सरस्वती बुलाने से नही, जबर-दस्ती घसीट कर लाने से आती है। तुम उनके लिये पूजा मे बैठे-बैठे थक जाओगे और वे न आयेगी। पूजा छोड कर पकड लाओ। बस।

तु० केदार

R B SHARMA
M A, Ph D (Luk.)
Head of the Department of English
B. R College, Agra

२७-२-195७

प्रिय केदार,

देखता हू कि, तुम्हारे पहले पत्र पर ८/२ की तारीख पडी है। अत्र २२/२ का कार्ड भी आ गया। उधर मैने जल्दी-जल्दी पत्र डाले थे, इधर तुमने बाजी मार ली।

इस महीने कोर्स खतम कराने मे लगा था—कुछ अपना, कुछ दूसरो का। आज शिवरात्रि की छुट्टी है, फिर भी सबेरे ढाई घटे पढ़ा आया। अब कार्य समाप्त है। और जुलाई तक छुट्टी समझो। तुम्हे फुर्सत से लिखना चाहता था, इसीलिये बिलब हुआ। तुमसे नाराज भी हो कर रूठना या पत्र न लिखना मेरे स्वभाव के विपरीत होगा। नाराज तो नही था लेकिन याद दिलाने से हो गया हू। तुम जितने उम्दा आदमी हो, उतने उम्दा कवि अभी नही हो। इसका कारण शायद धैर्य की कमी है जो मेरी समझ मे नही आता क्योकि तुम्हारा जीवन धैर्यहीन का जीवन नही है। शायद तुम्हे कविता में डूबने और चन्द्रगहना[1] जाने का समय कम मिलता

1. चन्द्रगहना बांदा की तहसील कर्वी का एक गांव। यहां केदारजी कुछ दिन रहे और 'चन्द्र-गहना से लौटती बेर' कविता लिखी। [प्र० त्रि०]

है। जो हो। मैं यह कहने से बाज न आऊंगा कि अभी तुम्हें अपना शिल्प संवारना है।

तुम्हारे दो गीत गोपेश ने मांगे है। जरूर भेजो। अपनों को आजकल कविता से सरोकार कम है। कविता पढ़ने और उसकी नुक्ताचीना का भार ग़ैरों ने उठाया है।

इधर विकासवाद पर और पुस्तकें पढ़ीं। लगता है, हर वैज्ञानिक कवि हृदय होता है। डारबिन ने पांच साल तक बीगल जहाज़ पर विश्वभ्रमण किया था और परा-पौधों के संबध में सामग्री एकत्र की थी। उसकी वर्णन करने की क्षमता अद्‌भुत है। ब्राजील के वनों और वहां स्पेन से आये निवासियों के जीवन के वर्णन में उसने कवि और कथाकार की कला का परिचय दिया है।

चार्ल्स लैब के पत्र पढ़ते हुए उसकी वीरता पर बड़ी श्रद्धा हुई। उसकी बहन अर्द्ध विक्षिप्त और अर्ध मृत सी थी लेकिन उसके निबंधों में इस ट्रैजेडी की छाया भी नहीं पड़ने पाई। भाषा पर उसका अधिकार शेक्सपियर जैसा है। हकलाता भी था, शराब भी बहुत पीता था, क्या करे, जन्म भर क्वाँरा भी तो रहा था!

Tiptoe का अनुवाद सुन्दर है, केवल सुस्पंदन का 'सु' भर्ती का लगता है। Hyperion का अनुवाद बहुत ही सुन्दर हुआ है। तुमने Keats का घनत्व उतार लिया है जो अत्यंत कठिन है। गहन छांह, स्वस्थ श्वास। (यहां घनश्याम अस्थाना आ गये, तुम्हारी कविताएं उन्हें भी सुनाई; Keats का अनुवाद बहुत पसन्द किया।) अनालाप-सा वाणी वंचित और अंतिम दो पंक्तियों में भाषा की नयी परख दिखाई देती है।

शेली के अनुवाद में काफी मार्दव है। पहले बन्द में 'कर्णप्रिय' कर्णकटु लगा। बाकी पंक्तिया सुघर है। अन्तिम पंक्ति में शब्दों का संबंध उलट-पलट गया है। प्रिय की सुधियां प्रेम (को) पालती है (प्रेम को पालने का मुहावरा जमा नही) के बदले—प्रेम को सुधियां प्रिया की पालती हैं। इस पंक्ति को छोड़ कर शेष में शेली के भाव ही नहीं, उसका संगीत भी खींच लिया है तुमने।

तुम्हारी पहली कविता का भाव सौदर्य उत्कृष्ट है। लघु दीपों के समान जीवन की सार्थकता सूर्योदय को लाने में दिखला कर तुमने मानव जीवन में अपनी सहज आस्था प्रकट की है। लेकिन तुम्हारी पहली कुछ कविताओं की तरह यहां भी अधूरी कविताएं हैं— ले (ले कर), उल्टी क्रियाएं—रहे जागते (जागते रहे थे); रहे भागते; सुषमा रहे पालते (सुषमा पालने का टुकड़ा फिर नहीं जँचा), रहे साजते। भाषा की इस कमजोरी से तुम्हारे भावों के [की] सरसों गोहवा बन कर रह [गई] गये हैं [है]।

दूसरी कविता की पहली दो पंक्तियां कितनी साफ उतरी हैं। बाद की दो पंक्तियां भी सुन्दर हैं, केवल धन्वाध्वनियों में कुछ अनावश्यक घनत्व है। अंतिम

दोनों पंक्तियां कुछ और सबल होतीं तो कविता और चमक जाती। अभी उठान जितना अच्छा है उतना अवसान नहीं। तीसरी कविता बहुत बढ़िया है। कालिदास में जीवन के जिस स्पन्दन की बात लिखी थी, वही यहां है। 'आठ रूप शिव के' लिख कर तुमने कालिदास की याद भी दिला दी है। वासंतिक की जगह वासन्ती शायद ज़्यादा अच्छा होता। अन्तिम पंक्ति कमज़ोर, कुछ अस्पष्ट और वासंती वैभव से असंबद्ध लगी। इतनी सुन्दर कविता एक पंक्ति की कमज़ोरी से मास्टर पीस होते होते रही जा रही है। इसके विपरीत चौथी कविता की अंतिम पंक्ति बहुत ज़ोरदार है। 'संस्पर्श' में कोमलता है, प्रखरता नहीं, इसलिये अप्रयुक्त है। छठी पंक्ति में सरसों की आवृत्ति से घनत्व की कमी हो गई है। तुम्हारी पांचवीं कविता में 'अकायिक' और 'कालक्रम' (जिसे 'कालक् क्रम' के रूप में पढ़ना है) को छोड़ कर बाकी सब कुछ सुन्दर है। इसमें और कविताओं की तरलता तो नहीं है; उसके बदले अन्धकार की गहराई और उसी के अनुकूल शब्द चयन भी है। 'अशिव उपलाकार मंग :' की गूंज इस कविता में है। और मुझे वह गूंज विशेष प्रिय है।

आजकल भाषा विज्ञान के उधेड़बुन में हूं। कविताएं भी खूब आ रही हैं। अमूर्त भावों के संकेत टाँक लेता हूं। फुर्सत से शब्दों में उतारूं गा। सरस्वती को बुलाने के बारे में तुम्हारी सलाह दुरुस्त है। लेकिन मुझे विश्वास है, तार मिलने पर वह स्वयं सितार पर उतर आयें गी। मामला पक रहा है, थोड़ा धैर्य और धारण करो।

अपनी सरसों का जोड़ीदार Walt Whitman का Dandelion देखो,

S.mple & fresh & fair from winter's close emerging.
As if no artifice of fashion, business, politics had ever been,
Forth frum its sunny nook of shelter'd grass-innocent golden
calm as the dawn,
The spring's first dandelion shows its face.

यह कविता सत्तर साल के Whitman ने लिखी थी—अपनी आयु के समान पूर्ण। भाव और शब्द किस सहज डोर से बँधे हैं। और प्रकृति का वही स्पन्दन जो कालिदास ने सुना था, यहां भी है।

अब तो तुम्हारी धर्मपत्नी आ गई हों गी ? तुम पर बसन्त कब नहीं रहता, यह कहना कठिन है। पत्नी को प्यार करते हो, इसीलिए तुम्हारी कविताओं में चांद कम रहता है, सरसों ज्यादा।

अब झुटपुटा होने आया, खेतों में घूमने जा रहा हूं। ललित से कह दिया है। कुछ दिन में अर्ज़ी भेज दें गे।

तु० रामविलास

बांदा
८-३-५७
४ : २५ P. M.

प्रिय डाक्टर !

सबसे प्रथम तुम इस बात की बधाई लो कि तुमने अपने दोस्त के लिए Walt Whitman की एक अति उत्तम कविता Dandelion भेजी। वह तो इतनी प्यारी लगी कि हृदय पर छा गई। याद हो गयी। उसका अनुवाद करूंगा तब भेजूगा। किया तो है पर वह सहज स्वभाव नही आ पाया। फिर प्रयत्नशील हूं। काश मैं भी इतना प्यारा स्वर कविता को दे पाता। यकीन करो कि यह भी उन्हीं कविताओं में एक है जो मेरे लिए आदर्श है। पर कठिन ही नही, कठिनतर है इस तरह लिखना। हर पत्र में ऐसी ही कविता भेज कर मुझे मरने से बचाये रहा करो।

तुम सही कहते हो कि मैं अपनी पत्नी को प्यार करता हूं तभी मुझमें चाद कम रहता है, सरसों अधिक। लेकिन याद रहे कि मैंने Shelly की चांद वाली कविता का पहले ही अनुवाद किया था। उसे देखो, वह यह है :—

क्या तुम नभ पर चलते-चलते
मंगी-साथी बिना विचरते,
अवनी अपलक नित्य निरखते,
घटते, बढते और वदलते
प्यार न पा कर पियराये हो,
शून्य नैन-से पथराये हो ?

१२-८-५६

शायद यहां भी क्रियाएं अधूरी होंगी ? है न ? मैं नही जान पाता।
डब्लू०एस० लैंडर की एक कविता पढ़ी थी। उसका अनुवाद लो, यह है —

विदाई

लड़ा नहीं मैं, अपनी मैंने जोट न पायी
पुण्य प्रकृति ही, ललित कला ही मुझ को भायी
जीवन-अग्नि जलाई—मैंने देह तपायी
बंद हुई वह अग्नि, बुझी, दो मुझे बिदाई।

१२-८-५६

एक चीनी कविता का यह अनुवाद देखो —

कटैयों का गीत

हमारे नगरों के चहुं ओर
सिपाही लड़ते हैं झकझोर
उमड़ता रहता है रणरोर
तड़पती जनता है सब ओर
हमें दुख भारी है !

हृदय में आता एक विचार
गलाएं युद्धों के औजार
बनायें खेती के औजार
काम मे लाएं कृषक-कमार
इसी की बारी है !

करोड़ों लोगों में हो चाह
हिलोरें लेता हो उत्साह
कुमारी धरती का हो ब्याह
बैल हल खीचे भरे उछाह
जुताई जारी हो !

खेत में उपजे अन्न अपार
कटाई का आये त्यौहार
मगन मन नाचे सुख-संसार
गीत का उमंड़े [उमड़े] पारावार
सुहागिन नारी हो !

अब आओ मेरी कमज़ोरियों पर। मैं व्याकरण का कच्चा हूं, यह शतप्रतिशत सही है। मगर रहे जागते आदि क्रियाएं अधूरी[उलटी]है यह मैं अब भी नही समझ पाता। तुम कहते हो इसलिए ठीक ही कहते होगे, माने लेता हूं। परन्तु प्रयत्नशील होकर भी शायद यह भाषा की कमजोरी मुझ से दूर न हो सकेगी। चन्द्रगहना तो स्वप्न हो गया। न वह फुरसत है, न वह अवसर। फिर भी उसकी याद से ही झूम उठता हूं। इधर खेतों पर घूमने गया हूं। अपने फेफड़ों में नयी ताजी हवा भरने तथा वहां Dandelion को जोर से पढ़ने। गीत गोपेश को भेज दिये हैं।

'सुस्पदंन' का 'सु' भरती का है ही। यह उसी तरह है जैसे किसी ३० विद्यार्थी-गण के [की] कक्षा में आजकल ६० विद्यार्थी आ जायें। तुम्हें Hyperion का अनुवाद पसन्द आया, यह तो मेरे जीवन की बड़ी भारी सफलता की खुशी है।

शैली की कविता के अनुवाद में 'कर्णप्रिय' हटाये नही हटता। वह तो कोई राम ही हटायेगा, जिसे सीता पाना है। मैं मजबूर हूं। शायद तुम्हारे पत्र मे उल्ट [उलट] गयी। यहा कापी मे यही है कि "प्रेम को सुधिया प्रिया की पालती हैं।" पालती है कोई अच्छा शब्द नही है। जैसे कोई कुत्ता पाल लिया हो। फिर भी इतना बुरा नही है यह अश। 'धन्वा-ध्वनियों' से मैने चित्र खीचा था तथा लहरो के स्वर के घनत्व का भी।

जो कविता मास्टरपीस होते होते रह गयी वह फिर सुधारूगा। "कालक्रम" जैसे पंडित लोग पढते है वैसे ही यहा उच्चरित होता है। मैं क्या जानू कि वह भी वे लोग गलत करते है। "अकायिक" का मोह मुझसे हटाये नही हटता। इसलिए अभी न निकाल सकूगा। जब उसकी भावानुभूति हृदय से हट जायेगी तभी उसे हटा पाऊगा।

भाषा विज्ञान लिखो चाहे जो लिखो, तुम लिखोगे कमाल का। अब फुरसत ही फुरसत है तुम्हें। डटकर काम करोगे। अरे भाई एकाध कविता तो काख मारो।

वैज्ञानिक कवि हृदय होते ही है वरना सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रकृति के, स्पंदनो को ग्रहण ही कैसे कर सकते और उनसे नियमो की खोज करते। डारबिन ही क्या सभी वैज्ञानिक ऐसे ही होते है। परन्तु सौभाग्य तुम्हारा है कि तुम उन लोगो के ग्रन्थ पढ़ लेते हो। हम है कि यहां भूसा खाते रहते है। काश, मै भी आगरा होता तो तुम्हारे साथ उन स्थलो के सुन्दर वर्णनो को सुनता।

लैम्ब की भाषा का क्या कहना है। भला उसकी समता मैं करूगा। कभी नहीं। यह कोई defeatist mentality से नही कह रहा वरन् अपने सस्कारो को देख कर ही कह रहा हू। हम तो मूर्ख के मूर्ख है। कविता हिला देती है, लिख देते है। पंडित होते तो भाषा को कस देते, जाल फेक कर मगरमच्छ भी मार लेते। खैर, जाने भी दो। तुम्हारी सलाह मान कर कविताएं माजूगा।

अब बीवी कैसी है ? बच्चो को प्यार।

तु० केदार

R.B. Sharma
M A., Ph. D. (Luck)
Head of The Department of English
B R College, Agra   १३-३-195७

प्रिय Dandelion

Whitman की वह कविता उसके संग्रह में मुझे सबसे अच्छी लगी। उसकी अधिकांश कविताएं अच्छी कम और सिलपट ज़्यादा होती है। तुम्हारी धूप धरा

पर उतरी, कोयले, छोटे हाथों और चन्दगहना [चन्द्रगहना] वाली कविताएं मेरी निगाह में Dandelion स्तर की हैं।

तुम्हारा चीनी कविता का अनुवाद बहुत साफ उतरा है। 'चहुँ ओर' चल जाता है। हर बंद की अंतिम पंक्ति बराबर निखरती गई है और अन्त में 'सुहागिन नारी हो' ने सादगी के साथ कविता को तारसप्तक पर पहुँचा दिया है।

शेली के अनुवाद में 'पियराये' ठेठ है; लेकिन 'शून्य' के सत्सम से पटरी नहीं बैठती। लैण्डर वाली कविता का शब्द चयन निर्दोष है। उम्दा अनुवाद है।

'रहे जागते' में inversion है यानी 'जागते रहे' की जगह 'रहे जागते' तुकबंदी की सुविधा के लिए किया गया है। इससे कविता की सहज सुन्दरता में बट्टा लगता है। प्रयत्नशील होने पर व्याकरण की कमजोरियां दूर न होंगी, लचर बात है। देखो Lander और चीनी कविता के अनुवाद कितने सटीक उतरे है। क्रिया के बारे में इतना ही सोच लिया करो कि गद्य में लिखते तो क्रिया का रूप क्या यही होता। मैं गद्य से पूरी वाक्य रचना मिलाने को नही कहता, केवल क्रिया के रूप के मिलने की सलाह दे रहा है [हूं]। थोड़ा सा ध्यान देने से तुम्हारा कवि दस फुट और ऊंचा उठ जाय गा। तुम जब inspired हो कर लिखते हो तो अच्छों-अच्छों से अच्छा लिखते हो। Lamb की क्या हस्ती है? हां, कवियों को थोड़ा विज्ञान अवश्य पढना चाहिए। इससे उनका दृष्टिकोण निखरे गा और विशद भी हो गा।

Whitman के संग्रह में John Burroughs की एक उक्ति थोरो के बारे में है: 'He improves with age—in fact requires age to take off a little of his asperity, and fully ripen him." इस वाक्य का पहला टुकड़ा छोड़ कर शेष संभवत: मुझ पर भी लागू होता है। इसलिए कविता कांख कर नहीं निर्झर की तरह शिलाएं तोड़ कर निकले गी। धैर्य धरो। Whitman की कुछ पंक्तियां और पढ़ो—A Prairie Sunset कई बार पढ़ना।

Shot gold, maroon, violet, dazzling silver, emerald, fawn,
The earth's whole amplitude & Nature's multiform power
consign'd for once to colors;
The light, the general air possess'd by them—colours till
now unknown.
No limit, confine—not the westen skyalone—the high
meridian—North, South, all,
Pure luminous colour fighting the silent shadows to the last.

तु० रामविलास

बांदा
२४-३-५७
रात्रि १० बजे

प्रिय डाक्टर,

तुमने जो दो कविताएं Walt Whitman की भेजीं थीं उनके मेरे अनुवाद भी पढ़ लो। वे ये हैं--

१. "शीत के पलायन पर
ऐसा वह स्वच्छ, सरल सुघर हुआ
जैसे वह फैशन, व्यवसाय, राजनीति के उपाय से नहीं छुआ,
अपने ही ताप-तपे शस्य-श्याम कोने से
निर्विकार, निष्कलंक, हेमवर्ण ऊषा-सा
इस वसन्त का प्रथम प्रसून खिला डैन्डेलियन।"

२. "स्वर्ण, लोहित, बैंजनी, हीरक, हरा, मृगदेहिया
ये रंग है, इनसे विपुल विस्तार भू का रँग गया है
और बहु आकार धारी तेज धारी यह प्रकृति भी रँग गयी है;
यह उजाला, यह पवन भी अब इन्हीं से रंग गया है,
वे अनेकों [अनेक] रंग अब तक जो अजाने ही रहे है
अब प्रकट हो कर असीमित हो गये हैं,
नहीं केवल पश्चिमी आकाश में ही
अपितु उत्तर और दक्खिन, सब कहीं,
वह मध्य नभ में छा गये है;
मूक छायाएं जहां भी जो बची हैं
शुद्ध भास्वर रंग उनसे अब वहां पर
प्राणपण से लड रहे है।"

पता नहीं मैं कहां तक इन अनुवादों में मूल का भाव और स्वर भर सका हूं। तुम लिखो कि मेरा यह प्रयास कहा तक मूल कविताओं को हिन्दी में अवतरित कर सका है। इसमे शक नही कि मूल रचनाएं बड़ी बढ़िया रचनाएं हैं। पर बधाई तुम्हें भी देता हूं कि तुमने इन्हें परखा और मुझे भेजा ताकि मैं तुम्हारे साथ इनका आनंद उठा सकूं। मैं इन्हें बार-बार पढ़ता हूं और इन पर मुग्ध हूं।

लो अब मेरी एक छोटी-सी कविता भी पढ़ लो। यह पढ़ कर हंसना नहीं क्योंकि हंसना मना है। परन्तु अपनी आलोचना दृष्टि से देख कर विवेचन करते हुए मुझे अपनी राय जरूर भेजना।

बछड़ा

पशु है तो क्या हुआ !
मेरा ही बेटा है
आंखों में काजल लगाये हुए बछड़ा
धूप मे खड़ा,
मुझ से भी होगा तगड़ा,
देखना बड़ा !
जायेगा खेतों को हल लिये अकड़ा,
मेरा ही बेटा है बछड़ा !!

७-३-५७

लो अब दूसरी चार पंक्तियां देखो —

वन-वन से वायु ले विभिन्न गंध आती है
तन-मन में श्वास में, सनेह में समाती है
वन-वन के फूलों से मह-मह महकाती है।
और मुझे गंधों से बाध-बांध जाती है

निराला जी पर कुछ पंक्तियां लिखी है। देखो वे ये है—

मान व अपमान के हलाहल को पान किया।
नीचे रह, ऊंची कर कविता को प्रान दिया ॥
जीवन में गंध-गान-छंद प्रवहमान किया।
तुमने स्वर लहरदार जन-मन मे तान दिया ॥
पत्थर को तोड़ रही नारी के साथ जिये।
महगू के साथ रहे, मंहगू का हाथ लिये ॥
खेतों को हंसियों से काटते किसान हुए।
मोरों के पंख खोल नाचते विहान हुए ॥

२७-२-५७

अब चौथी कविता भी पढ़ लो। यह भी शायद कुछ-कुछ पसंद आये।

में नहीं लचा

कंटक जो आये हैं पांव के तले।
मैंने वे बार-बार बिल्कुल कुचले ॥
कोई भी एक नहीं घात से बचा।
संकट सब सबल लचे, मैं नहीं लचा ॥

सामने पहाड़ मिले रोकते खड़े।

हो गये—निहार उन्हें—रोंगटे खड़ ॥
मैंने भी मल्ल युद्ध मेरु से लड़े।
जीता मैं, हार गये वे बड़े-बड़े ॥
मेघ ने, निदाघ ने मुझे नहीं तजा।
कान के समीप मृत्य-ढोल भी बजा॥
किन्तु मैं निदाघ, मेघ, मृत्यु से कढ़ा।
नाचता हुआ प्रसून-पंथ में बढ़ा॥

२६-२-५७

'मोची' भी कविता में आ जमा है। लो उसे भी देख लो।

घिसे, चले, मर चुके तलों को मैं निकालता
जीने वाले जानदार मैं तले डालता
सीकर, पालिश से चमका कर मैं उबारता
जूतों से बाबू लोगों की धज संवारता
मैं पथ की पटरी पर बैठा कला बेचता
जूतों के चलने में सब का भला देखता
मैं तो उस ऊंची आत्मा को नही जानता
मानव जिसकी ऊंचाई के गुन बखानता।

२२-२-५७

अब कस कर अपनी टिप्पणी दो इन पर। मैं ध्यान से सुनूगा और सीखूगा। मुझे विश्वास है कि इनमे व्याकरण के अनुसार ही क्रियायें पूरी-पूरी व्यक्त हुई होंगी।

हां, उस दिन। १८/३ को तुम्हारे संस्मरण[1] सुने लखनऊ रेडियो से। करीब-करीब वही थे जो तुमने अपनी पुस्तक मे दे रखे है। मैंने दिन को वह पुस्तक दुबारा पढ़ ली थी। उद्धरण कविताओं के और देते तो अच्छा होता। आखिर कितने दिन लखनऊ में रहे? कैसा है वहां का रंग-ढंग? किसी से मिले भी कि यो ही सटक आये?

ललित का आवेदन पत्र आ गया है। वह मेरे पास सुभीते से रक्खा है। कालेज के मंत्री फिर एक दिन आये थे। पूछ गये है। मैंने उन्हें बता दिया है कि वह आ गया है। वह उसे मई में लेंगे। वादा तो यही किया है कि वह अवश्य कर देंगे। हम सबके बहुत शुभेच्छु है। मुझे भी सौ फीसदी विश्वास है कि ललित काम से लग जायेंगे।

अब बीमारी का क्या हाल है? अस्पताल जाना छूटा अथवा नहीं? कुछ तो

---

1. निराला जी के सस्मरण।

समाचार दो इस सम्बंध मे। मेरी बीबी [बीवी] पूछ रही है।

लडकिया तो अब ठीक हैं। उनको प्यार।

बच्चो के इम्तहान हो रहे होगे।

मुन्ना की परीक्षा प्रारम्भ हो गयी है। देखो क्या होता है।

३/४ को प्रयाग से Radio पर, गोष्ठी मे भाग लेने जा रहा हू। यह प्रथम अवसर है अपने राम को कवि सम्मेलन मे भाग लेने का। इमे कृपा कहूँ अथवा दुर्भाग्य। तुम शायद ही सुन सको क्योंकि प्रोग्राम ६ ४५ P M से शुरू होता है। हा, वहा बनारसी गहरेबाज कवियो से भेट होगी —यही आकर्षण है।

कब आ रहे हो इधर ? छुट्टी तो हे ही। कोई पुस्तक लिख रहे होगे ? फिर कोई कविता भेजो। जरूर।

सस्नेह तु०
केदार

मदीया कटरा, आगरा
२३-४-५६

प्रिय केदार,

तुम्हारे पत्र का यह उत्तर नही ह। आज कल परीक्षा कार्य म व्यस्त हू। ४-६ दिन मे फुर्सत पाने पर तुम्हे विस्तार मे लिखू गा। तब तक इसी स सन्तोष करो कि मै तुम्हे भूला नही हूँ। मुशी मथुराप्रसाद के वाचनालय पुस्तकालय[1] की ओर मे नये वर्ष की बधाई और शुभकामनाए प्राप्त हुई ह। मिले तो मेरी ओर से हार्दिक धन्यवाद दे देना।

तु०
रामविलास

बादा
२४-४-५७
रात्रि ८ बजे, गरम कमरे के अदर बैठकर
रेडियो की सगीत-लहरी मे नहाया हुआ
पसीने के [की] बूदो से अलकृत होकर

प्रिय डाक्टर,

पोस्टकार्ड अभी मेरे छोटे भाई ने दिया। पढ कर प्रसन्न हो गया। दिन-भर

1. बांदा की एक सस्था। अब इसका नाम नागरी प्रचारक पुस्तकालय, बादा है। इसमे एक कक्ष का नाम 'केदार कक्ष' भी है। [प्र० वि०]

धूप में तपने के बाद इस बचकानी चिट्ठी ने वही काम किया जो एक सावनी घटा करती है—यानी प्यार से इसने नहला दिया। मैं तो राह ही देखता रह गया तुम्हारे यहां आने की। तुम लखनऊ आए थे—फिर झांसी से भी तुम्हारा एक वक्तव्य छपा था। ख्याल यही था—हालांकि वह गलत निकला—कि तुम शायद मेरे नगर भी आओगे। परंतु तुम्हें आगरा लौट जाने की जल्दी थी इसीलिए नहीं आ सके। कोई बात नहीं है।

इधर केरल सरकार को लेकर खूब उछल कूद की खबरें छप रहीं हैं। कभी-कभी पार्टी के प्रमुख व्यक्ति ऐसे वक्तव्य दे देते हैं कि लोग भड़क जाते हैं। ज़रा धीरज के साथ काम करने की ज़रूरत है। आज का अजय घोष का बयान पढ़ कर तसकीन हुआ कि उन्होंने वैसे वक्तव्य देने वालों के कान उमेठे हैं। यही attıtude इस वक्त कारगर साबित होगा। मेरा यही विचार है। हमारे वे ख़्याल गलत निकले कि इस बार ख्रुश्चेव के कारण पार्टी पीछे ढकिल जायेगी। पार्टी तो ऊपर उभरी है। दरअसल में इस दिशा में सम्हल कर काम करना ज़रूरी है। ख़ैर, यह तो हमारी धारणा है। पता नही कि बड़ लोग क्या सोचते है।

अपने पिछले पत्र का विस्तृत उत्तर मिलने की आशा लगाए बैठा हूं। जी न माना इसलिए यह दूसरा लम्बा पत्र भी लिख कर भेजे दे रहा हूं कि इसका भी जवाब दोगे। कुछ कविताएं लिखीं हैं। वे भी नीचे दे रहा हूं। पढ़ कर टिप्पणी लिख भेजना।

दिन के दिए

आज अभी आंखों से
पर्वतीय निर्जन के धुध-भरे घेरे मे
कंद खड़े पेड़ों के मौन पड़े डेरे में
पात हीन डालों के अखिरी किनारों पर
पीत पगे फूलों के आरसी-कपोलों पर
दिन में ही जगर मगर दीप जले देखे हैं।

१-४-५७

यह कविता मैंने प्रयाग जाते समय रेल के डिब्बे में उस समय लिखी थी जब मानिकपुर १ स्टेशन रह गया था और मैंने मानिकपुर की पहाड़ियों पर मौन खड़े नंगे पेड़ों की डालों के आखिरी किनारों पर ये फूल देखे थे। हम डिब्बे में ही रस सिक्त हो गए थे। कहो, कैसी रही यह छोटी-सी कविता? Dandelion से किसी कदर कम नही है। बल्कि कुछ ऊँची ही है।

अभी १३-४-५७ को खजुराहो गया था। उसे देख कर भी एक कविता लिख सका हूं। लो उसे भी पढ़ो।

खजुराहो के मंदिर

चंदेलों के कला-प्रेम की देन देवताओं के मंदिर,
बने हुए अब भी अनिंद्य जो खडे हुए है खजुराहो में,
याद दिलाते हैं हमको उस गये समय की
जब पुरुषों ने उमड़-उमड़ रोमांचित हो कर समुद्र-सा
कुच-कटाक्ष वैभव-विलास की कला-केलि की कामिनियो को
बाहुपाश में बांध लिया था
और भोग-सम्भोग सुरा का सरस पान कर
देश काल को-जरा मरण को भुला दिया था !
चले गए वे काम-कंठ-आभरण पुरुष-जन;
चली गयीं वे रूप-दीप-दीपित बालाएं,
लुप्त हुईं वह मदन-महोत्सव की लीलाएं,
शेष नही रह गयी हृदय की वह स्वर ध्वनिया !
किंतु मूर्तिया पुरुष-जनों की—
और मूर्तियां कामिनियों की
ज्यो-की-त्यों निस्पंद खड़ी है उसी तरह मे
देव मदिरो की दीवारो पर विलास के हाव भाव से।
काल नही कर सका उन्हें खंडित कृपाण से,
किंतु किसी दुर्द्धर मनुष्य ने
गदा मार कर कही-कही पर तनिक-तनिक-सा तोड़ दिया है
और आज तक इसीलिए वे उसे कोसती है क्षण-प्रतिक्षण !
नर है तो आजानबाहु, उन्नत ललाट
रागानुराग-रंजित शरीर है !
तिय है तो आकुलित केश, पटु नटी-वेश,
कामातुर मद विह्वल अधीर हैं
सदियों से पुरुषों की जांघों पर बैठी करती विहार है;
इन्हें नही संकोच-शील है या कि लाज है,
यह मनोज के मन:लोक के नर-नारी है,
आदिकाल से इसी मोद के अधिकारी हैं;
चाहे हम-तुम कहें इन्हें : यह व्यभिचारी है।

मुझे पहली बार प्रयाग से रेडियो कवि-सम्मेलन में बुलाया गया था। ३/४ को था। मैने केवल 'दिन के दिए' व एक अन्य ६ पंक्तियों की कविताएं सुनाई थी। पहले तो उस Hostile वातावरण में—परिमलियो के बीच - मुझे घुटन मालुम हो रही थी। परंतु फिर जब मैंने जम कर सुना दिया और वाह-वाह हुई

तो उनके मुंह देख कर खुश हो गया। वे चेहरे पत्थर के पुराने से हो गए थे। मज़ा तो यह था कि P.C. gupta व भैरवप्रसाद गुप्त और २/३ साथी बिना बुलाए ही वहां मेरे कविता पाठ तक बैठे रहे। फिर चले गए। उनकी उपस्थिति भी मेरे लिए प्रोत्साहन का काम कर रही थी। मैं उनका अवश्य ही कृतज्ञ हूं। अज्ञेय महोदय भी थे। उनसे मैंने नमस्कार मारी पर चेहरा –उनका-विकृत हो गया; मगर जवाब देना इस सभ्यता का तकाजा था इसीलिए उन्होंने बरफ के ठंढे गिलास से अपना मुंह निकाल उसका उत्तर दिया। फिर न बोले एक शब्द। और उन बड़े "भारती" का हाल सुनो। यार मेरा जान कर भी अनजान बना रहा। देख कर भी आंख मूंदे रहा। मैंने उन्हें देखा व उनके अदर जा कर उनकी परेशानी पहचानी। वह जूनियर कवि थे इसलिए मैंने अपना सलाम नहीं दिया। भला वह कैसे इस अ-कवि को नमस्कार करते। मैं इसे समझ कर खूब खुश हुआ। वाह रे घमंड-घटोत्कच! वैसे तो हमें सब दोष देते रहे हैं कि हम बड़े बदतमीज हैं। पर इन सियारों को कोई नहीं कहता। बहरहाल, मजमें में मैंने उनके धुएं देखे। नयी चीज थी मेरी। ताजा रंग था। पंत जी ने भी प्रशंसा की। परंतु बड़ी छोटी थी। यही शिकायत थी सब को। परंतु तुम जानते हो कि मैं देर तक पढ़ता तो उखड़ जाता। कविताएं लम्बी नहीं जमतीं जब तक कि निराला का-सा पाठ करना न आता हो। वह तो मेरे वश का नही है। न आदत ही है।

मेरी "लोक और आलोक" का संस्करण छप ही गया होगा अब तो। परंतु कुछ समाचार नहीं मिला। प्रति तो भेजूंगा ही मिलते ही।

मैंने Leave of Grass प्रयाग में खरीद लिया है। उम्दा है। साधारण जन की जबान में कविताएं निकली है। मार्मिक हैं। जड़ाऊ काम नहीं है इनमें। सादगी और सफाई के साथ हृदय धड़कता है। तुमने अधिकांश को सपाट कहा है। हो सकता है ठीक हो तुम्हारा यह विश्लेपण। पर अभी मैं कुछ नही कह सकता। मुझे तो वह बहा ले जाता है अपने बहाव में।

मुंशी का पत्र आया था। मैंने जवाब दे दिया है। शायद Walt Whitman की कविताओं का अनुवाद छापने के क्रम पर विचार हो रहा है वहां। वही श्री चंद्रबली के अनुवाद को। मैंने लिखा है कि ज़रूर छापो।

बांदा के गदर के गीत मांगे है पर यहाँ तो पत्थर गदरा जाते है। गीत मिलते ही नही। बहुत पूछता हूं पर कोई नहीं बताता कि कहां पड़े हैं। खोज जारी है।

घर मे सब मजे में हैं। तुम सब लोग मजे में होगे। बेटियों को प्यार। बेटों को सलाम। तुम दोनों को नमस्कार। ललित का ख्याल है। सेक्रेटरी महोदय से फिर बात कर ली है। मई में दरख्वास्त दे दूगा। विज्ञान के स्नातकों की भी आवश्यकता है। कोई हो तो लिखना।

सस्नेह तु० केदार

R. B. Sharma
M. A., Ph D (Luck)
Head of the Department of English
B. R. Colleg, Agra

१२ अशोक नगर
आगरा
१६-५-195७

प्रिय केदार,

बहुत दिनो के बाद फुर्सत से तुम्हे चिट्ठी लिखने बैठा हू। इस बीच बनारस, लखनऊ, इलाहाबाद और आगरे की कापिया जाची। सूर जयती पर मथुरा मे भाषण दिया और १०, मई को '५७ के विप्लव पर आगरे मे सरकारी-कम-सार्वजनिक समारोह मे भाषण दिया। सन '५७ के इतिहास पर काफी सामग्री एकत्र कर ली है, और कर रहा हू।

पहले सूर का दिव्य दर्शन देखो। रास का चित्र है। कल्पना के रगो मे सूर की सवेदनाओ ने ढल कर ज्योति के पत्र पर कैसा अमर चित्र आका है—वर्ण-वर्ण, रेखा-रेखा सजीव है, सारा चित्र इतना सर्वाङ्ग-सपूर्ण मानो द्रष्टा के सामने मत्र के प्रज्वलित अक्षर स्वतः अवतरित हुए हो—

> अरुझी कुडल लट, बेसरि सौ पीत पट, बनमाल
> बीच आनि उरझे है दोउ जन।
> प्राननि सौं प्रान, नैन नैननि अँटकि रहे, चटकीली
> छबि देखि लपटात स्याम घन।
> होडा-होडी नृत्य करै, रीझि-रीझि अक भरै,
> ता-ता-"थेई-थेई' उछटत हे हरखि मन।
> सूरदास प्रभु प्यारी, मडली जुवति भारी, नारि कौ
> आँचल लै-लै पोछत है स्रमकन।

Walt Whitman ने तो एक Dandelion की पूर्णता ही उतारी थी—यहा तो कुडल में उलझी हुई लट से लेकर नारि के अचल से स्रमकन पोछने तक हर detail dandelion सी पूर्ण है और उन सब details से मिल कर बने हुए पूरे चित्र की पूर्णता-भव्यता का क्या कहना! उल्लास का ऐसा चित्र और कही देखा है? कृष्ण के कुडलो मे राधिका की लट, राधा की बेसर मे कृष्ण का पीत पट उलझे [उलझा] है [है]। नृत्य घनीभूत है न! बनमाल मे दोनो ही उलझ गए है। होड करके नाचते है। सामन्ती निषेधो की बेडिया पैरो मे नही है, इसलिए प्राक् सामन्ती समाज की स्वच्छंदता के ताल पर नाच रहे है। प्राणो से प्राण, नैनो से नैनो का मिलना—रवीन्द्रनाथ-निराला की प्रेम सबधी तल्लीनता सूर ने पहले ही देख ली है। रीझ-रीझ कर अक भरना, ताता थेई-थेई उछटत पर जब

मृदंग पर थाप पड़े तब नाद की नसेनी पर मन सुन्न महल पर पहुँच जाय। मंडली-जुवति है; अनेक नाचने वाले हैं। सामूहिक उल्लास है। फिर समग्र क्रिया की पूर्ति के फलस्वरूप आँचल से स्रमकन पोंछना—रस निष्पत्ति की पराकाष्ठा है !

अब मँगाओ नागरी प्रचारिणी सभा से सूरसागर। संक्षिप्त से काम न चलेगा। Walt Whitman के भी Complete works ही लेना चाहिए था। Selcetion करने वाले प्रायः चुग़द होते हैं।

पहली अप्रैल को लिखी हुई तुम्हारी कविता 'दिन के दिए' खूब गठी हुई ('दो मुदुल दलदार वृत्ताकार' की तरह) हैं। धुंध में कैद पेड़ों की पातहीन डालों पर दीप जलते हुई देखे—तुम्हारी आंखों को स्नेह चुंबन भेजता हूं। क्या पहली अप्रैल[1] थी, इसलिए कविता इतनी अच्छी बन पड़ी ? तुम्हारी गर्वोक्ति सही है—dandelion से किसी कदर कम नहीं है। लेकिन कुछ ऊंची ही है ? धत् ! कुछ ऊंची—और बहुत ऊँची—तो 'अरुझी कुडल लट' ही है।

खजुराहो पर तुम्हारा लेक्चर रोचक है। चित्र तुम्हारी टिप्पणियों के नीचे दव गये है। 'मृदुल दलदार' के बदले वातुल शिथिल भार दल आये है।

इन्हें नही संकोच-शील है या कि लाज है। एक बात के लिये शील, संकोच और लाज—तीन शब्द ! और शैथिल्य का प्रमाण—या कि ! तोबा ! तुम्हारे दृष्टिकोण में भी पंत-यशपाल की प्रौढ़ा अधीरा वाला भाव है। व्यभिचारी तो थे ही साले Perversity—विकृतियों—की भरमार है। फिर भी कलाकारों ने मूर्तियों को खूब गढ़ा है जिसमें चन्देलों के बाप का इजारा नही। हमारे शिल्पी थे वे।

'वे चेहरे पत्थर के पुराने से हो गये थे।' परिमलियों का यह गद्य-वर्णन खजुराहो के पद्यवर्णन से कितना ताज़ा है। परिमलिये वैसे ही घुटनवादी है। उनमें तुम्हें घुटन लगी हो तो आश्चर्य नही। अज्ञेय का चेहरा वैसे ही विकृत रहता है। तुम्हें देख कर और विकृत होना उसका प्रकृत गुण मानना चाहिए। बरफ के ठंढे गिलास से उन्होने मुँह खूब निकाला—बरफ से भी ज्यादा ठंडा। घमंड-घटोत्कच की धर्मवीरता को तुमने धुआ कर दिया—बधाई।

कविता लंबी भी जमती है और बिना निराला के कंठ स्वर के भी। असल में बहुत गठी हुई कविता को तुरत ग्रहण करना कठिन होता है। इसलिए तुरंत दाद देने वालों से मुझे डर लगता है। चलो, रेडियो पर तुम्हारा कविता पाठ तो हुआ।

Whitman में बहाव खूब है लेकिन गहराई जहा-तहां ही है। भर्ती की बाते बहुत है।

हां, मैंने मकान बदल लिया है। ऊपर दिया हुआ पता नोट कर लेना और सब चैन है।

तु०
रामविलास

1. पहली अप्रैल केदारजी का जन्म दिन है। [प्र० वि०]

बांदा
२६-६-५७
प्रिय डाक्टर,

पोस्टकार्ड मिला। बहुत बहुत प्यार। इधर तो कविता बाई कही सैर सपाटे को चली गयी है वरना आती जरूर। इस वक्त तो उनके बगैर केवल ठूठ हूं।

शरद[1] ने संग्रह छाप लिया। भेजने को पता लिख दिया है। पहुचे या न पहुंचे तो लिखना। मैने भी अभी तक एक भी प्रति नही पायी। पत्र आया है कि भेज रहे है। देखो कब तक आता है।

मुरली मनोहर[2], बरौनी उचौनी, मुगेर को जरा सलाह-मशविरा दे दिया करो। टाल न जाया करो। बेचारे बडे उत्साही युवक है। तुम्हे देवता मानते है। तुम्हारी कलम के कायल है। उन्हे खुल कर राय दिया करो कि वह क्या पढ़े तथा किस तरह आगे बढे। मेरे एक मित्र श्री केसनीप्रसाद चौरसिया,[3] १२६/२८ ईदगाह, रामबाग, इलाहाबाद भी तुमसे पत्र व्यवहार करके जन्म सफल करना चाहते है। उनका पत्र आये तो उत्तर दे देना। सहृदयता से वह साहित्य के एम ए है। अब साहित्य-सृजन के क्षेत्र में कलम घिसना चाहते है।

अतर्रा से अभी तक पत्र नही आया। बारात कर आये होगे। तु०
ललित को स्नेह। केदार

१२, अशोक नगर, आगरा,
१७-७-५७

प्रिय केदार,

तुम्हारे साथ के कारण लखनऊ की गर्मी में बरसात का आनन्द आया। उसके बाद दिल्ली जाकर P.P.H से ५७ पर प्रकाशित होने वाली पुस्तक की पाण्डुलिपि देखी। दो-तीन लेख अच्छे है। कल यहा के Archaeology department की Library देखने गये। कई काम की किताबे है। लौटते मे भीग गये।

आजकल कविता से दूर इतिहास के वीराने मे हूं। साहित्य सन्देश भाषा विज्ञान अक निकाल रहा है। उसके लिए लिपि-समस्या पर एक लेखा लिखा है।

ललित का प्रबन्ध वहां न हुआ हो तो निस्संकोच लिखना। सोच रहा हू, किसी विषय को लेकर M A. में भर्ती करा दू।

श्रीमती केदार को सप्रेम। तुम्हारा—रामविलास

1. ओंकार शरद।
2. डॉ० मुरलीमनोहर प्रसाद, सिंह, सप्रति-दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर।
3. प्रयाग विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक थे, बाद में आत्महत्या कर ली। [अ० त्रि०]

बांदा
१८-७-५७
५ बजे शाम
प्रिय डाक्टर,

पोस्टकार्ड अभी-अभी कचहरी से आने के बाद दफ्तर की मेज पर एकाकी मौन धारण किये हुए मिला। तुम्हारा नाम देख कर चट से पढ़ गया पर यह इतना छोटा है कि चट खतम हो गया फिर भी कुछ तो हर्ष हुआ ही। तुमने भी बरसते बादलों की तरह शकल दिखा कर, बूंदा-बांदी मात्र कर दी।

लखनऊ की भेंट भी याद रहेगी। खूब मिले। मज़ा आ गया। वहां का आनन्द याद रहेगा।

डट कर पुस्तक लिख डालो। महादेव साहा ने भी तुम्हारे '५७ के काम के बारे में अपने पत्र मे जिक्र किया है। मुझे भी कुछ लिखने को कहा है। पर मै सामग्री के अभाव मे लिख ही क्या सकता हूं। विला वजह ५७ सन् के कान मे तिनके मे कुरेदना होगा— मेरा प्रयास। यह काम मेरे लिए कठिन है।

भाषाविज्ञान पर तुम्हारा लेख देखने को लालायित रहूंगा। मिल सका तो देखूगा। एक अक तो भेजवा ही सकते हो। अभी ही एक पत्र फिर मत्री महोदय को लिख कर उनके कान हिला रहा हूं। जवाब आने पर उत्तर दूगा। वह फ्लू के शिकार हो गये थे। सुना है कि अब अच्छे हो गये है।

मेरी पुस्तक—लोक और आलोक—ओंकार शरद, २, मिन्टो रोड, इलाहाबाद ने भेजी या नही ? छप गयी। देखी हो तो राय देना। न देखी हो तो एक पोस्ट कार्ड उसे भेजने को लिख देना। मैंने लिख दिया है। श्रीमती केदार तुम्हारा सप्रेम सुनकर फूल सी खिल उठी। इधर कुछ नही लिख सका।

तु० केदार

बांदा
२६-८-५७
प्रिय डाक्टर,

प्रिय ललित अतर्रा गये। मंत्री महोदय कल यहां थे। उनसे डाट कर मैंने कह दिया है कि उसकी हिन्दी की पोस्ट में स्थायी नियुक्ति कर दें—प्रस्ताव पास करके। कोई रुकावट नहीं हो सकती। ताकि वह परीक्षा एम. ए. की अंग्रेजी मे दे सके। फिर लेक्चरर की पोस्ट में हो जायेगा। हिन्दी का एक अध्यापक पहले ही से है। इसलिए हिन्दी में वह Lecturer नहीं हो सकेगा। मुझे विश्वास है कि वह

ऐसा कर देगे। एक दिन अतर्रा जाऊंगा इसी काम के लिए।

'विराम चिह्न' मिला। नाम तो समाप्ति का द्योतक है। 'अर्द्ध विराम' प्रगति का द्योतक होता –वह अच्छा होता। यदि विराम चिह्न से तात्पर्य है कि वे लोक [लोग] रुकें जो गड़बड़ कर रहे है, तो ठीक है। परन्तु बोध ऐसा होता नही। पुस्तक के नाम के बारे में यही आपत्ति है। यदि कुछ तर्क दे सको तो मुझे भी लिखना ताकि मेरा भ्रम दूर हो।

ललित मे तुम्हारे घर के हाल ज्ञात हुए थे। परन्तु तुम हिम्मती हो। सब बरदास्त कर लेते हो। आशा है कि अब Wife घर मे आ गयी होंगी। वह अच्छी हो गयी होंगी।

जलवायु की दृष्टि से अतर्रा अवश्य अच्छा है। ललित ने वहां के वातावरण के बारे में लिखा होगा। वह अभी तो मंत्री महोदय के साथ ही रहते है।

मेरे घर में चैन-चान है। मैं ही कुछ-न कुछ खराब रहता हू। कभी कुछ, कभी कुछ तकलीफ हो जाती है। सब ठीक हो जायेगा।

अगर कलकत्ता न जाओ तो इधर आ जाना। कलकत्ता जाने मे मै तुम्हे रोकता नहीं। वह काम जरूरी है।

सूर की रचना पढ कर आनंद प्राप्त हो गया। मुझे 'नृत्यन मदन फूले' वाला पूरा बद बहुत अच्छा लगा। 'मन के मनोज फूले हलधर वर के' यह पक्ति तो लाजवाब है। ऊपर का सा वर्णन तो सभी लोग करते है। 'मन के मनोज' फूलने में सारी खूबी है। 'गरजत कारे भारे जूथ जलधर के' पंक्ति अच्छी है। परन्तु पहले की अन्य पंक्तियो से सम्बध [सम्बद्ध] हो कर निकल पड़ी है। काव्य की विशेषता नही है। तुम माथा टेकने को कहते हो तो किये देता हू। पर मैं तो 'मन के मनोज' वाली पक्ति पर माथा टेकता हूं। कहो, कैसी रही ?

रोन्सार्ड की रचना बढ़िया है। खूब है। जहा समुद्र है वहा फसल लहरायेगी। यह भाव गजब का है। यह उसकी तीव्र अनुभूति का परिचायक है। भाव भूमि पर पहुंच कर वैज्ञानिक, वैचारिक, कवि तथा तार्किक—सब एक स्वर से कुहुक उठते हैं, कोयल जैसे।

आशा है कि तुम भी अब चैन से होओगे।

मिल्टन का संग्रह ललित दे गया है। पढ़ना शुरू किया है। देखो क्या रहता है ?

तु० सस्नेह केदार

R. B Sharma
M. A., Ph. D. (Luck)
Head of The Department of English
B. R. College, Agra

१२ अशोक नगर,
आगरा,
३-९-1957

प्रिय केदार,

'विराम चिह्न' समाप्ति का ही द्योतक है। लेकिन किसकी समाप्ति का ? मित्रों और संपादकों के आग्रह पर लेख लिखने का। सुसरे न कविता लिखने देते हैं न मनचाहे विषयो पर आलोचना। अब विचार यह है कि जम कर कविताएं लिखें और कुछ अन्य प्रकार की पुस्तकें—भाषाविज्ञान आदि पर। लेकिन मैं तो नाम अर्ध [अर्द्ध] विराम रखना चाहता था क्योंकि उसी (,)की तरह लेख भी छोटे थे। लेकिन मित्रों ने Full stop ही पसंद किया ? अब देखिये, वकील साहब, आपकी आपत्ति की मैंने रस निष्पत्ति कर दी।

तुम अभी मदन-मनोज के कवि हो। "गरजत कारे भारे जूथ जलधर के" वह भी यमुना से श्याम जल पर ! धरती से आकाश तक प्रकृति पुलकित है और उसके [उसकी] पुलक फूट पड़े है [पड़ी है] उसकी सघनता में। सूर ने बादलों की फोटू नहीं खींची, कृष्ण जन्म पर गोपी-ग्वालों-गायो और तुम्हारे नृत्यत मदन के साथ उन्हें भी यमुना के जल पर पुलकित दिखलाया है। सावन-भादों से अधिक प्रकृति को कभी रोमाञ्चित देखा है ? और तुम कहते हो—काव्य की विशेषता नहीं है। मालूम होता है, दिल की सरसों सूख गई है।

खुशी की बात है, तुम Milton पढ़ रहे हो। मेरे प्रिय कवियों में से है। Keats भी उसे बहुत प्यार करता था। Paradise Lost की III BK के आरम्भ में Light पर उसकी पंक्तियों में वैदिक ऋचाओं का ओज देखना। उसने अपनी एक मृत पत्नी पर एक Sonnet लिखी है। उसकी प्रतीक-व्यंजना भी अनूठी है। इधर पत्नी को Blood Pressure से कुछ परेशानी थी। अब ठीक है। दो तीन दिन के लिए मुंशी आये थे। कल गये।

ललित का पत्र आया है कि उन्हें वहां अस्थायी तौर पर रख रहे हैं। इसलिए मैंने लौट आने को लिख दिया है। फिर देखा जाय गा। तुम अपने प्रयत्नों की इस असफलता से चिन्तित न होना। जैसा कि शिवजी ने गौरा-पार्वती से कहा था—यह तो संसार है !

तुम्हारा रामविलास

बांदा
५-६-५७
शाम ५ बजे।

प्रिय डाक्टर,

मैं अपनी किरन को लेने दिल्ली अचानक चला गया। यहा से ३१/८ को गया था। वहा से ३/६ की शाम को चला। वहा मिला जवाहर चौधरी, वीरेन्द्र त्रिपाठी से। तब मुशी न थे। मगर २/६ को शाम को वह मुझे घर पर मिल गये। उनसे तुम्हारी Wife की हालत मालुम हुई। जान कर बडा अफसोस हुआ। आखिरकार, परेशानी तो बहुत ही हुई होगी अब और भी होगी। मालुम हुआ था कि वह अब अच्छी हो जायेगी। भाई मुझे समाचार देते रहना कि अब वह कैसी है। मेरे लिए जो आदेश हो देना। मै बाहर नही हू। ईश्वर मे विश्वास नही करता फिर भी कहता हू कि हे ईश्वर उन्हे जल्दी अच्छा कर दे। मेरी ओर से उन्हे शक्ति और साहस देना कि वह कष्ट झेल कर उठ बैठे। मुझे किरन को और उसके बच्चो को ले कर आना था। इसलिए आगरे नही आया। अकेला होना तो जरूर पहुचता चाहे दूसरी ट्रेन मे लौट आता। फिर किरन के बच्चे को बुखार भी आ गया था।

यहा आने पर ललित के कालिज का हाल मिला। अब तुमने उसे बुला लिया। वह चले भी गये। फिर भी मैं तिलमिला गया हू इस प्रकार के व्यवहार से—स्कूल के मत्री के व्यवहार से। धत्तेरे की। मुझे तो कचहरी मे रह कर बहुत तजुर्बा था ऐसे लोगो का। फिर भी मैने न जाने क्यो उनकी बातो का विश्वास कर लिया। नाहक बेचारे ललित को आगरे से बुला भेजा—खर्च कराया। उसका आगरा ही रहना अच्छा था। इस आवागमन का मुझे बडा ही मार्मिक दुख है। बहुत चोट लगी है। अभी ही मत्री को पत्र भेजा है।

....

....1

"उमगे जमुन-जल, प्रफुलित कुज-पुज, गरजत कारे भारे जूथ जलधर के।" यह पक्ति तुम्हे खूब भायी है। वैसे बढिया हे। लेकिन जो मानी तुम इसमे भरना चाहते हो वह नही है। "उमगे जमुन-जल" और "गरजत" वाले टुकडे दूर जा पडे हैं। यह नही है कि वह जमुना के जल पर झुक कर गरज रहे हे—मोहित हो कर या अन्य भाव से, किसी हर्षातिरेक मे। फिर भी जिस दृष्टि से तुमने भाव ग्रहण किया है वह सचमुच उत्तम है। मै तो इसे तब ग्रहण ही नही कर सका था। वह तो मुशी ने दिल्ली मे ही मुझे बता दिया था। आज अभी पत्र भी मिला। सूर को

1. पत्र मे यह स्थान इसी तरह रिक्त है। [प्र. वि.]

चाहिए था कि वह जलधरों को झुके हुए दिखाते व उनके बिम्बों से जमुना को दुगुनी प्रसन्न दिखाते। शायद सूर वह भूल गए थे। जितनी पैनी दृष्टि से तुम मेरी रचनाओं की आलोचना कर सकते हो उतनी ही पैनी दृष्टि से सूर को भी कसो। शायद तुम स्वयं सूर से अधिक अर्थ ग्रहण कर सके हो। चाहे जितना कहो मैं मान नहीं सकता। दिल की सरसों न सूखी है—न सूखेगी। वह तो सावन-भादों में भी बादलों और बिजलियों के बीच अब भी लहरा रही है।

मैंने इधर ब्राउनिंग खरीदा है। Modern Poetry की कई पुस्तकें खरीदी हैं। बहुत-सी सामग्री है, मन भरने के लिए।

मिल्टन का III book पहले ही आज पढ़ूंगा। वह ललित की पुस्तक है। उसे भेज दूंगा। मुझे उससे कह देना कि वह भिजवा दे।

वाह रे मेरे शिवजी ! तुम्हारी यह सीख सिर माथे है कि "यह ससार है।"

मेरी समझ मे "नृत्यन मदन फूले"- -वाली दोनो पक्तियाँ अब भी हृदय हर लेती है। यह बात नहीं है कि मैं मदनाकुल हू। तुम कह सकते हो ऐसा मगर बात यह नही है। वास्तव मे यह पंक्ति बढ़िया गई है। देखो न इसकी गठन को। सामीप्य का और अन्तंग [अंतरंगता] का इतना प्रिय वर्णन कही न मिलेगा। भाई, मैने तो नही पढ़ा। तुम जानो तो ठीक है।

अच्छा हुआ कि अब तुम कुछ लिखने की सोच रहे हो। जरूर लिखो मेरे शिवजी महाराज ! कभी तो तप करके गणेश जन्मोत्सव मनाओ। केवल कह कर रह जाते हो। मुंशी भी तुम्हारी कही बात दिल्ली में सुना रहे थे। वह भी एक ही आदमी है। न जाने कब कुछ करके दिखायेंगे। ख़ैर। सबको स्नेह।

तु० केदार

१२, अशोक नगर, आगरा
१२-६-५७

डियर वकील साहब,

दिल्ली का रास्ता आगरा हो कर है या ? टूडले से कानपुर गये हो तो भी लिख देते, मैं टूडले आकर मिल लेता। ख़ैर। कभी चित्रकूट चलो गे ? मैने देखा नहीं है, देखने की इच्छा है। तुम्हारी कचहरी कब बंद होती है यदि कभी बंद होती भी हो तो ?

मेरी पत्नी अब अच्छी है। चलती-फिरती है, घर का कामकाज भी थोड़ा-बहुत करने लगी है। महीने भर मे —आशा है -ठीक ठाक हो जायँ गी। तुम्हारी चिट्ठी सुन कर वह बहुत प्रसन्न हुई, मुझसे उसे 'सिहार के' रख देने को कहा।

देखो, तुम्हारा गद्य काव्य स्त्रियों को भी अच्छा लगता है।

ललित के चले आने पर तुम्हें बिल्कुल परेशान न होना चाहिए। मुझे अपने एक झांसी के मित्र से उस कालेज का हाल मालूम हुआ। वहां प्रिंसिपल महोदय सर्वेसर्वा है। मंत्री महोदय ने अपनी सीमाएं तुम्हें न बता कर तुम्हारे अनुरोध की रक्षा करने का प्रयत्न किया। शिवजी कहते है—सुनो पार्वती—यह भी संसार है।

एक लेख 'आलोचना' के लिए लिखना है। एक कलकत्ते के 'सुप्रभात' के लिए। एक 'हिन्दुस्तान' के लिए। एक आगे-पीछे राजस्थान के 'विकास' के लिए। ये वे लेख है जिनसे बच नहीं सकता। और बहुत से ममूख कर दिए। इम महीने सबको निवटा दू गा। अब की दशहरे की छुट्टियों मे यही रहने का इरादा है जिसमे सन् '५७ वाली पुस्तक शुरू हो जाय। संभवतः ८ अक्तूबर को ग्वालियर जाऊ गा वहां शरदुत्सव [शरदोत्सव] के लिए दूसरा बुलावा भी है। जौनपुर कालेज के साहित्य परिषद में बुलाया था, नही गया। 'नयापथ' में यशपाल ने मेरी दिव्य दृष्टि के दर्शन किए है। चंद्रबली ने 'रूपतरंग' पर लेख लिख ही डाला है जो 'आज' में छपे गा; तुम्हें उसकी कटिंग भेजने को कहूं गा।

तुमने लिखा है —सूर को चाहिए था कि वह जलधरों को झुके हुए दिखाते, उनके बिबो से जमुना को दुगुनी प्रसन्न दिखाते, शायद सूर वह भूल गये थे।

तुम यह भूल गए हो कि इस समय जमुना और जलधर -दोनों ही आपा खोये एक तीसरे ही आनंद में मग्न है। यह वही आनंद है जिसने धेनु, गोपी, ग्वाल, अंकुरित पुन्य, मदन और मनोज सभी को एक डोर मे बाध दिया है। उसी डोर में जमुना और जलधर भी बंधे हैं। फिर जलधरों को क्या पड़ी है जो जमुना पर झुकें; वहां तो जमुना ही—रात्रि को लैंप बुझाती हुई कवि-पत्नी की तरह—उमँग रही है। और यह बताओ, 'कारे भारे जूथ' आकाश मे मील-भर ऊपर उड़े गे कि जमुना पर झुके हों गे? जमुना और जलधरों की श्यामता के साथ कुंज पुजों की हरीतिमा कैसी मिल गई है; साथ में इसकी कल्पना भी कर लो। सूर कवि हैं, टीकाकार नही! तुम मेरे पत्र की टीका उसके पद में ढूढते हो, सो कैसे मिले? लेकिन बीजरूप मे सारा सौन्दर्य घनीभूत है, मैने अपनी तरफ से कुछ नही जोड़ा।

और मिल्टन कितना पढ़ा?

तुम्हारा
रामविलास

बांदा
१३-६-५७

जनाबमन,

राम के आगे विलास लगा कर अब हर-हर महादेव यानी शिव बनने की साध पूरी कर रहे हो। कर लो, ऐसी भी क्या बात है। मगर याद रखो कि पहले जड़ जुटाजूट बांधो, फिर कोपीन धारो, फिर कमंडल गहो, और भूत-प्रेतों की जमात जोड़ो तब जा कर कहीं उस शिव का रूप बना पाओगे। यह तो बहुत सादी-सी बातें हैं जिन्हें तुम कर भी सकते हो। लेकिन जब शिलाखंड पर नंगधड़ंग बैठ कर बना-वटी आंख मुंदौवल करना [करनी] पड़ेगा [पड़ेगी] और वह भी बरसों तक तब सारी साध काफूर हो जायेगी। मियां, जब इन्द्र महाराज का सारा "मालखाना' तपस्या भंग करने आयेगा तब बरबस ललचा कर टप्प से निहार दोगे। याद रक्खो कि इस शिव के रूप में कुछ नहीं रक्खा। तुम तो सूर्यवंशी राम हो। राम ने विलास न किया था—दूसरे शब्दों में कुल की रीति के विपरीत आचरण करते थे, तभी तो सीता हरण हुआ और जब फिर मिलीं भी तो राम उन्हें न रख सके— तुमने राम के आगे पुरुषत्व का चिह्न "विलास" लगा कर उनके पुल्लिग होने का सबूत तो दे दिया। बधाई है हजरत आपको। इसीलिए मुहम्मद साहब के पुंसकत्व की याद करके तुम्हें जनाबमन सम्बोधित कर रहा हूं।

पर डर है कि इस असमय के परिहास को कोई दूसरा न पढ़ ले और मुझे और तुम्हें दोनों को पक्का बदमाश न समझ ले। इसीलिए जितना कहा, कम कहा, उसी को ज्यादा समझ लेना।

तुम्हारी मालकन को मेरा गद्य काव्य पसंद आया। मेरा अहोभाग्य। यह जान कर खुशी हुई कि अब अच्छी हो रही है। जरा गिरस्ती की चक्की मे उन्हें फिर जल्दी न जोत देना। बीमारी के बाद तो बीमार की लोग मेवा खूब करते हैं। तुम्हें चाहिए कि तुम अपना शैवासन त्याग कर, तप-भंग करके उनकी ओर उन्मुख हो कर सहज स्वभाव मे उनका ताप हरो। भगवन आप तो बरफ पर बैठे रह कर भी मदन महाराज तथा रति के कुसुमों से आहत होते रहते हैं। मैं केवल याद दिला रहा हूं कि दुर्बल को न सताइये।

इधर खूब लिखने जा रहे हो। जरूर लिखो। यशपाल साहब को जवाब की जरूरत है। वह कब्ज के मरीज हो गए हैं शायद! न जमाल गोटा सही, हल्की सनाय की फंकी करा दो न।

चन्द्रबली का लेख देखने की लालसा है। रूपतरंग पर मैं भी लिखूंगा। तब से अधूरा पड़ा है मेरा लेख।

चित्रकूट चाहे जब आओ। चल दूंगा। दशहरे में सही। वैसे कचहरी तो सदा चालू रहती है। चचला जो है। फिर बूढ़ों की घरैतन भी तो है। क्यों न सदा दर-

वाजा खोले बैठी रहे।

मिल्टन का पाठ रुक-रुक जाता है। कभी किमी वजह से कभी कचहरी के काम की वजह से। जी भर कर रस नही ले पाता, तन्मयता मे। बहुत बखेड़े घेरे रहते हैं। फिर भी समय निकाल कर पढ़ता ही रहता हूं। अभी इस काबिल नहीं हूं कि उसके संबंध में कुछ लिख भेजू। उसमें अभी मन नही भीजा। देखो वह कब हृदय को छू लें। यह जरूर लिखना कि कितना-कितना अंश अवश्य पढ लू।

बस तु० केदार

१२, अशोक नगर,
आगरा
२६-९-५७

प्रिय केदार,

इस बार पोस्टकार्ड से ही काम चले गा। इधर हफ्ते-भर से अमृत नागर यहां हैं। खूब गप्पे लगती है और खूब घुमाई होती है। इसलिए तुम्हे पहले न लिख पाया। सब राजी-खुशी है। एक दिन हम लोग सिकदरा गए, वहा हवा खाई, छाया मे लेटे हुए फरीदी से गज़लें सुनी। फिर कैलास चले और कागज की नावे जमुना मैया मे प्रवाहित की। दोपहर को ११ बजे चले थे, शाम को छः बजे घर पहुँचे। कल पोइया घाट गए थे। लेकिन तागे पर। टीले पर खडे हो कर जमुना का दृश्य देखा। सामने १०-१२ मील पर सिकन्दरा दिखाई देता है, बाये ७-८ मील पर किला और ताज। विशाल क्षितिज को जमुना शिथिल प्रत्यंचा की तरह दो भागों में बाँट देती है। रास्ते मे बाजरे, सनई के खेत और जोते सन्याने भूरे खेत जो अभी खाली पड़े हैं—सभी ने मन हरा कर दिया।

रामविलास

बांदा
२२-१०-५७

जी, सम्पादक जी महाराज,

जै आलू'चना की!

'समालोचक' निकलने जा रहा है। आलोचक जब सम पर पहुंचता है तो वह सिर के बल चलने लगता है। तभी तो वह दूसरों को सही चलते-फिरते देखता है। खुद धीमे चलने लगता है। देहात में सिर के बल चलने को "बीछी" चलना

भी कहते हैं। हां, अगर बिच्छू की चाल चले तो जरूर कहीं-न-कहीं ज़हर चढ़ेगा। लेकिन कुछ भी हो, यह तो मानना ही पड़ेगा कि हमारे रामविलास का कवि अपने आलोचक से मात खा गया। बेचारा कवि, पहलवान से कैसे जीत सकता था। मुझे उस हारे कवि के प्रति बहुत हमदर्दी है और इस जीते हुए आलोचक के प्रति उसकी ताक़त पर नाज़ है। ऐसा संजोग कहीं न मिलेगा जैसा तुममें मिलता है : एक साथ कवि और आलोचक। मुंशी ने लिखा था कि अब तुम कविताएं लिखने पर जुट जाओगे पर वादा कुछ था और हुआ कुछ। चन्द्रबली ने लिखा था कि मैं तुम्हें मजबूर करूं कि तुम कविताएं लिखो और जवाब दो परन्तु इतनी दूर हूं कि सिवाय काले अक्षरों के द्वारा तुम्हें उकसाऊं और कोई चारा मेरे पास नहीं है।

चन्द्रबली का लेख—जो उसने भेजा था—"आज" में पढ़ा। वह तुम पर था। दो लेख थे। तुमने पढ़े ही होंगे। तारीफ हो गई है इसी से सन्न बैठे हो और एक लाइन भी ख़त भेज कर, नहीं पढ़वाते।

'जै आलोचना' में जो ल पर ओ की मात्रा है उस पर apostrophe लगा है। उस ल मे ऊ की मात्रा भी लगी है। चाहे तो 'ओ' को लोप समझना और 'ऊ' को लगा देखना। भूखे मे आलू-चना अच्छा लगता है।

मैंने "हंस" में कमलेश्वर का "एक सड़क सत्तावन गलियां" पढ़ा। मुझे बेहद पसन्द आया है। यथार्थ और जीवन दोनों गले मिल कर तमाम तरह से चल फिर-कर सामने आ जाते है। चरित्र बिगड़-बिगड़ कर बनते चले जाते हैं और सब से खूबी तो यह है कि इस उपन्यास के युवक-लेखक ने बड़ी संजीदगी से शब्दों पर आधिपत्य रख कर व कथानक पर आधिपत्य रख कर, जीवन को अंकित किया है। पहले जरूर कथानक पर वर्णन का भार महसूस होता है। शुरू के पृष्ठों में यही कमी खलती है। बक़ीया तो बहुत उम्दा चला है।

कविताएं जो "हंस" में हैं, वह सब अच्छी नहीं है। दुष्यंत की सूझ बढ़िया है। यह प्रयोग नहीं, जीवन का स्वर है जो बोल उठा है। बड़ी प्रिय लगी। वंशीधर पंडा की बुंदेली कविताएं गेय है, मगर इस बार सिर पर चढ़ कर नहीं बोलती। गजानन मुक्तिबोध आदि की रचनाएं मेरे पल्ले नहीं पड़ी। न जाने क्यों जब कविताए बड़ी बात करने लगती हैं तब वह अपनी सहज सुन्दरता और आत्मप्रियता खो देती है। मुझे यही दोष इन रचनाओं में दिखता है। वैसे वे बड़े कलाकारों की कृतियां है, ज़रूर उम्दा होंगी। मेरी मोटी अक्ल पर कुछ भी असर नहीं पड़ता। केदारनाथ सिंह की रचना समझ में आती है परन्तु वह पास आ कर, गले से लग कर नहीं बैठती। जैसे वह कोई बड़ी चीज हो जो मुझ से अलग खड़ी रहती है। इस बार श्रीकांत वर्मा की कविता अपना स्वभाव-गुण त्याग कर सयानी बन कर सामने आई

है। यह उसकी कमजोरी है कि वह बडी बनती है जब कि बड़ी नहीं बन सकती अभी। "हंस" अभी पूरा नहीं पढ़ सका।

बस, तु० केदार

समालोचक

हिन्दी का प्रतिनिधि आलोचनात्मक मासिक पत्र

प्रधान सम्पादक — १२, अशोक नगर
डा० रामविलास शर्मा, एम. ए., पी-एच, डी. आगरा
सह-सम्पादक
राजनाथ शर्मा, एम ए, विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, एम. ए.
क्रमांक :········· दिनांक : २८-१०-१९५७

प्रिय कविवर,

कहो तो शुभकामनाओं में छाप दूं तुम्हारा पत्र, 'समालोचक' के पहले ही अंक में। अरे म्या, धूम मची हुई [है] धूम। दुश्मनों के हौसले पस्त हैं और सभी स्वस्थ दिल-दिमाग के लेखक-पाठक आनन्द विह्वल हैं। आयी समझ में लाला जी? और एक तुम हो जो आलूचने तौल रहे हो। अजी यह समालोचक है, समालोचक जिस नाम से चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने अपना पत्र निकाला था। यहां टोने-टटके [टोटके] वाले मनौतियां मना रहे हैं : एक अंक के बाद बंद हो जाय; संपादकों में लड़ाई हो जाय, सह संपादकों में हमारा नाम चला जाय। शायद तुम्हें पता नहीं कि इधर 'संकीर्णतावाद' के खिलाफ संघर्ष के दौर में अज्ञेय भारती एण्ड कं० ने कितने पाव पसारे है। अरे बाबू लिखने की तैयारी करो, पढ़-पढ़ा कर होश्यारी से, चलतू काम के लिए तो और भी है। पहला अंक सौन्दर्यशास्त्र पर होगा, २०० पृ० का; निराला जी की जन्मतिथि को उत्सव-उल्लास के साथ निकले गा।

अवे क्या कहता है, मेरा कवि मात खा गया? मेरा कवि कोई वकील सुसरा है जो आलोचक से हार जाय गा? अभी तो कविता समझ में आने लगी है लेकिन नया सुर फूटते जरा देर लगती है। जरा जाड़ पड़ने दे, रौ में आया तो ढेर-सी लिख दूं गा।

हंस में अभी आस्था वाले लेख पढ़े हैं। चौहान के लेख पर एक अभिलेख नीरज की दर्शना को भेजा है; यशपाल की रामचरित चर्चा पर एक आलोचना को; रूसी संस्कृत [संस्कृति] पर एक हरि सिंह स्मारक ग्रंथ को।

और मिल्टन कितना पढ़ा? इधर महीनों से तुमने एक कविता भी नहीं

भेजी ? और घर गिरस्ती ?

क्यों जी, 'लोक और आलोक' बनारस पहुंच गया, यहां आगरे आने में ही संकोच है ? हां, अब सन् सत्तावन की पोथी में जुट रहा हूं ।

तु० रामविलास

बांदा
२-११-५७
११ बजे दिन

प्रिय डाक्टर,

आज अभी 'लोक और आलोक' की एक प्रति Reg. Parcel द्वारा तुम्हे डाक से भेजी है । वह २/४ दिन में मिल जायेगी । शरद को लिख दिया था पर उसने न भेजी । अब अपनी प्रति भेजता हूं । उसमें सस्नेह भेंट लिखना रह गया है । जल्दी में । तुम्हारा पत्र कल शाम मिला । खूब मजेदार है । मेरा पत्र छाप लो, इसमें मुझे क्या उजुर होगा ।

कल ही तमाम पुस्तकें छांट कर पढ़ने बैठा । रात १२ बजे । फिर सो गया । देखो कुछ लिख पाता हूं अथवा नहीं ।

तुम्हारे 'समालोचक' से जरूर खूब खलबली मची होगी । यह अज्ञेय-भारती एंड को० ने भ्रमजाल फैला कर खूब मनमाना कीचड़ उछाला है । वह अब उलूक की तरह उड़े-उड़े फिरेंगे—रात के अंधेरे में । लेकिन ज़रा मेहनत से पत्र निकालना । चलताऊ काम न रहे ।

मिल्टन बहुत खूब है । अक्सर पढ़ता ही रहता हूं । Paradise Lost ही चल रहा है ।

क्या नयी कविता के संबंध में सौदर्य बोध पर भी कोई लेख रहेगा । नरोत्तम नागर भी कुछ लिखेंगे अथवा नहीं । जी चाहता है कि आज ही आगरे उड़ आऊं और उन सब पत्रों को देखूं जो दफ्तर में धड़ाधड़ आ रहे हैं । कौन कहता है कि साहित्य में अवसाद का डेरा हो गया है । बार-बार बधाई इस नये प्रकाशन कार्यक्रम के लिए ।

सस्नेह तु० केदार

प्रेषक : केदारनाथ अग्रवाल
एडवोकेट, बांदा (उ० प्र०)

12, Ashok Nagar,
Agra
28-12-57

My dear Vakil Saheb,

इधर न आपने कृपा की, न मैंने। मैं तो सौ साल पीछे की दुनिया में घूम रहा था, पता नही आप कहा थे। जहा तक मुझे याद है, आपके संग्रह के बाद आपके प्रकाशक ने भी कृपा की थी। जरूरत हो तो एक प्रति भेज दू, वर्ना एक आप के भतीजे की, एक मेरी।

माई डियर, पुस्तक[1] समाप्त हो गई। तुम्हें हफ्ते भर में—या दस दिन में मिल जायगी। और मिलने पर किताब न पढ़ी तो याद रखना। सुना इलाहाबाद गए थे, कुछ अगंभीर, असाहित्यिक समाचार हमें भी भेजो।

तुमने एक पत्र मे कमलेश्वर के उपन्यास की तारीफ की थी। दो एक और लेकर यदि एक लेख बना डालो तो कैसा रहे ?

और कविता-माई का क्या हाल है ? कुछ लिखा हो तो पढ़ने को भेजो, ज़रा फिर साहित्य की दुनिया की हवा लगे।

चंद्रबली ने लेख भेजने का वादा किया था, अभी तक नही भेजा। नरोत्तम ने सबसे पहले लिखने का वादा किया था, वह भी मौन है। प्रगतिशीलता-विहीन अक जा रहा है।

तुम्हारा रामविलास

बादा
१-१-५८
सवेरे पहर

प्रिय डाक्टर,

नये साल की बधाई लो। इस वक्त सवेरे का सूरज बादलो का लिहाफ ओढ़ कर अपने आसमानी घर में शायद चाय पी रहा है। वहां कोई पकौड़ी बनाने वाला या मुगौड़ा बनाने वाला नही है, इससे वह केवल चाय पी रहा होगा। अगर बादल जरा भी कटा तो वह फौरन धरती की ओर मुंगौड़ेवाली की दुकान तक आ जायेगा।

अपने राम ने चाय पी है। एक मठरी खायी है। रेडियो का आलाप सुनता

1. पुस्तक—सन् सत्तावन की राज्यक्रांति।

रहा हूं। 'लीडर' पर निगाह डाल चुका हूं। घड़ी में चाभी भर चुका हूं। २० मिनट सुस्त थी उमेठ कर रेडियो से मिला चुका हूं। बच्चे खेल रहे है। घर में औरते चूल्हा को गरमाये खुद गरम हो रही है।

जनाब ने भी डट कर चाय पी होगी। अब तो पुस्तक लिख चुके हो इसलिए खाली-खाली महसूस कर रहे होगे। तभी बच्चू कविता की ललक से लहक रहे हो। मैं साफ कह दू कि इधर मैंने एक पंक्ति भी नही लिखी। लिखू कैसे? वह तो बेचारी इतना अवकाश ही नहीं पाती कि मेरे पास आ सके। देख नही रहे हो कि उसकी कितनी छीछालेदर हो रही है। साहित्यिक-तीर्थों के नये-पुराने पंडे उसे वलात पकड़ कर कमरों के अन्दर बद कर लेते है और उसमे एक-न-एक नया घोषणा-पत्र लिखवा लेते हैं। वह उन बहसों के धुआधार में कुछ ऐसी खो जाती है कि उसकी संपूर्ण सत्ता अंडाकार हो जाती है। न उसका कोई अंग दिखता है, न उसकी सांस चलती है, और न उसका सौन्दर्य-बोध मिलता है। साहित्यकार-सम्मेलन मे भी शरीक होने गया था। इस आशा मे गया था कि वहा जा कर कविता की [को] विदा करा लाऊंगा, पर जनाब वह तो आने की जुर्रत ही नही करती। कहती थी, अब मैं हजारों की हूं। मैं नया-नया रूप संवार कर चलूगी। अब मैं कभी गद्य की चाल चलूगी ··कभी भाषण की– कभी लड़खड़ा कर मजा दूगी। मैने भी कहा : देवी जी! डालडा खाने वालों का विश्वास न कीजिए। वह बीच राह में छोड़ देते है। अपनी रक्षा नही कर पाते, भला आपकी क्या रक्षा करेगे?·· वह चुप रह गयी। मुस्कराती रही। मैंने भी कह दिया : खुदा हाफिज।

वहां (प्रयाग मे) जो देखा तथा जो सुना वह सब बखान करने की ताकत के बाहर है। मतलब यह नही है कि वहा कुछ सार तत्व नही था, न यही मतलव है कि होहल्ला मात्र रहा। अजी, जनाब। आपकी गैरहाजिरी से वहा कोई कमी नही रही। बल्कि लोगो मे [को] खुल कर बोलने की छूट थी। शायद तुम होते तो १८५७ का अपना कमाल दिखाते। बहरहाल, बहुतो को आपकी यानी तुम्हारी कमी महसूस होती रही। अच्छा-खासा भरत-मिलाप रहा। इसका यह तो महत्व है ही कि नये-नये सूत्र बधे, नये-नये रास्ते खुले कि अपना-अपना बंदर लेकर, सबको नाच दिखाते हुए, डुगडुगी बजाते चलो, ताकि साहित्य देवता प्रसन्न होकर नयी-नयी पुस्तकों की बिक्री का क्षेत्र बढ़ाते रहे। ठोस काम तो ऐसे मेलो में कुछ हो ही नही सकता : ठेंगा दिखा-दिखा कर ठुमकना ही होता है। बाद को कुछ सोच विचार की प्रेरणा मिल जाती है। जो लेखादि वहां पढ़े गए वह छिछली रक़ाबियों से जैसे छलके-उछले पड़ रहे थे। मुझे समस्याएं तो, एक-से-एक, न जाने कितनी-कितनी वहां चलती-फिरती नज़र आयी मगर ऐसे नौजवान के दर्शन नही हुए जो उन्हे रद्दा मार कर पानी कर दे और जीवन और काव्य को सहज एक कर दे। एक बात बहुत बड़ी हुई। वह यह थी कि उस सारे सम्मेलन में श्री सुमित्रा-नंदन ने ही (कवि

गोष्ठी मे) परशुराम को परास्त किया। वैसे तो वह बहुत शरीफ पडते है। लेकिन यार, वह इतने करारे तमाचे दिखा कर सही बात बोल रहे थे कि अपने वकीलराम को बहुत मजा आया। हम तो कृतार्थ हो गए। उन्होने सामाजिकता से बहिष्कृत काव्य और साहित्य की सत्ता को अस्वीकार किया। कविता और जीवन को समानान्तर ले चलने वालों पर तीखी चोट की उन्होने। भारती-भुलावा कुछ यही था। मगर पत ने उनकी पतंग काट दी। युग का साहित्य जगल के कोने मे रचा हुआ नही होता। और न वह अन्तर्मन मे उगला हुआ वैयक्तिक विकार होता है। साहित्य को भी समाज के डाल की ज़रूरत है। यही था उनका सारगर्भित भाषण। अन्य गोष्ठियो मे मै था भी नही। जल्दी ही चला आया था।

अब अपनी १८५७ की पाडुलिपि भेजो प्रतीक्षा है। जरूर पढ़ूगा। देखना है कि तुमने क्या और कितना लिखा है और वह कितना पल्ले पडता है। ख्याल तो यही है कि तमने जम कर कलम चलायी होगी। जल्दी भेजो। इन्तजार है।

मशी आये थे प्रयाग। वही दफ्तरी और सभाई बातचीत रही। न जाने क्यो सामने खल कर नही उबल पडता। मुझे ऐसा लगा था कि जैसे वह अन्दर से नहीं बोल रहा। न जाने कहा क्या हो गया है कि वह पहले सा इसान नही मालुम हुआ। पर अभी उसे मेरी ओर से कुछ न कहना। उसे बुरा लगेगा।

श्री चंद्रवली भी आये थे। वह तुम्हारे 'समालोचक' के लिए लेख लिखने को कह तो रहे थे। पर इधर कविताओ के अनुवाद मे अधिक जुटे है। फिर तुमने उनसे ऐसा लेख मागा था कि उनका कचूमर ही निकल जाता। बडा पढना-सोचना पडता।

कमलेश्वर के उपन्यास पर कुछ लिखना अभी असम्भव है। समय कम अक्ल थोटी है। फिर कभी। नागर जी बीमार है। मुशी कह रहे थे। वरना वह तो सबसे पहले लिखते। मुझे खेद है कि प्रगतिशीलता विहीन अक जा रहा है। कब तक छप कर आयेगा ? देखना टकसाली रहे। पिलपिला न हो। अभी से बधाई। एक प्रति —मेरी पुस्तक की भतीजे को दे दो।

अरे हा, सब लडकियों को मेरा बहुत-बहुत प्यार। सयाने बच्चो को भी सलाम। ललित साहब को आदाब।

तु०
केदार

१२ अशोक नगर,
आगरा
३०-१-५८

प्रिय वकील साहब,

आपका कार्ड मिला। आपकी उम्र सौ साल बढ़ी, यह जान कर परम प्रसन्नता हुई। अब आप किस पन्ने तक पहुँचे ? कचहरी फुर्सत लेने दे तो एक बार जरूर पढ़ कर अपनी राय लिखियेगा।

यहां २५ जनवरी को—वसंत पंचमी और निराला जी के जन्म दिवस पर—'समालोचक' का उद्घाटन-समारोह सफल सम्पन्न हुआ। वृन्दावनलाल जी वर्मा ने सभापतित्व किया। बाबू गुलाबराय ने उद्घाटन किया। आगरे के पत्र-कार-प्रोफेसर-साहित्यकार, एम० पी०— सभी उपस्थित थे। उपस्थित सज्जनों को पत्र की एक-एक प्रति भेंट की गई। दो-एक दिन में तुम तक भी पहुंच जायगा।

हां, जनाब कविता लिखूंगा लेकिन इस हाथ दे उस हाथ ले —का सौदा होना चाहिए। पहले आप 'समालोचक' के लिए किसी उम्दा से विषय पर लेख भेजिये। उसके बाद मैं आपको कविता भेजूंगा। पहले अंक में हमारे सभी बंदा परवर दोस्त खामोश रहे। नरोत्तम के अलावा किसी की खामोशी जायज न थी। आप भी अपनी नाजायज़ हरकत से बाज़ आइए और दिमाग को जरा जुम्बिश देकर Prose फर्माइये।

अबकी जाड़ा यों ही रहा। दो दिन हुए कुछ यू ही बूदाबांदी हुई थी। उससे ज़रा खनक पैदा हुई, धूप फिर अच्छी लगने लगी। धूप छांह में बैठे तुम्हें खत लिख रहे है।

बाल बच्चो को राम राम—

तुम्हारा
रामविलास

बांदा
८-३-५८

डियर,

इतना गुस्सा कि जैसे हम दुश्मन हों। खैर, माफ करो न। जब कुछ लिख ही नही पा रहा तब कैसे कुछ भेजूं। फिर तुम्हारे पत्र के लिए कुछ परिश्रम से काम करना पड़ेगा। न तो यहां पुस्तकें है, न मेरे पास उतना 'भेजा' है। जैसा कहो वैसा करूं।

लेकिन धैर्य रखो। जरूर कुछ-न-कुछ भेजूंगा। विलम्ब है, अंधेर न होगी।

यह पत्र न लिखता मगर मारे डर के, कि कहीं और न खफ़ा हो जाओ, लिख, रहा हूं।

बन्दा परवर क्षमा बड़ेन को चाहिए। आप मौन तोड़ें। हम सिर झुकाये खड़े हैं।

कविताएं बन पडी है। भेज नहीं रहा कि कही आक्रोश में उन्हें भी बन्द ही न पड़े रह जाना पड़े।

पत्नी पुत्रादि चैन से नही है। कोई न कोई कष्ट सबको है। मेरी तो मै ही जानता हूं। एक पत्र भेज तो दो जल्दी से।

वह नुस्खा मेरे पास नही है जो तुम्हें प्रसन्न कर दे। वह तो चंद्रबली सिंह को मालूम था, उन्होंने उसी का प्रयोग किया है। तभी तुम पसीजे थे।

तु० सस्नेह
केदार

बांदा
१३.३.५८

मेरे डाक्टर,

पोस्टकार्ड आया। खैर-खबर मिली। नाराज नही हो। यह विश्वास हो गया है।

"समालोचक" का दूसरा अंक नही मिला। शायद न मिले। आपके सह सम्पादक जी का पत्र लेख के लिए आया था। मैंने उत्तर तक नही दिया था। भला वे भी तो इंसान हैं। जरूर अनसाए होगे। जब कलम कुंठित रहती है तब सभी अपने कुठार लेकर धमकाते है। पर यह तो फाग का छीटा है। "बुरा न मानो होली है।"

अपनी कविताओं के अंग्रेजी अनुवाद भेजूगा, टाइप करा कर। देखना क्या कमाल किया है उस अनुवादक ने जो मुझे २० वर्ष बाद बांदा के एक छोटे से घर में अज्ञात पड़ा मिल गया है। अभी तारीफ क्या करूं। स्वय निर्णय करना। जो दो कविताएं तुमने सूरदास की भेजी थीं न उनका भी उन्होंने अनुवाद कर डाला। खूब बन पडी है। चन्द्रबली सिंह को भी भेजना है। तभी उन्हे भी भेजूगा। याद है न, "कारे भारे जूथ जलधर के" व "नारि को आंचल लै लै पौंछत है श्रमकन।"

"निराला" गूंज रहे है "नील डोर का हिंडोर चढ़ी पैग रहता"; "नाचता पलकों पर आलोक" + "उसी का नील-शयन यौवन" + "खुल गये गीतों के आकार" आदि-आदि। पत्र देना डियर।

तु० केदार

१२ अशोक नगर,
आगरा
८-४-५८

प्रिय केदार,

२० मार्च को मैं सपत्नीक दिल्ली जाने वाला था। अचानक पत्नी के अस्वस्थ हो जाने से दो दिन तक रुक गया और २२ मार्च को अकेले ही गया। वहा 'आज-कल' के विशेषाक के लिए स्वर्गीय बरान्निकोव पर लेख लिखने का वादा करना पडा। उनके सबध मे सामग्री लाया। यहा मेरे छोटे भाई अवस्थी की पत्नी बी० ए० परीक्षा की तैयारी के लिए टिकी हुई थी। २९ को लेख रवाना किया। ३१ को परीक्षार्थिनी ललित के साथ जयपुर गई। ५ अप्रैल आगरा यूनिवर्सिटी की परीक्षा पुस्तको के अक भेजने का अतिम दिन था। कापिया निपटाई। ६ ता० को मेरे साथ १५ वर्ष से काम करने वाले अग्रेजी विभाग के सहयोगी तारा सिह का सहसा हृदय पीडा से देहात हो गया। कल उनका दाह कर्म हुआ। आज मै लगभग महीने भर के पत्रो का उत्तर देने बैठा हू। आगे से मै तुम्हे इस तरह कैफियत न दूगा और न तुम फिर कभी मेरे खफा होने की बात लिखना।

अग्रेजी अनुवाद मुझे अच्छे नही लगे। शायद मूल हिन्दी कविताओ की तुलना मे न जँचते हो। तुम अपनी कविताए भेजो। यहा परिवार स्वस्थ है। आशा है, तुम्हारी पत्नी और पुत्र अब ठीक हो गे।

तु० रामविलास

बादा
११-६-५८
रात, ९ बजे

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिला। हाथ मे आते ही जैसे गुलाब खिल गया। क्या खूबसूरत लिखा-वट है। लेकिन गुलाब की महक नही है। तुमने अपना दिल तो खोला ही नही। केवल शब्दो के पख खुले है। भीतरी रग और राग बोलते ही नही। अच्छा तो लो मैं ही कुछ काव्य-रस प्रवाहित करता हूं।

मुझे गर्व है उस केरल पर
पहली बार जहां खग्रासी तमचर हारे
भीति भार के अंधकार के ढहे कगारे
सूर्यमुखी आलोक-गरुण ने पंख पसारे

दहक उठे दाड़िम-विद्रुम-द्रष्टा अंगारे
उस केरल पर
वहां मुक्ति का केतन फहरा
धूसर धरती पर सोने का सागर लहरा
उस केतन-सा लहक रहा है जन-मन-जीवन
उस सागर-सा लहर रहा है जन-मन जीवन
मुझे गर्व है और हर्ष है उस केरल पर
आशा के अरविंद खिले है जिस केरल पर

तुम कहोगे ही कि कविता बोझिल है। डियर, बोझिल है जरूर है। लेकिन शिल्प मे विषय-वस्त जो भरपूर है। भाषा भी दुभाषिये द्वारा समझ मे आने वाली है। पर यह तो मेरे सस्कारो का स्वरूप है। मै करू तो क्या करूं!'

अब दूसरी चीज लो। यह तो बहुत सरल भाषा की कृति है।

तुम मेरी आवाज छीन लो
चाहे मेरा हृदय छीन लो
लेकिन इस धरती के
मेरे फूल न छीनो
जिन्हे देख कर मैं मनुष्य हूं
और चूम कर मै आत्मा हूं—
खिली चादनी रातो के
भीतर से निकली,
धुली, नहाई
हंसती, गाती और बोलती।

बस, हो गई। बहुत छोटी है। तुम भी कहोगे कि यह भी कोई कविता है। न हो, मेरी बला से। लेकिन ऐसा कोई अनुभव तो करे। मैं समझता हूं कि यह सीधी सादी कुदरती कविता है। जी हां आपको एतराज न होना चाहिए। ज़रा प्यार से इसे पढो और फिर कुछ कहो-सुनो।

अच्छा लो एक तीसरी रचना। तुम भूखे होओगे। रोटी की ही बात सुनो।

रोटी के पैदा होते ही
बुझी आंख में जुगनू चमके
और थका दिल
फिर से हुलसा;
जी हाथों में आया,
और होठ मुसकाये,

घर मेरा वीरान वीरान[1] पडा
आबाद हो गया ।

कैसी है रोटी ? बडी मजेदार है न ! अब भी पेट न भरा होगा। अच्छा तो लो चौथी सुनो—

तुम भी कुछ हो
लेकिन जो हो
वह प्रकाश मे लगी गाठ हो
जिमको कलिया खोल रही है
पेडो के भीतर मे निकली ।

यह नम्हे पसन्द न आई होगी । प्रकाश मे गाठ लगने की बात गले मे न धसेगी। कलिया भी गाठ कैसे खोलेगी ? सब ठीक है । पर हम इसका उत्तर न देगे। हम कवि है न ? तुम लोगो ने सिर पर चढा दिया है न ? अब हमारी बेवकूफी भी देख लो । मगर जनाब समालोचक जी यह सच्ची कविता हे । यह रोटी खाने के वाद, भरे पेट मे निकली है। इसमे वह कविता है जो किसी कवि की कविता मे नही है। और अगर यह कूडा भी हो तो हमे दाद दीजिये कि हम ऐसी चीजो की भी खूब सराहना करा लेते है और नयी कविता वालो के सिर झुकवा लेते हे।

मै भूल गया कि तुम अवकाश से हो। इस समय तो empty mind is devil's workshop की कहावत के शिकार होगे । मै तुम्हे इसी devil's workshop की कविता भेज रहा हू । वह है —

कितना प्रिय हैं शशि का दर्पण
जो गिरि गन पर -
वन पर गिर कर,
और हवा के झोके खा कर
कभी न टूटा
वना हुआ हे पूर्ण अनूठा—
लिये हुए तसवीर हमारी
और तुम्हारी !

कैसा बचकाना ख्याल हे । रोमाटिक भी नही है। केवल कुलबुलाहट है। लेकिन देखो तो यार । अभी हम जवान हे । इस अधेड उम्र मे भी २४ के है। अगर यह भी बुरी लगे तो गाली न देकर अपने इस विगडे दोस्त को सही रास्ता दिखा देना । क्या करू, कलम तो हे । बेकाबू हो जाती है ।

अच्छा तो चलते-चलते एक और बेवकूफी देख लो । वह यो है—

---

1. यह 'वीरान' असावधानीवश लिख गया प्रतीत होता है । [प्र० वि०]

हस है आकाश,
धरती सेब है,
और यह दोनो सनातन सत्य है
आदि मे थे और अब भी आज है
और आगे भी रहेगे
शेष चाहे कुछ नही बाकी रहे।

यह बुद्धि विपरीत हंस और सेब है। इन्हे देख कर, छू कर मजा लो। मगर ज्यादा अर्थ न भरना वरना हंस कुछ और हो जायगा और सेब मिल्टन का सेब हो जायेगा —पतन का कारण।

अब मज़ाक हो चुका।

अब बताओ कि यह कविताए है भी या नही ? और अगर है तो क्यो और अगर नही तो क्यो नही ? फिर ऐसी कविताओ का मूल्य क्या है हमारे इस युगीन जीवन मे ? मुझे ये प्रश्न बहुत सताते है। जवाब दे लेता हू परन्तु फिर भी यही प्रश्न उठते रहते है ? सविस्तार उत्तर दोगे ? बीबी [बीवी] प्रयाग गयी है। अकेले है। कचहरी है और कविता का चरखा है। जय हो विरस और सरस का यह योग और भोग।

समालोचक मिल गया है। लोगो की शिकायत है कि गेट अप नही सुन्दर। कुछ इन लोगो का भी ख्याल रक्खो। त्रिलोचन पर लेख चन्द्रबली ने भेजने को कहा था। न भेजा क्या ? अभी तक नही निकला। क्या कारण है ?

अपने राम अमृतलाल नागर का व्यग [व्यग्य]-विनोद enjoy नही कर सके। न जाने हममे कुछ कमी है या उनमे। क्या घटिया माल ला कर सामने पटक दिया है। वह तो जानदार आदमी है। उन्हे लिखो कि कुछ करतबिया पैतरे दिखाये। इस घिसिर-पिसिर [से] कुछ काम न चलेगा। इस बार तुम्हारा भी कोई ठोस लेख नही है। 'कला का माध्यम' जैसा देते चलो। मै पढ कर अपनी अकल दुरुस्त करता चलता हू। पता नही वह दुरुस्त अकल मेरी कविताओ से भी झलकती है या नही ?

दिल्ली घूम आये। चलो अच्छा किया तुमने। हम तो भाड के चने है और उसी के लिए बने है। यहा कहा सैर-सपाटा बदा है। घर से कचहरी कचहरी से घर। फिर बिस्तर। यह भी खूब सेट जीवन है। जरा भी तबदीली नही है। मगर यह, कोई अच्छा जीवन नही है। शायद इस तरह पडे-पडे मै पुराना न पड जाऊ ? पर किया भी क्या जाए ? हम तो कील है कुरसी मे लगे है। जब वह टूटेगी तब शायद फेक दिये जाये। अभी तो भाग्य पलटने की कोई सूचना नही है।

'हाईपीरियन' के आगे कुछ नही सुहाता। बडी गजब की कविता है। वाह रे कीट्स ! हजारो वर्ष तक यह दकदकाती रहेगी। कभी भी मैली न पडेगी। 'राम की शक्तिपूजा' कही नही ठहरती। यह अन्तर्द्वन्द्व और यह उसका निरूपण

कमाल का है। निराला जी 'तुलसीदास' में कुछ टक्कर लेते हैं, मगर कल्पना के बल पर।

तु० केदार

१२ अशोक नगर,
आगरा,
१७-४-५८

डियर केदार,

तुम आदमी तो जीवट के हो, लेकिन साहित्यकार थर्डक्लास होते जा रहे हो। इस साल सरसों नहीं देखी क्या ? कहां परसाल की तुम्हारी कविताएं और कहां ये ! ?

केरल वाली कविता—विषय वस्तु दिमाग़ी, इश्तहारपंथी, रूप—छायावादी।

तुम्हारे संस्कार दुरुस्त है। जैसे तुमने उम्दा कविताएं न लिखी हों !

आवाज़ छीन लो—यह तो बताओ, छीनने वाला कौन है ? और जब हृदय छिन जायगा तो फूल और चांदनी का रस कौन लेगा ? क्या बेतुकी हांकी है।

तुम्हारी रोटी वाली कविता अच्छी है लेकिन एक Dramat.c motif मांगती है। तस्वीर बननी चाहिए, सूक्ति काफ़ी नहीं है।

'तुम भी कुछ हो'—बढ़िया कविता बनते-बनते रह गई। कली की गांठ खोलता है प्रकाश, न कि विपरीत रति के नियम से कलियां प्रकाश की गांठ खोलती हैं। तुमने अपनी कमजोरी का ज़िक्र ख़ुद ही किया है—"प्रकाश में गांठ लगने की बात गले से न उतरे गी।" लेकिन कली के दिल में गन्ध की गांठ लगने और खुलने की उतरे गी, यह लिखना तुम भूल गये। हां, यह कविता कुछ पंक्तियां और चाहती है : चित्र पूरा करने के लिये।

चाँद-दर्पण—आधी रीतिकालीन, आधी प्रयोगवादी। अधेड़ उम्र में २४ के न बनो, नहीं तो बच्चू बुढ़ापा ऐसा जल्दी दबाये गा कि अधेड़पन जवानी से जल्दी बीत जाय गा।

हंस है आकाश, धरती सेब है।

'नया पथ' है बत्तख़, 'समालोचक' फरेब है।

बहरहाल तुम लिखते जाओ। इसमे जी हल्का हो जाय गा और किसी बिन धूप धरा पर उतरे गी। तुम बुनियादी तौर से शायर हो लेकिन आलोचना में कच्ची अकल के होने से भले बुरे की परख नहीं कर पाते।

हिन्दी के जिस पत्र का गेट अप तुम्हें पसन्द हो, लिखे [लिखो]; उसी के Artist

से डिज़ाइन बनवायें। त्रिलोचन पर ठाकुर चन्द्रबली सिंह का लेख अगले अंक में आ जाय गा। 'कला का माध्यम' केवल तुम्हारे लिये ठीक है। यह पत्र तो साधारण पाठकों का है। सुसरे, राम की शक्तिपूजा के लिए लिखा है, हाइपीरियन के आगे कहीं नहीं ठहरती। तबियत होती है, बांदा आ कर तुम्हारे कान पकड़ कर दो तमाचे लगा दूं। चुग़द। दुख की अभिव्यंजना दोनों में है, निराला में Tragic Sublimity है, Keats में विषाद से संघर्ष करने की निर्बल आकांक्षा मात्र। forest on forest की background से मिला लो—है अमानिशा··अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल। तुम अपनी Madam को तीर्थराज से जल्दी बुला लो। इस mood में नागर नायिकाभेदी[1] न जँचे तो आश्चर्य नहीं।

तु० रामविलास

इस अंक में दुष्यन्त पर तुम्हारा लघु निबंध दिया है। कुछ और गद्य फरमाओ न। Keats के चित्र सौंदर्य पर ही सही। रा० वि०

बांदा
१८-४-५८
रात ८ बजे

प्रिय डाक्टर,

कई दिन की प्रतीक्षा के बाद लिफाफा [अंतर्देशीय] मिला। पत्र पढ़ कर अपनी पीठ सहलाने लगा। तुमने खूब कस कर घूसे मारे है। मगर मुझे दुःख कदापि नहीं हुआ। यह Schooling प्रिय है। मुझ जैसे कूढ़मग्ज़ को इसकी हरदम जरूरत रहती है। केरल वाली कविता पर तुम्हारी बात पूरी ठीक है। लेकिन डियर, केवल 'दिमागी इश्तहारपंथी' है यह कविता ऐसा विश्वास नहीं होता। तुम्हें यह उसकी शब्दावली से आभास हुआ है। इस पर बहुत कुछ कहा जा सकता है। मैं प्रत्येक कविता में जूझता हूं और असफल हो कर ही कुछ सीख पाता हूं। यह मुझे कुछ-कुछ खटक रहा था कि शायद सरलता को छोड़ कर मैं ईमानदारी से दूर जा रहा हूं। मगर मेरा दिल इस कविता में भी साफ बोलता है। उसकी आवाज मेरे शब्दों के अन्दर घुट नहीं पायी। उससे स्पष्ट जाहिर हो जाता है कि मेरा माध्यम ठीक नहीं है। इश्तेहारबाज़ी न कहो मेरे दोस्त। दिल धक्क से हो जाता है।

"आवाज" छीन लो वाली कविता पर भी तुम्हारी टिप्पणी तर्कसंगत है। आवाज तो दुःशासन ही छीन लिया करता है। अगर उसे भी न मानो तो अपने

1. नागर नायिकाभेदी—अमृतलाल नागर, 'समालोचक' में नायिका भेद पर लिख रहे थे।

चारों ओर के विषाद से छीना जान सकते हो। तुम कहोगे कि 'विषाद' के लिये 'तुम' क्यों ? केवल रूप खड़ा करने के लिये उसको ऐसा पुकारा है मैने। जैसे वह कोई व्यक्ति हो। हां 'हृदय छीन लो' की बात खटकती है। हृदय के स्थान पर 'विभव' कर दो। 'आवाज' की जगह 'अभिमान' कर दो। अब तो तर्क ठीक है न ? यह विवेक से काम न लेने का दुष्परिणाम है। भावुकता बेवकूफी का रूप धारण कर लेती है। अब इस प्रकार पढ़ कर लिखना। कैसी रही ?

"रोटी" वाली रचना में Dramatic Motif नही है। यह भी आफत है। अब इसे कहां से लाऊं ? तस्वीर बनानी चाहिए। यह भी संकट है। फिर सोचूंगा ! अभी सूक्ति का लांछन नहीं हटाये हटता।

"तुम भी कुछ हो" को मैंने यों कर दिया है।

तुम भी कुछ हो,
लेकिन जो हो
वह कलियों में
रूप-गंध की लगी गाठ हो
जिसे उजाला खोल रहा है
सूरज के लोचन मे निकला।

विपरीत रति वाली बात भी तुमने खूब लिखी। मजा आ गया अपनी बेवकूफी पर। यह तो लिखो कि इस के चित्र [को] पूरा करने के लिए और क्या चाहिए।

चांद दर्पण —वाली रचना को तुमने यो ही धर पटका है। बेचारी कैसे जीतती। फिर भी वह अपनी जगह ठीक ह।

"हंस है आकाश···धरती सेव है" का अगला बंद तुमने उसी तरह पूरा कर दिया है जैसे आलम के दोहे की अगली पक्ति शेख ने पूरी कर दी थी। कहो दोस्त कैसी कही ?

हम यशपाल नही है कि घूसों से डरें और तलवार ले कर निकल आयें। गलती को मानना पड़ेगा और उसे दूर करना पडेगा। आलोचक मे खौफ किस बात का ? वह तो गुरू [गुरु] है अपना।

निराला में Tragic Sublimity है। मगर दोस्त वह मार्के की अनेक पंक्तियां नहीं है जो Hyperian में है। देखो न। क्या काव्यात्मक वर्णन है आदि से ले कर अंत तक। अमानिशा वाली पंक्ति ले कर तुम Keats से आगे रखना चाहते हो निराला को। मैं इन पंक्तियों का पहले मे कायल हूं। परन्तु इन्हीं के बल पर Hyperian के सौन्दर्य पर मुग्ध न होना वाजिब बात नही है। Keats में विषाद से सघर्ष करने की निर्बल आकाक्षा मात्र भले ही हो पर वह भी इतनी मूर्तिमती हो कर, गम्भीर हो कर, समस्या-मूलक हो कर उभरी है कि कुछ कहा नही जा सकता। Hyperian और Saturin के मनोवेगो को देखो। दोनो के चित्रण मे Keats ने

कितना साम्य रखते हुए भी कितना गहन अन्तर प्रकट किया है। Saturn पर स्वयं विपत्ति पडी है। वह अनुभूतियो से देखता सुनता और बोलता है। Hyperion केवल पर दुःख कातर हो कर और अपने शकाकुल हृदय से एक दार्शनिक की तरह अनुभव करता है। चित्र देखो न · मारे गुस्से के Saturn का वस्त्र एडी मे बाहर निकला जाता है। खूब है यह Suggestion. निराला जी की कविता मे दार्शनिकता भले ही हो। वह कीट्स से टक्कर नही ले सकती। क्या राम का अपने तीर से अपने नयन निकालने की कल्पना केवल मात्र सूक्ति नही है और कोरी सतही बात नही है? जरा स्पष्ट लिखो कि वह कवि जो "अमानिशा" जैसी पक्ति लिखता है कैसे यह चलताऊ बात लिखता है? राजीव नयन से प्रेरित हो कर ही यह लिख सका है। मै अभी नही समझ पा सका कि Keats से निराला क्यो अधिक महान है। दोनो की वे दोनो रचनाए तुलना मे रख कर देखो। Keats बाजी मार ले जाता है। प्रारम्भ ही देखो दोनो का। Keats साकार कर देता है चित्र। निराला की रचना का प्रारम्भ कोई चित्र नही देता। वहा तो शब्दो का गर्जन-प्रहार है जो जीभ को दर्द देने लगता है।

कीट्स पर मै जरूर लेख दूगा। मेरा प्यारा कीट्स। परन्तु निराला कम महान नही है। यह न समझना कि मै किसी गर्व मे या गरूर से ऐसा कह रहा हू कि कीट्स महान है निराला से। नही। केवल भावविभोर हो कर ही ऐसा कहने को बाध्य हू। मै तो चाहता हू कि तुम बादा आकर मेरे कान उमेठो। मगर आओ तब तो न? लो देखो निराला पर मेरी कविता.

स्वर समय के, विभव भर के
दहे दव मे दिये तुमने
नदी-नद-से अमृत-मधु के
भरे-भव मे, पिये हमने
अमर तुम हो, अमर कविता
अमर हम हे लिए सपने
मरण मे भी हृदय झकृत
शीश उन्नत किंए अपने

अब बोलो मुक्के महाराज शर्मा जी। है न उम्दा चीज। अब दाद न दोगे। कही देखी है ऐसी सुन्दर रचना अपने कवि पर। एक तुमने लिखी थी न। बड़ी लम्बी चौडी। मार हाथी और सियार भर दिए थे। इस छोटी-सी चीज़ मे देखो कितना बल नही है। मगर मै जानता हू कि अकल के पैने दाँत मेरी इस रचना का भी पेट फाड़ देगे। लेकिन कोई परवाह नही है। इससे बढ़िया फिर लिखूगा। मेरी एक असफलता सफलता को लायेगी। यह विश्वास है।

दूसरे पत्र में कुछ वैसी ही उम्दा कविताए भेजूगा। परसाल की तरह की। अब

तो यह कागज खतम हो रहा है। जगह नहीं है। मेरा दाहना हाथ भी कमजोर है जैसे मेरी अकल। इसी से यही 'समापत' करता हूं।

मादाम अभी नहीं आने की। वहां मजे में है। यहां कष्ट होता। तकलीफ से बचना हरेक का जन्मसिद्ध अधिकार है। औरत तो इसकी सर्वप्रथम अधिकारिणी है। विशेष कर इस अवस्था में।

सस्नेह तु०
केदारनाथ

बांदा
३०-४-५८

प्रिय डाक्टर,

मैंने लिफाफा भेजा। उत्तर नहीं आया। आज तक इन्तजार करता रहा। जब मन न माना तब पत्र लिखने बैठ गया। उत्तर तो दे दो। तुमने लिखा था कि उत्तर जल्दी दोगे। उत्तर न देने का क्या कारण है?

"समालोचक" का इन्तजार है। घर में सब कुशल-मंगल है। मादाम प्रयाग हैं। बेटी परीक्षा दे कर घर आ गई है। मजे में है। उसका बेबी भी अच्छी तरह है। आजकल गायें और भैंसें दूध नहीं देतीं। गरमी भी खूब है। आगरा कम गरम न होगा। बनारस जाने का मन हो रहा है। तुम भी चलोगे? लिखो, कब तक? ललित का परीक्षा फल जरूर लिखना। बेटियों को प्यार। लड़कों को स्नेह।

तुम्हे यह पत्र, और कुछ नहीं।

तुम्हारा ही
केदार

बांदा
७-५-५८

प्रिय डाक्टर,

पोस्ट कार्ड मिला। यह मालुम हुआ कि श्रीमान लखनऊ आ रहे हैं १३/५ को। मैंने अपनी डायरी देखी तो उसने अपने सीने पर चढ़े तीन केस दिखा दिए। मैं धक्क से रह गया। मजबूरी है। हां, इतने निकट आ कर यदि एक दिन को बांदा चले आओ तो भेंट-मुलाकात हो जायेगी फिर जैसी तुम्हारी सनक। बनारस भी जून के महीने में जाऊंगा। अभी नहीं। बांदा से तबियत ऊब रही है। यही कारण है।

यहां गरमी रानी दिन में धूप की जलेबी बनाने लगी हैं। खूब मरण है।

प्रयाग गया था। वहा श्री नरेन्द्र शर्मा से भेट हुई थी। पत जी के यहा ठहरे थे। पत जी भी थे। मौज मे है। तुम्हारा भी नाम आया था।

सस्नेह तु०
केदार

बादा
२७-५-५८
डियर,

पोस्ट कार्ड मिला। "गदर के फूल"[1] पढ़ूगा जब इलाहाबाद जाऊगा और वहा से खरीद लाऊगा। यहा मिलना असम्भव है। तुम्हारी सलाह न मानूगा तो क्या गधा बना रहूगा।

जरूर लिखिए सन् सत्तावन की कहानिया। वह पी० पी० एच० मे प्रकाशित होगी यह भी अजूबा अचरज है। क्या वह ऐसा जरूरी काम करने पर तत्पर है? पिछला इतिहास तो कुछ और ही कहता है। खैर, बुद्धि आयी तो।

ज्यादा खर्च हैं। मास्को न जाओ, कोई बात नही है। यह तो फिर कभी भी हो जायेगा। जेब कतर कर केवल पत्नी ही, आज के युग मे पायजेब पहनती है। हम कठिन कमाई करने के बाद यह ऐयाशी नही कर सकते कि घूमे। वह तो लेख लिख कर भी अपने विचार प्रकट कर लोगे। अल्मोडा तो जा ही सकते हो। वहा न जाना कजूसी होगी। मगर हिस्टारिकल मैटीरियलिज्म लिखने पर उतारू हो तो जरूर न जाओ। पुस्तक दोगे तो समझ का मसाला सब को पढने को मिलेगा।

प्रिय ललित पास हो गए मैने अखबार मे देखा था। तुमने तो सूचना भी न दी। अपने पत्नी वाले गृह मे अभी विरह जटायु है, इससे उनका दर्शन दुर्लभ है। बेटा भी प्रयाग है। हम नही लिख रहे।

तु० केदार

बादा
२७-५-५८
डियर,

एक पोस्टकार्ड भर गया तब यह दूसरा लिख रहा हू। जनाब को श्री केसनी-प्रसाद चौरसिया ने लखनऊ मे अपना अनूदित मेघदूत दिया था। उसे तुमने पढ़ा

1. गदर के फूल—अमृतलाल नागर की पुस्तक

होगा ही। बेचारा सीधा-सादा आदमी है। ज़रा स्नेह और ममता से कलम चलाना। उसने मुझे पत्र भेजा है कि डाक्टर साहब को लिख दू।

आखिर कैसा है अनुवाद ? मैने देखा तो नही।

मेघदूत 'जब बिल्कुल सरल भाषा मे हो कर जन-कठ मे उतर जाये तब जानो। अभी अनेको [अनेक] प्रयास होगे अनुवाद के। मै सस्कृत पढे भी नही हू। इधर 'हिन्दी रिव्यू' (बनारस वाला) मे ६ कविताए अनूदित हो कर छपी है। खजुराहो भी है। देखा ही होगा तुमने। तुम्हे अनुवाद अच्छे नही लगे थे। है न ? अब छपे हैं देख लेना।

सस्नेह तु०
केदार

बादा
१-७-५८
प्रिय डाक्टर,

मेरी पुत्री किरन आगरा यूनिवर्सिटी से इस साल हिस्ट्री मे एम० ए० के प्रथम वर्ष की परीक्षा देना चाहती है। वह हिन्दी मे उत्तर लिखना चाहती है क्योकि अग्रेजी मे उत्तर लिखना उसके वश की बात नही है। अब तुम यह लिखो कि क्या वह ऐसा कर सकती है ? साथ ही detailed पत्र भी दो कि उसकी ओर से कब और कहा और कितना रुपया भेज-कर फार्म इत्यादि मगा लेना पडेगा। Prospectus भी मगाना पडेगा। पुस्तके कौन-सी होगी ? मै उसे सब हाल तब लिखूगा जब तुम्हारा पत्र आ जायेगा।

मैं एक दिन बनारस गया २८/६ को तो वहा चन्द्रबली सिह न मिले इसलिए फिर बिना किसी से मिले लारी से उसी वक्त सवेरे प्रयाग को चल दिया। वह अपने घर गए थे। उन्होने मुझे २७/६ के बाद बनारस आने को लिखा था। आशा है कि अब तुम लोग शात मन होओगे।

सस्नेह तु० केदार

१२ अशोक नगर,
आगरा,
२१-७-५८

प्रिय केदार,

अब की चूक हुई। तुम्हारे कार्ड के बारे मे समय पर न लिख सका।

हिस्ट्री के पर्चों का उत्तर हिन्दी मे लिखा जा सकता है। फीस बगैरह कब भेजनी हो गी, इस बारे मे राजनाथ तुम्हे शीघ्र ही लिखे गे। कल मैने उन्हे और एक अध्यापक देवेन्द्र शर्मा को यह काम सौप दिया है।

इस महीने कालेज के काम मे बहुत समय लगा औसत ६-७ घटे प्रतिदिन कालेज मे। इधर अमृत नागर भी यही थे, इसलिए फालतू समय उनके साथ बीत जाता था। अब कार्य पद्धति नार्मल हुई है। यहा सब ठीक है। २६ जु० को दिल्ली जाऊ गा।

तु० रामविलास

बादा
२३-७-५८
शाम ४ : २०

प्रिय डाक्टर,

याद कर सके यही क्या काम है। मुझे विश्वास था और है कि तुम पत्र भेजो गे —चाहे देर हो या अबेर। आज मै तुम्हारे पास कुछ अपनी कविताए भेजता हू। लो देखो कैसी है।

१ सगमरमर का सबेरा !—
और उसकी मूर्तिया हम
मूक जडवत !
आह ! हमको
शस्य श्यामा छुए, चूम,
और भेट !

२. मै बादल हू—
आषाढी जामुन के रँग का,
लेकिन तप कर
मै बादल हो गया कनक का,
और तुम्हारा क्षत्र हो गया।

३. यह जो नाग
दिये के नीचे
चुप बैठा है,
इसने मुझको काट लिया है,
इसे काटे का मत्र

तुम्हारे चुम्बन में है;
तुम चुम्बन से मुझे जिलाओ !

४. लिपट गयी जो धूल पांव से
वह गोरी है इसी गांव की
जिसे उठाया नहीं किसी ने
इस कुठांव से

५. मिट्टी का यह श्याम-हरित तन
तरुवर !
इस पर बैठी नीले रंग की चिड़िया
गाती है नीले समुद्र का गाना।
मैं इस गाने में रहता हूं डूबा।
दुनिया ऊबी, मैं तो कभी न ऊबा !!

६. न दिन— न रात
आठो पहर
आयी याद जैसे लहर
और उस आइने को
—जिसमें तुम जरूर हो—
लेती है आह ! ऐसे छाप
जैसे हम दोनों का
होता है मिलाप !

७. मेरे मन का सुआ घुमक्कड़ बागीचों का,
हरी डाल पर नहीं—ठूठ पर आ बैठा है, –
जैसे पत्ता एक बचा हो गिर जाने से
पतझर में जो बोध कराता है सावन का
हरियाली जब फूट निकलती है पेड़ों से
बूढ़े वन में भी तरुणाई की उमंग से।
क्यों बैठा है ?—क्या बिसूरता सुधि में खोया ?
नहीं जानता है दुनिया का पंडित कोई।
उसके पंख हरे पत्ते है नहीं पेड़ के।
बाहर से वह सावन, भीतर से पतझर है।।

८. हे मेरी तुम !
बिना तुम्हारे—
जलता तो है दीपक मेरा
लेकिन ऐसे

जैसे आसू की यमुना पर
छोटा-सा खद्योत टिमकता !

९ हे मेरी तुम !
इसी सडक पर हम चलते हे रोज सबेरे !
इसी सडक पर चलते-चलते
हमे साल के साल हो गए,
तले हमारे जूते के बेहाल हो गए,
लेकिन चलना नही छूटता,
चलने का क्रम नही टूटता,
क्यो कि यहा के पेड वही--
पर फूल-पात की बनक नयी है
क्योकि यहा की वायु वही—
पर बार-बार की छुअन नयी हे '

१० धूप नही, यह –
बैठा हे खरगोश पलग पर
उजला,
रोएदार, मुलायम –
जिसको छू कर
ज्ञान हो गया है जीने का।

यह तो हुई कविताए !

अब आप पढिये और अपने विचार लिखिय।

इधर इसी तरह की अन्य कविताए भी लिखता रहा हू। आज दात म दर्द है। फिर भी जी नही माना। तुमसे बात करने को ललक उठा हू। तभी कविताओ से तुम्हे वाक्-मुखर करने बैठा हू। याद रहे कि पत्र का जवाब देने मे चूक न हो। मै जरा मोटी अकल का हू इससे खूब समझा कर लिखना। तुम्हारे निशाने अचूक है। अपनी कमजोरियो को जान कर उत्साह होता है कि उन्हे दूर करू। लेकिन यह सब होते हुए भी बार-बार गलती कर ही बैठता हू। कविता आती है तो जैसे रहा नही जाता। फिर जो लिख लो वही कई दिनो तक बहुत अच्छा लगता है। अपने मुह मियामिट्ठू बना रहता हू। मगर काव्य के गुण दोष इतने अधिक है और इतने सूक्ष्म है कि सहज ही क्या, घूर-घूर कर खोजने पर भ। मुझ अधे को नही दिखते। तभी तुम्हारी शरण लेता हू कि पारखी महोदय ! मेरी चीजे भी परख कर राय दो।

मौसम ऐसा है कि धूप नही है। आसमान एक ही श्याम रग से ढका है। बादलो के हाथी-घोडे, और बनते-बिगडते चित्र नदारद है। वह लोचदार लपक भी

नही है जो कटाक्ष की तरह गजब ढा देती है प्रेमियो पर। अभी-अभी कुछ बूदे झरी हे। आगन के पत्थरो पर उनके गीले स्वभाव व्यक्त हो गये हैं। वह छमा-छम भी नही है। सामने नल चल रहा है। बालटी भर रही है। पानी बोल रहा हे। आगन के कच्चे कोने मे पहले की कटी, रातरानी ने पत्तिया निकाल दी है। वह जरूर जियेगी और महकेगी। तुलमी थाले की तुलसी लम्बी हो गयी हे जैसे सयानी कन्या। तार पर उतारे हुए कपडे—ओलौती के नीचे-टगे है। कोई काला है। कोई सफेद। कोई अचकन है। कोई पाजामा है। हा 'बनियाइने' भी है—धुली, साफ, गोरी-गोरी। झज्झर पर गिलास उल्टाया है। पता नही कि पानी ठडा है या नही। अखबार मे पढा था सवेरे कि रूसी वालिटियर्स तयार हे नासिर के आदेश पर जाने को। क्या जाने क्या हो रहा है। स्वेज नहर के मामले मे U S A व U K चूक गये— मात खा गये थे। अब इस बार पहले ही पडाव डाल चुके है दोनो चौधरी। हम साधारण जन इसे देख कर गाव के लट्ठमारो की दलबदी की याद करने लगते है। वहा भी विरोधी अपने पालतू शेरो को बुला कर खून चटाते हैं और मौके पर जान लेते है। क्या यही है न तरीका! कल युद्ध के समय लिखी गयी पहले की अग्रेजी कविताए पढ रहा था। खूब है। मगर क्या उनका कुछ भी असर पडा वहा के तथाकथित शिक्षित सभ्य राजनीति क रहनुमो [रहनुमाओ] पर? शायद उन्होन उन्हे पढा भी नही। पढते ही क्यो? वह ऐसी रचनाओ को देखते ही नही। शायद वे समझते है कि कविताए तो बच्चो को अक्षर ज्ञान कराने के लिए तथा तीव्र बुद्धि बनाने के लिए पढाई जाती है। वह आदमी को अच्छा आदमी बनाने के लिए नही पढवाते। क्या मूल्य हे उन अमर रचनाओ का? बडा ही अफ-सोस होता है जब फिर युद्ध की आवाज गूजने लगती हे। सभ्यता और सस्कृति का सम्बध राजनीति से अलग कर दिया गया हे। प्रयास जरूर हो रहा है कि राजनीति छिनाला न करे पर बहुत ही कमजोरिया है इस प्रयास मे। अच्छा तो सलाम।

तु० केदार

बादा
२५-८-५८

प्रिय डाक्टर,

बहुत मौन हो। कारण क्या है? क्या पुस्तक लिखने मे जुट गये हो?

मैने 'रूप-तरग' पर एक समीक्षा (१३ टाइप पेजी) लिखी है। उमे मैने 'प्रति-कल्पा' मे छपने को भेजी थी। किन्तु वह लम्बी होने के कारण वहा एक किश्त मे नही निकल मकती। अतएव डा महेन्द्र भटनागर ने उसे आचार्य नन्ददुलारे बाज-

पेयी के पास रजिस्ट्री [मे] 'आलोचना' मे प्रकाशनार्थ भेज दी है। मुझे भी इसकी सूचना दे दी है। मैने भी आज आचार्य जी के पास इसी सम्बध मे एक पोस्टकार्ड डाला है कि वह उसे छाप सके तो छाप ले अन्यथा आपके पास डाक से भेज दे। पता भी आगरे का लिख दिया है।

मै उसे सीधे तुम्हारे ही पास भेजता मगर तुम्हे अचानक पढ कर ज्यादा मजा मिलता इसमे उसे तुम तक अभी तक नही भेज सका।

जैसा भी हाल हो लिखो। समाचार तो एकाध लाइन लिख कर दे दो। चिन्ता है। हम कुशल से है।

सस्नेह तु० केदार

समालोचक

(हिन्दी का प्रतिनिधि आलोचनात्मक मासिक पत्र)

१२ Ashok Nagar, आगरा

ता० ५-६ [५८]

प्रिय केदार,

इस साल हर रोज सबेरे कालेज जाना पडता है। Postgraduate teaching का काम बढ गया है। ललित का M A Final है, शोभा का High School। इसलिये घर पर भी मदरसा लगता है। फकत अध्यापक रह गया हू। पी पी एच के लिए निराला जी पर एक छोटी-सी पुस्तक बच्चो के लिए—लिख रहा हू। Historical Materialism पर पुस्तक की तैयारी है। इस वर्ष भाषावाली पुस्तक भी पूरी करने का विचार है। बीच मे मथुरा और दिल्ली की--सपत्नीक यात्रा भी की। कल शायद मुशी और नागार्जुन यहा आये।

'रूपतरग' पर तुमने लिखा, अच्छा किया। वैसे तुम्हारा कार्ड मेरे लिए काफी था। इस वक्त जरूरत है 'समालोचक' मे लिखने की, मुझ पर नही, हिन्दी की अनेक प्रमुख समस्याओ पर। इस पत्र को प्रयोगवाद और प्रतिक्रियावाद के विरुद्ध स्वस्थ राष्ट्रीय और जनवादी विचारधारा का प्रबल समर्थक बनना चाहिए। इसमे तुम सहायता दे सकते हो। हम लोग 'यथार्थवाद और साहित्य' पर विशेषाक निकालने जा रहे हैं। तुम Whitman पर, निराला जी के गद्य पर, रोमांटिक कविता मे यथार्थवाद—किसी पर लिख सकते हो। हम यथार्थवाद के सैद्धान्तिक पक्ष और कलात्मक साहित्य में उसके विकास —दोनो पर लेख छापें गे। आशा है तुम एक महीने मे

कुछ न कुछ जरूर भेजो गे ।

तु० रामविलास

C B[1] अस्वस्थ था, उसने तुम्हारे पत्र न लिखने की शिकायत की है।

रा वि.

बादा
१५-६-५८

डियर डाक्टर,

पत्र मिला था। जरूर कुछ लिखूगा। विषय तुमने Suggest ही कर दिये है।

नागार्जन का पत्र दिल्ली से आज आया है। मेरे बारे मे खूब बाते हुई है, सुना। पर उन्होने भी कुछ खास नही लिखा। हा मेरे कान उमेठने की बात उन्होने की है। प्रयोगवादियो की ओर मेरा झुकावं हो रहा है, यह तुम सबको प्रतीत होता है। मेरी रचनाए गेमी है। यह जान कर अचरज नही हुआ। खेद जरूर हुआ है।

यह मेरी समझ का फेर है। 'प्रयोगवाद' जो हैं वह तो मैने कभी भी जाने मे अनजाने मे अपनाया नही। मै स्वय उसको पहचानता हू। मेरे भाव और विचार उनमे स्पष्ट ही विलग है। बिम्ब भी बहुत साफ है। पता नही कि मेरी शैली से कुछ भ्रम हो गया हे। हा वस्तु-तत्व अवश्य ही बदला सा ह। स्पष्ट लिखो कि क्या बात है। क्या कभी मिलने की व्यवस्था होगी।

हम सब अच्छे है।

शोभा और बेटियो को प्यार। बच्चो को आशीष। मालकिन को रामराम।

सस्नेह तु०
केदार

१२ अशोक नगर,
आगरा
३०-६-५८

प्रिय वकील साहब,

प्रयोगवाद का पहला लक्षण :

आप चद्रबली के यहा तक गये और बिना मिले लौट आये। सुना, भीतर

1 चन्द्रबली सिंह। [प्र. लि.]

'विष्णु भगवान[1] आपके स्वागत के लिये बैठे ही रह गये।

दूसरा लक्षण : तुम्हे निराला जी से Keats ज्यादा अच्छा लगने लगा।

तीसरा लक्षण : तुम समालोचक के लिए लेख नही लिखते।

चौथा लक्षण : तुम्हारी कविताएं छोटी बहुत होती है, जिनमें कविता के बीज होते है, विकसित कविता नही। तुम्हारी सवेदनाओ का क्षेत्र सीमित हो गया है। पर साल सरसों देखी थी तो कुछ अच्छी कविताएं लिखी थी। अब तुम्हे धरती सेब और आसमान चोच दिखाई देता है। नयी और गहरी भावानुभूति के अभाव मे आदमी इस तरह के Conceits से काम चलाता है। तुम्हारी कविताओ के Form का अनगढ़पन भी तुम्हे प्रयोगवादियो के निकट –खामखा—घसीट ले जाता है।

हां, चद्रबली से पत्र व्यवहार होता है या नही।

तुम्हारा
रामविलास

पुनश्च :

लेकिन तुम्हारे गद्य पर यह सब लागू नही होता। अपने हर Common Friend के साथ हम तुम्हारे पत्र पढ कर तुम्हारे गद्य का रस लेते है। गद्य कवियो की कसौटी है गद्य कवीना निकष वदन्ति—इस हिसाब से तुम्हारे सच्चे कवि होने में सन्देह नही है।

रा. वि.

बादा
८-१०-५८

प्रिय भाई,

पत्र मिला। अपनी कमिया ज्ञात हुई। Walt Whitman पर लिखा जा रहा है। कब तक अन्तिम तिथि है मेरे भेज सकने की ? लिखो। वरना मेरी जिम्मेदारी नही है।

बीज है कविता के मुझमे। यह भी खूब है। लेकिन वह बेल नही छोडते और न फूल-फल देते है। यह बीज भी क्या है। हो सकता है कि मैं उन्हे श्रमजल नही दे पाता। श्रम का अभाव भी है। छोटी कविताएं तो इसी से लिख पाता हू कि अधिक समय नही रहता, अधिक विस्तार करने का।

1. चन्द्रबली सिंह।

'निराला' अच्छे लगते है। कीट्स भी अच्छा लगता है। पर जो प्रवाह और सहजता कीट्स मे है वह मुझे नही मिलती निराला के छंदो मे। परन्तु, मै यह नही कहता कि निराला सर्वत्र प्रवाह हीन कठिन हैं। देखना है कि भाव और भाषा सर्वत्र किस सरलता और सहजता से खुलते चलते है। दोनो का यह अन्तर है और यह भुलाया नही जा सकता। निराला निराशा के कवि नही है इससे कीटस से दर्शन मे बडे हे। यह भी स्वीकार है। परन्तु कविता मे कीट्स अवश्य बाजी मार ले जाता है। मेरा अधकचरा ज्ञान यही कहता है। समय साबित कर सकेगा। सस्नेह

केदारनाथ अग्रवाल

बादा
२१-१०-५८

प्रिय डाक्टर,

यह लो मेरा लेख। वाल्टह्विटमैन ने पेर डाला। न समय था। न शक्ति थी। फिर भी तुम्हारे कहने पर इतना लिख पाया हू। अब छापो चाहे न छापो। यह तुम पर निर्भर है।

आशा है कि मौज मे हो। हमारी बीबी [बीवी] Piles मे परेशान है। और लोग अच्छी तरह मे है। बेटियो को प्यार। बच्चो को स्नेह।

तु०
केदार

12, Ashok Nagar
Agra
6 11 58

प्रिय केदार,

तम्हारा कार्ड मिला। लखनऊ से लौटने पर मेहमानो का ताता लगा रहा। कल से एक दूसरी उलझन हे। हमारे सहयोगी राजनाथ की पत्नी बहुत बीमार है। बचने की आशा कम है। इस समय सबेरे क ग्यारह बजे है। मैं अभी अस्पताल से लौटा हू। पत्नी को वही देखभाल के लिये छोड आया हू। मेघदूत का अनुवाद देखा है। मतलब समझ मे आता हे लेकिन भाषा और छदो मे कमजोरी है। आगे कभी उस पर लिखू गा। मन् सत्तावन की कहानिया[1] पूरी करके भेज दी।

तु०
रामविलास

1 मन सत्तावन की कहानिया—गदर सबधी घटनाम्रो पर आधारित। जन प्रकाशन गृह दिल्ली को भेजी थी। प्रकाशित नही हुई।

बादा
१४-११-५८

प्रिय डाक्टर,

दिल्ली गया। वहा आपकी पाडुलिपि 'निराला' देखी। 'पत की चोरी' की बात हटा दीजिये। दूसरी बात जो खटकी वह यह थी कि आदि मे अन्त तक प्रश्न और उत्तर के रूप मे कथानक चलता है। रूप खटकने लगता है। मुशी मे मैंने यह कह दिया है। जल्दी लौटना था इसमे आगरा नही गया। बुरा न मानना।

यह तो लिखो कि मेरा Walt Whitman का लेख तुम्हे डाक मे मिल गया या नही। रजिस्ट्री की थी। कोई सूचना नही दी आपने। परेशानी है। कृपया मुझे एक खत डाल कर सूचित कर दो।

Wife और मुन्ना दिल्ली मे है रूप नगर मे। नागर जी के घर के पास ही मे, लडकी के घर मे। बच्चो को प्यार। बेटियो को प्यार।

तु० केदार

SAMALOCHAK (The Critic)

A High Class Hindi Monthly Devoted to Literary Criticism

Bagh Muzaffar Khan

Ref No Agra, १७-११-195८

प्रिय केदार,

तुम्हारा लेख मिल ही गया था। तबियत होती है कि तुम्हारे गिन गिन कर दस-बीस-तीस· और फिर शुरू से गिनू। लेख पर नही, जनाब दिल्ली गये, आगरे से "पास" हुए हो गे और यहा खबर ही नही। नरोत्तम के ख़त से पहले-पहल मालूम हुआ कि तुमने यह हरकत की थी।

तुम्हारा लेख सक्षिप्त करके छापे गे। तुम्हारे विचारो मे पुनरावृत्ति, तारतम्य की कमी और खामखा बहकने और अप्रासगिक ढग से उपदेश देने की प्रवत्ति है। अतिम पृष्ठ बहुत अच्छा लिखा है जिससे पता चलता है तुम कितना अच्छा लिख सकते हो।

निराला जी पर अपनी बचकानी पुस्तक[1] पर मुंशी की सम्मति पहले सुन चुका था, तुम्हारे Via [तुम्हारी राय] भी प्राप्त हुई।

तुम्हारा--रामविलास

बांदा

२२-११-५८

प्रिय भाई,

पोस्टकार्ड मिला। मैं बहक जाता हूं। मगर रहता हूं सही घेरे में। मैं Conscious हूं अपनी कमजोरियों से। मगर "नयी कविता" वालों को सीख देना [देनी] ही पड़ेगा [पड़ेगी]। तुम्हारी "रूप तरंग" पर भी जो लेख है उसमें भी सीख दी है मैंने उन्हे। तुम तो जो कहते हो वह सोने की सुगंध होता है। मैं अपने को सुधारूंगा।

तुम्हारे आगरा न पहुंच सका। इसका मुझे खेद है। पर उधर से नहीं गया था। कानपुर हो कर गया था। और २ दिन रह कर अकेले चला आया था। बुरा न मानना डियर! मिलना चाहता हूं जरूर। देखो कब मिल पाता हूं। Herzen का दर्शनग्रंथ पढ़ रहा हूं। नागर ने मुन्ना के हाथ मेरे पास भेजा है। अपनी शंकाएं लिखूंगा--उत्तर देना। अभी पहली reading चल रही है।

शेष कुशल है। कब तक विशेषांक छपेगा? बच्चों को प्यार।

सस्नेह तु०
केदार

बांदा
२७-१-१५८

प्रिय डाक्टर,

आजकल 'बोरिस पास्तेनैक' [पास्तेर्नाक] का मसला लेकर बड़ा होहल्ला मचा है। हमारे यहां का प्रेस और नेता वर्ग इस घटना मे विक्षुब्ध हो उठा है। विदेशियों ने भी तमाम तूफान उठा रक्खा है। वैसे तो साधारण जन और साधारण लेखक-वर्ग के

1. बचकानी पुस्तक—बच्चों के लिए लिखी 'निराला' पुस्तक बाल जीवनी माला में जन प्रकाशन गृह, दिल्ली से प्रकाशित हुई थी। इस संस्था के हिंदी प्रकाशन का काम मुंशी देखते थे। उन्हें और केदार को मेरी पुस्तक की वार्तालाप शैली पसंद नहीं थी। पुस्तक मूलरूप में ही प्रकाशित हुई थी।

लिए इस घटना ने कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न सामने उभार कर रखे है। मगर वह प्रश्न तो वैसे भी बहस के द्वारा सोचे-समझे जा रहे थे। विशेषकर एक देश विशेष की विशेष परिस्थितियो मे घटी हुई इस घटना का कहा तक क्या महत्व है, यह एक विचारणीय विषय है। इसी के आधार पर इस घटना पर विचार करना श्रेयस्कर होगा। परिवेश और ऐतिहासिक तथ्यो को बिसार कर पास्टनैक [पास्तर्नाक] की घटना पर सैद्धान्तिक स्तर पर विचार करना उचित न होगा। देखो न,

पास्टनैक [पास्तेर्नाक] का देश एक तरफ है— वहा की तमाम परम्परा एक तरफ है वहा के दर्शन एक तरफ है —वहा का विकास क्रम और वहा का नैतिक उत्तरदायित्व एक तरफ। इसके विरुद्ध तमाम दुनिया (कुछेक देशो को छोड कर) है—अन्य तमाम परम्पराएं है—विभिन्न दर्शन है शोषण और शासन के कडवे अनुभव है। स्वार्थपरता और अनैतिकता का प्रसार और प्रचार है। ऐसे मैं पटस्तौर-नैक ने अपनी देश की जनता और अपने देश से कट कर एक व्यक्ति की इकाई को अपना कर उस इकाई के द्वारा अपने उपन्यास का ढाचा खडा किया है। क्या यह किसी लेखक को शोभा देता है ? क्या यह किसी प्रकार भी उचित और नैतिक कहा जा सकता है ? क्या यह वहा की साहित्यिक जीवित विरासत के तत्वो के विरुद्ध अपमानजनक प्रतिक्रिया नही है ? क्या पास्टरनैक के लिये यह शर्म की बात नही है कि उसके देश के लेखको ने उस के उपन्यास को वहा ही छपने मे रोक दिया था, तब वह उसे विदेश मे Smuggle करा कर छपाता (या वह छपता) और दूसरो का मान पाता। कम-से-कम मै तो अपनी शान के खिलाफ समझता हू कि मेरे देशवासी मेरी पुस्तक [का] को नाकारा समझे और मै विदेशियो का अच्छत चदन स्वीकार करू। क्या पास्तरनैक विरुद्ध सब रूसी लेखक है ? क्या उसने कोई अपमानजनक कार्य नही किया है जिसके कारण वे सब उसके खिलाफ है ? पता नही है मुझे इसका। लेकिन यह जरूर सोचता हू कि रूस के अन्य सब लेखक अकारण ही उसके खिलाफ न होगे। तब हम या अन्य हमारे मित्र इस होहल्ला मे नक्की का सुर क्यो मिला कर स्वनामधन्य हो रहे है ? तुम मुझे इस विषय मे अपने विचार लिख कर सन्तुष्ट कर सकते हो। क्या यह पुरष्कार [पुरस्कार] शीत युद्ध' का साहित्यिक आक्रमण नही है विदेशियो द्वारा रूस के—समस्त लेखको पर ? क्या यह अन्ततोगत्वा वहा के लेखको की जमात को जड से हिला सकने की ओर किया गया प्रयास नही है ? क्या 'डाक्टर जिवागो' वास्तव मे इतनी बहुमूल्य पुस्तक है कि आजतक कभी भी वैसी कोई दूसरी पुस्तक वहा नही लिखी गयी जिसके लेखक को अब से पहले कभी पुरष्कृत [पुरस्कृत' किया गया होता ? विज्ञान के क्षेत्र मे तो यह शीत युद्धी आक्रमण कारगर सिद्ध ही नही हो सकता क्योकि वहा धाधली की गुजाइश नही रहती। अलावा इसके वहा तथ्यो पर अनुसधान किये जाते है। यह तो साहित्य के क्षेत्र मे ही सम्भव है। वही हुआ भी। 'कृति' मे इस बार इस घटना

को लेकर नव-लेखन वालों ने भी जहर उगला है। मैं अभी सम्पूर्ण तथ्यों की जानकारी नही रखता इसलिए साधिकार कुछ भी कह सकने में असमर्थ हूं। फिर भी तुम जरूर जानते होगे मुझ से अधिक। इससे मुझे संतुष्ट कर सकते हो। अवश्य करो। मेरी प्रतिक्रिया है कि यह देशहित में—वहां के साहित्य के हित में—वहां की जनता के हित मे -एक साहसिक कदम है। वहां के लेखक दमदार मालूम होते है। तभी तो उन्होंने पास्टरनैक[1] का सम्मान नही किया।

मैं पत्र लिखता कई दिन पहले। मगर सोच रहा था कि शायद मैं भी दूसरों की तरह सोच सकू। पर मैं असमर्थ हूं वैसा सोच सकने में। मेरी प्रतिक्रिया भी वही हुई है जो पास्टरनैक के देश में हुई है।

मैं अपने नेताओ को क्या कहूं। वह भी तो ऊपर-ऊपर फिसलते फिसलते रहते है। उन्हें कुछ न कहना था। चुप रहते तभी अच्छा था।

मैं बता दूं कि मैं अपने ऐसे विचारों तक इसलिए नही पहुंचा कि मुझे उस देश से अपने देश के लेखकों से अधिक प्रेम है। यह तो मेरा तर्क है और ज्ञान है जो मुझे ऐसा विचार करने के लिए प्रेरित कर रहा है।

आशा है कि तुम सकुशल होगे। बच्चो को बेटियो को प्यार।

सस्नेह
तु० केदार

बांदा
२७-११-५८
शाम ७ बजे

प्रिय डाक्टर,

एक पत्र सवेरे लिख कर डाल चुका हूं। लो यह दूसरा भी।

'राम की शक्तिपूजा' में जो 'शतशेलसंम्वरणशील' [सम्वरणशील]—'भेद कौशल-समूह' 'विच्छुरितवन्हि-राजीवनयन-हत-लक्ष्य' —'बाण-लोहित लोचन-रावण मदमोचन-महीयान'—'वारित-सौमित्र-मल्लयति-अगणित-मल्ल-रोध'—'गर्जित-प्रलयाब्धि-क्षुब्ध-हनुमत्-केवल-प्रबोध'—'उद्गीरित' से लेकर 'रावण-सम्वर' का शाब्दिक अर्थ क्या है?

1. संदर्भ बोरिस पास्तेर्नाक के 'डाक्टर जिवागो' का है।

'देखते राम का जित-सरोज-मुख-श्याम-देश' से क्या मतलब है। [?] 'जित' के मतलब है जीता हुआ। अभी तो राम जीते नही थे। फिर सरोज-मुख के आगे 'जित' क्यों रक्खा है और क्या व्यक्त करता है ?

इसी प्रकार 'एक भी, अयुत-लक्ष मे रहा जो दुराक्रान्त' का शाब्दिक अर्थ क्या है ?

'ज्योतिः प्रपात स्वर्गीय,--ज्ञात छवि प्रथम स्वीय,—जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय' का शाब्दिक अर्थ क्या है ?

यह भीमा मूर्ति' कौन देवी है ? 'महानिलय' क्या आसमान है ? यदि नही तो क्या है ?

लख शंकाकुल हो गये अतुल-बल शेष-शयन,'--से क्या अर्थ निकलता है ? राम ही अतुल-बल है या कुछ और अर्थ है ? 'शेष-शयन' मे क्या बोध होता है ? क्या राम को विष्णु के रूप मे व्यक्त किया गया है और शेष-की शय्या पर सुलाया गया है ? अथवा राम के अतुल बल सो गये ?

इस प्रकार 'युग अस्ति-नास्ति' के एक-रूप, गुण-गण-अनिद्य—साधना-मध्य भी साम्य' -को समझाओ। कुछ पल्ले नही पड रहा।

'जपते सभक्ति अजपा विभक्त हो राम-नाम' का शाब्दिक अर्थ भी पकड़ मे नही आता। कुछ गूढ़ धर्म-दर्शन का हवाला जान पडता है।

'ये नही चरण राम के, बने श्यामा के शुभ' -यह क्या 'श्यामा' है जिसके चरण बन गये राम के चरण ?

'शक्ति-खेल-सागर अपार' से क्या तात्पर्य हे ? 'प्रतिसन्ध धरा' का अर्थ भी नही समझ मे आया। महाराव' क्या है ? क्या जोर का शोर है ? 'बज्राङ्ग तेजघन बना पवन को' क्या है ? क्या हवा वज्र की तरह और तेज के घन की तरह बना दी गयी है। यह कैसे हुआ है ? लिखो।

'एकादश रुद्र क्षुब्ध कर अट्टहास' के क्या मतलब है ?

'यह रुद्र राम-पूजन-प्रताप तेजःप्रसार' क्या है ? 'रुद्र-वदन' क्या है ?

'श्यामा के पदतल भारधरण हर मन्द्रस्वर' को स्पष्ट करो। 'सम्बरो देवि।' से क्या मतलब है ?

'नही हुआ श्रृंगार-युग्म-गत' से क्या मतलब निकलता है ?

'ये एकादश रुद्र धन्य' फिर आ गया। राम जाने इससे क्या reference है ? कुछ तो लिखो।

'अजना' कौन थीं ? मा थी हनुमान की न ?

'क्या असम्भाव्य हो यह राघव के लिए धार्य'--न समझ मे आया। अर्थ लिख भेजो।

'अप्रतिभट वही' कौन है ? फिर आगे है—'एक-अर्बुद-सम' यह क्या बला है ?

'भाव-प्रहर' क्या होता है ?
'कल्मष-गताचार' भी क्या है ?
'पारिषद-दल' क्या है ?
'मैं बना किन्तु लङ्कापति धिक्, राघव, धिक् धिक्'—के मतलब भी गोल है।
'मैत्री की समनुरक्ति' क्या होती है ?
'चमका लक्ष्मण-तेज. प्रचण्ड' क्या है ?
'धंस गया धरा में कवि गह युग पद मसक दण्ड'—क्या है ?
'मै हुआ अपर'—क्या है ? क्या मै दूसरा हो गया ?
'निशित' क्या है ?
रावण को अक मे लेने वाली 'महाशक्ति'-कौन है ? क्या नाम हे इनका ? 'सवृत करती' आदि आदि। और आगे भी पूछूगा।

तु० केदार

समालोचक

हिन्दी का प्रतिनिधि आलोचनात्मक मासिक पत्र

प्रधान सम्पादक
डा० रामविलास शर्मा, एम. ए., पी-एच. डी.
सह-सम्पादक
राजनाथ शर्मा, एम. ए., विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, एम. ए.

१२, अशोक नगर
आगरा
दिनाक : ११-१२-१९५८

क्रमाक·········

माई डियर,

२८-२९-३० को हम झासी मे थे। वर्मा जी[1] के साथ किला देखा, उस्ताद आदिल खा का गाना सुना, अपने कलाकार उस्ताद स्वर्गीय रुद्रनारायण की बनाई हुई झासी की रानी की मूर्ति देखी और कई जगह व्यर्थ के भाषण दिये। वर्मा जी मे सबन्धित सामग्री लाये जो जनवरी अक मे छपे गी। कल सम्पादकीय लेख समाप्त किया और आज दोहरा कर प्रकाशक को दिया। इसी कारण उत्तर मे विलब हुआ। [वर्मा जी] सत्तर साल के हो रहे है। तुम्हे कभी depression हुआ करे तो झासी की हवा खा आया करो। हा, जैसे दिल्ली के लिये टाइम निकाल लेते हो,

1. वृदावनलाल वर्मा

वैसे कभी झांसी आगरे के लिये भी !

तुम्हारा लेख छपने पर और भी बढ़िया लगा। पता नही तुम्हें कैसा लगा। मेरे लेख मे कोई इतनी काट छाँट करता तो मुझे जरूर बुरा लगता। तो अब आगे तुम्हें लिखना है। हम सपादकीय तौर पर तुम्हें चन्द्रबली मे श्रेष्ठ गद्य लेखक घोषित करते है। इसलिए आगे काहे पर लिखो गे ? सूचित करो। Herzen पढ़ रहे हो ? कुछ उसी पर लिखो न ? लेख में ही शंकाएँ लिखो। विशेषाक प्रेस में जा रहा है —दो-एक दिन मे ही। बाबू चन्द्रबली अभी लेख भेज ही रहे है।

राम की शक्तिपूजा के बारे में तुम्हारे प्रश्नो मे मै एक का भी जवाब न दूगा। कारण यह है कि इसके लिये पूरा लेख लिखना पड़े गा। निवेदन है कि एक बार राम की शक्तिपूजा पर मेरा लेख पढ़ जाइये और इसके बाद विस्तृत विवेचन के लिये खुद तशरीफ लाइये।

आजकल की धूप बड़ी सुहानी है। इस समय (सवा पाँच बजे) चुक गई है। इसलिये तुम्हे यह पत्र भी समाप्त करता हू। गेदा अब भी जैसे कुछ धूप चुराये हुए फूला है।

तुम्हारा
रामविलास

पास्तेरनाक के बारे मे तुम्हारी प्रतिक्रिया ठीक है। इस पर आगे कभी लिखू गा।

बांदा
१७-१२-५८

हे प्रथम -प्रिय, पुन. —निर्मम सम्पादक !

पत्र मिला। देर से। मैने सोचा था कि लड़का गया था उसी के द्वारा पत्रोत्तर आयेगा। वह इलाहाबाद रह गया। पत्र पहले आ गया। बाद को बेटे राम ख़ाली हाथ आते ही। मालुम हुआ कि वह मिल तो आया है।

झासी २४/१२ को रहूगा कमिश्नरी मे। फिर अगर मौका लगा तो आगरा एक दिन को— पचीस के कुछ घंटे को या तो पुन: बादा। इन्तजार कर सकते हो।

मेरा लेख बढ़िया था ही। छपने पर तो वह टाइप के हरूफो मे स्वच्छ जरूर हो गया है। मैं तो अभी लेख लिखना सीख रहा हूं। मुझे कटाई-पिटाई बुरी नहीं लगती। न कभी लगी थी। तुम्हारी बात दूसरी है। दिग्गज हो फिर सम्पादक हो। पहलवान भी हो। शास्त्रार्थ करने मे और शस्त्रास्त्र मे पूरे पारंगत हो। कौन नहीं थरथराया तुमसे। एक हमी है जो नही डरते। डियर हो न ! बडी उदारता बरती है तुमने कि मुझे, सम्पादकीय रूप से, कलम के धनी श्री चन्द्रबली से श्रेष्ठ लेखक

घोषित कर दिया है। मैं जाति का बनिया जरूर हूं पर फूल कर 'घी का कुप्पा' नही हो गया। इस प्रमाण-पत्र को पा कर कलेजा दहल गया है कि राम आगे बड़ी मेहनत करना [करनी] पड़ेगी। सारी मस्ती हर जायेगी। ऐसे वाक्य तो केवल उन्हीं को 'मगद का लड्डू' बनाते है जो कुछ भी नहीं करते और 'खामखाह' यशः प्रार्थी होते है। मैं तो अपने को खोजता रहा हूं कि कहां हूं और क्या सच है और मैं उसे पकड़ कर जी रहा हूं अथवा नहीं। मुझे काठ हो कर या रह कर मरने में दुःख होगा। मरो तो इस शान से कि मौत भी एक ऐसे फूले-फले पेड़ को कंधे पर रख कर चले कि जिधर से निकले-रूप-रस और गंध बरस पड़े, हमें यश न चाहिए। हमें चाहिए पूर्ण विकसित मनुष्य की मौत।

हरजन[1] पढ़ रहा हूं। विचार स्पष्ट होते ही कुछ-न-कुछ लिखूंगा। लेकिन केचुए की चाल चलता हूं, देर लगेगी। कच्ची कलियां कैसे किसी को भेंट दूं। फिर तुम तो गले मे वेला के खिले फूलों का और गेंदे का गजरा पहनते हो — भला मैं कैसे हिम्मत करूं कि नन्ही कच्ची कलियों की माला पहनाऊं जनाब को अपने लेख के द्वारा। यकीन रखो जरूर लिखूगा।

'धूप चराये गेंदा फूला है' गरीब के दरवाज़े पर; शाम सांवरी सोने का कंठा पहने है बड़े चाव से; सम्पादक की आख देखती है सोने के इस कंठे को, जिसे देख कर धरती का यौवन जीवन में छा जाता है।

कहो, है न यह अनूठी बात ?

गेंदे पर एक कविता ही लिख डालो। लेख लिखना आसान है —कविता लिखना बड़ा कठिन है न ! वरना क्या बात है कि कविता नही लिख आती।

'राम की शक्तिपूजा' के अर्थ हमने खुद ही निकाल लिए। परेशान न होना।

सस्नेह केदार

बांदा

३०-१२-५८

रात, ७ बजे

मेरे मस्त मौला डाक्टर,

तुम नहीं जानते जो मुझ पर गुजरी है तुम-सब लोगों से काई की तरह फट कर आगरे मे बांदा के लिए चलते समय ! मैं ही जानता हूं। मेरा चार दिन का निवास—तुम्हारे साथ का—मुझे अद्भुत शक्ति और प्रेरणा दे रहा है। वैसे

1, उन्नीसवीं सदी के रूसी जनवादी लेखक।

पहले भी तुम्हारे साथ घुला-मिला हूं लेकिन जितना इस बार उतना शायद पहले कभी नही घुला-मिला था। इस बार तो तुम मेरा हृदय और मेरी आखे हो गये हो। यही कारण है कि अधिक दिन जीने की आशा और उससे दुगना उत्साह ले कर आगरे से वापस लौटा हू। जीवन के दृष्टिकोण मे मौलिक अन्तर आ गया है। वह अन्तर बाहरी नही, आन्तरिक है। यदि कहू कि मेरे 'भूत' का गुणात्मक परिवर्तन हो गया है तो अत्युक्ति न होगी।

रात १२ बजे पहुच गया था। फिर सो गया। अभी तक श्रीमती जी से वहा की बाते नही हुई। अब रात डट कर मत्रोच्चारण होगा। वह भी निश्चय ही प्रसन्न होगी।

रास्ते मे, झासी तक एकासन से बैठा रहा था। कुछ पढ़ नही सका था। झासी के बाद, बादा के रास्ते मे Dilectical Materialism का प्रथम भाग पढने लगा। लगभग ८० पेज पढ गया। बढिया लिखा है मेरे यार ने। बधाई देने का मन होता है। ऐसा लगता हे कि मारिस कार्नफोर्थ को, उसके घर जाकर, सलाम मारू। जिन प्रश्ना पर हम-तुम रात को देर तक बात करते रहे थे उन प्रश्नो को ले कर इस लेखक ने विचार किया ह। मुझे तो बेहद पसद है इसकी सरल, प्रकाश-किरण देने वाली शैली। विश्वास है कि तुम्हे भी अच्छी ही लगी होगी अन्यथा तुम मुझ खूसट के जेब मे गाढी कमाई के रुपये उस दूकान मे न फेकवाते। तुम्हे भी बधाई देता हू कि तुमने मेरे मन की पुस्तक मुझे खरीदवा दी।

आज घर पर रहा। सबेरे सामान ठीक करता रहा। कमरो की धूल साफ की। कानून की किताबो की चुप्पी तोडी और उनकी गरदनो से मल छुडाता रहा। मेज पोछी। बाद को एक मुअक्किल दस दे गया, एक नोटिस लिखा कर। फिर जूतो को अपने हाथ से चमाचम करता रहा। जानते हो न कि अपने जूतो को चमकाना (भाववादियो के दर्शन के मतानुसार) न चमकाने के बराबर ह। मगर वह चमके है। उनकी यह चमक उन दार्शनिको के ब्रह्म की निरपेक्ष चमक है जो शायद कही अदग्ग रहती है। अपने राम तो रास्ते मे और भी भौतिकतावादी हो गये है। तभी तो जूतो की चमक मे अपने -'भूत' का गुणात्मक परिवर्तन देखते है और इसको अपने का कर्ता और भोक्ता दोनो मानते है। जय हो हमारे अपने स्वस्थ दार्शनिको की।

दोपहर खाना खा कर विश्राम करता रहा। आज कचहरी जाने का मन ही न हुआ। मैने भी काम न होने का बहाना पा कर कचहरी का मुह नही देखा। जाता तो जूत मैले कर और रूखे धुले बालो मे गर्द जमा कर खाली खीसा घर लौट आता। तब शायद कुछ उदास हो ही जाता। नही गया इसी से पूरे उत्साह मे रहा। फिर शाम कहे-अनुसार अकेले टहलने गया। दूर तक। खेतो की ओर। देखा कि यहा तो हरियाली का अकाल है और सरसो का पता ही नही है। क्या

कोई चुरा ले गया है ? कुछ भी पता न चला कि यह क्या माजरा है। तुम्हारे यहां की धरती ने तो कलेजा चीर कर लहलहा कर हरियाली और पीली सरसों चारों ओर फैला दी है। यह देख कर कुछ खिन्न भी हुआ अपने प्रदेश की भू-माता पर। पर यह विचार कर कि देर में ही सही हरियाली होगी और सरसों फूलेगी फरवरी के महीने तक, प्रसन्न हो गया। यह स्वभाव हमारे चटियल मटमैले प्रदेश का है कि योगिराज शिव की तरह रहते है और जब कामदेव वाण साधते हैं और पार्वती तपस्या करती हैं तब बड़ी मुश्किल से भावेद्रेक की अवस्था मे आते हैं। न जाने कैसे तुलसी बाबा इस प्रदेश के हो कर भी तुम्हारे प्रदेश के राग रंग से जल्दी ही भर कर रत्नावली के लिए अपनी ससुराल दौडे चले गए थे। वैसे मौसम अच्छा है। ठंड है। खपरैल के नीचे कल भी सोया था —परदा लगा कर। आज फिर सोऊंगा वही। पहले तो बिस्तर बरफ रहता है फिर गरमा जाता है। औरों को तो कमरों में बंद सोते देखता हूं यहां भी। बिल्कुल तुम्हारी तरह ही।

अच्छा तो लो एक कविता। सारंगी मुझे सदा मोह लेती है। 'युग की गंगा' में भी एक कविता थी। अब उस दिन तुम्हारे घर रेडियो से सारंगी बजती सुनी थी न। तभी भाव विभोर हो गया था। आ कर मैंने यह कविता रची है। देखो न किस तरह किस-किस प्रकार से किस-किसके भाव यहां आ कर एक साथ फूट पड़े हैं।

सारंगी सुन कर—

योगलीन शिव की मुद्रा में वादक बैठा
योग-भवानी की सारंगी लिये गोद में
मर्म-कुशल हाथों मे उन्मद बजा रहा है
आदि भूत को राग बोध की परिसंज्ञा दे।

जो न कभी अब तक प्रकटे थे भाव भूमि मे
वह अणु-अणु से अब प्रकटे है अंकुर जैसे
गजदंती, वैदूर्य-मुखी, कलहंस-शरीरी
लाखों की संख्या मे सोने के प्रकाश में।

मै भी रहा न पिंड पठारी, सिंधु हो गया,
सारंगी के स्वरारोह में लहरें लेता,
महाकाश की ओर उमंड़ता महावेग मे,
शशि-शेखर के अभिनंदन में गूज उठा हूं।

महाकाल भी द्रवीभूत हो गया स्वरों मे,—
भूल गया अपनी सारी दुर्दम लीलाएं;
कर से छोड़ कुठार, शरद के तरल ताल का,
शतदल खोले, गंध-राग में मग्न हो गया।

बजती रहे सुमुखि-सारंगी इसी भाव से
गलती रहे कुलिश जड़ता भी इसी भाव से
चेतनता फूले सरसों-सी इसी भाव से
शम्भु-भवानी मिलें कंठ से इसी भाव से

कहिए जनाब ! है न कुछ काम की कविता। अगर अच्छी लगे तो अपनी पीठ ठोंक लेना मेरी समझ कर। न अच्छी लगे तो अपने गाल लाल कर लेना चपत लगा कर मेरे गाल समझ कर। इस प्रेरणा के तुम्हीं कारण हो। न जाने तुमने कितनी सुन्दर-सुन्दर रचनाए इस बार सुनाई है। देखो कब तक यह रूप-राग-गंध का खजाना मेरे मन के भीतर भरा रहता है। इस समय भी तुम्हारे घर में बैठा हूं जैसे। इतनी ताजगी थी उन कविताओ मे, इतना उदात्त स्पन्दन था उन सब रचनाओ में कि काल उन्हे मलिन नही कर सका और न कर सकेगा।

अभी कल भी कुछ काम नही है। दिन सूखे ही जायेंगे, कचहरी के। पर विचार है कि कल जाऊंगा। कुछ मिलेगा तो जेब मे रख कर लौट आऊगा, कुछ खुश-खुश। अन्यथा आख नीची किए सरक आऊगा अदेखा —जैसा।

अभी कविता गूज रही है। वह निकले चाहे जैसी, लिखूगा जरूर। भेजूगा भी।

काश यह खत अभी ही तुम्हें मिल सकता और तुम अभी ही पढ़ सकते और अभी ही उत्तर दे सकते। पर जानता हूं कि ऐसा असम्भव है। अभी हम जैसो को समय और दूरी पर विजय पाना कतई नामुमकिन है।

अच्छा तो राम राम।

मैं उन्हें किस तरह धन्यवाद दू जिन्होने मेरे लिये चूल्हे की आच मे बैठ कर कई दिन तक खाना पकाया है और तकलीफ उठाई है। मै तो खा कर स्वाद की सराहना ही कर सकता हूं। परन्तु उन्हे इस ममता के कोमल व्यवहार के लिए किन शब्दों मे अपनी कृतज्ञता की अंजलि दू मेरी समझ मे नही आता। मै यही कह सकता हूं कि मैं उनकी ममता से प्राणवान हो गया हूं और प्रदीप्त हूं।

ललित तो मेरे लिए महाबली हनुमान ही सिद्ध हुए। रेल मे घुस ही न पाता। वह कैंट तक रेल मे स्वयं आये। वह तुमसे भी अधिक मुझे स्नेह करता है। मैं भाग्यवान हूं ऐसे को अपना कर।

बेटियों को तटस्थता की दूरी से देखता रहा था। उनके साथ एक हो ही नहीं सका। अपने स्वभाव के कारण। मगर यह न समझो कि मै उनसे प्रभावित नहीं हुआ। वे जीवन की खपरैली पर आ-आकर नाचन-गाने वाली गौरैया है। मै उन्हे बहुत प्यार करता हूं।

काग़ज खत्म हो गया। कलम सोने जा रही है दराज मे (मेज की) दंडवत, महाप्रभु।

सस्नेह, तु० केदार

१२, अशोक नगर
१२-१-५६

माई डियर,

तुम्हारी कविता के लिए फुर्सत से दाद देनी चाहिए थी— -या जल्दी और दिल खोल कर। लेकिन इधर विशेषांक को प्रेस में देने का झझट—शुक्ल जी वाली पुस्तक की भूमिका —अपना लेख —झासी से भगवानदास जी माहौर रिसर्च के सिलसिले में यहाँ—और आज निराला जी से सबधित एक छोटी फिल्म के सिलसिले मे सलाह-मशविरे के लिए लखनऊ जाना लेकिन तुम्हारी कविता तो बढ़िया है ही और बाकी पत्र उससे घट कर नही है। अभी बराम्दे मे ही सोते हो ?

रामविलास

समालोचक

हिन्दी का प्रतिनिधि आलोचनात्मक मासिक पत्र

प्रधान सम्पादक — १२१६, बाग मुजफ्फरखा
डा० रामविलास शर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी० — आगरा
सह-सम्पादक— — दिनाक········१६
राजनाथ शर्मा, एम० ए०, विश्वम्भरनाथ, उपाध्याय एम० ए०
क्रमाक ···

माई डियर,

मैं चन्द्रबली को कार्ड लिखने जा रहा था कि गर्म चाय का प्याला आ गया और मैंने वह कार्ड हटा कर रख दिया, चाय पी और तुम्हे पत्र लिखने बैठ गया। आज सवेरे से बूदाबाँदी हो रही है। कालेज देर से पहुँचा था। दोपहर को अपने प्रकाशक की दूकान पर था तब ओले भी पड़े। उसके बाद ऐसा अधेरा रहा कि बिजली जला कर चिट्ठियाँ लिखता रहा। तुम कहो गे कि पहले मुझे क्यो न लिखी। इसलिए कि मै चाय के प्याले की राह देख रहा था जिससे तृप्त हो कर तुम्हे प्रेम से पत्र लिखू।

शायद तुम फिर कहो—इतने दिन बाद क्यो ? जनाब, मै लखनऊ गया। निराला जी से सबन्धित एक छोटी-सी फिल्म बन रही है, यू० पी० शिक्षा प्रसार विभाग की ओर से। उन्हे लखनऊ के वे स्थान दिखाये जहा निराला जी रहते थे। फिर अमृत नागर को लेकर इलाहाबाद गया। अब तुम से क्या वर्णन करू। कवि खाट पर बैठे थे। बाल काफी सफेद हो गए है लेकिन कितने घने है अब भी। और दाढ़ी भी कुछ respectable हो गयी है, पहले की एकदम हुमायूँ जैसी नही

है। आंखो की ज्योति भी अधिक स्पष्ट है। अब बुदबुदाते नही है, न उँगलियाँ चलाया करते है, न उठ कर घूमने लगते है। अपने श्वेतवर्ण, अंग्रेजी ज्ञान, सम्पत्ति आदि की फैंटेमी रचने के बाद बोले कि लबे भाषण मे तुम्हे परेशान किया! महा शुभ चिह्न! विक्षिप्त होने की पहली मजिल मे यही लक्षण थे। हमारा प्यारा कवि नरक-यात्रा करके फिर स्वर्ग की ओर उठ रहा है। कितनी बार Lear पढ़ते-पढाते हुए मैने उन्हे नही याद किया। लियर ने विक्षिप्त अवस्था के बाद जब पहली बार ज्ञान नयन खोले और मामने angel जैसी अपनी निर्दोष कन्या Cordelia को देखा तो कहा

You do me wrong to take me out o' the grave.

Thou art a soal in bliss, but I am bound

Upon a wheel of fire, that mine own tears.

Do scald like molten lead. (IV, 7)

उस ... मे निराला जी भी बँधे रह चुके है। अब मानो grave मे एक पैर रहते हुए भी वे दुनिया को झाँक कर देख रहे है उसे फिर पहचान रहे है।

हा, तो उन्होने अमृत को और मुझे खाट पर बिठाया। पैरो पर रजाई डालने को कहा। जलेबियाँ आई। अमृत ने चारपाई पर ही खाना शुरू किया। निराला जी ने कई बार कहा -तुम टपका दो गे लेकिन अमृत आश्वासन देते रहे कि रजाई खराब न हो गी। और निराला जी ने पैरो से रजाई खीच कर एक ओर रख दी। फिर मिल्टन पढने को कहा। कुछ समय बाद उन्हे ख्याल आया कि उसमे फारसी की पहली किताब रखी थी। खोज शुरू हुई। पुस्तक (Milton) मे तो थी ही नहीं। हम खाट छोड कर उठे। रजाई उठा कर देखी। फिर इधर-उधर की बात हुई। लेकिन ध्यान उसी किताब पर। जेबे देखने को कहा। हम लोगो ने अपनी जेबो की खुद तलाशी ली। कमलाशकर ने कहा कि दूसरी मँगा दे गे। फिर इधर-उधर की बाते हुई। और बीच-बीच मे तब भी उसी किताब का जिक्र। किसी बूढे बाबा को जैसे अपने नातियो से प्यार होता है, वैसे ही महाकवि को अपनी पुस्तको का मोह है। उस अल्मारी मे—जिसमे किवाडे नही है- उनकी सारी सपदा है। वैसे सामने की बडी कोठी उन्होने अपने भक्तो के लिए अपनी रायल्टी से बनवा दी है।

किस तन्मयता से उन्होने "सिरि रामचद्र कृपालु भजु मन", हारमोनियम ले कर गाया! एक बार '३४-'३६ का निराला फिर उदय हुआ। भारति जय विजय करे! टूटे सकल बन्ध! नयनो के डोरे लाल! बंगला के कई गीत, विवेकानद की

यह पत्र १५ जनवरी और ३० जनवरी १९५९ के बीच का लिखा हुआ है। पत्र मे कोई तिथि अंकित नही है। [अ० वि०]

एक बंगला कविता ! लगभग दो-ढाई घंटे तक गाते रहे।

शाम को शिक्षाप्रसार विभाग के Studio आये। लेकिन वहा उन्होने किसी को इच भर भी lift न दिया। काली टोपी, काला बंद कालर का कोट, धोती, मोजे-जूते—खासे भले मानुस लगते थे। काश ! ये इलाहाबादी गधे उन्हे उस गली से निकाल कर किसी बगले मे बसा पाते। दो महीने मे निराला दूसरा हो जाता।··

बस तो तुम्हारी सारगी का जवाब यहा खत्म होता है। गर्म पराठे सिक रहे है और बन्दा उन्हे ठिकाने लगाने जाता है।

बराम्दे मे ही सोते हो न ?

तुम्हारा
रामविलास

बादा
२-२-५६

प्रिय भाई,

पहले पोस्ट कार्ड मिला था फिर लिफाफा मिला। दोनो मिला कर भी मेरे सारंगी वाले पत्र का जवाब नही देते। जरा और दिल खोल कर लिखते तो मजा आ जाता।

बडी खुशी हुई कि लखनऊ और इलाहाबाद तो आप चले गये। महाकवि का समाचार मालुम कर हृदय मे सूर्योदय हुआ—कई साल के घने-घिरे कुहरे के बाद। बधाई है तुम्हें जो तुमने यह समाचार दिया।

ललित की परीक्षाए होने वाली होगी। खूब जुट कर पढ़ रहे होगे। लड़कियो की भी पढाई चालू होगी। बडा जाडा है। मगर हम तो वही खपरैल के नीचे। लिहाफ लिपटा रहता है। कमरे मे तो दम घुटने-सा लगता है। बाहर सोने की आदत पड गई है न।

आज सवेरे बीबी [बीवी] तथा किरन लखनऊ गई है। अब रामराज्य है।

हा मै मार्च के प्रथम सप्ताह में मद्रास—भाई की शादी मे—जा रहा हूं। चाचा के छोटे बच्चे की शादी है। कुछ पते वहा के—केरल के लिख दो। शायद उड जाऊ। देख-सुन आऊं। खतमशुद !

तु० केदार

बांदा
२४-२-५६
डियर,

पोस्ट कार्ड लिख चुका हूं, कई दिन हुए। उत्तर की प्रतीक्षा करते-करते थक गया तब अब यह दूसरा पत्र इसलिए लिख रहा हूं कि आप मेहरबानी करे और शांति-भंग करे---केवल एक पत्र लिख कर।

न जाने क्यो अब तक 'समालोचक' का विशेषाक इस बार नही आया। रोज डाक देखता हू। प्रकाशक ने वी० पी० भेज दी होती तो उसे भी छुडा लेता। हो सकता है कि मेरा नाम उस मुफ्तखोरी के रजिस्टर से उसने काट दिया हो। कृपया भेजवा दो।

'नयी कविता' की समस्या दूसरे को स्पर्श न कर सकने की मूल समस्या है। इसी समस्या की पर्तों के कुरेदने पर अन्य समस्याएं भी सामने आ खडी होती है। प्रयाग विश्वविद्यालय मे जयंती के समय हुए कवि सम्मेलन मे नये कवि बिल्कुल नही जम सके थे। कोई सुनता ही नही था। अज्ञेय तक असफल रहे। बच्चन भी बोल गये थे। डाक्टर जगदीश इत्यादि का हाल भी बुरा था। जनता के सामने जमना कविता के लिए बहुत जरूरी है।

रेडियो मे शायद इसलिए नये कवि बडे प्रेम से कविता-पाठ कर लेते है क्योकि वहा सामने जनता नही होती। शायद यही कारण है कि रेडियो मे ही नये कवियो का जमाव जोर मारता है। प्रयाग मे हुए १३/२ के रेडियो कवि सम्मेलन मे तभी सब नये अपना कविता-पाठ कर सके। मै भी था। कुछ भी मजा नही आया। आशा है कि सब लोग मजे मे है। ललित को शुभाशीष। शोभा को भी। सेवा और स्वाती [स्वाति] को प्यार।

सस्नेह, तु०
केदार

बांदा
१६-३-५६
रात ६ बजे
प्रिय भाई,

१५/१६-३-५६ की रात की गाडी से, मद्रास से घर वापस आया। मेज पर रक्खा हुआ तुम्हारा बद लिफाफा मेरी उगलियो से खुलने के लिए लालायित पड़ा था। मैने उसे अपने दिल की तरह खोला। मैंने पढ़ा नही—वह खुद ही बोलने लगा। उसको सुनते-सुनते मै बड़ी देर तक भाव-विभोर रहा। तुम्हारे इस पत्र की

प्रत्येक पंक्ति ने मुझे इतना बल और विश्वास दिया है कि मैं फिर मे खिल उठा हूं जैसे मैं कोई कदम्ब का पेड होऊं ! तुम्हारी आलोचना को पढ़ कर मैं अपनी कमजोरियो को भली-भांति देख सका और यह समझ सका कि वास्तव में कविता फुलझडियां छुडाना नही है वल्कि योगाभ्यास करना है। तुमने ठीक ही लिखा है कि अनुभूतियों के स्तर-स्तर खुलने चाहिए। काम कठिन है—किन्तु अच्छी कविता तभी वनती है जब कवि उसी में डूब जाता है और आये हुए आषाढ़ी बादल की तरह बरस पडता है। मैं इतनी तन्मयता की अवस्था में—योगावस्था में--नहीं रह पाता। यह मेरे व्यक्तित्व की दुर्बलता है। मैंने अपने जीवन को इतने गहरे जा कर आज तक कभी नहीं टटोला और उसके अतल में खिले हुए उस फूल को नहीं देखा है जिसका जिक्र तुमने आगरे में इस बार मुझसे किया था। याद है न ! तुमने कहा था कि अतल में भी फूल खिला पाया जाता है। टनों पानी के बोझ के नीचे। वही फूल है सच्ची सुन्दर कविता। तुम वैसी ही कविता के देखने के अभिलाषी हो। मै वह फूल वाली कविता नही दे पाता। यह शत-प्रतिशत सच है। पर निराश नही हूं डियर। लालसा तो वैसी ही कविता के लिखने की है।

मद्रास एक साफ-सुथरा नगर है। वहा शांति है—सौम्यता है। वहां नागरिक क्षुद्रता नही है। लोगों मे फूलो का प्रेम है। औरत, मर्द, बच्चे सभी फूल पसंद करते हैं। सच पूछो तो मद्रास मे फूलों की मुसकान में जीवन जागता जीता, और संवरता है। बडा ही भला लगता है जब जूड़ो में तुम्हारे धूप-चुराये गेंदे के फूल सुनहली लपट की तरह यहां-वहा आंखों के सामने लहक उठते है। फिर हीरे की चमक भी तो हृदय वेध देती है। लोग सांवले है—काले है। मगर उनके अन्दर यह जो फूलों का और हीरों का प्यार है वही उन्हें सुन्दर बनाये है। इस पर कमाल तो देखो नीले सागर का बालू के तट पर क्षण-प्रति-क्षण, ध्वनित होते रहना और श्वेतोज्ज्वल जल-बूंदो का रत्नहार देते रहना। वड़ा ही मनोहारी लगा मद्रास ! अन्य बड़े नगरों में तो ऐसा लगता है कि जैसे वहां से कोई हृदय की फुलवाड़ी चुरा ले गया है और शेप रह गया [गयी] है वहा एक मात्र कृत्रिम सजावट। मद्रास में अब भी अक्षत यौवन का सौन्दर्य पूर्ण रूप से देदीप्यमान है। दिल्ली में तो मैं गुलगपाड़े में -मोटरो की तेजी मे - विशाल भवनों के घेरे मे--साड़ी-सलवारो की सिलवटों में —छल्ले-उछाल छैलचिकनिया वातावरण में —जब भी वहां गया-— खो गया। सिर चकराया। दिल दब गया। मैं मद्रास में प्राकृत रह सका। यही विशेपता मुझे पसंद है।

तुम्हारी कविता —'मह'बलीपुरम का समुद्र तट' पढ़ ही चुका था। वहां भी मोटर मे गया। नीला सागर हरहरा रहा था। झाग मार रहा था। तुम याद आये। तुम्हारी कविता याद आई। आंखों मे, दिल में नस-नस में, वहां का समुद्र भर गया। पेवस्त हो गया। तुम्हारी भाषा में समुद्र मुझ में सीझ गया। तुमने लिखा

है न कि गंगा का पानी बैंसवाडे की धरती मे सीझ गया है। ठीक वही हाल मेरा हुआ। मै समुद्र को सुनता रहा। उसकी भावभंगिमाए देखता रहा। वह अहर्निशि का पहरुआ कभी पराजय [पराजित] नही होता। खूब है। आसमान क्या टक्कर लेगा उसकी ताकत से। वह तो धुपाया था। फीका था। कमजोर था। दुर्बल था -हारे हुए सैनिक की तरह। न जाने क्यो सागर की ध्वनियो मे मुझे सीता की याद आ गयी जो परित्यक्त हो कर राम को आज तक बाल्मीकि के छदो से उपालम्भ दे रही है। मुझे यही सुन पडता रहा कि राजा राम तुमने न्याय नही किया। तुम प्रजा पुजारी भले ही रहे हो लेकिन तुम धरती की साध्वी सीता के प्रति अनुदार थे। ऐसी मनोदशा मे मैने समुद्र को देखा सुना है। एक घटे तक यही सुनता रहा। फिर चट्टानो मे खुदी मूर्तिया देखी। तुम्हारे वे वाक्य याद हो आये कि उत्तर दक्षिण की सस्कृतियो का सगम है महाबलीपुरम। तुमने सच ही लिखा है। धन्य हो।

परन्तु अभी दिल नही भरा समुद्र देख कर। घटो -पहरो उसे देखना चाहता हू। यह सम्भव नही हो सका। समय की कमी थी। शादी मे गया था -जल्दी थी। फिर कभी गया तो समुद्र की लहरो मे, उसकी नीलिमा मे बध कर रह जाऊगा -न निकलूगा, न निकलूगा उसके बाहर। देखो वह दिन कब आता है।

विनय की शादी हो गयी। खूब मिला भाई को। मगर जो मुझे मिला अपने दिलदार समुद्र से -पहाड पर खुदी मूर्तियो से -मद्रास के शाति सौम्य वातावरण मे -वहा के फूलो मे -वह मेरे भाई को भी नही मिला। गरीब हू लेकिन अमीरो से अमीर हू। दिल देख लो न। प्यारे, अच्छी रही यात्रा।

सस्नेह तु० केदार

समालोचक

हिन्दी का प्रतिनिधि आलोचनात्मक मासिक पत्र

१६-३-५६
१२१६, बाग मुजफ्फर खा
आगरा
दिनाक ········१६
सबेरे के पौने नौ बजे

क्रमाक ······ ·

जानते हो, इस लाल रोशनाई के [की] कलम से क्या कर रहा था ? कापियाँ

जाँच रहा था कि तभी सबेरे की डाक से जनाब आ टपके। अब साला मन कापियो मे लगता नही। और रोज डाक देर से आती थी— दोपहर को एक बजे। आज वक्त से आ गई -पौने नौ बजे। दिमाग मे महाबलिपुरम् घूम गया—नीला समुद्र जो आकाश की तरह मेरे मन पर छाया रहता है। उससे ज्यादा बेचैन किया तुम्हारे गद्य ने। तुम अगर पास होते तो तुम्हारे इतने तमाचे लगाता कि गाल लाल हो जाते। कहोगे क्यो ? अबे, साधारण खुशी होती तो तुझे चूम कर रह जाता लेकिन जब हम आपे मे नही है तब तुझे पीटने के सिवा क्या करे। यह भी खयाल आया कि तारीफ लिखना ठीक नही— तुमने महाबलिपुरम् के पास मेरी कविता याद की —मुसरी सार्थक हो गई। लेकिन चूँकि मै तुम्हारे पद्य का काफी सख्त आपरेशन करता हूँ इसलिए आशा करता हूँ कि गद्य की तारीफ करना दोस्त को बिगाडना न होगा। वैसे किसी के बर्बाद करने का सबसे अच्छा तरीका उसकी जरूरत से ज्यादा तारीफ करना है। मतलब यह कि तुम्हारा यह खत तुम्हारे खतो मे भी —खूबसूरत है जैसे वसन्त की सुन्दर ऋतु मे सरसो। By the way, आजकल हमारी Favorite Walk वाली नहर के पास नीबू के फूलो की अरघाने उठ रही है। कल उधर जाऊँ गा —सूर्योदय मे पहले। पुलिया पर बैठ कर तुम्हारा खत पढू गा।

वाह प्यारे तुम कदब की तरह खिले। स्फुरद्बाल कदम्बपुष्पै। याद है ? मस्कृत पढ, सुसरे। कवि कुल गुरु ने लिखा है, पार्वती के लिये। खूब खिले। मेरा पत्र भी मानो सार्थक हो गया – पचबाण का काम कर गया।

लेकिन माई डियर तेरे खत मे एक दूसरा केदार भी बोलता है। कविता लिखना "योगाभ्यास करना है", "अनुभूतियो के स्तर-स्तर खुलने चाहिए"। (अब हम तुम इतने निकट है कि पता नही चलता कि यह वाक्य तुम्हारा है या मेरा) 'अच्छी कविता तभी बनती है जब कवि उसी मे डूब जाता है" (बात साधारन है लेकिन योग के सदर्भ मे असाधारन), असाढ़ी बादल की तरह कवि बरसता है", "मै इतनी तन्मयता की अवस्था मे—योगावस्था मे —नही रह पाता।" अबे, पहुँच गया पहली सीढ़ी तक, नही तो पता कैसे लगता कि तू किस अवस्था मे है और तुझे किसमे रहना चाहिए। "अपने जीवन को इतने गहरे" जा कर नही टटोला, अतल मे खिले हुए फूल को नही देखा।

तुम देखते हो उसे, उसकी खुशबू तुम्हे मस्त भी करती है। तभी तो गद्य मे बेले महक उठते है। लेकिन कविता कुछ और साधना माँगती है न ? तुम्हारे मन की शक्ति बिखर जाती है। समेटो साली को। फिर ऐसा फायर करो गे कि पक्तियो मे महाबलिपुरम् का समुद्र लहराने लगे गा। तुम्हारे खत का पहला पैरा अद्भुत मनोयोग से लिखा गया है। शायद तुम खुद उसके मधु मे छके हो—इसीलिए प्रशसा न माँग कर आत्मविश्वास की बात करते हो। कुछ दिन बाद —यह

तार टूटा नही तो --पद्य लिखने के बाद तुम्हे दाद की चिन्ता न रहे गी- बस मुझे सुनाने के लिए तड़पो गे। मुझे क्यों ? इसलिए कि मैं उस फूल के पास हूँ जो तुम्हारे अतल में खिला हुआ है। टनों पानी के नीचे। जो पानी उसे दबाता है--- लेकिन खिलने की नयी शक्ति भी देता है।

अब तक चार-पाँच कापियाँ और देखता सो जनाब आ टपके। बहरहाल अब दिमाग हल्का है। बिना जवाब लिखे दूसरा काम कर ही न सकता था। तमाचो से शुरुआत- दोनों गालों पर सहस्रो चुम्बनो से समाप्त। मैडम जेलस तो न हों गी।

रामविलास

Banda
31-3-59
Dear,

Are you reaching L.K.O. to preside over Kavi Sammelan on 20/4/59 ? Anyhow I am not going there. I have already wasted my valuable days at Madras. No more I can afford to remain out for a day even You no my meagre earning

I shall write you a detailed lettre after sometime when you would be free from manual labour—I mean free from examining the copies

How has Lalit done his papers ? How is Shobha doing in her exam.

yours affectionately
Kedar Nath

[4-4-59]
(10-30 P.M.)

=श्री=

कहो योगभवानी, क्या हाल है ? कहां तुम्हारे ३०-१२-५८ के पत्र का उल्लास ! और कहाँ पोस्टकार्डो में कुशल क्षेम वार्ता। इसमे दोष बान्दा [का] नही आगरे का है। इधर मैने M.A. के छात्रो को पढ़ाने के लिये कई उपन्यास

पढ़े जो पहले पढे न थे, कई नाटक इसी तरह पढ़े, कई कवियों पर भाषण दिये जिन पर पहले बोला न था। यानी जनवरी-फर्वरी में यह आलम कि रात को पढा और सवेरे लड़कों की नजर कर आये। घर आते ही दूसरे दिन की तैयारी। फुर्सत में पुत्र-पुत्रियो की थोडी बहुत सहायता। अब की सरसों भी नही देखी; कैसी है। कल जरूर जाऊं गा देखने।

माई डियर, तुम्हारे सुन्दर पत्र के जवाब मे मैने इलाहाबाद का नशा पेश कर दिया था। लेकिन वह जमा नही। मैने उसे तुम्हारी कविता की तारीफ़ मे ही लिखा था। निराला जी के बारे में मेरे अन्तर्मन की बातें सुनने के हक़दार तुम्ही तो थे। लेकिन तुम ठहरे वकील। तुम्हें उससे क्या तस्कीन होती।

तुम्हारी कविता बहुत सुन्दर है। "धूप धरा पर उतरी" से जरा उन्नीस है। इस मे आगरे के सुने हुए राग बोल रहे है। लेकिन केदार के लिए सुने हुए राग जरूरी नही है। वह जब स्वयं आदि भूत को रागबोध की संज्ञा देता है, तब वह किसी महाकवि से घट कर नहीं होता। Whitman के Dandelion जैसा विहँसता है। अब देखो, इस कविता की हर पंक्ति दोषपूर्ण है यद्यपि मैं इसका अर्थ Unheard melody की तरह सुनता हूँ और उस पर मुग्ध हूँ।

१ योगलीन शिव की मुद्रा मे वादक : बैठ कर बजाये गा क्या? गन मस्त हुआ तब क्यों बोले ?

२ योगलीन ऐसा कि भवानी को गोद मे बिठा लिया? और योग भवानी गोद मे है तो योगलीन कैसे? या भवानी मे लीन?

३ मर्मकुशल हाथो मे बजा रहा है—ठीक। लेकिन 'उन्मद' फालतू है—मर्मकुशल के बाद।

४. आदि भूत को द्रवीभूत किया —सुन्दर। परिमंज्ञा पुन: थोपथाप।

५. जो न कभी···जो क्या ?

६. बडी सुन्दर पक्ति है। काश—इस image पर ध्यान जरा और टिकता।

७. अनेक विशेषण —उलझन—

८. सोने के प्रकाश में? प्रकाश कहाँ का?

९. पिंड पठारी—भद्दा प्रयोग।

१०. लहरें लेता —हल्का मुहावरा

११. महाकाश —Echo of राम की शक्तिपूजा

१२ शशि शेखर—शिव तो सारंगी लिये सामने था। महाकाश की ओर उठने की आवश्यकता क्या थी ?

१३. महाकाल···मग्न हो गया—सुन्दर पंक्तियाँ हैं। लेकिन महाकाल की image व्याख्या माँगती है। शिव से वह भिन्न क्यों है—यह भी बताना आवश्यक। असल में शिव से वह lelescope [Telescope] कर जाती है। मिश्रित मूर्ति

विधान हो गया है।

१४. अंतिम चार पंक्तियां बहुत साधारण है। मानो कविता लिखते समय श्रीमती ने तुम्हें distub कर दिया हो और तुमने इन्हें बाद मे जोड़ा हो।

मैं फिर कहता हूँ—जो तुम कहना चाहते हो—वह बहुत सुन्दर है।

But your prose in the lettre is amazingly beautiful, almo t better than your verses.

प्यारे, कविता लिखना भी योगाभ्यास है। अपनी अनुभूति पर चित्त को और एकाग्र करो—अपनी मर्मभेदी दृष्टि मे मूर्ति विधान के स्तर-स्तर को आलोकित कर दो--शब्दो को सारंगी के स्वरो की तरह निखार दो कि उनमें भर्ती का एक syllable दिखाई न दे। तब यही कविता एक classical piece बन जाय गी।

बन जाय गी न? क्योकि हम कविताएँ लिखते नही! उपदेश देने में क्या लगता है! लेकिन हम कविताएं पढ़ खूब रहे है। मिल्टन की एक पंक्ति आपकी नज़र है:

Like a fair flower, surcharged with dew, she weeps.

जरा सोचिये, कहाँ किसके बारे मे नयनसुख जी लिख गये है?

Sercharged with dew—है जवाब इसका?

रामविलास

4-4-59

10-30 P.M.

8-4-59

नही जनाब, हम लखनऊ नही जा रहे। यहाँ के काम से फुर्सत नही। तुमने लिखा है "I have already wasted my valuable days at Madras" ठीक है। कमा नही पाये। कविता के लिये जो पूँजी लाये थे वह भी खो गयी हो गी। बहरहाल तुम्हारे पिछले पत्र ने बता दिया था कि मद्रास मे बिताये हुए दिन वास्तव में कितने "Valuable" थे। हमारी manual Lobour चल रही है—साथ ही और काम भी—जैसे समालोचक के लिए संपादकीय या सिद्धेश्वरी बाई (अब देवी) का गाना सुनना (रेडियो पर)। ललित शोभा के पर्चे ठीक हुए है। तो अब अपना Detailed [पत्र] भेजो।

रामविलास

बांदा
१७-४-५९
मेरे दोस्त,

आप नाराज क्यो बैठे है ? मैने उत्तर देने मे देरी की तो कोई अपराध तो नही कर बैठा । आज के उलट फेर के युग मे ऐसी देर हो जाये तो कौन ठीक । देखो न, दलाई लामा अलघ्य पर्वतमाला पार कर, देश-त्याग कर, हमारे देश आ गये है । हम स्वागत कर रहे है उन्हे बुद्धात्मा के रूप मे । वाह रे ! हमारा अतिथिसत्कार ! जनाब, उन्होने शायद कोई बड़ा काम किया है अपने देश तिब्बत को छोड कर । हम तो यह नही समझ पाते । मालूम होता है कि धर्म दुर्बल था । उसे पालने मे लिटा कर भारतीय श्वेत-श्याम गायों का दूध पिलाना जरूरी था । बेचारा वहा रहता तो सूख कर काटा हो जाता । अच्छा हुआ कि ऐसे धर्म की रक्षा मे लामा (महामहिम) ने अपनी मातृभूमि तक को त्याग दिया—जैसे बुद्ध ने घर छोड दिया हो । यह व्यग [व्यग्य] है । बहादुरी तो इसमे थी कि वही जमे रहते और धर्म को सबकी रक्षा मे समर्पित कर देते । पर खूब है, हम लोग भी कि स्वागत मे और यशोगान मे सबसे आगे है । यह हमारे समन्वयात्मक दर्शन का सबसे ताजा नमूना है । अगर प्राण रक्षा की दृष्टि से देखो तो श्री लामा का यह देश-त्याग सर्व-सम्मत मे ईश्वरीय इच्छा का ही प्रतिफल है । हम इस पर कविता लिखना चाहते थे पर कलम दगा दे गयी । विवश हो कर यह पत्र ही लिखते है । और खैरियत है । लम्बा खत नही है—मुंह न फुला लेना ।

पुनश्च—

अब घर की नीव तो खुद गयी होगी—कब तक तयार होगा ?

केदार

११ अशोक नगर,
आगरा
१-५-५९

प्रिय केदार बाबू,

फिलहाल यह कार्ड इसलिए है कि तुम से पूछा जाय कि लखनऊ तो नहीं जा रहे हो । चद्रावली [चन्द्रवली सिंह] की चिट्ठी आई है जिसमें लिखा है, तुम वाराणसी पधारोगे । अपना जाना वहां हो नही सकता । लेकिन १३ मई को लखनऊ एक वार्ता Record कराने जाना है । अतः उधर जाओ तो लिखना ।

तु०
रामविलास

समालोचक

हिन्दी का प्रतिनिधि आलोचनात्मक मासिक पत्र

प्रधान सम्पादक — १२१६ बाग मुजफ्फरखाँ
डा० रामविलास शर्मा, एम ए , पी-एच डी. आगरा
सह-सम्पादक—
राजनाथ शर्मा, एम ए., विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, एम. ए.
क्रमाक — दिनाक . २५-५-१९५९

प्रिय केदार,

"आप नाराज क्यो बैठे है ?" —१७ ४-५९ के कार्ड मे ! उसी दिन लिखे हुए 'अन्तर्देशीय' मे —"डियर, एक पोस्टकार्ड अभी-अभी लिख कर रख ही चुका था कि कलम कुडकुडाने लगी · "

और यह २५ मई । लानत ! हजार बार लानत !

कापियाँ खत्म हो गई। जिन दिनो तुम्हारा पत्र आया, उन दिनो तो उनसे निपट ही रहा था । मई मे इलाहाबाद की बी ए परीक्षा (प्रथम) के पर्चे हुए और उनसे अभी दो-चार दिन हुए निपटा हूँ । अमृतलाल नागर यही है । २० को उनके बडे लडके का ब्याह था । उसमे भी नही जा सका । समालोचक के लिए सम्पादकीय, पुस्तक-रिव्यू आदि लिखे । सन् सत्तावन का सैनिक इतिहास लिखने का विचार है । उसके लिये सामग्री एकत्र करने परसो कलकत्ते जा रहा हूँ । वहाँ का पता C/O कृष्णाचारी, हिंदी विभाग, नैशनल लायब्रेरी, कलकत्ता है। कुछ तैयारी यहाँ भी की है । इधर एक हफ्ते मे भुवन को मलेरिया ने दबा रखा था। अब हालत सुधर रही है ।

यह सब खत न लिखने की कैफियत नही है । लानत—हजार बार लानत — अपनी जगह बरकरार है ।

तुम्हारे बाँदा के वकील साहब योगेन्द्र सिंह हमारे लखनऊ के भूतपूर्व छात्र निकले। उनके छोटे भाई से हमारे स्वर्गीय सहयोगी-अध्यापक डा तारा सिंह की लडकी का विवाह हुआ है। विवाह के दिन से ही तुम्हे पत्र लिखने की सोच रहा था लेकिन आज कल परसो, जम न पाई सरसो !

तो माई डियर, नाराजी की ऐसी तैसी। उत्तर देने मे तुमसे अपराध हुआ तो हमसे, उससे बढ कर, क्राइम हुआ ।

दलाई के बारे मे तुम्हारी बाते ठीक ही है। बेचारा ढुलमुलयकीन है । पहले चीनियो को देश भक्ति का पत्र लिखा, फिर देश त्याग का फैसला किया । बहरहाल तिब्बत की काया पलट होने मे अब विलम्ब नही है ।

तुम्हारी कविता मे "हम ही" की जगह हमी होना चाहिए । यह कविता छन्द-

बद्ध होती यानी सानुप्रास तो ज्यादा जमती।

कुल मिला कर व्यंग्य बढ़िया है।

अच्छा, समालोचक के लिए लिखो। कचूमर न निकालूं गा। लेख बड़ा लिखना जिससे काटने पर भी छपने लायक रह जाय।

अभी घर बनने की नौबत नहीं आई। Plot के ऊपर से टेलीफोन के तार नहीं हटे। इति०

तु० रामविलास

Banda
1-6-59

Dear Doctor,

On my return from LKO. yesterday I got your letter. I read if from one end to the other. I could know that you are master of arts of apologies. You first delay the matter and then later on beg for mercy. I don't think you deserve any kindness from me. Any how my lordship will this time excuse you for late replying and issue a writ of mandmus that [that] you be always prompt in letter writing else all your estate will be forfeited. I think you will stay at Calcutta for one or two months and will look towards none but the books. I appriciate your conduct which knows no derailment. Wife is out, Munna is out. I alone attend the parade of life and perspire with love.

Yours,
Kedar

Calcutta-29
२४.६.५९

Your Lordship,

It is a matter of gratification to know that you read letters from one end to the other. Be so kind as also to make it clear as to which end you start from. Your lordship is gracious enough to note that his humble servant is a master of arts of apologies

and graceful enough to forget his own Ph. D. in this line.

Milord's writ of Mandamus has arrived on a 5 N. P. post card. May I hope that the order forfeiting my estate would arrive in a [10] NP inlander?

I look at books only in the library except when I am disturbed by the chattring or whispring of uncholarly maidens around. As you are attending the parade of life alone, you may be commanding the poet—Slope arms (=Take up the pen); Stand at Ease (=lie down), Fire (=write a poem). Your lordship perspires, here I sweat. I am leaving Agra on 30th.

रामविलास

ब. ख्.

बादा

५-७-५९

प्रिय डाक्टर,

तुम्हारा २४/६ का कलकत्ते का लिखा, पत्र मुझे बादा मे मिल गया था। तभी मुझे अपनी पुत्री किरन के ब्याह् के सम्बध मे बातचीत करने तथा उसके रूमानिया जाने के लिए पासपोर्ट के लिए दिल्ली जाना पडा। मै यहा मे २९/६ को शाम को गया। वहा दौड-धूप करता रहा। सबने प्रयास किया। पर अपने मित्रो की प्रयत्न सार्थक न हुआ। अन्त मे मेरे सम्बधी का प्रयास ही सफल हुआ और हम Joint Secretary का प्रमाण पत्र पा सके कि मेरी पुत्री विदेश जाने के योग्य है और उसे पासपोर्ट मिल जाना चाहिए। कल यहा उसके लिए गारटार से लिखा कर स्टाप भेजना हूँ [है]। इसी सब मे व्यस्त रहा। दिल्ली मे पता चला था कि तुम मेरठ जाने के लिए, ४/७ को पहुच रहे हो। तभी मै व नागर जी जवाहर चौधरी के घर तुम्हारी प्रतीक्षा करता रहा। शाम को मजबूर होकर वापिस चला गया। तुम न आए, न आए। शायद रात को वहा पहुचे होओगे। हाल तो जवाहर चौधरी की गृह-स्वामिनी ने बता ही दिया होगा। इन्ही सब कारणो से दुनियादारी की झझटो मे फसा रहा और तुम्हारी शब्दावली मे "Slope arms', "Stand at ease" तथा "Fire" न कर सका। कविता दिमागी शाति चाहती है। वही नसीब नही थी अत: कविता नही लिख सका। कोई चिन्ता न करना। सब ठीक ही होगा। हा मिलते

तो गले से लग कर रो जरूर लेता। परेशान बहुत था। एक बात संक्षेप में कहूं। मैं इस दुनिया के लायक कतई नहीं हूं। यह तो सारा खून चूस लेना चाहती है। खैर छोड़ो भी।

मैडम इलाहाबाद हैं। शायद ३/४ दिन में आयें। बेटा इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में Science में admission कराने के सम्बंध में वहीं है। देखो होता भी है कि नहीं।

मैने डिस्ट्रिक्ट Govt counsel की post के लिए बांदा में apply कर रखा है। यह मसला भी समय और शक्ति ले रहा है। पता नहीं क्या हो। अभी कोई भी तैनात नही हुआ।

मौसम कुछ बेहतर है। कल शाम थोड़ा पानी पड़ा है।

मेरठ मे शादी सकुशल सम्पन्न हो गयी होगी। मैं रुक जाता पर मुझे बांदा मे ६/७ को अपनी दरख्वास्त देना है और किरन का Guarantee form भराना है इसी मे चला आया। बड़ा अफसोस रहा न मिल सकने का।

ललित के मसले में अभी कुछ नहीं हो सका। पर ताक मे हूँ। जब भी कभी कुछ वश चलेगा -प्रयास करूंगा ही। कह देना।

बेटिओं को प्यार।

बेटों को प्यार।

मलकिन को नमस्ते।

तुम्हें यह पत्र।

तु० सस्नेह

केदार

१२ अशोक नगर,

आगरा

२८-७-५६

प्रिय केदार,

तुम पर क्रोध तो बहुत आया लेकिन तुम्हारा पत्र पढ़ कर काफूर हो गगा। पौने पांच के करीब शाम को उस दिन स्टेशन से स्कूटर करके सीधा गली डकोतान पहुँचा। मालूम हुआ, माई लार्ड अभी तशरीफ ले गये है। उस वक्त पौने पाँच ही बजे थे। क्रोध इस बात पर आया कि जनाब की गाड़ी सात बजे जाती थी लेकिन हुज़ूर बिना रुके ही --या और ज़्यादा रुके बिना ही—कहीं चल दिये। कुछ देर में शिवनारायण श्रीवास्तव आये; उन्हें नरोत्तम के यहाँ भेजा लेकिन आप

कहाँ मिलने वाले थे।

मेरठ में ब्याह के समय हमने मेरठ कालेज की Library का मुआयना भी किया। चार किताबें Military Science पर लाये। अभी उन्हें आधा पढ़ा है। कलकत्ते की बटोरी हुई सामग्री भी कापियों में बंद है। इधर कालेज में औसत छः घंटे बीतते थे। अब टाईम टेबल बन गया है, एक खाली जगह पर जो सज्जन नियुक्त हुए थे वह भी आ गए है। गाड़ी अपनी पुरानी रफ्तार से चलने लगी है। इस बीच पोस्टकार्ड लिखे, लिफाफा कहीं न भेजा। अब ज़रा फुर्सत है। इसलिए यह।

मैला आँचल पढ़ा। उसके बाद परती : परिकथा जबर्दस्ती पढ़ी। रेणु अपने पहले उपन्यास में नीम प्रयोगवादी था। दूसरे में सोलहों कलाएँ पूरी हो गई है। इन उपन्यासों पर अगस्त अंक के लिये लेख लिखा है।

जवाहर की नौकरी छूट गई हैं- –उसी दिन जब हम वहाँ पहुँचे थे। लेकिन वह काफी उत्साह में था और बहादुरी मे स्थिति का सामना कर रहा है।

तुमने लिखा है—कविता दिमागी शान्ति चाहती है। मुझे लगता है –शारीरिक शान्ति—यानी कामधाम से फुर्सत—और भी आवश्यक है। तुम वकालत करते हुए कविता लिख लेते हो, यह मेरे लिए सदा चमत्कार का विषय रहा है। मुझे मानसिक शान्ति तो प्राप्त है लेकिन सबेरे से शाम तक काम के मारे शरीर को एकाग्र नही कर पाता- जैसे लोग मन एकाग्र करते है। और कविता के लिए शरीर शान्त, संतुलित, दैनिक उत्तरदायित्व से मुक्त होना चाहिए। सो नौ मन तेल जुटता नही!

यह ठीक है कि तुम दुनिया के लायक नही हो। वह सारा खून चूस लेना चाहती है। यही इतिहास मदद करता है। जब से सन् सत्तावन पर पढ़ना शुरू किया है, लगता हे, मेरी मुसीबत कुछ नही है। परेशान तो करती है मुसीबतें लेकिन उन लोगो की मुसीबतें जो जंगलो मे भटकते फिरे, कभी खाना नसीब, कभी खाली पेट, और खाने से ज़्यादा कीमती गोली बारूद नही, उनके जाने-पहचाने मित्र पकड़े जाते है, फांसी के तख्ते से लटका दिये जाते है, या तोप से उड़ा दिये जाते है, लखनऊ गया, दिल्ली गयी, झांसी गयी लेकिन वाह री हिम्मत, ऐसे लड़ रहे है मानों इनकलाब अभी शुरू हुआ है!

अच्छा मेरी नयी किताब में सौ वर्ष पहले के भारतीय सूरमाओं के दाँवपेंच देखना।

ललित भोपाल मे है नौकरी की तलाश मे। शोभा ने Iyr मे Science लिया है।

आशा है तुम्हारी श्रीमती जी प्रयाग यात्रा से वापस आ गई हो गी।

तुम्हारा
रामविलास

बांदा
११-८-५६

प्रिय डाक्टर,

'समालोचक' के लिए जब कोई लेख लिख भेजूंगा तब तुम्हारे, पिछले अंकों के, लेख और विचार पढ़ूगा। अभी तो वह इस ध्येय से मेरे पास नहीं आ रहा—जब से उसका विशेषांक फरवरी में निकला—कि मैं free copy लेने के [का] स्वभाव न डाल लू। तुम्हारे प्रकाशक बड़े समझदार हैं और अपने समालोचक-मंडल के लेखकों से काफी सहानुभूति और उदारता से पेश आने के आदी जान पड़ते हैं। आखिर है भी तो मेरे [मेरी] जाति के। बेचारों ने पैसा कमाने के लिए पत्र निकाला है कि लेखकों को अपनी तेरही और वार्षकी खिलाने के लिए। सच पूछो तो डियर अखर गया है 'समालोचक' का तब से न आना और अगर आया भी तो शायद दो-एक बार ही। यह इसलिए नहीं लिख रहा कि तुम उसके कान पकड़ो। चलने दो उसको जैसे चले। हिन्दी के प्रकाशक तो निराला को चाभ बैठे, वही परम्परा है इधर भी। बस तुम बचे रहना। यह भी न सोचना डियर कि केवल ४/ रु० वार्षिक बचाने के लिए मैं इतना तूमार बांध रहा हूं। ऐसा भी नहीं है। तुम जानते हो कि जो प्रकाशक आत्मीयता स्थापित नही करता वह अपने पत्र के लिए किसी भी लेखक से अच्छे लेख नही लिखा सकता। क्योंकि हम तो व्यवसायी लेखक नहीं है। हम तभी लिखते हैं जब जनाव लिखवाते है। टके का लिहाज किया गया कि लुटिया डूबी प्रकाशक का [की]। बड़े धैर्य और सहयोग की भावना से पत्र चलते हैं और त्याग तो लागू ही रहना चाहिए।

रेणु मुझे कभी अच्छा न लगा। मैं तो उनकी दोनों पुस्तकें पढ़ ही नही पाता। गाड़ी आगे नही घसिटती। वैसे हम उन उपन्यास-सम्राट से अपनी इस कमजोरी की माफी मांगने को तयार हैं। उनके उन गोलन्दाजों से भी क्षमा के प्रार्थी हैं जो उन्हें बलात् हिन्दी के महान कथाकार प्रेमचन्द के ऊपर, बैठाते हैं।

मैंने जवाहर को पत्र लिखा है। उसका भी पत्र आया है। वह उपन्यास चाहता है। बड़ी टेढ़ी खीर है। जम कर बैठना और कलम घिसना तब, जब कचहरी से चुस कर आओ, यह कैसे होगा। फिर भी दोस्त के लिए हड्डियों पर, दिल और दिमाग पर ज़ोर डालूगा।

तुम शरीर एकाग्र नहीं कर पाते। मैं मन को एकाग्र नहीं कर पाता। तुम्हारा तन मजबूत है। हमारा मन घुमक्कड़ है ससुरा, फिरा करता है इधर-उधर।

गदर का इतिहास लिखते और पढ़ते रहने के कारण जनाब हमें भी जंगलों में भटकाना चाहते है और वीरों की परम्परा में तपाना चाहते हैं। लाजवाब बात है - डियर यह। मगर केंचुआराम भिभीरीराम, गतियल महाराज भला शेरबाज सिंह, समरजीत सिंह इत्यादि इत्यादि कैसे हो सकते हैं। हम बीसवीं सदी के—

खासकर नेहरू-युग के और इंदिरा के काग्रेसी-छाप-युग के—वनकही मे बौग कर रक्खे गये बूढे नौजवान है जो घर-गिरस्ती के चक्कर में छछूदर बने चू-चू किया करते है। हम घोडे पर चढेगे तो टाग टूट जायेगी। शायद घोडा भी हमे ले जाने से इनकार कर देगा। आखिर वह भी तो स्वाभिमानी जीवधारी है। हम ठहरे कायर, निकम्मे, वह ठहरा उडनबाज बहादुर चौपाया। बात बहुत बडी है। यही छोडता हू। मगर तुम्हारी बात को मान कर हिम्मत बांधे रहता हू। उन वीरो को याद करता हू, सिर झुकाता हू जो लडे और वन-वन भटके। वह मेरे जीवन और प्राण के प्रेरणा-स्रोत है। तुम्हारी पुस्तक जरूर पढूगा जब छाप कर भेजोगे।

दो दिन से पानी छलाछल बरस रहा है। खूब मजा है। हम भी छप्प छप्प है। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तु० केदार

प्रिय केदार,

[३१-८-५६]

तुम्हे "समालोचक" नही मिलता, इसी से जाहिर है कि वह बन्द होने जा रहा है। दो दिन हुए अमृतलाल नागर आये थे। उन्होने बताया उन्हे भी नही भेजा जाता। हमारे प्रकाशक ने राजामडी मे एक नयी दूकान खोल ली है। मासिक पत्र मे क्या मुनाफा होता है? सो दूसरा वर्ष पूरा कर के बन्द। बहरहाल बन्द होने के बाद एक बार तुम्हारे देखने के लिए दूसरे वर्ष के अको की व्यवस्था कर दूँ गा।

तुमने लिखा है कि "हिन्दी के प्रकाशक तो निराला को चाप [चाभ] बैठे—बस तुम बचे रहना।" यह बात निराला जी के दर्शन करने के पहले ही बहुत कुछ समझ चुका था। एम ए. करने के बाद जब रिसर्च कार्य आरभ किया और उनके सम्पर्क मे आया तब बात और भी स्पष्ट हो गई। इसलिये साहित्य लिखने से पेट भरे गा, ऐसा कभी नही सोचा। हम अवैतनिक सम्पादक है। इसलिये प्रकाशक की धौंस मे नही। लेख का पारिश्रमिक मात्र लेते है जैसे और लेखको को मिलता है। इसलिये हमारे बचने का सवाल नही उठता। प्रोफेसरी की चाप दूसरे ढंग की है, उससे अवश्य नही बच सकते। लेकिन लगता है, अभी तक तो उसने मुझे ज्यादा नहीं बिगाडा।

आजकल शरीर खूब स्वस्थ है। मन मे उमग है। जरा गर्मी कम हो तो कविताएं लिखू। यह शिशिर-हेमन्त खाली न जायेंगे। रेडियो से Indian Euro-

pian c'assical Music खूब सुनता हूँ। मन मस्त हो जाता है।

अपना हाल लिखो।

तुम्हारा रा० वि०

३१-८-५९

बांदा

१-९-५९

डियर,

अभी कचहरी से आया तो तुम्हारा बहुप्रतीक्षित पत्र मिला। तुम मस्त हो चोला चैन में हो और मन [में] उमंग है —यह जान कर बेहद खुशी हुई और हम भी तुम्हारी तरह रंग में हैं। अपनी मस्ती का सस्ता प्रभाव नीचे लिखी हुई कविताओं से तुम तक भेजता हूं।

१. श्यामकाय प्रभविष्णु मेघ जो प्राकृत नट है
धीर, वीर, गम्भीर और निःशंक निपट है
महाभूत उस पूर्ण पुरुष से विद्युत-वनिता
हेर-फेर मुख लिपटी-छूटी क्षण-क्षण चकिता

दूसरी रचना है :—

२. अपने घन हैं
यद्यपि ये तम-आवृत घन है
फिर भी ज्योति यही घन देंगे
जब बरसेंगे जल बरसेंगे
पर उपकारी
ये नभचारी प्राकृत घन हैं।
अपने जन हैं
यद्यपि ये अध-जागृत जन हैं
फिर भी दृष्टि यही जन देंगे
जब सिरजेंगे सुख सिरजेंगे
युग-अवतारी
ये थलचारी प्राकृत जन हैं।

कहो कैसी रही ये कविताएं? मिस्टर ये अभी की हैं। ताजा हैं।

यह जानकर अवश्य खेद हुआ कि समालोचक बंद होने जा रहा है। यह तो वज्र-पात ही होगा। यह वह हथियार था जो सही माने में भ्रम को मार भगाता था

और स्पष्ट दृष्टिकोण को सही अर्थ मे प्रस्तुत करता था। वह दिन बडा ही बुरा होगा जब इसका प्रकाशन बद कर दिया जायेगा। निश्चय ही आलोचना के मूल्याकन से सम्बधित साहित्य के विकास की सबसे मजबूत कडी टूट जायेगी। गुलेरी जी की आत्मा को अवश्य ही दु:ख होगा। तुम कर ही क्या सकते हो, जब पेटू प्रकाशक पैसे की ओर पूरी तरह से घसिटते है और साहित्य की ओर बहुत कम। वे तो केवल साहित्य के क्षेत्र मे प्रवेश पाने के लिए ऐसे प्रकाशन करते हे और जब वह अध्याय पूरा हो जाता हे और टके बटोरने का दरवाजा खुल जाता हे तो साहित्य पर लात मार कर उसे देखते तक नही। मुझे तो याद ह मतवाला' के महादेव सेठ। वाह रे दिलेर। खूब थे वह। खूब थी उनकी साहित्य-निष्ठा। अब के प्रकाशक उनकी श्रेणी मे बैठने के काबिल ही नही है।

नागार्जुन की 'सतरगे पखो वाली' आयी है। कुछ कविताए आस्वाद बढिया देती है। कही व्यग [व्यग्य] है कही छिपा हुआ स्नेह। कही आम की बौरो[बौरो]पर भोरे टूटते है तो कही महजन की तुनुक डालियो के मुरूक न जाने का भय भी होता है। बहुत दिनो के बाद पकी सुनहरी फसल देखने पर जो उल्लास होता हे वह अपनी सादगी मे ही कमाल करता है। 'तन गयी रीढ' भी उम्दा चीजे [चीज] हे। इसमे किसी की हथेली का स्पर्श, नाक की उष्ण सास का कधो पर प्रभाव डालना, निगाहो के जरिए अन्दर पैठना, अलको की सुगध के आते ही रग-रग मे बिजली का दोडना और हर बार रीढ का तन जाना उस हृदय की रसिकता और शौर्य का परिचय देता है जो साहित्य के क्षेत्र मे मरा-खपा जाता हे। मुह मे गालियो का निकलना भी, कमल स काले भोरो का निकलना है बढिया उक्ति है। पुस्तक बढिया गयी है। मिले नो पढना।

दूसरा पुस्तक शमशेर की आयी हे। नाम है 'कुछ कविताए'। यह भी अपना मित्र अजीब कवि हे। सग्रह समर्थ कवि नरेन्द्र को भेट किया गया ह। पहली कविता 'निराला के प्रति' है। अन्तिम कविता अज्ञेय को सम्बोधित की गयी है। देखा तुमने नरेन्द्र और निराला के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करके तथा निराला को, राह से भटकने पर, पथप्रदर्शक के रूप मे देख कर, और अज्ञेय के प्रति आत्मीय हो कर मेरे इस प्यारे मित्र ने किस सफाई से इन सब की परम्पराओ की और उनके कृतित्व की दाद दे दी है। मगर अगर कोई यह सोचे कि मेरे यार ने उनकी खूबियो को अपनाया है तो उसे [इसमे] उसके कोई लक्षण न मिलेगे। समूचा काव्य-सग्रह 'शमशेरियन' है। एक कविता तो। १ ५ [डेढ़] साल मे तैयार की गयी है। इसके मतलब है कि जनाब इन कविताओ पर कस कर मेहनत करते है और तब ऐसी चीजे देते है। कई बाते उठ खडी होती है इनके पढ़ने के बाद। शमशेर का कोई सम्बध अपने पास के और दूर के कोलाहल पूर्ण और सघर्षरत जग से नही रह पाता। वह 'ग्वालियर काड' से प्रभावित होते है तो जैसे शाम के उठते हुए

धुआं को सुलगते देखते हैं। वे वहां की हवा को मजूर का हृदय सोखती पाते है। लाल निशान को चलते देखते हैं तो रोटियां टंगी हुई समझते हैं (यानी आंइदा वे रोटियां देंगे)। का० भारद्वाज की शहादत पर उनका कलाम भी ऐसा ही है। मेरा मतलब यह है कि हजरत की कविताएं अपने 'स्वयंवाद में रह कर ही बाहर की बहुत खामोश आवाज सुनती हैं और कुछ-कुछ अपनी ही रेखाओं के रूप में सामने आती हैं। चांदनी के बेठोस महातल के मौन में चलने की कल्पना भी यही हमारे प्रिय बंधु कर सकते है। परन्तु कही कहीं उम्दा तरीके से बात कह दी गयी है। उषा की पानी में हिलती प्रतिच्छवि को किसी गौर देह का प्रतिबिम्ब कहा है, इस ऊंचे फकीर कवि ने। सूर्योदय को देख कर कहता है कि इस उषा का जादू टूट रहा है। रेडियो पर योरोपीय संगीत सुनकर कहता है यह कवि : "परदों में—जल के—

शांत झिलमिल झिलमिल

कमल दल।"

व्यक्त करने का तरीका बहुत ही छोटा है। मगर कभी-कभी बात बन जाती है। कुछ जोरदार पंक्तियां देखो :

"यह समंदर की पछाड़
तोड़ती है हाड तट का--
अति कठोर पहाड़ ।"
फिर हजरत मूसा कहते है : —
"पी गया हूं दृश्य वर्षा का :
हर्ष बादल का,
हृदय में भर कर हुआ हूं हवा-सा हलका !"

देखा न तुमने कि प्रकृति भी इमे अनुभूतियों से भरती है। 'दिन' की खूबसूरती पर भी वह रीझा है मगर उसे 'किसमिसी गोरा रेशमी' देख सका है। उसकी पंखुड़ियों के तले मोतियों की आब छिपी है। 'एक सलोना जिस्म' साहित्यिक है और अनुभूति मे भरी है। देखो,

"उसकी खुली अंगड़ाइयां हैं
कमल के लिपटे हुए दल
कसे भीनी गंध में बेहोश भौरे।"

जहां स्त्री का स्पर्श हुआ कि मिस्टर घुल जाते हैं। बात कमल के दलों की और भौंरे की है मगर हैं मिस्टर कवि की।

मैं कह सकता हूं कि शमशेर सब मे कटे हुए, इस भ्रम में हैं कि कविता का क्षेत्र और है और संसार और। कविता वहीं है जहां कवि अकेला हो कर हर पंखुड़ी पर सुबह की चोट देखता है। शायद यही विश्वास शमशेर को 'स्वयंवादी' रचनाएं लिखने मे प्रगति और परम्परा दोनों से बरकाये रहता है। शमशेर की कविता

सब की समझ में आयेगी ही नहीं और वह भी बहुत कम पढ़ी जायेगी।
अच्छा तो, राम राम।

सस्नेह तुम्हारा
केदार

१२, अशोक नगर,
आगरा
१०-१०-५९

प्रिय केदार,

अभी ललित ने नागार्जुन के संग्रह से कविता पढ़ कर सुनानी शुरू की जिसमें तुम्हारे पके बालों का ज़िक्र है और हमें भी अपने पके बाल याद आ रहे है। क्यों कि आज ४७ पूरे हो रहे है और साथ में चाँद भी गंजी होती जा रही है।

रेडियो में शहनाई बज रही है। और श्रीमती चौके में सिवँइयाँ भून रही हैं। भूख भी लग रही है। दूध—सिवँइयों के नाश्ते का इन्तज़ार है। सबेरे घूमने गये। कसरत की। उसके बाद पहला काम तुम्हें पत्र लिखने का कर रहे है।

२८ अक्तूबर को हम दिल्ली हों गे। तुम कभी-कभी असंभावित रूप से उधर आ जाते हो –इसलिये पहले से लिख रहा हूँ कि शायद···। और नवंबर में तीन-चार दिन के लिये झांसी जाने का प्रोग्राम है। जब कालेज में परीक्षाएँ आरंभ हों गी तब छुट्टी लें गे। क्या तुम उधर ··?

अगर आने की संभावना हो तो लिखना किन तारीखों में आ सको गे। वर्मा जी के साथ नदी-झील-वन-पर्वतों की यात्रा का कार्यक्रम है।

तुम्हारी ताजी कविताए पढ़ कर परम प्रसन्नता हुई। वे इतनी ताजी है मानों बाग से किसी ने गुलमेंहदी के दो फूल तोड़ कर मेज पर रख दिये हों। लेकिन अपन को तो Quality के साथ Quantity भी चाहिये। हे तम-आवृत घन, नभ-चारी प्राकृत घन --बरसो।

'सतरगे पखों वाली' के बारे में तुमने सब कुछ ठीक-सटीक लिखा है, इतना कि हमने अपनी रिव्यू मे तुम्हारा पूरा पैरा उद्धृत कर दिया है। बस।

मिलनोत्सुक
रामविलास

बांदा
२७-१०-५६
प्यारे डाक्टर,

१०/१० का पत्र सामने है। अड़तालिसवें साल में आ पहुंचने के लिए हम दोनों की वधाई। शरद का सिंगार और हास लेकर तुम्हें पुनीता प्रकृति ने उस दिन शुभाशीष दी होगी। इस चांदनी के [की] रितु [ऋतु] में पैदा हुए हो। तभी-तो जो कुछ लिखते हो वह प्रकाशमय, बुद्धि और विवेकमय और जीवनमय होता है।

चांद गंजी होने का तात्पर्य है कि बुजुर्ग बन रहे हो। बुजुर्ग बनने का मतलब है कि शीघ्र ही घर के बाहर खाट डाल दी जायेगी और आप वहीं आलू-चना चबाया करेंगे और घर में बाल-बच्चे मालपुआ खायेंगे। मगर मैं जानता हूं जैसी बुजुर्गी आप में है। बड़े-बड़े नौजवान [तुम्हारे] तेज और ताब के सामने हार मान जायेंगे। बाल तो बादल हैं और गंजी चांद सोने का उल्टा तवा जिस पर लक्ष्मी जी का नाच होता है या कि मंद स्पर्श से उंगलियां थिरकती हैं।

अभी हम गंजे होने से बचे है। बाल घने है।

हम दिल्ली नही पहुंचे और न आइन्दा जल्दी पहुचेंगे। झांसी कब आओगे—तारीख की सूचना देना। तब मेरे पहुंचने की सम्भावना हो सकती है।

Quality के साथ Quantity भी चाहिए। ठीक है। लम्बोदर हो न। गन-नायक हो न। हम है तिन्नी के पेड़ कि थोड़ा सा प्राकृतिक तिन्नी देकर धन्य हो जाते है वनवासियों को। फिर भी हवा खा कर जी लो डियर !

लम्बे पत्र की इच्छा थी मगर गड़बड़झाला है—घर में बिजली लग रही है। अब हम भी पत्रों में करेन्ट मारेंगे। सब को सनेह—

तु०
केदार

बांदा
११-१२-५६
प्रिय डाक्टर,

बहुत दिन हो गए कि कोई पत्र नहीं आया। झांसी हो आए होगे—वन-विहार खूब हुआ होगा। लेकिन तुम हो कि उस आनद की एक झलक भी तुमने हमें नहीं भेजी। खैर।

हम इधर उलझनों में रहे। मगर कविताएं भी लिखते रहे। वैसी ही जैसी हमेशा लिखते रहे थे। कभी-कभी जी चाहा जरूर कि आगरा उड़ चलूं मगर टके की तरफ से कमजोर होने के कारण यहीं पंख समेट कर रह गया। बनारस जाना

था वहा भी न गया— पितामह की मृत्यु हो गई थी तभी।

कभी निराशा से कुछ लिखा है कभी-कभी आशा मे लिख सका हू। दोनो व्यक्तित्व फूट पडे है। वाल्मीकि पर एक व कालिदास पर एक-एक कविता समर्पित कर सका हूं। मगर कुछ लम्बी पड़ती है। इसमे नही भेज रहा।

एक रचना यह है। देखो :

१. हम यही रहते है
न पूछो · कहा ?
मनस्वी आकाश के नीचे,
नदिया पहाड़ो के बीच,
दुधार नदियो के साथ,
खेलते—
हंसते—
गाते—
जीते।

यह है हमारे यहां का यथार्थ फिर भी हम हसते है।

दो और रचनाए ये है —

२. ओस के सवेद्य मौनाकाश मे हो,
या मुगधो की सुखावह मास मे हो,
हो-न-हो यह जिदगी मेरी कही अटकी हुई है।
छोडता हू—छोडती मुझको नही तलवार मेरी।
बह रही है धार मेरी —उठ रही ललकार मेरी।।

३. दल-बधा मधु-कोष-गधी फूल मदिर मौन का है
रूप, जिसकी अंजली से,
काल की साकल हटा कर खुल गया है।
रशिमो का रथ वही पर रुक गया है।[1]
गध पीने के लिए नभ भी यही पर झुक गया है।

४. टुइया थी एक चतुर बोल गयी।
पतझर मे छंद-अर्थ खोल गयी।।
सागर पर एक तडित तैर गयी।।
मिनटो मे अधकार पैर गयी।।
आया था संकट घन मार गया।
फूलो की छडियो से हार गया।।

अच्छा तो अब सलाम। अब मौन तोड़िये और कुछ लिख भेजिये।

---

1 अब यह पक्ति इस रूप मे प्रकाशित है—'रश्मियों का राग-रजित रथ यही पर रुक गया है'। [प्र० त्रि०]

आशा है कि मज़े में हो, सब लोगों सहित। हम वैसे ही हैं।

अब बिजली लग गयी है इससे पढ़ना-लिखना जम कर हो जाता है।

कहिए, कविताएं, लिखीं या नहीं? पत्र का बुरी तरह इन्तज़ार है। बच्चों को प्यार।

सस्नेह तु०
केदार

[१२ दिसंबर ५६]

॥ श्री ॥

वे मूरतें इलाही किस मुल्क बसतियां हैं।
अब जिनके देखने को आँखें तरसतियां हैं।

माई डियर! आगरे से बांदा उतनी दूर नहीं जितनी दूर गोकुल से मथुरा था। फिर भी मुलाकात क्यों नहीं होती? मैं २६ दिसम्बर के लगभग झांसी जाऊं गा। क्या तुम दो एक दिन को उधर आ सको गे? वर्मा जी के साथ घूमें गे! खेतों की सैर करें गे। जंगल की हवा खायें गे। एक बार फिर झांसी का किला देखें गे। और तुम्हें सौदा की कविताएँ सुनायें गे। मालवे की चाँदनी रात देखी है? उसी से मिलती-जुलती ये कविताएँ हैं। अभी निगम नामक एक सज्जन आये थे। मालवी में बहुत अच्छी कविताएँ लिखते हैं। उनके साथ गर्मियों में मालवा घूमने का प्रोग्राम बनाया है। सुना है, उधर मई-जून में लू नहीं चलती। क्या राय है? खैर, वह तो दूर की बात है। यह साल खत्म होने से पहले मिलना है ज़रूर। तुम्हारी कचहरी मुमगी ईसामसीह की शहादत के तुफ़ैल में बंद होती है या नहीं? होती है तो कब, कितने दिन को—ज़रूर सूचित करना। और हाँ, मैं १८ दिसम्बर को दिल्ली जाऊं गा। उस दिन के आस-पास तुम तो उधर न आओ गे?

अब सौदा की हिन्दी देखो—

जिन्हों की छाती मे पार बरछी
हुई है रन में वो सूरमा हैं
बड़ा वो सावंत मन में जिसके
बिरह का कांटा खटक रहा है
मुझे पसीना जो तेरे मुख पर
दिखाई दे है तो सोचता हूँ।
ये क्यों कि सूरज की जोत आगे
हर एक तारा छिटक रहा है।

प्यारे, इस तरह की हिन्दी लिखो तब कविता वैसे ही गाव-गाव मे पढी जाय जैसे ब्रजभाषा के कवित्त लोग पढते है । और भी—

आवे गा वह चमन मे तडके ही मैकशी को।
शबनम से कह दे बुलबुल गुल के पियाले धो ले।
ऐसा ही जाऊ-जाऊ करते हो तो सिधारो।
इस दिल पै कल जो होनी सो आज ही वो हो ले।

लगता है गालिब की जबान मे भी इतनी मिठास नही, पढ कर बगाल के वैष्णव कवियो की या फिर अपने सूरदास की याद आती है।

एक सज्जन मुझसे तुम्हारा कविता सग्रह माग ले गए थे। नई कविता उनकी समझ म नही आती। मेरी कविताओ को वह प्रयोगवादी समझते है। पढ कर बोले यह एक ऐसी किताब मिली जिसकी कविताए समझ मे आती है। सो बधाई लो। और बादा की रमणीयता का क्या हाल है?

तु० रामविलास

बादा
२०-१२-५६

प्रिय डाक्टर,

मै पत्र लिख ही चुका था। वह पहुचा ही होगा। इधर जनाब का खत आ पहुचा। तुरन्त ही उत्तर देता मगर सोचता रहा कि शायद मेरा पत्र आने पर फौरन दूसरा पत्र लिख मारो। इसी मे अब कई दिन इन्तजार करने के बाद यह पत्र लिख रहा हू।

यह लिखो कि किस तारीख को कै बजे तुम झासी पहुच रहे हो ताकि मै भी उसी दिन वहा पहुचू और यह भी सूचित करो कि कहा—किस पते पर मै पहुचू। जोर का इन्तजार है। वैसे कानपुर का [मे] २७/१२ का [को] चक्र अभिनदन के लिए बुलाया गया हूँ पर झासी का मोह अधिक है—तुम्हारा और वर्मा जी का साथ फिर नही मिल सकेगा। इससे कानपुर न जा कर झासी पहुचूगा। कानपुर मे तो कोई-न-कोई कार्य-सम्पन्न कर ही देगा। दिल्ली तो हो आए होगे? वहा के हाल मिलने पर ही बताना। मै तुम्हारे लिए और वर्मा जी के लिए ही Lawyer's Conference के लिए प्रयाग नही जा रहा। वैसे तो छुट्टी तुम्हारी कई दिन की होगी। झासी पहले क्यो नही पहुच रहे। अगर झासी का प्रोग्राम ठीक न हो सके तो यही चले आओ, डियर। पर मिलो जरूर। सौदा की कविताए हम जरूर सुनेगे और झूमेगे। मगर तुम सुनाना।

तु० केदार

१२, अशोक नगर,
आगरा
२६-१२-५६

प्रिय केदार,

हमने तुमने एक दूसरे को शायद एक साथ ही चिट्ठियाँ लिखी हो गी। इस बीच हम झांसी तो नही दिल्ली हो आये। टाक रिकार्ड कराने गए थे। विषय है —साहित्यिक अनुवाद की समस्या। ब्रौडकास्ट होगी 28 Dec. को इन्दौर से। तुम्हारे मित्र दुष्यन्त कुमार से मुलाकात हुई। भारत भूषण, सत्येंद्र शरद, राजेंन्द्र यादव वगैरह का प्रयोगवादी-प्रगतिशील जमघट आजकल दिल्ली में है। PPH से भाषा वाली[1] पुस्तक लिखने का कान्ट्रैक्ट हस्ताक्षरित हो गया है। सो उसे इस बार लिख ही डालें गे। और कविता के आसमान से उतर कर हम शब्दों की धरती पर रेंग रहे हैं।

'समालोचक' का अंतिम सम्पादकीय लिख कर ज़रा फुर्सत से अँगड़ाई ले रहे हैं। झांसी वालों ने १२ ता० तक बुलाया था मैंने उन्हें २४ के बाद किसी दिन बुलाने को कहा था। वर्मा जी ने लिखा था कि वे (S·udents) शीघ्र ही लिखें गे कि कब आऊ लेकिन उनका कोई पत्र नहीं आया। इसलिए झासी जाना स्थगित है। शायद अब मार्च में जाऊं। तब सर्दी भी कम हो गी।

इधर अमरकान्त का 'सूखा पत्ता' और भैरवप्रसाद का 'सती मैया का चौरा' —ये दो उपन्यास पढ़े। पहला बहुत बचकाना है। दूसरा थुलथुल लम्बोदर है— एकदम पोला।

तुम्हारी तीसरी चौथी कव्रिताएँ—'दल बँधा मधुकोष गंधी' और 'टुइयां थी एक चतुर'—ब़हुत अच्छी लगी। लेकिन हमें इतने से सन्तोष नही। लंबी कविता भेजो जिस पर कुछ देर तक मन जमा रहे।

मैं झांसी न जा सका तो बादा आऊं गा लेकिन ज़रा विलंब से। यह किताब का पूरा काम पूरा हो जाए।

तुम्हारा—रामविलास

Ashok Nagar
Agra
22-2-60

प्रिय केदार,

बहुत दिन से तुम्हारा समाचार नही मिला। क्या बात है ?

1. भाषा वाली पुस्तक—'भाषा और समाज'।

२६ फर्वरी शुक्रवार को मेल से तीन बजे झांसी पहुँचूँ गा —भगवानदास माहौर, ६६/१ टौरिया नरसिह गाव, शहर के यहा या सत्यदेव वर्मा उर्फ सक्कन के यहा मानिक चौक से थोडी दूर। २७ को हम कालेज मे भाषण करे गे और २८ को ओरछा-बेतवा की सैर। २९ को वापस। कचहरी मे नजात मिले तो आ टपको'''आनन्द रहे गा।

तुम्हारा
रामविलास

बांदा
२३-२-६०

प्रिय डाक्टर,

अब अधिक चुप नही रह सकता। तुम्हे जिदगी भर किताबे लिखना है। जिदगी भर नम शब्दो के धरातल पर रेगोगे। मैने सोचा कि पत्र भेज कर तुम्हे न छेड़ूं और अब तक चुप रहा। मगर तुम अपना काम छोडोगे नही और मै हू कि अब मौन नही रह सकता। कैसे मनहूस हो कि बद कमरे मे शब्दो के साथ खेलते-कूदते हो और बाहर के मैदान मे आकाशी छलाग नही लगाते। देखो मौसम की मुसकान और रगीन जामा। मस्त हो जाओग। दिन गरम होने लगे। जैसे तुम्हारे घर का गरम हलुआ। शामे दिल पर उतर आती है पखो के रग फडफडा कर बसेरा लेने के लिए। सुबहे बडे शर्म मे लाल रहती है, रात कही बसी रहने के कारण हवा मे और पानी मे जो शीतलता रहती है वह बडी ही प्रिय है। काश मैं भी आगरे मे होता तो तुम्हे घसीट ले जाता धूप के पास। अच्छा महाशय जी, अब किताब लिखना बद कीजिए हम ऊब रहे है।

सस्नेह तु०
केदार

13-4 [60]

प्रिय वकील साहब,

किसी कारणवश दिल्ली तो नही जा रहे हो? मै १९/४ को पहूँचूगा —शाम के ४-५ बजे 1/२३ तक रहूँ गा। आ जाओ तो क्या कहने है?

आजकल आधा दिन पुस्तक लेखन मे आधा दिन कापियाँ जाँचने मे लगता है।

तु०—रामविलास

बांदा

१५-४-६०

हाँ जी जनाब प्रोफेसर साहब,

तो आप १६/४ को दिल्ली पहुंच रहे हैं। हम यही कह सकते हैं कि बहुत खूब। आप वहां २३/४ तक ठहरें गे भी। यह और भी बहुत खूब है। आप चाहते हैं कि हम भी वहां हाजिर हों सो यह नामुमकिन है। हम कचहरी की खाक छानने वाले भला दिल्ली की धूल क्या फांकेंगे। इस धूल में बड़े-बड़ों का धर्म-ईमान मिलता है। वहां तो ख़ाक में खैरात बटती है। हमें आप सुस्त न समझें, हम चुस्त हैं। वजह न आने की है। माकूल है। यही कि हम डैमफूल नहीं बनना चाहते। मगर आप यह न समझें कि आप भी यही बन जायेंगे। आप आगरे के हैं। आग ले कर शुद्ध हो जायेंगे। हम बांदे से दौड़ेंगे तो कचर जायेंगे। बड़ी लम्बी राह है जैसे किसी नेता के चौड़े कपार का विस्तार और उसमें पड़ी रेखाओं में दौड़ रहा सारा देश।

आपने दिन को दो कर दिया। पुस्तक लेखन भी ज़रूरी है—कापियां जाचना भी। समय व्यस्त है न। हम तो कुछ नहीं करते। धैर्यधन की तरह किसी मुअक्किल के आगमन में आंखें फैलाए रहते हैं। अच्छा राम-राम। सबसे नमस्ते कहना डियर।

तु०

केदार

बांदा

१४-५-६०

प्रिय डाक्टर,

कल कचहरी से लौटा तो प्रिय ललित की शादी का सुन्दर-सा निमंत्रण पत्र मिला। पढ़ कर पढ़ते ही रह गया। बहुत ही खुशी हुई। मैं चलू तो कैसे जब मुझे बम्बई जाने के लिए रोज पत्र या तार का इन्तजार है क्योंकि बेटी किरन के भावी पति रूमानिया से शायद १८ मई तक आने वाले हैं। तार मिलते ही बम्बई जाऊंगा। मुझे अफसोस है कि बारात में न जा पाऊंगा वरना तुम्हारा रोब-दाब देखता [।] चिरंजीव ललित और आयुष्मती दया शर्मा को मेरी और मेरे कुटम्ब के सदस्यों की बधाई और मंगल कामना।

वहां से लौट कर बारात के हाल-चाल लिखना। अब तो बहू के आ जाने पर जनाब का डेरा बाहर ही रहेगा ?

सस्नेह तु०

केदार

बांदा
२४-७-६०
प्रिय डाक्टर,

बेटी किरन का व्याह [ब्याह] दिनांक ८-८-६० को किसी समय दोपहर के पूर्व Special Marriage Act के अन्तर्गत हो रहा है। तुम्हारी उपस्थिति अनिवार्य तथा वांछनीय है। यह आग्रह विशेष है।

शेष सब वैसा ही है जैसा था। मैं २ दिन हुए २ दिन दिल्ली रह कर वहां से लौटा हूं। मुंशी से भेंट की थी। नागर जी भी मिले थे। हालचाल मालूम हुए थे। तुम्हारी पुस्तक वाप्सतरोव की कविताओं का अनुवाद, देखा था।

आशा है कि आनंद सहित हो।

सस्नेह तुम्हारा
केदार

१२, अशोक नगर,
आगरा,
३०-७-६०

प्रिय केदार,

बेटी किरन के व्याह का समाचार सुन कर प्रसन्नता हुई।

यहां पर लडके नहीं हैं, केवल लडकियां है और उनकी मां हैं। हमारी कॉलोनी में दो-तीन जगह अभी हाल में चोरियां हुई हैं। सब लोग आतंकित हैं। इस समय इनको छोड़ कर कहीं जाना उचित न हो गा। आशा है, परिस्थिति की यह विवशता समझ कर मुझे क्षमा करो गे।

तुम्हारा
रामविलास

बांदा
३-८-६०
प्रिय डाक्टर

पत्र मिला। धक् से रह गया कि तुम नही आ रहे। समझ में नही आता कि क्या करूं फिर आने को कहूं या नहीं। एक बात है कि तुम आ जाते तो फूल कर कुप्पा हो जाता और ऐसा लगता कि जीवन जीत लिया है। न आओगे तो मुरदार

ही रहूंगा । ब्याह तो होगा ही । घर की मालकिन से और बेटियों से प्रार्थना है कि वे तुम्हे ढकेल कर बांदा भेज दे । मैं उनका आजन्म आभारी रहूंगा ।

सस्नेह तु०
केदार

१२, अशोक नगर,
आगरा
१५-९-६०

प्रिय केदार,

बहुत दिनो से तुम्हे पत्र नही लिखा । पत्नी की अस्वस्थता और अपनी पुस्तक दोनों को सँवारने मे समय बीता ।

नागार्जन ने एक खुश खबरी भेजी है कि हम लोगों के एक मित्र ओ प्रकाश आर्य ने एक प्रकाशन संस्था खोली है । नागार्जुन की पुस्तके वही छापें गे । नागार्जुन ने उन्हे सुझाया है कि वह तुम्हारी कविताएँ भी छापे । मेरी समझ में युग की गगा मे लेकर अब तक की रचनाओं मे से सौ डेढ सौ महा-बढिया कविताएँ चुन कर एक मकलन निकालना चाहिए ।

नागार्जुन का पता —भिखना पहाडी, पटना है ।

अपने ममाचार देना ।

तु०
रामविलास

बादा
१८-९-६०

डियर डाक्टर,

दिनाक १५ का पोस्टकार्ड सामने है । इस पत्र के लिए धन्यवाद । तुमने याद तो किया । मै [मैने] तो समझा कि जनाब मुझे ज़मीदोज कर चुके है और अब मेरा कब्र मे निकलना मुश्किल है । शुक्रिया कि तुमने फिर जिदा कर दिया । बड़े चालाक हो मिस्टर, कि नागार्जुन की खुशखबरी के बहाने मेरे पास आने का साहस कर मके वैसे आते तो जानता । जब तुम मौन रहते हो तो अपने मौन मे मेरे शरीर मे वल्लम [बल्लम] मारते रहते हो । दरअमल मे तुम्हारी चुप्पी बडी घातक होती है ।

मुझे विश्वास नही है कि अब मेरा संग्रह प्रकाशित होगा । अगर हो तो तुम्हीं

चुनना कविताओं को । यह काम मेरे से न होगा । अपना काव्यबोध कमजोर है तीनों पुस्तकों से कविताओ के क्रम तयार कर दो, छांट कर । फिर लिख मैं दूगा । नयी कविताएं तो मैं स्वयं चुन लूगा । उनके बारे मे तुम्हारी पसंद का सवाल ही नही उठता । भला तुम उन्हें क्यों चाहोगे ?

मुझे तो डर है कि कही हमारा प्रकाशन करके बेचारे प्रकाशक को काम न बंद कर देना पड़े । युग की गंगा का प्रकाशक तो उसके बाद ठप्प ही हो गया था न ।

अब मलकिन कैसी है । [?] उन्हे नमस्कार । पुस्तक कब तक छपेगी और हमें मिलेगी ?

ललित कहा है और कैसे है । [?]

तु०
केदार

बादा
१३-१०-६०

प्रिय डाक्टर राम,

अब नागार्जुन भी चले गये होगे और घूमने-घामन का क्रम बद होगा । तभी खत भेजने मे हाथ रोके रहा कि कही रस भग न कर दे । कवि-सम्मलन मैंने भी सुना था । मेरे नाम का प्रभाव ही ऐसा है कि सब कुछ बोर कर देता हूँ । मगर कवित्व तो था उस बेचारे मे । पहले तो उसे कोई पूछता ही नही था । अब दिल्ली तक दौड जाता है । शायद बिहारी होने के नाते प्रेसीडेंट का सहारा मिल गया है । राव साहब कब के तीममार खा है । वह समतल पर सदैव सरके है । भाषा का बल होते हुए भी काव्य-पक्ष से वे दुर्बल है । डियर, बहुत कम लोग अच्छी कविता देते है । हम लोग तो कभी बुलबुले उडाते है कभी कबूतर कभी पतग, कभी औरतो के माथे की नयी-चली 'तिलकित', टिकुलिया और कभी साबुन के इन्द्रधनुषी बुलबुले और इस तरह पर नयी चेतना को प्रकाश मे लाते है । गिरजा ने तो Hollowman को हिंदी मे 'हम पोले हैं' से बचा कर अपनी प्रतिभा से उसे 'हम बौने है' कर दिया था और शान तो देखिये कि पाठ के समय मच से उछल पड रहे थे, जो लखनऊ मे अपने घर मे रात को अकेले सोने से डरते थे—वही तब जब साम्प्रदायिक झगडे हुए थे । पत पर तुम्हारी कविता ऐसी है कि यदि वे सुन ले तो फिर भूमि पर पाव रख कर चलने लगे । आजकल तो उनका मान-सम्मान हो रहा है । 'रूपाम्बरा' मे हमने भी सहयोग दिया है ।

दिवाली आ रही है । कई दिन की छुट्टी है । कम-से-कम चार दिन की तो है ही जजी मे । मन होता है कि गाडी पर चढ बैठू और पहुचू तुम्हारे यहा । पर

लगाम खींच लेता हूं। देखो जैसा मन चाहा वैसा करूंगा। कहीं तुम न मिले तो गज़ब हो जायेगा।

पिकासो का एक चित्र 'कृति' में देखा कि दो नंगी औरतें पास-पास बैठी हैं। सिवाय अगों के यथार्थ चित्रण के और कुछ नही पल्ले पड़ा। हां ब्रुश में माहिर वह कलाकार रेखाओं को ही मिटा चुका है। दोनों के शरीर में मासलता सपाट पर है। दूसरा चित्र है उसी का। सम्भोग की क्रिया में नर और नारी खड़े है। पार्श्व में भी कुछ यही हो रहा है। यह भी निरावरण झांकी है। राम जाने क्यों यह सब ऊची कला है? केवल निर्भीकता और दुस्साहस ही कला नही है। पिकासो कुछ और है। अमृता शेरगिल का एक चित्र Illustrated Weekly मे आया है—देहाती युवती, काली-कलूटी, कमर में सिर्फ एक चीथड़ा लगाये, निरावरण खड़ी—दाहिने हाथ की गदोरी में एक लट लिए। हथेली लाल है जैसे दहक रही है। आखे अंधेरी चमड़ी को भेद कर कुछ-कुछ मुलमुला रही है। इसके अतिरिक्त पीछे से कुछ लाली अंधेरा फोड़ कर झलक दे रही है। यथार्थ की यह कृति अपनी गठन मे अच्छी है। मालूम होता है कि मौन अंधेरे की नदी बह रही है, भोर होने से पहले, झिलमिलाती आ रही लाली में, अपने दो कठोर द्वीपों को घेरे, जंघाओं से नीचे जाती। सूरज, चाद, सितारे, जुगनू और बिजली की किरणें सब डूब गयी हैं उसके तम में।

मुशी ने जनाब को भी बीच चौराहे में खड़ा करके खरी चोट की है। प्यार से सहलाया भी है हजरत ने। है न? जो भी हो संस्मरण[1] उम्दा है। उसकी कलम तो खुरखुरायी। बहुत खर्राटा ले रही थी सालों से। मलकिन को नमस्कार। बेटियों को प्यार।

अब तो मलकिन अच्छी हो गयी होगी !

तु०
केदार

बादा
३१-१२-६०

प्रिय डाक्टर,

बहुत मौन हो—शायद पुस्तक लिख रहे हो। परन्तु फौरन ही हमारी चुनी हुई कविताओ का नाम और पुस्तक का नाम व पृष्ठ संख्या लिख भेजो कि हम उन्हे नकल कर ले और पांडुलिपि तयार कर ले। विश्वास है कि यह काम अधिक समय न लेगा। शायद अब तक आपने कर ही डाला होगा, मेरे पहले के पत्र के

1. नरोत्तम नागर सपादित, 'हिंदी टाइम्स' (दिल्ली) मे मुशी का लेख।

आधार पर।

मुंशी आजकल डट कर लिख रहे हैं।
नये साल का हर्ष और बधाई।
बेटियों को प्यार।
तुम्हारी मालकिन को नमस्कार, तुम्हें भी।
हम अच्छी तरह हैं। तुम भी अच्छी तरह से होओगे।
इधर क्या लिखा-पढ़ा जा रहा है!
'नवांकुर' में क्या भेजा है जनाब ने ?
वहुत दिनों से नहीं मिले हो। कब मिल सकोगे ?

सस्नेह
तु० केदार

आगरा
४-१-६१

दोस्त,

मकान बनवाने में लगा हूँ। स्टेशन के पास। तांगे-रिक्शे की भी जरूरत न पड़े; बस गाड़ी से उतरे और···

यानी मकान बनवाने में मैं कुछ नहीं कर रहा हूँ। श्रीमती जी जाती है, सुबह की गई शाम को आती हैं। मैं पैसे जुटाने की चिन्ता मे रहता हूँ। भाषा वाली पुस्तक समाप्त; अब एक पुस्तक का अनुवाद कर रहा हूँ।

तुम्हारी चुनी हुई कविताओ का नाम 'फौरन' भेज दूँ ? बहुत सी तो अप्रकाशित है न ? मेरे पास नीद के बादल और तुम्हारा अंतिम संग्रह है। युग की गंगा नहीं है। फिर कैसे ? पृष्ठ संख्या ? बड़े से बड़ा संग्रह हो जितना प्रकाशक छापने को तैयार हो। नाम कुछ ऐसा हो जिसका बाँदा के अंचल से निकट संबन्ध हो— जैसे 'चंदगहना' या 'केन-किनारे'।

नवांकुर में 'आलोचक की डायरी' लिखी है यानी दो तीन किताबों पर यों ही कुछ चलते-फिरते। ऊपर कैफियत दे ही चुका हूँ, आजकल दम मारने को फुर्सत नहीं है।

मिलना ? कालेज बंद होने तक निकल न पाऊँ गा। उसके बाद लू चले गी। मौसम अच्छा आये गा तब घर मे बीवी अकेली हो गी। बच्चे बाहर। कहे गी—घर किस पर छोड़ कर जाओ गे ?

तुम बाँदा हम आगरे, किस विध मिलना होय ?

तुम्हारा
रामविलास

१२, अशोक नगर,
आगरा
२६-२-६१

प्यारे,

होली आई। बधाई लो। दरसन दै मुसकइयो को याद करके तुम्हारे दरसन पा लेते है। निराला जी पर तुम्हारी चिट्ठी जोरदार थी। उनके दिये हुए काम की एक किस्त पूरी हो गई है। मई मे उधर आने का विचार है। क्या तुम इलाहाबाद आओ गे? या मै पहले बाँदा आऊँ? आजकल अमृत नागर यही है। रोज शाम को 'अनर्गल' साहित्य चर्चा का रस लेते है।

तुम्हारा
रामविलास

बांदा (उ. प्र.)
४-३-६१

हे गलत नाम के सही आदमी!

राम राम ।।

देखो न अपना नाम। 'राम' मे आगे 'विलास' का सम्बध, यह सरासर सब तरह मे असगत। बेचारा राम तो 'विलास' मे लाखो कोस दूर रहा। सीता मिली। वह भी तड़पती रह गयी। बिछुड गयी। जमीन मे समा गयी। ठीक वैसे ही तुम। तुम्हारा नामकरण भी तुम्हारे जीवन-गुण के सर्वथा विरुद्ध है।

होली है!
'उडत गुलाल —लाल भये बादर
करत कटाक्ष काल भये काजर
हम बैठे खोदित है गाजर —
रामविलास लिखत है आखर।
अर र र र र कबीर —
खाओ दूध-मखाना खीर ।।

मौसम मस्ती का है। उम्र यो तो ५० के पास सरक आयी है। पर अपने हिन्दुस्तान की मिट्टी-पानी में रहते-रहते अभी भी जवान होने का दम बाक़ी है। कहते है कि अपने भगवान शकर जी फागुन मे 'फगुनाय' गये थे और पार्वती को रसभरी समझ कर ललचा उठे थे। हम तो आदमी है। हमारी [हमारे] क्या कहने है। पत्थर होते तो असर न होता। दिल है। उसके कारण उसका जाल बड़ा विशाल है और फैलता ही रहता है। मगर फसती एक भी मछली नही। वैसे हम मछली नही फसाते। हम उसके व्यापारी नही है। न हम मासाहारी है। अपने राम

शाकाहारी हैं। अत: हम हैं कि अपना जाल हवा में फ़ेंकते हैं और कविताएं पकडते हैं —वह भी बहुत कम फंसती हैं और फंसती भी हैं तो जुए के दांव में रात दिन मथने के बाद कभी एक बार नक्की की तरह फंसती हैं। अच्छा हुआ कि आपने इस तरह का रोग नहीं पाला। खूब हंसो हम लोगों पर। पूरा अधिकार है।

आजकल भैरवी सुनने के दिन हैं। सबेरे-सबेरे उसकी नशीली रागिनी मिल जाय तो दरअसल में एक महीने के लिए पूरा नशा चढ़ जाय। अभाग्य मेरी कि कही भी नहीं सुन सका। काश खुद ही गा सकता और खुद ही नशे मे चूर हो जाता। इस कमी को पूरा करने के लिए जिगर का संग्रह उठाया। इधर-उधर पन्ने पलटे। है नाज़-अंदाज का रसिया कवि। मगर हम हैं कि उनका एक शेर देख कर वहीं अड़ गए और लगे उससे मल्ल युद्ध करने। अभी तक लड़ाई चल रही है। देखो कौन किस सिम्त गिरता है। वह शेर है—

तसवीर उमीदों की आईना मलालों का,
इंसा जिसे कहते हैं महशर है खयालों का।

पढ़ कर लगा कि जैसे मियां जी कुछ बड़ी बात कह रहे है। शेर के पंजे गहरे तक धंसे। ख़ून निकला। मैं लाल हुआ। मगर यह शेर जंगल का नही शहरी तह-ज़ीब का पालतू चाट खाने वाला शेर है। कवि जो कहते हैं कि इन्सान विचारो का प्रलय-क्षेत्र है। हमने अपने घूमे मारे और कहा : कैसे ? उसने पंजों से खरोचा और ख़ून निकाल कर कहा : देखते नहीं हो वह सर्वनाश करता ही रहता है। मैंने मुंह बा कर कहा : नही —ऐसा नही है। सब इंसान ऐसे नही होते। तो उसने लम्बी जीभ निकाल कर तरेर कर, कहा : मैं करता हूं उन इंसानों की बात जिन्हें 'इंसान कहते है' मगर वह है नहीं इंसान। मैं चुप हुआ और सोचने लगा। पर शेर के अन्दर से जिगर साहब निकले और तपाक से अपने शेर की अयाल पकड़ कर उसे चुप करते हुए मुझसे बोले : यहां पर मेरा मतलब हरेक इंसान से है। मैं उन्हें देखता रह गया। उनके चेहरे पर ईमानदारी थी मगर उनकी बात सोलहो आने सही नही कही जा सकती। हमने ऐसे भी हजारों मूढ़ देखे हैं जो वास्तव में जड़ हैं; विचार तो जानते ही नहीं। वह तो पेट के मगरमच्छ हैं। शायद जिगर साहब ज्यादा पी गये थे और संतुलन सम्हाल नहीं सके। इतने में शेर फिर गुर्राया। मैंने फिर उसकी तरफ देखा। उसने कहा : वह इंसान आशाओं की तसवीर है और दु:खों का देवता है। मैंने मुंह बिरा कर कहा : इंसान तो खुद एक मूर्ति है —फिर आशाओं की तसवीर कैसी है ? इससे क्या मूर्ति विधान तैयार हुआ ? शेर चुप रहा पर कहने लगा : हजरत, मनुष्य के आशावादी होने की तरफ इशारा है। मैंने कहा : हां, इशारा भी ऐसा कभी कविता नहीं हुआ करता। यह तो कलम घिसना है। शेर मेरे चाबुक से तिलमिला गया। मैंने दुबारा चाबुक चटकाया और मारते हुए कहा : आईना तो आईना—मलालों का कैसा आईना ? शेर बोला : ध्वनि देखो। मैंने

कहा : देखता हूं पर कुछ दिखाई दे तब तो देखूं। यह तो महज़ सतही बात है। शेर बोला : अरे शीशे से प्रतिबिम्बित होते हैं मलाल। मैंने कहा : हरगिज नहीं। उसने पूछा कैसे ? मैंने कहा : मलाल भाववाचक संज्ञा है। उसका प्रतिबिम्ब कैसे ? वह शेर सन्न रह गया। मगर झटके से बोला : यह कविता है। इतना [इतनी] कतर ब्योंत नहीं की जाती। मैंने कहा : यह कतर-ब्योंत नहीं परख है। ऊंचे कवि को ऊंची कसौटी पर कसना होता है। जिगर लड़के नहीं, धुन के पक्के शायर थे। उनका कलाम कमज़ोरियों से साफ होना चाहिए। वह शेर ठेस खा कर बैठ गया। मैंने कहा : तसल्ली से काम लो शेर जी। मैं मतलब समझता हूं। सिर्फ कला की पकड़ देख रहा था तुम्हारे कवि की। वह कला दुबली है। हमारे निराला की कला से नीचे है। मगर वाह रे जमाना कि लोग इस शहरी तहज़ीब के चाट खाने वाले शेर की आवाज सुन कर ही झूम उठते हैं। कितनी मूढ़ता है। होली में इस पर हम काला रंग चढ़ाते हैं।

मगर एक दूसरा शेर देखिये। खूब है।

हसरत से देखता हूं हर एक शाख़ेगुल की सिम्त,
यह जोफ़ और हाय यह आलम बहार का।

मैंने सुनते ही कहा : यह है कवित्व से भरपूर। यह शेर नही भावों का विराट सम्मेलन है। इधर जोफ़ यानी दुर्बलता। उधर आलम—यानी 'सबलता'। फिर निगाह मे सौन्दर्य की क्षणभंगुरता का दृश्य। हर्ष और विषाद की यह गगा-जमुनी लामिमाल है। अंग्रेजी के हेरिक कवि की वे रचनाएं इसके सामने मात है जो उसने फूलों पर लिखी थी। एक तीसरा शेर देखो—

उस चश्मे मय फरोश से कोई न बच सका
सबको बक़दरे हौसलए दिल सुरूर था

यह दूसरे शेर मे ज़्यादा अर्थ देता है। गज़ब का है। नशीली आंख—नहीं नशे से चूर कर देने वाली आंख का चित्रण है। आंख वही है मगर हरेक देखने वाला अपनी शक्ति भर ही नशा पाता है। अर्थात् उसी नशे का प्रभाव हरेक पर मुख़्त-लिफ तौर पर पड़ता है। इस शेर में आदमी की सौंदर्य-प्रियता की क्षमता की अस-मानता की ओर संकेत है। मगर फिर भी कवि विश्वास व्यक्त करता है कि कमो-वेश सब सौंदर्य-प्रेमी हैं। अब वह 'चश्मेमय-फरोश' कौन है ? कोई हो सकता है। फूल हो सकता। स्त्री हो सकती है। कोई भी संज्ञा हो सकती है जो सब पर असर डाल सकती है। लेकिन ख़ूबी है कि वह बेचने वाली या वाला बेचती है [या बेचता है] मुफ्त नहीं देती [या देता]। दाम देने पड़ते हैं चाहे उधार हो या नकद। बिना धन दिए नहीं मिलती। शराब है। बिकती है। यहीं पर शेर में कमजोरी आ गयी है। हम होते तो बेचना नहीं कहते। हमारी प्रेमिका उदार और सहृदय है। सब पर समदृष्टि रखती है। जो भी आता है उसके पास उसके सौन्दर्य की प्रतीत

[प्रतीति] के लिए वही वह प्रतीत [प्रतीति] पाता है। अजता-एलोरा के चित्र देखो। खजुराहो की मूर्तिया देखो। मगर जिगर साहब अपनी पहली पक्ति मे बाजार तक ही रह गए। शायद वह अपनी जिदगी मे इससे आगे नही जा सके थे। कहते है कि एक वेश्या ने उन्हे काबू मे कर लिया था।

मगर इन सबम उम्दा शेर है —

निगहे [निगाहे] शौक ने सब खोल दिए बन्दे नकाब
सहल समझे थे वह पाबन्दे हया हो जाना।

दोस्त, यह बडा ऊचा जानलेवा शेर हे। क्या चुटकी ली है लजीली नायिका की। कितनी उत्कठा है देखने की ? कितनी बेचैनी है। पर्दा हटाना ही पडता है। आखे देखने लगती है। सौदर्य के प्रति यह आकर्षण कि लाज भी टूट गयी। यहा वही तन्मयता है जो मीरा मे थी। लोक-लाज का टूटना यही है। 'बन्दे नकाब' यही है शील और लोक-लाज। कवि की इस चुटकी मे प्रेमिका की विवशता ही है। वही लाचारी प्रगाढ प्रेम की अभिव्यक्ति करती है। यही नही, यह विवशता प्राकृतिक है भी और इसका खडन भी प्राकृतिक है। एक दूसरा अर्थ भी हो सकता है। ब्रह्म अगोचर हे। उसे अपनी सृष्टि के [को] देखने की उत्कठा है। वह माया का परदा हटा कर प्रकट होता है अपनी सृष्टि को देखने के लिए। वह आसान समझता था कि वह छिपा रहेगा मगर उसे परदा हटा कर प्रकट होना ही पडा, केवल अपनी तीव्र लालसा के कारण।

मार्मिकता देखो।

हसरत उस तायरे मायूस की हालत पर जो
कैद से छूट के भी मायले पर्वाज न था।

यह है हुस्न-परस्ती। हमारे यहा की दास-भक्ति। लामिसाल बयानी है। जिसे चाहो वही नही सुनता। फरियादी की हताश दशा का अकन ठीक उतरा है। वह इसी कैदखाने मे मुहब्बत करने लग गया हे न। क्षणिक सौन्दर्य पर ही वह अपने जीवन को समर्पण कर चुका है। वह अपनी मुक्ति ही नही चाहता। कवि ने उसे 'मायूस' कह कर कुछ कम ऊचा कर दिया है। शेर जरा नीचे खिसक आया है। मायूसी से पक्षी की महानता जाती रहती है। वह मायूस पक्षी न होता बल्कि वह विश्वासी पक्षी होता जैसे हमारे भक्त कवि रहे है। उर्दू मे वही भाव आ कर नीचा हो गया है। प्रेमिका के कैद मे रहने का तात्पर्य होता है उसके केश-पाश मे या बाहु-पाश मे बधे रहना। उससे छूटना कैद से छूटने के बराबर नही हो सकता। वह तो उसे कैद नही समझता। दूसरा व्यक्ति उसे कैद समझता हो तो वह कैद न हो जायेगा। इसलिए इस अर्थ मे दुर्बलता है।

यदि इसे राजनीति के स्तर पर ले जाते है तो वहा भी कैद से छूट कर बाहर आने मे मायूसी नही होती। इसलिए वहा भी यह शेर नही चिपकता।

यहां तो मालूम होता है कि एक निराश— खोये व्यक्ति का चित्रण मात्र है। वह इतना हताश हो चुका है कि मुक्त होना ही नही चाहता। उसकी मायूसी का कारण चाहे जो हो। वह इतना अधिक उदास जरूर है कि जीना नही चाहता।

देखा आपने कि जिगर साहब एक अच्छे खासे शेर को कैसे एक शब्द को— मायूस को—रख कर ख़राब कर गये है।

सबसे बढ़िया चीज़ है—

इब्तिदा वह थी कि था जीना मुहब्बत मे मुहाल
इन्तिहा यह है कि अब मरना भी मुश्किल हो गया

यह है युवा-प्रेम और प्रगल्भ-प्रेम का चित्रण। अन्तर कितना मार्मिक काव्य मय है। टकसाली शेर है।

इतना तो लिख गया पर मतलब की बात एक भी न कर सका।

अच्छा तो आप इधर आने की इच्छा रखते है। खुशी ही नहीं बेहद खुशी है। मगर आप इच्छाएं तो चटाचट तोड़ देते है। कैसे यकीन करूं कि आप घर छोड़-कर बांदे तशरीफ लायेंगे। हम सदा बाहें पसारे खड़े है। आओ, चाहे जब।

इलाहाबाद कोई काम नही है। एक बार हो आया हूं। फिर जा कर क्या करूंगा। तुम्हीं यहां आओ दो-चार लोग मिलेंगे। भाषण देना दो-एक। कुछ हमे भी 'बना' कर सोना कर जाना।

अच्छी बात है कि आजकल अमृत नागर के फेर में हो। वह तुम्हारी बंद 'खुसबोय' बाहर निकाल देंगे। हम उस शब्द का प्रयोग नही करते जिसका प्रयोग उग्र ने अपने लेख में 'हिन्दी टाइम्स' मे मय सम्पादकों की खबर लेते समय किया था। वह हिन्दी का खराब शब्द है। फिर यार मेरे ने टिप्पणी छपाई कि वह प्रेस के भूतों ने छाप दिया था, उसने नही लिखा था।

'अनर्गल साहित्य' का ही जमाना है। इसी की 2-1/2[ढाई]मन की भरती है। देखो न सीकिया कविगण भी इतना वजन पीठ पर लादे-लादे हर पत्रिका के पेजों में विचरण करते हैं। बेवकूफ वह जो साहित्य लिखे और अनर्गल न लिखे। फिर दोस्त मेरे, उसी में डूबो, वही मज़ा देगा। देखो न किसी टिप्पणीकार की वाणी कि किस प्रकार अनर्गल को भी सार्थक सिद्ध करती है। व्यक्ति स्वातंत्र्य का यह अन्तर्मुखी साहित्य जीवन को हेय समझता है। वह उन द्वीपों में धुएं के महल देखता है जो मूंगे के बने होते है और जहां आदमी नही, न उनके शब्द रहते हैं, बल्कि जहां रहते हैं शब्दों और अर्थों के भूत-पिशाच। अच्छा है कि मसान जगा रहे हो।

कहो, घर कहां तक बन चुका ? कब तक ईटों पर ईटें रखी जाती रहेंगी ? क्या रहने के काबिल हो गया ? कब तक वहां पहुंचोगे ?

लाल अमृत नागर से मेरी दुआ-बंदगी कहना। उनकी आवाज तो रेडियो से कभी-कभी सुन लेता हूं। एक बार तुम भी लखनऊ से बोले थे। तवे से बाहर कूद

पड़े थे। याद है न ?

आशा है कि मजे मे हो। हम चैन से है।

हमारा नाम भी गलत है। हम नाथ नही अनाथ है।

तुम्हारा सस्नेह
केदार

बादा
७-३-६१
पुनश्च :—

खेद है कि यह डाक मे न डाल सका। धरा रह गया। अब भेजता हूँ। आज बेचारे पत जी नही रहे। बहुत बीमारी के बाद चल बसे। अफसोस।

तु० केदार

बादा
१५-५-६१
प्रिय बधु।

आज १५/५ है। १/२ [आधा] महीना सरक गया। मगर तुमने आगरे से सरकने का नाम तक न लिया। खूब हो। तुमने लिखा था कि मई मे यहा आओगे। पर मालूम होता है कि वह बहलावा तथा भुलावा था। अच्छा दोस्त न आओ। कभी तो आओगे ही।

कहो घर कहा तक बन गया ? अब वो पूरा हो गया होगा। अब तो उसके किसी कमरे मे तुम टाग पसार कर चैन से रेडियो सुनते होओगे।

यहा तापमान बहुत ऊचे उठ गया है। बेहद गरमी है। पहले का ११३^0 है। हम लोगो ने 'भारती' सस्था की ओर से टैगौर जयन्ती मनायी और नगर मे भी शान से मनायी गयी। मैने भी कवि के प्रति एक कविता लिखी थी। मेरी भी वही प्रतिक्रिया हुई थी जो तुम्हारी हिन्दी टाइम्स मे हुई थी कि राजनीति का खेल न हो। यही बात मैने यहा सूर जयन्ती मे कही थी। सच तो यही है।

अच्छा तो राम राम।

तु० केदार

पुनश्च:

प्रिय ललित अब तो घर आ गये होंगे ? उत्तर दो।

केदार

३० न्यू राजा मंडी,
आगरा
१७-५-६१

प्यारे केदार,

तुम्हारा कार्ड आया। हमें शरम आई, इस बात पर नहीं कि तुम्हारे यहाँ आये नहीं वरन् इस पर कि तुम्हारे पहले वाले उम्दा खत का जवाब न डाल सके।

दिल्ली गये। आलोचानात्मक [आलोचनात्मक] शब्द-समिति की अंतिम बैठक में। नैनीताल, जैपुर गये परीक्षा कार्य से। लखनऊ मां की वर्सी में। झांसी— रवीन्द्रनाथ की जन्म शताब्दी में भाग लेने। और एक महीने से ऊपर हो गया, कापियाँ जाँचते; अभी कम से कम इस काम के बीस दिन और है। घर बनाने के लिए रुपए चाहिए। हर काम मुड़ियाता रहा हूँ। यहां तक कि मई मे एक अंग्रेजी किताब लिखने का भी वादा है यद्यपि उसके लिए अभी कागज भी इकट्ठा नही किया। पेशगी ज़रूर ले ली है।

तुम्हें अपने नये मकान से ही खत लिख रहा हूं। इस समय पड़ोस के बड़े कमरे का ढूला खोला जा रहा है। बाँस गिर रहे है, धूल उड रही है। बाहर के एक कमरे और बरामदे में पलस्तर हुआ है जिसे बिजली वाला मिस्त्री हथौड़े से तोड़ रहा है। यानी वर्डसवर्थ के शब्दों में The world is too much with me !

लखनऊ में अमृत नागर मिले। पहले से दुबले लेकिन सतेज। रवीन्द्र जयन्ती का संगठन करने में लगे थे। इस जयन्ती के अवसर पर जातीय कलह, विद्वेष और अलगाव को भी उभरने का मौका मिला है। वोट पाने का प्रयास तो है ही। प्रसन्नता की बात है कि तुम और अमृत जैसे मित्र सभी इस समारोह में सम्मिलित थे।

निराला जी के दर्शनों को प्रयाग जाने का मंसूबा अब भी है। अमृत चलने को कहता है बशर्ते मैं लखनऊ जाऊं। तुम बांदा बुलाते हो लेकिन साथ चलने को तैयार नहीं हो। बहरहाल कापियां जाँचने और किताब लिखने का काम पूरा किये बिना अभी यहां से टस से मस होना संभव नही है।

ललित यहीं है। सब लोग मज़े में है और तुम्हें बहुत बहुत प्यार से याद करते हैं।

तु० रामविलास

बांदा
४-६-६१

प्रिय डाक्टर,

तमाम खत लिखने था [थे]। लिख चुका। हाथ थक गया। अब तुम्हें लिख रहा हूं। छोटी ही बात लिखूगा।

मजे में हूं। लोगों ने विरोध में तूफान उठा रखा है यहां। मुझे साम्यवादी दल का कह कर पैनल से अलग करा रहे है। मैं भी दुनिया देख रहा हूं —असली मोहरे पहचान रहा हूं। प्यादों से फरजी हुओं की तिरछी चालें देख रहा हूं। बिगाड़ कर भी मेरा बिगाड़ न होगा। दूसरा केस वर्क करूंगा। अब तो बात फैल गयी जाने सब कोई। पर हमारे राजा को सच्चाई पसन्द नही है। यही नतीजा निकलता है।

घर बना रहे हो। मैं भी आऊंगा तब उसका एक पखेरू हो कर कुछ क्षण टिकूगा। घर बनवाना भी वैसा ही कठिन काम है जैसा नौ महीने तक गर्भ धारण किये रह कर बच्चा जनना। मेरा मतलब तुमसे नहीं है। तुम तो असमर्थ हो। मेरा मतलब उनमे है जो घर बनवाते है।

बड़ी गरमी है। हम तो भुरता हो गए। सबको स्नेह,

तु०
केदार

30, New Rajamandi
Agra
20-6-61

प्रिय केदार,

तुम्हारा कार्ड मिला।

आजकल मेरी दूसरी बिटिया सेवा की तबियत खराब है। उसी की तीमारदारी में समय जाता है और किसी काम मे जी नही लगता।

तु०
रामविलास

बादा
१०-७-६१

प्रिय भाई,

तुम्हारा पोस्टकार्ड आया तो बहुत पहले ही होगा परन्तु मिला मुझे बहुत देर

से। घर के किसी आदमी ने कही रख दिया। मिलने में देरी हुई। जवाब भी देरी से, इसी से दे रहा हूं।

प्रिय सेवा की बीमारी की बात पढ़ कर यह हुआ कि मैं भी आगरा पहुंचू और उसकी तीमारदारी में तुम्हारी मदद करूं। परन्तु मन चाहे जैसी अच्छी बात कहे दुनिया उसे पूरा नही करने देती। मजबूरन दिल दबा कर रह गया हू। अब तो बेटी ठीक होगी। उसके कपार पर आशीष का हाथ फेरना और जब कोई न देखे तब झट से प्यार कर लेना। मेरी बड़ी बिटिया जब बहुत पहले यहा बीमार थी तब मैं रात दिन सेवा मे लगा रहता था। सबके सामने नहीं छिप कर चूम लेता था। वह इससे कि दूसरे स्नेह को नजर लगा देते हैं। हालांकि लगती नही। पर हम ऐसा समझने के आदी है। और बिटिया के रिजल्ट क्या रहे। प्रिय ललित तो रतलाम ही में होगे। यहां से कब गये? मजे में तो है। इधर मुंशी दिखते नही 'हिन्दी टाइम्स' में। कालेज खुल गया होगा। व्यस्त होगे। घर बना या अभी बन रहा है? अच्छा तो सलाम।

केदार

प्रिय केदार- पता नही तुम्हें इधर पत्र लिखा या नही। दिमाग परेशान रहा। मेरी दूसरी लड़की सेवा को T. B. हो गया [गयी] है। उसकी तीमारदारी —और इससे अधिक हर तरह की चिन्ताओ - में किसी काम का ध्यान नही रहता।

आशा है तुम सकुशल और प्रसन्न हो।

30 New Rajamandi
Agra
11-7-61

तु० रामविलास

30, New Rajamandi
Agra
11-7-61

प्रिय केदार,

अभी तुम्हे कार्ड डाला था? उसके बाद तुम्हारा १०/७ का कार्ड मिला।

सेवा पहले से बहुत अच्छी है और आशा है कुछ दिन में ठीक हो जाय गी। जरूरत हुई तो एक बार दिल्ली में दिखा लें गे। सेवा ने High School II Div. में पास कर लिया है और अब कालेज जाने को व्याकुल है। वैसा [वैसे] उसका admission करा दिया है। ललित अभी मंदसौर मे है। शायद कुछ दिन मे दूसरी

जगह के लिए ट्रान्सफर हो जायँ। घर बनता जा रहा है, हमने उसमें पहले से ही रहना शुरू कर दिया है।

तु०
रामविलास

बादा
१४-७-६१

प्रिय डाक्टर,

दोनो पोस्टकार्ड मिले। बीमारी का समाचार जान कर बहुत अफसोस हुआ। पर अच्छी हो रही है, यह मालुम करके जरा कम हुआ। आश्चर्य है कि यह कैसे हो गयी ? वह शीघ्र ही अच्छी हो, यही चाहता हू। बेचारी को बधाई भी पास होने की देते कचोट होती है।

आज खूब पानी बरस रहा है। पूरी बरसात है। कल रात भी आसमान बादलो से भरा था नाम को भी तारे नही थे। हवा सरसराती रही है। सूरदास की कविता 'कारे भारे —' याद आती रही।

दिल्ली जरूर आओ और बेटी को जरूर दिखाओ। मुझे भी सूचना देना कि वहा doctors ने क्या कहा।

मेरे लायक काम लिखना।

आजकल नागा बाबा इलाहाबाद मे किराये का घर ले कर वही गद्य के क्षेत्र मे हे।

और हम सब लोग ठीक हे।

तुम्हारा
केदार

बादा
२८-७-६१
प्रिय डाक्टर,

मुझे और मेरी बीवी को यह जान कर खुशी हुई कि सेवा अब पहले से अच्छी हो रही है। वह शीघ्र अच्छी हो हमारी कामना यही है।

निराला जी की हालत चिन्ताजनक है। ऐसा मालुम हुआ है। मै भी इधर नही पहुच सका और न अभी पहुच पाऊगा। दिल्ली जा रहा हू ३१/७ को। जयपुर तक जाना है। प्रोग्राम बन चुका है। ६/७ दिन लगेगे।

सपरिवार प्रसन्न हूं। इसमें कोई परिवर्तन नहीं होने का। द्रव्य देवता आते रहें —वहां सब ठीक रहता है।

श्री नर्मदेश्वर उपाध्याय का पत्र इलाहाबाद से आया है कि वह वहां से दिल्ली को भेज दिए गए है। रेडियो मे है। वह तुम्हे वहां बुलायेंगे ही। तुम जरूर जाना। मस्त आदमी है। आवाज तो बडी ही बढ़िया है। उसी ने लिखा कि इधर जनाब ने रेडियो से भाषा पर कुछ कहा था। हमे पता नही था। हम नही सुन सके। पुस्तक तो निकल ही गयी होगी। यही [यहाँ] नही मिली। ख़ैर।

सस्नेह तुम्हारा
केदार

30, New Rajamandı
Agra
२२-८-६१

प्रिय केदार,

सेवा का स्वास्थ्य पहले से अच्छा है। ज्वर, खांसी आदि कुछ नही है। दिन भर आराम करती है, गाना सुनती है। Cavities का भरना शुरू हो गया है।

सुना है निराला जी बहुत अस्वस्थ हैं। यहा से निकलना नही हो पाता।

आशा है तुम सपरिवार प्रसन्न हो।

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

बांदा
५-६-६१
८ बजे रात

प्रिय डाक्टर,

मैं २/६ को इलाहाबाद में था। सवेरे ही वहाँ पहुंचा जहा निराला जी थे। वह अपने छोटे से कमरे की दीवार की तरफ मुह किये तहमत लपेटे – उघारे बदन लेटे थे। पता नही कि सो रहे थे या जग रहे थे। हो सकता है कि शिथिलता वश मौन लेटे रहे हो। मैंने उन्हे बखोरना उचित नही समझा। अतएव मैं श्री रामकृष्ण के घर गया। वहा उनसे मिला। निराला जी के हाल-चाल पूछता रहा। पता चला कि कुछ दिनों पूर्व वह डांवाडोल हालत में थे। तमाम सूजन आ गयी थी। आशंका उत्पन्न हो गयी थी। दवा डाक्टर दास करते थे। परन्तु कवि ने उनसे दवा

कराना स्वीकार नहीं किया। तब फिर दूसरे डाक्टर शायद डाक्टर ब्रजबिहारी से वही दवा कराने पर राजी हुए जो दवा उन्हें पिछले [पिछली] बार दी जाया करती थी। मालुम हुआ कि उससे लाभ भी हुआ। फिर मैं श्री रामकृष्ण के साथ निराला जी के कमरे में आया। तब तक वह हमारी तरफ हो रहे थे। हम लोग बैठे। मैंने देखा कि हमारे महाकवि के चेहरे की चमक उड़ गयी है। गाल पिचक गये है। चमड़ा सांवला पड गया है। दाढ़ी लटक गयी है। वह लेटे थे। पेट लम्बोदर के पेट की तरह हो गया है। पेड़ू के नीचे ही तहमत काफी उठी हुई लगी। पूछने पर पता चला कि अपेन्डीसाइटिस का बडा सा झोंझ निकल आया है। यह बात तब तक आ गए श्री जयगोपाल मिश्र ने बताई। वह निराला जी को चापते रहे। पावों में सूजन कम हो गयी है। और सूजन कहीं न दिखी। बीमारी का हाल पूछ ही रहा था कि कवि ने स्वयं बताया कि पेशाब काफी मात्रा में होने लगा [लगी] है। यह लक्षण अच्छा है। केवल दूध और फलों का रस पीते है। पर मानते नही। इतवार के दिन कुछ दिन पहले उन्होंने गोश्त खुद ही पकाया था और जल गये थे। वहीं मालूम हुआ कि ठर्रा की बोतल मंगायी थी। 'छनी थी। यह कुतर्क भी होते चलते है। मुझे पहचान गए थे। हालांकि मिश्र जी ने मेरा नाम बता दिया था। बांदा का हाल पूछते रहे। किसी मिथिलेश कुमारी का नाम ले कर उसका हाल पूछा। पर मैं उसे नहीं जानता था। एक सुन्दर स्त्री को जानता था। मैने कह दिया कि वह अब बांदा में नहीं है। कही और है। मिश्र जी से धीरे चांपने को कहा तो मिश्र जी ने हास्य मे कहा : अब वह निराला कहां है कि जोर से चापू।— कलकत्ते की चर्चा चल पड़ी। मिश्र जी ने ही बताया कि जिस घर मे कवि और वह लोग ठहरे थे वहां ही ख़ूब छनी थी। वह बेचारा वैष्णव था। घबरा गया था। उसी दिन उसके बच्चा भी पैदा हो गया था। मिश्र जी ने कहा कि कवि अस्पताल जाने को तयार नही हुए क्योंकि उन्होंने कहा कि बहुत लोग बीमार है। पहले उनका इलाज हो। देखा तुमने। निराला संघर्ष कर रहा है शासकीय व्यवस्था के खिलाफ। उसका रोग असहनीय बातों के कारण ही इतना उग्र रूप धारण कर लेता है। वह नेता नहीं है कि जुलूस निकाले। आवाज़ बुलंद करे। अब वह इस दशा में है कि पड़े-पड़े सब कष्ट अपने जर्जर शरीर पर ही झेल जाना चाहता है। मेरे सामने उनका सारा जीवन झलक मार गया। मैं उन्हें देखता था और देख कर मन में गुनने लगता था कि उनकी बीमारी के मूल में असंगतियों का बड़ा ज़बरदस्त तनाव हुआ होगा और है तभी वह इतना उग्र रूप ले लेती है। ऐसे रोग का उपचार दवा से नहीं हो सकता। मुझसे इसी हालत में कविता सुनाने की बात कही। पर मै तयार न था। कापी न ले गया था जबानी याद भी न थी। मैं इनकार कर गया। कोई मौका न था न मन था। तभी फिर बोले कि सनेही जी आये थे। मैंने उनका शिमला मे अपमान नही किया था। उन्होंने उस दिन प्रयाग में गाना गाया था। कविता सुनाई थी।

खूब रस मिला था। दाद दे रहे थे। और अपने शिमला के व्यवहार की सफाई दे रहे थे। मेने पूछा कि पंत जी भी आते हैं या नहीं। मालुम हुआ कि एक दिन आये थे। जी छौक-खा गया। उन्हे तो दिन-प्रतिदिन आना चाहिए। अपनों से स्नेह पा कर बीमारी हल्की हो जाती है। निराला को यह भी नसीब नही है। इलाहाबाद के वातावरण में अजीब बेरहमी और ममत्वहीनता व्याप गयी है। फिर हम चले। पान मंगा कर कवि ने खिलवाये थे। वहां से हमें मिश्र जी श्री नारायण चतुर्वेदी जी के पास ले गए। वहीं दारागंज में हैं। उसी घर में जिसमें एक बार मैं तुम्हारे साथ कई साल पहले गया था। निराला की बीमारी की चर्चा वहां भी चली। उन्होने अपने सफेद बालों की परिपक्वता के स्वर में कहा कि निराला के भक्त ही उनकी बीमारी के कारण हैं क्योंकि वह ही हल्ला मचा-मचा कर उत्पात खड़ा किये रहते हैं। एक बात उन्होंने यह भी कही कि यह गलत है कि निराला को लोगो ने ठुक-राया है चपत मारे हैं और तभी वह इस दशा को प्राप्त हुए है। अपनी दलील के समर्थन में उन्होंने नजीर दी कि तब मतवाला में निराला तो खुद ही दूसरों को कस-कस कर कोड़े मारते थे। वह फिर अपने साथ क्यों अच्छे व्यवहार की कल्पना के अधिकारी है। मैं चुप सुनता रहा। मुझे उनकी दलील कुछ भी न जंची। निराला तो एक Super Sensitive कवि था और वह जो दे रहा था अपनी जान से निकाल कर अच्छे-मे अच्छा नवीन-से नवीन काव्य दे रहा था। उसका विरोध अनुचित था। तब के साहित्यिकों को समझ बूझ कर काम करना था। खैर जो हुआ सो हुआ। सच तो यही है कि कुछ निराला के अपने निजी स्वभाव ने और कुछ दूसरों के स्वभाव ने उन्हें इस दशा में पहुंचाया है। वह असंतुलित तो हो ही जाते। जिस एक लगन से सब कुछ त्याग कर—केवल कविता को अपना कर वह हिंदी का पक्ष ऊपर उठा रहे थे वह उन्हे कैसे दुनियादार रहने देती। वही हुआ कि वह दुनिया का सब कुछ खोते चले गये। अपना स्वास्थ्य भी खो चले। इसके बदले में उन्होंने कमाई कविता और उसे दिया। दूसरों ने - उनके सहयोगियों ने दुनिया की कमाई भी की और कविता की बेड़ भी लगाई। वह लोग संतुलन का पल्ला अपनाए रहे। परिणाम वही कि वह भद्र बने—समाज में स्थान पा सके। पुरस्कार भी पा सके — नाम भी बरसा और कविता भी देते रहे। लेकिन वह कविता भी वैसी ही भद्र बनी जैसे भद्र वह लोग वने। सच बात तो यह है कि उनकी वाणी मे वह आलोक नहीं आया जो दिल उजाले से भर दे। जब मैं श्री नारायण जी के यहां से चला और रास्ते में था तो मैंने पूछा कि आखिर सरकार हमारे कवि को सम्मानित करने और पुरस्कृत करने में क्यों कोताही कर रही है तो मिश्र जी से मालूम हुआ कि निराला जी का वही हाल हुआ जो टंडन जी का हुआ। मुझे खीझ हुई। मैं रोष से भर गया। मैं ऐसी सरकार की भर्त्सना करता हूं जो योग्य कवि का सम्मान करने में अड़ियल टट्टू की तरह आगे बढ़ने से इनकार कर देती है। वाह

रे सरकारी नीति। क्या कभी सरकार समझेगी या नहीं। हां तो, मैं दिल्ली-जयपुर न गया। तुम्हारे पत्र के पाने पर मैंने इलाहाबाद जाना ही ठीक समझा। निराला जी को देख कर चिन्ता हुई परन्तु हालत में कुछ-कुछ सुधार देख कर जी कुछ-कुछ चैन में आया। तुम्हें खबर दे रहा हूं कि फिलहाल ख़तरा नहीं है। पर रोग की गति कौन जाने।

अच्छा यह तो लिखो कि अब बेटी की तबियत कैसी चल रही है ? दोस्त, चिन्ता न करना। सब ठीक होगा। तुम तो गम्भीर हृदय हो। निराला की बीमारी हिन्दी की बीमारी है– कविता की बीमारी है···युग की बीमारी है···हिन्दी के अन्य कवियों की बीमारी है।[1]

तु० केदार

30, New Raja Mandi
Agra
७-९-६१

प्रिय केदार,

मेरे घर का नम्बर ३० है, ८०[2] नहीं। तुम्हारे पत्र की दूसरी किस्त सबेरे मिली। पहली वाली शाम को। कुछ घंटों तक मन ही मन तुम्हें गद्य काव्य सुनाता रहा।

लोग कहते है कि युद्ध निकट होने पर भूकंप आदि अपशकुन होते है। निराला जी की बीमारी, अमृत नागर का टायफायड ऐसी ही प्राकृतिक दुर्घटनाओ के समान है।

तुमने बहुत अच्छा किया जो इलाहाबाद हो आए। मुझे ऐसा लगा मानों तुम आगरे आ कर गले मिल गये हो। तुम्हारे साथ निराला जी के दारागंजी कमरे में मैं भी घूम आया।

बेशक निराला जी की आलोचना की जा सकती है लेकिन आलोचना वे करें जिन्होंने निराला से अधिक साधना की हो और जीवन में उनसे अधिक संयम बरता हो। ऐसे लोग नज़र नहीं आ रहे। फिर दारागंज में 'वन्य जन्तुओं का रोदन कराल' तो सुना जा सकता है, साधकों की मर्मवाणी नहीं।

इधर मैं Vesrhigora की पुस्तक Men with a clear Conscience फिर पढ़ रहा था। उसके बाद War & Peace पढ़ना शुरू किया और युद्ध संबंधी अंश

---

1 यह पूरा पत्र दो अंतर्देशीय पत्रों में लिखा गया था। [प्र० वि०]

2 केदारजी ने पिछले पत्र में घर का न० ८० लिखा था। [प्र० वि०]

पढ़ गया। तोल्स्तोय ने इतिहासकारों की खूब मरम्मत की है। वे रूस-फ्रांस का युद्ध वैसे ही नहीं समझ पाये जैसे हमारे यहां के बुद्धिजीवी १८५७ का महत्व नहीं समझे। किस शान से बूढ़े ने जन-प्रतिरोध के बारे में लिखा है : युद्ध विशेषज्ञ कहते ही रहे कि युद्ध शास्त्र के नियमों का उल्लंघन किया जा रहा है किन्तु

The cudgel of the people's war was lifted with all its menacing & majestic strength, & without consulting any one's tastes or rules, & regardless of anything else, it rose & fell with stupid simplicity, but consistantly, & belaboured the french till the whole invasion had perished.

सेवा का दूसरी बार Xray कराया है। Infeeted area काफी कम हो गया है। डाक्टर प्रगति संतोषजनक बतलाते है।

मेरी किताब निकल गई है। न मिली हो तो मुशी को Remind कर देना।

तुम्हारा—रामविलास शर्मा

बांदा
२४-६-६१
प्रिय डाक्टर,

मैं जानता था कि घर का नम्बर ३० है ८० नहीं। पर जो मोहर की छाप लगाते हो वह भ्रम उत्पन्न करती है। मेहरबानी करके हाथ से मकान का नम्बर लिखा करो। गद्य काव्य का यह युग है भी। तुम भी उसे सुनाते रहे तो कोई नयी बात नही हुई। अफसोस है कि मैं नहीं था। वरना मै बेतुके खीचतान के छदो की छड़ियो से जनाब के गद्य काव्य की पीठ छील देता। खैर।

ना बाबा ना। युद्ध का नाम सुन कर रोंगटे खड़े हो जाते है। अपशकुन हो रहे है। दिल डरता है। निराला तो शायद बीमार ही चल रहे है। कुछ पता ही नही चला। अमृत नागर अच्छे हो गये। Leader में लखीमपुर खीरी का समाचार पढ़ कर यह जान सका कि वह वहां गये थे—वहा बड़ी-बड़ी जगहो मे बोले है। हमने तो तुम्हारे खत से जाना कि अपना पुराना खुसकैट दोस्त टाइफाइड मे पड़ा था।

बूढ़े टाल्स्टाय का मर्म-बल देख कर प्रसन्न हो गया। तुम्हारी किताब तो नहीं सच्चिदा[1] का पत्र आया है। लिखते है कि पुस्तक खतम हो गयी थी—अब भेजते हैं। सो पत्र आये भी कई दिन ढरक गये। आयेगी ही।

आजकल हमारी मेहरार बवासीर से तंग है। दुर्बल से दुर्बलतर हो गयी है। सेवा को प्यार।

तु० केदार

1. सच्चिदानद शर्मा—जन प्रकाशन गृह के हिन्दी प्रकाशन प्रधिकारी।

बादा
२६-९-६१

प्रिय डाक्टर,

कल ही पुस्तक[1] डाक से आयी। कल ही रात तक ८६ पेज तक पढ गया। विषय शुष्क और नीरस है मगर तुमने उसके प्रतिपादन मे बीच-बीच मे जो हास्य और व्यग [व्यग्य] के छीटे मारे है वह उसे सरस और सुन्दर बनाये है। मूल भ्रातियो को, एक-एक ले कर, तुमने हरेक को तर्क और बुद्धि से ध्वस्त किया है। वैज्ञानिक विवेचन की तुम्हारी यह सहज-सरल शैली विषय को निखारती तो हे ही पाठक को भी प्रकाश से भर देती है। मै तो पुस्तक पढ कर और उसमे अन्य लेखको के उद्धरण देख कर यही सोचने लग जाता हू कि तुम्हे कितना पढना पडा होगा और कितना विचारना पडा होगा। मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक का प्रकाशन एक और महत्वपूर्ण घटना है। तुम्हे यश तो मिलेगा ही दूसरो की बद्धि साफ होगी और विचारको को बल मिलेगा। बधाई लो।

साच्चदा को मैने एक पोस्टकार्ड बडा कट् हो कर लिखा था— उनके पत्र के मिलने पर। अभी दूसरा लिखा हे प्रकाशक [प्रकाशन] के लिए बधाई भेजते हुए। आशा है कि सेवा ठीक हो रही है।

तु० केदार

काम की बात·········

पं० रामकृष्ण त्रिपाठी का पता लिख भेजो।

मैने निराला जी को पुस्तक भिजवाई थी, लेकिन महाकवि कलम उठाते नही। पार्सल वापस दिल्ली पहुँच गई [गया]। इसलिए ··

नरोत्तम, अमृत नागर, मुशी— सब पधारे। दो दिन यथेष्ट आनन्द रहा लेकिन कविता पाठ का मजा तो तुम्हारे साथ ही आता है। नागा दिल्ली है लेकिन व्यस्त होने मे आये नही। इधर कम्बख्त फ्लू ने दबा लिया था। अब ठीक हूँ। शुष्क होने पर तुम ८६ पन्ने एक साथ पढ गये कही विषय सरस होता तो रात भर जागते। जो कुछ तुमने पुस्तक के बारे मे लिखा वह मेरे लिये और सभी आलोचको की राय से कीमती है। निराला जी के बारे मे तुमने जो लिखा, उसमे मन दुख मे डूब गया। लडो, प्यारे लडो जिससे अपने कवि इस नरकत्रास मे न पडे।

रामविलास ३-११-६१
[३-१०-६१][2]

---

1. भाषा और समाज! (जन प्रकाशन गृह, दिल्ली)।
2. सही तिथि ३-१०-६१ है। [प्र० वि०]

बांदा
५-१०-६१
रात ८ बजे

प्रिय भाई,

गांधी-जयंती के दिन शाम के समाप्त होने पर, लालटेन की रोशनी में कुछ देर के बाद, तुम्हारी पुस्तक को पूरा पढ़ सका। यह पुस्तक नही ग्रंथ है। ग्रंथ नहीं गौरव ग्रंथ है। यह तुम्हारे विवेक की अनूठी उपलब्धि है। तुमने इतिहास के युगों में जा कर वहां ध्वनियों को पाया और उनकी उत्पत्ति का और विकास का सामाजिक धरातल खोजा और स्वर और व्यंजनों के सामान्य रूपों और उनकी भाव-प्रकृति का पता लगाया। मूल शब्द भंडार के आधार पर अनेकानेक सर्वमान्य भ्रांतियों को तुम्हीं ने तोड़ा। बोलियों के संबंध में भी तुमने कमाल किया है। उनके योग का महत्व कहां और कब किस तरह प्रकट हुआ, इसे भी तुमने अच्छे ढंग से रक्खा है। लघु जातियों और महाजातियों के निर्माण की क्रिया का स्वरूप भी तुमने सही ही बतलाया है। परिनिष्ठत [परिनिष्ठित] भाषा की व्याख्या भी खूब है। आद्य भाषा की थ्योरी तो फट से फूट गयी। अब तक बहुत से भाषा वैज्ञानिक पहाड़ की तरह खड़े थे। सब तुम्हारे विवेक के नीचे हो गये। कारकों की बारकों में भी तुमने पहुंच कर उनका भी भेद लिया है। यह भी सुन्दर है। सर्वनाम संज्ञा का प्रतिनिधित्व करने-करते थक गए थे। कोई उन्हे महत्व ही नही देता था। तुमने उन्हें भी उठा कर सफल किया। धातुएं अपना असली हिन्दी रूप खोये बैठी थीं। तुमने उन्हें उबारा। अब बेचारी वे धातुएं जो परम पूजिता थी मंद पड़ गयी हैं। 'ने' का महत्व मैं न जानता था तुमने बताया। न जाने तुमने कितना नही और क्या नही लिखा। पढ़ कर दिमाग साफ हो जाता है। मालूम होता है कि अब तक इस विशेष क्षेत्र में उल्लू ही बोलते थे। अब तो वहां मर्द बोला है। हमारी भाषा हिन्दी तुम पर गर्व कर रही है। विषय बडा ही सरस है। हिन्दी से प्रेम हो तो यह ग्रंथ भी अनुपम है। जिस शैली में तुमने लिखा है वह सहज बोधगम्य है। तर्क से भरपूर है। उदाहरणों से प्रमाणित है। हास-परिहास और व्यंगो [व्यंग्यो] से नाटकीय है। भोजपुरी और पंजाबी के संबध मे तुम्हारे दोनों दृष्टिकोण स्वच्छ और माननीय हैं। अग्रेजी के हिमायतो की तुमने खूब ख़बर ली है। रविन्द्रनाथ को शेली आदि पाश्चात्य कवियों से प्रभावित कहने वालों की बखिया भी तुमने ऐसी उखाड़ी है कि तोपें टिपटिप करके रह जायेंगी। आदि से अन्त तक कहीं भी दृष्टिदोष नही आया। तुमने यथार्थ के धरातल पर शब्दों, स्वरों, बोलियों, भाषाओं, जातियों, व्याकरण, इत्यादि इत्यादि का उद्धार किया है। तुम सबसे बड़े विचारक हो। मैं तो समझता हूं कि यह ग्रंथ तुम्हें अमर रखेगा। बधाई लो। सौ बार बधाई लो। हजार बार लो। इस पुस्तक को छाप कर P. P. H. धन्य हो गया है।

'निराला' पर सनेही जी का लेख छपा है। हिन्दुस्तान साप्ताहिक में। दो पत्र भी छपे हैं, जो निराला ने तुम्हें लिखे थे। आज पढ़ता रहा और विवश रोता रहा। वाह रे हमारा हिन्दी प्रेम। प्रयाग के बडे-बड़े कवि-साहित्यिक कोई भी उसके पास नहीं पहुंचते। अपने मान-सम्मान की जगहों में सभी जाते है। दोस्त P.P.H. उनकी पुस्तकें छाप कर घर-घर मे पहुंचाये तभी कल्याण है।

रामकृष्ण त्रिपाठी, दारागज, संगीत शिक्षक —यही पता होगा। मकान नं० नही जानता। मेवा को प्यार।

तु० केदार

बांदा १५-१०-६१ रात ६-१/२ [साढ़े नौ] बजे

भाई,

वही हुआ जिसकी आशंका आज सबेरे मे थी। 'लीडर' में पढ़ा था कि उन्हें आक्सीजन दिया जा रहा है। दिन-भर अधीर ही रहा। रेडियो ने सूचित किया कि वह नही रहे। हिदी का 'गरगज'·· कविता का दिग्गज उठ गया। क्या कहूं। मैं तो दुखी हू ही। तुम भी विचलित पडे होओगे। धैर्य धरो दोस्त। तुमने तो उन्हें अपनी सर्वश्रेष्ठ कृति 'भाषा और समाज' समर्पित करके अपना ऋण चुकाया। मगर सौजन्यप्रिय सरकार उन्हे मान-मम्मान न दे सकी। कितनी विदग्धता है इस व्यवहार में। काश तुम गये होते और महाकवि को देख आये होते।

बेचारा जयविशाल[1] तड़प गया होगा। मैंने उसे महाकवि के इस महासकट के काल में, उनके पांव चापते और उन्हें मुग्ध करते देखा है, अभी कुछ दिन पूर्व।

तु० केदार

३०, नयी राजामंडी

आगरा

२०-१०-६१

हाँ प्यारे, निराला जी अब नहीं रहे। न रोता हूँ, न हँसी आती है। कोलरिज

1. जयगोपाल मिश्र। [प्र० वि०]

के शब्दों में A grief without pang, void, dark and drear का अनुभव करता हूँ। बीच-बीच में एक लंबी सांस ले लेता हूँ। बस।

इस बात का अफसोस नहीं है कि उन्हें इन दिनों देख न पाया। उन्हें जितना पहले देखा था, वही दिल कचोटने के लिये काफी है। जिस निराला ने मेरी आंखों के सामने गीतिका के गीत, राम की शक्तिपूजा, तुलसीदास, कुल्लीभाट, बिल्लेसुर बकरिहा की रचना की थी, वह जीते जी ही मिट गया था। अंतिम बार जब मैंने देखा था तब कुछ घंटों के लिये मानों वह निराला लौट आया था। उस दिन कवि ने रवि ठाकुर के अपने प्रिय परिचित गीत गाये, अपनी रचनाओं को भी गाया, सुनाया, कालिदास काव्य चर्चा की, मुझसे मिल्टन पढ़वा कर सुना। उनके ओठों पर उस दिन वही पुरानी मुस्कान थी, आंखों में वही आत्मीयता का भाव था।

दोस्त, यहां ७५ वर्ष के एक ठाकुर टीमकसिंह हैं। उनका लड़का तारा सिंह हमारे साथ अध्यापक था। उम्र में मुझसे कम, उस इकलौते की अकाल मृत्यु हो गई। शव पड़ा था। लोग रो रहे थे। बूढ़ा गाँव से आया। सब को ढाढ़स बँधाने लगा। किसी ने कहा—चादर हटा कर बेटे का मुँह देख लो। बोले—इस मुँह को क्या देखना ? वह हँसता-बोलता चेहरा मन में बना है, वही बना रहे।

प्यारे, अपने मन की भी वही हालत है। उस दिन वह जो गीतिका और तुलसीदास का निराला लौट आया था उसी को, अंतिम स्मृति की तरह, मैं सुर-क्षित रखूँगा।

मुक्ति मिली, विलंब से। पूर्ण नरकत्रास उन्हें यहाँ मिल गया। लेकिन वीर आखीर तक लड़ा। पूर्ण विजयी हो कर गया —रोग पर विजयी हो कर नहीं, विरोध पर विजयी हो कर, सबको अपना बना कर।

मृत्यु पर उन्होंने बहुत सोचा, बहुत लिखा। सन् २४ से ५६ तक लिखा। मृत्यु को जीवन में देखा, और जो किसी ने नहीं देखा, वह देख कर उन्होंने उस पर गीत रचे। वे अपनी वेदना और दु:ख को कच्चे माल की तरह काव्य कृतियों के लिए काम में लाते रहे।

प्यारे, तुलसीदास के बाद अब तक ऐसी अमोघ प्रतिभा का साहित्यकार हिन्दी में न आया था। वाल्मीकि, तुलसीदास, निराला—तीनों तीन तरह के, लेकिन तीनों गरल पीने वाले वीर थे, दुख पर रोने वाले नहीं; ओज गुण की सृष्टि करने वाले, सच्चे अर्थों में वीर रस के कवि।

मुझे उनका साहचर्य प्राप्त हुआ, यह मेरे जीवन का सबसे बड़ा पुण्य था।

रामविलास शर्मा

३०, नयी [राजा] मंडी, आगरा
१-१२-६१

प्रिय केदार,

घडी तेज़--पता नहीं कितनी --शोभा और हम बहस कर रहे है कि सुबह के साढ़े पाँच बजे है या पाँच। हमारे कंपाउंड में गेंदे खूब खिल रहे है। धूप में तो खुश रहते ही है, पर चादनी [चाँदनी] रातो में भी खूब मुस्कराते है।

इधर खूब कविताएं पढ़ीं —ज़्यादातर अंग्रेज़ी की। एक किताब शेली-कीट्स आदि पर पूरी हो गई है। पखवारे में तुम्हारे दर्शन करने आये गी। कविता तो प्यारे यूनान वाले लिखते थे या फिर हमारे देश वालो ने लिखी है। लेकिन कितनी चीजों पर लोगों ने नहीं लिखा है जिन पर लिखना चाहिये था! वास्तव में भवभूति ने ठीक लिखा था, काल निरवधि है और पृथ्वी विपुल है। कविता लिखने का मूड कुछ-कुछ लौटा है। एक लिखी है लेकिन तसल्ली नहीं हुई। दो दिन को अमृत नागर आये थे। निराला जी के बारे में सुनते रहे। अपने हाल देना।

रामविलास

पाँच ही बजे है। घंटे सुनाई दिये।

बांदा
५-१२-६१

प्रिय डाक्टर,

एक पत्र पहले भी आया था। उत्तर न दे सका। व्यस्त था इधर-उधर के कामों में। एक दूसरा पत्र पा कर अब जवाब देना ही पड़ रहा है। न आता तो शायद अभी और समय बीत जाता बिना पत्र लिखे। तुमने खटखटा दिया, यह अच्छा ही हुआ। मुझे विश्वास है कि शोभा की बहस में तुम जरूर हारे होगे। लेकिन वह हार भी अच्छी ही रही होगी। बिस्तर पर पड़े-पड़े बात बनाने के लिए और कुछ और मज़ा मारने के लिए। गेंदे तो धूप पी कर बड़े गुदगुदे हो जाते हैं। बरबस आंखों में उछलते रहते हैं। डियर, जी-भर देखो और जियो। "चांदनी रातों में खूब मुस्कराते है।" क्यों नहीं दल-बल से खूब कसे जो रहते हैं और ढीले नहीं पड़ते। यूनान वालों की एकाध कविता मेरे पास भी भेज दो। अकेले रस लेते हो। मुझे वंचित रख कर अपराध करते हो। सजा मिलेगी। अवकाश होता तो छलांग मार कर अचानक तुम्हारे घर पहुंच जाता। पर दुनिया का चक्कर-मक्कर जकड़े है। काम कचहरी का साला बड़ा समय-खाऊ और जीवन लेवा है। मजबूर हूं।

यार, कविता लिखो। मूड आया है तो कलम चलाओ और स्वरो से व्यंजनों को निहाल करो। जो लिखी है उसे ही भेजो। तुम तो तभी संतुष्ट होगे जब

अपना कचूमर निकाल लोगे।

निराला-निराला—सब पर छाया है निराला। सब के मन को अब बहुत भाया है निराला।

पुस्तक की प्रतीक्षा है। लिफाफा नही है। रात है। अतएव पोस्टकार्ड।

तुम्हारा—केदारनाथ

३० नयी राजामंडी,
आगरा
२१-१२-६१

प्रिय केदार,

बकौल अमृत नागर के मौसम एकदम फौक्स है। आज तीन बजे तक कुहरा रहा। सबेरे-बेहद ठंढ। अपन को सात बजे से क्लास लेना होता है। दस बजे वापस चलते है तो और ठंढ लगती है। कमरे मे आग जला कर हाथ सेंकते है। रजाई ओस से भीगी हुई-सी लगती है। पंसे मे बिल्ली ने बच्चे दिये है और अभी देती जा रही हे—किस्तों में। कू-कूं-कू—बच्चो को पेट के नीचे छिपाये जाडा झेलती है। है न भारती एण्ड क० मे ज्यादा आस्थावान ! सेवा उसे खीर खिलाने जा रही है। मोहल्ले के बच्चे उसकी खोज-खबर ले गये है।

मेरी 19th Century Poets पर किताब निकल गई है अभी प्रतियां प्राप्त नही हुई। तुम्हारे पास भिजवाऊंगा। १७ दिसबर को जनयुग निराला अक निकालने वाला था, पता नही क्या हुआ। आजकल निराला जी के ध्यान में डूबा रहता हूँ। मेरे पुराने पत्रों में तुम्हें कहीं कुछ मिल जाय जिसमें उनके हालचाल लिखे हों तो भेज देना। उन पर एक नयी पुस्तक लिखने की तैयारी में हूँ।

कविता लिखी है लेकिन संतोष नही है। लेकिन वसंत तक लिखूंगा—जरूर Mood है जरा सर्दी छाटे [छटे]। तुम्हे भेजूंगा भी। John Dickson Carr की जासूसी कहानी The Wrong Problem मे यह वाक्य बड़ा कवित्वपूर्ण लगा—Those days after the funeral were too warm & suspicious acted like wollen underwear under the heat.

बाँदा में ठंढ के क्या हाल है ?

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

बादा · २५-१२-६१

प्रिय डाक्टर,

मौसम आगरे मे ही फौक्स नही है। यहा भी डबल निमोनिया के वजन पर डबल फौक्स है। ठड के साथ-साथ ठरन है। ढेर कपडे पहने हूं, फिर भी डोला जाता हू। मेरुदड बेईमान की नियत [नीयत] की तरह डोल रहा है। सीने मे ठढ की हिमानी मुट्ठी रखी है। ऐसे मे बहुत सभाल कर -दस्ताने पहने हाथ मे यह पत्र लिख रहा हू। मेरा तो वही हाल है जो आर्कटिक सागर मे चल रहे जहाज का। सिर पर स्तूपाकार कनटोपा चढा बैठा हू। मै हू कि शीतकाल के शीतयुद्ध से बचने के लिए बुद्ध भगवान की शाति का आश्रय लिये बैठा हू। ऐसे मे तुम्हारा लम्बे डग की लेखनी का पत्र मिला। चश्मा चढा कर सपाटे मे पढ गया। मालूम हुआ कि पहलवान 'राम' रावण से युद्ध कर रहे है। निराला के शब्दो मे शक्ति का सामना शक्ति से करो। तुम तो इधर निराला पढ भी रहे हो। हम तो उनके मरने से कुछ महीने पहले से उन्हे समझ रहे है। उनके गीतो के अर्थ खोल रहे है। कही-कही अर्थ आ जाते है। कही-कही शब्द ही बजते रहते है। अर्थ छिपे के छिपे रहते है। बडी मेहनत की यह खेती है निराला के गीतो का अर्थ समझना। पट्ठा ऐसे-ऐसे दाव लगाता है कि पडित लडखडा कर भूलुठित हो जाये। शब्द भी वहा नये-नये मोरचे पर लडते है। चारो तरफ गरदन फेरते है। कभी पहचानी चाल मे मार करते हैं तो कभी अजानी चाल से पैर पटकते रहते है और दिल पर हाथ नही धरने देते। निराला ने कुल्ली भाट को तो भीतर-बाहर दिखा दिया पर करामात मे ऐसा कुछ कर गये है कि उनकी वाणी मे भरा भाव गीतो से सहज ही नही प्राप्त होता। बडे गभीर मौन के साथ निराला की कला गीतो मे गहरी हुई है। पहले तो वह, शुरू मे, कला को दिखाते थे भाव के साथ। बाद को तो वह भाव को भी और कला को भी छिपाते थे। वह जहा तक आये थे वहा तक पक गये थे। डाल मे लगे बेल की तरह उनके गीत है। उपर मे कठोर। उरोजो की उपमा लिए। पर है शिव के उस अर्द्धांग के गीत जो तपस्या से शुद्ध हुआ है। एक बहुत बडा अचरज है कि निराला के गीतो मे शिव और पार्वती दोनो के दर्शन होते है। शिव की अनासक्ति, शिव का योग, शिव की चेतना, शिव की सिद्धिया, तथा शिव का शरीर— सब कुछ है इन गीतो मे। साथ ही इन गीतो मे पार्वती भी है। वह निष्कलुष जरा मरण विहीन तपस्वी सौदर्य है कि वह दिव्य क्षणो मे ही आभास देता है। देखो न —हाथ वीणा समासीना —विशद वादन रत प्रवीणा— घिरे बादल गगन मडल—तरल तारक नयन अविरल— तार के झकृत सुकोमल कराहत करका सुखीना---राग सावन मनोभावन —भामिनी के भवन पावन— दीप्ति नयनो की सुहावन—नाक का हिल रहा मीना। इसकी कला देखो ऊपर से नीचे

ठोस। महाकवि ने अपनी काव्य-साधना को, सरस्वती की आराधना को अपने जीवन चरित को और युग के साहित्यिक जीवन चरित को एक ही धरातल [पर] उतार कर संवार दिया है। पहले तो सरस्वती को बराबर पर बिठा लिया है। अपने को उस देवी के समकक्ष रखने का भाव है। अपनी कविता का भरोसा व्यक्त किया है कवि ने। उधर सरस्वती भी उसके घर आयी है। वह भी कवि को श्रेष्ठ समझती है। तभी तो सुपात्र के पास बैठ कर वीणा बजाती है। बादल घिरे है। कवि के जीवन मे और काव्य के जीवन में और सरस्वती के जीवन मे। तीनो तरफ आकाश आच्छादित है। सावन जो है। तारे भी छिपे है। परन्तु देवी के तारने वाले तरल नयन तो है। वह चमक रहे है। तरल से सहृदयता और सतोष की तृप्ति का भाव है। दुख मे भी कविता सगीत और जीवन एक [साथ] चल रहे है। यह खूबी है। ओले पडते है। वैसा ही सगीत भी बज रहा है। वेदना का बोध अव्यक्त से व्यक्त होता है। वह भी सुख देने वाला है। वेदना मे सुख की अनुभूति व्याप्त है। गीत नही बद होता। सरस्वती चल नही देती। कवि भग [भाग] खडा नही होता। क्रम चलता ही रहता है। सरस्वती की आखो की ज्योति देखता है कवि। अपनी काव्य-साधना पर प्रसन्न देखता है देवी को। तभी मीना के हिलने में स्वीकार का भाव है। यह है कला और यह है कविता। एक दूसरा गीत है. — 'जावक जय चरणो पर छाई' वसन्त का गीत है। 'पलक पलास डाल कलियाई' कहा है। पैर से सिर तक का सर्वांग दर्शन है। लक्ष्मी बसन्त के चरणो पर अपनी जय का जावक समपर्ण कर चुकी है। वाह रे महाकवि! 'थोक अशोक क्रोकनद फूले—मधु के मद भौरे दिक भूले' —यहा रवीन्द्र की याद आयी। वह वधू मे कहते है 'करबी थोलो थोलो रयेछे फुटि।' वहा कनेर फूलते है —परन्तु थोलो-थोलो को ध्वनि मे सौदर्य थुलथुला जाता है। मारवाडिन का खुला पेट दिखने लगता है। यहा निराला का 'थोक अशोक' चैलेज देता है दीनता को, दारिद्र [दारिद्र्य] को अरूप को और दम्भ और अहंकार को। फिर मधु पी कर मस्त हुए भौरो का दिक् भूल जाना भी सुगध की अतिशयता का बोध देता है। तमाम तरह की खुशबू—तमाम तरह के इद्रिय बोध- चेतना हरण का भाव --खुशबू के परदे जैसे पड गये हो। और चलो। कवि कहता है 'पावक पाश दिगन्त बधा है।' यह एक पक्ति ही जीवन और'दर्शन, ज्ञान और विज्ञान का रहस्य प्रकट करती है। बडी बढिया अमर पक्ति है। सौदर्य देखो, श्री का जैसा चित्र है। 'अग-जग जैसे अडग सधा है।' इसी पर सधने का भाव भी खूब है। आग मे बध कर ही सृष्टि क्षय नही होती— चिर विकसित है। फिर अन्त मे कवि कहता है कि इतना सौन्दर्य है कि आखो को देखते-देखते थक जाना पडता है। कहता है कि 'नभ मे नयन मुकित मंडलाई।' यह है धरती का वास्तविक सौदर्य। शायद कवि कालिदास इतने कम में इतना भरपूर सौन्दर्य और रस नही भर सके। अर्थ निर्वाह कमाल का है।

बहुत हो चुका दोस्त। अब कलम नही चलती। फिर दूसरे पत्र मे। सेवा को गरमागरम प्यार | पकौडी।

तु० केदार

पुनश्च:—

पत्र पाते ही फिर लिखूंगा निराला पर ही। 'जनयुग' निराला अंक फिर निकालेगा।

तु० केदार

30, New Rajamandi
Agra
17-1-62

प्रिय केदार,

सबेरे के साढे तीन बजे है। यानी अभी रात खूब है। बाहर खूब कोहरा पड रहा है। सर्दी काफी है। कही जोरो से बर्फ गिरी है। मै जल्दी सो गया था। उठकर तुम्हे पत्र लिख रहा हूँ।

निराला जी के जितने पत्र थे, तुम्हारे, अमृत नागर तथा थोडे-बहुत अन्य मित्रो के जो पत्र थे, सब को एक सिरे से पढ गया हूँ। बडा विचित्र अनुभव होता है। दोस्तो के साथ अपने को भी देखता हूँ मानो वर्षा के [की] पर्ते उघडने [उघडती] जाते [जाती] ह [है] और मै अपने से, तुम से, निराला जी से फिर मिलता हूँ। मन पर उदासी नही छाती, न तो यह भाव जागता है कि फिर नौ जवान हो जायँ (जवान तो अब भी है) और न यह भाव पैदा होता है कि हाय वे दिन बीत गये, फिर कभी न लौटे गे।

इसके विपरीत पुराने सघर्षो की झलक देख कर सतोष होता है कि वृथा नही जिये, भरसक भाषा और साहित्य के लिए काम किया। खास कर तुमने और नागर ने बडी विषम परिस्थितियो मे काम किया है। नागर की मा का दिमाग सही नही है। और भी पारिवारिक झझट रहे है। किसी साहित्यिक को ऐसी पत्नी मिले जो उनके धन न कमाने पर न खीझे तो यह उसके जीवन का सबसे बडा पुण्य समझो। समझ गये न ? मुझे इस बात पर बडी प्रसन्नता है कि साहित्यिक जीवन के आरभ से ही तुमसे और अमृत नागर से मेरी दोस्ती बराबर बनी हुई है और सदेह, कटुता या ईर्ष्या-द्वेष की हल्की छाया भी इस मैत्री पर इस लबी अवधि मे एक

बार भी नहीं पड़ी ।

मेरा विचार बहुत जल्दी संस्मरण लिखने का है जिनमें तुम्हारी और अमृत नागर की स्वभावत विस्तृत चर्चा रहे गी । ज़रा निराला जी की जीवनी समाप्त कर लू । अभी लिखना शुरू नही किया किंतु सामग्री काफी बटोर ली है ।

तुमसे दो काम है ।

एक तो यह बताओ कि रामलाल गर्ग कर्वी मे है या नही, उन्हे तुम जानते हो या नही, उनके परिवार के कोई अन्य लोग है या नही, इत्यादि। यदि रामलाल जी हो तो मै उनसे मिलने आना चाहूँ गा । उनसे निराला जी के बारे मे बहुत सी बाते मालूम हो गी और शायद उनके पास निराला जी के पत्र भी हो।

दूसरी बात यह कि तुम मेरे, नागार्जुन के पत्रो को —यदि सुरक्षित हो, तो— टटोलो, उनमे जहा निराला जी की चर्चा हो—काव्य चर्चा नही वरन् उनके रहन-सहन की कोई झलक मालूम हो —उन्हे मेरे पास भेज दो । यह कार्य कष्ट-साध्य है। इसलिये तुम उन सब पत्रो की रजिस्ट्री करके मुझे भेज सकते हो या फिर मै ही बादा आ सकता हूँ, उन्हे और तुम्हे देखने के लिये ।

गर्मियो मे मै बिहार जाऊँ गा—जानकीबल्लभ और शिवपूजन सहाय जी का खजाना टटोलने के लिये । उसके पहले अब तक प्राप्त सामग्री का उपयोग करके पुस्तक की मोटी रूपरेखा तैयार कर लेना चाहता हूँ।

तुम अभी विस्तर मे हो गे। राम करे जब उठो तब चमकते सूर्य का मुह देखो और मुवक्किल तुम्हारे उपर नोटो की वर्षा करें।

तुम्हारा—रामविलास

३०, नयी राजामडी,
आगरा
२२-२-६२

प्रिय केदार,

क्या बात है ? एकदम चुप ! खत का जवाब न दो, खत तो लिखो। सब लोग कुशल मे तो है न ? .

निराला जी का राष्ट्रपति भवन मे सम्मान हो रहा है ! कैसा लगता है ? 'निराला' पत्रिका मे राष्ट्रपति और Ex मुख्यमत्री के चित्र कितने भव्य है । यहां का समाचार ठीक है । तुरत पत्र देना । अमृत नागर निराला जी के गाव गढाकोला गये थे। दिनकर की उर्वशी देखी ? मैने उस पर हि० टाइम्स[1] को लेख भेजा है ।

तुम्हारा— रामविलास शर्मा

1. हिन्दी टाइम्स । [प्र० ति०]

बांदा (उ० प्र०)
२३-२-६२

प्रिय डाक्टर,

मै जानबूझ कर चुप था। लम्बा पत्र लिखना चाहता था। तब तक कलम न चला सका कि आज शाम को जनाब आ धमके। अब लिखता हूं कि देरी हुई, कान पकड़ता हूं।

'निराला' पत्रिका आयी। देखी अन्तिम कविता भी पढी। निराला की यह कविता मुझे वैसी ही प्रिय लगी जैसी 'जावक जय चरणो पर छाई' 'हाथ वीणा समासीना' इत्यादि इत्यादि लगी थी। शायद यह रचना भी तुम्हे नही भाई। भाषा बोलती है। बल बोलता है। जीवन बोलता है। समस्त इतिहास बोलता है।

पत्रिका का कवर चित्र निराला को नही, साधू वेश को अधिक व्यक्त करता है। गालो की यह लाली उस साधू के मुखड़े की लाली है जिसने न सिद्धि पायी है न समाधि पायी है। केवल मालपुए उड़ाये है। दूसरा चित्र देखा हुआ है। आखो मे म[illegible]नी शक्ति मिलती है। ओठो म स्मिति के साथ-साथ आत्मविश्वास की शाति मिलती है। नाक भी दृष्ट और शब्दो के बीच की दूरी को उसी चाव मे पा गयी है जिस चाव मे आख और अधर एक दूसरे के स्वभाव को व्यक्त करते है।

यह व्यग [व्यग्य] है कि मरने के बाद राष्ट्रपति के यहा समारोह हुआ और तभी डा० सम्पूर्णानन्द ने अपना नाम निराला के साथ नत्थी किया।

पहला नामधारी पदत्याग के तट पर है। दूसरा राजनीति का निष्काषित अपदस्थ बनारसी है। साहित्य को इनकी छाया का प्रशमन मिला तो हमारा विलयन नमन मे हो जायेगा। निराला का स्वभाव इन जैसा न था। फिर भी यह लोग जीते-जी उस पर सवारी न कर सके। अब मरे पर उसे श्मशान मे जिला रहे है। भूत जगाना होता है न। तात्रिक लाश पर चढ़ कर सिद्धि पाते है। क्या यही हो रहा है? खैर छोड़ो। यह तो समय के साथ होता ही रहेगा।

डा० बच्चन का एक लेख निराला पर निकला है। तीन किश्तो मे। हिन्दुस्तान साप्ताहिक मे। मैने पढा है। उन्होने स्नेह से नही, दिल मे दाग रख कर लिखा है। पत उन्हे प्रिय है। शायद उनके लिखने में पंत-प्रियता का प्रभाव है। निराला की कला को उन्होने ठुकरा दिया है। जीवन को लेकर निराला की कविता को कसने का उनका यह प्रयास सधि का नही विग्रह का द्योतक है। निराला ने कला जगायी है। जीवन जिया है। जीने और जमाने में अटूट अविच्छिन्न संबंध है। वाणी समतल भूमि से उठ कर बलाका की तरह ऊपर उडी और अंधेरे को चीरती हुई देवदार के वन को बेध गयी है –पखो के झपाटे मे। निराली मे जीवन बोला है मगर रहीम की तरह नही, न कबीर की तरह। वह शब्द और अर्थ की

गरिमा लेकर बोला है। बच्चन 'समतल' काव्य को ही जीवन का काव्य कहते हैं। समतल से ऊपर वही उठता है जो काव्य में सीझा है, जो शब्दों की पकड़ जानता है, और जो अर्थ के इंगित पर जीवन निसार करने पर तुला बैठा है। मैं यह नहीं कहता कि निराला की सब कविताएं श्रेष्ठ हैं। असंभव है। पर मुख्य स्वर सफल है। मुक्तछंद पर भी चोट की है बच्चन ने। मैंने उन्हें एक पत्र आज ही लिखा है। अपने विचार व्यक्त किये हैं। उनका आप्रेशन ५ मार्च को होगा दिल्ली में। हरनिया हो गयी है। तुमने भी तो पढ़ा होगा उनका लेख। कैसा लगा? इतना मौन धारण किये हो कि कुछ कहते नही बनता। क्या पुस्तक में पिल पड़े हो। 'निराला' पत्रिका में ही कुछ दो। ज़रूर। वहिष्कार से परिष्कार न होगा। निराला को उन पर्तों में जाने से बचाना होगा जिनमें लोग ले जाना चाहेंगे। कहीं लोग-बाग उन्हें संत बना कर स्वाहा न कर दें। पंत को संत बना कर डाक्टर बच्चन ने कोई बड़ा काम नही किया।

चुनाव चल रहा है। शोर जोर पर है। आसमान गूंज रहा होगा। अच्छा तो सलाम।

सस्नेह तु० केदार

पुनश्च:—

आज डा० बाबूराम सक्सेना की भाषा की पुस्तक देख रहा था। पढ़ने मे सिर चकरा गया। वह सत्य का स्वर, वह तर्क, वह चिंतन—वह स्पष्टता नही मिली। बड़ी उलझनें हैं।

केदार

३० नयी राजामंडी
आगरा
२६-२-६२

प्रिय केदार,

अभी शाम को कालेज मे लौटने पर तुम्हारा पत्र मिला और मैं तुम्हें तुरंत ही उत्तर लिखने बैठ गया।

मैंने तुम्हें अपने पहले पत्र में लिखा —जिसका जवाब लिखने में तुम्हें विलंब हो रहा था—कि मै निराला जी की जीवनी लिखने की तैयारी कर रहा हूं। तुम यह देख कर लिखना कि मेरे पत्र तुम्हारे पास सुरक्षित हैं या नही। हों गे तो उनमें

संभव है मैंने निराला जी से मिलने के बाद तुम्हें उनकी स्थिति लिखी हो। यदि तुम्हें फुरसत हो तो ऐसे पत्र छाँट कर मुझे भेज दो या मैं उन्हें छांटने आ जाऊँ। इस बात का उत्तर देना न भूलना।

तुम्हारे पत्र तो मेरे पास हैं ही। मैं उन्हें पढ़ गया हूँ। आजकल कालेज के काम के अलावा महाकवि के ध्यान में ही रहता हूँ। चाहता हूँ पुस्तक का पहला मसौदा जल्दी तैयार हो जाय, काट-छाँट बाद में करता रहूँगा। पहले दोस्तो को सुना कर पास करा लूंगा, फिर छापने को दूंगा।

निराला जी पर जम कर केवल New Age के लिये लिखा था। शेष चार-पाँच लेख छोटे और जल्दी में लिखे है। पूरी बात लेख में कह नही सकता। विशेषांक इतने निकल रहे है किस-किस को लेख भेजूं ?

गर्मियों में लखनऊ-प्रयाग-काशी-पटना घूमने का विचार है—इसी पुस्तक के सिलसिले में।

तुमने निराला जी के बारे में जो कुछ लिखा है, सब ठीक है। उनकी मृत्यु हिन्दी में नये संघर्ष का सूत्रपात है। इस संघर्ष मे हम लोगो को केवल प्रत्यालोचना से संतोष नहीं करना है। निराला की काव्य-परंपरा पर आगे बढ़ना है। बच्चन ने जो कुछ लिखा है उसका उत्तर केदार की नयी कविताएँ हों —पहले से भी जोरदार, सधी हुई, बच्चन-कृतियो मे इतनी ऊची कि लोग एक साथ कहें, हाँ, ऊँची है। तभी निराला का शिष्यत्व और सामीप्य सार्थक है। मैं अपनी और निराला जी की जीवनी इस संघर्ष के निपटारे के लिये प्रस्तुत करूँगा। आशा है उससे उनके अपने जीवन-संघर्ष का सही चित्र लोगों के सामने आयेगा।

जो कुछ जिस ढंग से हो रहा है उससे घोर घृणा होती है। किंतु निराला जी की पंक्ति याद आती है—

लाञ्छना इन्धन हृदयतल जले अनल। इस अग्नि से नयी कविता का सुवर्ण निकालो प्यारे कवि केदार।

तुम्हारे यहाँ त्रिलोचन आए थे। तुमने पत्रो में इसका उल्लेख भी नही किया, क्या बात है ?

सकुशल —तुम्हारा—
रामविलास

चिट्ठी डाक में डाल रहे हैं आज एक हफ्ते बाद ३-३-६२ को।

कल हंस में तुम्हारे कैमासिन [कमासिन] गांव वाली कविता का सानन्द स्वाध्याय किया —रा० वि०

बांदा
१६-३-६२
प्रिय डाक्टर,

अफसोस है कि उत्तर मे विलंब हुआ। कारण थे। मेरे पिताजी के गाव के घर मे डाका पड गया है। परेशान हूं। वह न थे। नौकर तथा घर मालकिन मारे गए है। चोटें है पर जान नही जाने पायी। विशेष समाचार की प्रतीक्षा है। पिता जी वहा गये है। हम लोग शादी मे इलाहाबाद गये हुए थे।

निराला जी के ३/४ पत्र है। छाट चुका हूं। तुम्हारे पत्र भी छटे रखे है। चाहो तो आ कर देख लो, चाहो तो भेज दू। मुझे इंकार कभी नही है। विशेष सामग्री नही है।

हा त्रिलोचन आए थे। शायद तुम्हें सूचना देना भूल गया होऊंगा। दो दिन ठीक से गुजरे थे।

जी मिलने को ललक रहा है। उर्वशी पर जनाब का लेख देखा —दोनों किश्तो मे। हम ऐसे लेखो से कुछ भी प्रभावित नही हुए। पुस्तक खरीद ली है। बडे प्रश्न उठते है। कला के नाम पर मैथिलीशरण शैली का निर्वाह है। टकसाली माल न है। न हो सकता है। इस पर लम्बा पत्र लिखूगा। तुमने तो रस्म अदायगी की है। कुछ भी नहीं लिखा।

सस्नेह तु०
केदार

अरे लाला,

कहां मैथलीशरण और कहां दिनकर! तुमने तो सारे बाजार डाड़ी मार दी! टकसाली माल नही है? पल्लव, कामायनी और राम की शक्तिपूजा के बाद किसने टकसाली माल दिया है? चारो तरफ नई कविता के झाड-झखाड देखो, फिर उर्वशी के कवि की पीठ ठोको। कम से कम उसकी मेहनत तो सराहो। तुम्हारे लबे पत्र का इतजार है। तुमने जो चिट्ठियाँ छांटी है, रजिस्ट्री करके भेज दो। मै आऊ गा —पर तब तक सब्र नही है। फुर्सत होने पर पता लगा कर लिखना कि कर्वी मे श्री रामलाल गर्ग है या नही। मिलना है। डाके की बात से अफसोस हुआ। कुछ पता चला कौन थे?

तु० रामविलास
आगरा, २४-३-६२

केदार नाथ अग्रवाल
एडवोकेट, दिनाक २६-३-६२
बादा (उ० प्र०) रात १० बजे

श्रीपत्री जोग लिखी बादा से लाला केदारनाथ की जै गोपाल पहलवान श्री रामविलास आगरा वाले को पहुचे। चिट्ठी आपकी आई। समाचार जाना। आपका पोस्टकार्ड नारद महाराज की तरह आ धमका। हम ठहरे लाला। सो हमने उसका हृदय से स्वागत किया। डर गए कही दिनकर का हिमायती पहलवान न इसके अन्दर से पेट फाड कर निकल आये। यही हमारी कमजोरी थी। वरना हम तो ऐसे-वैसे को गिनते कब है। हमारे बटखरे छोटे हो तो भी बडा काम करते है। बडे-बडे पहलवानो के राशन को कम तौलते है। हम उर्वशी पढ चुके। पर पहलवान जी आपकी तरह नही। आपने तो वैसे ही इसे पढा है जैसे हमारे डी० जी० सी० (सरकारी वकील) जल्दी-जल्दी मे हनुमान चालीसा पढते है। आप नयी कविता की झाड-झखाड से ऊबे थे। तभी तो आपको उर्वशी मे मजा आ गया। किताब नशीली है। जमीन से आसमान की ओर ले जाती है। शून्य मे सपने दिखाती है। ऐसे-ऐसे प्रश्न और उत्तर सुनती-सुनाती है जैसे न कोई आदमी करता है न कोई स्त्री करती है। न कोई अप्सरा करती है। आप कहते है कि तृतीय अक शिखर अक है। जरूर है। कारण भी बहुत साफ है। पहला तो यही है कि न पुरुरवा न कोई कसर उठा रक्खी है, न उर्वशी ने। मेरा मतलब बोर करने मे। दोनो एक-दूसरे मे लम्बी बात करने मे एक-दूसरे के कान काटते है। अजीब है दोनो कि सतुलन जानते ही नही। जीभ है कि कैची। खचाखच चली तो चलती ही गयी। रुकती ही नही। यानि कि दोनो एक दूसरे को खूब फौक्स बनाते है। भाई, प्रेमी और प्रेमिका भी तो है कि एक दूसरे को चाव से सुनते भी रहते है। हम हो तो घाडी की लगाम खीच दे। ऐसा लगता है कि दो दार्शनिक -दो वकील—दो बोझक—दो बकवासी—दो मत्री—एक-दूसरे से बाजी मार ले जाना चाहते है। तर्क भी तत्र-मत्र की तरह कही-कही तान तुक पर चलते है। ज्यादातर तो वही पुराना 'धोबियापछार' किया गया है। यह सब रूप और प्रेम के नाम पर सदा से होता आया है और जनाब बडे अदीब साहब दिनकर ने भी यही किया है। हम दाद देते है कि उन्होने आपको मौका दिया कि आपने उर्वशी को भुजाओ मे भर लिया। मालूम होता है कि दिनकर की [के] ८ वर्ष की [के] परिश्रम से जो उर्वशी जन्मी वह जनाब की प्रेयसी हो गयी। पल्लव तो पल्लव ही था। झर गया। कामायिनी कोर्स मे लग गयी है मानो सारा भारत उसे पढ चुका। राम की शक्तिपूजा अकेली है। वही जनता के साथ जीवन मे जीती है। हम उसका लोहा मानते है। उसके साथ कहा उर्वशी ठहरेगी। वह तो ख्याल की रगीनिया की छलना है जो स्वस्थ सौंदर्य के साथ घर-बाहर हाट-बाट मे ठहर ही नही सकती।

मालुम होता है, जी जनाब पहलवान साहब, कि उर्वशी नही कोई उरवशा बोल रहा है। पुरुरवा नही, टहलुवा बोल रहा है। हमने भी इस काव्य का रस लिया है। दाम १२) खर्च किये हैं। उसका आनंद तो ले ही लेंगे। मालूम है कि न कि १२) में इससे भी अच्छी-अच्छी चीजें मिलतीं है। मगर रस लेना और बात है और अक्ल से बात समझना और बात। आपने रस तो लिया। मगर अक्ल से काम नहीं लिया। भला यह तो बताइए कि यह काव्य हमारे देश के किस आदमी के जीवन में पैठेगा। यह तो कहीं भी नहीं खप सकता। केवल प्रोफेसरान ज़रूर खपा सकेंगे। घंटों भाषण दे सकेंगे। लड़कों पर रोब भी पड़ेगा।

हम तो जब पढ़ने लगे तो पहले ही 'नीचे' धरती 'ऊपर' आसमान पढ़ कर कवि के उपर दया आयी। उसकी कलम और कला पर क्षोभ हुआ। जब 'धरती' वहां है और 'आसमान' वहां है तब नीचे-ऊपर कैसा ? सूत्रधार भी तो धरती पर है। 'फोड़' का प्रयोग प्रारंभ से अन्त तक है। दोनों अंक (पहले दो) उसी मैथिली-शरनिया भाषा में हैं। बड़े फीके। बड़े भौंड़े। न कलात्मक है। न बुद्धिमत्ता के प्रतीक। फिर से पढ़ा। चौकड़ी न भरो। औशीनरी का जो परिचय मिलता है वह बड़ी [बड़ा] ही निम्न कोटि का है। दुर्बल नारी पिनपिनाती रहती है। निपुणिका और मदनिका उसे सहानुभूति और साहस देती है। सहजन्या और रम्भा की बातें सुन कर तो ऐसा लगा कि जीवन में बस यही यही है। सब को वही एक बात सूझती रहती है। कहीं तो ऐसा भी प्रयोग है कि तंद्रा 'फट' गयी। जल 'फोड़' कर द्वीप निकल आये। खूब फोडा जल आपके दूसरे पहलवान जी ने। और आगे सुनिये।

निर्भेद्य गगन मे चन्द्रमा मंद मंद चलता है। बताइये आप ही यह कैसा अनूठा चित्रण है। जब बादल होता है तभी वह चलता है और तभी चन्द्रमा चलता प्रतीत होता है। अन्यथा नही। यह अकल का दोष है। जरा और देखिए। चित्र कितना वीभत्स है। सूत्रधार कहता है पहले ही पृष्ठ में गगन खोल कर बाह विसुध वसुधा पर झुका हुआ है। अब आप लेटी हुई पृथ्वी पर वैसे ही झुकिये जैसे गगन झुका था। क्या रूप बनेगा इस चित्र का। आप को गाली देने का मन करेगा। क्या यही है कला ? छठें पृष्ठ पर नटी का बयान पढ़िये। कनक प्रतिमाएं--कुसुम वल्लियां--वीणा की रागिनियां --कविता की नूतन पंक्तियां--समाधि पर रोते दिये की मूरतें--? यह क्या बिम्ब-बोध देते हैं ? कुछ भी नही। सपनों की तसवीरें। यह क्या रूप वर्णना है ? ३१ पृष्ठ पर फिर 'फोड़ा' आया है। हृदय के साथ-साथ। ३०वे पृष्ठ पर निपुनिका ने अनिपुण ढंग मे कहा है---'अभी-अभी जल से निकला उत्फुल्ल कमल था'। खूब निकला साहब। जी पहलवान जी, पानी के भीतर से ही वह फूल कर खिला हुआ निकला। देखा तुमने यह अजूबा सौन्दर्य-बोध। शक्ति के साथ 'हांक' का प्रयोग भी ३०वें पृष्ठ पर नीचे से दो पंक्तियों बाद है। वह भी श्रेष्ठ कला की निशानी है। ३१वें पृष्ठ पर है गोदी में उठा कर उसे बाहों मे भर लिया।

सो यह कैसे ? गोदी मे उठाया तो बाहो मे भरना कैसा ? हम नही समझे। आप खूब समझे । ३३वे पृष्ठ पर एक प्रयोग है 'भ्रमा' का। यह भी खूब जमा। है न मैथिलियाशरणी प्रयोग । ३८वे पृष्ठ की पहली ही पंक्ति देखिए । पुरुष के विषय में अर्द्धसत्य घोषणा मिलेगी। ऐसी ही न जाने कितनी बाते है जो इस पुस्तक मे भरी पडी है। लिखना दुश्वार है। अभी तो हमने इस काव्य के विचारो के संबंध मे कुछ कहा ही नही। उसे ले कर तो बडा बवडर होगा । हमे तो लगता है कि हमारे एम० पी० महोदय ने इसकी पाडुलिपि किसी पान वाले को भी नही दिखाई वरना वह भी बता देता कि जरा कत्था चूना के मेल-मिलाप की सही मात्रा तो सीख लीजिए और तब दुकान खोल कर बीडा बेचिये। नही सीख सकने वाला व्यक्ति यदि पान लगायेगा तो खाने वाले का मुह फटेगा ही। वही हुआ।

हमने तो पहले लिखा था कि इस पुस्तक की शुरुआत ही ऐसे ढग से की गयी है —ऐसी भाषा अपनायी गयी है कि हम बिचक गये। वैसे ही जैसे ख्रुश्चेव आइसनहावर के सामने। उर्वशी ने जो अपनी तारीफ की है वह अपने मुह मिया मिट्ठू बनने की साध पूरी जरूर करती है। यह है भारतीय काव्य की श्रेष्ठ परपरा मे लिखा गया कला सकीय काव्य। स्वाभाविक भी है। औरते अपनी तारीफ करती भी है। जमाना बदल गया है। प्रेमी के सामने लाज मे नजर नीची नही करती वरन सिर उठा कर खूब ठाठ से अपना बखान करती है। शायद यह नयी कविता का आदर्श है।

'निष्काम काम-सुख' का सिद्धात 'निष्काम कर्म' के भारतीय तराजू पर बडा सटीक बैठता है। यह भी सिद्धात सही है न कि 'प्रकृति नित्य आनदमयी है।' हम क्या कहे इस वाक्-स्फुरण को ?

पृष्ठ ८६ पर देखिए। यहा टहनी चीर दी गयी है। आपने टागे चीरना — लट्ठा चीरना सुना होगा। यह नया प्रयोग है। खास दिल्ली का। यदि वहा का न होगा तो बिहार का होगा। यदि वहा का न होगा तो अपर लोक का होगा। आप जाने—वह जाने।

आपने अपने लेख मे अंधेरे पक्ष को लिया मगर बस सपाट दौड गये। हम आशा करते थे कि आप दोषो का विवेचन इसलिए और करेगे कि यह काव्य एक वयस कवि का है। उससे ऐसी भूलो की आशा नही की जा सकती थी। वह महज इसलिए सराहे जाने का पात्र नही है कि उसने कुछ ऐसी मनबहलाव की बाते की है जो थोडी देर तक नशे का सुरूर देती है।

उर्वशी और पुरुरवा की कथा इस युग मे किन्ही दूसरे स्तरो पर खुलनी चाहिए थी। इस कथा मे बड़े प्रौढ तत्व है। उन्हे ग्रहण करना चाहिए था। दिनकर साहब ने बहुत साधारण समस्या को उठाया है। भरत का श्राप [शाप] सफल होता है। उर्वशी पति-पुत्र दोनो को छोड़ कर चली जाती है। हा एक बात बड़ी

मजे की यह है कि हमारी हिन्दी जो राष्ट्र के कोने में अभी तक राष्ट्र-भाषा न बन सकी वह इस काव्य में अप्सराओं की बड़ी प्रौढ़ भाषा बन सकी। बधाई है कवि को। अब फिर !

श्री रामलाल जी का स्वर्गवास हो चुका है। मैं पहले भी लिख चुका हूं। मुझे मालुम है।

पत्र भेज दूंगा कुछ समय के भीतर। रजिस्ट्री द्वारा। आशा है कि सब ठीक होगा।

डाके के अपराधी पकड़े गये है। वह सब काम चल ही रहा है। मै उसमें दखल नही दे रहा। वे पास के गांव के बदमाश लोग थे। डकैत है। सब पूर्ववत हो जायेगा। चिन्ता न करना।

प्रिय सेवा का क्या हाल है ? और सब बच्चे अच्छी तरह तो हैं ? इंजीनियर साहब कहां हैं ? पढ़ तो चुके या पढ़ ही रहे है ?

सस्नेह पहलवान जी की नाक का बाल,
केदार

पुनश्च:—लम्बा पत्र तो पढ़ चुके। अब अविलम्ब हमें भी लम्बे पत्र से कृतज्ञ करोगे या नहीं ?

Dr. Ram Bilas Sharma
M. A., Ph. D. (Luck)

3० New Raja Mandi
AGRA १४-४-196२

भाई केदार,

ढेर की ढेर कापियाँ अल्मारी में बंद है। जँचने की राह देख रही है। मैंने भी कहा, आज चिट्ठियाँ लिख ही डालूँ गा। इधर मेरठ गया। बागपत तहसील के लोकगीत सुने। बड़े ही सरस। खड़ी बोली का भदेस लोच उन्ही में देखने को मिलता है। दिल्ली में मुंशी के कान मले। जयपुर में कुछ डाक्टरों से Abnormal Psychology से संबंधित शास्त्र चर्चा की। भरतपुर में पुराने दोस्तों के बीच गप्पें मारीं। वहां प्रभा के पुराने अक है जिनमें निराला जी की प्रथम कविता छपी है। अभी दर्शन नहीं हुए— ढूँढने का काम सौंप आया हूँ। श्रीमती जी दिल्ली में सत्कार लाभ कर रहीं हैं। एक हफ्ता हो गया --हम समझते थे, हमारे बिना उनका दो दिन जी न लगे गा --सो न पत्री भेजी न बहुरने का नाम लिया। खैर, हम भी उनके गम में हलवा खा रहे हैं। शोभा बनाने जा रही है और यह पत्र समाप्त करने तक तैयार हो जाये गा। दो कौर तुम्हारे नाम के सबसे पहले खाऊँ गा।

तन से मुझको कसे हुए अपने दृढ़ आलिंगन में,
मन से, किंतु, विषण्ण दूर तुम कहाँ चले जाते हो ?

मोपासाँ ने एक उपन्यास लिखा है। कलाप्रेमी विधवा, चारो ओर मँडलाने वाले कलाकार, वह सब से खेलती है, अत मे मिलता है एक पुरुष जो कलाकार नही है। बडी साधना के बाद बेचारा उसे प्राप्त करता है लेकिन प्राप्ति के बाद उसे, घोर निराशा होती है क्यो कि रमणी तन से बँध कर भी मन से दूर रहती है। तुमने इस भाव को प्रकट करने वाली जो कविता पढी हो, उसका नाम लिखना।

और सुनो। ज्ञान भौतिकता मे है या उससे परे ? Sp.rit और matter को Primary और Secondary कहने मे उनका भेद मिट जाता है या बना रहता है। समस्या को पेश करना भी एक सफलता है

रक्त की उत्तप्त लहरो की परिधि के पार
कोई सत्य हो तो,
चाहता हूँ, भेद उसका जान लूं।
पथ हो सौन्दर्य की आराधना या व्योम मे यदि
शून्य की उस रेख को पहचान लू।

भगवान कसम, तुम ये पंक्तियाँ लिखते तो तुम्हारे मुखचुंबन के लिये हलवा छोड कर तुरत बाँदा चल पडता। खैर, उस वक्त हलवे मे ही तुम्हारे और श्रीमती जी के अभाव का गम गलत करता हूँ।

बाकी फिर।

तुम्हरा
रामविलास

बादा,
१६-८-६२
प्रिय भाई,

लिफाफा मिला। पढ गया। कई दिन तक सोचता रहा था कि आखिर मौन क्यो हो। मालूम हुआ कि आगरे से बाहर विचरण पर गये हुए थे। यात्रा सदैव ही सुखकर नही होती परन्तु तुम अच्छी तरह कर आये, यह अच्छाई है। कुछ उमग-उत्साह ले कर आये होगे। तभी पत्र मे कुछ ताजगी है।

पुरूरवा [पुरुरुवा] से उर्वशी का कथन जिसे तुमने उद्धृत किया हे, वह उस नारी के हृदय की बात हे जो आजकल इस सडे गले समाज मे हर जगह -हर घर मे पायी जाती है। यहा भी तो प्रेम नही होना। केवल शारीरिक भोग-विलास होता है। दो हृदय उसी से कुछ दिनो बाद ऐसी अनुभूति के शिकार हो जाते है। जो व्यक्ति प्रेम करता है, एक उद्देश्य और कर्म के आदर्श को हृदय मे ले कर वह व्यक्ति अपनी प्रेमिका को इस तरह आलिगन आबद्ध नही करता और न उसकी

प्रेमिका इस तरह अपने प्रेमी से कहने के लिए प्रेरित होती है। दोनो का प्रेम लोक-कल्याण मे फलता-फूलता है और एक का स्पर्श दूसरे के स्पर्श से द्विगुणित हो जाता है। उर्वशी आकाश की है। पुररवा [पुरुरवा] पृथ्वी का है। वही अनमेल परिस्थितिया है। दोनो उन्ही तौर-तरीको के शिकार है जिनके शिकार आज अधिकाश प्रेमी-प्रेमिका है। फिर दिनकर ने[,] ऐसी अनुभूति के पीछे जो विवशता है[,]उसका उद्घाटन नही किया। मुझे इसी से ऐसी अनुभूति से रस-ग्रहण करने मे दिक्कत होती है।

इसी प्रकार पुररवा [पुरुरवा] की वाणी भी है। उसे भी अपने प्रश्न का उत्तर नही मिलता। वह आकाश मे उडता है। यही तो गलती कि दिनकर ने कि वह घर के पास ससार मे नही विचरे बल्कि कुछ ऊची चीज की पकड मे कुछ भी न पकड पाए। ऐसी अभिव्यक्ति तो उन्ही लोगो की जबान से निकलती है जो नारी को सहधर्मिणी नही मानते। वास्तव मे कुछ तो दिनकर के अस्पष्ट चितन का फल हे और कुछ उर्वशी और पुररवा [पुरुरवा] की काया [कथा] [?] का फल है कि जो प्रश्न इन दोनो के सबध को ले कर उठे है वह प्रश्न कर्मठ व्यक्तियो के दिलो मे नही उठते। यह तो स्पष्ट ही मनोविनोद एव वाक्-विलास के अतिरिक्त कुछ भी नही हे। मोपासा की कला प्रेमी विधवा का केस ठोस धरातल पर है। उसकी अनुभूति सत्य से और यथार्थ मे उद्भूत हे। वहा वह अपनी जगह ठीक ही है। समस्या का पेश करना कला और कविता नही है जनाब। आदमी को सही दिशा मे ले जाना भी कला और कविता का धर्म है।

मुझे तो मालूम होता है कि यह काव्य केवल बकवास है। शुरू मे आखिर तक। अच्छी दिलचस्प गुफ्तगू हे। दोनो एक-दूसरे को जानना चाहते है और अपने को जानना चाहते है। पर न जानने मे ही मजा लेते रहते हे। ऐसी बाते कामकाजी आदमी को शोभा नही देती। मजा जब आता कि प्रेमिका प्रेमी के साथ कुछ श्रम करती और फिर दोनो एक-दूसरे मे लिपट कर एक दूसरे पर न्योछावर हो जाते, उस काम की कृतज्ञता मे। तब जब प्रेमी प्रेमिका की आखो मे आखे डालता वह एक नया स्वर्ग देखता, एक नया आकाश देखता, एक नयी सृष्टि देखता। उर्वशी और पुररवा [पुरुरवा] तो रटे-रटाये सूत्रो मे बात करते हे। मैने ऐसी बहुत बाते पढी है। उनका विस्तार इस काव्य मे हे। मै तो ऐसी बाते लिख ही नही पाता। मेरा 'प्रेम तीरथ' मेरे हृदय का चित्रण कर ही चुका है। अब तो हमारा प्रेम बोझ ढो रहा है। फिर भी आस्था के साथ जी रहा है। कम नही हुआ – न होगा। प्रेम Spirit है। मैटर नही। वह मैटर को छू कर—उसमे जान फूकता है।

मेरी राय है कि तुम मुझे विस्तार से लिख कर समझाओ वरना बात का भ्रम मुझे मथे रहेगा। मै साफ-सही निष्कर्ष चाहता हू। तुम पूर्ण रूप से मेरे विचारों

का विवेचन करो और लिखो ताकि मनोष हो। कहा गलती है। पत्र की प्रतीक्षा मे।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

३०, नयी राजामडी,
आगरा,
१०-५-६२

प्रिय केदार,

तुम लखनऊ के रामप्रसाद उर्फ लल्लू को तो जानते हो गे। इस महीने वह ससार से विदा हुए। वह लखनऊ के मेरे पहले और सबमे गहरे दोस्त थे। निराला जी कुछ दिन उसी ११२ मकबूलगज मे रहे थे जिसमे मै रहा था। वह उग्र-निराला के सत्सगी और भक्त थे। बडे भैया का पत्र आया कि Brain Paralysis जैसी कोई चीज लल्लू को हुई है। फिर दो दिन बाद ममाचार मिला, अब नही है।

अनुकूल परिस्थितियो मे लल्लू बहुत अच्छे लेखक होते। साहित्य और कला की समझ अच्छी थी। दो-एक कहानिया लिखी थी। लल्लू के न रहने से लखनऊ से एक पुराना नाता-सा टूट गया।

रागेय राघव का समाचार सुना है? केन्सर हो गया है। खून मे जो Red [Blood] Corpsuls होते है वे बदल कर श्वेत हो जाते है। रोग घातक है। उन्हे विदेश भेजने का प्रबध हो रहा है। राहुल जी दार्जिलिग मे दिन गिन रहे है। यशपाल की आखे खराब है। घनश्याम अस्थाना —कवि, आगरे के, जानते हो न?—इधर काफी अस्वस्थ हो गये। पारसाल शादी, इस साल सब करम हो गये। जिगर खराब, मेदा खराब, दिल की धडकन, पैदल चलने की मनाही, चेहरा निर्बल, निस्तेज।

उर्वशी के बारे मे तुम से आकर ही बाते करूँगा। लिखना, तुम्हारी कचहरी कभी बद होती है या नही। सुमन से भी मिलने जाना चाहता हूँ। उसे भी चिट्ठियो के लिए लिखा था, सो उसने भेजी नही। शिवपूजन जी ने निराला जी की आठ चिट्ठियाँ भेजी है जिनकी नकल करके वापस भेजूँगा। चाहता हूँ कि बाँदा, इदौर काशी, प्रयाग की यात्रा एक ही साथ कर डालूँ।

आशा है, तुम प्रसन्न हो।

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

बांदा
१९-५-६२
प्रिय भाई,

पत्र सामने हैं। उत्तर देने में विलम्ब हुआ। कोर्ट के काम [मे] व्यस्त था। शनीचर है। अब उत्तर दे रहा हूं। अदालत से १ बजे धूप मे लौटा हूं।

मैं लल्लू[1] को खूब जानता हूं। उनके देहावसान का समाचार सुन कर मुझे भी हार्दिक शोक हुआ है। खूब आदमी थे वह। श्री रागेय राघव को मैंने स्वय देखा नहीं है। परन्तु उन्हे उनकी कृतियों मे जानता हू। उनका मर्ज तो घातक है ही। उनके प्रति मेरी शुभकामनाएं है। वे शीघ्र ही अच्छे हो। राहुल जी के विषय में समाचार पत्रों में भी पढ़ चुका हूं। महादेव साहा दार्जिलिग है। 'स्वाधीनता' से उनके समाचार ज्ञात हुए है। वह भी चगे हो, यही कामना है। श्री यशपाल की आखे खराब है। यह भी दुखद समाचार है। श्री घनश्याम अस्थाना से तो तुमने परिचय कराया था। शायद उन्होने एक पुस्तक भी अपनी कविताओ की दी थी। उनकी हालत पढ़ कर मुझे अफसोस हुआ। वह कैसे बीमार पड़ गये ? क्या यह वर्ष लेखकों-कवियों के संकट का वर्ष है ?

कब आ रहे हो ? पहले से तारीख लिख देना। तभी उर्वशी' पर विचार जानूंगा।

बीबी [वीवी] प्रयाग है। आने वाली है। जब आ जायें। २२ से २८ तक महोबा रहना है। शाति कमेटी से मास्को जाने की बातहै। न जाऊगा। इनकारी लिख रहा हूं।

सस्नेह तु० केदार

30, New Rajamandi
Agra
24-5-62

प्रिय केदार,

आज कलकत्ते जा रहा हूँ। लौटते काशी—प्रयाग आऊं गा। समय मिला तो प्रयाग से बांदा आऊं गा—नहीं तो छुट्टियो बाद। जैसा हो गा लिखू गा।

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

1. लल्लू—मेरे छात्र जीवन के घनिष्ठ मित्र; 112 मकबूलगज, लखनऊ में निराला जी के और मेरे मकान मालिक।

कलकत्ते में 30 May तक c/o स्वाधीनता [33] Alimuddin street Cal. [Calcutta] और काशी में 10 जून तक
c/o C. B. Singh
47/1A Ramapura
Banaras.

बांदा
२६-६-६२
प्रिय भाई,

लम्बे दौरे के बाद अब आगरे पहुंच गये होगे। बनारस तक का समाचार पत्रों मे मालूम हुआ था। फिर बाद का हाल नही ज्ञात हुआ। कार्य सम्पन्न हुआ होगा और यात्रा सफल रही होगी। मैने कोई पत्र नही भेजे कि तुम्हे मेरी ओर ध्यान न बंटाना पड जाये और तुम्हारे काम मे बाधा पहुंचे।

तुम तो बादा न आये। मैं आगरे आ रहा हू। शायद १० या ११ जलाई को एक बारात मे आना है। बारात इलाहाबाद मे आ रही है। मिलूगा। पर फिर यह न करना कि तुम बादा आना स्थगित कर दो। इधर अकारण वार हो रहे है हिन्दी पर। वाह रे नेतागण। वाह रे हम लोग।

यहा गरमी पैतरे बदल-बदल कर जोम पर आती है और आज तो जलाये डाल रही है। नल में पानी नाम को आता है, हालाकि नदी से नल लग गया है। बड़ी परेशानी है सबको। कहार न होता तो मर गये होते।

आशा है कि तुम सब लोग आनंद से हो। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तु० केदार

३०, नयी राजामंडी,
आगरा,
८-७-६२

प्रिय केदार,

२६/६ का कार्ड मिला। मै ५/७ को लौटा। मनाता हूं कि बरात देर से चले और तुम्हे यह कार्ड पहले मिल जाय। हो सके तो मेरे पत्र लेते आना; मै यहाँ देख दाख कर तुम्हे वापस कर दूंगा। इससे बाँदा-[illegible] केसिल न हो गी। लखनऊ मे अमृत के यहा से कुछ पत्र लाया हू। कलकत्ता, पटना, बनारस, वगैरह स्थानो से मालामाल हो कर लौटा हूं। केवल दुलारेलाल के यहाँ सफलता न मिलने का सख्त सदमा है। बूदा बांदी हुई है। गर्मी कुछ थमी है। मेरा मकान राजामडी स्टेशन के पास पश्चिम की ओर है।

रामविलास

केदार नाथ अग्रवाल
एडवोकेट
बांदा (उ० प्र०) दिनांक १७-३-१९६३

प्रिय डाक्टर,

१६/३ के 'हिन्दी टाइम्स' में कल पढ़ कर मालुम हुआ कि दाहिना हाथ घायल[1] हो गया है और उसके बेकार होने की सम्भावना है। विनायक जी यदि यह ख़बर न छपाते तो हम तो यह हाल जान ही न पाते। अब कैसी हालत है? मैं आज ही भर फुरसत में हूं - कल से कई दिन तक कचहरी में व्यस्त हूं। इसलिए अभी न आ पाऊंगा। शायद हवाई जहाज होता तो जरूर उड़ कर देख आता। वह सुविधा लेखकों के भाग्य में कहां है? दिल कचोट कर रह गया है। ख़ैर। न पहुंचने पर भी मैं तुम्हारे पास हूं। तुम्हें देख रहा हूं। तुम्हारे साथ - सामने बैठा मौन ही बात कर रहा हूं। तुम रात को सो रहे हो, मैं आंखें खोल-खोल कर तुम्हारे हृदय की धड़कनें और उस घायल हृदय की दृढ़ता को देख-गुन रहा हूं। यह न समझो कि कान ही सुनते हैं। आंखें भी ऐसे क्षणों में सुनने लगती हैं। कान तो दिन-भर के कोलाहल से सुन्न पड़ जाते हैं। तुम हंस भी रहे हो। यही जानदार आदमी की सबसे बड़ी पहचान है, मेरी तरह रो नहीं देते···जरूर कहीं-न-कहीं मेरे दिल पर कुछ आक्रान्त होकर बैठ गया है और अपनी (दिल की) स्थिरता गंवा चुका है। सब घर के लोग परेशान होंगे। व्याकुल होंगे। वह बडा घर जैसे स्वयं भी पट्टी बांधे पड़ा होगा। चारों तरफ बाहर, दुनिया का चक्कर चलता होगा। मैं जैसे यहां मक्कर के फ़ेर में निष्फल हो रहा हूं। ऐसी भी विवशता क्या कि मेरे पैर यहां से आगरा की ओर नहीं जा पा सकते।

तुम ख़ातिर जमा रक्खो कि मैं समय पाते ही भाग आऊंगा। बैठ कर, बोल कर, कविता की पुस्तकें पढ़ कर, निराला पर बात कर, मैं तुम्हें तलवार की तरह चालू कर दूंगा। हाथ म्यान से बाहर निकल आयेगा जैसे तलवार। आज सबेरे ५ बजे निराला की वनबेला पढ़ रहा था। बड़ी मार्मिकता के साथ लिख सके हैं। आज के भारत का राजनीतिक नक्शा उभर आता है। मधुर शब्दों मे—फूलों की नोकों से—निराला ने दिल कुरेदा है--अपना-हमारा-नेताओं का [—] और हमारे देश की संध्या के बाद भी उषा ले आने में कमाल किया है। वह सुगंध का सिद्धि की तरह अन्तर में उठ कर छहरना मन मोह लेता है। इधर २ दिन हुए शायद··· शुक्र की रात को इलाहाबाद से १० बजे रात आकाशवाणी में निराला की 'राम की शक्तिपूजा' की संगीतिका प्रसारित हुई थी। मैंने सुना। कई कलाकार पाठ कर

1. घायल हाथ—साइकिल से गिरने पर कंधे के पास दाहिने हाथ की हड्डी टूट गयी थी; कुछ दिन प्लास्टर चढ़ा रहा, फिर धीरे-धीरे ठीक हो गयी। घटना का विवरण मेरे 19-3-63 के पत्र में है।

रहे थे —स्त्री-पुरुष अलग-अलग। कंठों में आस्था, बल, विश्वास और महाकवि के प्रति ममत्व था। पर उस महान कविता को ग्रहण कर-कर के भी उसे वह पूरी तरह क्या अधूरी तरह भी अपने-अपने कंठो से बाहर नहीं निकाल पा रहे थे। कविता जैसे बदल कर—चोला बदल कर—आ रही थी। वह तो अपने असली रूप में तेज, तरागी हुई, गंगा की तरह आकाश से पृथ्वी पर उतरती है, पूरे नाद और भाव-नृत्य के साथ। बलवेग भरा पड़ा है वहां। परन्तु यहां आकाशवाणी के प्रयोग में पड़ कर उसे कोई भगीरथ नहीं मिल सका।—मिले तो अधकचरे कंठ के उत्साही युवक और युवतियां। उन्होंने प्रयत्न तो किया पर सम्हाल पाते तो कैसे कि लोच और लहर नाच जाती शब्दों के संग्राम में। प्रयास सराहनीय है। सफलता न्यून भी नहीं कह सकता। वह गायी गयी। ऐसी अदा से जैसे साधारण गीत गा कर कर्ण-मधुर बनाये जाते हैं। मधुरता की जरूरत नहीं थी, इस महान कविता के पाठ में। दो-एक स्थल जरूर है जहां वह हृदय चाहती है, स्नेह के अवसर पर खिलने के लिए। 'लतान्तराल का मिलन' वाली घटना की अदायगी कालिदास का वही 'मेघदूत' कर सकता है - ऐसे पिपिहरी बजाने वाले नहीं।

जिन्दा में तो किसी ने 'निराला' को आकाशवाणी में घुसने नहीं दिया। अब मरणोपरान्त वहां उनको प्रवेश कराया गया है। यह है हमारा छिपा द्वेष। धन्य है आकाशवाणी। पर इस सब पर भी बधाई देता हूं उन्हे जिन्होने अपना कंठ और स्वर दोनों दे कर उस कविता के[का] पाठ करने का साहस तो किया। उन्हें चाहिए कि एक महीने तक उसे घटों अकेले मे और समूह मे बैठ कर डट-डट कर पाठ करें और जब-जब उसका जितना-जितना अंश अच्छा बन पड़े उस-उस अंश को रेकार्ड करते चले। तभी उस कविता की अदायगी पूरे तौर से सम्भव है। १,२ [आधा] घंटे मे उसका समग्र पाठ एक समय में पाठ करने वालों को, कई स्थलों पर पराजित कर देता है। अब इस कविता के बारे में ऐसा ही पाठ तैयार करना होगा।

मैं बहुत अर्से के बाद पत्र लिख रहा हूं। वह भी दुर्घटना के बाद लिख रहा हूं। मैंने मौन इसलिए धारण किया था कि तुम पुस्तक लिखने में एकाग्र चित्त रह सको और उस कार्य में बाधा न पड़े। अब तो विवश हो गया हूं इसलिए लिख रहा हूं।

मुझे पूरा विश्वास है कि तुम बायें हाथ का प्रयोग उसी बल और वेग से कर सकोगे जिस बल और वेग से दाहिने का प्रयोग करते रहे हो। मै तो अब दाहिने से ही लिखता हूं। वह बेचारा साथ देता ही है। अब तक ठीक हुआ ही नही।

घर मे मेरा सलाम सब को देना। हां, उस नाई को भी जो तुम्हारे घर मिला था और अब तुम्हें आराम देने आ जाता होगा।

इधर 'हिन्दी टाइम्स' में दिनकर के 'परशुराम' पर जो लेख छपा था वह मैंने पढ़ा था। इसमें खुल कर सच्चाई निकली है। इधर उर्वशी फिर पढ़ी थी। उसके लम्बे संवाद Tape Recorded से हैं। पता नही क्यों ऊंचे स्वर पर नही पहुंचती।

नागार्जुन बम्बई से पटना पहुंच गये हैं। पत्र आया है। उन्हें भी तुम्हारी हालत की सूचना दे रहा हूं। उन्होंने 'धर्मयुग' में मेरी कविताएं यहां से मांग कर, दी थी और तब छपी हैं। तुम्हारे लेख भी उसमें आ रहे है। सब पढ़ रहा हूं। 'सारिका' में नागा बाबा आइने के सामने आपरेशन करने में सफल हुए हैं। रंगीन चित्र छपा है। हरे रंग में है। इधर वह बहुत तीखे हुए हैं। कुछ तो यह तीखापन चीन के आक्रमण के कारण है, कुछ बंबई के कारण।

पार्वती[1] भी चिन्तित है। वह तुम्हें अपनी हमदर्दी भेजती है। कल उसने भी हाल पढ़ा। रात में बात होती रही। बार-बार मेरी ओर देखती रह जाती थी। जानती है न कि रामविलास मुझे बहुत मेरे हैं। मैं समझ गया था। मैंने कहा भी। हंस पड़ी। मगर उसके चेहरे पर भी मेरी तरह की चिन्ता व्याप गयी है। उसका भी तुम सबको सलाम है।

बेटियों को प्यार। मालकिन को नमस्कार। सस्नेह, तुम्हारा

केदार

30, New Rajamandi

Agra

19-3-63

प्रिय केदार,

कल दोपहर को तुम्हारा पत्र मिला। हिन्दी टाइम्स में अपना समाचार देखकर मै तुरन्त समझ गया था कि इससे लोगों को मेरी स्थिति के बारे में भ्रम होगा। मैंने उसका प्रतिवाद लिख भेजा है। विनायक जी को गलतफहमी हुई। साइकिल से गिरने के पहले मै यह सोचता जा रहा था कि केदार के संस्मरण लिखना चाहिये और मुझे तुम्हारे वे पत्र याद आये जो तुमने कभी बाँये हाथ मे लिखे थे। यह सब परिवर्तित होकर समाचार में यों छपा है मानो तुम अब भी बाँये हाथ से लिखते हो और मेरे भी दाहिने से लिखने की कोई आशा न रही हो। ऐसी कोई बात नहीं, मेरा हाथ गौतम बुद्ध की अभय मुद्रा में प्लास्टर के कारण बराबर ऊपर उठा रहता है वरना दस्तखत तो मैं अब भी कर सकता हूँ।

चार तारीख को 'सुधा' की फाइलें देखने मैं बेलनगंज जा रहा था। उस दिन रात को और सवेरे कुछ वर्षा हुई थी। एक जगह एक लड़का साइकिल पर अपनी side छोड़ कर कैंची काटता हुआ मेरे सामने आ गया। उसे बचाने के लिये मैंने जो ब्रेक लगाया तो कीचड़ में पहिया फिसल गया और मैं नीचे गिर पड़ा। रिक्शा करके मैं घर आ गया। पड़ोस के एक डाक्टर ने प्राथमिक चिकित्सा की।

1. केदार जी की पत्नी। अब दिवगत। [प्र० वि०]

हाथ उठाया, तो उठ गया, इसलिये फ्रैक्चर का संदेह नही था। दूसरे दिन X-Ray कराया तो कधे के पास फ्रैक्चर निकला। ६ तारीख को प्लास्टर चढा दिया गया। सम्भवत: ८-९ दिन मे उतार दिया जायेगा। चिन्ता की कोई भी बात नही है।

नागरी प्रचारिणी सभा मे सुधा की कुछ फाइले मैने मँगवा ली है। इनमें निराला जी के सम्पादकीय ढूंढा करता हूँ। मिलने वालो की वजह से भी वक्त आसानी से कट जाता है। तुम यहाँ न आ सकने के कारण परेशान न हो। हमारे यहाँ आजकल गुलाब खूब खिल रहे है। एक पौधे मे करीब २० फूल एक साथ खिले है और विजय के अनुसार उसमे ७२-७५ कलियाँ और लगी है। दिन मे दो-तीन बार बरामदे मे टहल कर फूलो का मुआयना कर आता हूँ।

लखनऊ से अमृतलाल नागर का पत्र आया है, जिससे पता चला है कि उनके लड़के शरद के भी काफी चोट आई है। होली पूजन के लिये जाते समय फिसल कर गिर पडे थे। एक दिन मुशी ने फोन पर सूचित किया कि होली खेलने को घर से निकलते समय वह भी गिरे और कमर के नीचे चोट आई है। X-Ray न कराने से पता नहीं कि चोट कैसी है।

मालकिन तुम्हारी श्रीमती जी को भेट-भेट कहती है। आशा है, सपरिवार सकुशल होंगे।

तुम्हारा
रामविलास शर्मा
(बकलम— विजय)[1]

बादा
१९-४-६३
५ बजे शाम

प्यारे दोस्त,

अब तो काफी दिन ढरक कर चले गये—हाथ की पट्टी उतर गयी होगी — चोट ठीक हो गयी होगी। निश्चय ही अब अच्छी तरह से लेट सकते होओगे। कुछ समाचार तो लिखवा भेजो। जी हल्का हो।

डा० गुलाब राय नही रहे। उधर राहुल जी चल बसे। कल पढ़ा कि गोपाल सिंह नेपाली भी उठ गये। यह बड़े खराब समाचार आ रहे हैं। हिन्दी का हित नष्ट हो रहा है। फिर [भी] बल और विश्वास से हम सब को काम करते चलना है चाहे जितनी गाज गिरे और अहित हो रहा हो।

---

1. यह पत्र डॉ० रामविलास शर्मा के पुत्र विजयजी की हस्तलिपि मे है। [म० त्रि०]

घर में सब लोग आनंद पूर्वक होंगे ही। यहां भी ठीक-ठाक है। बच्चे बीमार चल रहे है। दवा हो रही है। ठीक हो जायेंगे। चिन्ता कुछ भी नही है। हमने भी सरकारी वकील बनने की दरख्वास्त दी है। मसला पेचीदा है। देखो क्या होता है? जो पहले थे वह अब वहा नही रहे। सरकार ने उन्हे हटा दिया है। मौसम माकूल जा रहा है यहा तो। ऊपर जा कर चाहे जैसा रहे।

मेमसाहब का सलाम। बेटियो को प्यार।

सस्नेह, तुम्हारा
केदार

आगरा
२१-४-६३

प्रिय केदार,

अब हमारा हाथ कागज पर सरकने लगा है। खाना खा लेते है, उससे हजामत भी बना लेते है। प्लाटर के कारण जोड जकड गये थे और पेशियाँ ठिठुर गई थी। हाथ को मोडने, उठाने आदि मे कभी-कभी हड्डियां यो तडतड टकराती है कि सत्य हरिश्चद्र की पिशाच लीला का मजा आ जाता है। अभी दूर मे देखने मे भी दायाँ बाये से कमजोर मालूम पडता है। महीने-दो-महीने मे बराबर आ जाये गा।

तुम्हारा
रामविलास

बांदा
२७-५-६३

प्रिय डाक्टर,

कल निमंत्रण पत्र[1] मिला। न भी मिलता तो पहले तो कह ही चुके थे।

मैं सम्मिलित न हो भकूगा क्योकि किरण को भेजने मुझे ही जाना है। मुझे हार्दिक खेद है कि इस शुभ अवसर पर पहुच कर सबसे मिल न पाऊगा।

मै हृदय से अपनी शुभ कामनाएं भेजता हूं।

सस्नेह, तुम्हारा
केदारनाथ अग्रवाल

1. निमत्रण पत्र—मेरे मझले बेटे भुवन के ब्याह का।

२०-६-६३

प्रिय केदार,

मई मे मेवा के अपेडीसाइटिस का पता लगा था। ११ जून को फिर दर्द हुआ। उसका आपरेशन हो गया है। अभी अस्पताल मे है। दो-चार दिन मे घर आ जाये गी। हालत सतोषजनक है।

अपने समाचार देना।

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

बादा
२६-६-६३

प्रिय डाक्टर

पोस्टकाड कल मिला।

मेवा के आपरेशन की बात मालुम [हुई]। वह ठीक हो जायेगी —मेरा दृढ विश्वास है। जब घर आ जाये तब सूचना जरूर देना कि कैसी तबियत है ?

हम ठीक ही है। अब सरकारी वकील D G C (फौजदारी) का हो गया हू। उसी मे व्यस्त रहता हू।

गरमी बेहद पड रही है। कल बेटा और बीवी आ गये ह। प्रयाग मे थे।

तुम्हारी पुस्तक कैसी चल रही ह ? निराला जी पर कहा तक पहुचे ?

अपने हाथ का हाल लिख देते तो क्या कुछ बिगड जाता ?

सस्नेह तुम्हारा
केदार

३०, नयी राजामडी,
आगरा
८-७-६३

प्रिय वकील साहब,

पहले आप महज वकील थे, अब सरकारी वकील हुए, इस पर दिलोजान से बधाई।

सेवा चलने-फिरने लगी है और धीरे-धीरे कालेज भी जाने लगे गी। मेरा हाथ ठीक है, सिर्फ पीछे की तरफ मुडता कम है। जनाब पिछले हफ्ते वह गर्मी पडी कि मानो मई जून का सत निकाल लिया हो। बूँदी बादर का नाम नही। निराला

वाली पोथी अभी सामग्री संग्रह की मंजिल से आगे नहीं बढ़ी। आज कल सुधा की फाइलें पलट रहा हूँ। ज़रा दौंगरा गिरे तो लिखना शुरू करें। आज से कालेज खुल रहा है। हमारा सेशन इजलास शुरू। तु०

रामविलास

बांदा

५-११-६३

प्रिय डाक्टर,

इधर काफी अर्से से कोई समाचार नहीं मिला। आशा है कि सब ठीक है। अब तो चोट चल बसी होगी। पत्र देना और सूचित करना।

कल नागार्जुन आने वाले थे—दो दिन ठहरने के लिए। पर न कल आये—न आज।

हम लोग ठीक हैं।

कचहरी के काम में व्यस्त रहता हूं। पर्याप्त परिश्रम करना पड़ता है। लेकिन मुकदमें ऐसे सड़ियल आते हैं कि छूट जाते है। कही गवाह टूट जाते है - -कहीं डाक्टर चौपट किये रहते हैं। कहीं तफतीश कारिंदा बंटाधार किये रहते है। हम है कि अपनी मेहनत करते रहते है। बड़ा कठिन है न्याय सफल हो।

बेटा अशोक मद्रास गया है। ३ वर्ष के कोर्स के लिए। Technical Institute में पढ़ने। Film Photography के लिए। अभी दशहरे में आया था। लौट गया। देखो वह किस राह पर चलता है।

बच्चों को प्यार। सस्नेह तु०

केदार

केदार नाथ अग्रवाल

एडवोकेट

बांदा (उ. प्र.)

दिनांक ८-३-१९६४[1]

प्रिय डाक्टर,

कल पोस्टकार्ड महोदय हाथ आये। हमने उनसे बात की। बडे सकोच से बोल रहे थे। बोले भी तो बहुत कम। ख़ैर हमने तो उनका स्वागत किया ही।

1. पानी गिरने से इस पत्र के कुछ शब्द मिट गए हैं। [] के अन्दर के शब्द अनुमान से दिए गए है। जहाँ अनुमान नही लग सका उसे वैसा ही छोड़ दिया गया है। जहाँ '....' ऐसे निशान है, वे ऐसे ही स्थल है। [प्र० त्रि०]

बहुत अर्से के बाद मुलाकात हुई थी न। उन्होने बताया कि तुम्हारा फ्रैक्चर ठीक हो गया है। हमे खुशी हुई कि मेरे यार को दण्ड पेलने का बल-बूता मिलेगा। लेकिन शायद अब भी कुछ मजबूत नही हुआ क्योकि लम्बा लिखने मे जी चुराता है। और पोस्टकार्ड की पीठ पर कुछ ही नीले[नीली]खरोंचे[डाल]सका है। हाथ ही तो है। फिर तुम्हारा हाथ है न। उसकी आदत पोथी लिखने की रही है। पत्र नही। मेरे लिए तो तुम्हारे [दो] अक्षर ही मेरे भाग्य का निबटारा कर देते है—करते रहे है।

कविता के लिए कच्चा माल खूब जमा कर चुके हो। चाहो तो हमारे मन प्रदेश में भेज दो। हम ले लेंगे। हमारे यहा खपत हो जायेगी। 'हम अच्छा ही नही - खराब माल भी तैयार करते है [और] अच्छे के भाव में अखबारों मे ठेल देते है।' [अब तुमसे] कविता न लिखी होगी—चाहे तुम जितनी बकवास करो। विचार के क्षेत्र मे पहुच कर आदमी विवेक से काम लेता है—भावना से नही। तो जनाब तो गाव की अमराई मे कूच कर गद्य के अखाड़े मे कुश्ती लड़ने चले गये है। वहाँ तो बाजिया जीतने का सेहरा मिल सकता हे। किसी के अन्दर की आख की छवि नहीं मिल सकती।

'धर्मयुग' मे हमने देखा 'हिन्दी मे दुष्टो की कमी नही है'···कि हाथ मिलायें और खाने पर बुलाये।···कि तुम दावत [पर] नही आ सकते। यह सब अदालती दुनिया के हथकडे लग रहे [है]···। हम उस लेख के लबेद यहा पर भी उद्धृत करते पर हमारे यहा [के] सबसे धनी सेठ श्री हरीकृष्ण उसे [उस] अक को उठा ले गये। हम उनसे न माग सकते है—न मगा सकते है—न वे भेज सकते है। इसलिए डियर विवश हूं कि उसके बारे मे कुछ प्रसगवश कह सकू।

कचहरी ने मेरे कच तो नही हरे ? मेरा समय जरूर हर लिया है। बडी पेटू हे। पेट ही नही भरता चाहे जितना समय दो। खाय चली जाती है। मालूम होता कि जनम की भूखी रही है। शायद यह इसी तरह हमेशा से सब का समय खाती चली आयी है और खाती चली जायेगी। इस पर भी हम कुछ-न-कुछ लिख ही लेते है। एक उपन्यास पढा 'Halen of Troy'। दूसरे पर चल रहे है' 'The Age of Reason. D H. Lawrence की पुस्तक Mornings in Mexico and Etruscan Places' भी पलटते चलते है। कुछ novels by Albarto Moravia के पढ़ चुके है। मगर दोस्त ! वाह रे प्रेमचंद—तुम सा दूसरा कोई न मिला। कलम है कि सबको मात देती है। कल ही कचहरी मे एक क्लर्क 'गोदान' पड़ते-पढ़ते बोला कि ऐसा सजीव चित्रण करते है [कि पढ़ता हू तो एक-एक स्थल] पढ़ता रह जाता हू। [यह प्रति] वही है जो तुमने मुझे आगरे की दूकान से अपने नाम दाम डलवा कर ८ वर्ष पहले दी थी।

सरसो को देखा तो है लेकिन जी भर कर नही। इस बार हम खेतो के साथ लहराये नही—न हवा के साथ झूमे। मन पर मुकदमो के पदचाप रखे एक खास

अदा से कचहरी जाते-आते हैं और पेट को अर्थ से भरते हैं। मगर मौसम अब भी हावी हो जाता है। हम बेतरह बेताब हो उठते है। [मगर आदमी अपने] कर्तव्य के मुग्दल भांज कर मौसम को पछाड़ देते हैं . बड़ा दर्द होता है पर करें तो क्या करें।

तुम तो आओगे नही। हमारे घर में हमें तुम न मिलोगे। मगर आना पड़ेगा। जब मेरी बीमारी तुम्हें पुकारेगी। वह भी तो ससुरी जल्दी नही आ सकती। अब दो ही चार दिन मे हमारी घरवाली इलाहाबाद जाने वाली है। तब हम और हवा साथ-साथ झूमेंगे।

सस्नेह, तुम्हारा
केदारनाथ अग्रवाल

[अगर] शमशेर आयें तो प्यार [कह देना]। बड़ा ही निश्चल [आदमी है]। देखो, स्नेह से—पास से बोलना—दूर कहीं विदेश से न बोलना। वरना वह बात न कहेगा। मेरा सलाम देना।

केदार

R. B Sharma
M. A. Ph. D. (Luck)
Had of the Department of English
B R. College, Agra

30 New Rajamandi
AGRA

१-५-६४

प्रिय केदार,

पहली मई का अभिवादन। [—] जब विश्व सर्वहारा आंदोलन मे भयानक फूट पडी हुई है और भारतीय साम्यवादी अपने मतभेद ले कर कचहरी पहुँच रहे हैं। काम करने के जो ढंग रहे हैं। मार्क्सवाद को समझने का जो तरीका रहा हैं—यानी प्रचार ज्यादा, कार्यकर्त्ताओं में समझ कम, मौलिक चिंतन का अभाव—उसका यह सब लाज़मी नतीजा है। चीनी नेता साम्राज्यवाद के खिलाफ़ गर्म लफ्फाजी करके उसकी बहुत बडी सेवा कर रहे हैं। त्रात्स्की का विश्व क्रांतिवाद वहाँ पुन: अवतरित हुआ है।

यहां शमशेर आये और गये। साथ में नयी कविता लाये थे। उम्र २५-२६ साल। सुना है कि उसके बाप शमशेर से एक साल छोटे है। कुछ बीमारी वगैरह का चक्कर है। इसलिए इश्क मजाज़ी के मामले में वह फ्रीलांसर शमशेर के गले पड़ गई हैं और उनसे चप्पलें उठवाती है और पेटीकोट धुलवाती है। यहाँ के लोग शमशेर से जितना प्रेम करने लगे, उतना ही उस नयी कविता मे घृणा। उसे कुछ लिखने का गरूर भी है यद्यपि अभी महज़ बी० ए० पास है और यहाँ एम० ए० प्री० का इम्तहान देने आई थी। कुछ दिन यहाँ अमृतलाल नागर रहे। रोज

साथ रहता था। दो चार बाल पक चले हैं। शरीर कुछ और भारी हो गया है। जिन्दादिल पहले जैसे है। लेकिन जिन्दादिली पर बोझ बहुत भारी है। शरद के पथरी थी, आपरेशन हुआ। खैर ठीक है। बड़े लड़के की बहू के टी० बी० था। व्याह के पहले मालूम न था। दो आपरेशन हुए हैं। उसके एक बच्चा भी है। लडके को कोर्ट गुख नही है। भरी जवानी में अकेला रहने पर मजबूर है। इमसे अमृत काफी परेशान रहते है। कुछ दिन हुए, वह लखनऊ वापस गये।

दो दिन के लिए मुशी आये। सर के बाल मुझसे ज्यादा गिर गये है। स्वास्थ्य यो ही है। एक दिन बराम्दे मे बैठे हुए मैने तुम्हारे बहुत मे पत्र उन्हे पढ कर सुनाए। तुम्हारे गद्य के हम दोनों ही कायल है। और एक खत मे तुमने लिखा था निराला जी पर मेरी कविता के बारे में मार हाथी और स्यार भर दिए है, इस पर हम दोनो इतना हंसे कि आधा पन्ना दस मिनट में न पढ पाये।

आजकल शेक्सपियर पढ रहा हूँ। एक समस्या है। घृणा, भय, शोक आदि के भाव जीवन मे अच्छे नही लगते। साहित्य मे इनका रस क्यो लेते है?

तुम्हारा
रामविलास

केदार नाथ अग्रवाल
एडवोकेट
बादा (उ० प्र०)

दिनाक · ४-५-१९७४
सायकाल ६-३० बजे

प्रिय डाक्टर,

1-५ के अभिवादन का पत्र मिला। हृदय मुरझाया था, प्रसन्न हो गया। आशा न थी कि तुम्हारा पत्र आयेगा। वह क्या आया जैसे किसान के खेत मे बादल आया। आखे निहारती रह गयी।

यह एक दुर्भाग्य की बात है कि विश्व के सर्वहारा आदोलन मे इतना सकट आ गया है कि जीवन असहाय-सा महसूस कर रहा है। ऐसा उदाहरण अन्यत्र न मिलेगा। भारतीय दल मे भी ऐसी छीछालेदर होनी थी, इसकी कल्पना कोई नही कर सकता था। पर हुई। यह भी बढ़ रहे चरणो को खूटे से बाध कर जन-साधारण को बैल की तरह बधिया बनाने की दुखद घटना है। चिन्तन के नाम पर सब भाड झोकते है। वहा तो कुजड़ो की सी लड़ाई हो रही है। कभी बटेर लड़ते देखा था मैने रायबरेली मे सन् १९२१ ई० में। अब यह देख रहा हू। लडाई भी होती है तो एक शान की होती है—सिद्धांत की होती है। यह तो दगा-फसाद का नमूना है। वास्तव मे सब नगे हो कर नाच रहे हैं। अफसोस है।

शमशेर के बारे मे मैने कुछ समय पहले उड़ती-उड़ती ऐसी ही बाते सुनी थी।

पर विश्वास न हुआ था। वैसे मैं उन दोनों को शमशेर के घर में ही देख आया था—कई बार। पर मैंने उसका कोई अर्थ नहीं लगाया था। अनर्थ के डर से। पर 'अब तो बात फैल गयी जाने सब कोई।' मेरा दोस्त है। दिल से मजबूर है। उसने नहीं उसके उल्टे लिंग वाले ने उसे मेमना बना कर बांध लिया है अपने पल्लू से। उम्र से क्या होता है। पक्का पहलवान जब मुंह के बल ज़मीन पकड़ता है, तब ऐसी ही दशा होती है। बेचारे यार का व्यक्तित्व तो अलग रह ही नहीं सका। वह चाहे तो जो सेवा ले और हमारे मित्र को करना पड़ेगा [करनी पड़ेगी]। परन्तु बहुत पहले ऐसा न था। तब तो मैंने शमशेर की सेवा करते उसे देखा था। यह उल्टी गंगा बही है। चप्पलें प्रियतमा की हों तो वह उसकी ऐन इनायत की बदौलत मिलती हैं। सौभाग्य है उनका जो प्रेम फंदे में पड़ कर पेटीकोट धोते हैं। शमशेर को कुछ नहीं कहा जा सकता। वह सदैव रूप का दासानुदास रहा है। मैं इलाहाबाद नहीं जा सका वरना उसको देखता और अपने मियांमिट्ठू से बातें करता।

चक्कर में डाल दिया है दूसरों ने। तरह-तरह के लोग है। सीधे के गले में संसी लग गयी है। पर वह शमशेर की हो कर रहे तब भी कुछ ठीक है। कहीं इस आड के पीछे दूसरों के साथ शिकार न हो। पर किया क्या जा सकता है? तुमने तो शमशेर से बातें की होंगी। कहा नहीं कुछ। बीमारी क्या होगी? पेट में कोई आ न गया हो।

श्री अमृतलाल नागर के समाचार मालूम हुए। वह परेशान हैं तो हम भी उनकी परेशानी सुन कर परेशान हैं। ठहरा तो अपना पुराना लंगोटिया यार। लेकिन विश्वास है कि वह सब झेल जायेगा। मेरा सलाम भेज देना अपने पत्र में रख कर।

मुंशी -त्रिनेत्र जी—से मेरी भेंट बहुत अर्से से नहीं हुई। शायद अब कभी मुलाकात हो। दिल्ली ससुरी बड़ी दूर है। बांदा से मुहब्बत नहीं करती। हम यहीं कचहरी की धूल छानते रहते हैं। गद्य के कायल हो—कृपा हो [है]। हम पद्य के कायल हैं। उसी से जगजाहिर हुए हैं। पर यकीन रखो। हम कुछ नहीं लिखते। हम तो कभी मूसर मारते हैं, तो कभी जूते गांठते हैं, तो कभी किसी के केश सहलाते हैं तो कभी कल्ला की बला में मच्छर मारते हैं और अपने खून से जमाने की नजर में शहीद बनते हैं। सब चलता है। कोई रंज नहीं है। कोई गम नहीं है। इतने पर भी यह उमंग तो है ही कि मरते दम तक कविता का साथ दूंगा—छोड़ूंगा नहीं। भले-बुरे की पहचान समय करेगा।

निराला की मृत्यु ने एक शून्य छोड़ दिया है। जो पूरा न होगा। अब उनके साथ के सपेरे नाग नचा रहे हैं— सउहर बजा रहे हैं और पैसे और नाम कमा रहे हैं। यह भी हो रहा है। खूब है। रंग है। मगर यार, न वैसा जानदार कवि पैदा होगा।

शेक्सपीयर पढ़ो। खूब पढ़ो। समस्या टेढी है। तुम्हीं हल करोगे। हमारा तो दिमाग मुकद्दमो के दायरों मे रहता है। अवकाश कहा कि समस्या सुलझाए।

इधर अकेले है। खब पंखा चलाते है। पांव पसार कर एकाध बार उनका नाम ले कर सोते हैं। कही कुछ खाली लगता है पर करें तो क्या करे। इधर लखनऊ गयीं है। अशोक भी वही है। मद्रास मे Film का एक वर्ष समाप्त करके लौटा है। हजरत हमारी हजामत बनायेगे। हम तयार है। अपनी तो कट गई। अब क्या। देखो वह किस घाट लगते है।

किरण के पति का तबादला दिल्ली हो गया है। गौहाटी मे थे। अब महानगरी मे रहेंगे। यह अच्छा हुआ। उसके बच्चा होने वाला है। शायद बादे मे ही हो। १० मई या १५ मई तक आ जायेगी।

वीरेश्वर यही है। वही हाल है। कुछ परेशान रहते है। हमारे हाथ मे कुछ नही है कि हम मदद करे। केस वर्क कम है न।

मौसम तो तपा-तपन का है। जमीन जलती है— हवा चलती है — जूते-कपडे तलवे सब गरमाते है। गरज कि प्यास के मारे बुरा हाल रहता है। शायद सेरो पानी पी जाता हूँ। ११/५ से सुबह की कचहरी हो जायेगी। ६/३० [साढे छ] बजे सुबह से १ बजे दिन तक। तब तो समझो कि पिर जाऊगा। चूर-चूर हो जाऊगा। पर किया [क्या] जाये। पेट को लिये लिए गर्भवती की तरह जिऊँगा। न खा पाऊगा—न घूम फिर सकूगा।

अब हाथ थक गया है। बस। सलाम लो। सबको मेरी नमस्ते देना। हाल लिखना। चुप न रह जाना।

इधर Agony and Ecstacy पढ़ रहा हू। माइकलेन्जलो के जीवन पर आधारित इरविंग स्टोन का उपन्यास। बड़ा रम कर लिखता है। पहले भी Lust for Life पढा था। वह भी मनोयोग से लिखा गया था। मुझे तो दोनो व्यक्ति मे निराला के जीवन के दर्शन मिलते है। वही तपस्या और समाधिस्थ मन। किसी के लिए लीन हुआ मन।

सस्नेह तुम्हारा
केदारनाथ अग्रवाल

३-६-६४

प्रिय केदार,

इन दिनो बहुत-सी बाते याद आई। लखनऊ युनिवर्सिटी में हमने वृद्धा स्वरूप रानी का भाषण सुना था। तब वह उतनी ही वृद्ध रही हो गी जितने वृद्ध इस वर्ष जवाहरलाल नेहरू थे। हमे मोतीलाल नेहरू की शवयात्रा याद आई। युनिवर्सिटी

की सडक पर हजारों की भीड़ थी। शव खुली गाडी में ले जाया गया था। साथ कुछ दूर तक दौडने वालों में मैं भी था। और अब रेडियो पर हम दिल्ली की शवयात्रा का वर्णन सुनते रहे। साइमन कमीशन के दिनों से ले कर राजघाट की चिता तक देश के जीवन का लंबा इतिहास आंखों के सामने घूम गया।

शेक्सपियर के महानाटकों में जैसे मानवीय विघटन के साथ प्राकृतिक उथल-पुथल भी दिखाई जाती है, वैसे ही दिल्ली में भूचाल आया, उस दिन आंधी पानी का दौर रहा और तीन आगामी ग्रहणो की छाया मानों पहले से पड़ने लगी।

लोगों के हृदय में जवाहरलाल नेहरू के लिए बड़ा प्यार था। राजनीतिज्ञ जब समझते थे कि नेहरू की साख उठ गई है, मन भर कर गालियां दो, जनता ने अपने शोक प्रदर्शन से मानो कह दिया—लाख दोष होते हुए भी यह विश्व पैमाने का नेता था, तुम सब अपनी असंख्य अच्छाइयों के बावजूद बौने हो।

मेरे यहाँ उस दिन बहुत-से लोग मिलने आये, उदास चेहरे लिये, धीमी आवाज मे बोलते हुए ठीक जैसे किसी के यहाँ गमी में शोक प्रदर्शन के लिए जाते हैं। और हर एक के मन मे यही आशंका थी—आगे क्या होगा।

इधर पेट मे गैस बनने से अक्सर रात को नींद टूट जाती थी और दिल धड़कने लगता था। काम बंद है, आराम और घूमना मुख्य कार्यक्रम है।

तु० रामविलास

केदार नाथ अग्रवाल
एडवोकेट
बांदा (उ० प्र०) दिनांक : ५-६-१९६४

प्रिय डाक्टर,

मैं स्वयं तुम्हें पत्र लिख कर अपने मनोभाव प्रकट करने की बात सोच ही रहा था कि तुम्हारा पत्र आज ही दोपहर १-१/३० [डेढ] बजे मुझे मिला, जब मैं अपनी कचहरी से लौटा। लेकिन उसी समय न पढ़ सका क्योंकि पता तुम्हारे हाथ का न था—किसी दूसरे की लिखावट थी। इससे जरा सुसताने के बाद खोल सका। देखता क्या हूं कि तुम विराजमान हो। अफसोस हुआ विलम्ब से पढ़ने के कारण।

नेहरू का निधन सम्पूर्ण देश को शोक मग्न कर गया है। वह पूरे भारत का था। और अब तो भारत से बढ़ कर पूरे एशिया का व्यक्तित्व हो गया था। उसकी साख कहा नहीं थी। वह एक ही अपने जैसा व्यक्ति था। उसके निधन पर कौन नहीं रोया। ऐसा कोई न बचा होगा जो कई दिन तक—और अब तक—उसके लिए न तड़पा हो। मेरे इस पिछड़े नगर में भी सभी गमगीन थे। अब भी है। वह

एक शून्य छोड गया है। कुछ काम करने को जी नही चाहता। बस उसी की चरचा करने का माहौल है। और उसकी वसीयत के अंश सुन कर तो उसकी महत्ता विशेष रूप से जाहिर हो गयी है। क्या बात है कि वह भारत भूमि के खेतो की मिट्टी में अपनी मिट्टी मिला कर फसल बन कर उगना चाहता है —मेहनतकशों की मशक्कत के आगे वह अपना तन-मन-धन भूल कर न्यौछावर हो गया है। बड़ा महान व्यक्ति है। ऐसा नेता न हुआ है—न होगा। हम तो मान गये। मस्तक झुकाते हैं उसके लिए। वह है अपनी जनता को प्यार करने वाला नेता। देखे दूसरे तथाकथित नेता कि वह इस व्यक्ति के आगे अब कहा ठहरते है। किसी एक का पता नही चलेगा कि किस खेत की मूली है वह।

नेहरू एक कवि भी था। बडे मर्म से जिया और मरा। प्रकृति ने उस दिन दिल्ली को डगमगा दिया था। नेहरू का शरीर प्रकृति के साथ सास लेता था। जब वह न रहा तब प्रकृति भी घबडा उठी और उसके प्रयाण के समय अधीर रही।

हमने भी पं० मोतीलाल नेहरू के मरने पर उनकी शवयात्रा को देखा था। इलाहाबाद मे लखनऊ से शव आया था। इतनी भीड थी कि एक पुल के पास तो उनका शव जनता के सिरों पर तैरता हुआ यात्रा कर रहा था। वे दिन हमारे देश के बडे प्यार और पुलक के दिन थे। उन दिनो सब के दिलो मे कोई दाग न थे। उनकी मृत्यु पर सभी विह्वल हुए थे। ठीक उसी तरह जिस तरह जितेन्द्र की मृत्यु पर। नेहरू ने अपने पिता को पछाड दिया। जीवन मे ही वह उनसे आगे बढ गया था —अब मरने के बाद तो बहुत आगे बढ गया है।

उसकी बुराई होने लगी थी। यहा भी लोग बौखलाये थे। वही प्रतिक्रियावादी लोग थे जो नेहरू को दिल्ली से उठा कर एक कमरे मे बंद करने के पक्षपाती थे। मगर वह अपना कर्तव्य जानता था—वही वह कर रहा था। उसने लांछन की परवाह नही की और न उन टुच्चे राजनीतिज्ञो की। मरते दम तक सही दिल और दिमाग से भारत को आगे बढ़ा रहा था। इधर कल या परसो National Herald में पढ़ा कि राममनोहर लोहिया ने अमेरिका मे नेहरू की मृत्यु का समाचार सुन कर, बे सिर पैर का बकवास किया है। हैरत [मे] हू कि वह पागल तो नही है। कहता है कि नेहरू का कुछ भी योग नही है। धत्तेरे सिरफिरे की। उफ़! जी चाहता है कि ऐसे लोगो का दिमाग दुरुस्त कर दिया जाये। बेहयाई की लिमिट हो गई। द्वेष और दम्भ की यह घोषणा बिल्ली की खिसियाहट के सिवाय कुछ नही है। हम नेहरू को देवता नहीं कहते—न मानते हैं। मगर जानदार जीवट का व्यक्ति मानते हैं कि उसने ईमानदारी के साथ भारत के देशवासियों का माथा ऊंचा उठाया। अब तो वह किसान के हृदय में और उसके खेत में बस गया है।

रेडियो की कमेन्टरी—हिन्दी और अंग्रेजी मे – आई थी। अशोक वाजपेयी की मार्मिक थी। अंग्रेजी कमेन्टरी भी मार्मिक थी। हम लोग भी सुनते रहे थे। कई

दिन तक अब भी नेहरू छाये हैं। छाये रहेंगे।

दिल्ली की कल्पना कर रहा था कि वहां गोटे शतरंजी चाल में चलायमान होंगी। न जाने कितना खुराफात न हुआ होगा – निधन के बाद। पर चिता की लपटों ने उसे भी चट कर दिया। नेहरू ने मर कर शंकर बन कर, विष पी लिया और अब देवताओ को जीने की राहत दे गये।

उसकी मृत्यु में एक युग मरा और एक युग अवतरित हुआ। उसकी वसीयत भविष्य का सदेश सुना गयी है। अब भी अगर नेता न चेते तो हमारे प्रिय भारत की खैर नहीं।

सम्प्रदायवाद—पुनुरुत्थानवाद आदि-आदि सब रावण की तरह जल गये। ऐसा चुप हुआ है दुष्टों का गला कि कही तू-तड़ाक नहीं सुनायी देती।

निराला का निधन भी ठीक ऐसा ही था। वह कवि था। नेहरू नेता था। दोनो में जो अन्तर वही अन्तर उनके शोक-प्रदर्शन मे व्यक्त हुआ है। निराला की मृत्यु का दिन नहीं भूलता। अब निराला ने नेहरू का स्वागत किया होगा और दोनों गंगा के किनारे रोज शाम को साथ-साथ टहलते होंगे। निराला मजाक भी करते होंगे नेहरू से कि नेहरू जी ने उन्हें प्रयाग मे दर्शन नही दिये थे जैसे कोई बडे देवता रहे हों। नेहरू जी जवाब देते होंगे कि अब तो आ गया हूं दर्शन करने। यह कल्पना बड़ी मार्मिक है। पर मन में कही ऐसा भाव था, जो उभर कर इस पत्र में व्यक्त हो गया।

बेटा आया था। मद्रास के लिये प्रयाग गया। किरण और उसके बच्चे यहीं हैं। गरमी खूब है। दनादन् पंखे चलते रहते हैं। गायें दूध नहीं देतीं। भगवानदास की दूकान में बैठ कर रात ९ या १० बजे बड़ा गिलास --बरफ डाल कर पीते है। हमें भी अपने पद का ख्याल नहीं रहता। लोग समझते है कि हम बड़े हो गये है। हम हैं कि हमें बड़प्पन का एहसास ही नही होता। वही हाल है जैसा पहले था। अब एक साल को फिर Contract पर गवर्नर के यहा से काम करने का कागज आ गया है। अर्थात् हम हर साल जियेंगे—हर साल मरेंगे। वाह रे, हमारी ज़िन्दगी। सब ठीक है।

सस्नेह, तु० केदार

पुनश्च:—पेट में गैस बनती है—खाने में तबदीली करो। अब घी-दूध छोड़ो। फल-सब्जी खाओ। घूमना अच्छा है। दिल धडकना अच्छा है पर बीमारी के रूप में नहीं है। मुझे विश्वास है कि तुम उस पर काबू पा लोगे। सबको यथायोग्य।

केदार

R. B. Sharma
M. A, Ph. D. (Luck).
Head of the Deptt. of English
B, R. College, Agra

30, New Raja Mandi
AGRA
२३-६-६४

प्रिय केदार,

रात को भगवानदास की दुकान पर बरफ डाल कर दूध पीते हो और मुझ से कहते हो कि दूध-घी छोड़ दो। बहरहाल सलाह तुम्हारी नेक है और आजकल हम उसी पर चल रहे है। अलबत्ता खालिस दूध के बदले कभी-कभी खीर खा लेते है। दूध पीने पर पेट के बाईं ओर हवा जोर करती है, न पीने पर साधारण भोजन के कुछ समय बाद बीच पेट मे उठती है। खैर, दिल का तेजी मे अचानक धड़कना तो बन्द है यद्यपि दिल पर हमले मे असफल हो कर वायु इधर-उधर भागती है। विश्वास है कि कुछ दिन में उस पर पूरी तरह काबू पा लूँ गा।

गर्मी भयंकर पड रही है। दोपहर को खाट पर लेटो तो तकिया चादर सब गरमाये रहते है। शाम को नहाने चलो तो नल मे उबला हुआ पानी निकलता है। लेकिन सबेरे १०-११ बजे तक तरावट रहती है। रात भी कट ही जाती है।

अगर हम यह मान लें कि सरकारी वकील बनने मे पहले तुम बड़े आदमी नही थे तो बड़प्पन के अहसास की समस्या पर कुछ कहा जाय। तुम्हारी कविता और गद्य दोनो के बल पर लोग तुम्हे याद रखे गे, वही सच्चा बड़प्पन है। धर्मयुग के पिछले एक अंक में हमने समुद्र पर तुम्हारी एक कविता पढ़ी जो बहुत अच्छी लगी।

एक मेरे सहयोगी अपना थीसिस Ph. D के लिए Submit कर रहे है। इधर रोज़ सबेरे उठ कर उसी का सशोधन करता था। जितना परिश्रम सशोधन में करना पड़ता है, उतने मे वैसे- -और उससे कुछ अच्छे ही —दो थीसिस मै लिख डालता। नाम रिसर्च का, विचार अध्ययन, लेखन-कौशल — सभी मे दिवालियापन। Guide क्या करे ? कल यह कार्य समाप्त हो जाय गा, तब जरा खुल कर साँस लूँ गा। शेक्सपियर वाली कितबिया छूट गई थी, फिर शुरू करूँ गा।

क्या तुमने बाँदा की गर्मी या लू पर कोई कविता लिखी है ?

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

बांदा (उ. प्र.)
६-७-६४

प्रिय डाक्टर[1],

इधर मैं पत्र नही लिख सका था।

व्यस्त था।

पानी बरस गया है। अब मौसम ठीक है

अब घर की बीमारी का क्या हाल है ? पत्र देना।

आजकल क्या लिख रहे हो ? हम कुछ नहीं लिख रहे। तुमने 'समुद्र' को सराहना की। खुशी हुई।

अब आगरा भी ठंढा होगा।

शायद कालेज खुल गया होगा।

शुरू के दिन हैं। व्यस्त होगे।

अपने समाचार देना। तबियत लगी है।

बच्चों को प्यार।

सस्नेह तु०
केदार

बांदा (उ. प्र.)
२२-७-६४
६ बजे शाम

प्रिय डाक्टर,

आज के 'भारत' के द्वितीय संस्करण मे इलाहाबाद, २० जुलाई का समाचार छपा है कि 'विवेचना' की एक गोष्ठी ६.१५[सवा छः]बजे शाम वहां एनीबीसेंट हाल में हुई। हरदेव बाहरी अध्यक्ष थे। उस गोष्ठी में श्री विद्यानिवास मिश्र ने तुम्हारे ग्रंथ 'भाषा और समाज' पर अपना आलोचनात्मक निबन्ध पढ़ा। अनेक वहां पर उपस्थित हुए साहित्यकारों ने विचार-विमर्श किया। अध्यक्ष ने ग्रन्थ की भूरि-भूरि प्रशंसा की। निबन्ध की भी सहारना की। बधाई स्वीकार हो। अब किसी मेरे जैसे एक और साहित्यकार ने तुम्हें परखा। मैं भी फूल कर कुप्पा हो गया हूं। फिर बधाई स्वीकार करो। ज़रा, सीना तान कर टहलो। हां, अब ठीक है।

हम अच्छे हैं।

आशा है कि तुम सब लोग भी अच्छे होगे। घर में बीमारी का क्या हाल है ?

1. यह पत्र पोस्टकार्ड पर दो कालम में लिखा गया है। [प्र० त्रि०]

लिखना। तुम्हारा स्वास्थ्य भी कैसा है ? हम जानने को लालायित है। बेटियाँ और बच्चे तो सब ठीक ही चल रहे होंगे। सब को मेरा यथायोग्य नमन् और स्नेह स्वीकार हो।

इधर पानी नही बरसा। आज पढ़ी हमने 'निराला' की—"पारस मदन हिलोर न दे तन"। मस्ती रही।

बोलो कब आओगे बादा ? अब शायद डिग्री कालेज खुल जाये बादा में।

प्रिय बेटी किरण के, यही घर पर ६/७ दिन हुए बिटिया पैदा हुई है। दोनों ठीक है। सरकारी काम चल रहा है। मुकदमे मे जैसी दृष्टि से तहकीकात करनी चाहिए वैसी तहकीकात दारोगा नही करते। इससे सफलता नही मिलती और अधिकतर अभियुक्त छूट जाते है, जो दोषी भी होते है। गवाहान भी वैसी [वैसे] होते है, और झूठ का अम्बार लगा देते है। यहा भी कातिल आल्हा-ऊदल की परम्परा मे अब भी काम करते है। अदालत मे न्याय न पा कर लोग बाहर स्वयं न्याय कर लेते है। हत्याये होती रहती है। अदालत तो एक विशिष्ट प्रणाली और सिद्धान्त से काम करती है। इससे वह विवश हो कर छोड़नी है।

हा तो बस,

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

बादा
५-८-६४ सवेरे ८ बजे

प्रिय डाक्टर,

पिछले 'धर्मयुग' मे प्रिय अमृतलाल नागर पर तुम्हारा लेख देखा। बहुतो ने पढ़ा। नागर का व्यक्तित्व उभर कर सब पर छा गया। टोह-टोह कर तुमने, छेनी मार-मार कर, नागर की मूर्ति खड़ी की है। बोलती है। बधाई।

मैने एक पत्र लिखा था पहले। विद्यानिवास मिश्र ने तुम्हारे प्रमुख ग्रन्थ भाषा शास्त्र को लेकर [लेख पढ़ा था]। बेहद तारीफ की थी। मैने तो अखबार मे रिपोर्ट पढ़ी थी। मिश्र जी को बधाई भेजने वाला हू।

आशा है तुम सब लोग घर मे कुशलपूर्वक होओगे। हम लोग ठीक है।

कल थोड़ा पानी झरा था। फिर निकल गया। आसमान भी सिर घुटाये नजर आने लगा।

महगाई कुतुब मीनार से भी ऊचे पहुच गयी है। मनुष्य चींटी की तरह छोटा हो गया है। और कन-कन की तलाश मे दिन-रात जुट गया है।

सस्नेह तु०
केदार

R. B. Sharma
M. A., Ph. D. (Luck)
Head of the Deptt. of English
B. R. College, Agra

30, New Raja Mandi
AGRA
६-८-६४

प्रिय केदार,

सवेरे ६ बजे एक हल्की बदली आई, दस मिनट तक रिमझिम करके निकल गई। कुछ देर को टीन पर रिमझिम के घमाघम से पढ़ाना बंद हो गया था। अब सवा बारह बजे नहाने के बाद ठंढी हवा से देह को सहलवाते हुए तुम्हें पत्र लिख रहे हैं।

तुम्हारे दो कार्ड और एक पत्र मिले और हम आज कल करते हुए जवाब देने की बात सोचते ही रहे। इस वर्ष Dean का काम फिर गले पड़ गया है। सात बजे सवेरे रोज कालेज में पढ़ाई का आरंभ; १० से ११ तक डिपार्टमेंट में डीन के काम के लिए हाजिरी ! इधर लडकों की आधी-पूरी फीस माफ करने के लिए शाम को यानी साढे चार से इटर्व्यू के लिये फिर जाना पड़ता है ! हैमलेट पर १६ पन्ने टाइप किये हुए पडे है; अध्याय पूरा करने की नौबत नही आती। बीच में दिल्ली गया था। लोगों का आग्रह था कि मै भाषा-समस्या पर एक लेख New Age monthly के लिये लिखूँ। वह भी भेजना है। परीक्षा की कापियाँ अलग रखी है, अभी बंडल नहीं खोला। तिस पर मेरा फाउंटेन पेन परसों से मिल नही रहा, यानी खो गया है। लड़कियाँ अपने-अपने कलम ले कर कालेज गई है। नतीजा यह कि हम एक पुराने कलम कुठार मे इस सुन्दर कागज पर दावात मे निब डुबो-डुबो कर यह गोदना गोद रहे हैं।

आज कल बेला खूब फूल रहा है। छोटे गुलाब जैसा तेज़ बैंगनी रग का लोनिया का फूल ज़ोरों मे दमकता है। चाँदनी के सफेद फूल घने हरे पत्ते वाली डालो पर बर्फ जैसे छितरे हुए है।

तुम्हारा कार्ड और उससे पहले वाला पत्र पढ़ कर हम खूब मगन हुए। तुमने विद्यानिवास मिश्र की आलोचना पर जो प्रसन्नता प्रकट की, उस पर हमें खूब आनंद आया; इससे भी अधिक हर्ष की बात यह कि इन पत्रो मे तुम्हारी उमंग देख कर हमारा मन भी उमंग से भर गया। इस उमंग मे ही आदमी बढ़िया लिखता है। आशा है तुम्हारी कलम भी मिसिलो-फाइलो से बच कर कविता की पंक्तियों मे दौड़ चलती हो गी !

लगता है हिन्दी के दिन फिरने लगे है। लोग किसी पुस्तक का विवेचन करने के लिये हाल मे इकट्ठे हों और इसकी खबर अखबार में छपे - आश्चर्य ! विद्यानिवास जी मे प्रत्यक्ष परिचय नही है, वैमे भी उनके बारे मे कुछ विशेष नहीं जानता। किन्तु यदि हरदेव बाहरी जी को भी पुस्तक पसद आई तो वह पहले

भाषा शास्त्र के स्वीकृत विद्वान हों गे जिन्होंने "भाषा और समाज" की प्रशंसा में कुछ कह कर एक झमेले में अपने को फँसा दिया है। 'माध्यम' के एक अंक में 'विवेचना' गोष्ठी में नरेश मेहता के 'यह पथ बंधु था' की आलोचना और विवाद का सारांश छपा है, संभवत: मेरी पुस्तक पर वह लेख भी छपे।

अमृत वाला लेख पसंद आया, प्रसन्नता हुई। अमृत मारे आनंद के—हिंदी सेवा के योग्य सब युनिवर्सिटियाँ पास कहे जाने पर —अपने पत्र के अनुसार, कुछ समय के लिये साश्रुनयन हो गये। मैंने उनको थकन के बारे में जो कुछ लिखा है, उसमें उन्हे रंग कुछ ज्यादा गहरा दिखाई दिया। अभी उन्हें उत्तर नही दिया।

झांसी के भगवानदास जी ने माहौर ने हिंदी साहित्य पर गदर के प्रभाव पर अपना थीसिस पूरा कर लिया है। दो दिन तक—उनके यहा आने पर—साहित्य और इतिहास की चर्चा रही।

अब कमरे में पंखा चला दिया गया है। श्रीमती जी नहा कर खाना लिये मेज के पास बैठी है। जब तुम्हारा पत्र आता है तो तुम्हारी श्रीमती जी को बड़े प्यार मे जरूर याद करतीं हैं।

अच्छा, टा-टा--

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

३०, नयी राजमंडी,
आगरा
७-१०-६४

प्रिय केदार,

सितंबर के 'माध्यम' मे शायद तुमने श्री विद्यानिवास मिश्र का लेख देखा हो। तुमने 'भारत के समाचार से जो नतीजा निकाला था, स्थिति उससे बिल्कुल उल्टी है। खैर, हमे तो खुशी इस बात की है कि लोग चर्चा तो करते है, किताब को चर्चा के लायक समझते है, चुप नहीं लगा जाते क्यो कि यह हिंदी है जिसके लेखकों-पाठको के दिमाग मे यह संस्कार जड़ जमाए हुए है कि जो कुछ कहने लायक है वह अंग्रेजी में ही कहा जाये गा या कहा जा चुका है।

इधर तुम्हे अर्से से लिखना चाहता था लेकिन कालेज की फिजूलियात से छुट्टी न मिलती थी। अक्सर सुबह शाम दोनों वक्त कालेज जाना पड़ता था। दिन में थोड़ा समय मिल गया तो दो-चार पन्ने शेक्सपियर वाली किताब के टाइप कर लेता था। शायद इस महीने के अंत तक पूरा हो जाय। कल मुझे एक आवश्यक कार्य से दिल्ली जाना है। १३ अक्तूबर को लौटूंगा। किताब खत्म न कर पाने से छुट्टियों

में यहीं बँध गया हूँ। प्रकाशक से पेशगी रुपये लिये हैं। इस साल किताब जरूर छप चानी चाहिए।

बाँदा में भी लोग गेहूँ, दाल-चावल के भाव की बातें करते हों गे। गल्ले की कमी हो सकती है लेकिन माल होते हुए भी मिलता नही है, चोरी छिपे भले लोग ले आये। दिन पर दिन हालत खराब होती जाती है। लड़ाई के जमाने से हमारा अर्थ तंत्र हर झटके के बाद कुछ सँभलता है और उसके बाद दूसरा झटका पहले से तगडा लगता है। श्रीमती इंदिरा गांधी लोगो को समझा रही है कि देश के उन्नति करने मे ऐसा होता ही है। कांग्रेस से गाड़ी सँभल नही रही है। राजनीतिक और आर्थिक संकट दोनो है। क्रान्तिकारी परिस्थिति में जब क्राति नही होती तब प्रति क्राति होती है। भविष्य कुछ ऐसा ही है। अपना हाल देना।

तु० रामविलास शर्मा

चाचाजी नमस्ते स्वाति[1]

बांदा
१६-१०-६४
७ बजे शाम

प्रिय डाक्टर,

७/१० का पत्र सामने है। उत्तर अब इसलिए दे रहा हूँ कि तुम दिल्ली से वापस आ गये होओगे। मैने भी माध्यम मे विद्यानिवास मिश्र का लेख पढ़ा। मैं स्वयं उनकी राय मे सहमत नही हूं। पर चर्चा तो हुई।

शेक्सपियर पर पुस्तक पूरी कर लो। तब छुट्टी मिलने पर मुझे खत लिखना। तुम्हारे खतो का बहुत इन्तज़ार रहता है। कभी-कभी तो तुम महीनो समाधि मे चले जाते हो।

यहां भी गेहूं-चावल इत्यादि अपनी चरम भाव-सीमा पर चढ़ चुके थे। धर पकड़ हुई तो कुछ नीचे उतरा हुआ है। बड़े जानलेवा व्यवसायी होते है। इन्दिरा गांधी को अभी जनता से पूरी वाक़फियत नही है। वरना वह भी अपना विचार बदलती। देश की राजनीति और अर्थ नीति दोनो ही साधारण जन के लिए संकटमय है। भविष्य भयंकर लग रहा है। पर जीवन और जन मे विश्वास कम नही हुआ। देर होगी। पर अंधेर मिटेगा।

रूस मे[ने]फिर ख्रुश्चेव को पलट कर नया पलटा लिया है। चीन ने विस्फोट किया है। अनेकानेक परिवर्तन हो रहे है। हमारी बैलगाड़ी कहा जायेगी पता नही।

1. यह नमस्ते, अन्तर्देशीय के दूसरे मोड़ के हिस्से पर अंकित है। [प्र० वि०]

प्रिय स्वाति[1] का नमस्ते हमें मिला। हम खुश हुए। उसे तथा अन्य बहनों को मेरा प्यार। शेष ख़ैरियत है।

सस्नेह तु०
केदार

१४-११-६४

प्रिय केदार,

पिछले दिनों बांदा मे डिग्री कालेज के प्रिंसिपल मिले। यानि हमारे यहां के मछिन्दर नाथ दुबे। उन्होंने बांदा आने का निमंत्रण दिया है। यदि कार्यक्रम तै हो गया तो मैं २४ या २६ दिसंबर को उधर आऊंगा। झासी और सागर जाने का कार्यक्रम भी बना रहा हूं और सब ठीक।

आजकल घर में फ्लश का काम चालू है—खट् खुट, घङ् टङ्। इति।

तु० रामविलास शर्मा

बांदा (उ० प्र०)
१३-१२-६४

प्रिय डाक्टर,

पहले तो तुमने लिखा था कि तुम यहाँ आ रहे हो। अब तक कुछ खबर नहीं भेजी। आखिर, कब और कितने दिन के लिए आ रहे हो ? बड़ी तीव्र लालसा है कि तुम यहा आओ और हम लोग फिर कविताएं पढ़े-सुने और काव्य पर खूब ढेर-सी बाते करे। जी मचल रहा है। हा, कल Illustrated Weekly (नयी) मे तुम्हारी बढ़िया पुस्तक पर, पूरे पेज की टिप्पणी छपी है। देख तो चुके ही होओगे। भाषा का भजन अब हो रहा है।

कब सागर की तरफ जाओगे ? कि न जाओगे ?

सरदी बरस रही है। इधर दो दिन से धूप भी ठंढा रही है। रातो को तो कमरे में भी गरमी नही हो पाती। पर जब तुम आओगे तब अवश्य ही इतनी सरदी न रह जायेगी फिर हमारी-तुम्हारी सांसें बांदा की हवा मे नशा भर देगी। सच कहता हूं झूठ न मानना

जरूरी;

तुम्हारे मछीन्द्रनाथ जी कल मिले थे। पूछते थे कि तुम कब यहा आ रहे हो ?

1. स्वाति—मेरी सबसे छोटी बेटी।

वह डिग्री कालेज में तुम्हारे भाषणों से साहित्यिकी का शुभारम्भ करना चाहते हैं। मैं भी यही चाहता हूँ। बच्चे उत्सुक ही नहीं तयार बैठे है—तुम्हें देखने-सुनने और समझने के लिए। देखो, धोखा न देना। जैसे गंगा जी जटाजूट से जमीन पर आयी है वैसे आओ। पत्र दे कर लिखो ताकि आमंत्रित कर सकें। पर जल्दी ही न सटक देना। हम सारे काम छोड कर घूमेंगे। पैसा न कमाऊंगा। तुमसे गन्ने पिरवाऊंगा। बच्चों को प्यार।

तु० सस्नेह
केदार

१५-१२-[६४]

प्रिय केदार,

मछिन्दरनाथ[1] गुरू ठहरे ! यहां कह गये थे, जा कर निमंत्रण भेजूँ गा। सो अभी तक आ रहा है। सोचा हो गा, बुलायें गे तो पैसे देने पड़ें गे। इसलिए हमने सोचा है कि बादा तब आये गे जब वहां का कालेज बंद हो गा।

२२ दिस० को हम झांसी में हों गे, २३-२४ को सागर मे, २५ को वहां से चल कर ·६ को दिल्ली और वहा मे २६ के आसपास यहाँ। अब छुट्टियो में हम आना भी चाहे तो दो दिन से अधिक नही बचते। इसलिए ज़रा फुर्सत से ही आने का विचार है। दिल्ली जाने का कार्यक्रम अचानक बनाना पड़ा। वर्ना २६ के आस-पास अभी बाँदा आते।

इलस्ट्रेटेड वाला लेख देखा है। लिखने वाला विद्यानिवास से ज्यादा समझ-दार है।

तुम्हारा
रामविलास

बादा
६-५-६५
प्रिय डाक्टर,

इधर उधर-सर्वत्र मौन —साकर [साकार]—निराकार—सब प्रकार का मौन —विराजमान है। इस मौन के महासागर मे हम छोटी मछली से पड़े हैं। इसके तट के पास से आततायी पाकिस्तान का आक्रमण उत्पात किये है और हमारे फेफड़े में बारूद की दुर्गन्ध भर रही है। काश हम भी मछली न हो कर सैनिक

1 मछिन्दरनाथ—गोरखनाथ द्विवेदी।

होते।

दिल्ली १०/५ के पूर्व पहुंचूंगा। वहां भेंट होगी। आशा है कि पहुच रहे हो—नागर जी के यहां बेटी के ब्याह में।

'धर्मयुग' में श्री किशोरी दास पर लेख पढ़ा—अच्छा लगा।

प्रेषक : —केदारनाथ, अग्रवाल
एडवोकेट, बांदा

सस्नेह तु० केदार

R. B. Sharma
M. A. Ph., D. (Luck)
Head of the Deptt. of English
B. R. College, Agra

30, New Raja Mandi
AGRA
२६-७-६५

प्रिय केदार,

इस बीच हम दिल्ली भी हो आये। नरोत्तम के घर गये। नागार्जुन से मिले। उग्र जी के दर्शन कर आये।

नागार्जुन में ताजगी है। कही भी खा सकते है। कही भी सो सकते हैं, 'इस मामले में पूरे संत है। और व्यंग्य उनकी नस-नस मे भरा है। एक पत्रिका निकालने की बात हो रही है।

उग्र जी बुढ़ा गये है। बत्तीसी बरकरार है। ६५ की उम्र में खाल झूलने लगी है लेकिन ज़िदादिली कायम है। बोले —देखो मै अभी ज़िदा हूँ। जो सचमुच गर्व करने की बात है।

इधर जनशक्ति में एक भाषा-विवाद चला। उसमें फँसे रहे। कम्युनिस्ट पार्टी ने कांग्रेस की तरह केंद्र में अनिश्चितकाल के लिए अग्रेजी जारी रखने की नीति अपना ली है। इसी की आलोचना की थी।

२३ जून के धर्मयुग में शमशेर पर लेख शायद देखा हो गा।

कालेज शुरू हो गया है। सबेरे का कीमती समय अंग्रेजी मे बकवास करते बीतता है। शेक्सपियर पर एक पुस्तक छप रही है। शायद अगले महीने निकल जाय।

समय मिलता है तो थोड़ा बहुत निराला जी की जीवनी में कुछ लिख लेते हैं। लेकिन इधर कुछ नहीं लिखा।

पानी हल्का बरसा है। अनाज महँगा है। देश में हर तरफ विघटन है। विदेश में युद्ध के बादल उड़ते दिखाई दे रहे हैं। इन्डोनीशिया ने भी ऐटम बम फोड़ने की धमकी दी है। गोआ को ले कर पुर्तगालियों से इतना न लड़े थे जितना आपस में लड़ रहे है। जय हो!

अपने कुशल-समाचार देना।

तु०
रामविलास

बांदा
१-८-६५

प्रिय डाक्टर,

तुम्हारा २९/७ का पत्र सामने है। तुम न आये—न सही, पत्र तो आया। खुशी हुई। जब मे दिल्ली गया था गरमी में, तब जवाहर चौधरी ने कहा था कि तुम और वह बांदा आओगे, जल्दी ही। वचन पूरा नहीं हुआ। कोई बात नहीं है। बांदा ससुरा बेहद दूर है। दिक्कत भी काफी है। यह शिकायत नहीं—अपनी खीझ व्यक्त कर रहा हूं। वश में होता तो आगरे से बांदा की दूरी कम कर देता और तुम्हें ला पटकता।

तुम दिल्ली हो आये। नरोत्तम, नागार्जुन और उग्र से मिल आये। बड़ा अच्छा हुआ। सब बुढ़ा तो गये ही हैं। नागार्जुन में व्यंग [व्यग्य] कूट-कूट कर भरा है। सच है। वह संत हैं। यह गलत है। संत तो पंत हैं। यह बच्चनोवाच है। मेरा कथन नहीं है। वह सबका है —इस घर—उस घर का—चाहे जहां खाये, सोये या बतियाये। वह बिहार की मिट्टी का सत्यभाषी, जनता का कंठहार है। पत्रिका निकले तो सही। बात तो पूरा हिंदुस्तान करता है। लेकिन बातें पूरी हों तब समझें।

उग्र जी बुढ़ा गये हैं, तभी 'हिंदी टाइम्स' में हर हफ्ते सामने आ कर कुछ-न-कुछ जोर भर जाते हैं। मगर जवानी का वह तनाव व तेवर नहीं है। मामला उखड़ा-उखड़ा चल रहा है। यही क्या कम है कि मैदान में आ कर पुराने सुरकसिया की तरह भूखे ज़िद्दी शेरों पर चाबुक सटका देते हैं। मैंने दर्शन नहीं पाये, कभी आज तक। भविष्य मे संभव हुआ तों सौभाग्य समझूगा।

अंग्रेजी के हिमायती बुद्ध है। नौसिखिये है। पार्टी उन्हीं के हाथ में है--चाहे जो करें। सही समझने और कहने के लिए, राजनीति में बड़ा दमखम चाहिए। वह बजाजी की दूकान नहीं है कि वही गज है, चाहे जो कपड़ा नाप दो। राम रक्षा करे। भगवान बचायें इन नासमझों से। तुमने ठीक किया कि उनके कान उमेठते रहे।

शमशेर पर लेख[1] पढ़ चुका हूं। क्या कहूं दोस्त, बढ़िया रहा। पास होते तो सलाम मार देता। खूब खुज कर तुमने उबारा है उस व्यक्तित्व को,—वह तो खंडहर के मलवे में दबा रहता है। लोग उसके दब्बूपन को सराहते है। उसकी जाटिया हड्डियों को सब लोग भूले रहते हैं। चाहे जैसा हो, आदमी बड़ा प्यारा है। मेरा मित्र जो है।

पढ़ा है कि पंत ने तुम्हें 'वाग्विलास' व निराला को 'माधो' कवि से स्मरण किया है। ऊल जलूल भी कह गये हैं। तुम तो जीवित हो—शायद जवाब दे

---

1. शमशेर पर लेख—'धर्मयुग' में प्रकाशित।

लोगे। मगर वह निराला तो चला गया। अब उसको इस तरह याद करना जला-लत है। उसके रहते दम हिम्मत न पडी। जब वह मर गया तब लगे मेढक राम कूदने। यह भी मत होने का पत का नया पैंतरा है। हम तो नही सराहते। बच्चन सराहे चाहे उनके अन्य भक्त।

घर-बाहर देश-विदेश सब कही विघटन है। पर उसका जो उस योग्य है। यह सब भविष्य के संघटन के लिए है। और हम मौज मे है। जो कमाते है उसका अधिकाश बेटे को भेज देते है। उतना ही अपने पास बचता है जितना यहा खर्च है। इससे हम वही है जहा थे।

पानी बरसा है। मस्ती है मौसम मे। कबरई से आज सबेरे लौटा हू। सब ठीक है। बेटियो को प्यार।

सस्नेह तु० केदार

७-१०-[६५]

प्रिय केदार,

अभी इलाहाबाद के एक निमत्रण पत्र से मालूम हुआ कि तुम्हारा वृहत् कविता-सकलन वहा से निकल रहा है।

बधाई।

१० अक्तूबर को मेरे जन्म दिवस पर उसकी धूमधाम से परिचर्चा हो गी — बडी प्रसन्नता की बात है। फूलो फलो, वकील और कवि दोनो रूपो मे। फूल भी बोले, रग भी बोले।

तुम्हारा
रामविलास

बांदा
१३-१०-६५
रात, ११-बजे

प्रिय डाक्टर,

पाई चिट्ठी/हुआ प्रसन्न /

तमने तोडा मौन/मैने खाई खीर/स्वाद बन गया/वक्ष तन गया/गया इलाहाबाद /पुस्तक देखी/आखे चमकी/बहुत समय पर मेरी कविता बाहर आयी/छपने पर वह और हो गयी/सब को भायी/समारोह भी रहा सुहाना/सब ने मुझ को, मैने सब को जाना/मन गाता था गाना/मै पहने था माला/चलता था चौताला/लेख पढे

लोगो ने हट कर/सबने काव्य सराहा/पत, महादेवी के भाषण भाव भरे थे/दास[1] हुलास भरे थे अमरित[2] ने अमरित बरसाया—/

अब फिर बादा—/वही कचहरी—/वही वकालत—/वही कटाकट। /

शेषकुशल है।

मैं केदार तुम्हारा।

बांदा (उ० प्र०)
१-११-६५

प्रिय डाक्टर,

Essays on Shakesperian Tragedy की प्रति परसो प्राप्त हुई। पढना शुरू कर दिया है। निश्चय है कि मुझे उसमे अवश्य ही अपने विचारो को शुद्ध करने मे सहायता मिलेगी। सरसरी तौर मे प्रत्येक पृष्ठ सूघ गया हू। मेरे लिए अन्तिम २-३ लेख अधिक उपयोगी होगे। बधाई ऐसी महत्त्वपूर्ण पुस्तक के लिए। प्रकाशक भी बधाई का पात्र है। पर उसने जिल्द ऐसी बाधी है कि अन्दर से सिलन खीस निपोर चुकी है। ठोस जिल्द भीतर के पहले पृष्ठ को फाड कर बाये हाथ की तरफ चट से अलग हो गयी है। बीच मे दरार पड़ गयी है।

सुना था कि करबी मे चौबे की तैनाती हुई है। दिल्ली मे मुशी ने कहा था। क्या यह सच है? कुछ पता न चला तब से आज तक।

मेरी पुस्तक पहुच ही गयी होगी। प्रकाशक को बहुत पहले लिख चुका था। इधर कब आ रहे हो? धूप और हवा दोनो खाने को मिलेगे [मिलेगी]। घर के सब लोग ठीक है।

सस्नेह तुम्हारा
केदारनाथ अग्रवाल

१०-११-६५

प्रिय केदार,

हमारी Tragedy वाली किताब की जिल्द फट गई, यह भी एक छोटी-मोटी Tragedy हो गई। खैर, फुर्सत मे जब कभी मन भाये, पन्ने पलट कर देखना। तुम्हारे प्रकाशक ने तुम्हारा कविता-संग्रह नही भेजा। दिल्ली में नामवर सिंह मुझे अपनी प्रति देने वाले थे लेकिन जब मिले तब घर भूल आये थे।

---

1. श्रीकृष्णदास। [प्र० वि०]
2. श्री अमृतराय। [प्र० वि०]

इधर अमृतलाल नागर ८-१० दिन आगरे रहे। एक उपन्यास—५०० पृष्ठों से ऊपर का—समाप्त किया है। बेगम समरू पर एक छोटा उपन्यास लिखने के डोल मे है। इलाहाबाद में तुम्हारे समारोह की चर्चा कर रहे थे। इधर बायरन पढ़ रहा था। सूर्य पर बहुत सुन्दर कविताएं लिखी है।

तु० रामविलास शर्मा

१८-१-[६६)

६ पैसे का तार

प्रिय केदार,

तुम्हारा पत्र मिला। हम आयें गे। २४ को ईद है। इसलिए उस दिन का उपयोग हम बादा के लिये कर सकते है। हम चाहते है कि २६ को बाँदा मे चल दें जिससे २७ को ८ बजे क्लास ले सके। इसलिये अच्छा हो कि कालेज मे वहा कार्यक्रम २५ को रखो। यदि यह संभव न हो तो लिखना, हम २६ को ही आये गे और २७ को चल दें गे॥ कालेज मे एक दिन मे ज्यादा छुट्टी नही लेना चाहते। २४-२५ जनवरी वहां बिताने मे सुविधा है।

उत्तर जल्दी देना। प्रिंसिपल का पत्र अभी नही मिला।

तु०
रामविलास

"चिन्तन"

साहित्यिक-संस्था, बाँदा (उ० प्र०)

फोन नं० २५

अध्यक्ष—
केदारनाथ अग्रवाल
मंत्री—
देवकुमार यादव

कार्यालय
स्टेशन रोड, बाँदा
दिनांक : १६-१-६६

प्रिय डाक्टर,

नेहरू डिग्री कालेज बाँदा में २६/१ को **बसंत पंचमी** के अवसर पर 'निराला' जयंती मनायी जा रही है। प्रमुख वक्ता जनाब रामविलास शर्मा है। फर्स्टक्लास का रिटर्न टिकट का व्यय मिलेगा। इस व्यय के देने की जरूरत न थी पर देना उत्तरदायित्व से मुक्ति पाना है।

डिग्री कालेज के प्रिंसपल महोदय स्वय पत्र लिख चुके होंगे। न मिला हो तो

मिल रहा होगा।

यहा लोगो की उत्सुकता बढ़ गयी है तुम्हें देखने-सुनने की। नौजवान लोग खूब बात करना चाहते हैं—सोचना-समझना चाहते हैं। न आये तो उनकी भावनाओं का निधन होगा। यों ही वे शास्त्री जी के निधन से उबर-उबर रहे हैं।

मौन टूटेगा कि नहीं ? आगमन होगा कि नही ?

वैसे वादा बहुत पुराना है। उसके पूर्ति की कोई मियाद नही है। परंतु अत्यधिक समय बीत चुका है। शुभागमन Long due है। 'टूटे न तार तने जीवन-सितार के'[1]। कुछ ऐसी ही आशा है और विश्वास है।

निराला के जीवन पक्ष को समेट कर उनके सुगम और कठिन काव्य-पक्षों को उघार कर, नये युग बोध के संदर्भ में, तुम्हें दृढ़ता पूर्वक तकरीर करनी है—सोदाहरण। उनकी रचनाओं की महत्ता आज तो और भी अधिक सत्य को साकार करती है। देखते हो न कि 'नयी कविता' किधर धकेल रही है नयी पीढ़ी को—भूखी पीढ़ी की ओर और कविता बजाय जिंदगी के निकट आने के, उसमे दूर खिसकती चली जा रही है—अहित की ओर। क्या नवोन्मेष अन्तर्मुखी हो कर गुहा गर्त मे नही घुसता चला जा रहा ? युगबोध भी वैसा नही है जैसा चित्रित किया जा रहा है। केवल उधार ली गयीं काव्य-शैलियां भारतीय भाव-भूमि पर खेत मे खडे धोखार का प्रदर्शन करती है—महा कुरूप-निर्जीव। यह जो नये के नाम पर नकारात्मक रचनाएं धुएं की जैसे फैलती जा रही है वह वास्तव मे यथार्थ की सहज मानसिक प्रक्रियाओ को व्यक्त नही करती। डूबते-टूटते मनों-खड मात्र ही दिखते है।

वैसे ठीक हूं। तब तक पूरा ठीक न हो सकूगा जब तक तुम न आओगे।

बच्चो को प्यार।

सस्नेह तुम्हारा
केदारनाथ अग्रवाल

पुनश्च—

प्रिंसपल महोदय से अभी बात करके लौटा हूं कि उन्होने आज ही पत्र लिखा है। वह भी शायद इसी पत्र के साथ मिले। अपनी स्वीकृति तार से भेज दो।

विषय चाहे जैसा हो—अपने मन के विषय पर ही बोलना। कोई प्रतिबंध नही है। कम से कम ३ दिन लगेगे। एक दिन निराला। एक दिन शेक्सपियर। एक दिन और चिंतन में।

सस्नेह तु०
केदार

1. केदारजी के एक गीत की पंक्ति। [प्र० वि०]

२०-१-६६

प्रिय केदार,

श्रीमती जी को दिल धड़कने की बीमारी है। दिल सभी के धडकते है लेकिन इन्हे [इनकी] रात मे सोते समय नीद टूट जाती है-- कभी-कभी -और दिल जोर से धडकने लगता है। आज Blood Pressure चेक कराये गे। कल रात इन्हे नीद न आई और परेशान रही। यद्यपि मै जानता हूँ कि मेरे बाँदा जाने से इनका कुछ न बिगडे गा, फिर इनकी हिम्मत नही बँध रही है। यहाँ केवल लडकियाँ है, लडके सब बाहर है इसलिए घबड़ा जाती है —जल्दी।

इस मजबूरी मे बाँदा आना स्थगित ! अब जब कोई लडको मे यहाँ हो गा, हम तभी आये गे। और बाँदा के लिए निमत्रण की जरूरत नही।

तुम्हारा
रामविलास

बादा (उ० प्र०)
२०-१-६६

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिला। मैने फोन पर अभी २-१/४ [सवा दो] बजे दिन डिगरी कालेज के प्रिसपल से बात की। उन्होने कहा २८/१ को निराला जयन्ती है। समारोह उसी दिन होगा।

अतएव तुम २४-२५/१ को यहा आ कर रहो। २६/१ को भी रह कर जयती मनाओ। फिर २६/१ को समारोह के बाद चले जाना। पर आगामी २७/१ को पहुच कर ८ बजे कैसे क्लास मे पहुचोगे।

अब तक प्रिसपल का पत्र मिल ही गया होगा। आज वह फिर लिखेंगे।

आ रहे हो। तार देना ताकि हम लोग सटेशन[1] मे पहुच कर मिल ले।

प्रेषक : केदारनाथ अग्रवाल
वकील
बादा (उ० प्र०)

सस्नेह तु०
केदार

1. यहाँ स्टेशन का 'सटेशन' जान-बूझकर लिखा गया है। [प्र० वि०]

बांदा
२२-१-६६
सबेरे ९ बजे

प्रिय डाक्टर,

२०/१ का पत्र मिला—अभी ही। यह जान कर हम लोगों को दुःख हुआ कि मिसेज़ शर्मा को दिल का दौरा[1] हो गया है। हम कैसे कहें कि ऐसे में तुम यहा आओ। फिर कभी देखा जायेगा।

परंतु बीमारी का हाल कभी-कभी लिख दिया करो। राहत हो जाती है। सुख-दुख बांट कर जीने का जीवन और ही होता है।

डिगरी कालेज वाले भी उदास होंगे। ख़ैर

अब हम लोग ही निराला जयन्ती मनायेंगे। जैसा होगा—उल्टा-सीधा पढ़े-पढ़ायेंगे।

शेष कुशल है।

कल प्रोग्राम बना कि आगरा पहुंच कर ही मोटर से ले आयें।

पर फिर स्थगित कर दिया। व्यर्थ की तकलीफ होती।

बच्चियों को प्यार

सस्नेह तुम्हारा केदार

केदार नाथ अग्रवाल
एडवोकेट

बांदा (उ० प्र०)
दिनांक १७-२-६६

प्रिय डाक्टर,

तुमने पत्र न दिया कि अब तुम्हारी मलकिन की तबीयत कैसी है। मन में खटका लगा है। विश्वास यही है कि अब वह ठीक हो गयी होंगी।

मेरे अपने नगर के मित्र ने कुछ कविताएं अंग्रेजी में हिन्दी से अनूदित की हैं। वह तुम्हें भेज रहे हैं। देख लो कि वे कहां तक सफल हुए हैं। बड़े परिश्रम से इस कार्य में लगे रहते हैं अध्ययन—अंग्रेजी का—अच्छा है। उद्धव-शतक—द्वारा रत्नाकार—का यह अनुवाद है। निःसंकोच दो-चार पंक्तियों में अपनी सम्मति देना ताकि वह उसे प्रकाशित भी कर सकें। आशा है कि व्यस्त समय का कुछ अंश

---

1. दिल का दौरा—अभी दिल का दौरा न पड़ा था पर उन्हें स्थायी हृदय रोग था, नाड़ी की गति विषम रहती थी। रक्तचाप के कारण बेचैनी और बढ़ जाती थी।

इस दिशा में लगा कर यह सम्मति-दान का यज्ञ समाप्त करोगे। इनका नाम है श्री इन्द्रजीत सिह। हम लोग ठीक है।

तुमने नही लिखा कि मेरी पुस्तक आज तक तुम्हे मिली भी या नही। केवल जानना चाहता हू। तुमने पत्र नही दिया कि पा गये हो।

सुबह ठड रहती है। रात भी गलती है। दिन मे अवश्य धूप की गरमी घेरे रहती है।

उपनिषद पढना शुरू किया है —कल से। बडा मजा आ रहा है। ऐसा लगता है कि समय और काल से परे का चिंतन चल रहा है। किंतु देखने की बात है कि यह चिंतन भी साफ-सुथरा, संयत और सहज स्वरूप मे व्यक्त हुआ है। दुरूह नही है।

आशा है कि पत्र दोगे और हालचाल लिखोगे।

डा० रामविलास शर्मा, सस्नेह तु०
३०, नयी राजामंडी, केदारनाथ अग्रवाल
आगरा

२४-२-६६

प्रिय केदार,

अंग्रेजी विभाग से एक सज्जन रिसर्च करने गये है; एक सेशन के बीच मे दूसरी जगह प्रिंसिपल हो कर चले गये। नतीजा : काम की भरमार। आजकल पढाई के बदले कोर्स खत्म कराने पर जोर है।

तुम्हारी कविता पुस्तक मिल गई थी। तुम्हारे मित्र के अनुवाद भी मिले। मालकिन ठीक है। चिन्ता का कोई कारण नही है। अब होली के बाद फुर्सत से लिखूं गा। तुम्हारी होली सफल हो।

तु० रामविलास

Banda
25-2-66

प्रिय डाक्टर,

एकदम मौन—कोई पत्र नही—कारण अज्ञात। सन्नाटा टूटेगा, क्या ऐसी आशा करूं ?

अब बीमारी का हाल क्या है ?—आशा है कि वह ठीक हो गयी होगी। हम लोग इस विषय में समाचार जानने के लिए व्यग्र है।

कल धर्मवीर भारती यहां से चित्रकूट—कालींजर—वृहस्पत कुंड—खजुराहो के लिए सपत्नीक, अपने बच्चों के साथ, सूचना विभाग के अधिकारी के साथ, उसी विभाग की मोटर में प्रात.काल १० बजे रवाना हुए हैं। परसो शाम ७ बजे वह बांदा आये थे। उन्हें सोल्जर्स बोर्ड के विश्राम गृह में ठहराया गया था। मैं मिलने गया था। वह लौट कर यहा २६/२ को आ रहे है- यहां मे २७/२ को प्रयाग जायेंगे।

यहां सब पूर्ववत् है।

From : Kedar Nath Agarwal
advocate
Banda-U. P.

सस्नेह तुम्हारा
केदारनाथ अग्रवाल

बांदा (उ० प्र०)
१२-३-६६

प्रिय डाक्टर,

इस बार दो पेजी पत्र मिला। पढ़ गया। अपने बारे में लिखा गया पढ़ कर प्रसन्न भी हुआ और अवसन्न भी। प्रसन्न इसलिए हुआ कि जनाब ने कुछ अच्छा कहा है। अवसन्न इसलिए हुआ कि विद्वान डाक्टर ने मेरी रचनाओं के बारे में कोई ऐसी बात नहीं कही जिससे मैं खुश होऊ। बात यह है कि समेड्ढा (यानी एकजाई) भाव से अच्छाई-बुराई लुक-छिप कर चली आई है। ऐसी दाद का मैं भूखा नहीं हूं। अरे, खुल कर होली खेलते और सब कह डालते कि हमारी उपलब्धि Zero है। हम कतई बुरा न मानते। कभी अपने प्यारे दोस्त का बुरा माना जाता है। हम ने तो तुम्हें इसीलिए दिल में जगह दी है कि वहां कुटी छाये बने रहो और हमें आगाह किये रहो। खैर जब मिलेंगे हम लोग निबट लेंगे।

मेरे पत्र तुम्हें अच्छे लगते हैं। यही तो वजह है कि तुम्हें मेरी कविताएं नहीं रुचतीं। मैं जानता तो पत्र ही न लिखता और तब देखता कि कविताएं कैसे नहीं अच्छी लगतीं। भूल तो हो गयी न। इसका पछतावा रहेगा।

जनाब ने हिन्दी टाइम्स और जनयुग ही पढ़ा होगा। और इसी पर शान से कह रहे हैं कि हमारे मान-सम्मान को पढ़-पढ़ कर रस लेते रहे। यह तो केवल मुझे फुसला रहे हो—दम दिलासा दे रहे हो। जब तुमसे—विद्वानों से वाह निकले तब जन्म सार्थक समझूंगा। कलम का कच्चा हूं—कला में बच्चा हूं—इससे वाकिफ हूं। पर अधिक ऊपर उठना असम्भव है—चाहे जो करूं।

श्री इन्द्रजीत सिंह अभी नहीं मिले। मिलने पर उन्हें पत्र सुना कर गुब्बारा कर दूंगा। प्रति रक्खे रहो।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

१४-३-६६

प्रिय केदार,

तुम्हारा कार्ड मिला।

तुम्हारी अच्छी कविताएँ मुझे इतनी अच्छी लगती है कि मै उनसे अच्छी कविताओ की कल्पना नही कर सकता। इस तरह की रचनाओ का एक नमूना है —धूप धरा पर उतरी। कविता लगभग धूप के समान ही निरलकार और सुन्दर है। प्रकृनि सबधी कविताओ मे कही कही Conceils है जैसे—

जल रहा है
  जवान हो कर गुलाब,
खोल कर होठ
  जैसे आग
गा रही है फाग।

यह Conceil बहुत ही सुन्दर है क्यो कि उसमे इन्द्रियबोध का पूर्ण उदात्ती-करण हे — आग स जलते हुए रग का बोध है।

तुम्हारी व्यग्य वाली कविताएँ मुझे बेहद पसन्द है जैसे धोबी गया घाट पर (पृ ६६) —इसकी वक्र व्यजना मे अगाध वेदना छिपी हुई है—इसीलिये इतनी मार्मिक है।

व्यग्य हीन उदात्त घोषणाएँ व्यक्तित्व के [की] सामर्थ्य से ही कविताएँ बन गई है जैसे "मै हूँ अनास्था पर लिखा" आदि (पृ १४८)।

कानपुर, बुन्देलखड के आदमी जैसी कविताओ मे घन की चोट है यथार्थ का रग, सादगी मे भी वीरतापूर्ण। तुम्हारी कविताओ की भापा शैली व्यजना का ढग सब ऐसे है जो एक लोक कवि को ही और ससार के थोडे से बहुत बडे-बडे कवियो को ही —सुलभ होते है। इनमे जहाँ तहाँ—एकाध पक्ति मे -कुछ भारी भरकम शब्द आ जाते है जो लोक रस मे बाधक होते है। ऐसा बहुत कम होता है—यद्यपि होता अवश्य है।

तुम्हारा इन्द्रिय बोध तगडा है, वैसा ही दृढ भाव बोध भी है किन्तु इनके साथ विचार और चिन्तन की वह गहराई नही है जो दान्ते, शेक्सपियर आदि उच्चतम कवियो मे है। इसलिये कि तुम सहज कवि हो, दार्शनिक नहीं। आधुनिक हिन्दी मे—नयी पीढी और दिनकर-बच्चन वाली पुरानी पीढी दोनो मे— तुम सर्वश्रेष्ठ कवि हो। इन्द्रियबोध के टक्कर की विचार-गरिमा हो तो तुम शेक्सपियर और दान्ते की तरह विश्ववन्द्य हो जाओ। अब तुम कहो कि इस मुझे खुशी नही हुई तो सभव हे, न हुई हो। लेकिन मेरा आशय स्पष्ट नही है, यह शिकायत न रहे गी।

और सब ठीक—

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

पत्रों में गद्य अच्छा लिखते हो, इसका मतलब यह नहीं है कि कविताएँ अच्छी नहीं हैं। तुम कवि होने के साथ एक बहुत अच्छे गद्य लेखक हो—इतना ही।

रा० वि [1]

बांदा

२१-३-६६

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिला। और तो सब ठीक ही है। वह दर्शन कौन सी बला है जो मुझे पकड़ में नहीं मिल रहा। "चिन्तन की गम्भीरता" भी कठिन है। ख़ैर देखा जायेगा। चिट्ठी रख ली है। जनाब की राय है। शायद कभी किसी पर इसका रोब पड़े।

हम ४/५ दिन से बीमार पड़े हैं। ज्वर है,—दर्द है-- कचहरी नहीं जा रहे। प्रतिदिन ४०/ रु० का आराम कर रहे हैं। दवा हो रही है। ठीक हो जायेंगे। आशा है कि अब तो कापियों के ढेर उलटने-पलटने का ज़ोर होगा।

बच्चों को प्यार। यानी बेटियों को।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

३०, नयी राजामंडी,

आगरा

४-५-६६

प्रिय केदार,

जवाहर-राजेन्द्र यादव एंड कंपनी ने जो पुस्तकें प्रकाशित की हैं, वे तुम्हें प्राप्त हुई [हुईं] या नहीं? उनमें मेरा एक निबन्ध संग्रह[2] भी है।

तुम्हारे स्वास्थ्य का क्या हाल है? मुझे दो दिन से दस्त आ रहे हैं। और कुशल है। इधर अंग्रेज आलोचकों[3] पर एक पुस्तक लिख रहा हूँ।

समाचार देना।

तुम्हारा

रामविलास

1. रा० वि० जी के १४-३-६६ के पत्र में उल्लिखित पृ० सं० 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' से उद्धृत हैं। [अ० त्रि०]
2. 'भारत की भाषा समस्या' जिसे 'राष्ट्रभाषा' के नाम से अक्षर प्रकाशन ने छापा था।
3 पुस्तक पूरी नहीं हुई।

बांदा (उ० प्र०)
७-५-६६

प्रिय डाक्टर

जवाहर-राजेन्द्र यादव एंड कंपनी ने मुझे कोई पुस्तक या पुस्तके नही भेजी। न मैंने स्वयं प्राप्त कीं। मुझे मालुम है कि तुम्हारी एक पुस्तक उस सेट मे है। जब समय आयेगा तब मिल जायेगी। वरना मैं बाहर गया तो ले आऊगा।

हां, कान्ता[1] ने मुझे अज्ञेय का काव्य-सकलन—'सुनहले शैवाल'—जरूर भेंट में भेजा है। मैंने उस संग्रह को भेजने के लिए लिखा था। उस बेचारी ने अपने दाम से मुझे भेज दिया। देखी पुस्तक। मुझे तो एक भी कविता कविता न लगी। गुरु-गम्भीर आरोपण हरेक मे व्याप्त है। कविताए नही बोलती। अज्ञेय बोलते है। दाम भी काफी जूतामार है। पता नही क्यो इन जवाहर एड को ऐसा कवि भा गया है? भगवान इन्हें भी आंख-कान और सुमति दे। ऐसी रचनाए कोई भी नही रुचि मे पढता। नाम देख कर छाप लिया है, ऐसा लगता है।

हम तबियत से ठीक है। कल एक डाढ़-बायी-नीचे की उखड़वाई है। ठीक है।

अब दस्त बंद हो गये होंगे। तबियत निरमल हो गयी होगी। अग्रेज आलोचकों पर एक पुस्तक लिख रहे हो—लिखो। अरे, हिंदी वालों पर भी तो कलम चले।

'दिनमान' में प्रगतिशील लेखक संघ के दिल्ली अधिवेशन पर बहुत करारी चोट छपी है। देखना। शायद संघ वालों को बेहोश करे। कब आओगे?

सस्नेह तु. केदार

२१-५-[६६]

प्रिय केदार,

कार्ड मिला। मैंने जवाहर को लिखा था कि तुम्हें 'रा. भा. की समस्या' भेज दे। उसका पत्र आया है कि पुस्तक तुम्हें भेज दी गई है। लिखना, मिली कि नहीं।

लू ज़ोरों पर है।

तुम्हारा
रामविलास

1. 'कल्पना' पत्रिका वाले श्री बद्रीविशाल पित्ती की सगी बहन और 'कृति' से सम्बद्ध कवयित्री! दो कविता संकलन छपे हैं। अब दिवगत। [अ० त्रि०]

बांदा
२२-५-६६

प्रिय डाक्टर,

इस समय दीवाल घड़ी में ४ : ४५ हुआ है। फिर भी बाहर लू लपट मार रही है और ज़मीन की देह चाट कर पानी सोख रही है। ऐसे में कमरे में ऊपर टंगा चल रहा पंखा और उसकी हवा दोनों ही जी-जान की रक्षा किये हैं।

'राष्ट्रभाषा की समस्या'—पुस्तक परसों आ गयी। प्रकाशक ने भेजी है। पढ़ रहा हूं। ५० पेज से कुछ ऊपर गया हूं। कुछ लेख पहले के पढ़े हैं। याद आ रहा है। मुझे तो इन विचारों में तर्क और सत्य दोनों ही जी रहे मिलते हैं। जो कहते है कि यह विचार प्रतिक्रियावादी हैं वह सरासर गलत कहते हैं और वह स्वयं उस वाद के शिकार हैं। अपने विचार और भी व्यक्त करूंगा। पुस्तक हरेक हिन्दी भाषी पढ़े तब है। वरना, दूसरों के विचार ठीक न होंगे। इसका प्रचार होना चाहिए। ऐसी पुस्तक की बड़ी जरूरत थी। रविशंकर शुक्ल की खूब बखिया उधेड़ी है। वैसे सभी चोट खाये कराहते दिखते हैं। वाह रे डाक्टर। तुम्हारी हिन्दी जनता की हिन्दी है जो उसके हाथ में तेग-तलवार तो है ही—ऐटमी शक्ति भी है। भारतेन्दु इत्यादि की परम्परा में तुम चल रहे हो। दूसरे नहीं। बधाई।

सस्नेह तु० केदार

२४-७-६६

प्रिय केदार,

इधर समाचारो में बादा की बडी चर्चा रही। सुना, वकीलो ने कचेहरियाँ जाना बंद कर दिया। अब क्या हाल है?

यहाँ गर्मी बेहद है, वर्षा के नाम पर दो चार छीटे। बस। इस महीने हाथ में बालतोड़ हो गया था। कुछ दिन बुखार भी रहा।

चीनी भाई भी खूब हैं। भारत से लड़ने को इतनी उतावली थी; अमरीका से लड़ने को पैंतरा ही दुरुस्त कर रहे हैं।

तु० रामविलास शर्मा

बांदा (उ० प्र०)
२६-७-६६

प्रिय डाक्टर,

हां, इधर अब तक बांदा समाचार पत्रों में खूब ज़ोर शोर से छप रहा है। सोता नगर भभक पड़ा है। लपटें लव कुश की तरह बढ़ रही है। अभी तक वकीलों

की हडताल चल रही है। बडे-बडे लोग आते और बोल-बाल कर चले जाते है। मैंने भी उनके दर्शन किये है। मैं कचहरी जाता हू। हाजिर रहता हू। मुझे छूट है जाने की। और सब लोग कोर्ट्स नही attend करते।

गर्मी तो तेज धार की तलवार की तरह लगती है और खून न बहा कर पसीने-पसीने कर देती है। पानी भी बरसता है तो जैसे मुरदो पर चादी के गुलाब पाश से गुलाब जल छिडका जा रहा है। हद्द हो गई मेघराज तुम्हारी दया-दक्षिणा। वह भी सरकारी हो गये है।

बुखार मे पड रहे होओगे। पढना तब तो छूटा होगा। वरना तुम्हे चैन कहा। खुशी हुई कि अब अच्छे हो गये हो।

चीनी भाई के पैतरे सब खुल गये है। वह अपने पैतरो मे ही अपना सत्यानाश करेगे।

मुशी जनयुग के सम्पादकत्रय मे आ गये है। और सब ठीक है।

सस्नेह तु० केदार

केदार नाथ अग्रवाल
एडवोकेट

१२-६-६६, रात ६ बजे

बादा (उ० प्र०)
दिनाक

प्रिय डाक्टर,

यह पत्र अपनी प्रिय भतीजी लता अग्रवाल के हाथ तुम तक भेज रहा हू। वह तुमसे मिलने आ रही है। इसलिए मेरे पत्र की जरूरत थी। अतएव मैने उसके लिफाफे मे रख कर उसी के पास, इसे भेजना मुनासिब समझा। फिर तुम्हारे पते से भेजता तो डर भी था कि शायद देर से मिले या किवाडो के पीछे, पहले की तरह, दबा-दुबका न रह जाये।

हा तो वह रिसर्च करना चाहती है। एम ए है —हिन्दी मे। पता नही विषय क्या होगा। बात कर लेना। अपने व्यस्त समय मे से उसे भी अपना समय दे देना। और जो सहायता पढने-लिखने मे दे सको दे देना। पुस्तके भी सुझा देना। synopsis भी तयार कर ले तो ठीक मार्ग दर्शन कर देना। वह तुम्हारी भी तो भतीजी है। मै तो गदहा ताऊ हू। तुम विद्वान आलोचक पडित ताऊ हो। वह जाये तो कहा —किसकी शरण।

वह अपने यहा —मुरादाबाद के डिग्री कालेज मे —तुम्हारा भाषण कराना चाहते [चाहती] है [है]। यदि उचित समझो और अनुचित न हो तो वहा जा कर भाषण देना स्वीकार कर लेना। हा, अपना पारिश्रमिक तय कर लेना। मैने लता को

अभी पारिश्रमिक के विषय में कुछ भी नहीं लिखा। वह तो implied है ही। फिर मेरा यह पत्र भी तो वह पढ़ लेगी और समझ जायेगी।

हम लोग इस आशा में हमेशा रहते हैं कि जनाब बांदा तशरीफ ला रहे हैं। हमारी आशा झूठी नहीं है, ऐसा तो श्रीमान् भी समझते हैं। फिर क्या वजह है कि आगमन नहीं होता।

तुम तो लिख ही रहे हो। हम कलम नहीं घसीट पा रहे। वह चलती ही नहीं। कचहरी हमारा हरण किये हुए है।

साहित्य में भी हर नगर अपनी चहल-पहल से जी रहा है। खेद है कि नागरिक साहित्य में एकता का सूत्र नहीं बन सका। इधर प्रयाग में अपने भाई जान अमृतलाल नागर का अभिनंदन हुआ था। हमें सूचना नहीं मिली थी। वरना हम चले जाते।

बेटे-बेटियां मजे में होंगी। जो बेटी बीमार थी वह अब तो ठीक हो गयी होगी। धर्मपत्नी जी की तबियत कैसी है ? हम लोग ठीक हैं। पत्र देना।

सस्नेह तु० केदार

बांदा

९-१०-६६

प्रिय डाक्टर,

मैं दिनांक २०/९ को दिल्ली पहुंचूगा। २२/९ तक वहा रहूगा। बेटी को लेने जा रहा हूं।

क्या तुम दिल्ली तो नहीं रहोगे ?

पत्र देना। यदि सम्भव हुआ तो दिल्ली मे मिल लूगा। आगरा उतरना तो सम्भव न होगा क्योंकि बच्चे रहेंगे।

प्रेषक : केदार,
बांदा

सस्नेह तु०
केदार

१५-१०-[६६]

प्रिय केदार,

मैं अभी १२-१० को दिल्ली ले लौटा हूं। २४-२५/१० को इलाहाबाद हूं गा—विवेचना गोष्ठी में। इस अवसर पर बांदा आने का विचार था किन्तु उसके बाद ही बड़ौदा और उज्जैन जाना है। कुछ अन्य आवश्यक कार्य है जिनसे २४ के पहले निकल नही सकता। यदि २३ को यहां आ जाओ तो साथ इलाहाबाद चल

सकते हैं। यदि ट्रेन का नाम लिख दो तो स्टेशन (राजामंडी) पर मिलूं। रास्ता तो यही हो गा। शेष कुशल।

तुम्हारा
रामविलास

बांदा
२३-१२-६६

प्रिय भाई,

कई दिन से सोच रहा था कि आगरे चलूं। वहीं बड़े दिन की छुट्टियां बिताऊं। पर न हो सका। कल मद्रास जा रहा हूं, बेटे के पास। ३१/१२ तक लौटूंगा। उसको फिल्म की शूटिंग के लिए २६/१२ को केरल जाना है। "जन्मभूमि" नाम है। National Integration का विषय है।

अब बांदा कब आओगे ?

भूल गये क्या ?

इधर दौरा तो काफी कर रहे हो। प्रयाग भी गये थे। दिनमान में पढ़ा था मैंने। बच्चे अच्छी तरह से होंगे। मालकिन की तबियत ठीक होगी।

हम लोग ठीक हैं।

मौसम ठंढा है।

सब को हम लोगों का नमस्कार।

नागार्जुन दिल्ली हैं। नागर का पत्र आया था।

सस्नेह तु० केदार

प्रेषक : केदारनाथ अग्रवाल
ऐडवोकेट,
बांदा (उ. प्र.)

५-१-६७

प्रिय केदार,

आशा है, मद्रास से लौट आये हो गे और साथ में कुछ कविताएँ--या उनके लिये सामग्री भी लाये हो गे। आजकल यहाँ बेहद ठंढ है। पहले मुझे सर्दी हुई, उसके बाद पत्नी को। इस बार विद्यार्थियों के संघर्ष के कारण कालेज काफी दिन बन्द रहा। बड़े दिन की छुट्टियाँ नहीं हुईं। अब फरवरी के अंत तक यह चर्खा चले गा। इसलिये बाँदा आना खटाई में है। वैसे भी जब तक यहाँ कोई लड़का छुट्टियों

में न हो, बाहर निकलना नहीं हो पाता। शायद गर्मियों में, या दशहरे में···

तुम्हारा
रामविलास

बांदा
२०-१-६७

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिल गया था। गर्मियों में या दशहरे में तुम्हारा आना सम्भव होगा— यह भविष्य की बात है।

वैसे मैं स्वयं जब चाहूंगा तब आगरा आ धमकूंगा। कोई बात ऐसी नहीं है कि मुझे चिन्ता हो।

मद्रास तो कविताएं नहीं दे सका—क्योंकि व्यस्त रहा था उन लोगों में जो फिल्म बनाने की योजना में लगे थे। केरल जाना था;—अवकाश न था। वहां जाता तो जरूर कविताएं लिख लाता। शायद कभी जा सकूं और वहां की प्रकृति समेट ला सकू। इधर पता चला था कि तुम इलाहाबाद अक्तूबर में रहे हो और वहां कुछ विचार विनिमय हुआ था। अच्छा रहा होगा। वैसे घूमते रहा ही करते हो। औरंगाबाद इत्यादि नगरों में।

इधर चुनाव का दमकला दहाड़ रहा है—हटो-बचो करके दौड़ रहा है। बांदा बैल को हुरेठता है या बैल उसे। देखो क्या हो। ठंढ है—रात में जोर की। दिन तो धूप लपेट कर गरमाता रहता है।

सस्नेह तु० केदार

बांदा
२०-५-६७

प्रिय डाक्टर,

८/५ का पत्र सामने है। आज अतर्रा डिग्री कालेज के प्रिंसपल से पूछताछ करने पर पता चला कि श्री सुभाषचंद्र शर्मा वहां Temporary थे। जुलाई में फिर वहीं उनकी नियुक्ति होने की सम्भावना है। वह गोरे रंग के—शरीर से लम्बी गठन के स्वस्थ स्वभाव के युवक हैं। उनका Pay Scale 400 to 800 का है। वह धूम्रपान भी नही करते। मैं स्वयं वहां जा कर उनसे मिलना चाहता था पर डिगरी कालेज के बंद होने से वह वहां से चले गये है। जुलाई में जा कर देख सकता हूं।

चि० विजय के शुभ विवाह का मुद्रित निमंत्रण मिला। प्रयास करूंगा कि इस भयंकर 'भीमा' गरमी में भी यहां से जलता-भुनता अलीगढ़ पहुंचू या आगरे ही। लेकिन सब कुछ निर्भर है कचहरी पर। न पहुंचने पर गालिया न देना। पहुंचने पर शीतल जल और मिष्ठ भाषण देना। क्या बताएं कि शादी की साइत भी बनी तो अच्छे मौसम में न बनी और किसी लम्बी छुट्टी के दिनों में न बनी। बहरहाल पके आमों के दिनों की शादी ही ठेठ हिन्दुस्तानी शादी है। तभी सब ब्याहे जाते हैं।

तुमने भी तो आग का घर आगरा रहने के लिए चुना है।

कुटुम्बियों को नमस्कार। मुंशी को भी।

सस्नेह तु०
केदार

२-६-६७

प्रिय केदार,

तुम्हारा कार्ड मिला। अतर्रा वाले यवक के संबन्ध में बातचीत का सिल-सिला खत्म हो गया है। इसलिये उसके बारे मे और जानकारी पाने की कोशिश न करना।

विजय का विवाह पिछली जनवरी में करने वाले थे किन्तु इससे परीक्षा की तैयारी में व्यस्त लड़कियों को न पढ़ने का एक बहाना मिलता, –१०-१५ दिन तक चाहने पर भी वे न पढ़ पातीं—इसलिये मजबूरन गर्मियो मे रखना पड़ा। २३ मई को लखनऊ में भतीजी का ब्याह, २७ को विजय का—खूब लू खाई, खूब जगे, खूब थके, बुढिया पुराण के हामियो को खूब गालियां दी।

२६-२७ को किशोरीदास जी वाजपेयी कनखल (हरिद्वार) मे रामचद्र वर्मा का अभिनंदन कर रहे हैं। शायद मैं जाऊं। तुम्हारा उन दिनों दिल्ली की ओर आने का कार्यक्रम हो तो लिखना; मसूरी-देहरादून की हवा खाई जाय।

तुम्हारा
रामविलास

३०, नयी राजामंडी,
आगरा-२
३१-१२-६७

प्रिय केदार,

नया वर्ष फले। खूब कविताएँ लिखो।

तुम्हारे पिछले कार्ड में "अमृत और विष" की आलोचना पर राय थी कि

विस्तार बहुत है । नतीजा यह कि निराला जी की जीवनी के तीन अध्याय जो सौ-सौ पन्ने के थे, मैंने काट कर पचास-पचास के किये ।

इस महीने के शुरू में मैं दिल्ली गया था । शमशेर से मिला । तुम्हारे लबे पत्र की बात सुनी । देखने को नहीं मिला । भीड़-भाड़ थी । नामवर से मैंने कहा कि वह पत्र आलोचना में छाप दे । शमशेर गद्य बहुत अच्छा लिखते है; मैंने उनके कई पुराने लेखों की तारीफ की । तुम्हारे ऊपर उनका लेख मुझे बहुत पसन्द आया । अब भीड़ छटने लगी है । नयी कविता का नयापन पुराना हो गया । कविता चमकने लगी । शमशेर का लेख उसी का प्रमाण है ।

नागार्जुन इलाहाबाद हैं । मिले तो न होंगे ? शायद जनवरी में दिल्ली आये । नरोत्तम एक नया वार्षिक पत्र निकाल रहे हैं—"ठिठोली" । शायद विज्ञप्ति मिली हो । आज यहां कई दिनों की वर्षा के बाद आसमान खुला है ।

आशा है, सपरिवार प्रसन्न हो ।

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

बांदा
४-१-६८

प्रिय डाक्टर,

नये वर्ष की शुभकामनाएं मिलीं । मैं भी शुभकामनाएं भेजता हूं । निराला की पुस्तक भरपूर शक्ति से तयार कर लो । प्रकाश में आये । फिर से कविता जगमगाये ।

काट पीट करना तो तुम्हारा पुराना काम है । लोग ऐसा कहते रहे है । हा, अपने लिखे को काट रहे हो, यह नया श्रेयस्कर काम है । वैसे बहुत फैलाव का मैं कभी कायल नहीं रहा । न गद्य में—न पद्य में । पुस्तक पढ़ने वाला तह में डूबे और फिर उबरे और नयी प्रतीति से सब कुछ आसपास का ग्रहण करे ।

दिल्ली के लोग या तो हल्ला मचाना जानते हैं—या विसंगति में सने सुनसान में चले जाते है, जहां वही-वही रहते हैं । कविता को उन्होंने अपने हाथो से मसल कर फेंक दिया है और अपने खुद को 'थेगड़ही' शक्ल में खड़ा कर दिया है—धोखार की तरह । हमें ऐसा काम अच्छा नहीं लगता । नया भी ऐसा गया [गुजरा] हो सकता है हम नहीं सोचते थे । बस दिलासा इसी से मिलता है कि वह खुद गिर पड़ रहे हैं और कविता फिर गरम-गरम सांस ले कर जीने-जागने और गाने लगी है । समय सब कुछ कूड़ा करकट फेंक देता है और उसी को संवारता-सजाता और जिन्दा रखता है जो इस योग्य होता है । धैर्य की कमी से ही हमारे भाई लोग

भटक जाया करते हैं। वही हुआ है।

शमशेर का लेख तुम्हें पसन्द आया तो कोई वजह नहीं है कि हमें क्यो न पसन्द आये। बस बात इतनी है कि कुछ Facts ही पर कुछ-कुछ विचार किया गया है। Formalist होने का खंडन जो किया गया है वह अज्ञेय के लिए दृष्टि दी गयी है। बहरहाल जब सब चुप हों तब शमशेर का लेख अवश्य ही महत्त्व और महत्ता रखता है। हम तो अपने बारे में चुप ही रहेंगे। तभी बोलेंगे जब कोई छत्ता छेड़ेंगे [छेड़ेगा]। मैं तो कविता को खुद जीने देना चाहता हूं और अपनी उम्र खोजने देना चाहता हूं। ठोंक-पीट का काम कुछ ही लोगों के लिये जरूरी होता है। वैसे मैं बताऊं मेरा [मेरी] रचनायें बहुत से लोगों ने पसंद की हैं। बहुतों ने नापसन्द की है। पर मैं स्वयं आस्थावान हूं। अभी उस पर नयी पीढ़ी जरा ध्यान से गौर कर सकती है कि हम कहां खड़े है। खैर। नामवर शायद ही कुछ लिखें। वह दोनों तरफ दांव पेंच से देखते हैं। बरसों से ऐसा कर रहे हैं। नये के प्रति आग्रही हो कर नया क्या है—इसे पकड़ने में इधर उधर झूलते रहते हैं।

मैं [ने] तुम्हारी भाषा विज्ञान वाली पुस्तक को दो विद्वान व्यक्तियों को पढ़ाया। मान गये वे दोनों। बधाई लो।

नागार्जुन इलाहाबाद है। भेंट क्या होगी ? न तुमसे होती है—न उनसे। क्या आ सकोगे बसंत पंचमी में। यदि हां तो कैसे और क्या ले कर ? कुछ विद्यार्थी पूछते हैं। मैंने कह दिया है कि मेरी सामर्थ्य के बाहर है तुम्हें बुलाना। जैसा लिखोगे बता दूगा। यह डिगरी कालेज की ओर से नहीं कह रहा। अलग के लोग है।

केन खूब जानदार रवानी से बह रही है। मंगल के दिन ४ घंटे सैर कर के देख आया। मौसम में वही मस्ती है जो पहले पाया करता था। एक तरफ कचहरी खाती चली जाती है दिन पर दिन मेरी उम्र—दूसरी तरफ वह प्रकृति बढ़ाती चली जाती है। अभी जिऊंगा। शौक मे।

और जो हाल हो लिखना। नरोत्तम का पत्र आया था। 'ठिठोली' निकलेगी। देखो, चले तो जानें। बेचारा परेशान है ही। बच्चों को प्यार।

सस्नेह तु० केदार

३०, नई राजामंडी,
आगरा-२
२८-१-६८

प्रिय केदार,

बसन्त पंचमी पर तो न आ सकूं गा पर इस वर्ष आऊं गा जरूर—अप्रैल या मई में और दो-तीन दिन रहूं गा। निश्चित।

दिल्ली से नरोत्तम ने यह समाचार दिया है कि उन्हे दिल का दौरा पडा था। इधर वह बेहद मानसिक चिन्ताओ से ग्रस्त रहे। हिन्दी टाइम्स बन्द हो गया, वह सिलसिला भी टूट गया। बुढापा और अनिश्चित जीवन, अकेलेपन और टूटने की बातें करते है डालमिया के वेतन भोगी पत्रकार।

इधर सर्दी बहुत पडी। कुछ सर्दी, कुछ व्यर्थ के सांस्कृतिक समारोह। बडा समय नष्ट हुआ। अब पुस्तक मे फिर जुट रहा हूँ। 'धर्मयुग' मे मेरा लेख न देखा हो तो देखना। शेष कुशल।

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

[फर्वरी १९६८]

सुना तुमने—अब नरोत्तम नही रहे। ५/२ को ४-१/२ [साढ़े चार] बजे शाम घर छोड कर अनंत की यात्रा में चले गये। यह क्या हो गया ? अब मौत हम लोगो की तरफ बढ रही है। जुझारू दोस्त को अचानक ले गयी। वह शायद बेकार होते ही दिल तोड बैठे थे। वैसे दमदार आदमी थे और अभी जीने की इच्छा रखते थे। उनके बेटे प्रिय विजय का पत्र कल शाम मिला और तभी यह शोक सवाद मिला। तुम्हारे पत्र से यह तो मालुम हुआ था कि वह बहुत परेशान है पर यह आभास नही हुआ था कि परेशानी जानलेवा परेशानी हो चुकी है। तुम भी उनके बेटे को धैर्य बंधाना। समय मिलते ही वहा जाना चाहूगा। वह बडा अक्खड और फक्कड था। पुरानी यादे ताजी हो गयी है। एक-एक बात याद कर रहा हू और उनका चल-चित्र देख रहा हूं। अन्त मे वह टिटिहरी शरीर टूट ही तो गया। कोई भी दिल्ली में उस टूट रहे शरीर को टूटने से न बचा सका। बस।

तुम्हारा सस्नेह
केदार

१५-२-[१९६८]

हां, भाई सुना। विजय नागर के कार्ड से ही मालूम हुआ। न रेडियो पर कोई खबर न अखबार मे। पूंजीवाद में लेखक की स्वाधीनता के शिकार नरोत्तम नागर। जिसके साथ हमारे तुम्हारे प्रारंभिक साहित्यिक जीवन की स्मृतियाँ जुड़ी हैं। मुंशी दाह कर्म मे शामिल थे। एक हार्ट अटैक जनवरी मे हुआ था। उससे बच गये थे। दूसरा ले गया। कुछ गृहस्थी सबन्धी चिन्ताएं ऐसी थी जिन पर उनका या उनके मित्रो का बस न था। खैर, जो रह गये है, उन्हें अभी रहना है और लड़ना है।

रामविलास

३०, नयी राजामंडी,
आगरा
१२-३-६८

प्रिय केदार,

मैं २७ मार्च की शाम को झांसी से बांदा चलूंगा। २८ मार्च (वृहस्पति) के सबेरे बांदा पहुँचूंगा। दिन भर बांदा रहूंगा; तुम्हें अवकाश हुआ तो चित्रकूट भी चल सकते हैं। दूसरे दिन सबेरे किसी बस या ट्रेन से इलाहाबाद जाऊंगा। यहां उस तरफ का टाइम टेबल नहीं मिला। बांदा से इलाहाबाद सबेरे कोई गाड़ी जाती हो तो बांदा से चलने और उसके इलाहाबाद पहुँचने का समय लिख देना। मैं नागार्जुन को लिख रहा हूं कि वह भी २८ को बांदा में हों। तुम वहां मेरा कोई कार्यक्रम रखना चाहो तो रख लेना। वैसे कचहरी से बचा सारा समय हमें मिले, यही तमन्ना है। प्यार।

तु०
रामविलास

बांदा (उ० प्र०)
१४-३-६८

प्रिय भाई,

इलाहाबाद से रेडियो होली गा रहा है, 'मोहे न मारो पिचकारी गिरधारी'। मैं सिर झुकाए जनाब को पत्र लिख रहा हूं और सामने पड़ा है आगरे से आया और कल ही मिला पत्र। बेहद खुशी हुई कि २७/३ की शाम को झांसी से चल कर रात को बांदा पहुंच रहे हो और इससे ज्यादा खुशी इस बात की हुई कि २८/३ को बांदा में ठहर कर २९/३ को सबेरे इलाहाबाद वापस जा रहे हो। यह एक दिन का यहां ठहरना कंजूसी का ठहरना है। फिर भी संतोष कर लूगा यदि तुम नहीं ठहरोगे २/१ दिन और। २९/३ को सबेर ६ बजे यहां से बस जाती है जो इलाहाबाद उसी दिन ११ बजे दिन तक पहुंचा देगी। ट्रेन तो दोपहर को १-३० बजे मिलेगी। मानिकपुर होकर—९/१० बजे रात तक इलाहाबाद ले पहुंचेगी।

नागार्जुन भी आयेंगे—यह और सुखद बात है। वह भी व्यस्त और व्यग्र हैं। लेकिन दिन एक में चले जाने की बात कुछ न्याय-संगत नहीं लगती। कार्यक्रम भी हो और चित्रकूट भी हो—यह सब कैसे होगा। ज़रा कुछ तो सोचो।

कचहरी से बचा समय जरूर मिलेगा। मैं तो ४० [रुपये] का भी नुकसान करूंगा और उस दिन कचहरी गोल करूंगा यदि इसकी आवश्यकता हुई। 'तमन्ना' खुशबू-

दार है और हमारी आत्मा मे बस गयी है। होली की अबीरी-गुलाली बदगी।

सस्नेह
केदार

१९-३-६८

प्रिय केदार,

१४/३ का कार्ड मिला। दो-तीन ठहरते तो जरूर ज्यादा मजा आता लेकिन हम लोग प्रसार की जगह घनत्व से काम ले ले गे। और कोई कार्यक्रम नही, केवल तुम्हे देखना, तुम्हारी बाते सुनना। चित्रकूट वगैरह फिर देखा जाय गा। नागा० का जवाब नही आया। इ से उनके बादा आने के बारे मे थोडा सशय हो रहा है। इलाहाबाद वहा से बस द्वारा पाच घटे दूर है, मालूम न था। क्या रात को कोई गाडी नही जाती मानिकपुर मे बदले बिना कोई सीधी बोगी ? हो तो २८ मार्च की रात के लिए (फर्स्ट मे) इलाहाबाद का रिजर्वेशन करा लेना। दूसरे दिन शाम को इलाहाबाद से लौटू गा, इसलिए वहा के लिए एक दिन मिल जाय तो ठीक। वर्ना सबेरे की बस। बस

तुम्हारा
रामविलास

[२२-६-६८]

तुम्हारे बादा आने पर

ने देखा था
मैने
    देवदार !
तुम आये
    और दिख गया मुझे .
दृढ स्तम्भ पेड
मेरी आखो मे खड़ा
अटूट आस्था मे
    हो गया बडा
दिन हो गया
    इद्रियो के अंदर
सूर्य को पा गयी

सिंधु की लहरें
पानी के अस्तित्व में
मैं और कविता
जी भर बटोरते रहे धूप का धन
एक साथ,
एक साथ जीने के लिए
खुल कर बंद हो गयी
चिरौटे की लाल चोंच
और तुम
आये और गये हो गये।
—केदारनाथ अग्रवाल

बांदा
१६-१०-६८
८ बजे सुबह

प्रिय डाक्टर,

कल फिर आर्य-कन्या पाठशाला बांदा के नव निर्मित खुले नाट्य गृह में उसी पाठशाला की छात्राओं द्वारा 'राम की शक्तिपूजा' का सपाठ मूक अभिनय प्रदर्शित किया गया। अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ यह भी दिखाया गया। इस बार पिछले वर्ष से अधिक सफल रहा इसका अभिनय और पाठ [—] और प्रकाश व्यवस्था भी भाव-भंगिमा के बदलने पर बदलती रही। जन-समूह आकाश की क्षत्रछाया में तारों की झिलमिलाहट में, स्तब्ध बैठा दृश्य देखता रहा और भरपूर प्रभावित होता रहा। निस्संदेह यह प्रदर्शन अत्यधिक सफल रहा। प्रयाग से अतिरिक्त शिक्षा निर्देशक श्री रामकुमार बाउंडरा [बांउंड्रा] बांदा आये थे। इस प्रदर्शन को समस्त सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ उन्होंने भी ७ बजे से १० बजे रात तक देखा। टिकट लगा कर यह आयोजन किया गया। बात यह थी कि विज्ञान-भवन के निर्माण के लिए धन की आवश्यकता है और किसी से दबाव से या असर डाल कर पैसा बलात खींचना अनुचित होता इसीलिए टिकट लगाया गया। काश, तुम होते और तुम भी इसे देखते। अफसोस है कि मेरा कोई भी साहित्यिक मित्र न उस साल रहा, न इस साल। मजबूरी है। कभी-कभी जी कचोट उठता है कि इस बेबसी को तोड़ा जाये। पर वह नहीं टूटती और परिस्थितियां हरेक को दूसरे से अलग किये रहती हैं। इस बार डा० बच्चन और श्री सुमित्रानंदन पंत आने वाले थे। सबने स्वीकृति दे दी थी। पर अभाग्यवश बच्चन बीमार पड़ गये और इसीलिए फिर

पंत जी भी न पधार सके। वह भी देख लेते कि आशिक पाठ के साथ भी मूक अभिनय कितना मार्मिक हो सकता है। लोगो को यह सूझता ही नहीं कि यह कविता कितनी नाटकीय है और इसका स्वभाव तो प्रदर्शित हो कर तन-मन-प्राण पर छा जाता है। 'है अमा निशा···' का अंश 'उगलता गगन घन अंधकार—[']' की गेय-गूज अब भी प्रभावित किये है। रामायण का यह निचोड़ युग के यथार्थ के इस जन-समूह के लिए प्रेरणा और स्फूर्ति देता है और कुठा से उभरने [उबरने] की ललक पैदा करता है। जब मैं देख रहा था तब अपने मनोविकारो को भी पढ़ रहा था और आज की कविता के स्वरो के साथ परख रहा था। ऐसे में लग रहा था कि हम नये भले ही हो गये हों, हमने जीवन जीने की क्षमता को किसी भी ढंग से ग्रहण नहीं किया। ऐसा लगता था कि न मौत मार सकती है —न आसुरी शक्तियां मनुष्य को परास्त कर सकती है, हां यदि वह केवल जीवन की जैविक लालसा को दूसरों के हित में कर्म और कर्तव्य से जोड देता है। राम ने सशय किया आज के आदमी को भी ऐसा ही सशय आये दिन सताता है। आज के कवि तो इसके बेहद शिकार है। पर अंतर यह है कि राम अपनी जैविक शक्तियो को कर्तव्य और कर्म की ओर लगा सके थे। और एक सार्थकता को सिद्ध कर रहे थे। लेकिन आज का आदमी और आज का कवि यह कुछ नही कह रहा। वह अपने मे मर रहा है और कवि तो अपनी जैविक शक्ति को कैद मे मार रहा है न वह काम करता है -न सघर्ष करता है—न देश देखता है—न दिशा। वह है कि खुद मे खोया-सोया अस्तित्व के दिशाहीन देश मे रहना है। क्या खूब है वे जो नगे नाचते हैं और कहते है कि हम स्वतत्र है और अपने अस्तित्व की रक्षा कर रहे है और अपनी आदिम मूल प्रवृत्तियो का स्वाभाविक प्रदर्शन कर रहे है—और जीवन इस प्रदर्शन के सिवाय कुछ नही है। जैसे नाचना और नगा होना उन्हे कोई आदिम व्यक्ति बता गया है। आदिम अस्तित्व की शहर मे प्राप्ति भी तो एक तरह का आरोपण है। अपने सामने के दृश्य मे जी कर भी अतीत के दृश्य मे खिसकने का प्रयास करना और फिर वहा पहुच जाने का प्रकाशन करना— यह सब कितना झूठ है। दृश्य – आज का परिवेश—तो जकडे है –अतीत का परिवेश तो मृत क्रिया-शून्य हो चुका है। उसमे फिर जीना नितात भ्रामक है। खैर यह सब "राम की शक्तिपूजा' ने मुझे याद दिला दिया।

तुमने कविता लिखी थी न कि केन किनारे निराला के स्वर गूजें। वह हो रहा है। दिन-ब-दिन होगा। बादा की रुचि को बदलना है। उसे उसको शक्तियों का ज्ञान कराना है। जरूर कराना है। यदि आशिक रूप से भी यह क्रिया सम्पन्न हो सकी तो भविष्य उसे और समग्रता के साथ उभार कर सामने लायेगा। ज्ञान का अर्जन कर्म के साथ जोडना ही जीवन जीने की दिशा में वैज्ञानिक गमन है। अच्छा तो नमस्कार।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

८-११-६८

प्रिय केदार,

बहुत दिनों वाद तुम्हारा पत्र मिला। इससे पहले तुम्हारा कविता वाला पोस्ट-कार्ड मिला था। उसका उत्तर तुम्हें मिला या नही, पता नहीं। मैंने भेजा अवश्य था।

तुम्हारे यहां निराला कविता समारोह सफल हुआ, यह जान कर प्रसन्नता हुई। इस वर्ष हमने निराला जी की जीवनी पूरी कर डाली। जून के अंतिम सप्ताह में राजकमल[1] के हवाले कर आये थे पर अब भी छपने का काम शुरू नहीं हुआ। उसका पहला अध्याय 'आलोचना' में छपा था। नामवर शायद तुम्हें आलो० नही भेजते, नहीं तो तुम मुझे उसके बारे में लिखते अवश्य।

इन दिनों मैं एक निबन्ध लिखने की तैयारी कर रहा हूँ—हिंदी कविता ('३८'-६८)। हंस के पन्ने पलटते हुए एक अंक में त्रिलोचन, माचवे और वीरेश्वर की लिखा 'युग की गंगा' की आलोचनाएँ पढ़ी। 'हंस' के और अंकों मे उस समय की कविताएँ पढ़ कर लगा कि छायावाद के बाद हिंदी कविता को विकसित करने का श्रेय प्रगतिशील कवियों को है जिनमें तुम्हारी भूमिका प्रमुख है। नयी कविता वादी इस तथ्य को खूब मूँद-ढाँक कर रखते है। नामवर सिह 'नयी कविता' के नये वकील है। एक किताब लिखी है—'कविता के नये प्रतिमान'। इसमे भी उस सारे विकास को दर किनार किया गया है। बहर हाल नरेन्द्र —सुमन —वीरेश्वर आदि उस समय के यशस्वी कवि या तो खामोश हो गये या दल बदल कर निर्जीव हो गये। तुम मैदान में अब भी डटे हो, यह मुझ जैसो के लिए विशेष प्रसन्नता का कारण है।

घर गृहस्थी के जंजाल के कारण बाहर निकलना नही हो पाता। तुम से मिलने को बहुत जी करता है। इस समय विश्व समाजवादी आंदोलन संकट से हो कर गुज़र रहा है। हिंदुस्तान में राजनीतिक संकट के साथ सांस्कृतिक संकट भी है। फिर भी कलम मे बड़ी ताकत है। सकट आयें गे, जायँ गे; कलम की उपज बनी रहे गी। बहुत बहुत प्यार।

तुम्हारा
रामविलास

1. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली। [प्र० वि०]

बादा
११-११-६८

प्रिय डाक्टर,

८/११ का पत्र दोपहर कचहरी मे मिला। पढ अब सका ५ बजे शाम, काम के बाद घर लौटने पर।

तुम्हारा वह पत्र मुझे मिल गया था जिसमे तुमने मेरे पोस्टकार्ड की कविता पर अपने उद्‌गार व्यक्त किये थे। पर उसके बारे मे जानबूझ कर चुप इसलिए रह गया था क्योंकि वह उद्‌गार मेरे बारे मे थे। अपनी तारीफ सुन कर खामोश रहना—यही मैंने सीखा है।

हा, नामवर मुझे न आलोचना भेजते है, न याद करते है। यह खूबी है। मैं उनका शुक्रगुजार हू कि वह मुझे मरा हुआ समझ चुके है। उनके विचारो का मुझ पर कोई असर नही पडता। वे खुश रहे अपनी राह चले—अपनी आखो से देखे —सुनें और समझे और जनवादी अभिव्यक्ति दे। मुझे उनसे गिला न तब थी, न अब है। समय को सब परखता है। सब कुछ खुल कर सामने आता है। काव्य मे कृत्रिमता बरकरार नही रही—न रहेगी। जो वह करत हे वह उन्ही के योग्य है।

हमने तो लडकपन से कविता से आख लडाई है और अब तक और मरते दम तक—उसके रहे है और रहेगे। गलत-सही जो हमने समझा है उसे हमने दिया है। हमने इश्क इसलिए नही किया कि हम [हमे] यश मिले या इनाम मिले या कोई हमारे नाम की माला जपे। इश्क का मजा है। वह हम पा रहे हे। सारी दुनिया खिलाफ हो जाये हमे हमारी कविता सबसे अच्छी लगती है। अब तो मैं कविता पकड रहा हू।

तुम हिंदी कविता ('३८-'६८) पर निबध लिख रहे हो। यह शुभ है। बहुत शुभ हे। जो उचित समझो—लिखो। न मेरा लिहाज करो—न किसी का। नामवर की पुस्तक जैसी होगी वैसी हमे मालूम है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण ले कर विवेचन करना मुश्किल और मशक्कत चाहता है। वहा तो बाहर से आये विचारो का उद्‌घाटन रहता हे।

मिलने की बलवती लालसा मेरी भी है। पर करू तो क्या करू। वही चक्कर है और मक्कर से घिरा जी रहा हू। देखो मै ही प्रयास करूगा आगरा आने का।

राजनीतिक सकट घनघोर हे। सास्कृतिक सकट भी वैसा है। पर दोस्त सब कुछ सामने आयगा जो जैसा गलत-सही हे। हा हमने आर्य कन्या पाठशाला (इटर) के लिए उसी के प्रागण मे Open Air Theatre बनवाया है। अभी हाल मे लखनऊ से श्री खडे (Arts School Professor) आये थे। उनसे एक Panel में सीमेंट पर कुछ उम्दा चित्राकन कराये है। वे चाकू से तराश कर बनाये गये है। खूब जोरदार के है। आने पर देखोगे ही। यह बड़ा अच्छा काम हुआ है।

और सब ठीक है।

सस्नेह तु०
केदार

पुनश्च :—सुना है कि जवाहर चौधरी अक्षर-प्रकाशन से निकल गये। चलो ठीक हुआ। मैं तो तभी यह सोच रहा था। अब क्यों और कहां हैं? शायद वह भूल गये।

केदार

२०-११-६८

प्रिय केदार,

तुम्हारा ११/११ का पत्र मिला। चौधरी अक्षर प्रकाशन से अलग हो गये हैं, और अब अपना अलग प्रकाशन खोल रहे हैं—'शब्दकार'; पता है, २२०३ गली डकौतान, तुर्कमान गेट, दिल्ली।

मुंशी की आंतों में छाले पड़ गये थे। रूस गये थे, महीने भर बाद लौट आये। अभी विस्तृत समाचार नहीं मिले। तुम्हारे पास 'युग की गंगा' की कोई फालतू प्रति हो तो भेज दो। न हो तो उसके प्रकाशन का साल लिख भेजो।

शेष कुशल।

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

बांदा
२२-११-६८
शाम ५ बजे

प्रिय डाक्टर,

अभी अभी घर आने पर पोस्टकार्ड मिला। तत्काल ही डायरी देख कर अपनी पुस्तकों की जन्म तिथियां लिख रहा हूं।

१. 'युग की गंगा' मार्च १६४७ में } बम्बई से
२. 'नींद के बादल' अगस्त १६४७ में }

३. 'लोक और आलोक' मई १६५७, में प्रयाग से

४. 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' अक्तूबर १६६५ में [प्रयाग से]

सिवाय अंतिम पुस्तक के अन्य किताबों की प्रतियां मेरे पास नहीं है। न प्रकाशक हैं—न मिल सकती हैं।

मुंशी का हाल लिखना। मैं एक पत्र जवाहर चौधरी को भी लिख रहा हूं।

और सब ठीक है। बेटा मद्रास है। बम्बई गया था—शायद मद्रास लौट गया

हो। 'जन्मभूमि' पूरी तयार हो गयी है। प्रदर्शन होगा वहीं केरल में। सूचना अभी नहीं आयी।

बिटियों का क्या हाल है ? अब तो सब पढ़ चुकी होंगी ? सबको नमस्ते।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

बांदा
१८-१२-६८
प्रातः ६ बजे

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिले अरसा हुआ। तुमने गद्य के बारे में ब्यौरा पूछा है। यह तो कठिन है। वैसे तमाम गद्य जो मैंने लिखा है मेरे पास है। वह सब भेज सकता हूं। लेकिन आखिर इस सबकी महत्ता ही क्या है। व्यर्थ समय बरबाद करोगे मेरे बारे में।

बड़े दिन मे मद्रास जाऊंगा या बरौनी या फिर तुम्हारे यहा आऊंगा। देखो क्या प्रोग्राम बनता है। श्री जवाहर चौधरी का पत्र आया है।

पता नहीं मुंशी का क्या हाल है, अब ? लिखना। आशा है कि बेटियां ठीक है और पढ़ रही है।

हां, गृह-स्वामिनी को हम दोनों का नमस्कार।

प्रेषक —केदारनाथ अग्रवाल.
एडवोकेट, बांदा (उ० प्र०)

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

बांदा
११-१-६९

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिला। मैंने सोचा कि तुम्हें कोई लाभ न होगा मेरे अन्य लेखों के देखने से। एक तो वह arranged नहीं हैं—दूसरे उन्हें पढ़ कर भेजने में समय बहुत लगेगा। अतएव अब इन्तजार न करना। मेरे विचार 'नयी कविता' के संबंध में वही हैं जो एक विवेकी व्यक्ति के होने चाहिए। तुम्हें तो उस खेमे के लोगों के विचारों की विवेचना करनी है। और सब ठीक है। मौसम सुधर गया है।

बेटे-बेटियां ठीक होंगे। योग्य सेवा लिखना। प्रिय मुंशी के क्या हाल हैं ? लिखना जरूर।

सस्नेह तु०
केदार

१३-१-६६

प्रिय केदार,

मुंशी का हाल अच्छा है। रूस गये थे। वहां से तगड़े हो कर लौटे है। पेट के छल [छाले] दब जाते है, पूरी तरह मिटते नही। मुंशी अपने जीवन में नियमित नहीं हो पाते न समय पर खाना, न समय पर सोना—और रहते बहुत गलत जगह हैं ' बदलने का वादा करते हैं लेकिन वादा कोई और पूरा करते हों गे, मुंशी नहीं।

तुम्हारा एक लेख निराला के गीतों पर बिहार की 'रश्मि' पत्रिका में देखा। बढ़िया था।

और सब ठीक है। पत्नी को थोड़ा हाई ब्लड प्रेशर है। कम हो रहा है। बेटियां ठीक है।

तुम्हारा
रामविलास

बांदा (उ० प्र०)
१-३-६६
शाम ७-१/२ [साढ़े सात]/बजे

प्रिय डाक्टर,

आज एक शादी थी—४ बजे। कचहरी से सीधे वहां गया था। ५-१/२ [साढ़े पाँच]/बजे वहां से घर लौट कर आया। देखा मेज पर 'निराला की साहित्य साधना' रखी है। बड़ी देर तक बार-बार आदि से अंत तक पन्ने खोल-खोल कर देखता रहा—न जाने क्यों पढ़ कुछ न सका। इतना भावोद्रेक हो गया कि सिवाय मुग्ध होने के कुछ न कर सका। मैंने समझा यही सहहृदयता [सहृदयता] मेरी पूंजी है। यह बनी है बरक़रार है—मेरे लिए यही सब-कुछ है। मैं पुस्तक तो डट कर इस उद्रेक के कम होने पर पढ़ूंगा ही। अभी तो इसे रात-भर बार-बार छुऊंगा, देखूंगा—पलटूंगा—और उसी तरह सूंघूंगा जैसे कोई अपने लगाये पेड़ के बेले को सूंघता है। बड़ी महक मारते है। खुश हूं—हृदय से दुआ देता हूं कि तुमने जो मेहनत की है वह दूसरों को सही रास्ता दे और निराला सब पर छा जाये—सब पर बरस कर सब को सदाबहार की तरह हरा कर दे।

बेक़ाबू मन विवेक को पास नहीं फटकने देता। यकीन जानों कि मेरी मनोदशा इस समय वैसी ही है जैसी एक मां की होती है जिसने पुत्र को अभी-अभी जन्म दिया है और मुंह देख कर बार-बार चूम लेती है। हालां कि तुमने जनम दिया है इस पुस्तक को। क्या खूब हूं कि ममता उमड़ पड़ी है। फिर लिखूंगा।

सस्नेह तु०
केदार

५-३-६९

प्रिय केदार,

तुम्हारा १/३ का कार्ड मिला। आराम से, फुर्सत में पढ़ना।

विवेक तो बहुतों के पास है। सहृदयता की पूंजी बहुत कम लोगों के पास है। इसी के सहारे भविष्य को देखते हैं और जी रहे है।

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

बांदा
५-३-६९
रात ९-१/२ [साढ़े नौ] बजे

प्रिय डाक्टर,

तुम्हारी पुस्तक: निराला की साहित्य साधना: पीले शब्दो में छपी—रामविलाम शर्मा की साधना: मिल गयी थी। एक पत्र भी उस दिन मैने तुम्हें लिखा था। वह जरूर मिल गया होगा।

तब मे अब तक मैं इसी पुस्तक से चिपका हुआ हूं। होली की छुट्टी भी है। इसमे कचहरी मे पिंड छूटा रहा है। मगर अब मेरी मनोदशा वही बनी हुई है जो मनोदशा Lear पढ़ने के समय होती थी। मैं ग़र्क हूं इसके अन्दर। यह मुझे बाहर नही आने देती। मेरा सम्पूर्ण व्यक्तित्व अपार मानव सहानुभूति से द्रवित है। मैं एक तरह मे जड़ता खो चुका हूं। स्थल-स्थल पर करुणा से भर-भर कर रो पड़ा हूं। कहीं-कही क्रोध और आवेश से कुठारवत तमक उठा हूं। बड़े मार्मिक ढंग से तुमने निराला का वस्तुपरक अंकन किया है। एक साथ पिछला सारा Scroll of time खुल कर सामने आ गया। निराला सदेह चलते-फिरते, बैठे, हंसते, गाते, कविता लिखते, पढ़ते, बातें करते, जूझते और तड़पते दिखायी देने लगे। एक के बाद एक नगर और फिर गढ़ाकोला और महिषादल दिखे और उनकी अंतिम यात्रा का दृश्य भी दिखा। यकीन करो, आज मैने कई परिच्छेद जोर-जोर से श्री भगवानदास गुप्ता को, मुरारी को, और अपने बेटे अशोक को पढ़ कर सुनाये। गला भर-भर आया। आंसू झर-झर गिरे। दुख में भी—निराला की पीड़ा में भी—सुख के आंसू बरमे। वाह! खूब है तुम्हारी कलम। गद्य कविता से अधिक प्राणवान और जीवंत हो गया। वास्तव में गद्य गद्य नही रह गया। वह पूरे युग का, दिक और काल मे पुनः अवतरण हो गया है। तुमने जो तथ्य दिये है—जो पत्रों के उद्धरण दिये है—जो बातें और लेखांश उद्धृत किये है और जो विवेक के रंग चमकाये हैं वे सब-के-सब 'नायगरा फाल' की तरह माकार हो गये है। तर्क

1. पत्रकार—बांदा।

क्या हैं—अकाट्य हैं। पंत और निराला का मनोविश्लेषण एक सिद्धि हो गयी है। मूल्यांकन में कोई ऋषि बोलता दिखा है। जहां-जहां तुमने चोट भी मारी है वहां-वहां तुमने धर्म और कर्तव्य समझ कर ही राम की तरह राक्षसों पर बाण चलाये हैं। तुमने, युद्ध की भाषा में कहूं तो कहूंगा कि कौरवों की सेना को विध्वंस किया है। तुमने कृष्णोपदेश के बाद के निःसंशयी अर्जुन की तरह, प्रहार किया है। सब कुछ पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ प्रचलित और प्रचारित भ्रातियो को और विसंगतियो को तुमने एक साथ परास्त किया है। बड़ा जरूरी था। और खूब सफल हुए हो। देखता हूं कि विवेचन का स्तर इतना न्यायिक है कि कही भी कोई अन्याय तुमने नहीं होने दिया —निराला के विरोधियों के साथ भी। ऐसा लगता है कि यह पुस्तक तुम्हारे शरीर मे पक गयी फसल की तरह निकल पड़ी है। कही भी कोई प्रयास के चिह्न नहीं मिलते। जो कुछ तुमने लिखा है सहज हो कर व्यक्त हुआ है। काम बड़ी मेहनत का है। तुमने कितना परिश्रम न किया होगा। सोच कर ही दंग रह जाता हूं। सच पूछो तो ऐसे ग्रन्थ मे ही बाते साफ नज़र आने लगती है। इसका महत्व बहुत है। आज नही कल इसकी साख तुम्हे गौरवान्वित करेगी। निराला की सही शक्ल तुमने दिखा दी है। अब लोग देखे—समझे और गुने।

यह भी लगा कि तुम्हारी कलम लिखते-लिखते उत्तरोत्तर उदात्त होती चली गयी है। सच में तुमने यह पुस्तक जी मे डूब कर वह्मा [ब्रह्मा], विष्णु और महेश की तरह लिखी है। इसके पढ़ने मे वही टीस और आनद मिला जो मुझे Lust for lift पढ़ने मे मिला था कभी। शिवमगल सिह सुमन ने निराला के पत्र तुम्हें न दे कर अपराध किया है। वे देते तो न जाने कितना कुछ और सामने आ जाता। सुमन स्वयं क्या लिखेगे इस तरह का। भावुकता और बात है। कविता और बात है। विवेक —बोलता हुआ विवेक चितन से तर्कायित हो कर निकले इसके लिए अध्यवसाय, संयम, अन्तर्दृष्टि और क्षमता चाहिए। तुममे एक न्यायाधीश की बुद्धिमत्ता है और एक कुशल शिल्पी की सिद्धि। दोनो ने अतीत को पकड़ कर उसे वर्तमान बना कर भविष्य मे जीने के लिए प्रस्तुत कर दिया है। तीनो काल एक हो कर बोल रहे है। लोगो को निराला प्रिय लगेगे। वह सब के सिर पर चढ़ कर बोलेंगे।

मै तुम्हें—हृदय से बधाई देता हू। दूसरा भाग भी ऐसा ही जोरदार निकालो। भाषाविज्ञान की पुस्तक भी इससे कम महत्व की नही है। उसे भी पढ़ कर ऐसा ही move हुआ था। वह दिन याद है। अभी तो रोज इसे पढ़ूगा।

मैं घर में ही कैद रहा। होली खेलने कही नही गया। अफसरो से भी मिलने नही गया। होली खेलने से ज्यादा मजा इसके पढ़ने मे आया है।

एक बार फिर तुमको लाख-लाख बधाई।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

११-३-६९

प्रिय केदार,

तुम्हारा पत्र मिला। हमारा बस चलता तो हम इसे संसार का सर्वश्रेष्ठ जीवन चरित बना देते किन्तु [′] मति अति ऊंचि नीच रुचि आछी; चहिय अमिय जग जुरै न छांछी। [′] तुलसीदास तो अपने इष्टदेव पर लिख रहे थे, जरूर बहुत नर्वस रहे हों गे। हम तो निराला पर लिख रहे थे, अपने मित्र और गुरु पर, उनकी कमजोरियों को उजागर करते हुए, उन्हें मनुष्य रूप में समझने का प्रयास करते हुए। लेकिन अगर हमारा मठा हमारे दोस्तों को रुचे तो अमृत की तलाश कौन भकुआ करे गा?

इतनी मेहनत हम दूसरी किताब पर तो अब कर नही सकते, न इससे पहले किसी और किताब पर की है। सबसे ज्यादा मेहनत पड़ी सामान बटोरने में, जो बातें याद थीं, उन्हें भी तरतीब से सजाने में। पंत से मिलने के लिए इलाहाबाद का परीक्षा कार्य स्वीकार किया था। युनि० के गेस्ट हाउस में मई की वह लू खाई—सबेरे छह बजे नल के खौलते पानी में जो स्नान किया—तो तबियत प्रसन्न हो गई। यहां के एक पुस्तकालय जाते हुए ही हाथ में फ्रैक्चर हुआ था। गृहस्थी के अनेक झंझट—कभी पत्नी अस्वस्थ, कभी बेटी के लिये वर की असफल तलाश। हमने मन से कहा—सबेरे-शाम आधा घंटा चिन्ता कर लिया करो, उसके बाद बस निराला के साथ रहो।

यह किताब लिखते समय, निराला के साथ जो समय न बिताया था, वह भी बिताया, उनका जो दुख न देखा था, वह भी फिर देखा। उनकी मृत्यु के बाद उनके साथ महीने दर महीने इस तरह रहना बहुत ही कष्टकर था। मन ने साथ दिया, दुख और चिन्ता से ऊपर उठा रहा, मुझ से किताब लिखाता गया। और अब जब किताब छप गई, तुम्हें पसंद आ गई, तब सारा दुख, संसार की समस्त चिन्ताएँ मैं भूल गया हूँ। तुम्हे गले लगाता हूं, निराला को फिर अपने पास पाता हूँ।

तुम्हारा
रामविलास

बांदा
१-५-६९
रात ९ बजे

प्रिय भाई,

इलाहाबाद रेडियो से आज ८ बजे रात तुम्हारी पुस्तक पर श्री लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय की टिप्पणी सुनी। श्री नर्मदेश्वर उपाध्याय ने सूचना दी थी। मुझे कतई

अच्छी न लगी। बहुत सतही और जागरचोर आलोचना थी। मैंने अपनी प्रक्रिया [प्रतिक्रिया] नर्मदेश्वर को अभी-अभी लिख भेजी है।

पत जी को ज्ञानपीठ का लाखिया पुरस्कार मिला। अब सोने की डाल पर शुक बैठेगा।

बधाई देने का मन होता है। पर पता नही मालूम। इसलिए चुप हू।

नागार्जुन इलाहाबाद है। मैंने बुलाया था। न आये। न पत्र ही आया। मै **निराला मेरे प्रिय कवि** पर एक वार्ता दूगा जून मे। रिकार्डिंग २५/५ को इलाहाबाद मे होगी। स्क्रिप्ट भेजूगा। और सब ठीक है। आशा है कि सब कोई प्रसन्न होगे।

सस्नेह तु०
केदार

१२-५-६६

प्रिय केदार,

विश्वविद्यालयो के द्वारपाल निराला के विरुद्ध लाठी ले कर खडे रहे कि कही भीतर न घुस आये। जब वह न रहे, तब सन्त और ऋषि बना कर उन्हे पूजने लगे। सत्य मे आखे मिलाने का साहस उनमे नही है। इसलिये लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने मेरी किताब पर जो कुछ कहा हो गा, जरूर सतही रहा हो गा। पत जी ने लिखा था कि उनके सबध मे अतिरजना से काम लिया गया है, मेरी पुस्तक मे, और उसका निराकरण करते हुए वह कुछ लिखे गे। ज्ञानपीठ पुरस्कार पर बधाई भेज दी थी। पता १८/बी० ७, कस्तूरबा मार्ग, इला० है। और सब ठीक है।

तु०
रामविलास

बादा
१४-५-६६

प्रिय डाक्टर,

आज अभी दोपहर को पत्र मिला। 'दिनमान' मे तुम्हारी किताब की review पढ़ी। उसमे भी अधिक तटस्थता की अपेक्षा की गयी है। पता नही—कहा तटस्थता का अतिक्रमण किया गया है। खैर। हा, कल 'हिंदुस्तान' साप्ताहिक मे तुम्हारा लेख पढा—पहली किश्त है। दूसरी किश्त के आने पर ही कुछ समझ सकूगा। वैसे तुमने पर्याप्त सामग्री खोज निकाली है। नया प्रकाश तो पडता ही है। लोगो के चेहरे भी खुलते है। यहा गरमी ऊट पर चढ़ गई है। जमीन

प्यासी हो गई है। हरियाली कुम्हलाने लगी है।

मैं इलाहाबाद गया था। पंत जी से मिलने गया। वह शाम घर पर न थे। न मिल सका। महादेवी जी बीमार थीं। समयाभाव के कारण न मिल सका। नागार्जुन मिले थे। कहते थे: तुम्हारी किताब से पंत जी अनमने थे। सब ठीक है।

सस्नेह तुम्हारा
केदारनाथ अग्रवाल

१०-६-६६

प्रिय केदार,

१४/५ का कार्ड मिल गया था। सा० हि० के अलावा 'आलोचना' में 'अस्तित्ववाद और नई कविता' लेख आये गा। इसके बाद लिख रहा हूँ: नई कविता : अस्तित्ववाद से हट कर। इसके बाद एक लेख की योजना और है : नयी कविता और नये प्रतिमानों की खोज।

इलाहाबाद में पंत जी और शान्ता जोशी मेरी पुस्तक से बहुत असंतुष्ट हैं। अमृत राय ने पंत जी को यह भी सुझाया कि राजकमल ने आपकी किताबों से इतना कमाया, अब आपके ही विरुद्ध यह सब छापा। निराला की रजाई पर वह सोये—यह भी उन्हें अस्वीकार है क्योंकि निराला तो बेहद गंदे थे! यह सब राजकमल की श्रीमती मंधू से मालूम हुआ। दिनमान की सी चलतू आलोचना मुक्त धारा में निकली है।

तु०
रामविलास

बांदा
२६-६-६६

प्रिय डाक्टर,

२८-६-६६[1] का साप्ताहिक हिन्दुस्तान देखा। तुम्हारा लेख—हिन्दी आलोचना में बाजरे की कलंगी —नयी कविता : नये प्रतिमानों की खोज—पढ़ा। यह लेख कलई-उघाड़ लेख है। तुम्हारी पैनी दृष्टि से कोने-कोतरे में भी तहलका मच गया है। वे छद्म धांधली धारण किये —मंच पर विराजमान—नये की गोहार में गला फाड़ कर कनवहरा कर देने वाले—अमूर्तन के मूर्तिकार हताहत हो गये हैं। न वे उठ पा रहे हैं- न बच पा रहे है। सब-के-सब तीन-तेरह हो गये हैं। पता नहीं उन्हें अब कहां किस 'झोल' में विलीन होना पड़ेगा। यह काम बढ़िया हुआ। इसलिए नहीं कि कोई मारकाट हुई है बल्कि इसलिए कि सही दृष्टि और दिशा

1. तिथि 26 सितम्बर के पहले की होनी चाहिए। [म० वि०]

को प्रशस्त होने का और कविता को पकडने का और उसे आकने का अच्छा अवसर मिलेगा। मेरा विश्वास है कि इस लेख की व्यापक प्रतिक्रिया होगी। वे सब तिलमिलायेगे जो दूसरो को धकेल कर जबरन काफिले के आगे हो गये थे। अब वे पायदान पर सिर रख कर अपनी ही धूल चाटेगे। भला हो तुम्हारा। तुमने तो नयी कविता के दक्षिणी विएतनाम मे अमरीकियो पर छापामारी की है और उत्तरी विएतनाम की जिन्दादिली का लोहा मनवा दिया है। हम तुम्हे यहा से दोनो हाथो का दमदार सलाम ठोकते है। मै देख रहा हूँ हर जगह चू-चपड मच गयी होगी। लेकिन वाह रे दिग्गजो कि सच से आख मिला कर नही झूठ के पाव पा कर भूगोल को दबा बैठे है। खैर मनाये।

सस्नेह, तुम्हारा केदार

१६-१०-६६

प्रिय केदार,

तुम्हारा २६/६ का कार्ड मिल गया था। इस बीच हम एक हफ्ते को दिल्ली गये थे। इसलिये उत्तर मे विलब हुआ।

दिल्ली मे काफी लोग मेरे लेखो से प्रसन्न है किन्तु स्वभावत एक दिन बैठे-बैठे दात भी पीस रहा है। सुना है कि नेमिचन्द्र जैन जवाब देने की तैयारी कर रहे है। नामवर सिह सोवियत लेखक सघ के आमत्रण पर मौस्को गये है।

'आलोचना' के ताजे अक मे नेमिचन्द्र जैन ने 'निराला की साहित्य साधना' पर काफी क्षोभ प्रदर्शन किया है। दो अन्य लेख अमृतलाल नागर और विष्णुकान्त शास्त्री के है। न देखे हो तो देखना।

इलाहाबाद से मार्कण्डेय 'कथा' निकाल रहे है। उसके पहले अक मे भगवत शरण उपाध्याय ने 'नि० की सा० सा०' के प्रकाशन पर यथेष्ट खेद प्रकट किया है। प्रकाशचद्र गुप्त भी काफी दुखी है—पत-प्रसग मे। एक लेख है बिना सिर पैर का—लेखक है रमेश कुतल मेघ।

हवा मे अब ठढक है, धूप मे वह तेजी नही, ढलते सूरज का सोना और गाढा हो गया है, कमरे के बाहर सबेरे हर सिगार के फूल बिछ जाते है। शरद ऋतु आ गई है— तुम्हारी कविता मे सूर्य की तरह— बसन्त की मादकता से दूर, मन की धरती पर दमकते शान्त प्रकाश की तरह। केन का थिराया पानी इस समय बहुत अच्छा लगता होगा।

प्यार।

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

बांदा (उ० प्र०)
१८-१-७०
रात ८ बजे

प्रिय डाक्टर,

बहुत दिनों पर पत्र लिख रहा हूं। सोचता था अब लिखू तब लिखू पर न अब लिख सका, न तब। समय सरपट दौड़ गया। लम्बी मंजिल तय कर गया। आज सन्नाटे में —पानी बरस रही रात मे -यह पत्र लिख रहा हूं। आशा है कि तुम जल्दी ही उत्तर दोगे। वैसे तुम अत्यधिक व्यस्त जान पड़ते हो लेखन के कार्य में। इधर साप्ताहिक 'हिन्दुस्तान' में और 'धर्मयुग' में तुम्हारे कई लेख पढ़ने को मिले। मैंने सभी पढ़े। पहली बात तो यह है कि तुम्हारी ऊर्जा जागृत हुई है। बहुत जोर शोर से हलचल कर सकी है। एक तरह से यह कहूं कि तुमने इस कुंठित लेखकीय विघटन के युग में नाटकीय जीवन दायिनी स्फूर्ति की 'पयस्विनी' बहा दी है। यह पय और स्वन की धारा चेतना की सक्रिय विद्युत धारा है। बड़ी प्रसन्नता हुई। 'जड़ता जाड़' तो लोगों का दूर होगा ही। साथ ही-साथ दिशा और दृष्टि का विवेकीय परिवेश भी उभरेगा। बधाई है महाराज !

'कविता के नये प्रतिमान' में तुमने बाजरे की कलंगी को लेकर जो विवेचन प्रस्तुत किया है वह तथ्यों पर आधारित तो है ही न्यायसंगत भी है। मैं प्रयाग गया था कुछ महीने पहले। वहां मुशी यानी लक्ष्मीकांत वर्मा मिले थे। वह खिसियाये-से थे। उन्होंने संक्षेप मे मौन तोड़ कर कहा था कि रामविलास ने बरसों बाद जवाब दिया है उनके लिखे का। 'धर्मयुग' का नया लेख जो १८/१ के अंक में छपा है वह भी सामने है। इसका भी असर चौतरफा होगा। तुमने तीक्ष्णता से तराशा है। छिलके उतरे है तथाकथित प्याज की गाठों के। चाहिए तो कि लोग बाग अब अपनी आलोचना करें। मगर माहौल ऐसा है कि लोग बाग यह कह कर तुम्हारा कहा-सुना दरकिनार कर देते हैं कि यह तो पटा-बनैती का खेल है—रचनात्मक आलोचना नहीं है। मुझे इस कथन में सत्य नहीं मिलता। हारे हुए की राजनीति मिलती है। खैर। बहरहाल —यह सब अच्छे साहित्य की रचना के लिए सूझ-बूझ की उम्दा बातें हैं —उपेक्षित न होंगी। असर होगा चाहे उनके मन में हो—और देर से हो।

एक हफ्ते हुआ फिर इलाहाबाद गया था। इकबाल यानी अजित पुष्कल (कवि) ने बताया था कि पंत जी तुम्हारी पुस्तक की वजह से बेहद बौराये है। निराला के सन्दर्भ में तुमने उन्हें धरपटका है। वह महादेवी से भी और दीगर मिलने वालों मे इसी बात को ले कर दिन-प्रति-दिन चर्चा करते रहते है। बताया गया कि महादेवी ने कहा भी कि पंत जी छोडिये इसे —निराला की एक मूर्ति बन गयी है—आप क्या कर सकते हैं। पर इस कहने का असर न हुआ।

हा, अमृत[1] के लेख भी (Interv ews) 'धर्मयुग' में देखे। मेरी राय में तो पंत जी ने तुम्हारी सब बातें स्वीकार कर ली हैं। फिर भी उनमे मुकरने की उनकी रुचि—अपने हित में—स्पष्ट दिखाई देती है। कुत्सित और कुरुचिपूर्ण कह कर वह तुम्हारे कहे को मिटा नहीं सके। साफ मालूम होता है कि यह interview खास तौर से 'संयोजित' की गयी [किया गया] है ताकि निराला की और तुम्हारी मूर्तियां विकृत हो जायें। यह भी सम्भव नहीं हुआ। बात असल मे यह है कि ऐसो बातों के लिए पंत जी तयार न थे। वह अपने को कुछ-का-कुछ समझते थे। वह भ्रम को सत्य माने थे। जब भ्रम तोड़ा गया तो संतुलन चला गया। विवेक – विवेक न रह गया। तपस्या और साधना को यो गलते देख शिखरासीन छवि भी गल गयी। भला कैसे बर्दास्त हो अपना विगलन। लेकिन इसे उन्हे व्यक्तिपरकता से नहीं जांचना चाहिए। यथार्थ को ग्रहण करने से कतराना कमजोरी होती है। वह कमज़ोर सिद्ध हुए है। भला कौन मानेगा कि माधो गुरू कालाकाकर के कोई पुराने कवि थे और वाग्विलास तुम न हो कर कोई अन्य महाशय थे। सफाई दी गयी पर दी गयी सफाई चलती नहीं—। बातें वहीं-की-वही है। तुमने सत्य उद्-घाटित किया है। बहुत उम्दा काम हुआ है।

मेरी तो सदैव यह धारणा रही है कि साहित्य में सत्य की प्रतिष्ठा होनी ही चाहिए चाहे वह मेरे विरुद्ध हो या किसी अन्य के। साहित्य न मेरी बपौती है न किसी और की। वह सार्वजनिक कृतित्व होता है। अपना हो कर भी सब का हो जाता है। तब फिर उसका वास्तविक मूल्याकन होना ही चाहिए। कोई भी कवि या महाकवि आलोचना से बच कर कैसे जी सकता है [,] मैं नही समझ पाता। आलोचना तो कवि या महाकवि का भीतर-बाहर सब सामने ला कर रखती है।

'आलोचना' मे भी तुम्हारी पुस्तक की चर्चा हुई। नेमिचंद्र जैन ने भी लिखा है। स्वर वही है। पंत का मुलम्मा उतारा गया है यह देख कर वह भी बौद्धिक क्षोभ से भर गये से है।

मैंने यहां भी तुम्हारी पुस्तक पढ़ाई। उन लोगो ने लोगो के लेख भी देखे। वह भी मेरी तरह सोचते है।

तुम्हारा मुक्तबोध [मुक्तिबोध] वाला दो अंकीय लेख भी हम लोगो ने देखा। वह भी खूब जोरदार गया है। सभी को प्रसन्नता हुई है। हालांकि मै अपने इस कवि को शंका की दृष्टि से देखता हूं। वजहे है। और फिर इस सब से लोगों के दिमाग से कूडा तो हटता है। यही महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इससे इनकार नहीं किया जा सकता। कूड़ा हटाना स्वस्थ काव्य के लिए रास्ता तयार करना है। 'आलोचना' में नयी कविता और अस्तित्ववाद पर भी तुम्हारा लेख मगा कर पढ़ा।

1, श्री अमृतराय। [प्र० त्रि०]

वह भी धारदार है। ऐसा तो सब को पहले से भी जानना चाहिए था।

साहित्यिक ईमानदारी की ज़रूरत है। ईमानदारी के लिए समझ की ज़रूरत है। कविता बेईमानी का ब्याह नहीं कि 'मंडपे तर' से किसी की बेटी ले आये, चाहे खुद योग्य हों या न हों, या कि वह योग्य हो या न हो।

कोई कविता हो, वह वरण से पायी जाती है, हरण से नहीं। काश लोग बाग—हमारे लोग -और दूसरे लोग भी इसे समझ पाते और कविता लिखने में जी-जान लगा देते। मैं नहीं कहता कि कवि गलती ही नहीं करेगा – मेहनत करने पर भी कभी कभार गलत लिख सकता है। इस पर भी तो अधिकांश तो सही दृष्टि से लिखे। फैशन और नक़ल और नयापन कभी भी स्वयमेव कोई महत्व नहीं रखता। पचा कर ही पराये को अपनाया जा सकता है, उन्हीं परिस्थितियों में पड कर। यहां तो कविता वाले सोच-विचार से काम ही नहीं लेते। झट से पालने में पड़े बच्चे की तरह जो भी हाथ में आया मां का स्तन समझ कर चिचोरने लगते हैं। वास्तव में बड़ा बौद्धिक दिवालियापन है। राम ही रक्षा करें।

और सब ठीक होगा ही।

हम सब लोग ठीक है। बहुत याद आते हो हम लोगों को।

इधर राजनीति भी—सत्तारूढ़ —एक से दो हुई है। यह शुभ है। विघटन आवश्यक था। आगे कुछ हो चाहे न हो, रास्ता उस ओर मुडा है जिस ओर श्रमिक हैं। कारण चाहे जो भी हों। परिवर्तन हुआ —ऐसे ही होते भी है।

आगरे का हाल तो बहुत सर्द होगा।

सस्नेह तु०
केदार

Dr. Ram Bilas Sharma
M. A., Ph.D. (Luck)
Prof & Head of the Deptt. of English
& Dean Faculty of Arts
R. B S. College, Agra.

New Rajamandi
AGRA
Dated : २२-१-७०

प्रिय केदार,

आज सबेरे यहां बेहद घना कुहरा है। कालेज बंद है। हम बाबू काछी के यहां से दूध ले आये हैं और चाय पीने के बाद तुम्हें पत्र लिख रहे हैं। कालेज बंद है वर्ना इस समय (८ बजे) क्लास में होते। हमारे प्रिंसिपल को बुखार आ गया था। सोमवार की रात वह फिसल कर गिर पड़े और सर में चोट आई। लड़कों ने परसों हड़ताल की। उनकी बहुत सी मांगें हैं जिनका संबन्ध पैसे वसूलने और खर-

चने से है और अपना वहा दखल नही, न वह अपने अधिकार क्षेत्र मे है। मैं ने लडको को समझाया कि उनकी मागे मानना न मानना मेरे हाथ मे नही है। प्रिंसिपल साहब ठीक हो जायं तब जो मन मे आये करे। लेकिन नेता लोग इसके लिये तैयार न थे। नतीजा यह कि कल फिर हडताल हुई, नारे बाज़ी शोर गुल, वगैरह पहले से ज्यादा। हमने तीन दिन के लिये कालेज बद कर दिया, इतवार को छुट्टी, सोमवार को २६ जन०। इस तरह पाच दिन को बद। आशा है, तब तक प्रिंसिपल सा० ठीक हो जायं गे। लड़कों के नेता कहते है, कालेज खुला रहे, हडताल भी करें। न खुले गा तो भूख हड़ताल करें गे।

ये सब वाइस प्रिंसिपली के मजे हैं। खैर, हमने इन मजो मे जल्दी ही छुट्टी पाने का फैसला कर लिया है।

कानपुर का I I. T, अमरीकी पैसा, बडी-बडी इमारते, बडे-बडे प्रोफेसर, शहर से दस मील दूर, उत्तर प्रदेश के लडके अनुपात मे सब से कम। एक प्रो० स्टोक्स —बाबा अमरीकी, दादी पजाबिन, यहा की इडो-ऐंग्लिअन या इंडो अमेरिकन संस्कृति के प्रतीक जैसे। इनकी [इनके] कल्चरल फेस्टिवल मे विभिन्न कलाओ के अग्रेजी भाषी भारतीय विशेषज्ञ आते है। भारतीय साहित्य पर दस मिनट हम भी बोले।

११ फरवरी को शोभा का ब्याह है। लडका दिल्ली के एक कालेज मे वनस्पति शास्त्र का अध्यापक है। उसके पिता कानपुर मे रहते है। उनके दर्शन करने थे, इसलिये I I T. का निमत्रण स्वीकार किया था। लेकिन नई हवाएं I I. T. के कुछ कमरो मे भी घुस ही गई है।

निराला वाली किताब खत्म करने के बाद साल भर की कमाई ये नई कविता वाले लेख है। साप्ता० हिन्दु० मे जो छपे थे उन्हे देख कर, भारती ने लिखा था, कुछ हमे भेजो। मैंने उन्हे ४ लेख भेज दिये। अज्ञेय पर एक लेख १ फरवरी के अंक मे आये गा. साप्ता० हिंदु० के सपादक ने पूछा —और हमारे लिये क्या लिख रहे है। मैने कहा —शमशेर, नागार्जुन और केदार पर ३ लेख है। उन्होने लिखा—अब यह सब नई कविता पर रिपीट परफौर्मेन्स हो गा, कुछ और लिखे।

मैने और कुछ लिखने से फिलहाल इन्कार किया। 'लहर' वाले नागार्जुन पर विशेषाक निकाल रहे है। उन्हें नागा० पर लेख भेज दिया है। फरवरी के बाद निराला वाली किताब का दूसरा भाग लिखे गे। पंत जी की अप्रसन्ता का मूल कारण निराला पर इतनी बड़ी पुस्तक का लिखा जाना है।

तु० रामविलास

२७-५-७०

प्रिय केदार,

मई में भयानक लू चलने के बाद अकाल बौछारे आई, आधी लगभग हर रोज़। राजस्थानी रेत आंगन में और बराम्दे मे उड़-उड़ कर जमा होती रहती है। हम इधर कापियां जांचने मे लगे थे। अब निराला वाली किताब फिर उठाये गे।

तु० रामविलास

बांदा

३०-५-७०

प्रिय डाक्टर,

पोस्टकार्ड मिला। बहुत कम पंक्तियो वाला। ऐसी भी क्या कंजूसी कि इतने दिन बाद भी इतनी कम पूंजी लिख कर भेजी।

'मेलजोल' (पाक्षिक पत्र, ६०६ कटरा, इलाहाबाद २) के ३/७ के ३० पेजी मैगजीन साइज के अंक में मेरे कृतित्व और व्यक्तित्व को ले कर विशेषाक निकालना चाहते है। मेरे प्रकाशक श्री शिवकुमार सहाय का पत्र आया है। जरूरत [होगी] तो सम्पर्क करेंगे।

कापिया जच गयी होगी। बहुत से लडके-लडकिया पास-फेल हुई होगी।

यहां भी बडी गरमी रही। अब भी है। दो-तीन दिन मौसम मजे का हो गया था।

निराला पर जब जुटोगे तो मुझे वक्स मे बद कर दोगे। याद भी न आऊगा। जरूरत ह।

६-७ के बाद मुक्त रहूंगा। देखो तब धधा धोखा देता है या पेट पालता है। सरकार की खिदमत मे ७ साल बीत रहे है। ६० के चल रहे है। सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

बांदा

२०-६-७०

प्रिय डाक्टर,

आज अभी इलाहाबाद मे नागार्जुन का पत्र, दिनाक १८-६-७० का मुझे मिला। लिखा है कि 'आखिर मै बादा पहुच रहा हूं -निश्चित तौर पर।'

कृपया आओ।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

२६-६-७०

प्रिय केदार,

ललित जयपुर गये, विजय दिल्ली में है, भुवन अपनी पत्नी को ससुराल घुमाने ले गये है, लौट कर बनारस जायँ गे। शोभा अपने पति के साथ बबई घूम रही है। स्वाति किसी नौकरी के लिए मेरठ जाने वाली है, इटरव्यू के लिये। सेवा इधर-उधर अर्जियाँ भेज रही है, इटरव्यू के बुलावे की राह देखते हुए। मेरी पत्नी को ब्लड प्रेशर है।

अब अगर विजय यहा ६-७ जुलाई को आ गये तो बाँदा आऊ गा, वर्ना कोई सूरत नही है वहा पहुँचने की। यद्यपि पत्नी कहती है, चले जाओ किंतु सेवा अकेले घबडा न जाय -इनके स्वास्थ्य मे किसी तरह की गड़बड़ी से—इसलिये मै इन्हे, यहाँ किसी लडके के आये बिना, छोड़ कर कही जाना नही चाहता। दो एक Ph. D. के Viva थे। मैने युनिवर्सिटियो को लिख दिया, छात्र और दूसरे परीक्षक को यही भेज दे। अचल जी इसी सिलसिले मे दर्शन दे गये है। एक अध्यापक अंग्रेजी के मेरठ से आ चुके है। एक हिंदी के मसूरी से आने वाले है।

एक दिक्कत छोटी-सी यह भी है कि पहली जुलाई से हमारे यहा भर्ती शुरू होती है, बी०ए०, एम०ए० के बहुत से फार्म निपटाने होते है।

खैर, ५ जुलाई के 'धर्मयुग' मे अपनी और मेरी निगाहो मे खुद को देखना। 'मेलजोल' को भी एक छोटा-सा लेख भेजा था, पर उन लोगो ने पहुँच की सूचना नही दी। याद तो तुम्हें हम रोज़ करते है, या यो कहो, निराला पर लिखते समय तुम रोज़ याद आते हो लेकिन लगता है, दीदार मे थोडी देर है अभी।

तुम्हारा--रामविलास

बादा
१-७-७०
रात १० बजे

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिला। तुमने न आ सकने के समर्थन मे जो तथ्य दिये है और जिस तर्क से दिये है वे असमर्थता के पहाड़ खडे करते है। पर मेरे जीवन के सब से सच्चे एक मात्र स्नेही, यह जान लो कि यदि तुम ६-७-७० को दोपहर तक यहा न आये तो हम सब मरणासन्न हो जायेगे। सब कुछ होते हुए भी तुम्हारे बिना मैं डाल से टपक पड़ी चिडिया की तरह जमीन पर चेतना शून्य हो जाऊगा। यह अतिशयोक्ति नही है। अक्षरशः सत्य है। आओ अवश्य आओ। मेरे लिये तुम्हारा आना मुझे नयी उम्र देगा। वह सुख अपरिमेय होगा। शायद उसी सुख को ले कर मरते दम

तक संतोष से जी सकूं। मुझे चाहे कोई जितना मान दे—धन दे—कुछ भी अच्छा न लगेगा। मैं बड़ों की बड़ाई पा कर भी कोरा कागज रह जाऊंगा। फिर—और फिर यही हार्दिक कामना है कि तुम सब काम छोड़ कर जरूर से जरूर बांदा पहुंचो और इस समारोह में ६ जुलाई की शाम को रहो। मेरा दृढ़ विश्वास है कि तुम्हारा कुछ भी अनर्थ न होगा। मलकिन से भी मेरा आग्रह है और बेटी से भी कि वह तुम्हें बांदा भेज दें। मुझे भी मलकिन की उतनी ही चिन्ता है जितनी तुम्हें। अभी तो आगरे आ कर सबसे मिलना है। ५/७ को सरकारी कार्यभार से मुक्त होऊंगा। हां तो सुन रहे हो। तार दे कर सूचित करो कि आ रहे हो। सब लोग तुम्हें सुनना चाहते हैं। मुझे तुम्हारी दृष्टि से परखने के लिए।

अब अपनी मजबूरियों को भूल जाओ। एक-दो दिन का मामला है।

मुझे विश्वास है कि तुम आ रहे हो। मेरा बेटा भी मद्रास से आ रहा है। वह भी तुमसे मिलने को उत्सुक है। मेरी वाइफ भी तुम से अपनी ओर से आग्रह कर रही है। नागार्जुन इलाहाबाद से आ रहे हैं।

सस्नेह तुम्हारी प्रतीक्षा में तुम्हारा
केदार

केदारनाथ अग्रवाल
एडवोकेट

सिविल लाइन्स, बाँदा
(उत्तर प्रदेश)
दिनांक १८-७-७०

प्रिय डाक्टर,

'देवताओं की आत्महत्या'···भेज रहा हूं। तुमने भेजने को कहा था न !

'हंस' का प्रगति अंक अभी नही मिल सका।

आशा है कि वापसी में कष्ट न हुआ होगा। सही-सलामत पहुंच गये होओगे। कष्ट के लिए आभार मानता हूं। तुम आ गये। बहुत ठीक रहा।

पुस्तकों में अशुद्धियां हैं। जल्दी-जल्दी में छपी हैं। शायद इसी वजह से।

बहरहाल प्रकाशक ने उस दिन तो उन्हें दे ही दिया। बरसों बाद गद्य की किताब छपी।

और सब ठीक है।

'धर्मयुग' ने ता शोर मचा दिया।

मालकिन को मेरी ओर से मेरा [मेरी] कृतज्ञता देना। अब तबियत कैसी है ? बच्चों को प्यार।

तु० सस्नेह
केदार

२१-८-७०

प्रिय केदार,

तुम्हारा १८/७ का पत्र यथा समय मिल गया था। उस समय कालेज खुला ही था, इसलिए बहुत-सा काम आ पड़ा था। उसके बाद मै भवभूति के चक्कर में फँस गया। साप्ता० हिंदु० वालों ने लेख मांगा था। सोचा, एक हफ्ते मे लिख डालूं गा। उनके तीन नाटक—महावीर चरितम्, मालती माधवम् और उत्तर राम चरितम् मैंने एक साथ पढ़े। कुछ रहस्यों का पता लगा। एक विशेष अनुभूति के बीज पहले नाटक में हैं, दूसरे में वह अनुभूति विकसित है, तीसरे में उसका संस्कृत रूप है। मज़े की बात यह कि भवभूति अपने श्लोक, श्लोक की कुछ पंक्तियाँ, गद्यांश एक नाटक से उठा कर दूसरे में सजा लेते हैं। यह सज्जन निराला से दस गुना ज्यादा अहंकारी थे, कुछ दशाओं में अति विनम्र। सानुप्रास सघोष वर्णयुक्त संस्कृत पदावली उन्हें प्रिय थी लेकिन जब सहज लिखते है तब 'नयनों के डोरे लाल' हो जाते हैं। शेक्सपियर के चार बड़े नाटकों में जिस शोकाभिभूत अर्द्ध विक्षिप्त अवस्था का वर्णन किया गया है, वह भवभूति में है। वह एक-पत्नी अथवा एक-प्रेमिका वाले प्रेम के अनुपम कवि है। जैसा उत्कट प्रेम है, वैसा ही घनघोर उनका मर्म भेदी शोक है। हमने उनकी वर्क शाप देख ली जिसमें उन्होने माइकेल एंजेलो की तरह प्राथमिक रेखा चित्र बनाये है। वे पूर्ण अभिव्यक्ति के साथ-साथ मालती माधव में सजा दिये गये हैं। सुकुमार भावों और रक्त रंजित क्रूर दृश्यों—दोनों की पराकाष्ठा है। केवल भवभूति को पढ़ने के लिये मनुष्य को संस्कृत जानना चाहिए। कालिदास की वहां गति नही है; वाल्मीकि से वह अनुभूति की विष-तिक्तता में आगे हैं। उनमें काफी बचपन है, सजावट का प्रेम। और इसके साथ वह जो—परिच्छेदातीत: सकल वचना नामविषय: है। उसका विश्लेषण संभव नही, शब्दों में अभिव्यक्ति संभव नहीं। Concentration और Compactness जहां है, वहां दान्ते और मिल्टन मात है; उनका Imagination ऐसा प्रबल है कि परोक्ष को प्रत्यक्षवत् देखता है। Hallucination की सीमा को छूता हुआ। Hamlet : Me think I see my Father. Heratio : Where my Lord? Ham.—In my imagination. वैसा। लेख में तीन हफ्ते लग गये। पत्नी का ब्लड प्रेशर दो हफ्ते पहले काफी बढ़ गया था, अब कुछ कम हुआ है।

तु०—रामविलास

बांदा
२४-९-७०

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिला था। लम्बा अरसा हुआ। २१/८ का है। सामने है। भवभूति की [का] महावीर चरितम नही मिली [मिला] शेष दो उपलब्ध हो गया हे। खरीद ली है। पढ रहा हू। वैसे एक बार नजर दौडा चुका हू। इस बार जम कर पढ़ना चाहता हू। इसी सबसे उत्तर नही दे सका।

अब इस उम्र मे संस्कृत जानने का समय नही है। जितना जान चुका वही बहुत है। आजकल तो वह जानो जिसे जानना जिदा रहने के लिए जरूरी है। बड़ा मखौल है यहा इस व्यवस्था मे। कोई कुछ नही सुधार करता। बडे-से-बडा स्वार्थ से प्रेरित है दूसरे को हडप लेने के लिए। खैर।

आशा है कि घर मे सब ठीक होगा। अब ब्लड प्रेशर का क्या हाल है?

दशहरा कहा बीतेगा? पत्र देना।

प्रेषक : केदारनाथ अग्रवाल
एडवोकेट,
बादा (उ० प्र०)

तु० सस्नेह
केदारनाथ अग्रवाल

४-१०-७०

प्रिय केदार,

कार्ड मिला। जुलाई मे ही श्रीमती जी गडबडा रही थी। सितबर मे बुरा हाल हो गया। अस्पताल मे भर्ती करा के गुर्दे, दिल, खून, पेशाब वगैरह की जाच का कार्य दो हफ्ते मे चल रहा था। अब छुट्टी मिली है। मुख्य बात यह है कि इन्हे पहली स्टेज वाली डायबिटीज और ब्लड प्रेशर २०० से ऊपर पहुँचता है। काम-धाम सब बद करा दिया गया है। कल इजेक्शन के दर्द से रात को सोई नही। खैर, तात्कालिक खतरा नही है। ब्लड प्रेशर नीचे लाने के लिए तगडी दवाइया है लेकिन वे अपना असर कुछ समय तक दिखाती है और शायद बाद मे बेअसर भी हो जाती है। आखो मे ट्रेकोमा भी है लेकिन उसका इलाज बाद मे देखे गे। यहा एक डाक्टर मित्र बडी सहायता कर रहे है वर्ना यह सब जाँच पडताल अपने बस की नही थी। आज कल हम निराला के उस अद्वैत पर लिख रहे हैं जिसमें ब्रह्म नही है, केवल शक्ति है और उसकी अव्यक्त अवस्था अनादि अधकार है कौन तम क पार- रे कह?

रामविलास

बादा
१५-१०-७०

प्रिय डाक्टर,

४/१० का पत्र सामने है। उत्तर विलम्ब से दे रहा हू।

तुम्हारे भवभूति वाले लेख को देखने को लालायित हू। हिन्दुस्तान साप्ताहिक के दिवाली अक मे शायद छप कर आयेगा। यहा उसे खरीदूगा। धर्मयुग मे भी शायद एक लेख आया था पर वह अक यहा मिल नही सका। न देख सका।

—निराला का अद्वैत काफी चिंतन चाहता है। विस्तार भी। तभी पाठक उसे समझ सकेगा।

—इधर अज्ञेय की पुस्तक 'सागर मुद्रा' देखी। बडी सतही कविताए है। वहा नदी का पुल अपने से पीडित है कि उसे रौदा जा रहा है और दूसरे उसमे पार उतर रहे है। शायद यहा उनकी ही व्यक्तिगत मानसिक पीडा उभरी है। हम होते तो पुल का रूप लेते तो इसीलिए कि सब को पार उतार कर अपने को भी कृत-कृत्य समझते। अज्ञेय सतह पर रह कर कलम चलाते है। चूकि शब्दी है —शिल्प का प्रयोग जानते है। इसलिए बात कह जाते है। विवेक से विवेचन करने पर पक्ष की कमजोरी उभरती है। पहली कविता भी वैसी ही है। उसमे भी अज्ञेय उस आग से रात मे डर कर सोते-सोते जग पडे है और स्वप्न मे उस आग से निगले जाने की स्थिति मे पहुच गये है। बाहरी आग से डर—भीड का डर है।

प्रेषक
केदारनाथ अग्रवाल, एडवोकेट,
बादा (उ० प्र०)

सस्नेह केदार

१७-१-७१

प्रिय केदार,

पिछले महीने निराला की साहित्य-साधना के प्रथम खड मे कुछ अश जोडे घटाये, प्रूफ की गलतिया ठीक की। प्रकाशक दूसरा सस्करण निकालने को कहते है।

दूसरा खड नवबर से अलमारी मे बद था। विचारधारा वाला हिस्सा करीब-करीब पूरा हो गया था। उसे अब आगे बढा रहे है। कोई व्यवधान न पडा तो मार्च के अत तक समाप्त हो जाय गा। शान्ति जोशी ने सुमित्रानदन पत पर एक किताब लिखी है। उसका एक खड राजकमल द्वारा ही प्रकाशित हुआ है। उसका काफी हिस्सा हमारी किताब पर है यानी निराला को क्षुद्र, घृणित और अहकारी तथा पत को सिद्ध अध्यात्मवादी सिद्ध करने के लिए लेखिका ने काफी प्रयास

किया है। धर्मयुग की [के] इंटरव्यू से संतुष्ट न हो कर पंत ने शांति जोशी की पुस्तक के लिए वक्तव्य भी दिया है जिसमें सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि रामविलास के माध्यम से पंत का नाश करने के लिए निराला ने तांत्रिक प्रयोग किया !

यहां एक खबर जोरों से फैली हुई है कि डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, कन्हैया लाल माणकलाल मुंशी विद्यापीठ के निदेशक के रूप में आ रहे है और मेरी नियुक्ति वहां प्रोफेसर के रूप में हो रही है। अभी लिखित सूचना नहीं मिली। संभव है, अगले कुछ दिन हिन्दी पढ़ायें ! लेकिन लोगों का कहना है कि डा० द्विवेदी की उम्र ज्यादा है और रामविलास के पास बेसिक क्वालिफिकेशन नहीं है। यह विद्यापीठ गंदी राजनीति का दलदल है और यहां सफल निदेशक वह माना जाता है जो इधर-उधर से पैसा ले आये, खाये और खिलाये, काम का प्रदर्शन खूब करे, काम चाहे कुछ न करे।

सुना है, गोरखनाथ द्विवेदी इधर आये थे। हमारे कालेज के कोआपरेटिव स्टोर का कुछ रुपया उन्हें देना था जो नहीं दे रहे थे।

चुनाव की धूम शुरू हो गई है। आगरे से शायद कृपलानी खड़े हो रहे हैं। मेरी पत्नी का स्वास्थ्य पहले से थोड़ा बहुत अच्छा है। अब अपना हाल लिखो।

तुम्हारा—रामविलास

बांदा
५-२-७१
प्रिय डाक्टर

दिनाक १७/१ का पत्र मुझे परसों रात १० बजे मिला जब मै मद्रास से इलाहाबाद होता हुआ यहां उस समय घर पहुंचा।

विद्यापीठ में तुम्हारी नियुक्ति की खबर सच हो जाये तो मज़ा आ जाये। हिन्दी तुम पढ़ाओ तो पढ़ने वाला भी समझे कि हिन्दी क्या है और कैसे पकड़ी जाती है। कम से कम मैं तो तुम्हारे [तुमको] पढ़ाते देख कर बहुत-बहुत खुश होऊंगा और खुशी के मारे नाच उठूंगा। वह दिन आये तो। अभी से बधाई देता हूं।

पंत जी महाराज हैं चाहें जो करें। सुना है कि शांति जोशी वाली किताब स्वयं पंत जी ने लिखाई है। खुद बोल कर। ऐसा इलाहाबाद वाले कहते थे। यार मेरे, यह कमजोरी न होती तो उनकी कविता क्या से क्या हो जाती। दुर्बलता यदि मन में कहीं होती है तो वह कृतित्व में कविता को उभरने नहीं देती। मुझे तो उन पर दया आती है। छोड़ो भी उन्हें। निराला बहुतों को धूल चटा गया है।

हां, मालूम हुआ कि साहित्य अकादमी ने तुम्हें पुरस्कार दिया है—निराला वाली पुस्तक पर। उसने अपने को गौरवान्वित किया है—तुम्हे दे कर। फिर भी बधाई देता हूं कि उसने सही पुरस्कार दे कर अच्छा काम किया है और तुम तो उसके अधिकारी थे ही। पर उसने भाषाविज्ञान वाली पुस्तक पर पुरस्कार क्यों नहीं दिया था यह आज तक समझ में नही आया।

अशोक की शादी मद्रास में २७/२ को है। बारात इलाहाबाद से २४/२ को काशी एक्सप्रेस से जायेगी। १/३ को वहां से चल कर ३/३ को इलाहाबाद आयेगी। ४/३ को वहां खाना पीना है।

यह सूचना दे रहा हूं। लड़की मथुरा की है। इसकी बड़ी बहन चाचा के पुत्र को ब्याही है। परिचित लोग है। लड़की शिक्षित है। बेटे के उपयुक्त है। सब कुछ ठीक है। मुझे वहां जाना पड़ेगा ही। क्या यह आशा करूं कि तुम भी साथ दोगे?

श्री गोरखनाथ द्विवेदी यहां से चले गये। लखनऊ कान्यकुब्ज कालेज में है। वैसा ही आदमी था। खैर।

चुनाव की चाल अभी तो धीमी है। ज़ोर पकड़ेगी। कृपलानी जी तो शायद आगरे से न लड़ेंगे। ऐसा समाचार पत्र मे पढ़ा था।

यह बहुत खुशी की बात है कि अब आपकी मलकिन की तबियत पहले से ठीक है। उन्हें मेरा सलाम दो। और कौन बच्चा तुम्हारे पास है? कि अकेले हो? न जाने क्यों बेटे की शादी करने में बेहद खुशी हो रही है। ऐसी खुशी कम हुआ करती है। तिरुपती का मांदिर देख आया हूं। हाल फिर लिखूगा। सस्नेह

केदार

निराला जी वाली किताब का दूसरा खंड भी निकले और बहुत-सी बातें साफ-साफ उभरे। भ्रम दूर हों। लोग निराला को सही समझे।

केदार

बांदा
१५-३-७१
५ बजे शाम

प्रिय डाक्टर,

एक पत्र पहले लिख चुका था। मिला ही होगा। वैसे मैं भी बेटे के ब्याह में व्यस्त रहा और तुम भी तमाम तरह से व्यस्त ही रहे हो। Award मिलने की औपचारिक बधाई तो पहले ही भेज चुका था। दिनमान में यह देख कर कि तुमने अंग्रेजी में बोलने का आग्रह ठुकरा कर वहां दिल्ली में हिन्दी की दो टूक शैली में

निराला पर अपना भाषण दिया [,] मेरा जी जी उठा। इसकी हार्दिक बधाई लो। यही तो वे अवसर हैं जब आदमी अपनी मान्यताओं को साकार करता है। तुमने खूब किया। निराला याद आ गए।

अब शायद अवकाश मिलेगा और मैं कुछ लिखने का प्रयास करूगा। वैसे यह जीवन जो मै जी रहा हूं यहा, वह समय और शक्ति खाऊ जीवन है जिसमें आदमी ठूंठ हो जाता है। हम वकील कुछ करते-धरते तो है नहीं —बस हवाई बान छोड़ते रहते है और मरे गले समाज की ढहती नीवों को जबान दे दे कर, अक्ल बूंक-बूंक कर बरकरार किये रहते है। सच कहता हूं—हमारे वकील जीवन का इस समाज में मुझे तो बहुत ही तुच्छ योगदान दिखता है।

इधर इन्द्रा जी। [इन्दिरा जी] की दुंदभी बजी और सब-के-सब धराशायी हो गयी [गये]। वोटरों ने तो ठहाका मार कर सबको मार दिया। जनता का मन बोला है --इन्द्रा [इन्दिरा] के इशारे पर। एक मोड़ लिया है देश की पीड़ित जनता ने। हिम्मत खुली है वोट मार कर मारने की। यदि यही प्रक्रिया चली तो शायद भविष्य के कमंडल से गंगा जल बरसे।

बेटा और बहू आज बांदा आये हैं। अभी इलाहाबाद थे। वही से बारात मद्रास ले गया था। खुश हूं जैसे किसान बहुत खुश होता है आकाश के बादलों से वर्षा का भरपूर जल पा कर।

और क्या हाल हैं ?

पुस्तक कहा तक पहुँची ? दिल्ली मे तो वही पुराना माहौल रहा होगा, जब तुम पुरस्कार लेने गये होगे।

मुंशी की याद अक्सर आती है पर वह नही आता।

मलकिन को हम सबका नमस्कार देना। उनका रक्तचाप कैसा जा रहा है। आखिर इसका इलाज भी है या नहीं ?

दिल फिर मिलना चाहता है। आगरा आने का मग [मन] हो रहा है। अब तो मुशी संस्थान में स्थान पा लिया होगा। कैसा रहा यह नया रोज़गार। बुरा न मानना—यह रोजगार तो है ही। बधाई। बेकारी दूर हुई। उत्तर देना। सस्नेह

केदार

R. B. Sharma
M. A.; Ph. D. (Luck)
Head of the Department of English

R. B. S. College
AGRA
Date १७-३-७१

माई डियर,

बहुत दिन बाद तुमने फिर इतना बढ़िया खत लिखा हे। हमने सबेरे घर-माल-

किन को सुनाया। खाना खा कर विद्यापीठ भागे, लौट कर ८ गुझिया खाई, दो गिलास दूध पिया, अखबार मे शेख मुजीब का फोटो देखा, फिर तुम्हे पत्र लिखने बैठे।

यह कैसे हो सकता था कि निराला पर किताब लिखने के लिए मुझे सम्मान मिले और मै उस अवसर पर भाषण अंग्रेजी मे करू। हम जरा तैश मे थे, बगल मे अजित कुमार थे जिनके अनुसार प्रकाशको ने निराला का शोषण न किया था सामने दो-चार प्रकाशक थे। साहित्य अकादमी का माहौल, दिन के चार बज हाल मे बिजली, हमने भी दाये बाये देखे बिना दो-चार हाथ झाड दिये। उस शाम को आखो मे निराला थे। मै अपने मन मे उन्हे याद करता हुआ सारा सम्मान उन्हे अर्पित करता जाता था। काफी जनता इकट्ठा हुई थी। बधाई देने हाथ मिलाने, हाथ जोडने वालो का अत न था। बाकी पुरस्कार विजेता एक तरफ खडे थे, लगता था सारा मजमा हमारे लिये इकट्ठा हुआ है। मैने कहा – लो गुरु तुमने अपने कवि कर्मों से कन्या का तर्पण किया था, मै हिंदी जनता के इस स्नेह और सम्मान मे तुम्हारा तर्पण करता हू।

२२-३-७१

इतना लिखने के बाद कोई मित्र आ गये, तार टूट गया। आज फिर इसे जोडने बैठे है। भाई, इदिरा गान्धी ने खूब किया। खुशी इसी बात की है कि गालियो की बौछार से वह दबी नही। यद्यपि वह निराला जी की तरह क्रांतिकारी नही, फिर भी कुछ समय के लिए उसने निराला जी की तरह सगठित विरोध का सामना किया।

लेकिन सबसे ज्यादा खुशी तो शेख मुजीब की हिम्मत देख कर होती है साम्प्रदायिकता को आधार बना कर साम्राज्यवादियो ने जो दुरभि-सन्धि की थी वह अब टूटने लगी है। धर्म के नाम पर बगाली मुसलमान यह बर्दाश्त नही कर पा रहा कि पजाबी मुसलमान उसका शोषण करे। पूर्वी बगाल मे मुस्लिम साम्प्रदायिकता की पराजय और दिल्ली मे हिन्दू साम्प्रदायिकता की । दोनो एक ही जन अभियान की गति है। विचार है कि जाग्रत जनता को अफीम की पुरानी घूटियो मे सुलाया न जा सके गा।

भाई लाओस, मे 'जन तत्र' के रक्षको को लेने के देने पड गये। हैलिकाप्टरो मे लटक-लटक कर भागे। एक भागने वाले वियतनामी, दूसरे मार भगाने वाले वियतनामी। एक अतीत की सड़ी गली तलछट, दूसरे अनागत की उठती हुई, दुर्धर्ष लहर। एशिया करवट बदल रहा है।

हम सबेरे से दोपहर तक निराला के साथ रहते है। उनकी कविताए पढ़ते है, कुछ लिखते है, अक्सर दूसरे दिन उसे काट देते है, खीझते है, रीझते है, फिर आगे बढ़ते है। दोपहर के बाद भाषाविज्ञान की दुनिया मे पहुँच जाते है। अभी क०

मुंशी विद्यापीठ के इतिहास, उद्देश्य, उपलब्धि आदि का अध्ययन कर रहे हैं। गर्मियों बाद अध्यापन कार्य शुरू करें गे। बहुत-सी अच्छी पत्रिकाएँ आती है, बहुत सी पढने लायक किताबें हैं। कुछ दिन जमे रहे तो, शायद कुछ काम हो जाये। वैसे कालेज से साल भर की छुट्टी ली है, न मन लगे तो लौट जायँ।

कल पं० उमाशंकर शुक्ल मिले थे। हिं० अकेदेमी[1] में लिखित भाषण पढ़ने को कहते थे। अभी कुछ तै नहीं किया। यदि इलाहाबाद आया तो बांदा पास ही है...

तुम्हारा—रामविलास

बांदा

प्रिय डाक्टर १६-१०-७१

बहुत दिनों बाद पत्र लिख रहा हूँ। अब तो नये पद भार का काम हाथ में आ गया होगा। और अवकाश भी मिलने लगा होगा। इसलिए अब डिस्टर्ब कर रहा हूं कि कुछ हाल-चाल लिखो।

मैं ठीक हूं।

इधर बाँग्ला देश पर एक लम्बी कविता लिखी थी। मुक्त छंद मे। अपने और अपने नगर के Reactions ले कर। गुरिल्ला war को ही सराहते हुए। भेजूगा। कुछ और भी छोटी-छोटी रचनाएं लिख सका हूँ।

यह Political settlement क्या हो सकता है। जिसका धोखा फैलाया जा रहा है। वह देश तो मुक्त हो तभी तो ख़ूबी है। मैं इस बिचवानी की स्थिति से सहमत नहीं हूं।

पंत जी ने बच्चन पर दीवानी का केस चलाया इलाहाबाद में—पहले नोटिस दे कर। उसमें बच्चन ने बयान तहरीरी दी। शान से जमे रहे। झुके नहीं। अन्त में मुकदमे में जान न देख कर पंत जी ने मुकदमा खारिज करा लिया। मूह के बल गिर गये। उन्हें केस दायर ही न करना था—बच्चन को पत्रो के छापने की अनुमति स्वयं दो बार दे चुके थे। न जाने क्या हो गया था उन्हें कि कचहरी की शरण में दौड़ गए। भले मानस लोग कचहरी नहीं जाते। जो जाते हैं वह बहुत विवश होते हैं या सताने वाले होते हैं। इसके बाद पंत जी बच्चन से मिलना चाहते थे प्रयाग में। पर बच्चन नहीं गये। ख़ैर।

आज धर्मयुग में बच्चन की नई कविता 'अक्लमंदाना इशारा' पढ़ी। सम्भवत: पंत जी से सम्बन्धित है। देखना जरा। काफी तीव्र प्रतिक्रिया बच्चन के मन में हुई है। पंत जी के व्यवहार से।

और सब पूर्ववत् है।

आशा है कि मालकिन जी का स्वास्थ्य ठीक होगा। उन्हें मेरी नमस्ते देना।

1. हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद। पं० उमाशकर शुक्ल उस समय इसके सचिव थे। [प्र० सि०]

वच्चे सब कहां-कहां हैं ? लिखना ।

आना चाहता था दीवाली में, पर इलाहाबाद चाची के घर चला गया । न पहुंच सका तुम तक । पत्र लिख कर पूछना चाहता था कि तुम रहोगे या नहीं । पत्र न लिख सका था इसी से अनिश्चय में आना न हो सका ।

क्या-क्या दिनचर्या रहती है । लोग याद करते है तुम्हें ।

मौसम बदल रहा है । सबेरे सुहावना रहता है । सस्नेह तु०

केदार

पुनश्च: इलाहाबाद में नागार्जुन मिले थे । मास्को हो आए हैं । केदारनाथ अग्रवाल

Tele. gram : Hindipith
Phon : 73952

K. M. INSTITUTE OF HINDI STUDIES & LINGUISTICS
AGRA UNIVERSITY, AGRA

no...... Dated ३१-१०-19७१

प्रिय केदार,

जिस दिन तुम्हारा पत्र मिला, उसके एक दिन पहले हम घनश्याम के यहां सोम ठाकुर से तुम्हारी चर्चा कर रहे थे, इस बात पर आश्चर्य प्रकट करते हुए कि वकालत में अपनी कविता तुम कैसे बचाये रहते हो । तो वकालत का क्या हाल है ।

हमने निराला वाली किताब का दूसरा खड—अनेक अध्यायों को कई बार लिखकर और पूरी किताब दो बार रिवाइज़ करके अगस्त में प्रकाशक को दे दिया । पहले खंड से अलग यह निराला के मन की थाह लेने का नया प्रयास है : दुस्साहस भी । बड़ी मेहनत पड़ी । जिसे देखो वही कहता था – बड़े दुबले हो गये हो, क्या बीमार हो ? किसी को क्या समझाएँ । अब आलोचना लिखना बद ।

सोचा था—दो महीने आराम करेंगे । किन्तु यहां कुछ ऐसा योग घटा कि क० मुं० विद्यापीठ से इस्तीफा देना मैंने ठीक समझा । इस्तीफा मंजूर होने से पहले मैंने भाषाविज्ञान में अपनी नई खोज की पुष्टि के लिए कुछ सामग्री बटोरना उचित समझा । आजकल उसी में लगा हूँ—शायद नवंबर के अन्त तक कालेज लौट आऊंगा । तब कुछ दिन आराम ।

इस बीच हम ग्वालियर और शिवपुरी घूम आये । शिवपुरी के निकट भूरा खोह है—कोलरिज के कुब्लारवा में वर्णित enchanted chasm का प्रतिरूप है । कभी उधर जाओ तो ज़रूर देखना । ग्वालियर में हिन्दी प्राध्यापकों के अध्ययन-चिंतन-भाषण-स्वार्थपूर्ण व्यवहार देख कर समझ में आया हिंदी भाषी जाति क्यों पिछड़ी हुई है । देहरादून गया । वहां कुछ लोग पर्वतीय राज्य—गढ़वाल-कुमायूं को मिला कर—बनाने के फेर में हैं । यहां आगरे के पास लोगों ने रुनकुता में सूरकुटी ढूंढ़ निकाली है । कहते हैं, इसकी ईंटें और गारा देख कर जान मार्शल ने कह दिया

था—यह सूरकुटी ही है। राष्ट्रपति आकर अंग्रेजी में भाषण कर गये— मुख्य मंत्री ने सूर-गोष्ठी में व्याखान दिया। करीब एक लाख अभी भाई लोग सरकार से प्राप्त कर चके है। ७० लाख की योजना बनाई हे सूर स्मारक निर्माण के लि?। कुछ लोगो ने ब्रज प्रदेश का अलग राज्य बनाने की माग भी सामने रखी। सुन्दर बात है, बंगाल के दो भागो मे जातीय चेतना का ज्वार आया है; हिंदी भाषी प्रदेश में उसका भाटा है। हर तरफ उतार, हर तरफ बिखराव। राजस्थानी और भोजपुरी साहित्य एम.ए. के लिये कुछ वि०विद्यालयो मे स्वीकृत विषय है। मैथिली पहले मे।

बंगाल का विभाजन-साम्राज्यवादी षड्यंत्र का फल है। धर्मान्धता के बल पर कायम की हुई एकता को जातीय चेतना ने तोड़ दिया है। यह कहने का साहस—या बुद्धि—किसी में नहीं है। कारण, इसकी परिणति पूर्व-पश्चिम बंग की एकता है। बगाल का विभाजन भारत का विभाजन भी था, इसलिए पूर्व-पश्चिम बग की एकता भारत के विभाजन का नाश भी है।

हां, बच्चन ने वह कविता पंत जी पर ही लिखी है। 'सौम्य सन्त' को श्रद्धांजलि है।

पत्नी पहले से अच्छी है।

अपने हाल लिखना। तु० रामविलास

बांदा १७-११-७१

प्रिय डाक्टर

दिनांक ३१/१० का पंत्र सामने है। उत्तर दे रहा हूं अब। विलम्ब हो ही गई [गया]। पिता जी यहा आए हुए है। बीमार हो गये थे। अब सकट दूर हुआ है। ठीक हो गए है। तब यह पत्र लिख रहा हू। वैसे मै तो ठीक ही हू। आशा है कि तुम सपरिवार ठीक होओगे।

हां, आराम करना भी जरूरी है। major work करके चैन की सास लो और हमे भी माल खाते समय याद कर लो। सेहत अच्छी करो। विचार-भूमि पर निरन्तर रहने वाला व्यक्ति जहां उसकी फसल चरता है वहां वह स्वय भरपूर चरा जाता है। दुबले तो पडोगे ही। बीमार तो लगोगे ही। लोग ऐसा कहते है तो सही ही कहते है। अब हाल लिखना कि कैसे चल रही है तबियत महरानी। हम तो वही है—पीठ में दर्द रहता है। बुढाई अगो मे उतर आई है। वैसे जी से पक्के हैं।

भूरा खोह देखने का मौका लगा तो देखेंगे। पर जल्दी तो आशा नही है।

सूरदास बाबा मरणोपरान्त दूसरो का पेट पाल रहे हैं। वह तो जन्म से ही अन्धे कहे जाते है। भला ऐसा क्यों न हो।

बंगाल का जातीय चेतना ज्वार वाकई में कमाल का है। वियतनाम बनेगा निश्चय है। हां यदि समझौता परस्तों ने बाजी मार कर खून पी लिया तो दूसरी बात है। अभी तो वाहिनी सर किये है। और क्या हाल हैं ? वकालत ही तो पेट पालती है। साधारण है।

सस्नेह—केदार

२१-१-७२

प्रिय भाई,

वसंत की बधाई लो। बराम्दे में आधी धूप, आधी छाया में तुम्हें कार्ड लिख रहे हैं। कार्ड लिखते समय याद आया, इस बार खेतों में सरसों देखने नहीं गये। आज जायँ गे। सबेरे घूमने जाते हैं। मुंह अंधेरे। शाम को क० मुं० विद्यापीठ से लौटते हैं ६ बजे तक जब फिर अँधेरा हो जाता है। इसीलिए सरसों-दर्शन से वंचित रहे। दो साल से गेंदे भी नहीं लगाये। गुलाब अलबत्ता गहगहा रहा है। आज कल हम कुछ भाषाविज्ञान की पढ़ाई कर रहे हैं। उस भाषा का इतिहास समझने के लिए जिसे हम तुम लिखते बोलते है। तुम्हारी बुढ़ाई का क्या हाल है ? कितने अंगो में उतरी ? पीठ का दर्द अब कैसा है ? शरीर की मालिश कब से नहीं कराई ? मुजीब का ढाका वाला भाषण सुना था ? भाव विह्वलता की हद थी; फिर भी भीतर से उसका मन सधा हुआ था।

तु० रामविलास

बांदा

२५-१-७२

प्रिय भाई

२१/१ का पत्र आज मिला। बेहद खुशी हुई। एक लम्बा समय पत्रहीनता का बीच [बीत] चुका है। अब इस वसंत के आते ही हमारे पत्र प्रकट हुए हैं। यह शुभ है।

धूप-छांह में मेरी याद आई। गहगहे गुलाबों के मुंह से उड़ी सुगंध ने तुम्हें अवश्य ही मेरी याद दिलाई। न सही गेंदें। हमारे इस पत्र को ही इस बार गेंदों का पेड़ समझ लेना। सरसों तो मन में बसी ही रहती है। चाहे देखे या न देखें। बाहर बडी ही खुशियों की उछाल चल रही है—बांगला देश की विजय की। अभी भी प्रवाहित रक्त प्रेरणा दे रहा है नये सूर्य को आगे के दिनों को उजागर करने के लिए। देखो ज़माना कहां से कहां जाता है।

मैं बुढ़ा तो रहा ही हूं। पर पत्र पाते ही हवा में उड़ने लगा हूं जैसे जवान के हाथ से सितार बजे। मैं इस उम्र में भी अपने भीतर बाहर कही भी क्षरण या

मरण के चिह्न नहीं देखता। पोर-पोर से पुष्ट और पवित्र हूं। संसार छोड़ कर चलने का विचार आता ही नहीं। सचमुच मैं भी गहगहा रहा हूं। न दर्द है, न दवा की जरूरत है। मालिश तो मैंने कभी कराई ही नहीं। मुजीब कैद रहे, भाग्य से रहे। छूटे तो भाग्य से रहे। सरताज मिला। अब देखो कहां ले जाते है। मुझे मुक्त वाहिनी ने मोह लिया। तभी धर्मयुगवाली कविता लिख सका। लिफाफा नही है इससे यह हरकत[1] है।

तु०—केदार

बांदा

३०-४-७२

प्रिय डाक्टर,

यार बहुत चुप हो—एक भी खत नही। मैंने लिखा भी तब भी उत्तर मे एक पंक्ति भी नही। क्या माजरा है ? भाषा पर काम कर चुके होओगे। तुम तो पिल पडते हो कोई न कोई जरूरी काम ले कर और हमें भला देते हो। यह सब हमे तो अच्छा नही लगता। हम यहाँ तपस्या करते है और तुम एक भी नही सुनते।

अब तो मेरे मद्रास के पते पर पत्र दो। मैं वहा ८/५ को यहा से जाऊंगा, झांसी होता। १०/५ को पहुंच जाऊंगा। पता है—

मेरा नाम

16 Thirumurthy Street

'T' Nagar

Madras-17

यदि इस तारीख से पहले उत्तर दो तो ८/५ तक यही मिल जायेगा।

सस्नेह तु० केदार

३०, नई राजामंडी

आगरा-२

१२-५-७२

प्रिय केदार,

तुम्हें शायद मैंने लिखा था कि क० मुं० विद्यापीठ से मैंने पिछले सितम्बर में इस्तीफा दे दिया था। किस्सा कोतह —मैं वहां अभी ३० जून तक हूँ। इस बीच मैं भाषा विज्ञान का अपना अध्ययन पूरा कर लेना चाहता हूँ। आज कल यहाँ काफी

1. पोस्टकार्ड के बगल-बगल, ऊपर-नीचे लिखने को 'हरकत' कहा गया है। [प्र० वि०]

गर्मी पड़ रही है। सबेरे तीन-चार घंटे चाहे जो काम कर लो, उसके बाद रेडियो, संगीत, खबरे, पुराने कागजों को व्यवस्थित करना वगैरह। सोचते है, आज सबेरे का समय किताब पढने और नोट्स लेने मे लगाओ, दोपहर या रात को चिट्ठी लिखें गे। दोपहर हुई—अभी तो खाना हजम नही हुआ। खाना हजम हुआ—इस समय तो गर्मी बहुत है। कल सबेरे लिखे गे। सबेरा हुआ—अच्छा दो घटे पढ ले, साढ़े आठ बजे लिखें गे। फिर देखा—साढ़े आठ की जगह साढ़े दस बज गये है। अच्छा दोपहर को ··

इस समय दोपहर के पौने तीन बजे है। दो बजे की न्यूज के बाद कुछ देर म्यूजिक सुना। फिर बत्ती जला कर चिट्ठी लिखने बैठे। सामने खाट पर माल-किन लेटी है। इन दिनो बहुत दिनो के बाद वह अपने आप घर से निकल कर पास-पडोस मे आने जाने लायक हो गई है। सबेरे थोड़ी दूर टहलाने ले जाता हूँ। इच्छा होती है Love at 60 पर एक गद्य पुस्तक लिख डालूं। सबेरे चार बजे छत से दूर आगरा मथुरा रोड के घने पेडो मे कोयल की आवाज सुनाई देती है। पाच बजे स्टेशन के सामने वाली सड़क पर अमलतास की पीली डाले कही भीतरी आग से दमक उठती है। हमारी कौलोनी मे जहा व्यापारियो ने नन्हे पौधे उखाड नही डाले थे, गुलमुहर के लाल झंडे आसमान की तरफ उडते से लगते है। और हमारे प्रेम मे अब लपटे नही है, निर्धूम दहक है जिसे कहे सुने बिना हम चौबीस घटे—प्रतिक्षण अनुभव करते है। सो कर उठने पर एक दूसरे से कुछ कहे बिना मुँह देख कर समझ जाते है—कैसी नीद आई। और कभी कही से अचानक आ कर कहे गी - सदर्भ बताये बिना—उसका हाथ नही उठता। मै समझ लेता हूँ, पडोसी की बात है जिसे लकवा मार गया है। अब इच्छा होती है—ऐसा कुछ लिखे जिसमें मनुष्य के मन की गहराई दिखाई दे। लेकिन लिखने के पहले जरा यह भाषा समझ ले जिसमे लिखना है। जिसके शब्द हजारो साल से हमारे बाप दादे बोलते आये है और जिनका इतिहास अभी हमने समझा नही है। बस, यह आखिरी साल – फिर विदा-- भाषा विज्ञान, विदा आलोचना। हम सिर्फ वह लिखे गे जिसमे हिंदी भाषा का छिपा हुआ सौंदर्य, उसकी भाव शक्ति उजागर हो। मद्रास के समुद्र और हवा का हाल सुनाओ, अब हमारा आल्हा समाप्त हुआ।

तुम्हारा—रामविलास

बांदा
२४-७-७२
प्रिय डाक्टर,

गरमी के दिन निकल गए—गरम न होओ दोस्त कि मैंने तुम्हारे पत्र का उत्तर नहीं दिया। अब—लो यह पत्र, सेवार्पित है।

भाषा पर काम खत्म हो गया होगा। अवकाश मिला कि नही ? क्या कुछ लिखा तुमने उसकी एक झलक हमें भी दे दो। शायद मज़ा आ जाये।

जून में मद्रास ही रहा। जुलाई से यहीं हूं। मौसम बरसाती नही शुरू हुआ वही गरमी चल रही है पर गरम तवे वाली नही। कुछ कमजोर पड़ी है। पानी अन्यत्र बरसा है। इधर-उधर। उसी की ठंढक है।

इधर कुछ लिख नहीं सका।

अब कभी-कभी हड्डियों के जोडों में जड़कन सी महसूस होने लगी है पर दिक्कत नहीं होती। चेहरा बुढ़ा गया सा है। नीचे के सब दांत निकल गये है। पर बनावटी नही लगवाये। अब तो श्री सी० बी० राव आगरे के वाइस चैंसलर हैं। खूब साहित्य चर्चा करते होओगे।

बच्चों का और घर का क्या हाल है ? मालकिन को हमारा साष्टांग दंडवत देना।

अब आगरे कब बुलाते हो हमे ? कब रहोगे वहा निश्चय ही ?

इधर छुट्टियो में कही बाहर न गये होओगे। गरमी तो वेहद पडी थी। तिलझ गये होओगे। पर तुम्हारा बेंत देख कर वह भीतर न पैठी होगी।

यहां अब जगदीश राजन[1] डी० जी० सी (क्रि०) हो गये है। उसी पद पर जिस पर मै था। ठीक रहा। बेईमान कोई न आ मका। कभी-कभी सरकार भी समझ से काम कर देती है।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

15-9-72

प्रिय केदार,

हम इंतजार कर रहे थे कि तुम तमिलनाडु की धरती से महाबलिपुरम् के समुद्र का गहरा नीला रंग लिए हुए पत्र लिखो गे लेकिन पत्र तुम्हारा बांदा से आया जिसमे लगा कि काफी दिन मे केन किनारे भी नहीं गये हो। खैर, कोई बात नही।

अपने दो दाँत बनावटी हैं जो नीचे वाले तीन की जगह काम देते हैं। पहले अटपटा लगता था पर अब उनके बिना बोलना, खाना-पीना सब नकली मालूम होता है। हमारी हड्डियों के जोड तो दुरुस्त है लेकिन पैरों की नसे उभर आई हैं और कभी कभी चलने मे दर्द-सा होने लगता है और इच्छा होती है कि पुलिया

1. अवकाश प्राप्त सदस्य, संघ लोक सेवा आयोग, दिल्ली। कुछ दिनों तक उ० प्र० लोकसेवा आयोग के भी सदस्य रहे। [अ० वि०]

पर बैठ कर आराम कर लें। चेहरा बहुत तो नहीं बुढ़ाया पर दाढ़ी की खाल नापसंद ढंग से ढीली हो गई है। ऐसी-तैसी साले बुढ़ापे की।

राव साहब बंबई गये थे। वहां दमे का जबर्दस्त दौरा पड़ा। दिल्ली आये। परसों आगरे। कल भेंट हुई। बोलने मे अब भी सांस उखड़ आती है। दिल्ली में बुखार भी था, अब नही है। साहित्य-चर्चा ? साहित्य विश्वविद्यालयो के बाहर की चीज है। यहां गुटबंदियाँ है, सीनियौरिटी-जूनियौरिटी के झगड़े है और फाइलों के अंबार हैं।

कल राव साहब एक सज्जन दशरथ राज की बात कर रहे थे। मैं समझा—कह रहे है, दसखत राज। मैने कहा : आप ठीक कह रहे है, यहा दसखत राज है, काम कुछ नही होता, सिर्फ फाइलो पर दसखत होते है।

खैर, अभी भाषा वाला काम साल-दो साल और चलेगा। हम एक तिलस्मी खोह में फँस गये हैं जिसके बाहर आना जल्दी मुमकिन नहीं।

हमारा कही जाने का प्रोग्राम नही है। प्यारे, जब आ सको, आ जाओ। भाषाविज्ञान की बात न करें गे, बस कविता पढ़े गे. गुनें गे, सुनें गे।

तुम्हारा —रामविलास

२७-१०-७२

प्रिय केदार,

तुम्हारी परेशानी समझ कर चित्त दुखी हुआ किंतु फिर सोचा, समाज में गुडागर्दी इतना [इतनी] बढ़ गई है कि साहस पूर्वक उसका मुकाबला करना अत्यावश्यक है और जो ऐसा करते है, वे अभिनदनीय है--परिणाम कुछ भी हो। जिये तो मर्द की तरह वरना जिदगी से मौत अच्छी। जिदगी मे ऐसे क्षण कभी-कभी अचानक आ ही जाते है जब मर्द मौत की परवाह न करके सम्मान पूर्वक जीते रहने के लिए शत्रु से भिड़ जाता है। परिणाम कुछ भी हो, तुम्हारे भतीजे ने काम वीरता का किया।

मन में धैर्य रखो क्योंकि वीरता मे अधिक अब उसी की आवश्यकता अधिक हो गी। शुभ परिणाम के लिए मेरी हार्दिक, मगलकामनाएँ।

तुम्हारा
रामविलास

बांदा
६-१२-७२
रात ६ बजे

प्रिय डाक्टर,

पोस्टकार्ड आज मिला।

नागार्जुन पटना है। पत्र आया है। तुम्हे भी याद किया है। दिल्ली जाने पर वहा से आगरा आ कर तुमसे मिलने को लिखा है।

यह जानने पर जरा चिन्ता हो गयी कि तुम न आओगे तो क्या करेगे हम लोग। तुम्हारा आना तो बहुत जरूरी है। ऐसा न करना भाई। वरना जान निकल जायेगी। सारा काम छोड कर आना जरूर।

यह तो लिखो कि इस सम्मेलन मे लेख किन-किन विषयो से सम्बधित होने चाहिए। फिर प्रगतिशीलता के अब तक क्या-क्या रूप हुए है या नही हुए उस विषय पर भी तो एक लेख होना चाहिए। पिछले बीस-बाईस साल मे जो साहित्यिक विस्तार और विकास हुआ है उसके मूल्याकन का भी प्रश्न महत्वपूर्ण है। वह भी विचारने योग्य हे! इस पर कौन लिखेगा? सगठन का सवाल भी आयेगा। उसका कितना व्यापक क्षेत्र समेटा जायेगा यह कम महत्वपूर्ण नही हे। अलावा इन बातो के तमाम नये अप्रतिबद्ध या और नये लोग लिख रहे है—वह सब कैसे और कहा तक इसमे सहयोगी बनाये जायेगे, इस ओर भी सविशेष ध्यान देना होगा। प्रकाशन का कार्यभार P P. H लेगा या नही या कैसे किस प्रकार कराया जायेगा? बडी सकट पूर्ण समस्या है। इसे हल होना चाहिए। फिर राजनीति की ओर और सरकार की ओर सब का कहा तक कैसा रुख रहेगा? —प्रस्ताव कैसे पास होगे?—झगड़े के ये प्रश्न मुह बाये खडे है।

लेखको की अपनी समस्याए है। उन पर भी कहा सुनी होनी ही चाहिए।

तुम्हारा भरपूर योगदान न मिला तो सब गुड-गोबर हो जायेगा।

निश्चय ही बादा छोटी जगह हे। यहा की दृष्टि मे जरूरी है कि वैचारिक धरातल पर ही समस्याओ पर विचार-विमर्ष हो—व्यक्तिगत आरोप और प्रत्यारोप का माहौल सर्वथा विपरीत होगा। पता नही दूसरे लेखक कितना क्या जहर उगले। उसकी चिन्ता तो नही है। पर सबसे बडा काम मिल-भेटने का होगा और प्रकाशन पर बल होगा और देश के राजनयिक परिप्रेक्ष्य मे कितना—कैसा रुख हो—गम्भीर विवाद का विषय उभरेगा।

कृपया अपने विचारो से —हरेक बात पर —सुझाव और समाधान भेजो। तुम्हारे पत्रो से आगे बढ़ने की दिशा खोजने मे मदद मिलेगी। तुरन्त उत्तर देना।

सस्नेह तु० केदार

केदारनाथ अग्रवाल
एडवोकेट,

सिविल लाइन्स, बाँदा
(उत्तर प्रदेश)
दिनांक १३-१-७३

प्रिय डाक्टर,

७-१ का पत्र सामने है।

साहित्यकारों के झगड़े पेचीदी [पेचीदे] है। यह मैं बखूबी जानता हूं। यह भी एहसास है मुझे कि मसले मुलझाना बहुत कठिन काम है।

यह सम्मेलन तो बादा की चेतना मे एक कम्प पैदा करने के लिए आयोजित हो रहा है। और कुछ हो न हो एक जगह बहुत से जाने-पहचाने लोग मिल लेगे और कह-सुन लेगे। इसे किसी पार्टी के इशारे पर आयोजित नही किया गया। न पार्टी मे कोई निर्देश लिया गया है। पार्टी की ओर से अभी ऐसा प्रयास नही हो रहा। इसलिए हम लोग पार्टी के प्रति न तो कोई अन्याय कर रहे है न उसके लिए डका रहा. रहे है।

जहा तक रमेश सिन्हा का सवाल है वह भी इस सम्मेलन मे दर्शक की हैसियत मे आ कर देख-सुन सकते है। वह नीति-निर्धारण या कोई दिशा नही दे सकते। न हम उन की ओर से भ्रम है। न उन्हे हमारी ओर से भ्रम है।

प्रकाशन की व्यवस्था तो होनी ही चाहिए इस प्रश्न को ज़ोर-शोर से उठाया जायेगा और इसके लिए बाद को भी दिल्ली तक मे पहुचाया जायेगा। मै जानता हू कि पार्टी ऐसे मसलो मे राजनीति से चाल चलेगी। लेकिन उसे झकझोरा तो जा ही सकता है। वैसे कुछ न कहने या करने से तो वे और भी सोये रहेगे।

घटिया लेखकों की जमात जहा रहना [रहनी] चाहिए वही रहेगी। लेकिन वह बढ़िया लेखको के खिलाफ ज़ेहाद तो बोलती ही रहती है। उसे भी तो पास बिठा कर नये की ओर निगाह करने के लिए उकसाया जा सकना है।

जमाव बडा होगा। मेला होगा। काम भी माकूल न होगा। यह सब कुछ सही है। फिर भी छोटे घटिया लेखकों के कृतित्व के विरुद्ध हमे अपने ही लोगों की आखे भी तो खोलनी है और दूसरे नयो को उधर जाने से बचाना भी तो है।

पत्रिका का प्रकाशन भी हो। यह विषय उभारा जायेगा। प्रयास किया जायेगा। यदि वह निकलेगी तो फिर महत्वपूर्ण लेखक सम्मेलन बुलाया जायेगा। डियर चिन्ता न करो।

इसमे शामिल होओ। आओ। कुछ न कहो तो भी रहो। उपस्थिति से प्रेरित करो। पुस्तक अभी नही मिली।

सस्नेह तु० केदार

बांदा
5-3-73

प्रिय डाक्टर,

सम्मेलन की शुभकामनाएं मिल चुकी थीं। तुम्हारे न आ सकने का हम लोगों को बेहद खेद रहा और तुम्हारी कमी सबको लगातार खटकती रही। फिर भी सम्मेलन को आशातीत सफलता मिली और इसके लिए आये हुए सभी साहित्यकार धन्यवाद के पात्र हैं।

निराला की साहित्य साधना का दूसरा भाग मिल गया है। अभी केवल सर-सरी तौर से देख सका हूँ। काफी वस्तुपरता से तुमने लिखा [है ऐसा] जान पड़ता है फिर धैर्य से पढ़ूंगा तब विस्तार से लिखूगा [लिखूंगा]। आशा है कि मलकिन ठीक होंगी और तुम तो ठीक होगे ही।

सस्नेह तुम्हारा
केदारनाथ अग्रवाल

११-११-७३

प्रिय भाई,

विलंबित पुरस्कार[1] प्राप्ति पर हार्दिक बधाई। विदेश यात्रा सुखद हो।

सस्नेह
रामविलास

केदारनाथ अग्रवाल,
एडवोकेट

सिविल लाइन्स, बांदा
(उत्तर प्रदेश)
दिनांक : १६-११-७३
शाम ५ बजे

प्रिय भाई,

११/११ का पोस्टकार्ड अपनी दो पंक्तियों की लढ़ी पर सवार, कल मेरे पास आ पहुंचा। या [पहले] भी आया तो वह मेरी गैर हाजिरी में। पर मिला मुझे कल जब मैं दिल्ली से पुरस्कार लेकर वापिस बांदा आया। पहले तो देख कर गुस्सा लगा फिर बायीं तरफ 'फूल' बना देख कर हल्की-सी हंसी हंसा। और यह सोच कर कि तुमने 'फूल' को अंग्रेजी के शब्द 'Fool' से जोड़ कर प्रतीक का प्रयोग किया है मैं भी कवि की तरह पुनः गुस्साया। आखिर यह क्यों? बड़े

1. 'सोवियत भूमि नेहरू' पुरस्कार। इस पत्र में बायीं ओर नीचे फूल बनाया गया है। [प्र० वि०]

'कमलकोंचू' हो। सच में इस हरकत से बड़ी आत्मीयता प्रकट हुई और हमारा पूर्व व्यक्तित्व जमीन पर उतर आया और हमने तुम्हें गले लगाया पाया। दो पहियों की—यानी दो पंक्तियों की—यह लढ़ी हमारे जैसे देहाती के लिए वाकई में बिल्कुल फिट भेंट है। तुम बड़ी रेलगाड़ी चलाते तो वह हमारा दिल और दिमाग धड़धड़ा देती और हम उजबक की तरह देखते खड़े रह जाते। समझ कुछ न पाते।

मैंने तुम्हारे पोस्टकार्ड को कई बार उल्टा लटकाया और थपथपाया तो वह गिड़गिड़ाया और बोला "मैं क्या करूं? डाक्टर ने माना ही नही। मैंने तो आसमान की तरह फैल कर अपने को उनको समर्पित कर दिया पर उन्होंने मुझे अपने वाक्यों से वंचित ही रक्खा और रोते-रोते, बधाई बांध कर, पोस्ट-बॉक्स के अंधेरे-घर में झोंक दिया। मैं मजबूर था। आया तो आप न मिले। रोता पड़ा रहा। खैर आपने स्नेह दिया। यही क्या कम है। कृतज्ञ हूं। पर उल्टा लटकाने और थपथपाने से दिमाग में बल पड़ गया है।"

मैं हंसा कि हंसता ही रहा। यह विलंबित नहीं 'द्रुत विलम्बित' पुरस्कार है। विलम्बित तो वह पुरस्कार होता है जो मरणासन्न आस्था [अवस्था] में या मरणोपरान्त मिलता है। अभी तो मैं जीवित हूं। इसी से यह पुरस्कार द्रुत ही हुआ।

एक सुखद अनुभव था।

समय से २ मिनट पहले हाल में पहुंचा। बैठा। अगली पंक्ति मे। फिर ऊपर डायस पर सब बैठे। मैं भी वहीं बैठा। जरा ठाट [ठाठ] में आया। मन की लगाम खीची। कचहरी में बैठने का अनुभव करते रहे। पहला नम्बर मेरा ही हुआ प्राप्तकर्ताओं में। सरदार स्वर्ण सिंह ने प्रदान किया। एक चैक + एक मेडल + एक प्रमाण पत्र। रूस की यात्रा की वचनबद्धता से बांधा गया। फिर फोटो खिचतीं रहीं। बाद को सभी ने बधाइयां दी। सुमन भी थे। उन्होंने कहा कि रामविलास भी आने वाले थे। मैंने कहा: वह नहीं आये। तो बोले: जहां केदार वहां रामविलास अवश्य हैं। मैं हंस पड़ा। माचवे भी थे। उन्होंने भी भेंटा। भारतभूषण भी मिले। यानी कि शमशेर यार भी वहां आये थे। खूब कस कर मिले—(यानी गले से)। नागार्जुन थे ही। हम सब कुछ देखते-सुनते रहे।

दिमाग हमारा हमारे अन्दर हमें समझता बूझता रहा। चेक जेब में पड़ी* रही [पड़ा रहा] पत्नी जी भी थीं। वह समारोह का सुख बटोरती रही। हम उन्हें नयी आंखो से टटोलते रहे। बेटी-दामाद दोनों थे। प्रसन्न होने की बात थी। यज्ञ पूरा हुआ और हम घर लौटे।

आज अमृतलाल नागर का पत्र आया। तुमसे बड़ी बधाई भेजी है। उन्हें भी जवाब दे रहा हूं। तुमने मौन तोड़ा। यह अधिक प्रसन्नता की बात है। पत्र देता हूं जवाब ही नही आता। डाकघर में चोर लगते हैं।

आशा है कि स्वस्थ और प्रसन्न होओगे। हम लोग ढल रहे है— गोलियों की तरह नही मजबूर सूरज की तरह जिसे रोज शाम को ढलना पडता है। दूसरे दिन फिर नई आस ले कर जीने लगते है। यही क्रम है।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

२७-११-७३

प्रिय केदार,

तुम्हारा १६/११ का पत्र मिला।

इससे पहले तुम्हारा ५-३-७३ का पोस्टकार्ड मिला था। जिसमे निराला वाली किताब के दूसरे खड के बारे मे तुमने लिखा था, "फिर धैर्य मे पढू गा तब विस्तार से लिखू गा। इसके बाद तुम्हारा कोई पत्र नही मिला। तुमने लिखा है कि "पत्र देता हू जवाब ही नही आता। डाकघर मे चोर लगते है।" कोई ताज्जुब नही; तुम खत ही इतने खूबसूरत लिखते हो। लेकिन अनमिले खत का जवाब न लिखने के लिए हमे सजा न मिलनी चाहिए।

पुरस्कार तुम्हे विलम्बित ही मिला, बादा सम्मेलन से बहुत पहले मिल जाना चाहिए था। मै तगडी बधाई देता हू रचना पर— पुरस्कार पर नही, खास कर जब वह बहुत घटिया लोगो को मिल चुका हो। पर कमल का फूल — Fool नही, उसकी आठ पँखुडियो के नीचे तीन शून्य, आठ हजार हुए। मेरे वहा आने का सवाल ही क्या जब मेरे पास न निमत्रण पहुँचा न और कोई सूचना। लेकिन बादा के लिए शायद कोई दूसरी लाइन चालू हो गई है। जिससे आगरा बहुत दूर पडता है।

ढलते सूरज की खूबसूरती गजब की होती है। खास कर इन दिनो। जियो, ऐसे ही जियो, बहुत दिन जियो, खूब लिखो, हर सबेरे नई आग ले कर—जैसा कि तुमने लिखा है—जियो।

हम आज कल निराला वाली किताब के तीसरे खण्ड मे है।

तुम्हारा
रामविलास

बांदा
१४-१२-७३
४ बजे शाम

प्रिय डाक्टर,

२७/११ के पत्र का उत्तर लो।

निराला वाली किताब को पढ़ने का शुभ अवसर दिन-पर दिन टलता जा रहा है। मन रमेगा तभी सम्भव होगा। पढ़ूगा औंर लिखूंगा। भेजूंगा।

भला तुम्हें सजा कौन दे सकता है। फिर हम तो और भी नाकाबिल हैं इस काम के लिए। हमने तो तुम्हारी कलम हमेशा चूमी है—आज भी चूमते हैं। हमारी जान तो तुम अपनी मुट्ठी में ले चुके हो। अब सजा वजा कैसी। मैं तो बधाइयां ही देता रहूंगा। तुमने साहित्य में एक समझ पैदा की है। लोग कहें चाहें जो [,] लोहा तो मानते ही है। नये लोग तो यहां निराला को नहीं 'मुक्तबोध' को ले कर उछले-कूदे और निराला को पीछे ढकेलते रहे। पर बात जमी नही। फीके पड़ गये। अभी एक उम्र चाहिए अपने महाकवि के करतब समझने के लिए। यों ही नहीं पल्ले पड़ सकते। उनका काव्य पढ़ना कोई चाट के पत्ते चाटना नही है। राजनीति आज चाहे जो हो वह भी निराला के काव्य को झुठला नहीं सकती। बंधे मनो-योग और तने सीने की साधना का ही फल हैं उनकी कविताएं। कविता कोई फैशन की नयी आयी साडी नहीं है कि जो चाहे देख कर आंखें मुलमुलाने लगे। निराला ने जितना जो कुछ लिखा है वह हिन्दी खड़ी बोली को चिरकाल तक जिलाये रहेगा और काव्य को सही दृष्टि और दिशा देता रहेगा। भला बेचारे नये लड़के कभी भी उन्हे नये माहौल में पकड़ कर धैर्य से ग्रहण कर सकते है। [?] नन्न-कभी नही।

मैं आगरा आता परन्तु श्रीमती भी साथ थीं और एक सज्जन और भी थे। फिर यहां पहुंच कर काम में जुटना था। रुकता तो २ दिन देने पड़ते। एक दिन में मन न भरता। यही बात थी जो दिल्ली से लौटते में न पहुंचा।

अब किताब कहां तक पहुंची। यज्ञ कब तक पूरा होगा। जल्दी खत्म करो। तब हम भी मिलने आयेंगे। वैसे तुम्हें इस बीच अवकाश ही कहा होगा।

मालकिन को नमस्कार।

तुम्हें भी एक चुल्लू अमरित।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

६-२-७४

प्रिय केदार

पर साल प्रगतिशील लेखकों के सम्मेलन की बड़ी चर्चा थी, इस साल इलाहाबाद के लेखक-सम्मेलन की चर्चा सुनाई दे रही है। लगता है कुछ संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी से और कुछ मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी से संबद्ध लेखको ने यह सम्मेलन आयोजित किया था। मार्कण्डेय और भैरवप्रसाद गुप्त थे, रघुवंश सूत्रधार थे। शायद अमृतराय भी शामिल हुए थे। महादेवी वर्मा भी थी। धर्मवीर भारती, कमलेश्वर और जगदीश गुप्त किसी कारणवश रघुवंश आदि से असंतुष्ट थे। कल रघुवंश यहा आए थे। उनसे सब बातें मालूम हुई। एक सम्मेलन बिहार मे हुआ उसका हाल खगेन्द्रप्रसाद[1] से सुना था। इन सब आयोजनों में काफी पैसा खर्च हुआ हो गा। न जाने क्यों, किसी मासिक या त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन अभी तक इन आयोजनो के फलस्वरूप सभव नही हुआ। बाजार में दवाइयों से लेकर धनिया और बेसन तक [में] जैसे मिलावट है, वैसे ही थीसिसों से ले कर रचनात्मक साहित्य तक [में] ऐसी मिलावट है कि क्या कहने है। ऐसे मे यदि राजनीति मे कई तरह की मिलावट हो तो आश्चर्य न होना चाहिए।

इधर भाषाविज्ञान से जी ऊबने पर हम तुलसीदास पढ़ते रहे। राम-लछिमन भरत-सीता-हनुमान से बहुत अच्छे लगते है तुलसीदास। सतह पर काफी सेवार बहता दिखाई देता है, नीचे बहुत ज़ोरदार रूढ़ियो की चट्टानो से टकराती हुई धारा है। ['] लोक को न डर परलोक को न सोच देव सेवा न सहाय गर्व धाम को न धन को ['] इस उक्ति मे सभी रूढ़ियो के ऊपर से उनकी कविता धारा बह चली है। जब वह Ecstasy मे होते है तब उनके मन के साथ उनका शरीर, शरीर का रोम रोम भाव मे डूब जाता है: ['] सजल नयन गदगद गिरा गहबर मन पुलक शरीर [']। एक पक्ति में Ecstasy का ऐसा चित्रण दूसरी जगह नही देखा।

रामचरित मानस मे वह "सन" का प्रयोग बहुत करते है, कवितावली और विनयपत्रिका मे कम। अवश्य ही वह इसे अवधी का रूप मानते है। ग्रियर्सन ने बादा की बोली के एक नमूने में "तन" का प्रयोग दिखलाया है - "तरफ" के अर्थ मे नही "से" के अर्थ मे—"उन अपने बाप तन कहिन"। एक मिसाल फर्रुखाबाद की बोली की दी है— "लड़िका के बाप सन कही"। यहा फर्रुखाबाद के लोग कहते है कि उनके यहा "सन" नही बोला जाता। तुम्हारी तरफ "तन" या "सन" का प्रयोग होता है या नहीं? धीरेन्द्र वर्मा की प्राचीन हिन्दी में बघेली का जो उदाहरण ग्रियर्सन के आधार पर दिया गया है उसमें "हो ही" (हो ई, हो गा), "मान ही" (मानी, माने गा) "बोल ही" (बोल है),। "कह ही" (कहि है), "बचाहीं"

1. डॉ० खगेन्द्र ठाकुर। कवि-आलोचक। [प्र० त्रि०]

(बचई है), मै "जा हू" (जाउँ, जाऊँ), मै "चल हूँ" (चलि हौ) ,जैसे रूप है। रामायण मे ऐसे रूप काफी है । क्या तुमने ऐसे रूपो का व्यवहार उधर कही होते हुए सुना है ?

निराला वाली किताब का तीसरा खड समाप्ति पर है । अब अपने हाल लिखो ।

तु०— रामविलास

केदारनाथ अग्रवाल
एडवोकेट

सिविल लाइन्स, बाँदा
(उत्तर प्रदेश)
दिनाक १३-२-७४
शाम ५-१/२ [साढे पाच] बजे

प्रिय डाक्टर,

दिनाक ६/२ के पत्र का उत्तर अब दे रहा हू । देरी इसलिए हुई कि बेटा और उसकी [illegible] अपने बच्चे प्रशात को लेकर मद्रास मे आ गये थे । परसो वापस गये । मै उन्ही मे व्यस्त रहा ।

बादा सम्मेलन ने शुरुआत की । बरसो के सन्नाटे को तोडा । यहा के सम्मेलन के समय हम लोगो ने साहित्यिक पत्रिका की चर्चा की थी । सभी आये हुए साहित्यकारो ने सुझाव अच्छा समझा था । पर अन्तर्धारा यही मालूम हुई थी कि पार्टीबदी मे फसे लोग इस ओर एक जुट हो नही सकते । मार्क्सवादी अलगाव की स्थिति मे ही रह कर लिखना-पढना चाहते थे । छोटी-मोटी पत्रिकाओ के अलमबरदार भी अपनी निजता बरकरार रखने के लिए एक पत्रिका के प्रकाशन के लिए तैयार नही दिखे । कोई भी व्यक्ति इस मसले पर कृतित्व की रक्षा के लिए एक सहयोगी पत्रिका निकालने की दिशा मे ठीक से सोचने-समझने के लिए तयार नही दिखा । सब पर राजनीति सवार थी । साहित्य सभी के लिए गौड-सा ही रहा । इलाहाबाद मे जो सम्मेलन हुआ वह तो बादा-सम्मेलन की उल्टी प्रतिक्रिया के लिए ही आयोजित किया गया जैसा लगा । वही लोग जो यहा आम जनता म जुडने-जूझने की बात कर रहे थे वहा केवल प्रकाशक और लेखको के आपसी सबधो को ले कर उबलते रहे । शायद ही हरीशकर परसाई [हरिशकर परसाई] के अतिरिक्त किसी ने दो टूक बात कही हो और समाजवादी साहित्य के निर्माण की बात सोची हो । महादेवी वर्मा का ऐलान भी भारतीय सस्कृति के नाम पर अच्छा नही रहा । यहा बादा मे भी उन्होने इसी सस्कृति का अधूरा और एकागी स्वरूप सब के सामने रखा था । तभी डाक्टर भगवतशरण उपाध्याय ने (श्री विश्वम्भरनाथ ने नही) ने उन्हे भद्र तरीके के उत्तर दिया था और भारतीय सस्कृति के उस पक्ष को उजागर किया था जिस पक्ष से उस का असली स्वरूप सामने आया था ।

बिहार में हुआ सम्मेलन डा० खगेन्द्र प्रसाद के प्रयास से आयोजित हुआ था। वहां की पूरी रिपोर्ट देख नहीं सका। पर वह इलाहाबादी सम्मेलन से भिन्न तो था ही।

तुम ठीक कहते हो—पहले भी तुमने यही लिखा था कि बिना पत्रिका के कुछ काम नहीं बन सकता। बात पते की है। परन्तु वह दिन दूर है— बहुत दूर है जब पत्रिका निकल सकेगी। माहौल भयानक है। गुट्टबाजी सबसे, प्रबल है। कृतित्व की परवाह किसी को नहीं है। नयी प्रतिभाएं भटक रही हैं। कोई साथ नहीं चल सकता। अपने-अपने तौर तरीके है। बेहद कूड़ा-करकट ऊपर फेंका जा रहा है। इस पर भी चुप बैठे रहना कोई महत्व नहीं रखता। छुटपुट ही सही [,] सही काम होते ही रहना चाहिए। दिखावट के युग में मिलावट खा कर ही जीना पड़ता है। पर मिलावट है इसी अवगतता को अपनाये-अपनाये लिखते रहना पड़ेगा। कोई दूसरा उपाय नहीं है। पार्टियां पत्रिका नहीं निकालेंगी। यह भी निश्चय ही लगता है। उन्हें राजनीति लड़ाने से अवकाश नहीं है। उनका ध्यान ही इधर नहीं जाता चाहे जितना कहो सुनो। वैसे संसद सदस्य श्री झारखंडे राय से बातें हुई थीं कि क्या साहित्य और संस्कृति को जन संघ के लिए छोड़ा जा रहा है। वह कहते तो थे कि अपनी पार्टी में पत्रिका का सुझाव वह रखेंगे। व्यास जी[1] से दिल्ली में बात हुई थी। वह कहते थे अभी तो सम्भव नहीं है। हालत ठीक नही है। शायद 'जनयुग' का Supplement ही Literary—निकालना सम्भव हो। देखो क्या होता है।

अब चुनाव की सरगर्मी है। समाजवादी साहित्य के निर्माण की दिशा इस चुनाव से क्या होगी यह अभी कह सकना कठिन है। बड़े विषम दिन हैं। लगता है कि जैसे साहित्य का मंच उखाड़ फेंका जा रहा है और छिछला और छिछोरा पत्र ही कृतित्व कहला सकेगा। आत्मपरकता का वस्तुवत्ता से कोई गहरा सम्बन्ध नही रह गया। समाजवादी दृष्टिकोण धुधला रहा है कृतित्व मे। न कोई समय देता है—न धैर्य से काम करता है। फुलझड़ियां छुटाई जा रही है। वही जो गरम बनते हैं कुछ दिनों बाद व्यवस्था से जुड़ कर समाप्त हो जाते है। शायद सब जगह ऐसा होता रहा है अन्य देशों में भी। इस पर भी अच्छा लिखा जायेगा चाहे कम ही क्यों न हो।

समय तो उपयुक्त है कि धारदार कृतियां लपलपाये और ज्योति बिखेरें। पर कृतियां बनिया की पुड़िया हो गयी है। जिनमें नकली हल्दी और गरम मसाला मिला करता है। तमाम कारण हैं जो इस सब के लिए जिम्मेदार हैं।

तुम तो खूब जम कर लिख रहे हो। मुझे बेहद खुशी इसी बात की है। और भटक जायें—तुम नहीं भटके, यह बड़ी बात है। दाद देता हूं। निराला की तीसरी

---

1. श्री एच० के० व्यास, जनयुग—संपादक, पी० पी० एस० से सम्बद्ध।

पुस्तक भी तयार कर डाली तुमने। बधाई।

तुलसीदास अच्छे तो है ही। राम-लछिमन-भरत-सीता-हनुमान तो उन्ही के बनाये है। अब इस युग मे तुलसी का सेवार ही सब तरफ उतराया फिर रहा है। भारतीय संस्कृति के नाम पर वही-वही तो श्रेष्ठ माना जाता है। बेचारे सतह से नीचे धँसे तुलसी का असली मर्म तो कोई समझता ही नही। न उसे कोई ऊपर लाता है। तुमने वह रूप देखा है इसलिए तुम कहते हो कि सभी रूढियो के ऊपर से उनकी कविता-धारा बह चली है। उनकी Ecstacy को देखती नही है दुनिया। तभी तो मै कहा करता हूं कि रामायण [को] ताबीज बना कर लोगो ने गले मे पहन ली [लिया] है और बस कल्याण हो गया सब तरह का। मुझे इसी रूप मे तो नफरत है। पर लोग है कि इस बात को सहन नही कर सकते। तुलसी का असली रूप लोग समझें—जनता उसे पहचाने तब वह किसी काम के हो सकते है वरना वह भी परम पूज्य बना कर प्रात.स्मरणीय मात्र घोपित कर दिये जायेगे। जनता अनपढ है। उसे पढाना पड़ेगा। रामलीला ने मूढ जनता को रूढियो मे ही जीने का बल दिया पर रूढ़ियो के तोडने का बल तो नही दिया। वास्तव मे वह (तुलसी) भक्त मात्र मान लिए गये है -क्रातिदर्शी नही। यह विडम्बना है कि हम लोग उन्हे उबार नही रहे। उनके राम-लछिमन आदि तो स्थापित हो गये परन्तु तुलसी विस्थापित हो गये। यह सच है, झूठ नही। अभी पिछले दिनो चित्रकूट मे तुलसी-मेला आयोजित हुआ था। वह भी वही रूढ़ियो का मेला था।

हमारे बादा के जनपद मे 'तन'[1] का प्रयोग नही होता। कभी किसी समय मैने सुना था कि 'हम सन' न बोलौ। पर फिर नही सुन सका वही प्रयोग।

'होई' के लिए यहां 'ह्वै-है' भी प्रयुक्त होता है। यह प्रयोग 'होगा' के अर्थ मे भी होता है। 'मनिहै कस न ?'···अर्थ है कैसे न मानेगा। 'बोलही' नही बल्कि 'बोलहिन' का प्रयोग होता है और अर्थ होता है 'बोलना ही' (पड़ेगा) 'जाहू' नही ···'जॉव' प्रयुक्त होता है। 'चलहूं' नही बल्कि 'चलि हौं'। हो सकता है कि पहले कभी वैसे शब्द प्रयुक्त होते रहे हो पर अवधी और बघेली के सम्पर्क सूत्र बढ़ते-बढ़ते और खड़ी बोली के शहरीपन ने उन पुराने शब्दो को बदल दिया हो। कह नही सकता। मेरा कोई मत नही है। मैं भाषाविज्ञ नही।

मुझे एक कतल का केसा मिला है। बड़ा खराब है। उसी के तथ्यो से जूझ रहा हूं। अकल गुम है। करूं तो क्या करूं। कम उम्र का लड़का है। जरा-सी बात पर कहा जाता है कि उसने चाकू मार दिया और दूसरा लड़का मर गया। मुझे तो कोई रास्ता नहीं दिखता।

और मालकिन की तबियत कैसी है ? तुमने कुछ लिखा ही नही। हमारा नमस्कार देना। और बेटों-बहुओं का क्या हाल है ? वे सब कहा है ? कैसे है ?

---

1. सभवत: 'सन'। [प्र० नि०]

जरूर लिखना। बेटियां तो अब सभी ब्याह गई होंगी ? पढ़ लिख भी चुकी होंगी ? उन सब को मेरी याद करा देना।

इधर तीन-चार दिन बेहद ठंढ पड़ी थी। आज ज़रा कम है। आगरा तो और भी खराब रहा होगा।

इधर २०/२५ दिन कचहरी नहीं गया था। Fissure हो गया था। अब चल लेता हूं। दवा करते-करते ठीक हो गया। अजीब मर्ज है। बड़ा वाहियात है।

नागार्जुन दिल्ली हैं। सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

Tele { Gram-Hindipith
Phone 73952

K. M. INSTITUTE OF HINDI STUDIES & LINGUISTICS
AGRA UNIVERSITY, AGRA

No... Dated [मार्च १९७४]

प्रिय केदार,

शाम का वक्त, झुटपुटा, आडी निगाह के सामने सीमेट से पुती कोठी, सीमेट के रंग का आसमान, सडक पर ट्रक का शोर, एक कोठी मे फाटक से लगी खडी अधेड़ स्त्री जिसके लड़कियां होती हैं, लडके नही, घर के सामने गुलमोहर का मज़बूत तना जिसकी मोटी डालें होली में लड़के काट ले गये, उन कटी डालों से फूटी हुई नई पत्तियां, मच्छर जो लिखने नही देते जुही के पेड या झाड़ में फूल-कलियां, सबेरे बच्चों-बूढों की टोलियां जिसके फूल नोचती है, भुवन का तमिल भाषी दोस्त जिससे हम एक शब्द तमिल का बोले और वह प्रसन्न हुआ, मेरी पत्नी का स्वास्थ्य-—लछिमन झूला, डगमग डगमग, वह भी हम भी, परसों सबेरे बक्सा खोल कर कुछ निकाल रही थी, ढक्कन सर पर गिरा, बहुत परेशान, वह भी हम भी[।] भाषा विज्ञान जो खत्म नहीं होता पर अब ख़त्म हो गा ही क्योंकि ३० जून को हम अध्यापकी से छुट्टी पायें गे और फिर पुस्तकालय से किताबे लेने कौन जाता है, और ये चालीस पूरे हुए मेरे हिंदी लिखने के, पहला लेख सन् 34 में छपा था।

सबेरे घूमने जाते है। कभी-कभी थकान महसूस होती है। आराम करते है, ताज़े हुए, फिर पढ़ते है। कभी-कभी अध्यापकों वाली दुनिया के आदमी अच्छे नही लगते, गांव के अपढ़ गँवार याद आते है, इनसे अच्छे लगते है। कल प्रेमचंद के कुछ पत्र प्रसाद के नाम देखे। श्री रत्नशंकर ने हमारी एक रूसी छात्रा को नकल करके भेजे थे। सन् ३० में प्रेमचद ने प्रसाद के अतीत गौरव गान की कड़ी आलोचना की थी पर कंकाल को बड़ा गर्म आंसू कहा था। चपरकनातियो की दुनिया

में प्रेमचंद खो गये है—पाठकों में जिंदा है, मुर्दा लेखकों की महफिल में लापता हैं। सन् ३०—सन् ७४ वे पत्र पढ़ कर लगा कि प्रेमचंद को रंगभूमि में तन कर ललकारते हुए सामने देख रहा हूं। अच्छे लडे, आखिरी दम तक लड़े - और खूब चौपट किया देश को दग़ाबाज सियासतनबीसों ने।

क्या हाल है तुम्हारी बीमारी का? क्या क्या पढ़ा इधर? फुर्सत के वक्त क्या सोचते हो? कविता लिखने के लिए ऋतु अभी अनुकूल बनी हुई है या बदल गई? तुलसीदास पर भाषण कराने वालो ने तो परेशान नहीं किया?

तुमने इधर आने को लिखा था? कब आओ गे? ९ मई को स्वाति (मेरी लडकी) का ब्याह है। मुंशी भी रहें गे आओ न तब?

केन मे अब कितना पानी है? इस साल यहा पानी बिलकुल नही बरसा। सरकारी नीति बदली पर मंहगाई जोरों पर है दुनिया को बदलने के लिए कलम काफी नही हे। क्या करे? बुढापा आया नही तो आ रहा हे। लिखने के अलावा और कुछ करने के काबिल रहे नही। खैर, दुनिया बदलने वाले और भी है और अबेर-मबेर जागे, गे, जोर लगाये गे ही। बस।

तुम्हारा—रामविलास

बांदा

८-४-७४

६ बजे शाम

प्रिय डाक्टर,

धुंध छाई है। पीली रोशनी फैली है। सूरज महराज मुंह छिपाये है। क्यारी में गुलाब के पौधे तपे-तपाये खड़े हैं। फूल भी है। मगर मन मारे जैसे। पिता जी आये है। हाथ का प्लास्टर डाक्टर भार्गव से कटवा आये हैं। दफ्तर के कमरे में लेटे है। शरीर क्षीण है। पर पहले जैसे ही हैं। आज २-१/२ [ढाई] बजे चावल-दाल खाने आया –कचहरी से। सबेरे डौल नही लगा करता। बीबी [बीवी] जान का हाथ दाहिना कांपता है। रोटी बनाने में दिक्कत होती है। कुकर मे पकता है। भाई की पत्नी | उनकी बहू उन्ही की बीमारी मे लगी रहती है। इससे वह लोग खाना नहीं बना पाती और अब अलग ही खाना पका करता है। मैं भी पत्नी को बरतन धुलाने में मदद कर ही देता हूं। समय काफी रहता है। सहयोग से काम चल रहा है। इस उम्र में मजूरी करना [करनी] पड़ रही है। कचहरी अच्छी नही लगती। जाता हूं। कम केस लेता हूं। पिर जाता हूं। आजकल एक कतल केस करना पड़ा है। १०/४ को बहस करना है। यह भी अजीब पेशा है। पैंतरेबाजों के लिए यह ठौर ठीक है।

इधर परेशान-ही-परेशान रहा। इससे कविता रानी को भूला रहा। लिख नहीं सका। पढ़ने के लिए सब कुछ पढ़ लिया। अब किताबें नहीं, अपने मन को पढ़ता हूं। चाहे जितना परेशान हो, ज़रा-सी कुछ राहत मिली कि औला-मौला हो जाता है। बड़ा बेहया है। मस्ती मारते रहना यह न भूला—न भूला। वैसे दोस्त अपनी जिंदगी कसाई के घर की गिरफ्त में हमेशा रही है। हमीं ने उसे गौरैया की तरह फुदकाया है हमेशा। हमेशा यही रहा है कि कोई टांग पकड़ कर खींचे ही रहता है। यह व्यवस्था ही दईमारी ऐसी है कि बड़े से बड़े वीर-बहादुर को लिद्दी घोड़ी बना देती है।

मैं शादी में शामिल न हो सकूंगा। मुझे ११/५ को दिल्ली से सोवियत भूमि जाना है। वहां पहले से पहुंचना है कि सब कुछ प्रबंध कर लूं। (मैं—) हम दोनों —हृदय से शुभकामना भेजते हैं। दोनों हम लोगों की तरह जिंदगी न बितायें धूप की तरह निखारें और फूलों की तरह खिलायें और उसे हथियार की तरह काम पड़ने पर चलायें।

प्रेमचंद को पाना कोई खेल है कि आज के कथाकार उनके सिर का बाल छू लें। सब के सब पेशा करते हैं—जीवन नहीं पकड़ते हल की मुठिया की तरह। खैर।

अच्छे और लम्बे पत्र के लिए बधाई। तब तक दो एक पत्र और देना कि अपना दर्द तो मारते रहें। मालकिन के चोट आई। हमें भी दर्द हुआ। उन्हें हमारी पैलगी देना। सबको यथायोग्य। [केदारनाथ अग्रवाल][1]

R. B. Sharma
M. A., Ph. D. (Luck)
Head of the Department of English

R. B. S. COLLEGE
AGRA

Dated ३०-४-७४

प्रिय केदार,

आज कल तुम रूस जाने की तैयारी में लगे हो गे। हम ब्याह की तैयारियों में लगे हैं। यानी इंतजार में लगे हैं कि ९ मई आये और हमें छुट्टी मिले।

भारत में चार भाषा परिवार हैं, आर्य (संस्कृत आदि), द्रविड़ (तमिल आदि), मुंडा (संथाली आदि) और नाग (अंगामी, सेमा आदि) इनके बोलने वाले हज़ारों

---

1 इस पत्र के अन्त में केदारजी ने अपना हस्ताक्षर नहीं किया है। [अ० त्रि०]

साल मे साथ रहते हुए एक दूसरे को प्रभावित करते रहे है। किंतु उन्हें यह नहीं मालूम कि रोज जो भाषा बोलते है, उसमे कितने तत्व पड़ोसी भाषा-परिवार के हैं। अच्छे पड़ोसियो की तरह रहने के लिए यह जानकारी बहुत ज़रूरी है। श्रमिक जनता को अपना जीवन सुधारने के लिए जो लोग संगठित करना चाहते हैं, उन्हें इस बात की जानकारी होनी चाहिए। जिन्हें इस देश से प्रेम हो, उन्हें विशेष कर इन भाषा परिवारों के परस्पर संबंधों का ज्ञान अवश्य प्राप्त करना चाहिए।

भाषा मनुष्य की अर्जित संपत्ति है, उसकी सांस्कृतिक विरासत का महत्त्वपूर्ण अंग, उसके सास्कृतिक विकास का महत्वपूर्ण उपकरण। यूरुप का सपूर्ण भाषाई रिक्थ भारत की इस भाषाई विरासत का मुकाबला नहीं कर सकता। जिन्हें मनुष्य से प्रेम है, जो अपने को मानवतावादी कहते हैं, उन्हे इस विरासत का ज्ञान होना चाहिए।

संसार के इतिहास में एशिया और यूरुप का हिस्सा तीन चौथाई है। इस इतिहास में भारत और मध्यपूर्व का हिस्सा आधे से ज्यादा ही है। बौद्ध धर्म एशिया के विशाल भूखंडों में भारत से फैला; ईसाई धर्म और इस्लाम यूरुप और एशिया में मध्यपूर्व से फैले। यूरुप और एशिया की भाषाओं के विकास में मध्यपूर्व और भारत की भूमिका विश्व इतिहास की अपूर्व घटना है।

भाषा के क्षेत्र में भारत की अंतरराष्ट्रीय भूमिका को पहचानना, सबसे पहले भारत की भाषाओं के परस्पर संबंधों को पहचानना एक ऐसा काम है जिसके राज-नीतिक-सांस्कृतिक महत्व को अस्वीकार नही किया जा सकता। मैं तीन साल से इसी काम में लगा हूं और अभी साल दो साल और लगा रहूं गा। शरीर पहले से दुर्बल है, प्रतिदिन किसी अँधेरे कोने में नया प्रकाश देख कर विह्वल हो जाता हूं। अयोध्या काड के भरत की दशा मेरी दशा है।

तुम्हारी यात्रा निरापद, हिंदी भाषा और साहित्य के लिए फलप्रद हो।

तु० रामविलास

बांदा

७-६-७४

प्रिय डाक्टर,

मैं उस दिन बस से १२ बजे दिल्ली पहुंच गया था। तुम्हें कष्ट हुआ इसका मुझे खेद है। बहुत-सा समय सुबह का मैंने चट कर लिया था। खैर।

५/६ को ही यहां दोपहर को वापस आ गया। ठीक से पहुंच गया।

दिन और रातें गरमागरम हैं।

आज बादल तो नहीं धुंध है। रेडियो ने कहा है कि धूल भरी आंधी और

पानी के छींटों की सम्भावना है।

उस दिन की काव्य गोष्ठी अच्छी ही रही। आशा है कि मालकिन की तबियत ठीक चल रही है। मेरी पत्नी उन्हें नमस्कार भेजती हैं। आगरे न जाने का उन्हें मलाल रह गया। मैं ही उन्हें वहां न ले गया था।

बच्चो को शुभाशीष।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

११-६-७४

प्रिय केदार,

उस दिन हम यह सोच कर काफी परेशान रहे कि कही तुम्हे बस मे जगह न मिली हो। तुम सही सलामत पहुंच गये, बडी बात है। तुम्हारे साथ बहुत अच्छा समय बीता, कवि को कविता सुनाने का मज़ा ही कुछ और है। बांदा दूर है वर्ना हम तुम्हें रोज़ वाल्मीकि और मिल्टन मुनाते।

दिन और रातें गर्म हैं मगर लू नही चलती और शायद इसलिए बेले के फूलो में अब वह महक नहीं है। उस दिन की काव्य गोष्ठी को लोग बराबर याद करते हैं। मालकिन स्वाति बिटिया के ससुराल जाने से उदास है पर बहू के बहाने कहती हैं, जब देखो, टपटप आंसू गिराने लगती है। खैर, यह संसार है।

तु०

रामविलास

बांदा

१-७-७४

प्रिय डाक्टर,

पोस्टकार्ड मिला था। निराला जी के पत्र और फोटो नहीं भेज सका। कल मद्रास के लिए रवाना हो रहा हूं। वहा मे जुलाई के अंत तक आऊंगा। तब भेज पाऊंगा। मद्राम का पता है—

16 Thirumurthv Street

T Nagar

Madras 17

—मैं पहले कष्ट से खड़ा रहा फिर बैठने की जगह मिली। तब जा कर दिल्ली सकुशल पहुंचा।

कल ३०/६ को कानपुर में शर्मा होटल में प्रगतिशील लेखक सम्मेलन की

बैठक थी। सम्पर्क समिति की। श्री राजेन्द्र रघुवंशी और डा० चौहान आगरे से आये थे। आगरे में सम्मेलन होगा। विधान पारित हो गया है। १० लोग उपस्थित थे। कर्णसिह ने अपने अनुचित लेख लिखने के लिए खेद प्रकट किया तब निष्कासित न किए गए। कुछ प्रस्ताव पास हुए।

मालकिन की तबियत अब कुछ ठीक होगी। उन्हें नमस्कार हम दोनों का।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

९-७-७४[1]

प्रिय केदार,

मद्रास में समुद्र तट की ठंढी हवा खा रहे हो गे, हम यहां सडी गर्मी में अधमरे हो रहे हैं। महाबलिपुरम् का चक्कर जरूर लगाना और नीले समुद्र को हमारी तरफ से 'वणक्कम्'[2] बोलना। हां, पत्नी अब पहले से कुछ ठीक है। हम आज अपने अध्यापक जीवन मे अवकाश प्राप्त कर रहे है।

निराला जी के पत्र न भेज सके, कोई बात नहीं, लौटने पर भेज देना।

शेष कुशल।

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

16 Thirumurthy Street
T Nagar
Madras 17
[१७-७-७४]

प्रिय केदार,

अध्यापन-कार्य से मुक्त होने की बधाई। वैसे जनाब को चैन कहा होगी, लिखने पढ़ने से। वैसे भविष्य में जीवन-यापन की समस्या तो उठ ही खड़ी होगी। आशा है कि कुछ-न-कुछ करते रह कर गुजर-बसर करना [करनी] ही पड़ेगा [पड़ेगी]।

अभी महाबलीपुरम नही गया। जाऊंगा। मौसम अच्छा है। आगरा गरमा-गरम है। अधमरे हो गये हो। कोई उपचार नहीं है। अब तो पानी बरस ही गया होगा। ठंढक आ ही गई होगी। सागर महाराज को हम आपका वड़क्कम

1. इस पोस्टकार्ड पर पतेवाली जगह में केदारजी का नाम तमिल में है। [प्र० त्रि०]
2. नमस्कार [प्र० त्रि०]

[वणक्कम] जरूर देंगे और उनसे कहेंगे कि वह आपके नाम की भी लहरे लहराये और आपकी तरफ से रत्न दान मे दे उपयुक्त पात्र को।

सुपुत्र के दूसरा पुत्र पैदा हुआ है २/७ को। मैं तो यहा ४/७ को पहुचा हूं। सब ठीक है।

मालकिन की तबियत ठीक है। यह सुखद समाचार है। उन्हे हमारी नमस्ते दें।

इधर लिख तो नही सका, कुछ नया। पढा जरूर है। पर रचना करना कठिन है।

सस्नेह तु०
केदार[1]

आगरा-२
२६-८-७४

प्रिय केदार,

दक्षिण भारत से उत्तर भारत मे आये या नही ?

अनेक द्रविड भाषाओ मे केत या केद जोती बोई जाने वाली जमीन यानी खेत को कहते है। उसका बहुवचन रूप है केदार। मराठी शेत—सस्कृत क्षेत्र –हिंदी खेत और द्रविड केत/केद/केदार एक ही गोत्र के शब्द है। धरती की गध से भरी तुम्हारी कविता केदार—तुम्हारा यह नाम खूब सार्थक करती है।

अगले महीने लखनऊ मे हिंदी समिति की बैठक हो गी। मेरा जाने का विचार हो रहा है। तुम भी आ जाओ तो दो एक दिन साथ-साथ बिताये।

यहा सब पूर्ववत् है।

तुम्हारा
रामविलास

बादा
२८-८-७४

प्रिय डाक्टर,

२६/८ का [पत्र] मिला।

मेरे [अपने] नाम का अर्थ जान कर मुझे आश्चर्य नही हुआ क्योकि भाषाविद्

1. यह पहला पत्र है जिस पर केदारजी ने तिथि नही लिखी। यह तिथि डाक की मुहर क आधार पर दी गई है। [प्र० लि०]

हो। खोज करते ही रहते हो। पर खुशी हुई कि तुम्हें मेरी कविताओं की याद हो आई और उसमें तुमने धरती के [की] गंध का हवाला दे कर मुझे भी खुश कर दिया। सच कहूं डाक्टर कितना कलकता[1] हूं कि मैं बहुत अच्छी रचनाएं क्यों नही दे पाता। शायद मेरे दिमाग की कमजोरी है कि मैं चीजों को पकड़ नहीं पाता और शायद भाषा की कमी है कि बहुत कह नहीं पाता। जो भी हो है।

मैं भी लखनऊ पहुंचूंगा। कोशिश तो करूंगा कि पहले ही पहुचूं। पर हो सकता है कि रात १२ बजे पहुंचूं। दूसरे दिन तो रहूंगा ही। भेंट होगी बातें होंगी। नागर जी के दुर्लभ दर्शन मिलेंगे। और भी लोगों के मुह देखने को मिलेंगे। पुराने दिन याद आयें गे।

अवश्य आओ।

मैं मद्रास से १६/८ को यहां आया हूं।

सस्नेह तु० केदार

४-६-७४

प्रिय केदार,

तुम्हारी चिट्ठियों मे पहली बार २८/८ वाले कार्ड में यह पढ़ने को मिला :

"सच कहूं डाक्टर कितना कलकता हूं कि मैं बहुत अच्छी रचनाएं क्यों नहीं दे पाता। शायद मेरे दिमाग की कमजोरी है कि मैं चीजों को पकड़ नहीं पाता और शायद भाषा की कमी है कि बहुत कह नहीं पाता। जो भी हो है।"

बधाई। मैं समझता हूं, तुम अब और भी अच्छी —यानी पहले की रचनाओं से बढ़ कर—कविताएं लिखो गे। तुमने एक बार और दक्षिण से लौट कर बड़ा सुन्दर पत्र लिखा था। बांदा से बाहर निकलना शायद लाभप्रद होता है।

तुम सहज कवि हो जैसा हमारे अपने समय में और कोई नही है। दिमाग की कमजोरी मैं नहीं मानता, न भाषा की कमी मुझे लगती है। मन के [की] कितने [कितनी] पर्त [पर्तें] कब, कहां तक खुले गे [खुलेंगी] आगे क्या दिखाई दे गा, कोई कवि नहीं कह सकता। बगले की तरह ध्यान लगाये रहे, मछली निकली और उसने चोंच में दाब ली—इसके सिवा और करे क्या बेचारा? सत्संग से पर्त खुलने में मदद मिलती है लेकिन जीवन की परिस्थितियाँ—हरेक अपने लिए खुद अपना भाव-परिवेश बनाने पर मजबूर है (भाव—समग्र काव्य-चेतना के अर्थ में)।

कबीर के मन के कितने पर्त खुले थे [की कितनी पर्तें खुली थीं] और इसका प्रभाव उनकी कविता पर क्या पड़ा, इस दोहे में देखो :

1. कलक' से क्रियापद बनाया, कलकता' हू,' 'कलपता हू' के वजन पर।

पिंजर प्रेम प्रकासिया, अन्तर भया उजास ।
मुख कस्तूरी महमही, बानी फूटी बास ।

और किसी कवि की बात याद नहीं आती जिसने अपनी बानी के सुगन्धित होने की बात लिखी हो। कबीर ने यह सब मन की असामान्य सहज स्थिति में लिखा था। दिमाग को कुरेदने से ये हीरे जवाहरात कहां निकलते है। और राम रूप पर विह्वल होने वाले तुलसीदास ने दुख की थाह न पा कर जैसे एक दिन कहा था—कियो न कछू करिबो न कछू कहिबो न कछू मरिबोई रह्यो है —उसी तरह सुन्न महल में बैठ कर अनहद नाद सुनने वाले कबीर ने एक बार कहा—

जद का माई जनमिया, कदे न पाया सुख ।
डारी डारी मैं फिरा, पातैं पातै दुख ।

दुख के इस बोल पर हम रहस्यवादियों का सारा आनन्द और प्रकाश निछावर करते है।

भाई, रात बारह बजे नही, १४ को सबेरे के० सी० डे० लेन वाले घर में मिलो। पहले दिन ही तो हम अपने दोस्त की तख्तनशीनी देखना चाहते है। याद रहे, और मिलें, तो निराला जी के शेष पत्र लेते आना।

तु०
रामविलास

बांदा (उ० प्र०)
२६-१०-७४

प्रिय डाक्टर,

नागर जी[1] का पत्र आया था। वह न आये। उनका कंठ उनका पथ प्रशस्त न कर सका। तुमने पत्र भी न दिया। आये भी नही। मैं तो स्टेशन गया—ट्रेन देखी। फिर अकेला घर लौट आया। लेकिन मैं गया उसी दिन कार से। वहां दो दिन रहा। मौसम बेहद बढ़िया था। गरमी न थी। हल्का जाडा हरियाली को उत्फुल्ल किये थे [था]। धूप जो थी। पयस्वनी अनुसुइया जी में आदिम यौवन के उन्मुक्त आवेग से निष्कपट निनाद कर रही थी। देखता रहा-देखता रहा और तुम दोनों की याद करता रहा। काश तुम लोग भी होते तो शायद हम लोग उसे कंधों में उठा लेते और उसके आह्लाद के आवर्तों में गोते लगाते रहते।

जानकी कुड मे ठहरा था। प्रबन्ध बढ़िया था। कोई दिक्कत न हुई। वहां से

1. श्री अमृतलाल नागर। [प्र० त्रि०]

जीप मिल गई थी। गुप्त गोदावरी भी गया उसी में। स्थान रमणीक है। पहाड़ों से घिरा चारों ओर का दृश्य मन मोहे था। पहाड़ियां हरे परिधान मे खड़ी, धूप से गौरांग हुई, सीधे आसमान से बातें करती थीं और सूरज को सिर चढ़ाये खूबसूरत हो रही थी। इसके पद तल पर बिछे पड़े हरे-भरे खेत किसानो के श्रम और स्वेद की जयगाथा से चमक रहे थे। तुम लोग भी झूम गये होते। धत्तेरे की। वादा करके भी मुकर गये। अब शायद वह सुअवसर और वैसा मौसम नसीब भी न हो। होनहार थी कि प्रकृति उदार और स्नेहिल हो गई थी।

साथ दिया श्री जगदीश राजन ने। उनकी पत्नी और बच्चों ने और उनकी सुश्री लता साली ने। उन्हें भी बहुत अच्छा लगा। वे लोग भी तुम लोगो के साथ चौगुने चाव से चकचका जाते और जो कुछ देखते कभी न भूलते।

और सब ठीक है।

मालकिन जी की तबियत तो ठीक है ? आगरे में ही रहे या कही अन्यत्र खिसक गये थे ?

इधर विश्वनाथ त्रिपाठी[1] की पुस्तक "लोकवादी तुलसीदास" पढ़ी। बडे मनोयोग से लिखी है यार ने। पढ कर मैं भी लट्टू हो गया तुलसी पर। घरू आदमी हो कर घरू स्वर में त्रिपाठी ने तुलसी का सहज स्वाभाविक मानवीय स्वरूप उघारा है। आदमी तुलसी कवि भी बडे प्रिय थे और भक्त भी एकनिष्ठ थे। पर जब धर्म और दर्शन के चक्कर में वह पंडिताई करते थे तो गिर जाते थे। उनका कवि भी बकवादी हो जाता था। ऐसा मुझे अब भी लगता है। इस पुस्तक के पढ़ने के बाद भी।

मैंने सोचा था कि इस पुस्तक से मेरा भ्रम टूटेगा। सिद्ध होगा कि तुलसी यथास्थिति बनाये रखने के समर्थक न थे। वह भ्रम न टूटा। बल्कि इस किताब से और भी साफ हो गया कि तुलसी अवध के राज्य के आदर्शों से भरपूर बंधे थे और कदापि क्रांतिदर्शी न थे। हा, इस पुस्तक से तुलसी की मानवीय सवेदनशीलता की गहरी अभिव्यक्ति का बोध हुआ। सो ठीक है। तभी तो तुलसी आज तक लोक मानस मे प्रतिष्ठित है--किसानी संस्कृति के सरक्षक के रूप मे। तभी तो शोषक और शासक तुलसी का अभिनंदन समान रूप से करते है। यही पर तुलसी की भक्ति उन्हें भवसागर में लंगर लगा कर, आगे बढ़ने से रोक देती हैं और वह ठहरे हुए रह कर राम का आचरण लिखते रहते है।

सस्नेह तु०
केदार

1. आलोचक और कवि। [अ० त्रि०]

२७-१०-७४

प्रिय केदार,

नागर जी का पत्र तुम्हें मिल गया हो गा। गले के कष्ट के कारण कार्यक्रम रद करना पडा। आगे देखें, कब बनता है, बनता भी है कि नहीं।

निराला जी के पत्र मिल जायें तो भेज देना।

हम आज कल भारत का प्राचीन भाषा भूगोल कल्पना में देख रहे है। अकेले ही प्रसन्न हो लेने हैं। दीपावली शुभ हो।

तुम्हारा
रामविलास

११-११-७८

माई डियर वकील साहब,

आपका २६/१० का खत पढ़ कर आनन्द आ गया। "पयस्विनी अनुसुइया जी में आदिम यौवन के उन्मुक्त आवेग में निष्कपट निनाद कर रही थी।" ६० पार किये आप को हम से अधिक दिन बीते। इस उम्र में नदियां देख कर—भले ही चित्रकूट में!—आदिम यौवन का उन्मुक्त आवेग याद आना अत्यन्त स्वाभाविक क्रिया है। बांदा की केन तो बूढ़ी हो गई हो गी, है भी आपकी बाल सहचरी!

"काश तुम लोग भी होते तो शायद हम लोग उसे कन्धों में उठा लेते और उसके आह्लाद के आवर्तों में गोते लगाते रहते।" दुरुस्त विचार है! इस उम्र में किसी को उठा ले चलना अकेले दुकेले आदमी का काम नहीं। लेकिन आह्लाद के आवर्तों में गोता लगाने का काम आप और नागर जी ही कर सकते है—हम तो ऐसे कामो से कनाराकशी करते हैं यानी तटस्थ है यानी किनारे खड़े हुए आपकी स्नान लीला निहारते हैं। लेकिन आपको इतने से तसल्ली कहां? "पहाड़ियां हरे परिधान में खड़ी, धूप से गौराङ्ग हुई, सीधे आसमान से बातें करती थी" जब कि बातें करना चाहिए थे [था] उन्हें हमारे कवि से। पर उनका भी क्या कसूर? आपको पयस्विनी में गोते लगाते देख कर उन्होंने निगाह फेर ली हो गी "और सूरज को सिर पर चढ़ाये खूबसूरत हो रही थीं"—सिर्फ आपको तपाने के लिए, ईर्ष्या के कारण।

नागर जी का कार्ड विलंब से मिला, नहीं और पहले लिखता। तुम्हारे पत्र से मेरे कार्ड की मुलाकात रास्ते में हुई हो गी। उनसे यहो तै हुआ था कि लखनऊ जा कर अपनी यात्रा की पुष्टि करें गे, तब मैं कानपुर चलूं गा।

भूर्जवन में वसन्त की पहली कोंपलें फूटी है। आकाश में बादलों के फीहे उड़ रहे हैं और आसमान की नीलिमा और गहरी हो गई है। खलिहानों के बीच जहां तहां खेतो की हरियाली है। गलियारी की मिट्टी पानी से घुल गई है। पेड़ों के

तले पिछले साल की सूखी पत्तियों के नीचे से कुसुभी फूल झांक रहे है। भूर्ज वृक्षों की हरी पत्तियों में चिकना नया रस भर गया है। वन के अन्त में शाह बलूत का पेड़ है जिसका तना दस भूर्ज वृक्षों के बराबर है और ऊंचाई में वह दो भूर्ज वृक्षों जैसा है। और वह हर भूर्ज वृक्ष से दस गुना बूढ़ा है। उसकी डालें टूटी और झुलसी हुई है और छाल के चिथड़े उड़ गये है। उस पर वसन्त का जादू नही चलता।

"युद्ध और शांति" में तोल्स्तोय ने आन्द्रेई की यात्रा का वर्णन करते हुए यह सब लिखा है जिसे मैं कई दिन से लगातार पढ़ रहा हूं और जिसे बार-बार पढ़ने पर भी तृप्ति नहीं होती।

विश्वनाथ त्रिपाठी की किताब मैंने नही देखी।

सप्रेम
रामविलास शर्मा

बादा
१६-३-७५
प्रिय डाक्टर,

बहुत दिनों बाद निराला जी के पत्र व फोटो इत्यादि भेज पा रहा हूं। पहुच देना।

इधर व्यस्त भी था।

तबियत तुम्हारी व घर में कैसी है ?

क्या लिखाई-पढ़ाई चल रही है ?

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने एक प्रतिनिधि काव्य सकलन मेरा मागा है। तयार कर रहा हूं। भूमिका कुछ लिखना [लिखनी] शेष है। "आधुनिक कवि" सीरीज में छपेगी। 20% Royalty देंगे।

पत्र जरूर देना।

राव साहब[1] तो गये न ?

शायद मई में मैं व मेरा बेटा एक बारात में आगरे पहुंचे।

क्या हाल है अमृतलाल नागर जी महाराज के ?

अच्छा धोखा दिया चित्रकूट न आ कर मेरे परम मित्र ने।

अच्छा तो सस्नेह

केदार

1. श्री बालकृष्ण राव। [प्र० ति०]

५-४-७५

प्रिय केदार,

निराला जी की चिट्ठियों के साथ तुम्हारा पत्र मिला। चित्त प्रसन्न हुआ।

इधर हम करारा झटका खा गये। अब धीरे-धीरे उबर रहे हैं।

मालकिन के हृदय का एक वाल्व खराब है। हाई ब्लड प्रेशर के कारण हृदय पर दबाव रहता है और नाड़ी गति विषम रहती है। दिसंबर में डाक्टर ने कहा कि आपरेशन से वाल्व बदल देना ठीक हो गा। कुछ दूसरे विशेषज्ञों ने उम्र और कमज़ोरी के विचार से आपरेशन की सलाह न दी। आपरेशन तो टल गया। पर महीने भर बाद डायबिटीज़ का पता चला। इसके उपचार के दौरान पता नहीं कैसे इन्फेक्शन हुआ, १७ फर्वरी की रात को कई बार उल्टियां हुई; आधी रात से नीम बेहोशी और हाथ अकड़ने लगे, आंखों की पुतलियां ऊपर थी। सबेरे डाक्टर ने कहा—डिहाइड्रेशन हो गया है। नर्सिंग होम ले चलो। वहां चौबीस घंटे बाद इन्हें होश आया, न जाने कितने इंजेक्शन दिये गये, न जाने कितनी बोतलें सैलाइन वाटर-ग्लूकोज़ चढ़ाया गया। खर्च का यह हाल था कि पांच सौ रुपये तो केवल बोतल चढ़ाने के दिये, दवाओं की कीमत, डाक्टर की फीस अलग।

खैर, चार दिन बाद इन्हें घर लाये। होली पर इन्हें बुखार आ गया। अब किसी तरह मामला कुछ नार्मल है। शरीर में हड्डियां रह गई है पर ब्लड प्रेशर और डायबिटीज़ दोनों कंट्रोल में हैं।

हमारी दिनचर्या सब अस्तव्यस्त थी। आज बहुत दिनों बाद सबेरे घूमने गये थे।

अमृतलाल नागर का पोस्टकार्ड आया है। संभव है, इस महीने आगरा आयें।

आज रेडियो से पता चला बांदा में गेहूं सबसे सस्ता है। बधाई।

आशा है तुम सपत्नीक स्वस्थ और प्रसन्न हो गे।

तुम्हारा
रामविलास

१०-४-७५

प्रिय डाक्टर,

पत्र आज मिला। चिंतित तो था ही कि कोई बात जरूर है कि तुम पत्र नहीं लिख रहे। अब मालुम हुआ कि मालकिन बहुत ज्यादा बीमार थी। तुम परेशान तो रहे ही होओगे। वैसे सब दुख पी जाते हो। अच्छा है। दवाएं तो बेशकीमती हो गई हैं। आज कल जीना ही हराम हो रहा है, मारे महंगाई की मार के।

डीहाईड्रेशन तो पानी की कमी से होता है। उसने इतना भयकर रूप ले लिया। जो न हो जाय थोडा है। पर मुझे विश्वास है कि मालकिन तुम्हारे लि० अभी बहुत-बहुत साल जियेगी और तुम्हारा साथ दिये रहेगी। तुम्हारे लिये जो ममत्व है वह उन्हे भला-चगा करता रहेगा। हम दोनो उन्हे स्मरण करते है और उनके स्वास्थ [स्वास्थ्य] लाभ की कामना करते है। उन्हे हम दोनो का नमस्कार।

इधर भूमिका लिखने [मे] लगा रहा। टेढा काम है। समाप्त कर आया हू। २-४ दिन मे भेजूगा। साहित्य सम्मेलन प्रयाग के पास काव्य-सग्रह और भूमिका। गेहू सस्ता है तो रेडियो मे। हाट मे तो उम्दा मिलेगा उम्दा दाम देने पर ही।

गरमी दो दिन से कम है। पहले तो पारा आसमान मे चढ गया था।

शायद १३/५ को आगरे आऊ। शादी मे।

नागर जी भी खूब है। बहुत दिन मे चुप है। कल मे तो l..cu. का उत्सव मनायेगे लखनऊ मे। मै न जाऊगा।

वकालत विगड रही है। पेशे मे बेपेशा हो रहा हू।

देखो ये खर्चे कब तक चलते रहेगे। इधर खर्च ही खर्च है। नाती की शादी मे बहुत कुछ लगेगा।

हम दोनो ठीक है।

राव साहब तो बिदा हो गये होगे ?

हम घूमने नही जाते। बीबी [बीवी] के काम मे हाथ बटाते है। उनका हाथ हिलता है। और हमारा दिल उनका हिलता हाथ देख कर हिलता है।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

प्रिय केदार, १७-४-७५.

तुम्हारा १०/४ का पत्र मिला।

तुमने अपने कविता-सग्रह की भूमिका लिख डाली और वह साहित्य सम्मेलन के पास है, यह जान कर प्रसन्नता हुई।

आज कल मौसम का यह हाल है कि बाहर सोओ तो हाक छी, भीतर सोओ तो नीद न आये। बहरहाल, जुही के दिन गये, बेले के दिन आये।

अमृत ने अप्रैल मे इधर आने को लिखा था. आधी अप्रैल तो बीत गई, बाकी मे और इन्तजार करे गे। इस्कस की खबरे रेडियो मे हम भी सुनते रहे। तुम १३/५ को इधर आओ गे शायद— शुभ समाचार है। हो सके तो दस दिन यहा रुक जाना, न रुक सको या १३/५ को न आओ तो फिर आना। २३/५ को सेवा.

का ब्याह है। सब से पहले तुम्हें इस पत्र द्वार [द्वारा] सपरिवार आने के लिये निमंत्रण दे रहे हैं।

तुमने लिखा— वकालत बिगड़ रही है, पेशे से बेपेशा हो रहा हूं। कोई खास कारण ? हां, खर्च तो बढ़ते जाते हैं, ब्याह चाहे नाती का हो चाहे बेटी का—ख़र्च बे हिसाब हैं।

आज कल मैं भी घूमने नहीं जा पाता। सबेरे मालकिन के साथ रसोई घर में नाश्ता बनवाता हूं। नाती को सबेरे स्कूल जाने की जल्दी होती है।

राव साहब कल मिले थे। दमे से परेशान हैं, दाहने कंधे में दर्द भी होता है। लेकिन अब भी बहुत यात्रा करते हैं।

श्रीमती केदार के हाथ हिलने के बारे में डाक्टर क्या कहते हैं ? मेरे यहां तो पुश्तैनी बीमारी है यह: पिता जी, बड़े भाई, छोटे भाई चौबे[1]—सभी के हाथ हिलते हैं। किसी क़दर अपना हाथ ही अभी तक सधा हुआ है।

सप्रेम—
रामविलास

केदारनाथ अग्रवाल
एडवोकेट,

सिविल लाइन्स, बाँदा
(उत्तर प्रदेश)
दिनांक २-३-७६

प्रिय डाक्टर,

—मैंने तुम्हें पत्र इसलिए नहीं लिखा था कि तुम मार्क्स के ग्रंथ के अनुवाद मे व्यस्त होओगे और पत्र पा कर मेरे बारे में सोचने लगोगे। ध्यान बट जायेगा। वह काम ज़रूरी है। पूरा कर लो। मेरी वजह से उसमें बाधा न पड़े।

—कल विश्वनाथ त्रिपाठी का पत्र आया तो कुछ ऐसा लगा कि मुझे पत्र लिखना चाहिए। इसलिए आज ही यह पत्र लिख रहा हूं।

—अपने हाल क्या लिखूं। परिस्थितियां ऐसी हैं कि उबरने का कोई रास्ता नहीं है। बुढ़ापा भी है हम दोनों का। चारों ओर वही वातावरण है। हिम्मत किये जीवन जीने का भरपूर प्रयास करता रहता हूं। अभी हारा नहीं। यही शुभ बात है। और तो वैसे सब-कुछ हो चुका। पता नहीं भविष्य में क्या-क्या भुगतना पड़े। जब मिलूंगा तब बात करूंगा। पत्र में लिख तुम्हें चिंतित नहीं करना चाहता। बस इतना ही अपने बारे मे।

—इलाहाबाद गया था लड़की को भेजने। वहां तुम्हारी पुस्तक 'लोक

1. मेरे छोटे भाई।

भारती' में देखी : भारतेन्दु युग। तुमने मुझे समर्पित की है। चेहरा चमक उठा। क्षण भर को जान आ गई। प्रकाशक ने प्रति नही भेजी। पढने का दिल हुआ। पर बड़ी है इसलिए न पढ़ सका। लौट आया।

—जो कुछ बन पड़ता है कभी-कभी लिख देता हूं। इधर अपने मे ही उलझा चितित रहता हूं।

—नागार्जुन का पत्र आया था। वह बद है।[1]

—अब कहां तक पहुचे ? अनुवाद मे।

—मालकिन से हमारी नमस्ते कहना।

—और अपने हाल लिखना, डियर !

—मौसम बसंत का है।

—पिता जी के ऊपर जनवरी के प्रथम सप्ताह में डाका पड गया था। वहा भी गया था। जो कुछ भी था डाकू ले गये। वैसे वहा ज्यादा था ही नही। पिता जी परेशान थे। समझा आया था। पुलिस प्रयास कर रही है। पर पता नही लगा पा रही। देखा, क्या होता है।

—बेटा मद्रास में जूझ रहा है। वह भी ऊपर नही उठ पा रहा। खर्चे बहुत है। बम्बई में केस भी है F. F. C. वाला। मुझे मद्रास जाना है। शायद मार्च के महीने में। पत्र जरूर देना।

सस्नेह तु०
केदार

रामविलास शर्मा, आगरा

दिनांक ५-३-७६

प्रिय केदार,

तुम्हारा २/३ का पत्र आज अभी पौने ग्यारह बजे मिला, तब मै पूजी-२[2] का अनुवाद दुहराने में लगा था। अनुवाद नवंबर में खत्म कर लिया था पर दिसबर निकल गया निराला की सा० साधना के तीसरे खंड का संपादन करने मे। उसे जनवरी के आरंभ में राजकमल के यहां भेज दिया। तब से इस अनुवाद को दोहराने में लगा हूं और इसमें बहुत समय लग रहा है। इस बीच एक किताब 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और आधुनिकता बोध' शुरू कर दी थी। सबेरे लिपिक आता है, उसे दो घंटे बोल कर लिखा देता हूं। यह भी मार्च के अंत तक समाप्त

1. जे० पी० आन्दोलन में नागार्जुनजी जेल मे बद थे। [अ० वि०]
2. कार्ल मार्क्स की पुस्तक 'कैपीटल-2' का अनुवाद। [अ० वि०]

हो जाय गी। अगस्त १९७५ में फिर एक झटका खाने के बाद मालकिन का स्वास्थ्य पूंजीवादी Balance of payments की तरह कुछ समय के लिए सध गया है। इसलिए लिखाई का यह क्रम चल रहा है। मार्क्सवाद, भारतीय इतिहास आदि के बारे में बहुत-सी बातें दिमाग में कुलबुला रही हैं। उधर भाषा-विज्ञान का अधूरा काम वैसा ही पड़ा है। अप्रैल में सोचें गे।

तुमने अपने आखिरी पिछले पत्र में लिखा था कि तुम निराला पर मेरी किताब का दूसरा खंड पढ़ रहे हो। मैंने पत्र न लिखा; इसलिए तुम इसे किताब खत्म करने का रिमाइन्डर न समझो। खैर, मैं खुद हर किताब हर वक्त नही पढ़ पाता। तुम तो कवि हो। किताब वह है ही बोझिल। बहुत से दोस्तों ने नहीं पढ़ी। यह भारतेंदु वाली किताब भी पढ़ने में मेहनत न करना। उसे मैं तुम्हारे पास भेज रहा हूं क्योंकि 'तुमने मुझे समर्पित की है। चेहरा चमक उठा।' मैं तुम्हारा चेहरा हमेशा चमकता हुआ ही देखना चाहता हूं। और तुम विश्वास करो, जो किताबें तुम्हें समर्पित नहीं है, उन्हें लिखते समय भी मुझे तुम्हारा ध्यान रहा है। वैसे हिंदी में मेरी दूसरी प्रकाशित पुस्तक— भारतेंदु युग —तुम्ही को समर्पित थी, यह उस समर्पण की आवृत्ति मात्र है।

पत्नी के अस्वस्थ रहते हुए भी मै किसी हद तक अपने काम के लिए समय निकाल लेता हूं और मन साध लेता हूं। तब तुम्हारे पत्र से अनुवाद में विघ्न पड़ने की कोई संभावना नही है।

सप्रेम—
तुम्हारा—रामविलास

बांदा (उ० प्र०)
१२-३-७६
सबेरे ८-१/२ [साढ़े आठ] बजे

प्रिय, डाक्टर,

५/६ का पत्र तथा 'भारतेंदु युग और हिंदी भाषा की विकास परंपरा' पुस्तक मिली। पढ़ने का लोभ संवरण न कर सका। बहुत-कुछ पढ़ गया। मेरे लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। तमाम तरह की भ्रांतिया दूर होंगी। तुम्हारी पुस्तकों से मैं अपनी चेतना विकसित कर सकूगा। यही क्या कम है मेरे लिए। मरूं तो विवेकशील होकर मरूं —मूढ़ की तरह न मरूं। निश्चय ही ऐसी पुस्तक सभी के लिए उपयोगी है। शैली भी साफ-सरल तथ्य-परक है। उद्धरण भी ऐसे हैं, जो आंखें खोल देते हैं।

. द्विवेदी जी वाली पुस्तक भी बढ़िया ही होगी। उसे भी जरूर भेजवाना।

तुमने कहा था कि मार्क्स पढते समय तुम उनके मस्तिष्क की चाल देख-देख कर अभिभूत हुए थे। वह बात भी जानने को उत्सुक हूं। अभी वह छपेगी तब कहीं पढ़ने को मिल सकेगी। जरूर अपनी बातें भूमिका मे देना।

मार्क्सवाद और भारतीय इतिहास के बारे में भी वहुत कुछ तुम दे सकते हो। उसे भी दो। हमारी पीढ़ी तो फायदा उठाएगी ही। आने वाली पीढ़ियां भी लाभान्वित होंगी ही।

भाषा-विज्ञान की तुम्हारी पुस्तक ने तो मुझे दृष्टि दी ही थी। वह दृष्टि फिर और परिपक्व होगी।

निराला की पुस्तक का दूसरा खंड वैसे मै पढ़ चुका हूं। ठोस है। सभी बातें आ गयी है। निराला का साहित्यिक रूप और उनका व्रह्म भी खुल कर पकड में आता है। जनवादी साहित्य की प्रगति जानने के लिए यह दूसरा खड भी अत्यंत उपादेय है। साहित्यिक चेतना कैसे-कैसे किन रूपो मे विकसित होती है यह भी इसमे ज्ञात हुआ। मै तो विद्यार्थी हूं विद्यार्थी की तरह घोखता हूं। पुस्तक उम्दा रही है। तुम्हें दाद क्या दू। तुम तो हिन्दी के समर्थ साधक हो। जो कुछ सोचते-लिखते हो वह टकसाली होता है। तुम्हें भटकाव तो छू नही पाता। तुमने गौरव ग्रंथ दिये है और दे रहे हो। तुम-सा और न देखा। तुम्हारा जीवन सफल है। मुझे खुशी है तो यही कि तुम जैसे मेरे दोस्त है। मुझे भी विवेकशील बनाते चल रहे हो। जो बातें मै इतनी मेहनत करके भी न खोज पाता वह तुमने मेरे लिए सहज ही सुलभ कर दी। मै तुम्हारी प्रतिभा और श्रम का कायल हू।

हा, यहा के हिन्दी के लोग तुम्हे First Class का मार्ग व्यय दे कर बुलाना चाहते है। क्या आना सम्भव होगा? न आ सको तो बात दूसरी है। अपने काम मे बाधा न महसूस करो तो आने की बात लिखो। मै बात करूं और तारीख निश्चित कराऊ। और सभी कुछ पूर्ववत् है।

मालकिन को नमस्ते। सस्नेह तुम [तुम्हारा]

केदारनाथ अग्रवाल

Tele {Gram : Hindipith
Phone : 73952

K. M. INSTITUTE OF HINDI STUDIES & LINGUISTICS
AGRA UNIVERSITY, AGRA

No······ Dated : ३१-३-19७६

प्रिय केदार,

आज मैंने पूंजी-खंड २ को दोहराने का काम पूरा किया।

कुल मिला कर अनुवाद के इस काम में लगभग एक वर्ष ल गा। जितना समय अनुवाद करने में ल गा, उसका आधा समय मूल से मिला कर अनुवाद दोह-राने में ल गा। मालकिन इस बीच दो बार बीमार पड़ीं, वर्ना काम और जल्दी हो जाता।

यह पुस्तक एङ्गेल्स ने मार्क्स की पाण्डुलिपियों से संकलित करके तैयार की थी। इसकी एङ्गेल्स-लिखित भूमिका उन महानुभाव की एक महान कृति है। पांडुलिपियां अपूर्ण थीं और निरंतर सोचने और विचार बदलने क कारण वे सब अधूरी थीं और एक ही विषय पर तीन तीन, चार चार मसौदे—पाठान्तर!—मौजूद थे। बहुत जगह मार्क्स की लिखावट पढ़ी न जाती थी, और पढ़ लेने पर जहां एङ्गेल्स को वाक्य अस्पष्ट और दुरूह लगते थे वहां वह उन्हें ज्यों का त्यों बना रहने देते थे। अंग्रेजी अनुवाद तो मार्क्स-एंगेल्स संस्थान के विद्वानों ने दोहराया था। मैंने संशोधित और असंशोधित दोनों रूप देखे हैं और कहीं-कहीं असंशोधित रूप ही अधिक स्पष्ट है। देखें हिन्दी अनुवाद का संशोधन-संपादन होता है या नहीं।

दोहराने पर तरह-तरह की गलतियों का पता लगा। कहीं वाक्य छूट गये थे, कहीं शब्द और कहीं कहीं शब्द या वाक्य समझने में भूल हुई थी। लिपिक की भूलें सुधारने में काफी समय लगा, अब भी कुछ रह गई हों गी; कुछ उसकी, कुछ मेरी।

बहुत जगह अनुवाद देख कर अपनी भाषा की व्यंजना-क्षमता से आनंद होता है। कई जगह वाक्य रचना मनोषजनक नहीं है। मैं अर्थशास्त्री नहीं; अर्थशास्त्र में यहां गणित का बहुत-सा हिसाब-किताब है जिससे कहीं-कहीं एङ्गेल्स खीझ उठे हैं, उनकी एकाध टिप्पणी से लगता है। इसलिए हर जगह यह किताब अपनी समझ में आनी है, यह मेरा दावा नहीं है। इतना समझ में आता है: मार्क्स अपने कारखाने में ढेरों समस्याओं में जूझ रहे हैं और जो माल तैयार किया है, कहीं पूरा है, कहीं अधूरा है, उनकी मेधा कहीं पूरी तरह दीप्त है, कहीं थकान और बीमारी से मद्धिम है। किताब पढ़ने की अपेक्षा पढ़ाने से ज्यादा समझ में आती है। अनुवाद करने और उसे दोहराने मे पढ़ाने का सा परिचय हो जाता है या उससे कुछ ज्यादा। लगता था कि साल भर मैं मार्क्स के दिमाग की सारी कार्य-वाई बहुत नजदीक से देख रहा हूं। मुझ पर इसका बहुत असर हुआ है। मार्क्स का विचार क्षितिज निरन्तर बदल रहा था, यह बात मैंने गांठ बांध ली है, और मार्क्स के अनुयायी होने का मतलब उनके सूत्रों को दोहराना नहीं है। मार्क्स की मान्यताओं में १८६० के आसपास मौलिक परिवर्तन हुए। इन परिवर्तनों का उल्लेख मैंने कहीं नहीं देखा। 'ऐतिहासिक भौतिकवाद और भारत'—एक छोटी सी

किताब लिखने की सोच रहा हू । पर अलिखित पुस्तको की सख्या बहुत बढ गई है । तुम्हारा पत्र मिल गया था, हम लोग मजे मे है ।

मस्नेह रामविलास

16 Thirumurthy Street
T Nagar, Madras 17
12-4-76

प्रिय डाक्टर,

२६/३ को बादे से सपत्नीक मद्रास के लिए झामी होते हुए यात्रा की और २८/३ को रात ६ बजे उपरोक्त [उपर्युक्त] पते पर अपने बेटे के घर पहुचा जहा वह नही उसकी पत्नी और बच्चे मिले । वह हेदराबाद फिल्म की शूटिग मे १८/३ को चला गया था और अपनी पत्नी को अस्पताल मे छोड गया क्योकि उसके १६/३ को वहा बेटा पैदा हुआ था । तभी मुझे तार-चिट्ठी दे कर बुलाया गया और मै २६/३ से पहले किसी भी हालत मे न चल सका । यहा सब ठीक है । बेटे से अब भी भेट नही हुई । मई के प्रथम सप्ताह मे आना हे । तब तक घर की देख-रेख मे मुझे ही समय देना पडता है [।डेगा] ।

तुम्हारा ३१/३ का पत्र बादे गया । वहा से यहा मेरे पास आज आया । पा कर बेहद खशी हुई कि यहा तुम आ गये जैसे और तुमने कुछ दिल खोला ।

अभी तक पढ तो कुछ पाया नही । न साथ लाया हू । पढा तो बहुत । लिखना शेष है । सो चिपक कर बैठ नही पाता और कोई लिपिक भी तैयार नही आता । यदि कोई मिल गया तो गद्य ही गद्य दागूगा ।

मार्क्स अद्भुत आदमी था । एङ्गेल्स और भी बढिया आदमी था । इनके बारे मे जितना जाना जाये कम है । मार्क्स की अगुवाई भौतिकवाद की विकासमान होती चली जाने वाली द्वन्द्वात्मक अगुवाई है । यही तो खूबी है इस महापुरुष की । १८६० के आसपास के मौलिक परिवर्तन का कुछ जिक्र कर देते तो मै दिशा और दृष्टि पा जाता । तुम्हारे पत्र मे यह बात छूट गई। सक्षेप मे ही बता दो न !

चीन की साहित्यिक क्राति मेरी समझ मे नही आ रही । वहा रोज ही बावेला खडा रहता है । समाचार पत्र यही कहते है । क्या सास्कृतिक क्राति का मतलब जडमूल-हीन असस्कारित क्राति है जो इतिहास-क्रम को नकार कर वर्तमान मे की जाती है ? क्राति भी अतीत के अन्दर से अपनी जडे निकालती और अकुरित हो कर, जो है उसी से शाखे फैलाती हे । माओ की महिमा बडी गूढ है जो मै तो नही समझ पाता । साहित्य और सस्कृति का बनाव-सिगार क्राति मे बदलता है परतु पहले के आधार किसी-न-किसी रूप मे झलक मारते रहते है

तभी जीवन की ऐतिहासिक पकड़ समग्रता से संपृक्त रहती है। केवल बौद्धिक उन्मूलन से साहित्यिक और सांस्कृतिक क्रांति नही होती। Contradictions के साथ ही क्रांति का सौंदर्य फूटता है—मन मोहता है। है न डियर, ऐसा? सस्नेह

केदार

२२-४-७६

प्रिय केदार,

तुम्हारा १२/४ का पत्र मिला। आशा है, यह पत्र जब मद्रास पहुचे गा तब तक तुम वही रहो गे।

तुम्हारा वाक्य 'गद्य ही गद्य दागू गा।' पढ़कर बडा मजा आया। दागो। अच्छे गद्य की बड़ी कमी है।

मार्क्स और एंगेल्स के विचारों मे जो मौलिक परिवर्तन हुए है। उनकी कुछ मिसालें देखो :

क. (१) भारत का अंग्रेजों द्वारा जीता जाना अनिवार्य था।
(२) अगली क्रांति इंग्लैंड में नही भारत में हो गी।

ख. (१) रूस का अंग्रेजों द्वारा जीता जाना अनिवार्य है।
(२) अगली क्रान्ति पश्चिमी यूरप में नही रूस मे हो गी।

ग. (१) मजदूर वर्ग समाज का सबसे क्रान्तिकारी वर्ग है।
(२) अंग्रेज मजदूरों से आइरिश किसान ज्यादा क्रान्तिकारी है।

घ. (१) भारत में अंग्रेजों के आने से पहले कोई क्रान्ति नही हुई।
(२) १७ वी सदी में आगरा एशिया की सबसे बड़ी मडी था।

ङ. (१) रोम और एथेंस में उत्पादन का आधार दास प्रथा थी।
(२) रोम में मुख्य अंतर्विरोध स्वाधीन गरीब किसानो और धनी भू स्वामियों के बीच था। दास प्रथा केवल इसे प्रभावित करती थी।

चीन से भारत के कूटनीतिक संबंध बहाल हो रहे है, यह अच्छा है। वैसे वहां के कम्युनिस्टो में तगड़ा विभाजन है, यह बात असंदिग्ध है।

यहां बसन्त आधी रात से सबेरे ६ बजे तक रहता है। बाकी समय निदाघ का राज्य! वहा तो चौबीसो घटे बहार हो गी। मद्रास वि० वि० ने तमिल का बहुत बडा कोश निकाला था। सुविधा हो तो किसी से पूछना—यह बाज़ार में सुलभ है या नही। एक तमिल-अंग्रेजी बडी डिक्शनरी भी चाहिए; और आलवार कवियों के ग्रंथ, और सुब्रह्मण्य भारती की ग्रंथावली। यानी ये सब मूल तमिल में ही चाहिए। हमें यू० जी० सी० किताबें खरीदने के लिए रुपये देता है। उसका उपयोग इन किताबों पर करें गे। पुस्तक सूची, प्राप्ति स्थान, दाम आदि का पता करना—सुविधा होने पर।

सप्रेम रामविलास

16 Thirumurlthy Street
T· Nagar,
Madras 17
२८-४-७६

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिल गया। अभी यही रहूंगा। मई में न जा पाया तो जून भर रह कर जुलाई मे बांदा जाऊंगा।

'नागलिगम' एक फूल होता है—लाल पखुरियो की कटोरी का जिसमे साप का फन मुह खोले रहता है और मुह मे समाधिस्थ शिव रहते है। प्रकृति की यह रचना विचित्र है। मैंने कुछ पंक्तिया लिखी है। भेजता हूं।

गद्य शुरू किया है। देखो क्या पल्ले पड़ता है। आदत छूट जाने से कलम अडियल टट्टू की तरह चलती है और कड़ी मेहनत पर आगे बढ़ती है। तब बात बनती है।

'नागलिंगम' फूल को देख कर :

पंगल पार्क में
जब आज सुबह मैंने
फूल हो गये सांप के मुह मे
समाधिस्थ शिव को
पुष्प वाण से बिंधा अविचलित देखा
तब प्रकृति की रम्य रचना—
नागलिंगम—पर
मुग्ध हुआ
विषपायी चिंतन की
कामजयी प्रभुता से धन्य हुआ

सस्नेह तु०
केदार

७-५-७६

प्रिय केदार,

तुम्हारा २८/४ का कार्ड मिला। अपनी कल्पना के नागलिंगम् तुम्हें भेजता

1. इस पत्र में 'प्रिय केदार' के बाद ५ नागलिंगम् बनाये गए हैं। [प्र० वि०]

गद्य लिखने में अड़ियल टट्टू की बात चार्ल्स लैम्ब ने भी लिखी थी पर टट्टू अपना अड़ियलपन केवल दफ़्तर में दिखाता था। घर आकर 'एसे' लिखते समय वह सरपट भागता था।

--तुम्हारी कविता बहुत सुन्दर है और गद्य मे उसकी भूमिका भी।

हम अपनी भाषाविज्ञानी दुनिया मे नागर कोइल, नागटट्नम् और दक्षिण मे नाग गणो के प्रसार तक जाने कहा कहां घूम आये।

सस्नेह
रामविलास

१६ थिरुमूर्थी स्ट्रीट, 'टी' नगर, मद्रास १६,
४-६-७६

प्रिय डाक्टर,

पोस्टकार्ड और सभी पत्र मिले थे। तुम्हारी पुस्तको की सूची ले कर एक दिन दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समिति के दफ्तर गया था। परन्तु श्री शौर्य राजन वहां न मिले। इससे वह काम अभी तक पूरा न कर सका। एक दिन फिर धावा बोलूगा और पता लगा कर तुम्हे सूचना दूगा।

कल नागार्जुन का पत्र C/O, रामकमल [राजकमल] प्रकाशन, पटना, से आया है। बाहर आ गये है। ठीक है। वहा कविताएं ढेर मे लिख सके है। व्यवस्थित लेखन नही कर सके। इलाहाबाद गये थे। पत्र बादे के पते से भेजा था। वह यहा आया वहा से। छूटे तो अप्रेल मे थे। मई के अन्त मे याद कर सके।

मैं जून के चौथे सप्ताह तक बादा पहुचूगा। तब तक पत्र यही के पते से देना।

मार्क्स की (अनूदित) पुस्तक की छपाई कब तक शुरू होगी। P P H ने देख लिया होगा। अन्य मौलिक ग्रन्थ लिखने मे लग गये होओगे। गरमी तो भीषण होगी। मालकिन की तबियत कैसी है ? बच्चे छुट्टी मे आये होगे। घर भरा होगा। तुम तो कही न गये होओगे।

गद्य की गाडी अभी रुकी खडी है। उमे तेल पानी लगा कर ऊघना है।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

८-६-७६

प्रिय केदार,

तुम्हारा ४/६ का कार्ड बडे इंतज़ार के बाद मिला। मैं [मैने] तो समझा कि

तुम मद्रास के वापस चल दिये हो गे। नागार्जुन छूट गये अच्छा हुआ। बुढ़ापा, दमा उस पर आजकल की राजनीति! मार्क्स वाली किताब P P H ने सूचित किया है, मौस्को मे छपे गी। जब भी छपे। निराला वाली किताब का तीसरा खड छप रहा है। उसे तैयार करते समय सरस्वती की पुरानी फाइले पढ़ने लगा। मज़ा आया, एक लेख लिखना शुरू किया। फिर किताब बन गई. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नव जागरण। इस महीने, आशा है, पूरी हो जायगी। द्वि० जी और उनके सहयोगियो पर है— मुख्यतः सरस्वती के आधार पर। अग्रेजी राज की अर्थशास्त्रीय आलोचना, विकासवाद का समर्थन, रीतिवाद के विरुद्ध सघर्ष, भाषा की समस्या का विश्लेषण, किताब मे देखो गे।

मालकिन की डायबिटीज़ बढ़ी है। छुट्टियो मे लोग आते जाते रहते है। गर्मी तो है ही।

सप्रेम—रामविलास

बादा
४-७-७६

प्रिय डाक्टर,

मै मद्रास मे ३०/६ को ३ बजे दिन की जनता मे झासी के लिए सपत्नीक चला और २/७ को ११ बजे दिन को झासी पहुचा। वहा से रात ८ बजे ट्रेन से चला। २ बजे रात बादा पहुचा। सब ठीक है।

३/७ को कचहरी गया। खुल गई थी। अब फिर वही गोरख धधा चलेगा। गरमी तो यहा है ही। पर अब शायद सहने योग्य है।

आशा है कि तुम सपरिवार आनद से होओगे।

अभी इतना ही।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

१४-७-७६

प्रिय केदार,

तुम्हारा ४/७ का कार्ड मिला।

बीच मे तीन चार दिन को अमृतलाल नागर आ गये थे। अगले महीने वह भी साठ के हो रहे है। स्वास्थ्य उनका अच्छा है; श्रीमती नागर भी मजे मैं है। हिन्दी समिति की अध्यक्षता से इस्तीफा दे कर यहा आये थे।

महावीर प्रसाद द्विवेदी वाली किताब ने बहुत समय ले लिया। आज कल दोहरा रहा हू।

मालकिन मजे मे है। तुम्हारी स्वास्थ्य कामना सहित— तु०

राο विο शर्मा

बादा

२४-६-७६

प्रिय डाक्टर,

बहुत दिनो बाद पत्र लिख रहा हू। इधर भी कई कविताए लिख सका हू। मिलने पर ही दिखाऊगा। –'राजकमल प्रकाशन समाचार' से ज्ञात हुआ कि तुम्हारी कई पुस्तके निकलने वाली है। बेहद खुशी हुई।

आशा है तुम और मालकिन दोनो ठीक होगे।

परिवार के सभी सदस्य आनद पूर्वक होगे। जो भी जहा होगे ठीक ही होगे। आये हो तो मेरी नमस्ते देना।

—दामोदरन की पुस्तक 'भारतीय चिन्तन परम्परा' पढ रहा हू।

अब इधर इतिहास की कई पुस्तके प्रकाशित हुई है। मिलने पर पढूगा। इतिहास मे रुचि जगी है।

बादा मे लोग तुम्हे याद करते है। इधर आना तो होगा नही ?

मैं उधर नही आ पा रहा। पत्र देना। तु० सस्नेह

केदारनाथ अग्रवाल

२६-६-७६

प्रिय केदार,

तुम्हारा कार्ड मिला। कविताए लिख रहे हो, बढिया समाचार है। 'मिलने पर ही दिखाऊगा।' बहुत खूब। 'मै उधर नही आ पा रहा।' क्या खूब। यानी हम बादा न आये तो तुम्हारी कविताए न देख पाये। हम और मालकिन सकुशल है पर उन्हे छोड कर बादा आये तो कैसे ! 'इतिहास मे रुचि जगी है।' बधाई। उधर हमारी रुचि पुरानी है। जो पढो, दो लाइन मे उसका समाचार हमे भी देना। राजकमल द्वारा विज्ञापित पुस्तके, आशा है, तीन-चार साल मे निकल जायेंगी। इन दिनो हम ऐतिहासिक भाषाविज्ञान के उलझे सूत्र सुलझाने मे लगे है।

सप्रेम

रा० वि० शर्मा

केदारनाथ अग्रवाल
एडवोकेट

सिविल लाइन्स, बांदा
(उत्तर प्रदेश)
दिनांक १-१०-७६
रात ८ बजे

प्रिय डाक्टर,

पोस्टकार्ड मिला। बैठा मन एकदम प्रसन्न हो गया। दशहरे की छुट्टी है। समय पढ़ने-सोचने में बिताता हूं। छोटी-बड़ी बातों को पकड़ता हूं। दिमाग सही पटरी पर रखता हूं। यही करता रहता हूं। पिता जी बीमार हो कर आये थे। १५ दिन के करीब रह कर अच्छे हुए और फिर गाव चले गये। अब मैं हूं--बीबी [बीवी] है। दो प्राणी सहजता मे रह लेते है। नगर का माहौल वही पुराना ऊल-जलूल का है। न जाने कब किस तरह इसको सही चेतना प्राप्त होगी। प्रयास भी तो कोई नहीं करता। केवल औधे [औंधी] खोपड़ी के अखबार ही लोग पढ़ते हैं और साहित्य के नाम पर वक्त को काटने के लिए रेलवे बुक-स्टाल से मेक्सी पुस्तकें उपन्यास और सिनेमा संबंधी पत्रिकाए, किराये पर किताबें ले जाते और चाट-चूट कर दे जाते हैं। यहा कौन पढता है सही समझ की पुस्तकें। इस पर बेचारे रोते है कि दुनिया बड़ी ख़राब है—रहने लायक नही है। बाह रे हमारे लोग ! जिम्मेदारी कोई नहीं लेता [—] न घर-न बाहर; न सड़क में---न कचहरी में। वही बेहाल हाल चालू है।

अभी दो बीसी तो कम-से-कम लग ही जायेंगे, तब जरा-सी अकल आ सकती है। फिर भी धन्य है ये लोग कि ऐसे जीने मे हर्ष और उल्लास की पतंग उड़ा लेते हैं। रहते उसी दुरभि-संधि के सामाजिक चक्र में।

मैं जानता हूं कि तुम भी नही आ सकोगे। व्यस्त [होने] के अलावा घर में भी तो देखना-सुनना पड़ता है।

अच्छा तो लो एक कविता। मद्रास में ४/६ को लिखी थी।

१. पहला पानी गिरा गगन से, उमँडा आतुर प्यार
हवा हुई ठंढे दिमाग के जैसे खुले विचार
भीगी भूमि-भवानी, भीगी समय-सिंह की देह
भीगा अनभीगे अंगों की अमराई का नेह
पात-पात की पाती भीगी —पेड़-पेड़ की छाल
भीगी-भीगी बल खाती है गैल-छैल की चाल।
प्राण-प्राण मय हुआ परेवा— भीतर बैठा जीव
भीग रहा है द्रवीभूत प्राकृत आनंद अतीव
रूप-सिंधु की लहरें उठती, खुल-खुल जाते अग
परस-परस घुल-मिल जाते हैं उनके मेरे रंग

नाच-नाच उठती है दामिनि चिहुंक-चिहुंक चहुं ओर
वर्षा-मंगल की ऐसी है भीगी रसमय भोर
मैं भीगा—मेरे भीतर का भीगा ग्रथिल ज्ञान
भावों की भाषा गाती है विश्व-विमोहन गान।

दोस्त इतना लिखने मे ही हाथ थक गया। अब दूसरे पत्र मे और कविताएं भेजूगा।

तुम्हारी पुस्तक शेक्सपीरियन ट्रेजेडीज़' फिर से सरपेटे से पढ़ गया। अभी बाकी है ३ ड्रामे। तुमने दूसरो के विचारो की कमजोरी खूब सटीक पकड़ी है। कोई बैठ कर तो समझता-बूझता नही—जैसा चाहा थोड़ा बहुत सोच-समझ कर आधा-अधूरा लिख दिया और एक सिद्धात का झंडा गाड़ दिया। यही तो करते है चालाक और चतुर पढ़ेरी। जो प्रमाण तुमने दिये है लियर और हैमलेट के नाटको के बारे में वह अकाट्य है। मैंने खूब गौर किया है।

दूसरी पुस्तक Uuity चल रही है। मल्टी नेशनल सोवियत साहित्य पर १० लेख सग्रहीत [सगृहीत] है। उम्दा संग्रह है। सार्थक और परख के लेख है। यह प्रोग्रेस प्रकाशन का १९७५ का अंग्रेजी प्रकाशन है। लखनऊ से लाया था। कुछ समस्याओं का समाधान बड़े ही उचित ढग से हो जाता है। साहित्य के सास्कृतिक और लोकप्रिय तत्व कौन से है ! विवेचन भरपूर विवेक से किया गया है।

एक लेख है Historism and History यह भी ज्यार्जिया के उपन्यासो और कविताओं को ले कर लिखा गया है। बड़ी सूझ-बूझ झलकती है। सही पकड़ है बातो की। तुमने तो यह पुस्तक पढी होगी।

कल विजय दशमी है। हजारो साल से हर साल मारे जा रहे और फिर फिर जी उठने वाले रावण को राम मारेंगे। रावण भी कागज और बास की खपच्चियो का होगा और राम भी नकली राम होगे। बास का बेकार धनुष लिए और सरकडे का बाण चढ़ाये। जनता गदगद होगी। खुश होगी। यही स्थिति है अपने जन-समुदाय की। न जाने इस सबसे आज का जीवन कैसे चलेगा ? मेरी बुद्धि चकराती है और इस सब मे कोई प्रगतिशील सस्कार नही देखती।

ऐसे दशहरे की नही, कवि-हृदय की अनुभूतियो के साथ शुभकामनाये भेजता हूं।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

१५-१०-७६

प्रिय केदार,[1]

तुम्हारा १/१० का पत्र मिला। तुम्हारी एक नयी कविता तुम्हारे पत्र में बहुत दिनों बाद देख कर मन परम प्रसन्न हुआ। कविता बढ़िया है। समय-सिंह का उपमान हमें विशेष रूप से अच्छा लगा। तुम ने ठीक लिखा है कि शहर का वातावरण ऊल जलूल है। ऐसे वातावरण में पढ़ना, सोचना, लिखना जीवट का काम है। हम इस जीवट की दाद देते हैं।

नि० की सा० सा० का तीसरा भाग छप गया। इस काम से हमने छुट्टी पाई। अब भाषाविज्ञान से और छुट्टी मिले तो दूसरी बात सोचें।

दीपावली की शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा
रामविलास

बादा (उ० प्र०)
३०-१०-७६ सुबह

प्रिय डाक्टर,

'निराला की साहित्य साधना' का ३ भाग भी, तुम्हारा भेजा, यथासमय मिल गया। सरसरी तौर पर एक बार देख गया। यह पुस्तक बहुत ही महत्वपूर्ण लगी। किस तरह निराला जी की चेतना काम करती थी और किस तरह अन्य लोग उनको समझते-बूझते थे और किस तरह उनकी रचनाओं को लेते थे—यह सब प्रकट होता है। आज उन सब बातों की जानकारी एक नया अर्थ देती है उस समय का। प्रमाण उपस्थित करती है यह पुस्तक।

तुम्हारी भूमिका भी अत्यत संतुलित और विवेकपूर्ण है। इससे पुस्तक का यथार्थपरक महत्व और भी खुलता है और तमाम बाते साफ हो जाती है और दृष्टि भी दूरगामी हो जाती है।

काश और भी लोगों को लिखे गये पत्र प्राप्त हो सकते और उनके भी तमाम पत्र मिले होते। शायद तब इस दौर का पूरा साहित्यिक प्रतिबिम्बन प्रस्तुत होता। वैसे मूल समस्याएं उभर कर व्यक्त हुई है और उनके समाधान भी निराला जी

1. यह पत्र एक निमंत्रण पत्र की पीठ पर लिखा गया है। निमंत्रण पत्र है, निराला जी की स्मृति में, १५-१०-७६ को ही सम्पन्न हुए, स्मारक डाक-टिकट समारोह का। यह समारोह इलाहाबाद मे सम्पन्न हुआ था। ऐसा शायद रामविलास जी ने इसलिए किया होगा, ताकि केदारजी को भी इसकी जानकारी हो जाए। [अ० त्रि०]

के कृतित्व से स्पष्ट रूप-रेखाएं पा गए हैं।

मैं ६/११ को दिल्ली जा रहा हूं। मेरी लड़की किरण के श्वसुर का स्वर्गवास २७/१० को हो गया है। ७/११ को वहां तेरही है। मेरा जाना जरूरी है। कल फोन आया था। ८/११ को बांदा में एक केस है। मुझे उस दिन वहां रहना चाहिए। पर शायद न आ पाऊं। इसलिए दरख्वास्त दूंगा कि उसकी पेशी बढ़ा दी जाये। ताकि न आ पाया तो मुअक्किल का नुकसान न हो। ९/११ को तो जरूर ही यहां रहना है। अवसर नहीं है वरना १ दिन आगरा में भी रह लेता। तुम से भेंट करता। फिर लौटता। देखो यह सम्भव होता है या नही। तुम रहोगे तो आगरे में ही ८/११ व ९/११ को। यदि पहुंचा तो कुछ ही घंटे सही बात कर लूगा। और सबसे मिल लूगा।

भाषा पर काम करना शुरू कर दिया होगा।

मालकिन तो ठीक हैं न !

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

बादा
१५-११-७६
शाम

प्रिय डाक्टर,

मैं दिल्ली गया—लौट भी आया। आगरा न पहुंच सका।

इधर तबियत खराब चल रही है। पीठ में दर्द रहता है। अभी तक डाक्टर से मिल कर निदान नही करा सका। चिन्ता की कोई बात नहीं है।

आशा है कि सब कुछ ठीक ठाक हो गया तुम्हारे यहां।

पत्र देना।

श्री विश्वनाथ त्रिपाठी से भेंट हुई थी। बातें भी हुई।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

२२-११-७६

प्रिय केदार,

तुम्हारा १५/११ का कार्ड मिला, इससे पहले वाला पत्र भी। न मिल सके, कोई बात नहीं, फिर कभी। इधर हमारी गृहस्थी भी कुछ डांवाडोल है। मालकिन

का ब्लड प्रेशर बढा हुआ है। दो दिन से यहा पानी बरस रहा है और हवा न चलने पर भी एक अजीब किस्म की ऊमस सर्दी है। इस मौसम ने हमारे शरीर को प्रभावित किया। गला खराब, नाक मे पानी, बदन मे दर्द। काम बिल्कुल बद कर दिया है। तीन चार दिन पूरी तरह आराम करेगे। अपनी पीठ का हाल लिखना।

तुम्हारा
रा० वि० शर्मा

केदारनाथ अग्रवाल
एडवोकेट

सिविल लाइन्स, बांदा
(उत्तर प्रदेश)
दिनाक—१२-४-७७
[१२-५-७७]

प्रिय डाक्टर,

पू० पिता जी का २५/४ को कमासिन[1] के घर पर निधन हुआ। मै यहा था। सूचना मिलते ही परिवार के साथ वहा उसी दिन २ बजे दिन पहुचा। ५ बजे शाम को मैने दाह संस्कार किया। फिर सबकी इच्छानुसार १३ दिन तक वही रहा। दसवा व तेरही व बरखी भी कर आया। ७/५ को यहा लौटा।

विचलित तो नही हुआ। पर दो बार जरूर आँखे भर आयी थी।

शायद अब भार वहन करना पडे। खेत पात मेरे नाम के है। उनका प्रबन्ध कराना होगा। भतीजो से कहूगा —वही कराये। मेरे बस का यह काम नही है।

वह शिथिल हो गये थे। इसी से मै बादा से बाहर नही जाता था। मुझे ऐसा आभास हो रहा था कि वह अब रहेगे नही। हुआ भी यही।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

१६-५-७७

प्रिय केदार,

तुम्हारा १२/५ का पत्र मिला। पिता जी नही रहे—एक दिन यह होना ही था, फिर भी जब तक होनी टलती रहे आदमी सुख की सास लेता रहता है। नही तो जन्म के पहले अव्यक्त, मृत्यु के बाद फिर अव्यक्त। इतने दिन तक उनका साथ रहा, इसे सौभाग्य मानना चाहिए। मेरे पिता का देहान्त हुए २६ वर्ष हुए!

कभी-कभी मै सोचता हू कि ससार मे जो कुछ महत्वपूर्ण है, सुन्दर है, वह

1 केदारजी का पैतृक कस्बा। यही केदारजी का जन्म हुआ था। यही रहकर केदारजी के पिता श्री हनुमान प्रसाद अग्रवाल, कविताएँ भी लिखते थे—'प्रेमयोगी मान' उपनाम से। 'मधुरिमा' नाम से एक सकलन छपा भी है। [अ० वि०]

क्षणिक ही होता है। जैसे शरद की सांझ। वैसे शरद हर साल आती है और सांझ भी होती है पर हर शरद या शरद की सांझ एक सी नहीं होती। इस क्षणिक अनूठेपन को अमर बना देना, कला का काम है। मौत से आदमी की कभी न खत्म होने वाली लड़ाई का नतीजा है कला ! जो अशाश्वत है, उसे दूसरों के लिए अपेक्षाकृत शाश्वत बना कर छोड़ जाती है कला —शाश्वत का चित्रण करके नहीं, अशाश्वत को उसी क्षण में हमेशा के लिए बंदी बना कर।

चार-पांच दिन से जी अच्छा नहीं है। एक बरात में बरफ का सैकीनी [सैक्रीनी] शरबत पीने से खांसी, जुकाम, बुखार सब कुछ एक साथ हो गया। पिछली रात ठीक से नींद नही आई। हरारत से सर भन्नाता रहा। अब सबेरे शरीर कुछ अच्छा है।

बहुत बहुत प्यार।

तुम्हारा
रामविलास

आगरा-२
१६-२-७८

प्रिय केदार,

तुम्हारा १३/२ का कार्ड मिला। वसन्त तमिलनाडु में बिताओ गे, उत्तम है। हम तो रोज ही तमिल को याद करते है, कल्पना में वहा हो आते है। किनारा दिखने लगा है; गर्मियों तक भाषा वाली किताब ज़रूर खत्म हो जाय गी। तुम्हारी कविता मेरी धारणा को पुष्ट कर रही है, तुम भीतर से सूफी हो। कालातीत होने के स्वप्न में तादातमय [तादात्म्य] सौन्दर्य के प्रतीक गुलाब से है। बधाई।

मद्रास मे पत्र अवश्य लिखना। कई साल बाद इस बार हमारे यहा गेंदे भरपूर खिले हैं। क्यारियां दमक रही हैं। तुम्हारे प्रकाशक[1] ने तुम्हारे कविता-संकलन के बारे में लिखा था। फिर मेरे पत्र का उत्तर न आया। बहुत बहुत प्यार।

रामविलास

१५-३-७८

कविवर,

आशा थी, मद्रास जा कर पत्र लिखो गे। पत्र न मिला तब बांदा के पते पर

1. परिमल प्रकाशन के मालिक श्री शिवकुमार सहाय। [रा० वि०]

ही यह कार्ड भेज रहा हूं, शायद कोई तुम्हारा पता लिखा कर वहां भेज दे। हम लोग सकुशल हैं। शेष पता मिलने पर।

सस्नेह
रामविलास शर्मा
३०, नई राजामंडी
आगरा-२

२२-३-७८

प्रिय केदार,

तुम्हारा १८/३ का पत्र मिला। मद्रास से पत्र न आया, तब मैंने एक कार्ड तुम्हें बांदा के पते पर भेजा, यह सोच कर कि वहां से कोई मद्रास को रिडायरेक्ट कर दे गा और तुम पता भेज दो गे। ज्यादा राह न देखनी पड़ी, तुम्हारा पत्र आ ही गया।

अगले महीने बांदा आओ गे, जून में फिर मद्रास पहुँचो गे। अच्छा है, जून की लू से बचो गे। मद्रास मे तब तक शायद पानी बरसने लगे गा। अपनी राय यह है कि महाबलिपुरम् के सागर में जितनी कविता है, उतनी मद्रास के समुद्र तट में नहीं है। मेरे मन में कन्याकुमारी के तिरगे समुद्र से भी अधिक सुन्दर महाबलिपुरम् का गहरा नीले रग का विस्तार है। हमारे गेंदे काफी दिन चले; जब इनकी बिदाई का समय है। जूही की अवाती है, उसके बाद बेले की बहार हो गी।

तुम्हारे प्रकाशक ने पुस्तकें अपने पत्र के साथ ही भेजी थी। फिर मेरे पत्र का उत्तर उन्होंने नही दिया। वैसे मैंने लिखा था कि मुझे अप्रैल में अवकाश हो गा। अब यहां हुआ यह कि ६ मार्च से मैं क० मु० विद्यापीठ में प्रसार व्याख्यान दे रहा हूं : पाश्चात्य आलोचना में सर्जनात्मक चेतना के रूप और उनकी भूमिका। भाषा वाली पुस्तक का काम एक महीने पिछड़ गया।

डा० आशा गुप्त[1] कौन हैं, मै नही जानता। तुम भूमिका लिख रहे हो तो कुछ हों गी ही।

रणधीर सिन्हा[2] का एक गश्ती पत्र आया था जिससे पता चला, मुझ से संबंधित पुस्तक[3] प्रेस में है।

'आगरा कैसा जा रहा है?' आगरे में कोई हरकत नहीं होती न जाने की, न आने की; अलबत्ता पछांह से रेगिस्तान आगरे की तरफ बढ़ता चला आ

1. हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं। केदारजी ने इनकी काव्य-पुस्तक 'आकाश कवच' की भूमिका लिखी है। [प्र० वि०]
2. दिल्ली निवासी लेखक, अब स्वर्गीय।
3. पुस्तक प्रकाशित नही हुई।

रहा है।

हम लोग सकुशल है यानी फिलहाल स्वास्थ्य के लिए कोई सकट नही है।

माउट रोड तुम्हारे मन मे उछाह भरती रहे —

सस्नेह तुम्हारा
रामविलास

६-४-७८

प्रिय केदार,

तुम्हारा २५/३ का पत्र मिला। आशा है, बेटे की ससुराल वालो ने तुम्हे तर माल खिलाते समय ऊपर से भी रग दिया हो गा, भीतर मे तो तुम्हारे रग बोलत ही हैं। हमारे यहा जूही आ गई। पडोस मे रातरानी महकती है और उसकी गहरी महक को हमारी जूही अपनी हल्की सुकुमार गन्ध से परास्त कर देती है। गेदा बिदा हो गया होता पर, तने की कुछ पत्तिया सूखने पर भी जूही को सामने देख अभी—लहलहाये चला जा रहा है।

यहा विश्वविद्यालय मे ऐकेडेमिक सरगर्मी बढ गई है। परसो भाषण के लिए पहुचे तो पता चला छात्रो ने पथराव किया, पुलिस मे टक्कर हुई विद्यापीठ बद है। हम घर पर आराम कर रहे है। आज हरे छोले लिए है। आग म भन कर इन्हे होले बनाये ग, फिर खायँ गे।

समुद्र पर मेडेलसोन की सगीत रचना बहुत जोरदार है पर उस पर कविता लिखना कठिन कर्म हे। अग्रेजी मे पहाडो, मैदानो पर बहुत सी अच्छी कविताए है पर समुद्र पर कम है और जो है, उनमे कवि के भावोद्गार अधिक हे, समुद्र कम है। नई कविता के प्रवाह मे हमारे कवियो की वर्णन क्षमता का ह्रास हुआ है। बाह्य जगत् को अन्तर्जगत बना लेना बडा कमाल माना जाता हे। युग ने आदिम मानव समाजो की चेतना के बारे मे जो कुछ लिखा है, उसमे लगता है, वे भी यही करते थे।

पाश्चात्य आलोचना जहा शास्त्र है, वहा दरिद्र है। जहा वह कवियो के अनुभव प्रस्तुत करती है, वहा वह मनन के योग्य है, विशेषत कवियो के। मै केवल सर्जनात्मक चेतना के रूपो पर बोल रहा हू। कभी समय मिला तो इस विषय पर स्वतन्त्र निबन्ध लिखू गा।

सस्नेह—रामविलास

२६-६-७८

अरे भाई कहां हो ? मद्रास या बांदा ? बहुत दिन से समाचार नहीं मिले। मेरे पिछले पत्र का उत्तर नही मिला। इधर पानी बरसा, मौसम अच्छा है। जनता पार्टी के भीतरी सकट ने राजनीतिक वातावरण को चिपचिपा की जगह दिलचस्प बना दिया है।

हम लोग सकुशल हैं।

रामविलास

२४-७-७८

प्रिय केदार,

१७/७ का कार्ड मिला। जब भी अपने पत्र का उत्तर एक पखवारे मे न मिले, समझ लो तुम्हारा पत्र मुझे मिला नही। पिछला कार्ड तुम्हारा पता ठिकाना जानने के लिए लिखा था, नार्मल पत्र नही था। मेरा कलम दो बार हाथ से छूट कर जमीन पर गिर चुका है, उसका मुटापा दूर हो गया है। वैसे अपने को अभ्यास मोटा पीसने, मोटा कातने का ही है। कल मैंने बिटिया शोभा के हाथ भाषा वाली पोथी का दूसरा खंड दिल्ली भेज दिया। दो-तीन महीने मे तीसरा भी भेज दूंगा और इस काम मे छुट्टी मिले गी।

भारत में क्रान्ति तो हो गी पर ज़रा देर मे। क्रान्तिकारी पार्टियों के केन्द्रीय दफ्तरों मे उनके केन्द्रीय संगठनों में अंग्रेजी चलती है और अंग्रेजी के चलने मजदूरों की पार्टी में मजदूर कभी नेता बन नही सकता। सांस्कृतिक क्रान्ति हो गी तब हर विश्वविद्यालय मे एक बड़ा ताल हो गा जिस में सैकड़ों कमल खिले हों गे। इस में और भी देर है।

सप्रेम—रामविलास

३१-७-७८

प्रिय केदार,

तुम्हारे घर के पंडित जी[1] ने खबर सुनाई, वहां तक ठीक; और 'अखबार ला कर दिखाया कि···,' यहां प्रश्न चिह्न । उन्होंने अखबार दिखाया, पर तुमने उसे देखा भी ? तुमने अखबार लेना बंद कर रखा है इस से अखबार पढ़ने का अभ्यास

1. श्री रामसजीवन पाडे। केदारजी के भतीजों के काम में हाथ बँटाते हैं और केदारजी के घर के पीछे वाले हिस्से में रहते हैं। [अ० त्रि०]

छूट गया होगा। तो भाई, १५०००/- वाली गलतफहमी कई लोगों को हुई है पर मुझे जो पुरस्कार देने की खबर छपी है, वह सिर्फ ६०००/- का है। ६ के ढाई गुना १५, काफी बड़ा फर्क है यानी तुम्हें तगड़ी गलतफहमी हुई है। चूंकि हिंदी संस्थान कोई साहित्यिक संस्था नहीं है इसलिए उसके पुरस्कार का महत्त्व हम आर्थिक दृष्टि से ही आंकते है। अब ६ हजार माने ६ सौ। इस पर क्या गीत गाये ? ऊपर से यह सुनने को ज़रूर मिल रहा है; व्यवस्था से समझौता कर लिया है, सरकारी पुरस्कार मिल रहा है ! इधर एक हफ्ते से हम आराम कर रहे थे। कल कागज पत्र समेट कर देखें गे, तीसरा खड किस मंजिल में है।

सप्रेम—रा० वि० शर्मा

२३-८-७८

प्रिय वकील साहब,

मैं बीमार नहीं हूं, अस्वस्थ हूं। यानी बुढापा, बुढापे में लिखाई-पढ़ाई, लिखाई-पढ़ाई के साथ पत्नी की देख रेख इन सब के कारण थकन, थकन यानी अस्वस्थता। इसलिए आलोचना लिखना, सम्मति देना, भूमिका लिखना, कविताएं पढना या सुनना जिन पर सम्मति देना [देनी] पड़े, ये सब काम बंद है। आजकल मौज मे हूं, न अनुवाद कर रहा हूं (न करना है), न मौलिक लिखाई कर रहा हूं (पर मूड आने पर जब तब करूं गा)। 'मौसम बादल बिजली का है।' भगवान तुम्हारे मुवक्किल की रक्षा करें।

सप्रेम : रामविलास

पानी पड़ा भंवर में नाचे,
नाव किनारे
थर-थर कांपे।
चिड़िया पार गयी,
नदिया हार गयी।

पाथर पडे देह दहकाये,
संज्ञा-शून्य
समाधि लगाये,
दुपहर मार गयी,
ऐंठ उतार गयी।

बादा

२६-८-७८

केदार

कागज के गज गजब बढे
धम धम धमके पाँव पडे
भीड़ रौदते हुए कढ़े
ऊपर,
अफसर
चट
चढ़े
दंड दमन के पाठ पढ़े

केदार

बांदा
२६-८-७८

१७-६-७८

प्रिय केदार,

हमारा घर पानी मे बहुत दूर है। ताजमहल का इलाका पानी में डूबा। आगरे के पत्र अमर उजाला ने विशाल जलराशि पर अजेय ताजमहल का बहुत भव्य फोटो छापा। उस तरफ़ दैनिक जीवन अवश्य अस्तव्यस्त क्या, ध्वस्त हो गया। इस तरफ कुछ दिन पेय जल की दिक्कत रही, वाटर वर्क्स मे पानी भर गया था। अब स्थिति सामान्य हो रही है। 'बैठा हू मै केन किनारे'। अब तो केन तुम्हारे घर के आसपास पहुची हो गी। मालकिन का स्वास्थ्य कामचलाऊ ठीक है। मै भी ठीक हूं।

सप्रेम
रामविलास

४-११-७८

प्रिय केदार,

आधुनिक कवि नं० १६[1] पुस्तक मिली।

तुम्हारा कविता-कार्ड मिलने पर मैने तुम्हे बादा से प्राप्त एक कविता-कार्ड अपनी चिट्ठी के साथ भेजा था, मिला या नही ?

सप्रेम
रामविलास

1. केदारजी की कविताओं का यह संकलन, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से प्रकाशित हुआ है। [अ० त्रि०]

बांदा (उ० प्र०)
८-११-७८

प्रिय डाक्टर,

तुम्हारा वह लिफाफा मुझे मिल गया था जिसमें तुमने कृष्णमुरारी पहड़िया[2] का कविता वाला, पोस्टकार्ड रख कर भेजा था।

मेरा 'आधुनिक कवि' वाला काव्य-संकलन भी तुम्हें मिल गया, यह बात जान कर चिन्ता दूर हुई। आजकल डाक-विभाग अक्सर सामग्री खो देने का अभ्यस्त हो गया है।

आशा है कि मालकिन की तबियत ठीक चल रही होगी।

हम ठीक हैं। दिसम्बर में मद्रास जाना है।

रेडियो से सुबह ६ बजे मालूम हुआ कि इन्दिरा गाधी ६३,००० से अपने प्रतिद्वन्द्वी मे आगे हैं।

राजनीति अभी पलटे खायेगी और जल्दी भविष्य मे स्थिरता न पा सकेगी, ऐसा लगता है।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

बांदा
१४-१२-७८

प्रिय डाक्टर,

आज अभी कचहरी के डाकखाने मे मैने अपनी नई कविता पुस्तक —पंख और पतवार—रजिस्ट्री की है।

मिलने की सूचना मुझे नीचे लिखे पते पर देना।

मैं मद्रास जा रहा हूं।

१ महीने तो रहना ही होगा। वहा से सूचित करूंगा। कुशल से होओगे।

पता मद्रास का

C/o Ashok Kumar

19 Thirumoorthy Street,

'T' Nagar, Madras 17

प्रेपक केदारनाथ अग्रवाल,
एडवोकेट, सिविल लाइन्स
बांदा (उ० प्र०)

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

1. बाँदा निवासी कवि। [प्र० वि०]

१८-१२-७८

प्रिय केदार,

'पंख और पतवार' की प्रति मिल गई ।

कल डाक्टर मेरी पत्नी को देखने आये थे । रक्तचाप १८०/६० था। साल भर से इतना ही रहता है, इसके ऊपर जाता है, नीचे नही आता। उनका शरीर अपने भीतर इतनी दवाएं जज्ब कर चुका है कि अब दवाए वे असर होने लगी है।

मैं सबेरे डेढ़ घंटा अपनी भापा विज्ञान की कभी न खत्म होने वाली किताब पर काम करता हू, बाकी समय पत्नी से बाते करता हूं, रेडियो सुनता हूं या आराम करता हूं ।

आशा है, तुम्हारा तमिलनाडु प्रवास सुखद हो गा । तुम्हारा

रामविलास

19, Thirumoorthy Street

I Nagar,

Madras 17

17-1-79

प्रिय डाक्टर,

—यहा आया तो तुम्हारा पत्र मिला। 20/12 से यहा हू। अभी कब तक रहूगा —पता नही। बेटा केरल है। उसके बेटा हुआ है। मा-बेटा ठीक है। हम दोनो यही घर मे रहते है। अभी व्यस्त रहन है। इससे पत्र नही लिख सका। आशा है कि मालकिन अब तो कुछ स्वस्थ हुई होगी। यह रोग भी अजीब रोग है। शरीर को निकम्मा कर देता है।

—पुस्तक तो सारा समय चाट जाती होगी। अभी कितने दिन और···?

—मास्को से मार्क्स वाला तुम्हारा अनुवाद छपा या नही ?

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

बांदा (उ० प्र०)

१६-४-७६

प्रिय डाक्टर,

—बहुत दिनो के बाद पत्र लिख रहा हू ।

—आशा है कि स्वस्थ और प्रसन्न होओगे ।

—मालकिन भी ठीक होंगी।

—मद्रास[से]आने के बाद कचहरी के पडे हुए काम मे लग गया। कुछ व्यस्त रहा। इससे सूचना न दे सका। मद्रास मे ठीक रहा। बेटे के बेटा हुआ। २-१/२ [ढाई] महीन रहा। वे लोग ठीक है। बेटा काम मे व्यस्त है। एक हिन्दी प्रचारक समिति की तरह की साहित्यानुशीन [साहित्यानुशीलन] समिति मे वहा के हिन्दी प्रेमियो की काव्य गोष्ठी हुई। मेरा कविता पर वक्तव्य हुआ। कविता पाठ हुआ। बडा सुखद अनुभव हुआ।

अभी हाल मे सागर वि० वि० गया २ दिन रहा। हिन्दी विभाग मे मेरा २ घटे का वक्तव्य कविता पर हुआ और फिर काव्य-पाठ हुआ। नागार्जुन और भगवत रावत भी थे। सारा समय मैंने ले लिया। इससे वे एक-एक ही कविता सुना सके। मैने जिदगी मे पहली बार इतना खुल कर कविता पर पूरी बात की। लोगो को बात पसन्द आई। अविस्मरणीय दिन बीते। वि० वि० का Location भी बडा काव्यमय है। रात बिजली की रोशनी मे पूरा परिवेश खिल उठता है। धन्य है हरीसिंह गौड जिन्होने यह सुलभ किया।

भाषाविज्ञान अब कहा पर है ? पत्र देना।

सस्नेह तु० केदार

बाँदा
8-11-79

प्रिय डाक्टर,

इधर पत्र नही लिख सका। पत्नी का हाथ fracture हो गया था। ५ ६ महीने से उसी का इलाज हो रहा है। अभी पूरा बल नही मिलता।

—डा० कमला प्रसाद का सागर से पत्र आया था। वे लिखते है कि मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के ८ व ९ दिसम्बर के अधिवेशन मे तुम सम्मिलित होओ और उसका उद्घाटन करो। मैने तो उन्हे अभी लिखा है कि तुम व्यस्त हो पुस्तक लिखने मे। जा न पाओगे। यदि फुरसत हो तो वैसा कमला प्रसाद को लिख दो। उनका विचार है कि वे तुमसे मिले और कहे और तुम्हे भोपाल जाने के लिए राजी करे। जैसा भी हो सूचित करना [।] मुझे भी बुलाया है। पर मै तो कचहरी मे व्यस्त रहूगा। न पहुचूगा। मैने उन्हे इसी आशय का पत्र लिख दिया हे आज ही। आशा है कि सकुशल होगे।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

आगरा-२
१२-११-७९

प्रिय केदार,

तुम्हारा ८/११ का कार्ड मिला। तुम्हारी पत्नी के हाथ के फ्रैक्चर के समाचार से बहुत दुख हुआ। प्लास्टर उतरने के बाद सामान्य स्थिति काफी समय बाद हो पाती है। तुम इन दिनों बहुत परेशान रहे हो गे। उनके पूर्ण स्वस्थ होने के लिए मेरी मंगल कामना है।

मध्य प्रदेश ? बहुत दूर है। मैं आगरे की ही किसी गोष्ठी मे शामिल नहीं होता। पत्नी को छोड़ कर कही जा नही सकता और अपना शरीर भी यात्रा के काबिल नही।

पटेल वि० वि०, वल्लभनगर के कुछ शोध छात्र आये थे। उनमे एक तुम्हारे ऊपर काम कर रहा है। शेष कुशल।

सप्रेम रामविलास

बादा
२४-१२-७९

प्रिय डाक्टर,

रेडियो मे सूचना मिली कि पद्रह हजार का पुरस्कार पा गये हो। बेहद खुशी हुई। हार्दिक बधाई।

और क्या हाल है ?

मै तो बादा से बाहर अब जा ही नही पा सकता पत्नी के कारण। कभी-कभी पत्र लिख दिया करो।

घर के हालचाल ठीक ही होगे। तुम्हारी पुस्तक तो अब पूरी हो गयी होगी ?

यहा शीत प्रकोप भरपूर चल रहा है। आगरा भी इसमे बहादुरी दिखा रहा होगा।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

बांदा
१६-७-८०
प्रात: ८ बजे

प्रिय डाक्टर,

मै १०/७ को यहा से कुतुब ट्रेन से, दिल्ली गया। दामाद के घर, वहां उनकी माता जी की तेरहवी मे शामिल हुआ ११/७ को। फिर वही रहा। १३/७ को

शाम ५-१/२ [साढ़े पाँच] बजे कुतुब से चला और यहां १४/७ को सुबह ३-१/२ [साढ़े तीन] बजे आ गया। घर की चिन्ता लगी रही थी। आगरा कैंट व राजा-मंडी स्टेशनों से गाड़ी गुजरी, रुकी। देखता रहा। सोचता रहा अपनी असमर्थता और विवशता पर कि तुमसे मिलना न हो पाया। दिल्ली में भी था तभी मन जोर मार रहा था कि भग चलूं पर जानते हो कि मौका और माहौल कहीं और जाने को नहीं होता। इससे मन मसोस-मसोस कर रह गया।

—आशा है कि तुम और मालकिन दोनों ही सकुशल होगे। इधर बहुत दिनों से तुम से कोई जानकारी नही हुई कि क्या कुछ कर रहे हो। अब तो भाषा का सागर पार कर गये होगे और धीर चित्त हो कर हम सब को फिर से याद करने की स्थिति में होगे।

'कथन' में तुम्हारा वक्तव्य पढ़ा। ठीक है। दिल्ली में विश्वनाथ त्रिपाठी ने भी उसकी चर्चा की। यशपाल और राहुल पर जो तुमने कहा था तब और अब वह सत्य है। मुक्तिबोध के बारे में भी तुमने ठीक ही टिप्पणी की। इन तीनों के समर्थको मे अब फिर खलबली मचेगी और चिल्लपो चालू होगी। शिव वर्मा का वक्तव्य तो सब समेट वक्तव्य है। सत्य से उन्होंने साक्षात्कार किया ही नही। राजनीति के महापुरुष और प्राण है। साहित्य तो उनकी पैठ से परे है। खैर। अपनी-अपनी रुचि है। अपने-अपने संस्कार है।

—डंके की चोट पर बात कहने वाले तुम्ही हो जो सत्य के साथ जी रहे हो, और लिख रहे हो। दूसरे बहुत से लोग तो सतही तैराकी करते हुए ऊपर-ऊपर ही फिसल रहे है। पानी में गहरे पैठ कर आबदार मोती नही ला रहे। यह क्रम ही चलता रहेगा। बड़े-बड़े दिग्गज देखे—सबके सब नकली देखे—नक्काल देखे और स्वार्थ सिद्ध [सिद्धि] में लगे देखे।

—छोटी पत्रिकाओं के कुछेक लोग अवश्य इन दिग्गजों से अलग चल रहे हैं और अच्छा लिखने का प्रयास कर रहे है। साहित्य सरमायादारी का शिकार बनाया जाता रहा है और वही क्रम अब भी चालू है।

—पत्र अवश्य देना।

—पानी रात से ही पटापट पड़ रहा है।

—शहर नहा रहा है—जुड़ा रहा है।

बंद होने का नाम नहीं लेता।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

बांदा
३१-७-८०

प्रिय डाक्टर,

तुम्हारे दोनों पत्र (२३/७ व २८/७) मुझे मिले।

मुझे पता नहीं वह पत्र कौन-सा था जो मुंशी को अच्छा लगा। उनसे तो बरसों तक मिलना नहीं हो पाता। वह रहते भी तो दिल्ली में ऐसी जगह है जहां तक जाना किसी बूढ़े के लिए सम्भव नही है। इसलिए उनके पास वह पत्र देख सकना कतई मुमकिन नही है।

फिर व्यस्त हो गये तुम एक नई किताब के लिखने मे। यह रोग भी सक्रामक होता है। छूटता ही नहीं। चाहे कोई कितना ही कहे सुने और लानत भेजे। बहुत अच्छा है कि तुम मार्क्सवाद के कुछ पक्षों पर लिखने के लिए कमर कस रहे हो। अपने राम को समझने-बूझने का अवसर मिलेगा।

खूब लिखते हो कि आगरा पके आम की तरह गलक रहा है। बहुत बरसों बाद यह शब्द सार्थक हुआ है। है कोई माई का लाल जो इसका प्रयोग अपनी साहित्यिक कृति मे कर सके और एक ही शब्द मे सब कुछ कह डाले और फिर दूसरे कलेजा थाम कर रह जाएं। आगरा ही नही हर शहर ऐसा ही है। लोग है कि नयेपन की दौड़ में अब भाषा का भी अतिक्रमण करते है और बड़ी शान मे बडे बौद्धिक बन कर चहलकदमी करते है। इस तरह भाषा को पकड़े और कहें तब जाने। खैर।

पोस्टकार्ड की बधाई मिली। मैंने इसलिए पुस्तक नही भेजी कि बधाई ले कर- शहद लगा कर चाटू। जरा देखना- हमे भी समय देना -जो कुछ कहा है उस पर गौर करना और गलत-सही की पहचान कराना वरना हम बेवकूफ-के बेवकूफ बने-बने मर जायेंगे और हम भी 'गलकेंगे' ही।

—और सब पूर्ववत् है।

—आशा है कि मेरे इस खलल डालने पर तुम्हारा ध्यान-भग न होगा और जो काम कर रहे हो उसे करते रहोगे और वही से बैठे-बैठे मुझ पर हंसते रहोगे।

मालकिन की तबियत का no जिक्र any where in your letter. हमारी तो हमसे सेवा करा रही है। आजकल बड़ी बिटिया आई है। इससे फुरसत भी मिल जाती है।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

बांदा
१८-२-८१
प्रिय डाक्टर,

कल 'पंचरत्न' की प्रति डाक से मिली।

पढ रहा हूं। वैसे इनमें से अधिकांश लेख पहले के पढ़े हुए हैं। हम भी इसमें विराजमान हैं। सन् १९७० जुलाई याद आ गई।

—इधर उत्तर प्रदेश सरकार के हिन्दी संस्थान से मुझे भी पंद्रह हजारी पुरस्कार प्रदान किया गया है। पहले तो विश्वास नहीं हुआ। बाद में पत्र आया, वहां से तब निश्चय रूप से ज्ञात हुआ। पता नहीं यह किसकी उदारता और कृपा की भेट है।

—तुम्हारा अध्ययन चल रहा होगा। व्यस्त होओगे ही। फुरसत का नाम न होगा। कहां तक पहुंचे। क्या दूसरी पुस्तक भी (राजनीति पर) शुरू हो गई?

—मैं तो घर पर ही रहता हूं। बाहर जा नहीं पा रहा। यही हाल तुम्हारा है ही।

— नंदकिशोर नवल का पत्र पटना से आया था कि तुमने उनसे मेरी कविता की तारीफ की थी। पर तुम्हें पूरी याद न रही होगी। माने ही बता सके थे।

— उसे भी लिख रहा हूं —

"रगेबिरंगे [रंग-बिरंगे] फूलों की बौछार से
गंध-गमक की मादक मीठी मार से
हार गया करतार कलाकर
अपने ही दरबार में
अपना मुकुट उतार के
मुक्त हुआ भव-भार से।"

—एकाध पत्र जरूर भेजना।

—पत्र पा कर दिल जमई होती रहती है।

शेष सब वैसा ही है।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

२७-२-८१

प्रिय केदार,

मेरे दो मित्रों को आजीवन हिन्दी सेवा के लिए विशिष्ट पुरस्कार मिल रहा है, यह मेरे लिए प्रसन्नता के साथ गर्व की बात भी है। अमृतलाल नागर के बारे में सूचना मिली थी, तुम्हारे बारे में पता न था। बधाई।

मेरी किताब अभी एक चौथाई पूरी हुई है। बहुत समय ले रही है और काम धीरे-धीरे हो पाता है। मुझे तुम्हारी कविता याद थी और मैने हरि नारायण मिश्र को लिखा दी थी। तुमने पत्र में जो लिखा है उसमे कुछ पाठान्तर है। 'गध गमक की मादक मीठी मार से' यह पंक्ति पहले नही थी। ठीक है ?

'म' की चार बार आवृत्ति रगो से ध्यान खीच कर गध की बात ... से पहले वाला पाठ पसंद है। करतार कलाकर आसमान मे रंग देखता है, गध से दूर है।

सप्रेम—रामविलास

बी-3 बी/66 ग, जनकपुरी
नयी दिल्ली-110058
[illegible]

प्रिय केदार,

सितम्बर मे मेरी पत्नी की बीमारी ने नया रूप लिया, उनके हृदय का एक वाल्व पहले भी ठीक से काम न करता था, अब उन्हे सास लेने मे कठिनाई होती थी, जिगर बहुत बढ़ गया था, रात को नीद न आती थी और भोजन लगभग छूट गया था। आगरे में उपचार से लाभ होते न देख कर हम लोग यात्रा का जोखिम उठा कर उन्हें यहा १० नवम्बर को ले आये। अब वह अस्पताल मे छुट्टी पा कर पुत्र विजय के पास है। हालत में सुधार हुआ है। सांस नही फूलती। रात को नीद आ जाती है। वाल्व ठीक से काम नही करता, इसलिए उनका रोग कभी भी चिन्ताजनक रूप धारण कर सकता है। फिलहाल उनके स्वास्थ्य मे जो सुधार हुआ है, उससे हम लोगो को सन्तोष करना चाहिए। आशा है, तुम सपरिवार सकुशल हो।

सस्नेह
रामविलास

बादा
७-१२-८१[1]

प्रिय डाक्टर,

दिनाक २७-११-८१ का पोस्टकार्ड मिला। यह तो मुझे श्री नवल[2] के पत्र मे

1. इस अन्तर्देशीय पत्र के बीच के ऊपर-नीचे के कोने गायब हैं। इन हिस्सो के शब्द अनुमान से [ ] के भीतर दिये गए हैं। कोष्ठक के अन्दर के शब्द—'कि', 'है' और 'कल' सशोधन के रूप में हैं। [अ० वि०]
2. डॉ० नंदकिशोर नवल, पटना। समीक्षक। [अ० वि०]

मालुम हो गया था [कि] मालकिन की तबियत ज्यादा खराब है—विदेश ले जाने की बात आई है। तभी मैंने तुम्हें पत्र नहीं लिखा कि परेशान होगे। चिट्ठी भी क्या लिखूं। आगरे में होओ या न होओ।

अब पोस्टकार्ड पा कर बेहद दर्जे की दिली खुशी हुई कि मालकिन अब रात को सो लेती हैं। उनकी सांस नहीं फूलती। लक्षण अच्छे दिखते हैं। हृदय के एक वाल्व की खराबी के कारण जो न तकलीफ उठानी पड़े वह कम क्या होगी। मेरा तो दिल ही ऐसा सुन कर कांप जाता कि तुम्हारी तरह मेरा भी हाल हो जाता है। पर आदमी को सब सहना पड़ता है, सहे चाहे रो कर चाहे हंस कर; गम्भीर रह कर, धैर्य धारे।

– डियर समझ में नहीं आता कि मैं कैसे तुम सब से मिल कर तुम्हारे दर्द को तुम्हारे साथ भोगूं। पर इतना आत्मविश्वास तो है कि तुम्हें सामने देख कर मालकिन [का रोग दूर भाग] जाता होता। पास में जीवन का इतना [धैर्यवान] साथी हो तो पहाड़ भी टूट पड़े तो लगेगा [कि] तिनका टूटा है। भोगने वाले में उत्कट जिजीविषा जाग पड़ती है। मैं तो समझता हूं कि ऐसी स्थिति में ख़राब वाल्व भी कुछ हद तक सही काम करने लगा होगा। वैसे चिन्ता की बात तो है ही। शरीर धर्म जब छूटने लगता है तब केवल जागरूक चेतनाजीवी आदमी ही सम्हले-सम्हले सांस लेता और छोड़ता है, महाकाल को एक प्रकार से चुनौती देता हुआ। भाई, तुम सब लोगों का दुख दूर हो—जल्दी से मालकिन अच्छी हो जायें और फिर तुम्हें देख-देख कर खिली-खुली धूप की तरह, हंस हंस पड़ें और तुम महसूस करो कि शिरीष के फूल ही फूल तुम पर बरस रहे [है]। देखो उनके सामने तुम धैर्य न खोना। बीमारी की दशा में मार्क्स पत्नी के साथ कमरे में दिल की दुनिया की बाते कर रहे थे। तभी उनकी बेटी भी वहा पहुंच गई थी। वह दोनों को ऐसे घुल-मिल कर बतियाते देख कर अविस्मरणीय रूप से, [आनंद] से विभोर हो गई थी। वही दशा [मैं यहां से बैठे]-बैठे, देख रहा हूं और वैसा ही 'आत्मविभोर हो रहा हूं। दोस्त इस [समय] लेनिन पर लिखी विश्वनाथ त्रिपाठी की, कह [कल] ही पढ़ी कविता भी इस समय, पत्र लिखते वक्त, बार-बार याद आ रही है। इसमें उन्होंने कहा कि उनकी आंखों के वे सभी आंसू बादल बन कर बरसे और अन्न, रंग, स्वास्थ्य और इन्द्र धनुष हो-हो गये। यही बरसात समाजवाद है। तुम भी तो यही हो। उन्हीं की तुम पर लिखी कविता भी याद आई कि तुम टुच्ची सुविधाओं को रौदते हुए, तद्भव शब्दों से कसे छोटे-छोटे जुमलों से जोकों और घड़ियालों की पीठ पर बिजली के कोड़े बरसाने वाले अटूट आस्थावान जीवन जीने वाले मेरे दोस्त हो।

—मैं इतना सब न लिखता। पर जी न माना। तुम जैसे आदमी को भी हम जैसो की दिलजोई चाहिए।

अपनी जिन्दगी है जैसी है । अभी इस समय अपनी न कह कर तुम्हे ही [यह] पत्र लिख रहा हू । मालकिन को नमस्कार । हाल लिखना । सब को सलाम ।

सस्नेह

केदारनाथ अग्रवाल

बांदा

१६-१-८२

४-१/२ [साढे चार] बजे सुबह

प्रिय डाक्टर,

तुम्हारे २७/११ के पत्र पाने पर मैने एक पत्र लिखा था । इसी पते पर । किन्तु पता नही कि वह तुम्हे मिला या नही । फिर तो तुमने कोई चिट्ठी नही भेजी ? अब हालत कैसी है ? लाभ तो हो रहा होगा । यदि अड़चन न हो तो दो आखर लि[खे]गा या लिखवा देना ।

—हम अपनी कुछ न कहेगे । जमे है । सिर पर सब ओढे है । लोढे की तरह जिन्दगी की सिलौटी रगड रहे है । खुद ही पिस भी रहे है ।

मुशी भी तो जनकपुरी मे रहते है । नववर्ष की शुभकामनाओ का ग्रीटिंग कार्ड आया था । उसे पा कर ऐसा लगा कि हम कुए मे थे—किसी ने पुकारा और हम वहा से तत्काल बाहर आ गये । फिर वही पहुचे जहा थे ।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

बी-3 बी/63 ए, जनकपुरी

नयी दिल्ली-110058

१-२-८२

प्रिय केदार,

तुम्हारा १६ जनवरी ४-१/२ [साढे चार] बजे सुबह का कार्ड यथासमय मिल गया था और उसका उत्तर तुम्हे मैने तुरत भेज दिया था, इधर मेरे कई कार्ड कई लोगो को नही मिले, इसलिए आज पहली फरवरी को सबेरे ६-१/२ [साढे छ] बजे तुम्हे यह कार्ड फिर लिख रहा हू ।

मेरी पत्नी का स्वास्थ्य अब लगभग वैसा है जैसा पिछले साल इन्ही दिनो था । यह उनके और मेरे लिए सतोषजनक स्थिति है । यद्यपि जनकपुरी दिल्ली से अलग नगरी है, फिर भी लोगो से भेट मुलाकात होती रहती है । अपना हाल अवश्य लिखना और जल्दी ।

सस्नेह

रामविलास

केदार नाथ अग्रवाल
एडवोकेट

सिविल लाइन्स
बाँदा (उ० प्र०)

दिनाक ११-२-८२

प्रिय डाक्टर,

पहले वाला पत्र मिल गया था। आज फिर १/२ का पत्र मिला।

— हार्दिक प्रसन्नता हुई कि मालकिन की हालत ठीक चल रही है और इससे बढ कर दूसरी बात हो ही क्या सकती है।

अपने बारे मे कुछ न लिखूगा। नीचे लिखी कविताएं भेजता हूं। वही मेरी मनोदशा की साक्षी है।

1 गये लौटे चार दिन के बाद/घिरे घुमँड़े, भीड का मंडल
बनाये, कर रहे उत्पात/दीप्त मदिर मारतडी को छिपाये/
श्याम वर्णी आसुरी आकाश मे सिक्का जमाये/गाजते हैं
वरुण के बदमाश बेटे मेघ।

२ झरने-झरने को गुलाब है झुका हुआ/केवल अनुमोदन
पाने को रुका हुआ।

३ मुग्ध ठगा का-ठगा खड़ा मै/चाद देखता रहा, हृदय की
आँखे खोले/बँधा-बिधा प्राकृत प्रकाश के/अनपाये
प्रिय को अपनाये/जैसे पहली बार!

और रुका-का-रुका रहा शशि/मुझे देखता हुआ,
मण्डलाकार प्रदीपित,/बँधा-बिधा भू की प्रतिभा के
अनपाये कवि को अपनाये/जैसे पहली बार!

४ मैने आख लडाई/गगन-विराजे राजे रवि से, शौर्य मे/
धरती की ममता के बल पर/मैने ऐसी क्षमता पाई।

मैने आँख लडाई/शेषनाग से, अधकार के द्रोह मे/
जीवन की प्रभुता के बल पर/मैने ऐसी दृढ़ता पाई।

मैने आख लडाई / महाकाल से, मृत्युजय के मोद मे/
अजर-अमर कविता के बल पर/
मैंने ऐसी विभुता पाई।

5 तुमने/हमको मारा/मार-मार कर फिर-फिर मारा/
हमें मार कर तुमने अपना स्वाँग सँवारा/
और हमारा स्वांग उतारा/
अरे, विदूषक !
हिंसक है हठयोग तुम्हारा/
दारुण है दुख-योग हमारा ।।

बस डियर ! इस वक्त इतना ही। कलम चलाने में अंगुलियां करकने लगती है। आज फिर सबेरे से वही बादली शीत जम कर हैरान किये है। जरा देर को सौभाग्य मे, सूरज ने ११ बजे दिन को, अपनी मुड़िया निकाली तो हमने धूप लोकी और कपडे उतार कर नहाये; पर फिर वही मुह चोरव्वल शुरू हुई और अब भी नजर नही आ रहे गरम मिजाज सूर्य। पत्र पा कर समय हो तो, कुछ जुमले भेज देना। थोडे लिखे को बहुत समझ लूगा। सब को सस्नेह नमस्कार।

तु०
केदारनाथ अग्रवाल

बांदा (उ० प्र०)
३-११-८२
प्रिय डाक्टर,

पुरस्कार मिलने की लाख-लाख बधाई।

—दो बार यात्रा भी मिली। यह विशेष प्रसन्न [प्रसन्नता] की बात है। जाओ जरूर।

—मालकिन अब तो पहले से ठीक होंगी। बहू की देखरेख में छोड़ कर जा भी सकते हो। उन्हे भी हार्दिक खुशी होगी।

—यहां तो वही पुराना हाल है। घर से बाहर कहीं दूसरी जगह जा भी नही सकता कि दिल्ली पहुंच कर मिल भेंट सकू। वैसे मेरी तबियत अब ठीक है। ज्वर गया। जीवंतता लौटने लगी।

—७०वें जन्म दिन को तुमने सहर्ष मनाया। नागार्जुन ने लिखा कि तुम बेहद खुश हो। हम भी सम्मिलित होते है।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

८-११-८२

प्रिय केदार,

'पुरस्कार मिलने की लाख लाख बधाई' पुरस्कार से बढ़ कर है, क्योंकि पुरस्कार अभी मिला नहीं है !

'दो बार यात्रा भी मिली' बहुत खूब। दो हफ्तों की यात्रा तुम्हारी कवि कल्पना में दो बार की यात्रा बन गई है।

'आलोचना' के प्यारे-प्यारे लेख पर तुम्हें ढेर-सा प्यार। क्रांति की तरह कविता सुविचारित योजना और स्वतः स्फूर्त कार्यवाही का परिणाम होती है, इन दोनों का अनुपात हर क्रान्ति या कविता में एक-सा नही रहता। तुम्हारी कविता ऐसी है कि उसमें सहज बोध वाला आधार खूब पुष्ट है : मेरी सलाह है कि तुम उसका विश्वास करना और उसे कम करके न आंकना। ध्यान कविता रचना पर केन्द्रित रखना, उसकी व्याख्या की चिन्ता न करना। अच्छी कविता अपना मर्म शब्दों के भीतर छिपाये रहती है और उस तक लोग धीरे-धीरे पहुँचते हैं। Never seak to tell thy love, Love that never told can be.

सस्नेह — रामविलास

बांदा

२५-११-८२

प्रिय डाक्टर,

—परसों दोनो भाग[1] मिल गये। आभारी हूं। प्रकाशक को भी पोस्टकार्ड से सूचित कर दिया है। तुम्हें भी सूचित कर रहा हूं। भूमिका पढ़ गया। प्रत्येक अध्याय का सार मिला।

—बधाई है कि इतना समझा-समझा कर तुमने बात-दर-बात कही है कि कुछ भी अनकहा नही रह जाता। मूल स्थापनाएं खुलती चलती हैं। फिलहाल इतना है [ही]।

हां, दैनिक जागरण में तुम्हें दो बार रूस की यात्रा की बात छपी थी। मुझे स्वयं आश्चर्य हुआ था। पर छपा देख कर विश्वास करना पड़ा। तभी मैंने अपने पत्र में इसके लिए बधाई दी। मैंने कवि कल्पना की उड़ान नहीं भरी थी।

—आज कल रह-रह कर कुछ-न-कुछ तकलीफ हो जाती है। चिन्ता नही करता। जीने की लालसा पूरी तरह बलवती है। जिलाये है।

1. सम्भवतः रामविलास जी की पुस्तक 'भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद' के दोनो भाग। [अ० त्रि०]

आलोचना का अंक वह अंक निकल गया क्या ? मिला नहीं।

सस्नेह—केदारनाथ अग्रवाल

२६-११-८२

प्रिय केदार,

तुम्हारा २५/११ का कार्ड मिला।

'आलोचना' में तुम्हारा लेख छपा है। अक ६ नवबर को प्रकाशित हो गया था। मैने राजकमल प्र० को लिखा है कि तुम्हे अक नही मिला, भेजे।

दो बार की रूस यात्रा पत्रकार की कल्पना है, यह जान कर मजा आया। तुम्हारी कल्पना यथार्थोन्मुख है। इसलिए भ्रम न होना उचित ही था।

शेष कुशल।

तुम्हारा
रा० वि०

बांदा
६-१२-८२

प्रिय डाक्टर,

– तुमने प्रकाशक को भेजने को लिखा। उसने 'आलोचना' (60-61 अंक) डाक से भेंट स्वरूप भेजा। वह आज मिला, कचहरी से घर आने पर २ बजे। पढूंगा। बेहद खुशी हुई तुम्हारी फोटो देख कर—नई है। सजोऊंगा।

–हाल लिखना।

सस्नेह
केदारनाथ अग्रवाल

१३-१२-८२

प्रिय केदार,

६/१२ का कार्ड मिला।

'घर की बात' जितनी 'आलोचना' मे छपी है, पुस्तक रूप में प्रकाशित होने पर उसमे लगभग दुगुनी हो गी। उसी को पू   कर रहा हू।

मालकिन की एक आंख में मोतिया बिंदु है। आगे-पीछे आपरेशन कराना हो गा। इन दिनो मुख्य समस्या उनकी डायबिटीज की है, खूराक बहुत कम हो गई है।

मेरा लड़का विजय साल भर के लिए कनाडा गया हुआ है।

अपनी पत्नी के स्वास्थ्य के बारे में लिखना। मालकिन पूछती है। कचहरी जाते हो, जान कर प्रसन्नता हुई।

तुम्हारा
रामविलास

बांदा (उ० प्र०)
२८-१२-८२
रात ६ बजे

प्रिय डाक्टर,

—१३/१२ का पत्र मिला। मन प्रसन्न हुआ जैसे तुमने इस पत्र में दिल खोल दिया। वैसे पूरी तरह खुल कर 'घर की बात' तुमने पत्र मे नही लिखी। पर इतना ही पर्याप्त है। मैं देख रहा हूं कि तुम मेरे पत्र की प्रतीक्षा कर रहे हो। अब अधिक इन्तजार न कराऊंगा। लो यह छोटा (चुनूबादा) पत्र।

—मैं एक अध्याय पढ़ गया। दूसरा [दूसरे) अध्याय पर अभी नजर नहीं दौडाई। पहली ही में रमा हूं। जो-जो कुछ तुमने तर्क दिये है और जिस-जिस तरह से तर्कों को प्रस्तुत किया है वह देखते ही बनता है। भाषा की सीधी किसानी अभि-व्यक्ति मन को मोह गई। कही भी तो विद्वता या पांडित्य का कोई पुट नहीं आ पाया। वास्तव में जनवादी गद्य है। बडे सधे मार्के के वाक्य बिना भार के—कतार बांध कर आगे चलते चले गये हैं। धन्य हो ! फिलहाल इतना ही।

आलोचना का अंक अभी पुकार रहा है। मैंने अभी उनकी अनसुनी कर रखी है। यों ही देख गया हूं। मनोयोग से रात में ही पढ़ूंगा। वैसे बहुत ही अछूते ढंग मे तुमने यह बात लिखी है। पत्नी वैसी ही है। बेटा और उसका परिवार आया। है।

बच्चो की धमा चौकड़ी मची है। अब सन्यास [संन्यास] टूटा। विजय को मेरी बधाई।

तु० सस्नेह केदार

२६-१-८३

प्रिय केदार,

तुम्हारा २८-१२-८२ का कार्ड मिल गया था। पहली जनवरी को मालकिन बनारस गई। उनकी एक आंख में मोतिया बिंदु था और पक चुका था। दूसरी मे भी उसकी शुरुआत हो गई थी। बनारस में आपरेशन की अधिक सुविधा थी,

इसलिए मझले लडके भुवन के साथ उन्हे वहा भेज दिया। विजय कनाडा गये है साल भर के प्रशिक्षण के लिए। इसलिए पुतह सतोष और चिन्मय-तन्मय नातियो के साथ मै यहा हू। परसाल को देखते मेरा स्वास्थ्य ठीक है।

नागार्जुन यही है पर भेट नही हुई। सर्दी काफी पडी पर अब जा रही है। जयपुर के प्र० ले० सम्मेलन मे तुम शायद नही गये। वहा से लौटते बिहार के कुछ लोग मिले थे। इति।

सस्नेह रामविलास

बादा (उ०प्र०)
२-२-८३

प्रिय डाक्टर,

२६/१ का पोस्टकार्ड मिला। मालकिन की आख का आपरेशन बनारस मे होगा। वहा सुविधा अधिक है। भुवन के साथ रहेगी। यह सब अच्छी तरह से सफल हो जाये, यही हार्दिक कामना है। वैसे उनकी तबियत तो पहले से बहुत बेहतर होगी वरना तुम यह आख के आपरेशन का इरादा न करते। दिल्ली मे रह कर चिकित्सा पूर्ण रूपेण अति उत्तम हो सकी। यह बहुत बडी बात है। वरना तो डाक्टरो की नियत [नीयत] हर जगह खराब ही दिखती है।

आगरे से दूर दिल्ली मे पतोहू और नातियो के साथ रह रहे हो यह भी उतना ही आवश्यक है जितना अकेले मे गम्भीर चिन्तन की किताब लिखना। जीवन की दैनिक गतिविधिया भी अपना विशिष्ट महत्व रखती है। नातियो की सगत सतो की सगत से बढ कर होती है। वह इस ससार को सत्य और सुन्दर समझते है तभी तो उनके लिए चिउटी और हाथी एक ही तरह की अनुभूतिया देने वाले होते है। सत तो विवेकी बन कर 'समदर्शी' हो पाते है। बच्चे पैदा होने के बाद ही वैसी 'समदर्शिता' प्रदर्शित करने लगते है। इधर मैं भी अपने बेटे के चार बेटो के आ जाने से जीवन मे जीवत हो गया था। अब भी मन वैसा ही बना है। आज धूप मे बैठा तुम्हे पत्र लिख रहा हू। गिलहरिया एक-दूसरे के पीछे 'चिकचिक' करती भाग दौड रही है और मस्त है, बेफिक्र है। आगन मे धोया गेहू सूख रहा है। कलेवा हो चुका है। पत्नी भी नहाने की योजना बना रही है, धूप मे धोती और तौलिया वगैरह सेक के लिए डलवा चुकी है। घर का मौसम उम्दा है। बाहर हवा हरहरा रही है। पेड बबूल का खडा सब कुछ झेल रहा है। सिर का मैलखोर छत्र डोल रहा है। दिल्ली मे धूप तो खाते ही होओगे। नागार्जुन भी खूब है। पता नही कहा रहते है···घुमक्कड है। हिंदुस्तान का नकशा हो गये है। हरेक प्रदेश के अक मे हिल रहे है। देखो कब आकर तुमसे मिलते है। आयेंगे जरूर।

जयपुर नहीं गया—न कहीं और गया। आगे भी घर से बाहर न जा सकूंगा। लोग बुलाते हैं पर मजबूरी नहीं समझते। शायद घमंडी समझ लेते हों। कोई बात नही। यह स्वाभाविक है।

—बिहार और मध्यप्रदेश में ही तो सक्रिय लोग है। अपने इस प्रदेश में तो लोग मौज मारते—पंजे मारते हैं और अपना-अपना ताजिया उठाये गमगीन धुनों के साथ करबला की ओर जाते हैं। ऐसी यहा की जमीन ही है।

—तुम्हारा स्वास्थ्य पहले से ठीक है। यह सुन कर असीम आनन्द हुआ। दोस्त अभी 'शतायु' पूरा करना शेष है। क्रिकेट में लोग अपनी-अपनी बल्लेबाज़ी के शतक पूरे कर रहे है। तुम भी शतक बनाओगे। मैं भी इच्छा रखता हूं पर शरीर साथ देता रहे तो। बहरहाल, जीने मे लगा हूं, जी रहा हूं, दुनिया का रंग रूप पी रहा हूं और देश में चल रही राजनीति के सिहो और सियारो की कथनी-करनी का जायजा ले रहा हूं, एक आम आदमी की तरह।

-राजनीतिक कविताओ का सग्रह शायद इलाहाबाद मे छप गया होगा। इसे अपने 'मुशी' को भेंट किया है जैसे तुमने उसकी शादी के समय मेरी पहली दो पुस्तकें भेट की थी आगरे मे। नव वर्ष की शुभकामनाए भेजी थी मुशी ने। घर का पता नही था। उत्तर New age के पते पर भेजा था। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

८-२-८३

प्रिय केदार,

मार्क्स जब दर्शनशास्त्र पर लिखते है तब अर्थशास्त्र उनके साथ रहता है, जब अर्थशास्त्र पर लिखते है, तब दर्शनशास्त्र साथ रहता है। कुछ दिन हुए मैं पूजी (खंड १) पढ रहा था और एक वाक्य पर निगाह अटक गयी, तुम्हारे अवलोकनार्थ उद्धृत करता हूं : Every day brings a man twenty four hours nearer to his grave; but how many days he has still to travel on that road, no man can tell accurately by merely looking at him (पृ० १६७)। मार्क्स ने यूनानी दार्शनिक एपिकुरुस को जवानी में गहराई से पढ़ा था। जीवन भर एपिकुरुस का चिन्तन उनके साथ रहा। मार्क्स और हेगल का साथ कच्चा था और मार्क्स निरंतर हेगल की खीची रेखाएं—एक के बाद दूसरी—पार करते रहे। ऊपर के वाक्य में दर्शन का शास्त्री नही कवि बोलता है। तुमने 'शतायु' पूरा करने की बात लिखी है। उसी संदर्भ में मार्क्स का वह वाक्य तुम्हें भेज रहा हू। अपन पान्च साल से ज्यादा आगे की नहीं सोचते। भीतर से अपने को तौलते है, काम करने की योजना बनाते है। योजना पूरी हो गई तो फिर—पांच

साल बाद —आगे की सोचें गे ।

एक प्रश्न : कविता की व्याख्या कैसे की जाये ? विशेष कविताओं की व्याख्या किये बिना निर्विशेष कविता की व्याख्या हाथ न लगे गी । यदि कोई आलोचक किसी कवि का सही अध्ययन करता है तो वह कविता मात्र के अध्ययन —और उसकी रचना —का मार्ग प्रशस्त करता है । मार्क्स ने इतिहास मात्र के विवेचन के लिए भौतिकवाद पर कौन-सी पुस्तक लिखी है ? तुम्हे इस जानकारी से मज़ा आना चाहिए कि रूस में कुछ लोग मार्क्स के ग्रंथों मे ऐतिहासिक भौतिकवाद ढूढ़ते थे और उसे न पा कर बहुत क्षुब्ध होते थे । ऐसे एक सज्जन मिखाइलोव्स्की थे। इनके बारे में लेनिन ने लिखा था : "He has read Capital and failed to notice that he had before him a model of scientific, materialistic analysis of one—the most complex—formation of society, a model recognized by all and surpassed by none. And here he sits and exercises his mighty brain over the profound problem. In which of his works did Marx expound his materialist conception of history ?" (ग्रंथावली, १/१४३) । १९४७ में इलाहाबाद के प्रगतिशील लेखक सम्मेलन में प्रभाकर माचवे ने मार्क्स के बारे में ठीक यही प्रश्न किया था ।

मालकिन को एक आंख से, मोतिया बिंदु के कारण दिखाई न देता था, दूसरी पर भी असर होने लगा था, इसलिए आपरेशन ज्यादा दिन टाला न जा सकता था । कठिनाई पैदा हो रही है डायबिटीज़ के कारण । वहां यह बीमारी बढ़ी है । २५ जनवरी को बेहोश हो गई थी । जब तक डायबिटीज़ नियंत्रित न हो गी, तब तक आपरेशन न हो गा । अस्तु, भुवन वहां मुस्तैदी से देखभाल में लगे है। यहां नातियों की संगति शाम को टी० वी० देखते समय कुछ देर को होती है । ये लोग सबेरे सात बजे स्कूल चले जाते है और तीसरे पहर लौटते है । इसलिए आगरे के और यहां के दैनिक जीवन मे विशेष अंतर नहीं है । तुम्हारा नीम-कौए-गिलहरी—धोया गेहूं सूखता हुआ—घर का वर्णन बहुत-बहुत अच्छा लगा । धूप हमारे कमरे में आती है । यही बैठे-बैठे खा लेते है । जो कसर थी, वह तुम्हारी चिट्ठी की धूप ने पूरी कर दी । शरीर के साथ मन भी नर्म ऊष्मा से स्पंदित हो उठा । ऐसे दिन तुम्हारे जीवन [में] बहुत से आयें । इति । सस्नेह रामविलास

बांदा/१६-३-८३
PIN 210001

प्रिय डाक्टर,

८-२-८३ का पत्र मिल गया था । उत्तर अब दे रहा हूं । विलम्ब इसलिए हुआ

क्योंकि मैं इधर घर के निजी कामों [में] व्यस्त रहा।

मार्क्स का उद्धरण पढ़ने को मिला। सत्य यही है जो उन्होंने पूजी (खंड १) में लिखा। फिर भी जिजीविषा बड़ी प्रबल होती है और मैं तो उसी को अपनाये हुए अधिक से अधिक दिन तक जीने की लालसा बलवती बनाये रखता हूं। जब भी जरा भी शिथिलता आती है या होती है तो विचलित होने से बचता हूं और सृष्टि की समग्रता से अजेय जीवनी शक्ति खीचता रहता हूं और प्राणवंत बना कामकाज मे लगा रहता हूं। फिलहाल कविताएं नही लिख सका। न लेख ही लिख सका। मैने तो पंचवर्षीय योजना कभी बनाई ही नही। बनाता भी कैसे [!] सारा पिछला जीवन तो बिना योजनाओं के ही जीता रहा हूं। अब क्या नई शुरुआत करूंगा। तुमने तो योगी की एकाग्रता अर्जित की है और योजनाबद्ध काम करते-करते महान उपलब्धियां दे सके। इसी कर्मठता के बल पर तुमने तमाम तरह की प्रचलित भ्रांतियो को [का] ध्वंस किया और वैज्ञानिक समझदारी मे साहित्य को दिशा और दृष्टि दी। तुम्हारी पुस्तकें पढ़-पढ़ कर मैं समझ पैदा कर सका। वे न मिलती तो मैं 'नदारदशुद' होता।

इधर छप रही कविताओं और लेखों से यह मालुम होता है कि जैसे मानवीय चिंतन दिशाहीन हो कर व्यक्ति को अक्षम बना चुका है और वह जातीय चेतना से विमुख हो कर ऊपरी सतह पर फिसल-फिसल कर टूट और बिखर रहा है। जैसे सबकी समझ मारी गई है। कैसे संतोष है उन्हे ऐसे कृतित्व से? वाहवाही के ये शिकार वैज्ञानिक चिंतन के पास जाते ही नही और मात्र आधुनिकता और समसामयिता [समसामयिकता] के चक्कर मे मकड़ी के जाले की तरह के महीन-महीन तार भर निकालते रहते है। व्यक्तित्व बनने के बजाय खडित हो रहा है। जब तक मानवीय चेतना जनवादी चेतना नही बनती तब तक यही सब होता रहेगा। ऐसे ही लोग तो कहते है कि ऐतिहासिक द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का कोई युगीन महत्व नही रह गया। ये भ्रष्ट बुद्धि कुछ भी दे नही सकते। श्रम और सघर्ष ही पथ प्रशस्त कर सकता है जिसके लिए ये तैयार नही दीखते। इधर 'साक्षात्कार' में तुम्हारी पुस्तक से महावीर प्रसाद द्विवेदी के सटीक उद्धरण छपे है। वे अवश्य काम करेगे। लोगों की आंखें खुलेंगी। मार्क्स का चितन ही जीवित है। वह चिंतन विश्व को सही दृष्टि प्रदान कर रहा है। उनका चितन अब और विकास कर रहा है वह Static नही—Progressive है। इतिहास ने उसे खतम नही किया। वही उससे विकसित हो रहा है।

१४ व १५ मई को भोपाल मे तुम्हारा 'महत्व' मनाया जा रहा है। मुझ से वहां जरूर-जरूर पहुंचने के लिए लिखा जा रहा है। पर ऐसी लाचारी है कि घर से बाहर जा पाना असम्भव है। कोई तरीका नही है। बहुत चाह कर भी नही पहुंच सकूंगा। तड़प कर रहूंगा।

अब मालकिन की तबियत बनारस मे कैसी है? डायबेटीज का रोग ठीक हुआ या नही। आख का आपरेशन हो पाया या नही? वही है या दिल्ली आ गई? हाल जरूर लिखना। मेरी पत्नी भी पूछ रही है।

अब सबेरे ताजगी रहती है। दिन-दोपहर धूल-धक्कड़ वाली बयार झूमती झकोरे मारती है और गरमी से गला सुखा जाती है।

आगन में बये ने घोंसला बनाया है। खूबसूरत है। उसे देखता हूं। बया और बयिन आते-जाते और उसमें घुस जाते है। छोटी देह के दोनों है। एक के तो केसरिया पेट भी है। चोंचें लम्बी-नुकीली है। बहुत प्यारे लगते है। कभी-कभी घोंसले के नीचे खड़ा हो कर पुचकारता भी हूं। वह घोसला से चोंच निकाले आंखें मटकाते रहते है। दिन भर बार-बार उड़-उड़ कर जाते-आते है और नित्यकर्म मे लगे रहते है। गिलहरिया तो चिकचिक करती ही रहती है। नीम का पेड़ उनका छायादार आश्रय है। फट मे चढ़ जाती है और डाल से डाल पर कूदती-फांदती ओझल हो जाती है।

मद्रास मे पानी का संकट है। पता नही बेटे के परिवार का क्या हो? पत्र नहीं आया। कमला प्रसाद की पुस्तक 'रचना और आलोचना की द्वन्द्वात्मकता' बढ़िया लगी।

सस्नेह केदारनाथ अग्रवाल

९-४-८३

प्रिय केदार,

तुम्हारा १६/३ का पत्र मिला। मालकिन की तबियत गड़बड़ा गयी थी। मैं १६ दिन बनारस रह कर वहा से २३/३ को लौटा। डायबिटीज़ नियत्रण मे नही आ रही। इंसुलिन बे असर हो गई है। इस लिए आख के आपरेशन का सवाल नही है। गनीमत यह है कि सामान्य स्थिति ठीक है। चल फिर लेती है, नीद आती है। मई में उधर फिर जाऊ गा।

तुम भोपाल न जा सको गे तो कोई हानि न हो गी, मैं भी न जाऊं गा। शायद स्थिति ठीक होती तो भी न जाता। मुझे ऐसे आयोजन अच्छे नही लगते। दक्षिण भारत में अभूतपूर्व जल संकट है। बीसवी सदी के अंतिम चरण में विकासशील भारत में! ऐटमी युद्ध की तैयारी जोरों से हो रही है। भारत पर एक तरफ से आक्रमण के लिए असम की धरती को समतल किया जा रहा है, दूसरी तरफ से पंजाब की धरती को! बुद्धिजीवियों में जो प्रभावशाली है, वे कहीं न कहीं अमरीका और उसकी एजेन्सियों से जुड़े हुए है। कम्युनिस्ट पार्टियां उत्तर भारत में लगभग निष्क्रिय है। इसलिए बिखराव है।

'मार्क्स और पिछड़े हुए समाज' में इतिहास की कुछ समस्याओं का विवेचन है। महीने दो महीने में समाप्त हो जाये गी।

तुम्हारी जिजीविषा की दाद देता हूं। कविता नहीं लिखी, कोई बात नही। कविता देखते तो हो। तुम्हें बया के घोंसले के नीचे देख कर हम आनंद विह्वल हैं।

प्यार—रा० वि०

२२-४-८३

प्रिय केदार,

'आलोचना' में प्रकाशित 'घर की बात' के कुछ अंश मुंशी संपादित पारिवारिक पत्र 'सचेतक' में छप चुके थे। इस पत्र के नये अंक में मुंशी को समर्पित तुम्हारे कविता-संग्रह[1] की मुंशी लिखित समीक्षा भी छपी है। वह अंक तुम्हारे पास भेजने का कोई इरादा मुशी का नहीं था। मिल जाये तो समझना, मुंशी पर मेरे कहने का अमर हुआ है। पर लगता है, मुंशी को वह कविता संग्रह भेजने का कोई इरादा तुम्हारा भी नही है। मुशी ने श्याम कश्यप से प्रति ले कर अपनी समीक्षा-कला आजमाई है। प्रकाशक से कहना, एक प्रति मुंशी (सी-175, हरि नगर घंटा घर नई दिल्ली-110064 या P. P. H.) के पास भेज दे। इति।

सस्नेह—रा० वि० शर्मा

बांदा
२७-४-८३

प्रिय डाक्टर,

२२/४ का पत्र मिला। मुंशी को पत्र अभी लिख चुका हूं। पुस्तक भेजूगा। श्याम कश्यप को भी पुस्तकें भेजूगा। यह लोग सन्नाटा खींचे रहते है। न इनका पता है मेरे पास न इनके कोई समाचार हैं। चौबे ने भी पता न भेजा। न तुमने भेजा था। P. P. H. के अखाडे में हम कहां पहुंचते। वहां तो दांव-पेंच वालों की पैठ है। वैसे कोई कुछ लिखे मुझे कुछ भी असर न होगा। बुरा न बान की तरह लगेगा। न अच्छा फूल की तरह। अब वहां हूं जहां मैं हूं और मुझसे बातें करती मेरी कविताएं [है]।

अब बनारस के हाल क्या है ? मालकिन वहीं होंगी ही। तबियत कैसी है।

मुंशी महाराज को बता देना कि मैंने पुस्तक समर्पित करके कोई एहसान नहीं किया। वैसे वह अपनी चुप्पी तो कभी तोड़ें। वह भूले रहते हैं और हमें न याद करने की वजह से [ ][2] मारते हैं। बहुत खा चुका हूं। कुछ भी असर न होगा।

सस्नेह—केदार

---

1. कहें केदार खरी-खरी [प्र० शि०]

2. 'यहाँ का शब्द किसी वजह से मिट चुका है। [प्र० शि०]

३ मई ८३

प्रिय केदार,

तुम्हारा २०/४ [२७/४] का कार्ड मिल गया था। उसे मैंने मुंशी और श्याम कश्यप को भी पढ़कर सुना दिया था —'न इनका पता है मेरे पास'—पर इन लोगों को तुम्हारे पत्र मिल गये हैं। 'चौबे ने भी पता न भेजा। न तुमने भेजा था।' चौबे का पता : रामस्वरूप शर्मा, ७-न्यू, शाहगंज, आगरा-२। मेरे पास काफी लोगों के पते हैं। किसी और का दरकार हो तो लिखना।

'वैसे कोई कुछ भी लिखे मुझे कुछ भी असर न होगा।' ठीक लिखा है। मुंशी जो कुछ लिखते है, वह वैसे भी बे असर होता है - ज्यादातर। आजकल उनके घर की मैनेजरी मुकुल— उनके पुत्र -करते है। उन्हे मैंने फिर याद दिला दी थी कि तुम्हें 'सचेतक' भेज दें।

'अब वहां हूं जहां मैं हूं और मुझ से बातें करती मेरी कविताएं।' खूब बहुत खूब। इन बातें करती कविताओं पर एक नाटक लिखने की इच्छा हो रही है।

परसों बनारस जा रहा हूं। दो महीने तक वहां का पता :

New G 33, हैदराबाद, B. H. U. वाराणसी। बस, प्यार। रा० वि०

बांदा (उ. प्र.)

६-५-८३

प्रिय भाई,[1]

—आज 'सचेतक' और उसके साथ तुम्हारा पत्र भी मिला।

—मेरी [अपनी] पुस्तकें अब इकट्ठा करूंगा तो सब भेजूंगा। श्याम कश्यप का बंडल बंधा रखा था -उन्हे भेज चुका। अलग से तुम्हे जरूर भेजूंगा। समय लगेगा।

— मैं तो स्वयं ठीक हूं। पत्नी ही ऐसी है कि उनकी देखरेख में रहना पड़ता है— बाहर जा नही सकता। घर में कोई और नही है।

- इस संकलन में तमाम कविताएं है न्याय से सम्बंधित। जरा गौर से पढ़ना। बांगला देश के अलावा भी दमदार मसाला है।

मैंने यही उचित समझा कि मै अपने पूरे गुण-अवगुण के साथ लोगों को मिलूं। केवल अच्छे रूप में सबके सामने आऊं, यह गलत होगा। यही वजह है संकलन में सभी तरह की कविताएं हैं। विकास की यात्रा का सही आकलन होना जरूरी है।

बांदा आओ तो क्या कहने हैं? रा० वि० बनारस गये होंगे।

1. यह पत्र श्री रामशरण शर्मा 'मुंशी' के नाम है। [प्र० वि०]

फिर और लिखूगा।

सस्नेह
केदारनाथ अग्रवाल

बादा (उ प्र.)
210001
Dt 14-5-83/दोपहर २ बजे

प्रिय डाक्टर,

—३/५ का पत्र मिला।

—मुशी ने 'सचेतक' का वह अक अपने पत्र के साथ भेज दिया है। मैने मुशी को किताब भी भेज दी थी। श्याम कश्यप के पास पुस्तक पहले ही मिल गई थी भोपाल मे।

— अब कहो बनारस मे मालकिन की तबियत कैसी है ? पास रहना जरूरी होता है। अच्छा हुआ पहुच गये। हाल जरूर लिखना।

—इधर १४ व १५ को भोपाल मे 'महत्व' का कार्यक्रम चल रहा है। अखबार मे छपा हे १५० प्र लेखक आयेगे। नागा बाबा व त्रिलोचन व नामवर व बहुत से अन्य पहुचेगे। मै न जा सका। खेद है। जरा 'बडकवो' की बहक चहक सुनता और गुनता।

– बेटा शूटिग मे मद्रास से ८०० मील दूर है, इस महीने के अत को उसके बच्चे भी वही पहुच रहे है। शायद बच्चे जून मे यहा आये। मद्रास मे तो पानी का अकाल है।

—यहा गर्मी धमधमा कर आ गई है। पर सह लेते है उमे भी।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

२०-५-८३

प्रिय केदार,

१८ मई की दोपहर को दो बजे का लिखा कार्ड मिला। हम २० मई के सबेरे साढे छह बजे, घूम कर लौटने और चाय पीने के बाद, आमो के पेडो मे कोयल की आवाजे सुनते हुए, तुम्हे यह कार्ड लिख रहे है।

मालकिन का हाल कुल मिला कर ठीक है। मोनो कपोनेन्ट इसुलिन देने से डायत्रिटीज नियत्रित नही है, धीरे-धीरे बढ रही है। फिर भी वह चलती, फिरती, खाती, पीती, सोती है, इसलिए सतोष है।

परसो यहा आधी आई, पानी बरसा। हिमाचल प्रदेश मे बहुत नुक्सान हुआ। मथुरा से ले कर रोहतक और पजाब तक फसल को—या खलिहानि मे सुची राशि को –बहुत नुक्सान हुआ। मद्रास मे पानी बरसने की खबर सुनी थी, शायद हालत कुछ सुधरी हो।

छात्रो मे गुडागर्दी, उनके गुरुओ मे जातिवाद –विशेष रूप मे बाह्मन ठाकुर-वाद—-यहा की आकर्षक विशेषताए है। बहुत दिनो के बाद इतने आम के पेड़ देखे है, मन बहला लेते है। सस्नेह रा वि. शर्मा

बादा (उ प्र)
Pin 210001
2-6-83

प्रिय डाक्टर,

-20/5 का पत्र २८/५ को मिला। तुम लोग घूमने जाते हो यह प्रमाण है कि तबियत ठीक चल रही है। हमारे घर मे तो सबेरे ४ बजे से ही बुलबुल और कोयल के स्वर बरम पडते है। खाट पर पडे-पडे सराबोर होत रहते हे। ५ बजे मै उठ बैठता हू। वही अपना पुराना सफाई का काम करने मे जुट जाना हू। फिर ८ बजे तक नहा लेता हू। नाश्ता किया [करता हू] और सुसताता हू। गरमी बेहद बढ गई है। इधर भी पहले आधी-पानी मे किसानो का बहुत नुकसान हुआ हे। कल सुना रेडियो मे कि मद्रास मे बादल छाये हें। temp. 39^0 हे।

गुरु तो कम नही है। वे छात्रो की तरह ही झगडे के कारण बने रहते है। पढाना तो क्या है, रस्म अदाई करते है।

—मुशी का पत्र आया था। उत्तर भेज दिया हे। वाचस्पति[1] ने लैंस डाउन से तुम्हारा पता भेजा। उत्तर दे दिया है।

कब तक दिल्ली वापसी होगी? हमारा सलाम सबको।

सस्नेह केदार

•२७-६-८३

प्रिय केदार,

तुम्हारा २/६ का कार्ड यथासमय मिल गया था। बीच मे पत्नी की डाय-बिटीज बढी थी पर इधर एक हफ्ते सुधार हुआ और उनकी अवस्था सतोषजनक

1. राजकीय डिग्री कालेज मे हिन्दी के प्राध्यापक और लेखक। बाबा नागार्जुन के निकटतम।

[क्र० द्रि०]

है। मई में मौसम अच्छा रहा। रातें ठंढी थी। फिर जून में गर्मी ने खूब तेजी दिखाई। २५ को भारत ने वेस्टइडीज़ को क्रिकेट मे हराया और २६ को काफी पानी बरस गया। रात को यहा चारों ओर दादुरों की वैदिक ध्वनि सुनाई देती है।

आधुनिक भारतीय भाषाओं में रचे हुए ब्रिटिशपूर्व साहित्य पर टिप्पणी लिखने के लिए भारतीय इतिहास पर अभी सामग्री बटोर रहा हू। १६ जुलाई को दिल्ली जाऊं गा। वहां शायद डेढ़ महीने रहूं गा फिर खंभात —मझली बेटी सेवा के पास—जाने की सोच रहा हूं। डेढ़ साल पहले उसके पैर की हड्डी टूटी थी जो अभी तक ठीक नही हुई। पिछले महीने पेट मे ट्यूमर का आपरेशन हुआ। वहां कुछ दिन रहूं गा। फिर दिल्ली। जाड़े तक फिर बनारस।

तुम्हारा—रामविलास

बादा 2 7-83

210001

प्रिय भाई,[1]

20/6 की चिट्ठी मिली 'सचेतक' का अंक भी मिला। नये नामो का परिचय भी मिला।

मुझे आगरे से लौट कर राय साहब ने समाचार बताये थे। उसी के कुछ समय बाद तुम्हारा यह पत्र मिला। अंक पढ़ रहा हूं। वह पारिवारिक प्रकाशन सम्भवत: ससार में पहला प्रकाशन है। अवश्य ही ऐसे प्रकाशनों से मानवीय स्वभाव को जानने-पहचानने और बदलने की असरदार प्रक्रिया चलेगी। जो काम धर्म गुरु या नेता गण नही कर सकते—न कानून कर सकता है वह काम सराहनीय ढग से ऐसे प्रकाशनो के द्वारा किया जा सकता है। हर व्यक्ति निजता की इकाई बन रहा है। ऐसे प्रयास में इकाई अन्य इकाइयों से पुनः जुड़ेगी और आपसी सबंध सुधर कर सुदृढ सामाजिकता को सार्थकता दे सकेगे। मैं तो तुम्हें लखनऊ के Wall News Paper के सम्पादक के रूप में पहले से ही जानता हूं। दिल्ली मे उसको पूरा प्रसार और प्रचार मिला। बधाई सब सदस्यो को।

अवश्य लिखूगा। सचेतक अपना है। उससे बेगाना रहना असम्भव होगा।

सस्नेह— केदारनाथ अग्रवाल

1. यह पत्र श्री रामशरण शर्मा 'मुंशी' को लिखा गया है। [प्र० त्रि०]

बांदा (उ० प्र०) २-७-८३
PIN 210011 [210001]
प्रिय डाक्टर,

२७/६ का लिखा पोस्टकार्ड ३०/६ को मिला। अब आज उत्तर दे रहा हूं कि जब भी जहां जाओ और रहा [रहो] वहां से अपने पते के साथ पत्र अवश्य देना। भूलना नही।

--इधर मैने लगभग ६० नई कविताओ का एक अपना काव्य संकलन तयार किया है। नाम 'अपूर्वा' रखा है। साथ मे कविताओ को ले कर —एक-एक की अपनी टिप्पणी देने का विचार है। इसका शीर्षक रहेगा: कविताओं के आर-पार। यह भूमिका न होगी। वह तो विषय सूची के पहले सक्षेप मे कुछ पंक्तियो मे दे दूगा। यदि उचित समझो तो इसे तुम्हे समर्पित करूं। मन मेरा यही कहता है।

भारत की जीत महत्त्वपूर्ण रही। सभी ने खुशी मनाई।

बेटी सेवा के यहा जरूर पहुचना। उसे बहुत प्यार मिलेगा। वह तुम्हें देख कर आधो से ज्यादा अच्छी हो जायेगी।

मुशी ने सचेतक भेजा। और सब पूर्ववत् है।

तु०
केदार

वाराणसी
१२-७-८३

प्रिय केदार,

तुम्हारा २/६ का कार्ड मिला।

'पूर्वा' के वजन पर 'अपूर्वा'; 'आगन के पार द्वार' के वजन पर 'कविताओं के आर पार'। अच्छा आइडिया है।

मुझे समर्पित करना चाहते हो, जरूर करो। मुशी ने स्वयं को समर्पित पुस्तक की समीक्षा 'सचेतक' मे लिखी है तो मुझे समर्पित पुस्तक की समीक्षा उन्हे लिखनी ही पड़े गी। यहा से १६ को दिल्ली के लिए प्रस्थान है।

मालकिन की बडी बिटिया शोभा के पुत्र हुआ है। खूब प्रसन्न है।

सस्नेह
रा० वि०

वाराणसी
१८-८-८३

प्रिय केदार,

१४, अगस्त के सबेरे दिल का दौरा पड़ने से मालकिन का देहान्त हो गया । पिछले दिनो उनका स्वास्थ्य पहले से बहुत सुधर गया था ।

मै २६ को दिल्ली लौटू गा । तुम्हारा--रा० वि०

बांदा (उ० प्र०)/२४-८-८३
PIN : 210001
समय २ बजे दिन

प्रिय मुशी,

आज दोपहर मुझे लैंसडाउन से श्री वाचस्पति का पोस्टकार्ड (२०-८-८३ का) मिला । सूचना मिली कि प्रिय डा० रा० वि० शर्मा की मालकिन की मृत्यु हो गई । बनारस के अखबार मे उन्होने ऐसा पढा । वह बनारस पत्र लिख कर विवरण प्राप्त कर रहे है । मुझे यह समाचार भीतर से हिला गया । आगरे मे तब मिला था । अब फिर न मिल पाऊगा । डाक्टर वही थे या नही । पता नही । क्या हुआ- कैसे हुआ ? --कुछ भी पता नही । इधर यहां के अखबारो मे ऐसा समाचार नही छपा । मै कहूं तो क्या कहूं । जहां भी डाक्टर हों--उनका पंता लिखना । उन्हे भी चिट्ठी लिखूगा ! दुखी तो तुम सभी होओगे । समवेदना मे कुछ न कह कर यही कहूंगा कि धैर्य मे सब कुछ बरदाश्त करो । सस्नेह तु०

केदार

बांदा
२४-८-८३

प्रिय डाक्टर,

लैस डाउन से वाचस्पति का दिनांक २०/८ का पोस्टकार्ड मिला कि बनारस में मालकिन का निधन हो गया । यह हृदय विदारक सूचना है । बहुत तो संघर्ष किया मालकिन ने । तुमने भी तो कुछ नहीं उठा रखा । अन्त आ ही गया और वह चल बसीं । अब सिवा [सिर्फ] धैर्य धारण करके जिया ही जा सकता है ।—कर्मठ जीवन की करनी के द्वारा ही मौत को परास्त किया जा सकता है । वह तुम कर ही रहे हो । भला मैं क्या समझाऊ तुम्हे । दोस्त, जो उजाला तुम फैला रहे हो वह मालकिन को महिमा मडित कर रहा है -करता रहेगा । तुम्हारे संतप्त परिवार के

साथ मै भी शोक सतप्त हू। अपनी पत्नी को हाल बताया तो वह रो पड़ी। कहा आगरा मे मिली थी। अब फिर भेट न हो सकी। हाल पूछती रही कि कैसे क्या हुआ—तो मैने कहा कि चिट्ठी लिख कर पूछ रहा हू—जवाब आने पर बताऊगा।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

बादा
२८-५-८३ [२८-८-८३][1]

प्रिय डाक्टर,

तुम्हारा पत्र आज मिला। तब मालुम हुआ कि मालकिन १८/८ को चल बसी। तुम पास तो रहे ही होओगे। वैसे तुम्हे तो पहले ही दिल्ली जाना था। भीतर से रो पड़े होओगे। बाहर से भले ही गुमसुम रहे होओ। मै तो सन्न ही रह गया। पत्नी रो ही पड़ी थी।

मैंने आज ही नही कल की शाम को वाचस्पति को—तुम्हे बनारस को—मुशी को खत डाले है क्योंकि वाचस्पति ने गढवाल से अपने २०/८ के पत्र मे यह दुखद सूचना दी थी।

अब अकेले पड गये। इधर आ जाओ - मन चाहे तो। वैसे अभी तो परिवार के सभी लोग चाहेगे कि तुम उन्ही के पास रहो। मेरी इच्छा जरूर है कि यदि अनुचित न समझो तो आ कर मन हल्का कर लो। कोई कष्ट न होने पायेगा।

कहू तो और क्या कहू।

मालकिन अन्त समय तक होश मे रही और बोलती रही या नही ?

विजय के यहा ही रहोगे या कही दूसरी जगह जाओगे। यहा न आओ तो अपना पता लिख भेजना। फिर कहता हू आ जाओ—ऐसे समय मिलने से दुख मिटता है।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

---

1. लगता है मालकिन की मृत्यु की सूचना से, जो मानसिक आघात लगा उसके कारण 28-8-83 की जगह, केदारजी 28-5-83 लिख गए। सही तिथि 28-8-83 है। (प्र० वि०)

नई दिल्ली-५८
५-९-८३

प्रिय केदार,

तुम्हारा २८/५[1] [२८/८] का पत्र यथासमय मिल गया था। मैं १६ जुलाई को बनारस से आया था। उसके बाद जुलाई के अंत की ओर दिल्ली के एक मित्र उन्हें देख कर लौटे थे। अगस्त के पहले हफ़्ते में उनका कार्डियोग्राम लिया गया था जिसकी रिपोर्ट अच्छी थी। डायबिटीज़ नियंत्रित थी। इधर उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा था। १४ अगस्त के सबेरे अचानक दिल का दौरा पड़ने से उनका देहान्त हुआ। डाक्टर पड़ोस में ही थे, तुरंत आ गये थे पर उनकी ज़रूरत न थी, मालकिन ने एक ही झटके में खाईं पार कर ली थी। १५ के सबेरे दाह संस्कार हुआ। मैं १४ की शाम को पहुँच गया था।

मैं अभी नवंबर तक दिल्ली में रहूं गा, विजय के कनाडा से वापस आने के बाद दिसंबर में बनारस जाऊं गा। अभी दोनों जगह मेरी जरूरत है। तुमने रोने के बारे में पूछा है। दूसरों को ढाढ़स बँधाने के बाद जब फुरसत मिले गी, तब इसके बारे में सोचूं गा।

सस्नेह

शेष कुशल।

रा० वि० शर्मा

बांदा
२५-११-८३
PIN 210001

प्रिय डाक्टर,

—इधर कोई पत्र नही लिख सका। न तुमने ही कोई भेजा।

—जनकपुरी के पते से यह पोस्टकार्ड लिख कर यहां से, भेज रहा हूं कि आज १२ बजे दोपहर 'घर की बात' की प्रति डाक द्वारा, मुझे मिल गई है। प्रकाशक ने पत्र लिख कर चाहा था कि मैं पुस्तक पाते ही सूचना तुम्हें अवश्य भेज दू। इसीलिए यह सूचना दे रहा हूं। कचहरी जा रहा हूं। वहां काम है। लौट कर, फिर रात को इसे टटोलूंगा और इसकी गन्ध लूंगा।

अब कहां हो? कैसे हो? यहां आने का विचार बना या नही? अगले दिनों का क्या ठौर ठिकाना है? समय मिले तो उत्तर देना।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

1. रामविलासजी मालकिन के देहावसान से इतने विचलित थे कि वे भी केदारजी की तिथि संबंधी भूल को लक्ष्य नहीं कर पाए, अन्यथा सामान्य स्थिति में, इस तरह की भूल पर चुटकी लेने से वे चूकते नहीं। (प्र० वि०)

३०-११-८३

प्रिय केदार,

२५/११ का कार्ड मिला। यहीं जैनकपुरी में हूं। और कहीं जाऊं गा तो तुम्हें अवश्य सूचित करूंगा। मैं ठीक हूं। अगले महीने सेवा के पास खंभात जा कर रहने की सोच रहा था पर 'मार्क्स और पिछड़े समाज' पुस्तक समाप्त नहीं हुई। निराला वाली पुस्तक के खंड ३ का नया संस्करण होना है। उसमे छापे की अशुद्धिया काफी है, ठीक करनी हैं। 'प्रगतिशील साहित्य की समस्याए' भी नये संस्करण के लिए देनी है।

विजय कनाडा से वापस आ गये है। यदि जनवरी तक यह सारा कार्य समाप्त हो गया तो 'भारतीय साहित्य की भूमिका' के लिए सामग्री बटोरने बनारस जाऊ गा। दो दिन के लिए बड़े भैया यहीं हैं। आज मुंशी के यहां गोष्ठी है।

सस्नेह

रा० वि०

बांदा

4-12-83

प्रिय भाई,[1]

तुम्हारा पत्र और 'सचेतक' (15/11-83 मिले)।

-मालकिन सबको छोड चल बसी। इससे हृदय विदारक घटना और क्या हो सकती है। वह स्वयं न जान सकी होगी कि वह जा रही है मौत आई और ले गई। हम लोग कर ही क्या सकते थे। हमारे लिए धैर्य धारण [करना] के अतिरिक्त और बचा ही क्या था। वही हम-तुम-सबने किया। लेकिन मौत तो हमसे हमारी उनकी याद किसी भी प्रकार से हर नहीं सकी। वह सदैव सभी सदस्यो की स्मृतियो मे जीती-जागती रहेंगी।

—तुम इधर बहुत परेशान रहे। तुम्हारे साले दिवंगत हुए। वाकई में बहुत मार्मिक दुख झेलना पड़ा। मैं सबके प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करता हूं।

—आशा है कि अब तक तुम सब लोग नागपुर से वापस लौट आये होओगे। प्रिय डाक्टर भी दिल्ली आ गये होगे। मैंने उन्हें दिल्ली के पते पर 'घर की बात' की पहुंच की सूचना भेजी थी। वह पत्र मिल गया होगा। डा० नत्थन सिंह की दोनों पुस्तकें मुझे भी मिल गई हैं। प्रेमचंद वाली पुस्तक का पहला लेख मैंने पढ़ा। बहुत पसंद आया। वैज्ञानिक चिन्तन की भाषा मे तथ्य प्राणवंत हो गया है। और

1. यह पत्र श्री रामशरण शर्मा 'मुंशी' को लिखा गया है—दो पोस्टकार्डों पर। [अ० त्रि०]

भी पढ़ूंगा। उन्हें बधाई भेज चुका हूं। पुस्तकों के मूल्यों में कमी होने की [संभावना] नही है। ठीक हूं।

सस्नेह केदार 4-12-83

प्रेषक : केदारनाथ अग्रवाल

एडवोकेट, सिविल लाइन्स, बांदा

PIN 210001

—दो पोस्टकार्डों में यह पत्र जा रहा है। मुझे ध्यान न रहा। एक पर पता लिखा और दूसरे पर इबारत लिख गया। जब लिख चुका तो दो पोस्टकार्ड नज़र आये। अत: दोनो भेज रहा हूं। पृष्ठ संख्या पड़ी है। देख कर पढ़ लेना।

—नमन का परिचय मिला।

—सचेतक पढ़ गया। घर की भीतरी झांकी मिली। मालुम हुआ कि पारिवारिक स्नेह सम्बंध बड़े मधुर बनते रहे है। जीवन ऐसे ही जिया जाये तो सार्थक हो जाता है। वरना तो नरक की गंध आ जाती है। तुम सब लोग बडे खुले दिल की सुगंध दे कर ही एक दूसरे के आत्मीय बन सके हो।

· देखो तुम्हारा बिलटक्को (मेरा बेटा अशोक) मद्रास से दिसम्बर मे आ पाता है कि नही। आयेगा तो हम दोनो खुश हो लेगे।

—इधर वह अरसे से नही आया। वह वहा ठीक है। काम मे जुटा रहता है। कैमरा मैन है न। उसके चारों बेटे कराटे भी सीख रहे है। अब वहा पानी का कष्ट नही रहा। उन बेटों के नाम हैं :-- १ प्रशान्त— २ विशाल— ३ आकाश —४ समीर। बाप बेटो को प्यार करता है। झिड़कता तक नहीं।

—मौसम जाडे का है। खाट पर रजाई ओढ़े पत्र लिख रहा हूं।

केदार

बांदा

१६-१-८४

प्रिय मुशी,

—नये साल की शुभकामना का कार्ड मिला। खुशी हुई। तुम भी बहुत भाग दौड मे रहे और पारिवारिक विपत्तियों को झेलते रहे। अब सब शान्त होगा।

—आशा है कि सभी लोग स्वस्थ और प्रसन्न होगे। मैं पत्र नहीं लिख सका। घर में व्यस्त रहता हू।

'सचेतक' में 'बाढ़ो रे बाढ़ो सहिजन के बिरवा' पढ़ कर मुग्ध हो गया। खूब है यह। अब तो ऐसी कहानियां सुनने मे नही आतीं। ऐसी कहानिया और भी हों तो छापना।

प्रिय डाक्टर ठीक होंगे। दिल्ली ही होगे। उन्हे पत्र नहीं लिख सका। वह व्यस्त होंगे लेखन में। मौका पा कर उन्हें लिखूगा।

दिल्ली तो जुडा रही होगी। आज यहां भी कंपकपी चल रही है। बादलों में सूरज छिपा है। पानी टपक पड़ता है।

सस्नेह
केदार

सिविल लाइन्स,
बांदा (उ० प्र०)
PIN 210001
Dt. 30-7-84

प्रिय मुंशी,

तुम्हारे सभी पत्र मिल गये थे। लम्बे पत्र का उत्तर न दे सका था। शिथिल था। अब भी हू। 'सचेतक' के सब अंक अब तक के मिल चुके है। बम्बई में शुक्ल जी शोध कर रहे हे। आज ही उनका पत्र आया है। अभी उन्हे तुम्हारा पत्र न मिला होगा। नही तो चर्चा करते। उन्होने दो पते मांगे थे। आज भेज दिये। दिवाली मे बादा आने की बात लिखी है। मैने लिख दिया है कि कभी आये, मैं घर पर ही रहूंगा।

—डा० रा० वि० शर्मा को मेरी याद दिला देना। 'सेवा' का आपरेशन तो तुम्हारे आज के पत्र से मालूम हुआ। ठीक हो रही होगी। उन्हें भी मेरी शुभ-कामनाए दें कि वह ठीक हो जाये। मेरा नया कविता-संकलन –दो—जुलाई-अगस्त या सितम्बर तक छप जायेंगे। एक का नाम है, 'अपूर्वा'। समर्पित है रा० वि० को। दूसरा है 'रेत हूं मै, तुम जमुन जल'[1]। प्रेम सम्बधी कविताए है। अभी तक की लिखी पत्नी पर है।

लो पढो -

१ चलो, बैठो, धूप खाये / भूख वैभव की मिटाये,/पिये पानी, जिये,/गुन से गुनगुनाये,/रोशनी का प्यार पायें,/प्यार मे पत्थर बजाये,/जिदगी की जय मनाये।

२. दीवार मे टँगा/तसवीर हो गया मै / दूसरो के लिए/दिव्य और दर्शनीय हो गया मै/स्वय के फाके मस्त फकीर हो गया मैं।

सब को यथायोग्य।

सस्नेह
केदारनाथ अग्रवाल

1. सही नाम है—जमुन जल तुम। [प्र० त्रि०]

सी-३५८, विकासपुरी,
नई दिल्ली-११००१८
१४-२-८५

प्रिय केदार,

विजय ने यहा घर बनवा लिया है। हम लोग २६ जनवरी को जनकपुरी से यहा आ गये है। किताबे रखने के लिए ज्यादा जगह है, काम करने की अधिक सुविधा है। जाडे के लिए घर बहुत अच्छा है, खूब धूप आती है। घूमने के लिए पास ही बडा पार्क है। सामने सडक पर बसे बराबर चला करती है पर हम तो रेल की पटरियो के पास रह चुके है। दरवाजा बद कर लेने पर बसो का सगीत काफी नर्म हो जाता है। सबेरे साढे आठ बजे तक सब लोग अपने काम पर चले जाते है। तीसरे पहर तक हम एकान्त मे अपना काम करते रहते है। अपना काम = पढना-लिखना + भोजन + सोना। आशा है, तुम स्वस्थ और प्रसन्न हो।

तुम्हारा
रामविलास

बादा (उ० प्र०)
PIN 210001
Dt 21-2-85

प्रिय डाक्टर,

— १४/२ का पोर्स्टकार्ड आज अभी दोपहर को मिला। बहुत दिनो मे हाल चाल जानने की आस लगाये बैठा था। अब जान कर राहत मिली। ठीक-ठाक से हो, पढ-लिख रहे हो धूप का मजा भी ले रह हो। जान कर सतोष हुआ।

— मै तो इधर मानसिक तनाव की स्थिति मे काफी रहा। मेरे दिल्ली वाले दामाद हरीश बाबू रिटायर हुए। गाजियाबाद मे अपने नये घर मे गये। बीमार पडे। फौजी अस्पताल मे भरती हुए। सकट भारी है। खैर अब बच गये और ठीक हो रहे है। किरन बिटिया और उसकी बेटी जूली गाजियाबाद मे है। वही से जूली सबेरे अस्पताल जाती व शाम को लौटती [है]। हम दोनो घर से बाहर जा ही नही सकते। यही चिताग्रस्त बने रहे। इलाहाबाद के दामाद का आज पत्र आया कि वह ठीक हो कर गाजियाबाद आ जायेगे। सचमुच मैं भीतर से डोल गया था। खैर। और क्या लिखू। पत्र भेज दिया करो। कुछ तो चैन मिला करे।

सस्नेह
केदारनाथ अग्रवाल

सी-३५८ विकासपुरी,
नयी दिल्ली-११००१८
१२-३-८५

प्रिय केदार,

तुम्हारा कार्ड मैंने मुंशी के पढ़ने के लिए उनके घर भेज दिया था। अब वापस मिल गया है। जनकपुरी से मुंशी का घर ३ किलोमीटर रहा होगा तो यहां से ६ है। इसलिए अब उतनी जल्दी जल्दी नहीं मिल पाते। तुम्हारे कार्ड में दिए हुए संक्षिप्त विवरण से भी मुझे तुम्हारी कठिनाइयो का कुछ-कुछ अंदाज हो गया। घटनाएं अपने हिसाब से घटित होती है। उनकी चपेट में बूढ़ा आ रहा है या जवान, कवि या आलोचक, इससे उन्हे कोई वास्ता नही। कुछ परिस्थितियां ऐसी होती हैं कि आदमी उनसे लड़ सकता है पर अन्य ऐसो भी होती है जिनसे लड़ना संभव नहीं। आदमी चुपचाप सहने के अलावा कुछ नही कर सकता। रहस्यवादी कवि भले [illegible] पर वे आनंद विभोर तभी तक रह सकते थे जब तक उन पर घन-चोट न पड़े। भवभूति-निराला-शेक्सपियर —ये सब घनचोट के कवि है और मेरे प्रिय कवि है। 'सचमुच मैं भीतर से डोल गया था'—इसका जवाब कविता लिख कर ही दिया जा सकता है पर मैं अभी गद्य लोक मे हूं! प्यार। रा० वि०

बांदा
PIN 210001
Dt. 17-3-85
प्रिय डाक्टर,

—12/3 का पत्र कल मिला। जो तुमने लिखा वह सब ठीक है। अब 'डोलने' की स्थिति से उबर रहा हूं। ठीक हो जाऊंगा। पत्नी को भी सम्हाले हूं।

—गद्य लोक में रह कर भी तुम्हें मुझ जैसे कवि लोक के प्राणी की चिन्ता अवश्य ही होगी, यह कहने की बात नही है। फिर मन न माना इसलिए यहां यह बात लिख गया।

—'घन-चोट' सह चुका हू। फिर सह लूगा ही। जीवन जीने की ललक तीव्र रही है और अब भी है। यही कहना है। और तबियत तो ठीक है।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

सी-३५८ विकासपुरी
नयी दिल्ली-११००१८
१८-६-८५

प्रिय केदार,

इधर मै तुम्हारे बारे मे बहुत सोचता रहा और तुम्हारी कविताए पढता रहा। तुम्हे देखे बहुत दिन हो गये, कल्पना मे जो पुराना चित्र है उसमे काफी परिवर्तन करना पडा। बुढापा तुम्हें सता रहा है, यह सोच कर मन दुखी होता है। 'हे मेरी तुम'[1] मे एक ओर प्रेम का दमकता उजाला हे, दूसरी ओर वृद्धावस्था की छायाए भी है। पत्नी को तुमने बहुत प्यार दिया है और बहुत प्यार पाया है। अशक्त होने पर उसे सम्हालने का दायित्व भी तुम्हारा है। परस्पर स्नेह जितना गहरा होता है, बिछोह की सम्भावना उतना [उतनी] ही मर्मान्तक पीडा देने वाली होती हे।

तुमने प्रकृति पर (अपने और किसान के प्राकृतिक परिवेश पर) लिखा है, सामाजिक यथार्थ पर (भारत के जन आन्दोलन पर, वर्तमान व्यवस्था पर) लिखा है, तुमने प्रेम पर (अपनी जवानी से ले कर बुढापे तक प्यार की विभिन्न मजिलो पर) लिखा है। तुमने जहा अपने ऊपर लिखा है वहा इन्ही सदर्भो मे लिखा है। इन सब को समेटने वाली तुम्हारी एक व्यापक निष्ठा है—कविता के प्रति। प्रकृति ने मनुष्य जीवन की सीमाए निर्धारित कर दी है। इन सीमाओ पर मनुष्य विजय पाता है कविता मे। जो मर्मान्तक पीडा है, उसे भी वह अपनी कविता का विषय बनाता है। इस तरह वह विष को अमृत मे परिवर्तित कर देता है—अपने लिए, उससे ज्यादा दूसरो के लिए।

तुम्हारी कविताए पढना तुम्हारी जीवन यात्रा का अध्ययन करना है। जिस परिवेश मे कविता का कोई सबध नही है, उसमे रह कर, भीतर की लौ साधे, तुम बराबर कविताए लिखते रहे हो, यह तुम्हारी और हिंदी कविता की विजय है। इस समय राजनीति मे काफी अवसरवाद फैला हुआ है, उसी के अनुरूप मार्क्स-वादी लेखको मे अवसरवाद गहरे घर कर गया है। मुझे विश्वास है कि यह अवसर-वाद छंट जाये गा, राजनीति और साहित्य मे मार्क्सवाद का सूरज फिर चमके गा। इसमे तुम्हारी कविता की लोकप्रियता का प्रसार हो गा। अभी भी कुछ लोग मुझे मिलते है जो तुम्हारी कविता पूरे एकात्म भाव से, तुम्हारे प्रति पूरी तरह समर्पित हो कर पढ़ते है। इनकी सख्या बढे गी।

मैने एक निबध लिखा है: प्रगतिशील काव्यधारा और केदारनाथ अग्रवाल। उसके साथ मैंने तुम्हारी कविताए चुनी है, उनकी सूची जना दी है। यह सारी सामग्री मैंने अजय तिवारी को दे दी है। उसे वह श्री शिवकुमार सहाय के पास भेज दे गे।

यह काम पूरा करने के बाद मैं अपनी दुनिया मे लौट आया हू इतिहास और

---

1. पत्नी को सबोधित केदार जी का काव्य-सग्रह। [प्र० वि०]

मार्क्सवाद की दुनिया में। क्या करें, मार्क्सवाद की सही समझ के बिना वर्तमान व्यवस्था बदली नही जा सकती और भ्रम केवल इतिहास के बारे में नहीं है, मार्क्सवाद के बारे मे भी है। इधर इस बारे में जो कुछ सोचा था, वह ['] मार्क्स और पिछड़े हुए समाज ['] मे है। दो तीन महीने मे शायद निकल जाये। तुम्हें भिजवा दू गा, भूमिका और उपसहार जरूर देख लेना।

बैठा हूं मैं केन किनारे —यह कविता १९३५ मे छपी थी। निराला ने और तुमने प्राय: एक साथ हिंदी कविता मे नये यथार्थवाद की शुरुआत की थी। तुम्हारी सही जमीन यथार्थवाद की है। इस जमीन पर चलते हुए तुमने अर्ध शताब्दी पूरी की, इसके लिए मै तुम्हारा अभिनदन करता हूं।

तुम दोनो के स्वास्थ्य के लिए हार्दिक मगल कामना सहित—

रामविलास

केदारनाथ अग्रवाल
एडवोकेट

सिविल लाइन्स
बाँदा (उ० प्र०)
Pin 210001
दिनाक 4-10-85

प्रिय डाक्टर,

18-9-85 का पत्र 24-9-85 को मिला। वैसे सार मे तुमने अपने निबंध की मूल बातें, इस पत्र मे लिख दी है। फिर भी इच्छा तीव्र हुई कि तुम्हारा निबंध पढ़ने को मिल जाये तो अच्छा हो। आशा न थी कि उसकी एक प्रति श्री अजय तिवारी मेरे पास भेजेंगे। उन्हें तो निबंध का (को)मेरे प्रकाशक को देना है। सो दे देंगे ··इधर क्यो भेजेगे। पर सौभाग्य से उन्होंने एक प्रति अपने दिनाक 1/10 के पत्र के साथ मेरे पास भेज दी। वह पत्र और प्रति काल ही रजिस्टर्ड डाक से मुझे मिली। बडी खुशी हुई पा कर। पढ़ गया कल ही। वाकई में तुमने अपना बहुत-सा अनमोल समय इसके लिखने मे लगाया। यह जरूरी काम को रोक कर तुम्हें करना पड़ा। मैंने इससे सबक सीखा कि करने वाले ऐसे ही काम करके दुनिया में कुछ कर जाते है। मैं, इस उम्र में तुमसे कविताओ के बारे में इतना कष्ट उठाने की बात ही नही सोच सकता था। धन्य हो कलम के धनी कि तुमने वह भी कर दिखाया जिसकी मुझे कोई आशा न थी। हां, पहले कभी ऐसा हो सकता था। तुमने जो इतना लम्बा निबंध लिखा मैं उसके लिए कहूं तो क्या कहूं, समझ में नही आता। आभार ही व्यक्त कर सकता हूं। वह करता हूं।

निबंध आदि से अंत तक महत्त्वपूर्ण है। प्रगतिशील काव्यधारा का ऐति-हासिक विवेचन यों किसी भकुए ने नही किया। जो भी 'महाजनो' ने इस पर

लिखा वह केवल ऐसा रहा कि न लिखते तो अच्छा था। यारो ने खूब दोस्ती निबाही और उनके लिए नयी से नयी बौद्धिक स्थापनाए प्रस्तुत की। हमने सब देखा-समझा। चुप रहे। लोगो ने तो प्रगतिशील काव्यधारा को 'भूमिगत' ही कर दिया था। अब वह धारा अपना पसारा पा गई है। वे इस धारा के आगे टिक न पायेगे। तुमने ठीक लिखा है। जैसा लिखा है वैसा ही होगा। मार्क्सवाद तो विकसित होती जाती वैज्ञानिक चेतना की धारा है।

मै तो इस स्थिति मे पहुच गया था कि बिना परवाह किए जो सही है उसे लिखता रहू- न यश चाहिए—न पैसा-पूजी। विश्वास पहले भी था कि एक दिन मेरी कविताए जरूर सिर पर चढ कर बोलेगी। तुमने वही काम पूरा कर दिया। इससे हिन्दी का हित होता है। मै तो मात्र एक छोटी नगण्य इकाई हू। कविताए लोग पढे, समझे, आगे बढे, और अच्छा लिखे। बस इतना हो, चाहे मेरा नाम कोई ले या न ले। अच्छी कविता लिख लेना ही कवि के लिए महत्त्वपूर्ण है, न कि अपनी डुगडुगी बजवाना।

अन्त मे यही कहूगा कि तुमने अच्छा काम कर दिया वरना भटकन जैसी थी वैसी ही बनी रहती और अच्छी कविता का दर्शन दुर्लभ हो जाता। बधाई।

पत्नी कुरसी से सरक पडी। बाए पैर की जाघ के ऊपर fracture हो गया। ८ दिन मे प्लास्टर उस पैर के पजे मे बधा है। सेवा मे लगा हू।

तुम्हारी नई पुस्तक जब आयेगी तब अब पढूगा। चेतना विकसित करूगा। सत्य को पकडूगा।

श्री अजय की चिट्ठी का उत्तर आज दे दूगा।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८
११-१२-८५

प्रिय केदार,

तुम्हारा ४/१० का पत्र मिला। तुम्हारी पत्नी की जाघ के ऊपर फ्रैक्चर हो गया, यह जान कर बडा दुख हुआ। प्लास्टर उस पैर के पजे मे (या पजे तक ?) बधा है। उन्हे नीद आती है या नही ? देखभाल के लिए तुम अकेले हो या किसी से थोडी बहुत सहायता मिल जाती है ? खाना कौन बनाता है ? चौबीस घटे घर मे ही रहते हो या बाहर निकलने का अवसर मिलता है ?

'जो शिलाए तोडते है' और 'बोले बोल अबोल'[1] की प्रतिया इलाहाबाद से

1. ये दोनो केदारजी की कविताओ के सकलन हैं। [प्र० वि०]

आ गई हैं। मैंने मुंशी को बेटी किरन के दुबारा विधवा होने पर तुम्हारी कविता सुनाई और 'बहुत दिनों से रोके-थामे अपने आंसू' मुशी से पढ़वाई। तुम पर इधर जो बीती है, उसका आभास इन कविताओं से हुआ। बांदा में वकालत के साथ कविता की गाड़ी चलाना एक चमत्कार है। इतना दुख सहने पर अपनी आस्था की भूमि पर जमे रहना वीरता का काम है। मंगल कामना सहित—

तुम्हारा रामविलास

बांदा (उ० प्र०)
१६-१०-८५
प्रिय डाक्टर,

तुम्हारा ११/१० का पोस्टकार्ड कल १५/१० को मिला। मंगल कामना पा कर दिल को राहत मिली।

—एक दिन पत्नी की तबियत कुछ ऐसी दिखी कि वह अत्यधिक चिंताजनक हुई। इस पर मैंने दोनों बेटियों को तार व बेटे को मद्रास तार भेजे। वे दोनो तीन दिन हुए आ गईं। बेटा भी मद्रास से अपनी पत्नी के साथ हवाई जहाज से पहले दिल्ली, फिर वहां से इलाहाबाद वायुयान से पहुंचा। इलाहाबाद से बांदा टैक्सी करके आया। इन सब लोगों के आने से अकेलेपन की बेबसी व उदासी घटी और सब को देख कर पत्नी भी कुछ-कुछ आश्वस्त हुईं। इलाहाबाद का दामाद व उसका बड़ा बेटा भी आये। कल वे वापस गये। मुझे इन सब के आ जाने से लगा कि मैं दुख में भी अकेला नहीं हूं। साथ हैं प्रिय जन।

—आज बेटे ने कहा कि वह अपनी मां को मद्रास ले जायेगा। इसलिए वह खजुराहो गया है कि 19/10 को वहां से मद्रास चला जाये। फिर वहा नर्सिंग होम में भरती का प्रबन्ध करा कर इलाहाबाद सूचना देगा और हम सब लोग यहां से ट्रेन द्वारा मद्रास जायेंगे। अब यही ठीक लगता है। यहां अधिक इलाज असम्भव होगा। मैंने भी स्वीकृति दी। इलाहाबाद में मेरे चाचा के छोटे बेटे विजय हैं। उनकी पत्नी मेरी बेटी [मेरे बेटे] की पत्नी की बड़ी बहन हे। और कोई दूसरा रास्ता नहीं दिखता।

—यहां तो इससे पहले से एक नौकर खाना दोनों वक्त बना देता है। काम-काज करता है। शंकर नाम है। भरोसा उसी का है। मैं तो खाना बना नहीं सकता था। रही बात घर से बाहर निकलने की सो शाम को ४ बजे १ घंटे के लिए एक दूकान – नीलम मेडिकल स्टोर्स में जा कर चाय पी आता था। तब तक नौकर नहीं आ पाता था।

नींद तो खूब आती है। कमजोर है। देखभाल अब तक मैं ही करता रहा हूं।

अब भी करता हू। दूसरा उतनी खिदमत नही कर सकता।

हा, बहुत दारुण दुख भोग रहा। अब भी है। उपाय कोई अन्य नही है। करता रहा हू। किये जाऊगा।

मुशी को स्नेह। परिवार के सभी सदस्यो को भी।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८
२२-१०-८५

प्रिय केदार,

तुम्हारा १६/१० का पत्र मिला। तुमने अपनी पत्नी के हृदय, जिगर आदि की जाच तो कराई ही हो गी। रक्तचाप तो नही है ? मधुमेह की शिकायत ? जो भी हो, बेटा-बेटी आ गये, यह बहुत अच्छा हुआ। अकेलेपन के साथ बेबसी और उदासी का होना लाजमी है। मरीज़ के अलावा उसकी देखभाल करने वाले के स्वास्थ्य पर इसका बुरा असर पडता है। आगरे मे मुझे सबसे अधिक चिन्ता यह रहती थी कि अचानक मालकिन बेहोश हो गयी तो इन्हे घर मे अकेला छोड कर डाक्टर को बुलाने कैसे जाऊ गा। वह दो-तीन बार बेहोश हुई। सौभाग्य से उन दिनो कोई-न-कोई घर पर था। इसलिए अकेला छोड कर भागने की नौबत न आई।

तुम्हारे बेटे ने बिल्कुल ठीक प्रस्ताव किया है। माँ को मद्रास ले जाना ही ठीक है। तुम चाहे बादा आते-जाते रहो, उन्हे बेटे के पास ही रहना चाहिए। बेटा-बहू हवाई जहाज मे दिल्ली आये, फिर इलाहाबाद, वहा से टैक्सी करके बादा पहुचे। इस बीच वे जिस मानसिक तनाव मे रहे हो गे, वही जानते हा गे। इस स्थिति म उन्हे फिर न गुजरना पडे, इसलिए भी मा-बेटे का साथ रहना जरूरी है। इसमे तुम्हारी बेबसी और उदासी कुछ कम हो गी, स्वास्थ्य मे थोडा बहुत सुधार हो गा। इनकी जिम्मेदारी अब सिर्फ मुझ पर नही है—यह विचार मन को तसल्ली देता है।

मुशी को तुम्हारा पत्र पढवा दिया था।

मद्रास का पता लिखना।

प्यार।

तुम्हारा
रामविलास

बांदा (उ० प्र०)
PIN 210001,
24-10-85

प्रिय डाक्टर,

—२२/१० का पत्र आज अभी १ बजे दिन को मिला। पा कर हिम्मत बंधी। बहुत घबड़ा रहा हूं। वैसे धैर्य धारण करने में कोई कमी नही आने देता। पर बार-बार हिल-हिल जाता हू। न इन्हें मधुमेह है—न रक्तचाप। वही fracture है। मैं यहां से खजुराहो वाइफ को ऐम्बुलेस मे ले जाऊगा। वहा से प्लेन से दिल्ली होता हुआ मद्रास जाऊगा। जल्दी ही। यह सब एक हफ्ते मे होने की सम्भावना है। वहा नर्सिग होम मे भरती रहूंगा। आज बेटे का तार भी आया है। वहा से, वापस पहुच कर, भेजा है कि मा को ले कर जल्दी आऊं। आज ही यहा से हरीशरण लाल त्रिवेदी खजुराहो होते मद्रास गये है। फिर वहां से वापस आयेंगे। प्लेन का प्रबध करेंगे। पता है—

द्वारा अशोक
19, थिरुमूर्थी स्ट्रीट
'टी' नगर
मद्रास 17

सस्नेह
केदार

सी-३५८, विकासपुरी,
नयी दिल्ली-११००१८
७-११-८५

प्रिय केदार,

आज शाम को हम मॉस्को रेडियो सुन रहे थे। परेड, भाषण, गाने इत्यादि। गर्बाचोव के आने के बाद सोवियत संघ के साम्राज्य विरोधी स्वर मे कुछ तेज़ी आई है। तुम अब तक मद्रास पहुंच गये हो गे। मधुमेह और रक्तचाप से मुक्त है, यह बहुत अच्छा समाचार है। प्लास्टर से कष्ट होता है पर आजकल के मौसम मे कुछ कम हो गा। गर्मियों मे खुजली-सी होने लगती है। प्लास्टर तो कुछ समय बाद कट जाये गा। उसके बाद वह बेटा बहू के पास ही रहे तो अच्छा है। दरअसल एक आदमी तुम्हारी देखभाल के लिए चाहिए। बुढ़ापे मे दूसरे की देखभाल करना बहुत कठिन होता है।

अब स्थिति कैसी है। संक्षेप में दो लाइन लिख कर भेज देना।

तुम्हारा
रामविलास

मद्रास
Dt 14-11-85
8 Am.
प्रिय डाक्टर,

७-११-८५ का पत्र ६/११ को यहां मिला जब उसी दिन मै बेटे के घर पहुंचा। ७-११ को बांदा से दोपहर को ट्रेन से चला—शाम झांसी पहुचा— वहां से रात ३ बजे G. T. के first class से हम लोग मद्रास को चले। कूपे २ ही व्यक्तियों का मिला। उसी में घुसे। जैसे-तैसे ६/११ को सबेरे मद्रास पहुंच [पहुचे] —बेटा मोटर व ऐम्बुलेंस ले कर स्टेशन आया था। Wife को सीधे विजय नर्सिंग होम ले गया। हम लोग घर गये। फिर उसी दिन बाद को वहा गये। अभी परीक्षण चल रहा है। मैं वही से पत्र लिख रहा हूं। बुखार था। अभी नार्मल है। देखो क्या होता है? बेटा रात को ऊटी शूटिंग में गया।

क्या कहूं डियर, क्या होगा। सब कुछ अज्ञात है।
मै अपने को सम्हाले हू। फिर आगे की नही जानता।

पत्र देना।
सबको यथायोग्य।
सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

न्यू जी-३३, हैदराबाद
B. H. U. वाराणसी
२४-११-८५

प्रिय केदार,

तुम्हारा १४/११ का पत्र मुझे दिल्ली में मिल गया था। मैं यहा २१ को आया। मझली लड़की सेवा नवंबर १६८१ में पति के साथ स्कूटर पर जाते समय अचानक बिजली चली जाने से खंभात (गुजरात) में एक गांव के पास एक नाले में गिर कर डूबते-डूबते बची थी। पैर की हड्डी टूट गयी थी। दो-तीन बार आपरेशन हुआ। पैर ठीक नही हुआ। नागपुर मे डा० मरवाह बड़े अच्छे सर्जन हैं। पिछला आपरेशन उन्होने किया था। उन्हें पैर दिखाने नागपुर गयी थी। दिवाली की लंबी छुट्टियों में भाई से मिलने यहां आ गयी थी। हम भी आ गये। कल पति के साथ खभात जा रही है। मैं यहां होली तक रहूं गा। इस लड़की को टी. बी. हो चुका है और पोलियो वाले कमजोर पैर की हड्डी टूटी है।

पिछले दिनो मद्रास में वर्षा के समाचारों से बड़ी चिन्ता हो रही थी। तुम्हारे

कार्ड से जाना, कम-से-कम १४ तक वर्षा ने तुम्हें कष्ट नहीं दिया। दिल्ली में शिवकुमार सहाय आये थे। अप्रैल-मई तक पुस्तक निकालें गे। तुम्हारे जन्म दिवस पर कोई आयोजन करना चाहते है। Steinbeck के Grapes of Wrath मे मां : Everyone breaks. It takes a MAN not to रा० वि०

मद्रास
10-12-85

प्रिय डाक्टर,

24/11 का पत्र मिला था। उत्तर क्या देता। उससे बल मिला। पर सकट गहरा रहा है। वह बच नही सकती। बस।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

न्यू जी ३३, हैदराबाद
बी. एच. यू., वाराणसी
२२-१२-८५

प्रिय केदार,

तुम्हारा १०/१२ का कार्ड मिल गया था।

कवि का काम है, दुखियो के आसू पोछना। जब स्वय उसके आसू न थमने हो, तब यह कर्तव्य निबाहना बहुत कठिन होता है। कविता मे मनुष्य को सभालने की अमित शक्ति है। यह शक्ति उसे कवि ही तो देता है। सामान्य जीवन मे सामान्य शक्ति से काम चल जाता है। जब ऊपर से गहरी चोट पडता है, तब विचलित होते हुए भी वह शक्ति के नये स्रोत अपने भीतर खोज लेता है। वह परिवार का है, उसके साथ वह देश का हे। देश का ध्यान उसे टूटने से बचाता है। मै गदर पर पुरानी पुस्तक के लिए एक निबध लिख रहा हू। ह्यू रोज के वाक्य झासी के पठानो पर (ये रानी के अग रक्षक थे) अक्सर पढ़ता हूं—

When driven in they retreated behind their houses, still firing or fighting with their swords in both hands till they were shot or beyooneted struggling even when dying on the around to strike again. A party of them remained in a room off, the stables which was on fire till they were half burnt; their clothes in flames, they rushed out backing at their assailants and gaurding their heads with their shields.

तुम्हारा रामविलास

19 thirumoorthy Street
T, Nagar, Madras-17
7-1-86

प्रिय डाक्टर,

22/12 का पोस्टकार्ड पा कर हिम्मत से परिस्थिति का सामना कर रहा हूं। निश्चय ही देश का ध्यान उसे टूटने से बचाता है। पर यह जानते हुए भी कुछ देर के लिए कभी-कभी धैर्य टूटने लगता है। फिर जल्दी-जल्दी अपनी चेतना को पाने का प्रयास करता हूं और स्वयं जीते हुए अपनी प्रिया प्रियम्वद को जिलाये रखता हूं। उनकी देह तो न रहेगी अवश्य पर चेतना में वह हमेशा जियेगी। यही लड़ाई लड़ रहा हूं। सभी लड़ते है। मैं तो इस लड़ाई में मौत की हार ही देखता हूं।

तुम्हारे उद्धरण की प्राणवत्ता मेरे लिए प्राणप्रदायिनी है।

कब तक वाराणसी वास रहेगा ?

दिल्ली मे मुशी को पत्र नही लिख सका। याद कर लेता हूं।

सस्नेह
केदारनाथ अग्रवाल

न्यू जी ३३, हैदराबाद,
वाराणसी
२३-१-८६

प्रिय केदार,

मुझे ऐसा लगता है कि मनुष्य का जीवन एक झील की तरह है, जन्म और मृत्यु का घेरा सतह के हर बिन्दु मे दिखाई देता है। इस बिन्दु से परिधि तक का विस्तार हमारे हाथ में नहीं है। हमारे कर्मों से यह विस्तार थोड़ा कम ज्यादा भले हो जाये पर उस किनारे तो लगना ही हो गा जहां जीवन (जल) समाप्त हो जाता है। पर इस झील की गहराई हमारे हाथ में है। कवि भाव में डूबता है और पाता है कि वह अथाह जल में है। शेली ने कहा था : There is an infinity of meaning in every great poem (या ऐसा ही कुछ)। यह infinity भले ही निरपेक्ष रूप में अनन्त न हो, पर वह आयु की निर्धारित सीमा से बढ़ कर तो है ही। निराला की वन बेला —['] मस्तक पर लेकर उठी अतल की अतुल वास ['] जिस पार्क में वन बेला खिली थी, उसकी चौहद्दी दिखाई देती थी पर जहां से वह गंध ले कर उठी थी, वह अतल था, गहराई ऊपर के विस्तार से कहीं ज्यादा थी। मनुष्य में यह गहरे डूबने की क्षमता है। चाहे एक क्षण को ही डूबे, वह इतने गहरे

डूबता है कि ऊपर काल प्रवाह बहुत छोटा लगता है। कवि इस तरह मृत्यु को जीतता है। अपने प्रेम के अनुभव को अपने लिए और दूसरों के लिए अमर कर जाता है। पुराने लोग कहते थे : संसार क्षण भगुर है, प्रतिपल सब कुछ बदल रहा है, ['] सब ठाट पड़ा रह जाये गा जब लाद चले गा बंजारा [']। ये लोग जीवन की झील में डूब कर ऊपर उठना न जानते थे। जहां मानव प्रेम है, वहां वैराग्य के लिए गुंजाइश नहीं है। ['] रस विशेष जाना तिन नाहीं। [']

Ecsta y - आपे से बाहर होना, इस तरह का भावावेश आनंद और शोक दोनों के अतिरेक का परिणाम होता है। अनेक कवियों ने आनंद के अतिरेक का ही वर्णन किया है। भवभूति और शेक्सपियर ने शोक ग्रस्त मन की Ecstasy का वर्णन किया। निराला की सजग संज्ञा शून्यता यही शोकवाली Ecstasy है। ['] अवसन्न भी हूं प्रसन्न मैं प्राप्तवर [']। अथवा ['] स्नेह निर्झर बह गया है, रेत जीवन रह गया है [']। भवभूति और शेक्सपियर से निराला में अंतर यह है कि वह शोक मे टूट कर कर्म विमुख नही होते। ['] वह रहा एक मन और राम का जो, न थका [']। यह अथक मन बराबर संघर्ष करता है। जैसे वाल्मीकि ने शोक को श्लोक बना लिया था— ['] शोक: श्लोकत्वमागत: ['] लगभग वैसे ही निराला ने। शोक, प्रेम से अभिन्न रूप में जुड़ा हुआ शोक, कर्म की जबर्दस्त प्रेरणा बन सकता है। जैसे कच्चे लोहे में विषैले रसायन मिला कर इस्पात बनाया जाये, वैसे ही शोक मे गुणात्मक परिवर्तन होने पर वह कर्म की प्रेरक ऊर्जा बन जाता है।

एक पुराने भारतीय दार्शनिक ने कहा था, विचार यदि वस्तुओ के प्रतिबिब मात्र होते तो वृक्षों को प्रतिबिंबित करने वाला ताल बहुत विचारक होता। मनुष्य का चित्त प्रतिबिब ग्रहण करता है, साथ ही उनके आपसी संबंध पहचानता है। प्रतिबिब ग्रहण झील की परिधि की तरह है, विचार क्षमता गहरे डूबने की तरह है। भारत मे कवियों और कथा वाचको ने बहुत संभव असंभव कहानिया गढ़ी। यह एक तरह का चित्त है। दार्शनिकों, वैज्ञानिकों ने ससार को जानने, प्रकृति की शक्तियो को अपने काम में लगाने के अनेक उपाय किये, यह दूसरी तरह का चित्त है। जो है नही, उसकी कल्पना कर के प्रकृति को, जो है उसे, पहचानना मनुष्य की मेधा का चमत्कार है। शून्य की कल्पना, फिर दशमलव पद्धति, उसके आधार पर गणित का विकास, इस गणित के अस्त्र द्वारा भौतिकी का विकास, प्रतिबिब से संतुष्ट न रह कर मनुष्य ने चिंतन के नये उपकरण जुटाये। परमाणु दिखाई नही देता पर इस की कल्पना भारत के दार्शनिकों ने की और वह अनेक विचार पद्धतियों में विद्यमान है। जैसे प्रकृति का सूक्ष्मतम अंश परमाणु है, वैसे ही काल का सूक्ष्मतम अंश क्षण है। प्रकृति तो दिखाई भी देती है किंतु काल ? प्रकृति के संदर्भ में उसकी गति पहचानी जाती है। उस अदृश्य काल की इकाई है क्षण।

जैसे भाव की गहराई है, वैसे ही विचार की गहराई है। दोनो का संबंध कर्म

से है। श्रेष्ठ साहित्य, श्रेष्ठ ज्ञान-विज्ञान काल जयी है। शोक से हम टूटते नहीं हैं, उसका सामना करने के लिए वैराग्य के बदले हम मनुष्य की अप्रतिहत रचनात्मक क्षमता का भरोसा करते है।

तुम्हारा ७/१ का कार्ड मिल गया था। मैं यहां होली तक हूं।

सस्नेह
रामविलास

बड़े दुःख के साथ सूचित करता हूं कि दिनांक २८/१ को सायकाल ६ बज कर १५ मिनट पर मेरी धर्मपत्नी श्रीमती पार्वती देवी अग्रवाल का निधन यहां मद्रास मे हो गया। तेरही ६/२ को है।

केदारनाथ अग्रवाल
19 Thirumoorthy Street
T Nagar
Madras 17

काशी
५-२-८६

प्रिय केदार,

जिस दुखद घटना की आशंका थी, उसकी सूचना मिल गयी। पिछले कुछ वर्षों मे प्रत्येक क्षण तुमने कितने मानसिक क्लेश मे बिताया होगा! पुरुष समर्थ है। बहुत कुछ सह सकता है। उसके लिए पत्नी है, संसार है। पत्नी का ससार उसका पति है। तुम्हे अपना स्नेह दे कर वह तुम्हारी कविता को नयी शक्ति दे गयी, स्वयं उसमे अमर हो गयी। यह क्षति केवल तुम्हारी नही, समस्त हिंदी ससार की है। इस शोक की घड़ी मे तुम्हारे मित्र और प्रशसक, हम सब तुम्हारे साथ है।

तुम्हारा
रामविलास शर्मा

न्यू जी-३३, हैदराबाद,
बी० एच० यू० वाराणसी
२६-२-८६

प्रिय केदार,

कहां हो? कहां रहने का विचार है? अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना। दो पंक्तियों मे अपना समाचार लिख भेजना।

सस्नेह
रामविलास

19 Thirumoorthy Street
T Nagar, Madras 17
4-3-86/11 A. M.

प्रिय डाक्टर,

—२६/२ का तुम्हारा पोस्टकार्ड आज मुझे यहां डाक से मिला। पढने के बाद हा इसी क्षण उत्तर दे रहा हूं। क्योंकि तुम्हे मेरी चिंता सता रही है। स्वाभाविक भी है।

—मै मार्च के अन्त तक ही शायद यहा रहू। मेरी बडी बिटिया आई थी, उसे वापस इलाहाबाद ले जाऊंगा। उसका बेटा यहा २ दिन रह कर चला गया। बिटिया का इलाज चल रहा है। फायदा हो रहा है। इसी से रुका हू। उसका इलाहाबाद जाना जरूरी है। मुझे वापस जाना है तो मेरे ही साथ चली जायेगी। फिर वहा लखनऊ-बांदा-गाजियाबाद और एक दिन को अपने गाव भी जाऊगा।

मैं अपने को सम्हाले तो हूं पर सब कुछ तो मुझ पर ही नही है। महाकाल की कुमति करनी का कोई भरोसा नही कि कब पकड ले जाये। वैसे उन्हे मै हड़-काये रहता हूं। प्रिया प्रियम्वद पार्वती तो प्रेमयोगिनी थी। उनकी मूर्ति बराबर सामने आती है। वह मरी नही। उनका चेतन रूप मेरे दिल मे है। काव्य बन गई है।

सस्नेह
केदार

काशी
१७-३-८६

प्रिय केदार,

तुम्हारा ४/३ का कार्ड मिल गया था। तुमने बेटी के इलाज की बात लिखी है। जो भी बीमारी हो, बिमारी ही तो है, और उससे चिन्ता भी होती है। तुम शायद इलाहाबाद जाओ गे, 'वहा से लखनऊ-बादा-गाजियाबाद और एक दिन को अपने गाव भी···' लखनऊ मे ६-११/४ को प्र० ले० सघ की स्वर्ण जयती है। शायद तुम उसमे शामिल हो सको। यदि तुम उस समारोह के बाद लखनऊ पहुँचो तो सूचित करना। बडे भाई अस्वस्थ है। मध्य अप्रैल मे दिल्ली जाते समय लख-नऊ उतरने का कार्यक्रम बने गा। तुमने लिखा है, 'महाकाल की कुमति करनी का कोई भरोसा नही कि कब पकड़ ले जाये'। साहित्यकार सूरमा है, लडते-लडते खेत रहे, इसी मे उसकी शान है। शरीर अपना धर्म निबाहे गा ही। 'चढ़ कर मेरे जीवन रथ पर, प्रलय चल रहा अपने पथ पर···' प्रसाद।

मैं यहां १५ तक हूं। उसके बाद दिल्ली के पते पर लिखना।

तुम्हारा रा० वि०

बादा
१७-३-८६
प्रिय डाक्टर,

मै 15-3 को 3 A M बजे बादा आ गया। इलाहाबाद न जा सका। आरक्षण न मिल सका।

आशा है कि पत्र बनारस मे ही पा कर मुझे उत्तर दोगे —बादा के पते पर। ठीक ही हू।

चिन्ता न करना।

सस्नेह
केदारनाथ अग्रवाल

काशी
२०-३-८६

प्रिय केदार,

तुम्हारा १७/६ [१७/३] का का कार्ड मिला। उसी दिन मैने तुम्हे मद्रास के पते पर कार्ड डाला था। तुमने लखनऊ जाने की बात लिखी थी। अब यदि वैसा कार्यक्रम बने तो लिखना। मै २० अप्रैल के आसपास लखनऊ पहुँच गा निश्चित दिन विजय दिल्ली से मुझे सूचित करे ग क्यो कि उन्हे इधर आना है। बडे भाई अस्वस्थ है, उन्हे देखने के बाद दिल्ली जाऊ गा।

बादा मे तुम्हारे काफी परिचित और मित्र है। टुनटुनिया और केन हे। धूप तेज होने लगी है पर सबेरे तो घमा जा सकता है। यहा आमो मे खूब बौर आये हैं। इस विश्व विद्यालय मे ये पेड ही अब देखने और बात करने लायक रह गये है।

तुम्हारा
रामविलास

बादा
२५-३-८६
प्रिय डाक्टर,

२०/३ का पोस्टकार्ड मिला।

मैं अभी कही बाहर नही जा रहा। शिथिल हू शरीर मे। पहले इरादा था पर अब त्याग दिया। बडी लडकी को ले कर मद्रास मे बादा आया। इलाहाबाद से दामाद आ कर उन्हे यहा से लिवा ले गये। घर मे हू। खाने पीने का प्रबन्ध

भतीजे कर रहे हैं। इसकी चिन्ता नही है। अकेले तो हूं ही। अभी टहलने नही जाता। मौसम ठीक ही है।

क्या सम्भव है कि बांदा आ जाओ। दिल हलका हो जाये गा। वैसे कहूं [तो] और क्या कहूं। आग्रह है। यहां परिचित तो है पर इससे कुछ नही होता।

वहां मद्रास में सब ठीक है : बेटा व्यस्त है। बहू कुछ अस्वस्थ थी। चारो बेटे पढ़ रहे हैं। याद आती है।

सस्नेह केदार

काशी

१- -८६

प्रिय केदार,

२५/३ का कार्ड मिला।

अपने यात्रा करना अब संभव नही है। नवबर मे विजय यहां छोड़ गये थे, इस महीने अपनी सुविधानुसार ले जाये गे। दिल्ली पहुच कर अजय तिवारी से बात करूं गा। वह इलाहाबाद जाते रहते है। शिवकुमार सहाय और अजय तुम्हारी ७५वीं वर्ष गांठ मनाने की योजना बना रहे थे। उसमे मुझे ले चलने की बात भी हुई थी। संभव है, वैसा कोई आयोजन हो, तो देर सबेर भेंट हो गी।

आज तुम्हारा जन्मदिन है। तुम्हे आज दिन भर याद करूं गा। बहुत-बहुत प्यार के साथ।

तुम्हारा
रामविलास

सी-३५८, विकासपुरी
नयी दिल्ली-१८
२८-४-८६

प्रिय केदार,

लखनऊ होता हुआ मैं यहां आ गया हूं। अमृतलाल नागर पहले से काफी झटके हुए है। आखो से साफ दिखाई नही देता। मैं बिल्कुल पास पहुच गया। फिर भी पहचान न पाये। बोलने में भी कभी-कभी शब्दों का उच्चारण साफ नहीं कर पाते। उनके पुत्र शरद ने बताया कि प्रगतिशील लेखक सघ की स्वर्ण जयती के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने दो लाख रुपये दिये थे। सबसे पहले राजीव गांधी का संदेश पढ़ कर सुनाया गया था। कहां निराला और प्रेमचंद, कहां आज का यह प्रगतिशील लेखक संघ।

सोवियत सघ की २७वी पार्टी काग्रेस मे गोर्बाचोव ने सरकारी तंत्र और पार्टी मे फैले हुए भ्रष्टाचार की तीखी आलोचना की। पहले तो सारे दोष स्तालिन की व्यक्ति पूजा के माथे मढ दिये जाते थे। इस बार उस सहारे की गुजाइश न थी। यह भ्रष्टाचार व्यक्ति पूजा की आलोचना के बाद ही फैला था। रूसी शराब पीना बद कर दे तो यह दूसरी अक्तूबर क्रान्ति हो गी।

तुम्हारा— रामविलास

बांदा १-५-८६/१ बजे दिन।

प्रिय डाक्टर,

२८/४ का पोस्टकार्ड आज अभी मिला।

उत्तर तत्काल दे रहा हूं। यह जान कर दुख दुआ कि भाई जान नागर जी अब शिथिल है। बहुत तो व्यस्त रह कर शरीर तोडते रहे। खैर। मै हमेशा उनकी इस बात मे खिन्न रहता रहा कि वे अपने आप को पुलिस व सरकार के हवाले कर देते रहे। वह और शिवमगल सिह सुमन गोरखपुर मे पुलिस द्वारा अभिनदित हुए थे। समाचार पत्र मे पढा था। हम तो यहा रह कर भी ऐसा नही करते रहे। घेरे भी गये। पर पिंड छुडा लेते रहे। हमे गुन-गौरव गायन से भला क्या लाभ? कविता तो अच्छी न हो जायेगी। सामाजिक प्रतिष्ठा का मोह नही रहा। प्र० ले० मंघ को सरकार ने २ लाख दिये। यही उसकी पहचान के लिए काफी है। सभी तो सरक्षण के बल बूते पर आगे आते और छाती ठोकते है। वे जाने। मै इस बात का कभी कायल नही रहा। गोर्बाचोव के बारे मे विशेष नही जानता। वह कुछ कर गुजरे तब है। शराब तो रूसी छोड नही सकते। क्या जाने क्या होगा।

सस्नेह तु०
केदार

नयी दिल्ली-१८
१३-५-८६

प्रिय केदार,

तुम्हारे १/५ का कार्ड यथासमय मिल गया था। अजय तिवारी के आने का इतजार कर रहा था। परसो भेट हो गई। उनसे मालूम हुआ कि २१ सितबर को इलाहाबाद मे तुम्हारा अभिनदन[1] होगा तुमसे शिवकुमार सहाय ने सहमति प्राप्त कर ली है। हमारे निबध और सकलित कविताओ वाली पुस्तक भी शायद तभी निकले गी। तुम्हे समय मिले तो गोर्बाचोव की २७ वी पार्टी काग्रेस वाली रिपोर्ट

1. 'सम्मान : केदारनाथ अग्रवाल' समारोह बांदा मे हुआ था। [अ० त्रि०]

पढना। इसमे मद्यपान कम करने के अलावा तलाक की दर घटाने की बात भी है। यह शायद पहली रिपोर्ट है जिसमे परिवार को सुदृढ बनाने पर जोर दिया गया है। भ्रष्टाचार फैला —इसका भी स्पष्ट उल्लेख है।

यह भी कहा कि पिछडे हुए देशो पर जितना कर्ज का बोझा बढ़ता है, उतना ही शस्त्र निर्माण पर अमरीकी खर्च बढता है। अर्थात लडाई रोकने के लिए अमरीकियो की सूदखोरी बद करनी होगी। लेकिन अभी यह बात कारगर नारे के रूप मे लोगो के सामने नही आयी।

तुम्हारा रामविलास

बादा (उ० प्र०)
PIN 210001
Dt 17-6-86

प्रिय डाक्टर,

13/5 का पोस्टकार्ड मिल गया था।

अब अजय तिवारी[1] ने तुम्हारी किताब 'मार्क्सवाद और पिछडे हुए समाज' दी। वह कल २ बजे की बस मे वापस इलाहाबाद गये। १४/६ की शाम को आये थे। डा० अशोक त्रिपाठी व श्री शर्मा[2] के साथ। घर पर ही रहे। मेरा अकेलापन टूटा। उन्होने ५-१/२ [साढे पाच] घटे की बातचीत टेप की।

किताब भेज कर तुमने मुझे फिर मौका दिया कि मै अपनी चेतना को विकसित कर सकू। यह होगा ही क्योकि पढूगा और सत्य को ग्रहण करूगा।

वैसे ठीक से हू। पढता रहता हू—कविताए भी लिख लेता हू। और कोई दिक्कत नही है।

अजय कह रहे थे कि तुम दर्शन शास्त्र की कोई किताब लिख रहे हो। यह भी महान कार्य है। सम्पन्न हो। यही कामना है।

गर्मी तो ४८° या ४५° (डिगरी) तक पहुच जाता [जाती] है। कमरे मे हवा खाता रहता हू —इसलिए भीषण गरमी स बचा रहता हू।

और हाल तो अजय से मालुम ही हो जायेगे।

मैने गौर्वाचोव का भाषण पढ़ा था। इस ओर तुमने मेरा ध्यान आकर्षित किया था। सूदखोरी अमरीका बद करने से रहा।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

---

1. अजय—आलोचक अजय तिवारी
2. शर्मा—अजय तिवारी के मित्र विनयशील शर्मा [अ० त्रि०]

नई दिल्ली-१८
२७-६-८६

प्रिय केदार,

तुम्हारा १७/६ का कार्ड यथासमय मिल गया था। मैं अजय तिवारी की राह देख रहा था, आ जायें तब लिखूं पर अभी तक नहीं आये। उन्हें एक कार्ड भी लिखा था, उत्तर नहीं आया। आशंका है, घर में कोई बीमार हो गा। इधर मेरी तीन किताबों के नये संस्करण होने है। इनमें 'नयी कविता और अस्तित्ववाद' की भूमिका में तुम पर और नागार्जुन पर लिखा है। पिछला निबंध लिखते समय 'जो शिलाएं तोड़ते है' संकलन मेरे पास नही था। अब विकास की मंजिलें स्पष्ट हो गयी है १ (१९४४ तक यथार्थवाद का प्रारभिक विकास; २) ४५-४७ का संघर्षों वाला दौर; राजनीति में पैनापन; ३) ४८-५३ में दूसरे दौर की चेतना कायम रहती है; राजनीतिक कवि रूप में नागार्जुन इसी दौर की देन है; प्रयोगवाद की क्षीणधारा। ४) ५४-५६ में तीसरे दौर की धारा तुम्हारी और नागा० की कविता मे प्रवाहित। नयी कविता का प्रसार। ४५ से ५८ तक मूलतः एक ही सघर्षोन्मुख राजनीति है। १९५६ मे विघटनकारी प्रवृत्तियो का उभार। भीष्म साहनी के अनुसार प्रगतिशील कविता —असहाय वेदना की आवाज। साहित्य और राजनीति में फिर संघर्ष के मार्ग पर बढ़ने की जरूरत। तुम पढ़ते हो और कविता भी लिखते हो, जान कर बड़ी तसल्ली हुई।

तुम्हारा—रामविलास

केदारनाथ अग्रवाल
एडवोकेट,

सिविल लाइन्स
बाँदा (उ० प्र०)
PIN 210001
दिनांक २६-७-८६

प्रिय डाक्टर,

—२७/६ के कार्ड का उत्तर मैं नही दे सका। रह गया। भूल गया। आज अजय का पत्र आया तब उत्तर देने बैठा हूं।

—तुम्हारा निर्णय सौ फीसदी सही कि 'साक्षात्कार' का सहयोग न लिया जाये। सहयोग न लेना ही न्याय और विवेक संगत है। इस बारे में चिंतित होने का कोई कारण नहीं है। यही बात मैंन सहाय साहब व डा० अशोक त्रिपाठी से कह दिया था [दी थी]। आज अजय को भी यही लिख दिया हैं।

· 'नयी कविता और अस्तित्ववाद' पुस्तक की भूमिका मे जो तुमने लिखा है उसके जानने की लालसा है। जब छप कर आयेगी तब पढ़ूंगा।

—प्रगतिशील कविता 'असहाय वेदना' की कविता नही है। किसी के कहने मे उसका सारा इतिहास झुठलाया नही जा सकता । प्र० कविता भी तो भीतर-बाहर से झटके झेलती रही है। जिसकी जैसी समझ वैसी उसकी कथनी। सघर्ष उसने निरतर किया है। वही अब भी करना पडेगा। नये लोग नई ऊर्जा से आगे आये - बढे- काम करे।

पढता तो रहता ही हू। लिखता भी हू। पर बुढ़ापे का न्याय है—थक जाता हू। आखो को, ज्यादा रोशनी मे, पढना होता है ।

हा, तुम तो मेरे घर मे ही ठहरोगे। दूसरे सभी लोग डी० ए० वी० कालेज की इमारत मे सुविधा से ठहरेग। कोई दिक्कत न रहेगी। वही उनके आवास और खाने-वगैरह की व्यवस्था है।

सहाय सहाब व डा० अशोक त्रिपाठी वहा जा कर देख आये है । वहा के प्रबधक मेरे परम मित्र है। कष्ट न होगा। २०/६ को कालेज मे अवकाश कर देगे। [illegible]/६ को इतवार है। वहा बडा हाल भी है। मेरे आर्य कन्या पाठशाला मे ठहरने के लिए कमरे ठीक नही है —सुविधा न रहेगी। इसीलिए मैने यह व्यवस्था कराई है।

तुम्ह खाने मे क्या कुछ चाहिए लिखो, मै अपने भतीजो क यैहा बता दूगा। वैसा ही प्रबन्ध होगा। मै भी वही मे खाना मगा कर खाता हू। नाश्ता करता हू। मेरे घर के सामने ही उनका घर है। दूध का प्रबन्ध भी हो जायेगा। नाश्ते etc मे क्या कुछ हो लिखना। सुविधा होगी अगर पहले से मालूम हो जाये। और कोई बात नही है।

आशा है कि कोई-न-कोई नई सृष्टि रच रहे होगे।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

बादा (उ० प्र०)
PIN 210001
६-८-८६

प्रिय डाक्टर,

-५/८ का पत्र आज मिला। मैने तो आशा नही की थी कि तुम उसे पा सकोगे क्योकि अखबार मे ऐसा छपा था कि तुम्हारे क्षेत्र मे दगा-फसाद हो गया है। खैरियत है कि कुछ अनिष्ट नही हुआ। चिन्ता भारी थी। अब चैन की सास ली।

कविता लिखना मुझ जैसे के लिए, वास्तव मे जान लेवा काम होना है। बात ठीक ही है। बुद्धिहीन हूं न। न जाने कैसे संगत मे पड़ कर बिगड गया।

इधर कविता, उधर पत्नी प्रेम फिर ऊपर से मार्क्सवाद। सब मिल कर महा विकट हो गये। पर कट आई है उम्र। बाकी बची भी जैसे-तैसे पार हो जायेगी। डियर, तीनों बड़े महत्व के हैं। इन्होंने मुझे आदमी बनाने में कोई कसर नही छोड़ी। फिर तुम और निराला जी ने और बना दिया। रही-सही कसर पूरी हो गई।

—अकेले रहने का अभ्यस्त हो गया हूं। ट्रांजिस्टर साथ रहता है, साथ देता है। मैं भी जहां-तहां सुई लगाता रहा हूं और तरह-तरह के स्वर और संगीत सुनता रहता हूं। यही मनोरंजन है। वैसे कुछ-न-कुछ पढ़ भी लेता हूं।

— गैस का सिलिन्डर है। मैं जरूर खाऊंगा तुम्हारी बनाई 'बेढ़इयां'। दाल उड़ग [उडद] चलेगी। चाय तो बनाना [बनानी] न पड़ेगी। नौकर बना देगा या भतीजों के घर से आ जायेगी। ३ प्याले चाय ठीक है। पिलायेंगे। पर घूमने न जाने देंगे। घर के बाहर बाड़े के भीतर ही टहल लेना। वैसे तुम्हारी इच्छा। चार दिन रहोगे और उसमें से भी कुछ समय घूमने में निकाल दोगे। दूध तो पिलायेंगे ही। न होने का प्रश्न ही नहीं है। हलवा (आटे का) रहेगा। खीर भी हो जायेगी। बड़े भी मिलेंगे। दूध जलेबी खूब सुविधाजनक है। भाई, मक्खन निकला दूध तो न मिल सकेगा। शक्कर न डालेंगे उसमें।

--मच्छड़ हैं। मसहरी है। वह उत्पात न कर सकेंगे। चैन से सो सकोगे।

—अजय की पत्नी बीमार थीं। पत्र आया था। अब शायद तुम से मिल सके होंगे। कल सहाय और अशोक को आना है। उनसे हाल दिल्ली और इलाहाबाद के मिलेंगे।

--अब तुम्हारे क्षेत्र में शांति होगी। यह झगड़े का दौर अभी बरसों चलेगा।

—मुंशी का पत्र आया था कि वह जाड़े में पधारेंगे। देखते है कि आ पाते हैं कि नही।

—शमशेर बीमार रहे हैं। ऐसा सुना था। पता नहीं चला कि अब कैसे हैं।

— नागार्जुन भी पटना में होंगे। वह भी लटिया आये है। ऐसा मालूम हुआ था। पता नहीं कहां हैं? कैसे हैं?

—'साक्षात्कार' में छप कर ही क्या मेरी कविता अच्छी हो जाती। वहां तो उसका अपना हित ही सधता।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

बांदा। PIN 210001/U. P.
९-८-८६
प्रिय मुंशी,

दिनाक 29/7 का पत्र मिला।

'सचेतक' मिल रहा है। पढ़ता भी हूं। कुछ लिख कर नहीं दे सका।

तुम लिखते तो हो कि बांदा आओगे। देखो। तुम्हारा क्या ठीक ? व्यस्त आदमी ठहरे। फिर दिल्ली छोड़े तब तो !

...ठीक हूं।

पढ़ता हूं। कभी-कभी दो-एक कविताएं लिख लेता हूं।

डाक्टर 16 या 18/9 को बांदा आ रहे हैं। चार दिन को। बड़ा अच्छा रहेगा।

घर में बच्चों वगैरह के क्या हाल है ? सब बड़े चंट हो गये है। खूब लिखते हैं।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

[हाशिये पर] 'सचेतक' के 50 वें अक को हमारी शुभकामनाएं।

बांदा
30-8-86
प्रिय डाक्टर,

—पत्र का उत्तर विलम्ब से। यों ही टलता गया।

—ठीक हूं। अजय के पत्र से पता लगा कि इलाहाबाद से 16/9 को बांदा आ रहे हो। बेहद खुशी हुई।

—रिजर्वेशन 22 या 23/9 को कराया जायेगा। अभी तो समय है।

—पता नही चला कि आखिर कौन-कौन आ रहे है। आयोजन में।

मैंने अजय के मंगाने पर कुछ कविताएं उन्हें भेजी थीं। पता नहीं कि वे पा गये या नहीं। उन्हें भी पोस्टकार्ड लिख रहा हूं।

इलाहाबाद के कोई समाचार नहीं मिले ! काम छपाई का हो ही रहा होगा। मुंशी को भी मैंने उनके पत्र का उत्तर दे दिया था।

सस्नेह तुम्हारा
केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८

प्रिय केदार, ५-६-८६

सबेरे कै बजे सो कर उठते हो ? हम तड़के आ कर दरवाजा खटखटायें गे। 'पता नही चला कि आखिर कौन-कौन आ रहे हैं आयोजन में।' दो आदमी निश्चित रूप से आ रहे हैं। रा० वि० शर्मा और अजय तिवारी। जब तुम बोलो गे तब ये दोनों सुनें गे; जब मैं बोलूं गा तब तुम और अजय सुनो गे। अपने बीच में हम अजय को बोलने न दें गे। 'इलाहाबाद के कोई समाचार नही मिले। काम छपाई का हो ही रहा हो गा'; निश्चित हो रहा हो गा, नहीं तो संकलनकर्ता को जो रुपये दिये हैं, वे डूब न जायें गे ? कोई कवि सम्मेलन है कि कविता न सुनाई और मेहनताना ले कर चल दिये।

हमारे बड़े भाई बांदा के, स्टेशन के पास वाले, डाकखाने में १६२६ में काम करते थे। उनसे दो साल सीनियर श्री शिवप्रसाद गुप्त बाद में गोरखपुर के पोस्ट मास्टर हुए। कोई अता पता ? तुम से अजय की जिरह का कुछ हिस्सा 'नवभारत टाइम्स' में छपा है। तुम पर 'वर्तमान साहित्य' (इलाहाबाद) कुछ सामग्री देगा। आज कल काम में मन नहीं लगता। क्या करें ? रा० वि०

नयी दिल्ली-१८

६-१०-८६

प्रिय केदार,

आगरे में ६ दिन रुकने के बाद हम यहां २८ की रात को आ गये थे। अजय तिवारी ने कमाल किया, अपने सामान के साथ तुम्हारा सामान भी ले आये। दिल्ली मे साथ आये थे, उन्हें मालूम था कि अपने पास कुल एक अदद-सूटकेस है। किताबों का बंडल उनके सामने ही शिवकुमार सहाय ने बांधा था। रामसरूप[1] ने खाट पर सामान रखते समय एक तुम्हारी पोटली भी वहां जमा कर दी। रास्ते में अजय ने कहा, वह उसे मेरा सामान समझ कर उठा लाये थे। वह पोटली उनके पास है, महीने दो महीने में इलाहाबाद होती हुई बांदा पहुंच जाये गी। यहां से चलते समय उन्होंने बताया था, गाड़ी बांदा चार बजे पहुंचती है। लेट होने पर भी गाड़ी तीन बजे पहुंची थी। लौटते में बताया, आगरा सबेरे सात बजे पहुंचती है। सही समय ६ बजे था।

आगरे में हमने अहसान आवारा[2] की कुछ रचनाएं देखी। साफ सुथरी भाषा

1. केदारजी का सेवक। [प्र० त्रि०]
2. उर्दू के अच्छे शायर, गद्य लेखक, शोधकर्त्ता। केदारजी के खैरख्वाह—अवकाश प्राप्त, पोस्टमास्टर बांदा। [प्र० त्रि०]

है। देवनागरी लिपि में इनकी चुनी हुई कविताएं छपें तो अच्छा हो गा। मुझे दर्शनशास्त्र की कुछ पुस्तकें अपने घर से, कुछ राजपूत कालेज से लानी थीं। इसलिए बांदा से साथ आयी अधिकांश पुस्तकें मैं आगरा छोड़ आया।

बांदा की दुख-सुख भरी याद ताजा है और हम फिर अपनी दुनिया में हैं।

प्यार, रामविलास

बांदा (उ. प्र.)
PIN. 210001
21-10-86
रात 8 P.M.

प्रिय डाक्टर,

दिनांक 6-10-86 का पोस्टकार्ड मिला। तुम दिल्ली पहुंच कर फिर काम में लगे। यही होना चाहिए।

उस दिन मैं स्टेशन नहीं जा सकता था। वहां पहुंच कर ट्रेन चलते समय फूट-फूट कर रो पड़ता। सम्हाल न पाता। घर में भी बड़ी कड़ाई से रोके रहा और किवांड़ा बंद करके लेट गया। क्या कहूं। रात भर जागता रहा। ऐसा न होना चाहिए था। पर स्वभाव से विवश हूं। कैसे इस बार ८ दिन रह कर तुमने रेकार्ड तोड़ा और मुझे अपना बनाये रहे। यह चिरस्मरणीय रहेगा।

मेरा हीटर वाला यंत्र[1] मिल गया। अभी बाथरूम में लग नहीं पाया।

लोग याद करते हैं वे गये दिनों की बातें। खूब खुश हैं बांदा के लोग। T.V. को देख-देख कर[2] विभोर है।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

1. यही गीजर था जो अजय तिवारी अपने साथ ले गये थे। [अ० त्रि०]
2. 20-21 सितम्बर 1986 को बांदा में केदारजी का 75वां जन्मदिन 'सम्मान : केदार' के रूप मे मनाया गया था। लखनऊ दूरदर्शन ने इस कार्यक्रम की रिकार्डिग आधे-आधे घंटे की अवधि की 7 कड़ियों में लगातार धारावाहिक रूप में प्रसारित किया था। आलेख और प्रस्तुति श्री कुबेरदत्त की थी। [अ० त्रि०]

नयी दिल्ली-१८
४-११-८६

प्रिय केदार,

कवि और आलोचक में यही फर्क है। तुम किबाड़ें बंद करके लेट गये और रात भर जागते रहे, और हम गाड़ी में बर्थ पर पैर फैलाते ही सो गये और ऐसे सोये कि जब आगरा थोड़ी दूर रह गया, तभी आंख खुली। तुम स्टेशन न आये, यह बहुत अच्छा किया। चलने को होते तो मैं अवश्य मना कर देता। तुम १३-१४ की रात को ढाई बजे स्टेशन आये, यह भी मेरी इच्छा के विरुद्ध हुआ। मैं चाहता हूं कि तुम अपने शरीर और मन को अनावश्यक तनाव और थकान से बराबर बचाते रहो।

हमने तो टी० वी० में कुछ देखा नहीं। सुना है, कई किश्तों में समारोह दिखाया गया गया है। खैर, टी० वी० के बिना ही हम जब चाहते है, मन की सुई बांदा की तरफ घुमा कर सब कुछ देख लेते हैं। आंखे बंद करने की जरूरत भी नही होती। एक ही मुसीबत है कि बार-बार हम खुद को तुम्हारे साथ आंगन में ही बैठा देखते हैं। भोर के समय तुम्हारा आगन—इस से ज़्यादा खूबसूरत जगह दिमाग में नही आती। तुम्हारे साथ जिन जिन को देखा, सब याद आते हे। तुम्हारे साथ उन्हें भी प्यार।

रामविलास

नयी दिल्ली-१८
१५-१२-८६

प्रिय केदार,

आज विजय ने अखबार पढ़ते हुए तुम्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिलने की बात कही तो मैंने छूटते ही कहा—उन्हें तो पहले ही मिल चुका है। पर अकादमी पुरस्कार दो बार मिलता नही। इसलिए मानना पड़ा कि तुम्हे विलंब से, झख मार कर, पुरस्कार दे रहे है। इस पर तुम्हें बधाई तो क्या दें पर वे पुरस्कार को बाध्य हुए, इस पर प्रसन्नता है।

अजय से गाजियाबाद का पता जाना। संभव है, अभी वहीं हो।

मुशी भी संपर्क स्थापित करने के प्रयत्न में हैं। पुत्री और परिवार के सभी लोगों को स्नेह सहित—

रा० वि० शर्मा

बांदा । 30-12-86 / 10-1/4 [सवा दस] बजे दिन ।

प्रिय मुंशी,

मैं 29-12-86 को सबेरे पौने तीन बजे बांदा स्टेशन पर सकुशल पहुंच गया। घर के लोग आ गये थे। रास्ते में यात्रा सुखद रही। कोई कष्ट नहीं हुआ। यहां भी ठंढ है। धूप में बैठा बधाई के पत्रों का उत्तर दे रहा हूं।

डा० शर्मा को फोन कर देना। मेरा यही समाचार बता देना। उन्हें पत्र बाद को लिखूंगा।[1] नमस्कार भी कह देना। विजय से भेंट न हुई वहां गोष्ठी कक्ष में भी।

पत्र तो कभी-कभी लिख दिया करो। राजीव सक्सेना—खगेन्द्र ठाकुर—महादेव साहा भी गोष्ठी में थे। भेंट हुई। अन्य लोग भी मिले। गोष्ठी ठीक ही रही।

अपनी पत्नी से मेरा नमस्कार कहना। बच्चों को भी प्यार देना।

स्वाती का पत्र भी बधाई का आया है। उत्तर दूंगा।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

बांदा/३०-१२-८६/१० = ३५ मिनट प्रातः

प्रिय डाक्टर,

—उस दिन गोष्ठी में भी विजय से भेंट न हो सकी।

—मैं यहां 29-12-86 को सवेरे पहर २ : ४५ बजे स्टेशन बादा पर सकुशल उतरा घर के लोग आ गये थे। कोई कष्ट नही हुआ। यहा भी ठढ है। चिन्ता की बात नही है। सब कुछ पूर्ववत् है। ठीक ठाक है।

बधाइयों के पत्रों + तारों का उत्तर दे रहा हूं। यह तो जानलेवा काम है। करना तो पड़ेगा ही।

१० और ११ को पन्ना में रहना है। यदि कोई आ कर लिवा गया ओ [तो] जाऊंगा [।]

मुंशी को भी अभी पत्र लिख चुका हूं। नागार्जुन को भी।

तुम अपने हर पत्र में अपने घर का पता जरूर लिख दिया करो। फोन नम्बर भी। मेरे भतीजों का फोन नं० 136 है।

सबको यथायोग्य। प्रिय स्वाती का पत्र आया था। उत्तर दूंगा।

सस्नेह तु०

केदार

1. बिना पत्र लिखे चैन नही मिला। ठीक 15 मिनट बाद ही पत्र लिखा। [प्र० त्रि०].

फोन ५३७०३४

सी-३५८, विकासपुरी,
नयी दिल्ली-११००१८
७-१-८७

प्रिय केदार,

तुम्हारा ३१-१२-८६ का कार्ड मिला। तुम सकुशल बांदा पहुंच गये, जान कर प्रसन्नता हुई। वैसे अब तुम्हे किसी को साथ ले कर ही यात्रा करनी चाहिए। पन्ना जाने के बारे से तुमने बिलकुल ठीक लिखा है। 'यदि कोई आ कर लिवा गया तो जाऊ गा।' यह कार्ड शायद वहां से लौटने के बाद तुम्हें मिले गा। कोई लिवाने जरूर आये गा। तुम बधाइयों के पत्रों-तारों का उत्तर दे रहे हो, 'जान लेवा' काम भी सुखद हो सकता है। आखिर तुम्हारे प्रेमियों की संख्या बढ़ रही है कि नहीं? आज एक मित्र ने बताया, तुम्हारे कविता पाठ के आयोजकों को पता न था, इतने श्रोता आयें गे, हाल छोटा पड़ गया। गोष्ठी में विजय से भेंट न हो सकी, खूब रहा। सुनीता[1] मे हमारी भेंट न हो सकी! आज उसका पत्र आया है। मैंने लिखा है, टोनी[2] इधर आयें तो तुम भी साथ आना। एक दिन शिवकुमार सहाय और अजय आये थे। इति

तुम्हारा रामबिलास

बांदा 210001
Dt. 17-2-87
प्रिय डाक्टर,

—कल डाक से 'नयी कविता और अस्तित्ववाद' का नया संस्करण मुझे प्रकाशक का भेजा मिल गया। कल ही मैंने प्राप्ति की सूचना उसे डाक से पोस्टकार्ड लिख कर भेज दी। पढ़ूगा। सरसरी तौर पर पलट गया हूं। लगा कि तुमने सटीक निष्कर्ष निकाले है। खूब जम कर सच की मार मारी है। भाषा का क्या कहना। व्यंग [व्यंग्य] भी है—चुटीला तो है ही। संयत और संयमित है। बधाई देता हू। अभी गौर से पढ़ना शेष है। मुशी का पत्र आया था। उत्तर दे दिया है। मै यहां से 21/2 को कुतुब से रात के [को] चलूगा। 22/2 को दोपहर तक निजामुद्दीन पहुंचूगा—अजय वहा आ जायेगे। India International मे 24/2 की दोपहर तक रहूंगा।[3] फिर तुम सबसे मिलूगा।

और ठीक-ठाक हूं।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

1. केदारजी की सुपुत्री किरणजी की पुत्री। [प्र० वि०]
2. सुनीता के बड़े भाई। [प्र० वि०]
3. सदर्भ—साहित्य अकादमी पुरस्कार लेने जाने का है, जो उन्हे 'अपूर्वा' पर मिला था। [प्र० वि०]

बांदा / 18-4-87/4 बजे शाम

डियर,

मैं आज कुतुब मे सकुशल बांदा. 3-1/2 [साढ़े तीन] बजे सुबह पहुच गया। कोई कष्ट नहीं हुआ। तार यहां 14/4 को ही पांच घटे मे मिल गया था। पंडित जी स्टेशन आ गये थे। सबकी याद आती रहेगी। सबको मेरी नमस्ते। प्रिय चीनू (कवि) को प्यार। मुंशी को भी बता देना। विस्तृत फिर लिखूगा। मद्रास से कोई पत्र नही आया। मेरा पोस्टकार्ड भी अभी तक यहां नहीं आया।

डा० अजय मे संदेश कह दिया था। रेलवे प्लेटफार्म में मौजूद मिले थे। निश्चय ही विजय ने मुझे बहुत impress किया।

सस्नेह
केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८
२२-४-८७

प्रिय केदार,

तुम्हारे जाने के बाद दूसरे दिन विजय, संतोष, चीनू पंतनगर और हल्द्वानी का चक्कर लगाने चले गये। कल तीन बजे लौटे तब चीनू ने तुम्हारा कार्ड दिया। कहा —फाटक के बाहर पड़ा था। हमने फाटक के भीतर की डाक बटोर ली थी पर यह कार्ड शायद हवा से उड़ कर बाहर चला गया था। स्वाति ने बड़े लड़के बिट्टू के बारे में लिखा है : "बिट्टू हिंदी पढ़ते पढ़ते उछल पड़े। एक कविता वह कई दिनों से याद कर रहे हैं —'बसंती हवा'। कवि का नाम आज ही देखा। चिल्लाये — 'अपने नाना जी की कविता'। हम समझे श्री रामविलास शर्मा (कवि) की कविता होगी। बोले—'अरे नाना जी के सबसे अच्छे दोस्त हैं ना, उनकी कविता': बच्चो का यह स्नेह केदार चाचा जी के लिए कैसे इतना पैदा हुआ है, यह ऊपर वाला जाने।"

तुम सकुशल पहुंच गए। तार समय से पहुंच गया—बड़ी प्रसन्नता हुई। तुमने अजय से संदेश कह दिया था पर अजय अभी तक प्रकट नहीं हुए।

'विस्तृत फिर लिखूंगा'—श्रेष्ठ संकल्प है। प्रतीक्षा करूंगा।

सस्नेह
रा० वि० शर्मा

बांदा / PIN 210001
२२-५-८७
प्रिय डाक्टर,

अभी तक मद्रास नहीं जा सका। प्रयत्न कर रहा हूं कि आरक्षण हो जाये तभी जाऊं। झांसी हो कर जाना है। ठीक हूं। आशा है तुम भी परिवार के सदस्यों के साथ स्वस्थ और प्रसन्न होओगे। सबको मेरा नमस्कार।

पटना न गया था। सुना है कि नामवर गये थे। पता नहीं क्या बोले ? खगेन्द्र ने भी कोई सूचना नहीं दी।

—कर्णसिंह ने एक किताब सम्पादित की है तुम पर लोगों के लेखों की। ऐसा मैंने किसी विज्ञापन में पढ़ा है।

दिन भाड़ की तरह भूंज रहे हैं। पर मेरा दफ्तर और कूलर शीतगृह का मजा देते हैं। चिन्ता नहीं है। रामस्वरूप पेड़ पौधे सींचे रहता है। तभी तो बचे हैं। लखनऊ गया था। 'प्रयोजन'[1] पत्रिका का विमोचन था। 'जनयुग' के 17/5 के अंक में विवरण छपा है। ठीक था।

आगरे जाओगे ही चौबे के यहां शादी है न ! बहुत गरमी होगी। मुंशी ने शक्ति संघर्ष में मेरी दो रचनाएं छपा दीं। धन्यवाद देना। पत्र अभी नही लिख सका। लिखूंगा जरूर। उनके घर के सभी सदस्यों को नमस्कार। लखनऊ में बड़े भैया से मिल आया—ठीक थे।

तु० सस्नेह
केदारनाथ अग्रवाल

बांदा (उ. प्र.)
PIN 210001
Dt. 30-5-87
3 : 30 P. M.
प्रिय डाक्टर,

एक पत्र लिख चुका हूं। मिल गया होगा। अब मैं झांसी से तमिलनाडु ट्रेन से 7-6-87 को मद्रास के लिए चलूंगा। सूचित करता हूं कि फिर वहां के पुराने पते : 19 Thirumoorthy Street, T Nagar Madras 17—पर ही पत्र लिखना। अभी तो आगरे शादी में जाओगे। ठीक हूं। आरक्षण मिल गया। बड़ी बात हुई। आशा है तुम सपरिवार सकुशल होओगे। सभी को यथायोग्य। मुंशी

1. उ० प्र०, प्र० ले० सं० की पत्रिका। [प्र० वि०]

को भी बता देना मेरे मद्रास जाने की बात। वह भी ठीक होगे। उनके घर के सभी को मेरी नमस्ते।

विजय मद्रास आये तो मुझसे वहां अवश्य मिले, ऐसा कह देना।

मेरा वही दैनिक कार्यक्रम है। मैं भी बादाम दूध मबेरे लेने लगा हू। घूमने नहीं जाता। घर पर ही मेहनत कर लेता हू।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

सी-३५८, विकासपुरी रात
नयी दिल्ली-११००१८ ६ बजे
७-६-८७

प्रिय केदार,

अभी मुकुल 'सचेतक' दे गये है। मुखपृष्ठ पर 'आयी मा की याद' कविता छपी है। भीतर तुम्हारे आगरा प्रवास से सम्बधित मजी का सस्मरण है। मैंने मुकुल को बता दिया है कि तुम आज मद्रास जा रहे हो। मुक्ति सघर्ष मे तुम्हारी कविताए देखी थी। बादाम पीने लगे हो। बढ़िया बात है। हो सके तो मद्रास मे जारी रखना, न हो सके तो चाय की जगह कॉफी पीना।

मेरे मझले दामाद (सेवा के पति आत्माराम) की रीढ मे एक डिस्क खिसक गयी थी। नस पर दबाव पढने से दाहिने हाथ और पैर मे दर्द रहता था। पैर उठा कर चलने मे कष्ट होता था। पिछले महीने यहा उनका आपरेशन हो गया। कल वह घर आ जाये गे। सेवा अधिकतर अस्पताल मे थी। ५-६ दिन के लिए स्वाति भी बच्चो के साथ यहा थी। विजय अगले दिनो व्यस्त है। आगरा २० को जाये गे। मद्रास आये तो तुम से जरूर मिले गे। कविता सग्रह भूमिका समेत पिछले महीने प्रकाशक को भेज दिया था। सस्नेह रा० वि० शर्मा

19 Thirumoorthy Street
T Nagar, Madras 17

9-6-87

डियर,

बादा से 6/6 को दोपहर की ट्रेन से झासी करीब 8 बजे रात झासी पहुचा। रिश्तेदार के घर ठहरा 3 बजे तक। फिर उनके साथ मोटर मे स्टेशन आया। चार बजे रात ठीक समय से तमिलनाडु न आ कर 5 बजे आयी। प्रथम श्रेणी मे

आरक्षण था। 7/6 को दिन भर और फिर 7 और 8/6 की बीच वाली रात भर यात्री रहा और 8-6 की सुबह लेट करीब 9-1/2 [साढ़े नौ] बजे सुबह पहुंचा। बच्चे आ गये थे। मोटर से घर आया। सब ठीक है, यहां घर में। बादल छाये हैं। आज सुबह मे झर-झरा जाते हैं। कुछ तो राहत है ही।

आगरे पहुंच गये होओगे, जब मेरा यह पत्र दिल्ली पहुंच कर तुम्हारे दरवाजे जमीन पर पड़ा अपनी किस्मत को कोस रहा होगा।

पत्र देना।

पता लिखना।

सबको नमस्कार।

सस्नेह तु०

केदारनाथ अग्रवाल

सी-३५८, विकासपुरी,
नयी दिल्ली-११००१८
११-६-८७

प्रिय केदार,

तुम्हारे ८/६ के कार्ड को दरवाज़े जमीन पर पड़े पड़े एक क्षण भी अपनी किस्मत को कोसना नहीं पड़ा। चीनू डाकिये से ले कर सीधे, दोपहर के एक बजे मुझे दे गये। यात्रा की थकान भूल कर परिवार में खुश हो, यह देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैंने चार दिन पहले जो कार्ड लिखा था, वह अब तक मिला हो गा। बनारस से भुवन आ गये हैं। काफी चहल-पहल है। ये लोग १४ को आगरा जाये गे, हम और विजय २० को। एक हफ्ते में लौट आयें गे।

हम अपना पता लिख रहे है। तुम्हें हर कार्ड में पता लिखने की जरूरत नहीं। हमारी डायरी खोती नहीं है। उसमें तुम्हारा पता लिखा है। थोड़ा पानी यहां भी बरसा है। गर्मी कम हुई है। टी० वी० पर दिल्ली के साथ अब हम मद्रास का तापमान भी देख लेते है।

सप्रेम
रा० वि० शर्मा

मद्रास/23-6-87/10 A.M.

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिल गये। उत्तर जल्दी ही देता पर घर की व्यवस्था में लगा रहा। पानी के अभाव की समस्या रही। टैंकर मंगाया गया। अब जा कर चित्त शांत हुआ।

बेटे की बनायी फिल्म 'कामाग्नि' देखी कल। बढ़िया रही। मनोवैज्ञानिक है। कैसे यथार्थ से मानसिकता प्रभावित हो कर जीवन का संतुलन बिगाड़ देती है। फिर मानवीयता प्रकट हो कर जीवन को दीप्ति प्रदान कर देती है। कभी मौका मिला [मिले] तो देख लेना। मुंशी का 'सचेतक' आया पढ़ गया। खुशी तो हुई ही। आगरे में विवाह सकुशल सम्पन्न हो गया होगा। शोभा[1] की परेशानी मालुम हुई। अब तो वह अपनी पूर्व मनःस्थिति पर आ गई होगी। पति की बीमारी में सुधार हो गया होगा। स्वाती की याद भी अक्सर आती है। खूब खुले दिल से बात करती है। तुम सब लोगों की बहुत-बहुत याद आती है। आत्मीयता पा कर हृदय भाव विभोर हो-हो गया। कहूं तो क्या कहूं। सब को मेरा नमस्कार देना।

यहां तो बेटे के चारों बेटे टी० वी० में समय गंवाते रहते हैं। कहने का असर नहीं होता। केवल घटनाएं होती हैं। बस यही आकर्षित करती है। अब लिफाफा ला कर फिर पत्र लिखूंगा।

सस्नेह तु०
केदार

नयी दिल्ली-१८
२-७-८७

प्रिय केदार,

आगरे में भी पानी का कष्ट था। चौबे ने घर में पंप लगवा लिया था, इसमे समस्या हल हो गयी थी। आगरे से स्वाति भरतपुर लिवा ले गयी। वहां पानी का और भी कष्ट था। जिनके यहां हैन्ड पंप था, उनके यहां से पड़ोसी पानी भर ले जाते थे। एक हफ्ता वहां रहे। कल स्वाति के साथ यहां आये। स्वाति को तुम्हारा २३-६ का कार्ड दिखा दिया था। कल वह वापस जाये गी। सेवा अपने पति के साथ सकुशल बड़ौदा पहुंच गयी है। अभी शायद उसके पति को अपनी छुट्टी बढ़वानी हो गी। तुम लिफाफा ला कर फिर पत्र लिखो गे, इस समाचार से हम पुलकित हो उठे। तुम्हारे पुत्र की फिल्म तुम्हें पसंद आयी, संतोष की बात है। इधर आयी तो जरूर देखें गे। गर्मी अभी काफी है पर बूंदा बांदी शुरू हो गयी है।

सस्नेह रा० वि० शर्मा

1. सेवा। [प्र० सि०]

सी-३५८, विकासपुरी,
नयी दिल्ली-११००१८
२१-७-८७

प्रिय केदार,

चिट्ठी लिखने बैठे कि बिजली गयी। (शाम के छह बजे है)। इससे पहले भोजन कर के लेटने जा रहे थे कि बिजली गयी। जिस कमरे में तुम रहते थे, उसमें दरवाजे के पास सोफा पर लेट गये। गरम हवा आ रही थी पर नीद आ गयी। तीन से साढ़े चार बजे तक सोते रहे। जब उठे तो पखा चल रहा था, फिर भी शरीर पसीने मे भीगा था। सबेरे मुशी आये थे। मालूम हुआ, उनके यहां कल दिन भर बिजली गायब थी। हां, तो अपने कमरे से उठ कर हम उसी सोफे पर आ गये हैं और चिट्ठी आगे बढा रहे है। अखबारों के अनुसार ८. वर्षो में मानसून इतना विलंबित नही हुआ जितना इस बार। जुलाई समाप्त होने को है और हवा मे मई की सी गर्मी है। उधर चीन के उत्तरी और मध्य भागो मे नदियां उफना रही है, पांच सौ मे अधिक जाने जा चुकी है। हजारो सैनिक बचाव कार्य मे लगे है। विज्ञानी लोग एटमी हथियार बनाने के बदले दुनिया मे उचित समय पर मानसून भेजने की व्यवस्था कर दे, बाढ के इलाकों पर जो बादल बरस रहे हो, उन्हे सूखे के इलाकों पर भेज दें तो भारत के लोग ही नही, चीनी भी मल्हारे गाने लगे।

जमीन से चिपके रहने का आइडिया बहुत अच्छा है। पर ध्यान रखना, बरसात के बाद धरती कुछ नम हो गयी हो, वर्ना बदन के जलने का खतरा है। हम आज कल सुकरात पर लिख रहे है। एथेन्स के लोक तंत्र ने उन्हें मृत्युदंड दिया था। मृत्युदंड से २४ साल पहले सुकरात के विरुद्ध नाटक लिखा गया था। सुकरात नास्तिक है, देवताओ का अपमान करता है। नौजवानो को बहकाता है—इस प्रचार के बाद नाटक के अत में लोग उन पर पत्थर फेंकते है और घर मे आग लगा देते है। सुकरात अपने शिष्यो सहित भाग खड़े होते हैं।

धरती गरम हर तरह होती है !

मुंशी को तुम्हारा पत्र पढ़वा दिया था। हमारे कमरे मे इस साल कूलर लगा है। समय कट जाता है। हवा चलती रहे तो बिजली के चले जाने पर भी गर्मी सह ली जाती है। कुबेरदत्त[1] से फोन पर सपर्क नही हुआ। हुआ तो तुम्हारी बात याद रखूं गा। छतरपुर साहित्य अकादमी ने सम्मान के लिए बुलाया है। नहीं जा सकते, न सही। नगद रूप में सम्मान वहीं मँगवा लो। हमारे पोतो में छोटे चिन्मय प्रथम श्रेणी मे पास हो गये है। इनकी माता जी इनका टी० वी० देखना नियत्रित किये रहती हैं। बड़े, तन्मय वैसे ही पढाकू है। टी० वी० चलता रहे, वह अलग

1 कवि। सप्रति . दूरदर्शन केन्द्र, दिल्ली में सहायक केन्द्र, निदेशक। [प्र० वि०]

पढ़ते रहें गे। कोई खास मनपसंद प्रोग्रम [प्रोग्राम] हो, तभी देखते हैं। ३ अगस्त को उनकी यूनिवर्सिटी खुले गी। इनके यहां सैमेस्टर सिस्टम है। सालाना परीक्षा का एक बारगी भार नही पडता। तुम्हारा एक अंग्रेजी में लिखा पत्र हमने बांदा में सुनाया था। उसी शैली में अपनी कविताओ पर बोलो। बढ़िया रहे गा। हम पसीने में लथपथ है। पर चिट्ठी पूरी कर ही दी। और अब घूमने जा रहे है।

सस्नेह रा० वि० शर्मा

सी-३५८, विकासपुरी,
नयी दिल्ली-११००१८
५-८-८७

प्रिय केदार,

तुम्हारा २८/७ का पत्र मिला था। गर्मी जोरो पर थी। बिजली दो दो तीन तीन घंटो को गायब होती रही। कल थोडा पानी बरसा था। आज आसमान साफ है। फिर भी राहत है। तन्मय लंबी छुट्टिया बिताने के बाद तीन दिन हुए, पंतनगर गये। विजय तन्मय को अपना काफी समय देते है। अक्सर उन्हे अपने साथ दफ्तर ले जाते थे। तन्मय ने वहाँ कम्पूटर की सहायता मे कई टरबाइनों के कागज़ पर डिजाइन बनाये और हमें दिखाये। जाने से पहले तन्मय सब लोगों के साथ दो तीन दिन तीसरे पहर वाली सिनेमा देख आये। हम घर पर आराम करते रहे। इस महीने के तीसरे हफ्ते विजय कलकत्ता जाये गे। बंगाल के बिजली बोर्ड की ओर से व्याख्यान के लिए निमंत्रित है। आकाशवाणी के अंतर्गत युववाणी के एक प्रतिनिधि ने विजय के दफ्तर जा कर उनके काम के बारे मे भेट वार्ता रिकार्ड की। चार-पाच दिन हुए, वह प्रसारित हुई थी।

भारत की फौज लंका पहुंच गयी है। दक्षिण एशिया की राजनीति में यह एक नया मोड़ है। लका में पाकिस्तान और इसराईल के जरिये अमरीकियों को घुसपैंठ करने मे कठिनाई हो गी। ईरान की खाड़ी मे बढ़ते हुए तनाव के संदर्भ में इस घटना को देखना चाहिए। वैसे कठिनाइयां भारतीय सेना और भारत सरकार के सामने कम नहीं हैं। तमिल टाइगरों का कहना है, हथियार तो सौंप दें गे पर तमिल राज्य बनाने का लक्ष्य कायम रख गे। एक तरफ तमिल अलगाववाद, दूसरी तरफ भारत विरोधी लंकाई अध राष्ट्रवाद, अमरीकी साम्राज्यवाद के ये दो राजनीतिक अस्त्र है जिन्हें लंका और भारत के कम्युनिस्ट ही विफल कर सकते है।

अजय २३/७ को इधर आने वाले थे। आये नहीं। इलाहाबाद गये थे। लौट आये हों गे, पर अभी भेंट नहीं हुई। २३/७ को इब्बार रब्बी आये थे। अपनी दो

कविता पुस्तकें दे गये थे। मुंशी से जब तब भेंट हो जाती है। भेंट होने पर उन्हें तुम्हारे पत्र पढ़वा देता हूं। इसलिए उन्हें समय पर न लिख पाओ तो चिंता की बात नहीं है। तुम T. V. पर साक्षात्कार दे आये, प्रसन्नता की बात है। दो कालेजों में काव्य पाठ हो गा। कविता पर चर्चा हो गी। बढ़िया। यदि आयोजन हिंदी छात्रों के सामने हो, तो कोई कठिनाई न हो गी। पहले वहां मेरे आगरे के परिचित डा० शंकर राजू नायडू हिंदी विभाग के अध्यक्ष थे। पता नहीं अब भी है या कोई और है। आयोजन हिंदी छात्रों के सामने न हो तो कुछ कविताओ का अनुवाद किसी से तमिल में करा सकते हो, ऐसे ही कविता पर एक वक्तव्य का। पहले हिंदी में कविता पढ़ी, तुरत किसी ने तमिल में अनुवाद सुना दिया। तथैव वक्तव्य। अस्तु। अब समाप्तव्य।

सस्नेह रामविलास

मद्रास/1-9-87

प्रिय डाक्टर,

देर से उत्तर दे रहा हूं। पत्र 7/८ को पा गया था। रोज सोचता था। लिखू पर टलते-टलते अब नौबत आई। लंका के और भारत के संबंध सही और सुदृढ़ होते चले जायें। यही कामना करता हूं। देखो, क्या होता है? आजकल तो टीचर्स की हड़ताल चल रही है—पकड-धकड़ हो रही है। गोष्ठी हुई अनुशीलन सस्था की ओर से [थी]। ठीक रहा सब। काव्य पाठ तो था ही। कविता पर चर्चा भी हुई। खुराना सा० ने पुस्तक भेंट की। कवियित्री [कवयित्री] डा० वसंता ने भी अपनी पुस्तक दी। नायडू सा० रिटायर हो चुके है। ऐसा पता चला। मै गाजियाबाद पहुंच रहा हूं। सितम्बर के पहले पखवारे मे। किरन के घर चोरी हो गई है। अब वह है और उसकी पुत्री बेबी है। टोनी कलकत्ते नौकरी में गये। वहा रह कर फिर भेंट करूगा। फिर बादा जाऊंगा। मैं हमेशा तो गाजियाबाद नही रह सकता —न मद्रास मे। विजय-चिन्मय व सब परिवार के सदस्यों को मेरी नमस्ते। शुभकामनाएं।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८
६-९-८७

प्रिय केदार,

१/९ का कार्ड मिला।

सितबर के पहले पखवारे में इधर आ रहे हो। जल्दी ही भेंट हो गी। मैं

१५-२० अक्तूबर तक यहां हूं। फिर बनारस जाऊं गा।

३१/८ को लखनऊ में बड़े भैया का निधन हो गया। तीन चार साल की उम्र से ले कर अब तक जीवन में सब से दीर्घकालीन संपर्क उन्हीं से रहा। लखनऊ से मैं कल लौटा।

दिवाली से कुछ पहले बनारस जाऊ गा, होली तक रहूं गा। तुम्हारा
रामविलास

मद्रास/12-9-87

प्रिय डाक्टर,

—पत्र मिला। बड़े भैया के निधन का समाचार जान कर शोक-संताप हुआ। उनसे लखनऊ मे इस बार मिल आया था। यह अच्छा हुआ। वरना उनसे न मिलने की कलक बनी रहती।

—2/9 को विजय आये थे। पुस्तक और फोटो दे गये थे। किताब पढ़ी। इसके लेख तो पहले भी पत्रिकाओ में पढ़ चुका था। अच्छा हुआ कि अब कर्ण-सिह[1] ने एक जगह संग्रहीत [सगृहीत] कर दिये।

मै यहां से तामिलनाड से रात को 22/9 को नई दिल्ली के लिए चलूगा। AC 2 Tier में आरक्षण हो गया। वहां से गाजियाबाद जाऊंगा। चिन्ता न करना भेट अवश्य करने आऊगा। कुछ दिन बेटी के घर रह कर बादा जाऊंगा। ऐसा विचार है।

आशा है कि सपरिवार सकुशल होओगे। मुशी के घर के सभी लोगों को भी याद करता हू। तुम सब को नमस्कार। सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

सी-३५८, विकासपुरी,
नयी दिल्ली-११००१८
२१-६-८७

प्रिय केदार,

१२/६ का कार्ड यथासमय मिल गया था।

तीन चार दिन हुए अजय आये थे। उन्‌हें तुम्हारा कार्ड दिखा दिया था। इधर वह पत्नी की बीमारी से परेशान थे। अध्यापकों की हड़ताल में भी व्यस्त थे।

---

1. डॉ० कर्ण सिह चौहान : प्रगतिशील समीक्षक। [प्र० त्रि०]

भोपाल के अखिल भारतीय जनवादी लेखक सम्मेलन में गये थे। शायद अब तक लौट आये हों।

विजय एक हफ्ते को कश्मीर गये थे। एक हफ्ते बाद जर्मनी-आस्ट्रिया जाने को हैं। वहां गे लौटने के बाद १९-२० अक्तूबर तक हम सब बनारस जायें गे।

शेष कुशल। सस्नेह

रा० वि० शर्मा

गाजियाबाद

12-10-87

प्रिय डाक्टर,

आज अभी तुम्हारा 21/9 का पोस्टकार्ड मद्रास से यहां आया।

उस दिन लगभग 6-1/2 [साढ़े छः] बजे शाम बस मिली और 7-1/2 [साढ़े सात] बजे घर पहुचा। बेबी साथ थी। इस बार न जाने क्यों घर पहुच कर थकान और कमजोरी मालुम हुई। आराम कर रहा हूं। अब 20/10 [को जाने] की सोच रहा हू। भरसक प्रयास करूंगा कि एक बार और मिल लू। फिर कभी मिलना हो सके या न हो सके। यहा घर में सब ठीक है। बूंदियां आज भी खाई—कल भी खाई। मुझे बेहद पसन्द आई। उस दिन खूब मजा आया। तुम भी खूब प्रसन्न दिखे। यही चाहिए। बनारस से तो पत्र बांदा भेजोगे ही। चि० चीनू व घर के सभी लोगों को मेरा नमस्कार। मुशी-मुकुल-धन्नो जी को भी नमस्कार कहना।

सस्नेह तु०

केदार

न्यू जी ३३, हैदराबाद

बी० एच० यू० वाराणसी

२८.१०.८७

प्रिय केदार,

अब तक बादा पहुंच गये हो गे और यथारीति सबेरे उठ कर झाड़ पोंछ में लग जाते हो गे। हम लोग यहां २१ को आ गये थे। दिवाली पर काफी हल्ला गुल्ला रहा। एक दिन बाद कानपुर से शोभा सुरेश भी बच्चों के साथ आ गये थे। २६ तक सब यथास्थान गये। यहां के पुस्तकालय में हमारे काम की काफी सामग्री है। उसका उपयोग करना शुरू कर दिया है। घूमने के लिए यह स्थान बहुत अच्छा है। चाय पीना हमने फिर शुरू कर दिया है।

शेष कुशल। सस्नेह रामविलास

बांदा
2-11-87
प्रिय डाक्टर,

मुझे अजय गाजियाबाद से अपने घर लाये। मैंने वहां से टैक्सी ले कर उनके साथ यात्रा की। शाम पहुंच गया था। रात भर और दूसरे दिन ३-१/२ [साढ़े तीन] बजे तक रह कर फिर टैक्सी से निजामुद्दीन उनके व उनके पिता श्री के साथ पहुचा। यहां ४ बजे शाम आरक्षित स्थान पर कब्जा मिला, यानी 23-10-87 को। और फिर तो कुतुब गाड़ी सरसराती ऐसी उमंग से चली कि ३ बजे सुबह से पहले, बांदा स्टेशन पहुंच गई। तार तो दे चुका था पर वह बांदा समय से न मिला था इससे कोई भी स्टेशन न आया और मुझे कुली करके रिक्सा [रिक्शा] करना पड़ा और अपने घर के फाटक पर ठक-ठका कर आवाज लगानी पड़ी। वह खुला और मैं सकुशल बिना कष्ट-श्रम के, घर पा गया। तब से यानी २४/१० से वही कार्यक्रम चालू है। तमने ठीक ही लिखा है कि पुस्तकें झाड़ने-पोंछने मे लगा रहता होऊगा। यह तो बिला नागा वाला क्रम है। ठीक हूं। सभी कुछ ठीक है। अब यही रहूंगा पर्याप्त दिनों तक। दिवाली तो गाजियाबाद में ही पड़ी थी। घूमो-चाग पियो घोखो और सोना खोद कर दो। परन्तु ऐसा न हो कि इतने गहरे डूबो कि हमारी याद ही न रहे। बहुत-बहुत सनेह सहित। केदारनाथ अग्रवाल

न्यू जी ३३, हैदराबाद, बी० एच० यू०
वाराणसी-१२-११-८७

प्रिय केदार,

तुम्हारा २/११ का कार्ड एक हफ्ते बाद यहां मुझे मिल गया। गाजियाबाद से दिल्ली, दिल्ली से निजामुद्दीन, वहां से बांदा—ये यात्राएं तो सुखद रही, कष्टकारक रही बांदा स्टेशन से उसके पिछवाड़े तुम्हारे घर तक की यात्रा। कुली, रिक्शा, फिर तीन बजे रात को फाटक ठकठका कर आवाज लगाना। खैर, तुम सकुशल घर पहुंच गये। बांदा तुम्हें बहुत प्रिय है, सारा यात्रा कष्ट भूल गये; झाडने पोंछने का काम आलोचक का है, पर तुम कवि होने साथ वकील भी हो, इसलिए उचित है। वैसे यह बीमारी आचार्य महावीर प्रसाद द्वि० को भी थी। यहां पडोस में एक अंध संस्कृत अध्यापक है, ३५-४० के हों गे, उनसे साहित्य पर चर्चा होती है। एक बंसल परिवार है। उनसे इतिहास और Technology पर बाते होती है।

अपना काम ठीक चल रहा है।

सस्नेह—रामविलास

बांदा
१७-११-८७
प्रिय डाक्टर,

12-11 का पोस्टकार्ड मिला।

श्री वीरेन्द्र यादव ने (सी० 855 इंदिरा नगर, लखनऊ, 226016 से) लिखा है कि मैं तुम्हारी 12-15 कविताएं (अपनी पसंद की) 'प्रयोजन' पत्रिका के लिए भेज दूं। 'रूपतरंग' तो है मेरे पास। मैंने आज ही लिखा है कि वह स्वयं तुम्हारे ऊपर के पते पर इसके लिए लिखें—मैं न दे सकूंगा। वह 'प्रयोजन' के एक अंक को तुम पर केंद्रित करना चाहते हैं।

मैं 26/11 को कुतुब से दिल्ली जा रहा हूं। वहां साहित्य अकादमी के उस आयोजन में दिनांक २८/11 को (5-1/2 [साढ़े पाँच] PM) सम्मिलित होना है। बच्चन का जन्म-दिन मनाया जा रहा है। बच्चन ने मुझे बुलवाने को कहा था। जाना पड़ रहा है। आरक्षण करा लिया है।

विकासपुरी में सब ठीक होगा। शायद ही मैं वहां इस बार जा सकू।

सबको यथायोग्य। परिवार के सदस्यों को और तुम्हारे पास के लोगो को।

सस्नेह तु०
केदार

न्यू जी ३३, हैदराबाद
बी० एच० यू० वाराणसी
२९-११-८७

प्रिय केदार,

१३/११ का कार्ड यथासमय मिल गया था। टी० वी० मे बच्चन वाले कार्यक्रम में तुम्हारी एक झलक देखी थी। 'प्रयोजन' के वीरेन्द्र यादव ने 'रूपतरंग' से कविताएं उद्धृत करने के लिए अनुमति मांगी थी। वह मैंने उन्हें भेज दी है। अजय तिवारी को तुम्हारे कार्यक्रम के बारे में जानकारी थी। अवश्य मिले हों गे। जब तक यह कार्ड बांदा पहुंचे गा, तब तक तुम दिल्ली से लौट आये हो गे। मार्क्स और एंगेल्स के लेखों आदि का एक संकलन ब्रिटेन पर है। यहां वैसा ही एक संकलन अमरीका पर मिल गया। पहले वे अमरीका को बहुत प्रगतिशील राष्ट्र मानते थे, बाद को उसके हिंसक दमनकारी रूप का बहुत अच्छा विश्लेषण किया। इसका उपयोग अपनी एक पुस्तिका के लिए करूं गा।

सस्नेह
रा० वि०

बांदा
५-१२-८७
प्रिय डाक्टर,

—आज सबेरे 3 बजे यहां सकुशल आ गया। अजय वहा आते रहे। स्टेशन भी आये। ठीक है। वहा का कार्यक्रम ठीक ही रहा। राजन के घर की गोष्ठी में प्रिय विजय भी आये रहे। बड़ी खुशी हुई। वह सकुशल है। प्रसन्न थे।

अच्छा हुआ कि तुमने यादव को अनुमति दे दी।

खूब जम कर लिखो—हमे भी पढ़ने को मिले गा।

बच्चन कमजोर है। पर गोष्ठी मे भी अपने आप सपत्नीक आये थे। तेजी जी ने उनकी कविताए सुनाई। एक गीत भी सस्वर सुनाया। नामवर भी —केदारनाथ सिह भी —कन्हैयालाल नन्दन —रमानाथ अवस्थी भी आये रहे। मैने भी नई कविताएं सुनाईं। बेटी के पास न जा सका।

मेरा जाना जरूरी था। न जाता तो बच्चन को दुख होता।

सस्नेह तु०
केदार

बादा
६-१२-८७
प्रिय डाक्टर,

आज रेडियो से समाचार मिला कि तुम्हे D. Lit. की मानद उपाधि से विभूषित किया गया है। सच तो होगा ही। हार्दिक बधाई लो। एक पत्र परसो लिख चुका था। मिला होगा।

—सब को यथायोग्य।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

न्यू जी ३३, हैदराबाद
बी० एच० यू०, काशी
१७-१२-८७

प्रिय केदार,

५ और ६ दिसंबर के दोनो कार्ड मिले। दिल्ली हो आये, अच्छा किया। बच्चन ८० के हुए। पहले से कमजोर होंगे ही। राजन जी के यहाँ की गोष्ठी का समाचार विजय और अजय के पत्रो से मिला था। साहित्य अकादमी वाले समारोह के

टी० वी० प्रदर्शन में एक झलक तुम्हारी भी मिली थी। डी० लिट्० वाला समाचार सही है। यात्रा कष्ट से बचने के लिए नहीं गया। चौबे ने सूचना दी है, कुछ अखबारों ने छापा है कि मैं बीमार हूं, इसलिए नही जा सका।

आज सबेरे घनघोर कुहरा था। और दिन मैं ६ बजे घूमने जाता था आज ७ बजे गया। आम के पत्ते, पीपल के पत्ते, बरगद के पत्ते, सबमे ओस की बूदें टपकने का स्टाइल अलग-अलग था। कल भुवन ने दिखाया, दिन के तीन बजे भी गोभी के पत्तों पर ओस की बूदें ठहरी हुई थीं। सस्नेह रामविलास

बांदा
27-11-87
210001

प्रिय डाक्टर,

—7/12[1] का पत्र मिला। वहा बच्चन जी पहले से कमजोर है। पर अभी बात करने में कोई कष्ट नही होता। आवाज साफ है। वैसे वह ठीक-ठाक हैं शरीर मे। क्षीण तो हो ही रहे है। आंखों को मैने देखा। देख कर कुछ चिन्ता हुई। हो सकता है कि मेरा भ्रम हो। पुतलियों की चमक कम लगी थी।

—विजय के आ जाने से मुझे बहुत खुशी हुई थी।

मेरे प्रकाशक ने Nova T. V. Portable भेज दिया है। मैने कहा था जब वह और डा० अशोक 'आत्मगंध' की पांडुलिपि लेने आये थे। दो दिन रहे थे। अच्छा है। एकाकीपन टूटता है। वैसे मैं तो 9 बजे रात तक सो जाता हू। शरीर चल रहा है। खींचे रहता हूं अपनी गाड़ी। पाडुलिपि ले गये। भूमिका भी आज भेज रहा हूं। लम्बी नही, न छोटी, सिर्फ माकूल।

—मै तो घूमने नही जाता। पहले ही कारण बता चुका हू। घर के सामने ही चहलकदमी कर लेता हूं। कभी कभी स्टेशन के बाहर, लल्ला के मेडिकल स्टोर मे दोपहर को चला जाता हूं।

—और यहा के लोग - मित्रगण भी ठीक है।

नागरी प्रचारक पुस्तकालय में आज कार्यक्रम है। कल भी था। मैं न कल गया। न आज जाऊंगा। कुछ ठोस तो होता नही।

आशा है दिल्ली में घर मे— सब ठीक-ठाक होगा। सबको नव वर्ष की शुभकामनाए।

यहा भी ओस देर तक पेड़ों पर चमकती रहती है। सस्नेह तु०
केदार

1. सही तिथि 17/12 है। [स० वि०]

न्यू जी ३३, हैदराबाद
काशी ८-१-८८

प्रिय केदार,

तुम्हारा २६/१२ का कार्ड मिल गया था। एक दिन टी० वी० पर शमशेर और त्रिलोचन को देखा। शमशेर काफी कमजोर लगे। उन पर शोध करने वाली महिला उन्हें चम्मच से खाना खिला रही थी। तुम्हारे प्रकाशक ने तुम्हारे लिए टी० वी० की व्यवस्था कर दी। बहुत अच्छा हुआ। टी० वी० में जो कुछ तुम देखो गे, उससे तो एकाकीपन टूटे गा ही, कुछ लोग टी० वी० देखने जरूर आयें गे। वे भी एकाकीपन तोड़ें गे। तुम्हारी कविताओ की पाण्डुलिपि इलाहाबाद के लोग ले गये और भूमिका भी तैयार हो गयी, यह जान कर बड़ी प्रसन्नता हुई।

विजय, संतोष, तन्मय, चिन्मय यहा पहली जनवरी को कलकत्ता, पुरी घूमते हुए आये थे। चार को वापस गये। गाडी उस दिन चार घंटे लेट थी, आधी रात को दिल्ली पहुंचे हो गे। यहा विश्व विद्यालय के शिव मंदिर मे बाहर के बहुत दर्शनार्थी, बसों मे, बैलगाड़ियो में आते है। रात को जमीन पर रजाई ओढ कर सो जाते है। ईंटो के चूल्हे बना कर खाना पकाते है। आस पास सड़क किनारे हाजत रफा करते है।

तुम्हारा
रामविलास

बांदा
PIN 210001
Dt. 22-1-88

प्रिय डाक्टर,

—8/1 का पत्र मिला।

—शमशेर का जो प्रोग्राम T. V. मे आया था वह मैने भी देखा था। पर लोगों ने जो कुछ कहा वह समझ में नही आया था। वह कमजोर तो है ही।

—अपने नये आये T. V. से थोडा मन बहलाव हो जाता है। मै तो देर रात तक जागता नही इससे देर रात के प्रोग्राम नही देख पाता।

—मेरे यहा T. V. देखने वालो के आने का प्रश्न ही नही उठता। एक तो भतीजो के सामने घर में भी है। बच्चे वहां देख लेते मैं। मेरे पास अन्य लोगो के आने की बात ही नहीं है।

—डा० अशोक त्रिपाठी ने सूचित किया था कि पुस्तक कम्पोज हो रही है। शायद अब तक छपने भी लगी हो। फरवरी के पुस्तक मेले में प्रकाशक इस पुस्तक को दिल्ली ले ही जायेगे, ऐसी सम्भावना है।

—दिल्ली के T. V. से काव्य गोष्ठी का प्रोग्राम relay हुआ था। देखा ही होगा।

—शिव मंदिर का विवरण वैसा ही है जैसे यहां मुअक्किलों का होता है।

—हां, 6/3 से 12/3 तक मुझे इलाहाबाद में रहना पड़ेगा। मेरे दामाद के बेटे का वहा ब्याह है। बुलाया है। जाना ही पड़ेगा। शायद मद्रास से वे लोग भी आयें।

सस्नेह केदार

काशी

१९-२-८८

प्रिय केदार,

कल दिल्ली चलने की तैयार [तैयारी] कर ली थी पर गाड़ियों की अव्यवस्था को देखते रुक गये। अब मई तक हम यहीं है।

सस्नेह

रा० वि० शर्मा

आजकल त्रिलोचन यहीं हैं।

रा० वि०

केदार नाथ अग्रवाल
एडवोकेट,

सिविल लाइन्स,
PIN 210001 बांदा (उ० प्र०)
दिनांक २४-२-८८

प्रिय डाक्टर,

कई दिनों से इन्तजार में रहा कि तुम्हारा पत्र आये। आज आ ही गया। छोटा है तो [भी] कोई बात नही है। उसको सामने पा कर मैंने तुम्हें सशरीर देख लिया और पा लिया। लेकिन मेरे बोलने पर भी चुप ही बने रहे। अब पत्र लिख कर बोलोगे ही।

—इधर त्रिलोचन-वाचस्पति और अवधेश[1] आये थे। ५ घंटे रहे। बस से चले गये। कोई विशेष बात न हो सकी। तुमसे जरूर बतकही हुई होगी। वह यानी त्रिलोचन काशी में हैं सो सम्भावना है कि चर्चाएं होती ही होंगी।

—मेरे प्रकाशक ने 'आत्मगंध' की एक प्रति दिल्ली जाते समय भेज दी थी। पता नहीं कि तुम्हें अभी तक मिली या नहीं? लिखूंगा कि भेजें। अभी तो इन्दौर

---

1. श्री अवधेश प्रधान, ब० हि० विश्वविद्यालय मे हिन्दी प्राध्यापक—लेखक। [रा० वि०]

और फिर हैदराबाद जायेंगे।

—अब मौसम बसन्ती हुआ है। आंगन में गेंदे खूब फूले हैं। ऊंची बोगन बेलिया लाल हुई लहलहा रही है - झूम रही है। सूरज धूप देते-देते थक जाता है और चला जाता है।

—मैं मार्च के दूसरे सप्ताह में इलाहाबाद में रहूंगा। वहां शादी है। ५-७ दिन रहना पड़ेगा।

—ऊपर की डाढ़ें (6) उखड़वा दी है। नीचे की एक ओर वाली बची हैं। पहले से कमजोर हुआ हूं। दवा खा रहा हूं कि घाव भर जाये - दर्द न हो। दाल-दरिया चलना है। रात दूध व डबल रोटी व उबाला सेब खाता हूं।

—यह 'समकालीन कविता' क्या है? बड़ी चर्चाएं सुन पड़ती हैं?

—दिल्ली में व काशी में परिवार के सभी लोग स्वस्थ और प्रसन्न होगे।

—पुस्तक पूरी लिख चुके होओगे।

-कल T V. में गिरजा कुमार माथुर और तीन लोगों मे काव्य चर्चा चल रही थी। साफ-साफ बातें उभर कर नही आ पातीं। हो सकता है कि मैं न समझ पाया होऊं। उत्तर देना।

सस्नेह तु०
कदारनाथ अग्रवाल

न्यू जी ३३, हैदराबाद,
बी० एच० यू० काशी-२२१००५
२६-२-८८

प्रिय केदार,

विजय के पत्र से मालूम हुआ, हमने तुम्हें एक कार्ड अपने दिल्ली के पते पर भेजा था। नाम तुम्हारा, पता हमारा। उपचेतन का खेल। वह कार्ड उन्होंने लिफाफे में रख कर तुम्हारे पास भेज दिया है। पांच-छह दिन त्रिलोचन पड़ोस में रहे। कल सागर गये। काशीनाथ सिंह[1] ने उन्हें व्याख्यानों के लिए बुलाया था।

वैसे मेरा कार्यक्रम यहां आधी मई तक रुकने का है। इस में कोई परिवर्तन हुआ तो सूचित करूं गा। आमों की पुरानी पत्तियां गिर रही है और बौर भी आने लगे हैं। शेष कुशल।

सस्नेह रा० वि० शर्मा

1. कथाकार, बनारस विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक। [प्र० त्रि०]

न्यू जी ३३, हैदराबाद
बी० एच० यू० वाराणसी-२२१००५
१५-३-८८

प्रिय केदार,

आज भारत बंद है। डाक बंटी है। इसका मतलब है, यह पत्र भी समय से निकल जाये गा। रेडियो मे सुना, बंगाल, केरल, कर्णाटक में बंद भरपूर है। अन्य स्थानों में थोडा बहुत। बंगाल से चलने वाली लंबे फासले की गाड़ियाँ निरस्त कर दी गयी हैं। कल जो चली थी वे कुछ विलंब से यहां पहुँच रही है। ऐसी एक गाड़ी से मेरी भतीजी के पति कलकत्ते से अभी —दोपहर के दो बजे—आये है। दिल्ली में रहते है, कृषि विशेषज्ञ हैं। यहां आनुवंशिकी पर विश्व विद्यालय मे उनका भाषण है। याद नहीं तुम्हें लिखा था या नही, वाचस्पति ने टेप में तुम्हारी बातचीत सुनायी थी। उन्होंने यह समाचार बड़ी प्रसन्नता से सुनाया कि त्रिलोचन उस बातचीत के दौरान चुप ही रहे। सुना है, निकट भविष्य में फिर इधर आने को हैं, हा मुझ मे बहुत बातें हुई। अधिकतर शब्दों की चर्चा करते रहे। वह जम कर काम नही कर पाते, नही तो बहुत कुछ कर चुके होते। इस बार काव्य चर्चा कम हुई। 'आत्मगंध' की प्रति मुझे नही मिली। आगे-पीछे मिल ही जाये गी। अजय तिवारी इस समय इलाहाबाद मे हों गे। संभव है दो चार दिन में इधर आये। यदि वहां प्रकाशक मे मिलें तो मेरे लिए एक प्रति ला भी सकते है। तुमने गेंदे फूलने और बोगन वेलिया के लाल-होने की बात लिखी है। आमों के बिना वसंत क्या—कालिदास से निराला तक बहुत मे कवि गवाह है। यहां आम खूब बौराये हैं। दो तो हमारे कंपाउंड में ही है। इधर तीन चार दिन कई बार आंधी आयी, पानी बरसा। काफी बौर जमीन पर आ गये। अमिया आते ही यहां चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के बालक बालिका गण पथराव शुरू कर देते है। आकाश की उपल वृष्टि मे बचे तो नीचे मे शुरू। हम घूमने के लिए दूसरी सड़कें तलाश कर लेते है। तुम इलाहाबाद शादी में गये हो गे। अशोक त्रिपाठी, शिवकुमार सहाय - किसी न किसी से अजय को पता लगा तो वह तुमसे मिल लें गे--यदि तुम्हारे चल देने के बाद वहां न पहुँचे। यह पत्र तुम्हे विलंब मे यह सोच कर लिख रहा हूं कि जब तक पहुँचे, तब तक तुम बांदा लौट आये हो।

दांत उखड़वाने से ज़रूर कमज़ोरी आयी हो गी। में तो डर के मारे हिलते दांतों को भी पाले रहता हूं। एक तरफ ऊपर के दांत हैं, नीचे के नहीं हैं। दूसरी तरफ नीचे के है, ऊपर के नहीं। अगर दोनों एक तरफ होते तो क्या बात थी। लेकिन ऐसी स्थिति में, जैसा कि किसान कहते हैं- काहे लागै, तो जीभ को काफी परिश्रम करना पड़ता है। And burst joys, grape against palate fine— कीट्स ने लिखा था, हम जीभ और दांत के बीच दबा कर मटर का दाना बर्स्ट

कर देते हैं। प्रतापनारायण मिश्र मे बुढ़ापे पर कविता लिखी थी। शायद तुमने पढ़ी हो। उनका हाल हमसे भी बुरा था, और पचासा पार करने के पहले ही। खैर, बुढ़ापे मे बचने और हमेशा जवान बने रहने की तलब जैसी हमारे वैदिक कवियों को थी, वैसी आज के लोगों को नही है। उनके लिए ब्रह्माण्ड में दो तरह के जीव हैं। मर्त्य और अमर। देवता अमर ही नही हैं, अजर भी हैं —चिर युवा। अग्नि देव नित्य नवीन हैं, उसी प्रकार उषा देवी नित्य नवीना है। यूरुप के रोमान्टिक कवियों ने प्रकृति और मनुष्य में जो वैपम्य देखा है, चिरतन सौन्दर्य की जो कल्पनाएं की हैं, वे मानो अपने आदिम रूप में सब की सब ऋग्वेद में विद्यमान है। और दो एक ने जहां चिन्ताओं पर लिखा है, वहां लगता है, सारा आधुनिक काव्य पानी भरता है। यानी हम इधर ऋग्वेद भी पढ़ते रहे है। इति०

तुम्हारा रा० वि०

अपना पिनकोड फिर लिखना। 210 के बाद के अंक 'बादा' में विलीन हो गये हैं।

रा० वि०

बांदा (उ० प्र०)
२३-३-८८
PIN 210001

प्रिय डाक्टर,

--बातचीत वाचस्पति ने बांदा में त्रिलोचन के सामने ही सम्भवतः रेकार्ड की थी। चुप रहे थे। शायद वह सागर छोड कर वह वहां से कहीं अन्यत्र आसन जमायें। इधर वह तो काफी चर्चित हुए। नामवर ने उन्हें चित्र का नही चरित्र का कवि कहा है। भाषा की प्रशंसा की है। पता नहीं चरित्र बिना चित्र (रूप) के कैसे दर्शन देगा। तुलसी बाबा से पटरी बिठाई है। अच्छा है जो होता है। हम तो इस सब से दूर है। कोई कुछ कहे तो भी हम पर असर नहीं पड़ता। हम तो कविता —अच्छी कविता -- कर्मठ आदमी की —उसके प्रेम-परिवार की— दैनिक आस्था की कविता —को पकड़ना चाहते रहे है। वहीं करेंगे। संतुष्ट रहेंगे। एक दृष्टि —सत्य की--प्राप्त करते हैं। चेतना विकसित करते है। कविता अत्यंत कठिन तपस्या मांगती है। जो लिखना है वही उभर कर नही आता— तब फिर ऐसी रचना की क्या महत्ता ? मार्क्सवाद ने मुझे आदमी बनाया। फिर कविता की ओर चला। वहां भी अब तक जूझता रहता हूं। बहरहाल मैं गलत रास्ते पर नहीं हूं। अगर कोई मुझे गलत बतायेगा तो इतना तो है ही कि उसे अपनी रचना से और सटीक उत्तर से पछाड़ दूंगा। करें तो आलोचना के महा पंडित।

'आत्मगंध' की प्रति को भी आज लिख रहा हूं कि वह तुम्हारे पते पर भेजें।

अजय इलाहाबाद में मिले थे। ठीक हैं। शायद ही बनारस पहुंचे। दिल्ली जाने की बात कह रहे थे।

—कीट्स की पंक्ति खूब है। आज के चरित्र लेखक ऐसा लिखें तो हम दाद दें। कविता घसीट कर नहीं स्थापित की जाती। ऋग्वेद पढ़ रहे हो— बढ़िया काम है। हम तो संस्कृत न पढ़ पाये। सुन कर ही—चर्चा से ही जान लेते है— सूंघ लेते हैं उस मुक्त प्रकाश के पुष्प को।

—इधर तो ऐसा लगता है कि सम्मानित होने की नई राह बनायी जा रही है। यह भी हो [,] कुछ तो सामने आये।

हम देवता तो नहीं—पर अपनी अगिन जलाये, लौ चूमते-भेंटते रहते है। तभी तो बुढ़ापे में भी युवा उमंगों से झूमता रहता हूं। ऐसा मन न बनाता तो कब का चल बसा होता। मुझे किसी के सामने कुकुआना अच्छा नहीं लगता। होगा। हम कतई चिंतित नही है। हम तो अब भी बालक को हँसते देख कर उसी पर कविता रचने की सोचते रहते है। वह हँस रहा है जैसे हँसी के पंख फैलाये, मानसरोवर के हंस अवनी और आकाश को एक कर रहे है।

ठीक हूं। आशा है कि ठीक होओगे। प्रिय भुवन का परिवार भी ठीक होगा। सब को यथायोग्य। विजय ने तुम्हारा पत्र भेजा- अपने पत्र के साथ।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

न्यू जी ३३, हैदराबाद, काशी २२१००५
३१-३-८८

प्रिय केदार,

परसों तुम्हें टी० वी० में देख कर आनद आ गया। आवाज़ दबंग, बात दमदार; भीतर और बाहर दोनों तरफ़ मजबूती। 'मगन रहु चोला।' सामगान की बात बढ़िया थी। वेद पढ़ने या गाने वालों में वह ऊर्जा न मिलेगी जो ऋचाओं की शब्द योजना में निहित है। ऋग्वेद में कुछ कुछ कविताएं वर्णनात्मक हैं जैसे जुआ-रियों वाला 'सूक्त : कुछ देवताओं या गृह पतियों से लेन देन वाली हैं। अन्य और सर्वश्रेष्ठ—कर्मकाण्ड का खंडन करने वाली, दार्शनिक चितन और कवि कल्पना के सीमान्तों को मिलाने वाली। कवि-दार्शनिक और पुरोहित का संघर्ष ऋग्वेद में शुरू हो गया है। पुरोहित देवताओं की चापलूसी करता है। घी, सोमरस आदि की घूस देता है। कवि यज्ञ को, देवताओं को, प्रतीक बना देता है, अद्वैत की कल्पना से पुरोहित और यजमान को धूल चटा देता है, अपने यथार्थवादी चिंतन से भौतिक-

वाद की नींव डालता है। ऋग्वेद का सपादन करते समय पुरोहितों ने जरूर कारीगरी की है। जैसे सांख्य में उन्होंने ईश्वर का प्रवेश कराया है, वैसे ही अनेक सूक्तों में दान दक्षिणा की बातें जोडी हैं। जिसे वह ईश्वर की वाणी कहते है, उसमे अपना स्वर भी मिला देते है। फिर भी बहुत सा प्राचीन काव्य यहा है और संसार में केवल यहां है —ऊर्जा के विचार मे। २३-३ का पत्र मिला।

सस्नेह रामविलास

बांदा (उ० प्र०)
PIN 210001
Dt 8-4-88

प्रिय डाक्टर,

— पोस्टकार्ड मिला। पढ़ कर तबियत मे जान पड गई। तुमने कार्यक्रम देखा और सुना। यह भी याद रखने की बात हो गई।

-- वैसे आज कल जहां देखो समकालीनता की आड मे ऐसा-ऐसा लिखा जा रहा है जो न लोकधर्मी है—न जन मानसिकता को बनाने वाला है। वेहद लचर लिखा जा रहा है और प्रतिष्ठित किया जा रहा है। सब बकवास है। जो कविता आदमी को अच्छा आदमी बनाने की ओर नही ले चलती वह तो कूड़ा हो कर काल कवलित होगी। स्वभावोक्ति सहजता सरलता देती है पर मानसिकता को नई दृष्टि और दिशा नहीं देती। तात्कालिक प्रतिक्रिया मात्र हो कर रह जाती है। वह भाव-विह्वलता नही देती जो हृदय मे पैठ जाये। खैर।

तुम्हारी कविताओं का सकलन 'सदियो के सोये जाग उठे' कल डाक से प्रकाशक ने भेजा है। पढ़ूगा। छपा तो बढ़िया है। भूमिका पढ़ने लगा तो फिर तुम्हारे गद्य की पंक्तियां ऊर्जा देने लगी। इतना सधा संतुलित, तार्किक, परिपुष्ट, और दृढ़ होता है तुम्हारा गद्य कि दूसरे लिख ही नही सकते। ठीक हूं। 'आत्मगंध' को लिख दिया था। मिली या नही ? प्रकाशक बाहर रहे है। पत्र भी नही आया।

सस्नेह तु० केदार

काशी-२२१००५
१५-४-८८

प्रिय केदार,

तुम्हारा ८/४ का कार्ड अभी दोपहर को मिला। हम चूंकि अनियमित कवि हैं। इसलिए गद्य की तारीफ सुन कर खुश होते है। अब तुम कविताएं पढ़ो चाहे

न पढ़ो। हम तो तुम्हारे भूमिका पढ़ लेने से ही संतुष्ट हैं। इसका एक विशेष कारण भी है। भूमिका लिखते समय हम अक्सर तुम्हारे बारे में सोचने लगते थे। तुमने समकालीन कविता पर अपनी प्रतिक्रिया लिखी है। हम तो यह सब पढ़ नहीं पाते पर जैसा जो कुछ लिखा जा रहा हो गा, उसकी कल्पना हमने कर ली। यहां न चाहने पर भी लोग कविताएं सुना जाते है। उन पर हमारी वैसी ही प्रतिक्रिया होती है जैसी तुम्हारे कार्ड में है।

कार्ड के साथ ही अशोक त्रिपाठी की भेजी 'आत्मगंध' की प्रति मिली। सबसे पहले ढूंढ़ कर पृ ८८-८९ पर छपी कविता पढ़ी। बाकी फिर पढ़ूं गा। इसी महीने की २४ को दिल्ली जा रहा हूं। २२ को विजय आ रहे हैं। चलने से पहले यहां का फैला हुआ काम समेट लेना चाहता हूं। विष्णुचंद्र ने लिखा है, नागा० जहरीखाल[1] गये। वाणी प्रकाशन ने लिखा है, शमशेर आने वाले है। इति।

सस्नेह रा०वि०

बांदा (उ० प्र०)
PIN 210001
9-5-88

प्रिय डाक्टर,

—अब तुम व्यवस्थित हो गये हो।

—दिल्ली में पानी का संकट है, ऐसा रेडियो से पता चला था। मैं समझता कि तुम लोग भी इस संकट के शिकार हुए होओगे। अब कैसी स्थिति है। हमारे घर में तो ऐसा कोई संकट नहीं है। भतीजों के घर में ट्यूब वेल से बराबर पानी आता रहता है। बिजली भी कम नखरे करती है।

'सचेतक' के दो अंक मिले। पर मुंशी का इधर बहुत दिनों से एक पत्र भी नहीं आया। तबियत तो ठीक है न? तुम्हारे परिवार के और मुंशी के परिवार के सभी सदस्य स्वस्थ और प्रसन्न होंगे। तुम सबको मेरा यथायोग्य।

—तुम्हारे काव्य-संग्रह की सभी कविताएं पढ़ गया। तब की राजनीति का परिवेश फिर आंखों के सामने आ गया। तब की साहित्यिक चेतना ने पुनः धर दबोचा। इन कविताओं का सामने आना अत्यंत आवश्यक था। इनका महत्व बहुत है।

नागार्जुन और शमशेर भी दिल्ली पहुंच गये होंगे। उनकी याद आती है। पर पहुंच नहीं सकता।

सस्नेह तु०

1. श्री वाचस्पति के पास। उन दिनों वाचस्पतिजी वहीं कार्यरत थे। [प्र० त्रि०]

सी- ३५८, विकासपुरी,
नयी दिल्ली- ११००१८
१५-५-८८

प्रिय केदार,

९/५ का कार्ड मिला। मुंशी फिट हैं। सबेरे आये थे, उन्हें तुम्हारा कार्ड पढ़वा दिया था। जरा चिट्ठी लिखने में काहिल हैं। संपादन कार्य में व्यस्त रहते हैं। 'नया साहित्य' (६) में निराला का अभिनंदन करते हुए तुम्हारी एक लघु गद्य रचना छपी थी। वह तुम्हारे किसी संकलन में आयी या नहीं ? 'रूपाभ' में तुम्हारी रचनाएं छपी थीं क्या ? कब, कौन कौन सी ? 'रूपतरंग' के दूसरे संस्करण की भूमिका में 'रूपाभ' की चर्चा करना चाहता हूं। 'हंस' में तुम्हारी रचनाएं कब से छपने लगी थीं ? कितनी छपी होंगी—एक मोटा अंदाज़ ? वाणी प्रकाशन ने नागार्जुन-त्रिलोचन-शमशेर को बुला कर एक बड़ा साहित्यिक आयोजन किया था। अशोक महेश्वरी ने कहा था, मैं सबेरे आदमी भेजूंगा, उसके साथ शाहदरा मेरे घर आ कर उनसे मिल लीजियेगा। वह आदमी दोपहर को डेढ़ बजे आया। उस समय उतनी दूर जाना असभव था। समारोह मे जाने को मना कर ही चुका था। सो किसी से भेंट नही हुई। सस्नेह

रामविलास

पानी की किल्लत हमारे यहां नहीं है।

बादा
20-5-88
प्रिय डाक्टर,

--१५/५ का पोस्टकार्ड अभी मिला। उत्तर दे रहा हूं। प्रिय मुशी का पत्र आया था। उत्तर उन्हें भेज चुका हूं।

--निराला पर मेरी गद्य रचना 'नया साहित्य' में छपी थी। वह मेरे किसी संकलन में नहीं छपी।

—'रूपाभ' में मेरी एक कविता 'स्टैच्यू' छपी थी। वह 'युग की गंगा' में थी। बाद को प्रकाशक ने सम्भवत: 'गुलमेंहदी' में दी हो।

-- 'हंस' मे मेरी रचनाएं मेरे वकील होने के बाद यानी 1938 के बाद अमृत-नरोत्तम नागर-त्रिलोचन-शमशेर ने छापी थीं। कमासिन वाली बड़ी कविता 'हंस' में छपी थी, शिवदान सिंह तब सम्पादक थे। मेरी अनुमति के बिना शमशेर से ले कर छापी थी। सन् तो याद नहीं है। ज्यादातर 'हंस' में ही भेजता था। मेरा लम्बा अनुवाद भी शांति वाले अंक में छपा था। चेकस्लाविया की कविता थी।

—आज 'रूपाभ' की File देखी तो कोठरी में न खोज पाया। पता नहीं कहां है? ठीक हूं। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

सी-३५८, विकासपुरी, नयी दिल्ली-१८
२५-५-८८

प्रिय केदार,

तुम्हारा २०/५ का कार्ड मिला। निराला पर तुम्हारी गद्य रचना किसी संकलन मे जरूर आनी चाहिए। मैं इधर वाल्ट व्हिटमैन पढ़ रहा था। अमरीकी गृह युद्ध के दौरान उसने अस्पताल में नर्स का काम किया था। उस समय लिखे हुए उसके कुछ पत्र बहुत मर्मस्पर्शी है। जो दर्द वहां लोगो ने सहा वह इतिहास मे कभी न लिखा जाये गा, यह सारतत्व है। वैसे तो व्हिटमैन की रचनाओ का स्तर ऊंचा-नीचा है पर कुछ ऐसी है जिनका गद्य सांचे में ढला है। गद्य के अलावा और कोई भी छद रूप वहा फिट न होता। मै कभी-कभी सोचता हू, मन मे बहुत-सी बाते है, कविता लिखने मे आलस लगता है। यो ही गद्य मे लिख डाले। हमारे कवि पुरखे भी बडे जबर्दस्त थे। अथर्ववेद के वशीकरण-मारण-रोगोपचार मत्रो के बीच अचानक कविता फूट पड़ती है। इन्द्र यशा (यशस्वी), अग्नि यशा, सोम (चद्र) यशा उत्पन्न हुआ है। ससार के सब प्राणियो मे मै (=मनुष्य) यशस्तम (सबसे अधिक यशस्वी) हूं!

सप्रेम
रामविलास

बांदा/11-6-88/PIN 210001

प्रिय डाक्टर,

—इधर गर्मी अपने प्रचंड रूप में रही यहा। तापमान 49° को पार कर गया। भवानी ने पूरे प्रकोप से जड़-चेतन सब पर आक्रमण किया। हम भी घबराये पर कूलर चलाये कमरे में क़ैद सजा काटते रहे। अब बच गये। तब पत्र लिख रहे है।

--मेरी गद्य कविता यदि पास में हो तो भेज दो—प्रकाशक को संकलन में छापने को लिख दूगा। मेरे पास न मूल है न मुद्रित। व्हिटमैन के मर्मस्पर्शी पत्रो को मै भी खोज कर पढ़ने का प्रयास करूंगा। मुझे तो वह तब पढ़ते समय मोह लेता था। महान तो है ही। गद्य भी निश्छल लिखा हो तो वशीभूत कर लेता

है। सब जगह न गद्य चलता है—न छंद। आदमी की आत्मीयता फूट पड़ती है— शब्दों को स्वयं यथानुरूप साध लेती है— जो न कहा जा सके वह कह देती है। यह सब कला से आगे की बोली बानी है। कभी-कभी मिल जाती है—धन्य कर देती है। परंतु रहस्य नही होती। जीवन के गहन स्तर मे घूम आई—बाहर निकल आई - खिलखिलाती हँसी की तरह छा जाती है—न भूलती है —न मिटती है। हमारे पुरखे प्रकृति के परिवार के सिद्ध सदस्य थे। तुम तो शहद की एक बूंद टपका देते हो फिर चुप हो जाते हो पागल बना कर। मैं भी ह्विटमैन निकाल कर फिर सूघूगा। सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

बांदा (उ. प्र.)
२८-६-८८
६ बजे सबेरे
प्रिय डाक्टर,

अभी तक मद्रास नही जा सका। अब जल्दी जाना सम्भव नही है। आरक्षण कराने में देरी लगती है। झांसी मे कराना होता है।

- अब पत्र बांदा के पते पर ही जरूर देना। ठीक होओगे। मैं ठीक हूं।

'नया पथ' का अंक देखा। अच्छी सामग्री चयन की गई है।

कभी Transistor कभी T. V. का सहारा लेता हूं। अकेलापन पास नहीं आ पाता। वैसे पढ़ता हूं—पर कुछ समय तक, आखों की वजह से। कुछ लिखता भी रहता हूं रोज-ब-रोज। जो सोच-समझ मे आया लिख लेता हू। कुछ मजेदार चीजें आ गई है। लोग चौकेंगे। कुछ की सराहना है। नयों की। कुछ की खबर ली है। पुरानों की। सब 'डायरी कविता' के अन्तर्गत आयेंगी। और भी हाल-हवाल है; देश-विदेश है। आदि-आदि। सबको यथायोग्य। अब तो पानी का संकट कम हो गया होगा? आज सबेरे से बरस रहा है। कल तक तो यहां गरमी धूल उड़ाती रही है। आज दिन ठंडा होगा ही। वाल्ट ह्विटमैन के हाल लिखना।

सस्नेह तु० केदार

बांदा,
७-७-८८
प्रिय डाक्टर,

—३०/६ + १-७-८८ का पत्र मिला। पा कर बेहद खुश हुआ कि तुम पूरे परिवार के साथ दूर-दूर के महत्वपूर्ण नगरों तक यात्रा कर आये, आनंद से रह आये वहा और सकुशल-नवोल्लास को लिये-लिये सी-२५८ मे आ गये। सब के

हाल मिले। आशा है कि तुमने सबको मेरे बारे में भी दो-चार शब्द अवश्य कहे होगे। मुझे तो सबने इतनी आत्मीयता दी है कि कभी भूल ही नहीं सकता। बस होता तो बीच-बीच मे सबसे मिलने – गप्प मारने पहुंच जाता।

'शतपथ' का अर्थ होता है सौ रास्ते। यह शब्द उस युग में कैसे पहुंच गया ? क्या तब भी कोई छायावादी कवि पंत का समानधर्मी— प्रभावित कर रहा था ? अरे, हटाओ इन शतपथ गामियो को। देखो इस युग के गोर्बाचोव को। क्या शान से नयी पहल कर रहा है और वहा की रूसी जिंदगी को हंसने-बोलने—पसंदगी से जीने-जागने, नाचने-गाने, और मेल-मिलाप के अवसर उपलब्ध कराने का माहौल बना रहा। मैं तो खुश हूं कि इससे आधारभूत शोषण ही [न]-समता-न्यायप्रियता वाली व्यवस्था, जो ऊपरी असगतियों से मटमैली हो रही थी, कायम रहेगी और असगतिया चालाकिया सब तरह की— समाप्त होगी। यानी कि अपनी जिंदगी मे ऐसी नागरिक क्रांति होते देख कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। अरे, मेरे यार, बी० बी० सी० वाला तत्र और वायस आफ़ अमरीका वाला तत्र— दोनो ही —समस्वर मे शकालु होने का बोध व्यक्त करते है। हम है कि मस्त है—झूम रहे है।

देव कवि की रचना सटीक सत्य को व्यक्त करती है। परन्तु कितने है इस हिंदी-प्रदेश म जो इस सत्यवती से आख लडाते है और इसे गले से लगाते है और परित्यक्त नही करते। तुम सराहत हो—हम भी सराहते है।

'अभिवादन' की प्रति भेजी तुमने। आभारी हूं। नाहक कष्ट उठवाया तुमसे। कल शाम पुडरीक[1] मे कोठरी मे घुस कर नया साहित्य निकालने को कहा। बेचारे ने धूल मे धस कर अक निकाल [निकाले] लाये[2] और 'अभिवादन' वाला अक भी हाथ आ गया। मैंने खोजा था —तब न मिला था। अब हाथ लगा।

—एक दिन —परसो 4 A.M. अचानक मेरे सिर का Balance डग-मगाया-सा लगा और ऐसा मालुम हुआ कि अब खाट पकड़ कर पड़े रहना पड़ेगा। परन्तु धैर्य और साहस से सम्हाले हुए अपने तन को और मन को उस Imbalance पर विजय पा सका। कल दिन-भर आराम करता रहा। कम खाया-पिया। आज ठीक है सब कुछ। T. V. भी देख सका। हा, दो दिन लिख नही सका। आज कुछ लिखने को कलम उठाऊंगा।

—सब को यथायोग्य।

—'अभिवादन' सहाय[3] के पास, त्रिपाठी[4] के पास भेज दूगा—छापने को

1. नरेन्द्र पुडरीक—युवा कवि
2. सशोधन के बाद 'लाये' अनावश्यक हो गया है
3. बादार साहित्य के एकमात्र प्रकाशक श्री शिवकुमार सहाय
4. अशोक त्रिपाठी

[चारो टिप्पणियाँ अ० त्रि०]

लिख दूंगा । शेष कुशल है । पानी कल खूब बरसा—कई दिन से बादल घिर रहे थे ।

केदार

नयी दिल्ली-१८
१७-७-८८

प्रिय केदार,

तुम्हारा ७/७ का पत्र मिला । 'सिर का बैलेंस डगमगाया' —चक्कर आया ? ब्लड प्रेशर लो हो तो चक्कर आते है । चैक न कराया हो तो करा लेना । यदि लो ब्लड प्रेशर हो तो डाक्टर को पूछ कर कुछ टानिक लेते रहना ।

'नया साहित्य' वहां मिल गया । प्रसन्नता हुई । और भी जो पुरानी सामग्री हो सँभाल कर रखना । कभी काम आये गी । पानी यहां भी बरसा है । मौसम अच्छा है ।

इन दिनों जिस पुस्तक की सबसे ज्यादा चर्चा होनी चाहिए उसके बारे में लोग चुप्पी साधे हैं । वह पुस्तक है लेनिन की —'साम्राज्यवाद' । इजारेदार पूँजी का केन्द्रीकरण, बड़े डाकुओं द्वारा दुनिया का बँटवारा, दुनिया की जातियो का साहूकार और कर्जदार—दो तरह की जातियों में बँट जाना, यह सब लेनिन ने अच्छी तरह समझाया है । सन् ४५ के बाद पूंजी का केन्द्रीकरण भारी पैमाने पर हुआ है । इसका गढ़ है अमरीका । सबसे पहले यूगोस्लाविया ने इजारेदार पूँजी को आमंत्रित किया । उसके बाद पोलैंड, हंगरी, रूमानिया आदि ने । इन सबके बाद चीन इस रास्ते पर चला और अंत में रूस ने भी इजारेदार पूँजी के प्रवेश के लिए द्वार खोल दिये । सबसे पहले टिटो ने कहा था—आज के जमाने में पूंजीवादी और समाजवादी देश परस्पर निर्भर हैं । अब यह बात सोवियत नेता भी कहते हैं । जनतंत्र का नाटक पहले पोलैंड में हुआ । वहाँ ऐसा विद्रोह फैला कि मार्शल ला लागू करना पड़ा । अमरीकी दखलअंदाज हर जगह जातीय विद्वेष भड़काते हैं । कजाकस्तान में सेना ने दंगे शात किये थे । आर्मीनिया अज़र बैजान विवाद में फिर सैन्य बल की जरूरत पड़ रही है । यूरुप में जनतंत्र का विकास सामंतवाद के विरोध की बुनियाद पर हुआ था । समाजवादी जनतंत्र के विकास की बुनियाद साम्राज्यवाद का विरोध ही हो सकता है । इजारेदार पूजीपति अपने सहयोग की कीमत चाहते हैं । उनकी खुलेआम मांग है निजी पूंजी के प्रसार को छूट मिले । जिन समाजवादी देशों ने अपनी यहां मार्केट इकनॉमी चलाई है, वहा कीमतें बढ़ी हैं और जनता में असंतोष फैला है । इस असंतोष से इजारेदार लाभ उठाते हैं । सोवियत संघ में बेशक जनतांत्रिक सुधारों की ज़रूरत है । पहला काम यह होना

चाहिए कि सोवियतें राज्य सत्ता का अधिष्ठान हों लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव गोर्बाचोव रेंगन से यों वार्ता करते हैं मानो सोविय [सोवियत] संघ के अध्यक्ष या प्रधानमंत्री वही हों। जहां तक मालूम है, क्यूबा और उत्तरी कोरिया इजारेदार पूंजी के प्रवेश का विरोध कर रहे हैं। इति०

अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना।

सस्नेह
रामविलास

बांदा (उ. प्र.)
PIN 210001
16-9-88

प्रिय डाक्टर,

बहुत दिनों बाद पत्र लिख रहा हूं। पहले तबियत ठीक नहीं रही। फिर कमजोरी रही। अब कुछ अच्छा हुआ हूं। इसलिए लिख रहा हूं। आशा है कि तुम ठीक होगे और लिखने-पढ़ने में व्यस्त रहते होगे।

मद्रास नहीं गया। अभी निकट भविष्य में भी जाने का इरादा नही है। यही रहूंगा।

लिख-पढ तो सकता हूं पर न लिखा जाता है - न पढ़ा जाता है। आंखों को कष्ट होता है। इससे कलम और आंखों को कष्ट नहीं देता। फिर कविता भी तो पकड़ में नहीं आती। इधर छुआई नहीं देती। विश्वास है कि आगे कभी पकड़ लूंगा।

मौसम दिन में बहुत गरमाता है। धूप धारदार होती है। रात कई-कई बार बिजली दगा दे जाती है। कमरे में सोता हूं। ४ बजे उठ बैठता हूं फिर वही पुराना क्रम करने लगता हूं। नहा-धोकर ८ बजे तक निश्चित हो जाता हूं। आजकल बड़ी बेटी श्याम आई हुई है। भतीजे के बच्चों को दो दिन से दोपहर के बाद पढ़ाने लगता हूं।

आशा है कि प्रिय विजय और परिवार के सदस्य अच्छे होंगे। सबको यथा-योग्य।

सस्नेह तु०
केदार

नयी दिल्ली-१८
२५-९-८८

प्रिय केदार,

तुम्हारा १६/९ का कार्ड काफी प्रतीक्षा के बाद मिला। तुम्हारी तबियत गड़बड़ा गयी थी, यह जान कर दुःख हुआ। तुम कलम और आंखों को कष्ट नहीं देते, यह बहुत अच्छा करते हो। मैं तो खाली समय रेडियो के स्वरों से भरता रहता हूं, आंखों (टी० वी०) से ज्यादा कानों (ट्रानजिस्टर) से काम लेता हूं। कई बार सोचा, मन में कोई नया विचार आये तो टेप कर लूं। पर यहां सड़क चालू रहती है। बसों, ट्रकों, कारों, स्कूटरों की आवाजें भी टेप में गूंजने लगे गी। जब सड़क चालू नहीं होती, तब घर के लोग सोते होते हैं। सन्नाटे में मेरे बोलने से जागें नही, इससे चुप रहता हूं। तुम्हारे यहां शान्ति है। जब मन करे, टेप में बोलकर अपनी बात सुरक्षित कर सकते हो।

आज श्रीमती आइन्दे के चिली लौटने का विवरण बीबीसी से सुना। बहुत मर्मस्पर्शी था। मेक्सिको में चक्रवात से हज़ारों घरों का विनाश, बांग्लादेश में बाढ़ से हजारों गांवों का लोप, नेपाल में पहाड़ों की धरती के स्खलन से सैकड़ों मनुष्यों की मृत्यु—मानो शेक्सपियर के किसी महा नाटक में मनुष्यों के नृशंस काण्डों की यह प्राकृतिक पृष्ठभूमि हो। हम सब लोग कुशल से है। आशा है बच्चों को पढ़ाना जारी हो गा।

तुम्हारा
रामविलास

बांदा/19-10-88/PIN-210001

प्रिय डाक्टर,

२५/९ का पोस्टकार्ड मिल गया था। डाक व्यवस्था गड़बड़ थी— इससे देरी से पत्र मिलते थे।

आंखों का आपरेशन कराना है। देखो कब और कहां सम्भव होता है। लिखूंगा।

रेडियो और T. V. से समय बीत जाता है। वैसे अपने मन और शरीर को साधे रखता हूं। शांति तो यहां है ही। टेप करना मेरे वश की बात नहीं है। उलझन महसूस करता हूं। चकल्लस मालूम होती है। जो कहना था, कह चुका। और जो कहना होगा बडे अक्षरों में लिख लूंगा।

मुशी को 'आत्मगंध' की प्रति भेजी थी। पत्र नहीं आया कि उन्हे मिली या नही। डाक की व्यवस्था का बुरा हाल रहा है।

देश-विदेश के समाचार सुनता-समझता हूं। प्रदूषण भयंकर है।

मद्रास में सब कुशल-मंगल हैं। बड़ी बेटी श्याम इलाहाबाद से आई — 1-1/4 [सवा] महीने रही — गई। ठीक रहा सब कुछ — नमस्कार सबको। सस्नेह तु०

केदार

नयी दिल्ली-१८

२५-१०-८८

प्रिय केदार,

१६/१० का कार्ड मिला। 'आंखों' का आपरेशन कराना है। दोनों आंखों का? मोतियाबिन्दु? दिल्ली या मद्रास में आपरेशन कराना मेरी समझ में ठीक होगा। मुंशी की पत्नी-धन्नो को भी एक आंख का कराना है। मोतियाबिंदु अभी पका नहीं है। 'रेडियो और T. V. से समय बीत जाता है।' T. V. देखने से आंखों पर ज़्यादा जोर न पड़े, तुम इसका ध्यान रखते ही हो गे। टेप करने मे उलझन जरूर हो गी जब अकेले में यह काम करना हो। पर कोई दूसरा सामने हो, तुम उससे बातें करो, वह टेप रिकार्डर का ध्यान रखे तो उलझन न हो गी। बाद में बातचीत उतार कर कोई उसका संपादन कर सकता है। राजनीति से ले कर साहित्य तक बहुत से विषय हैं। जिन पर तुम्हारी बातचीत पाठकों के लिए रोचक हो सकती है। मुंशी पत्र लिखने में काहिल हैं। 'आत्मगंध' की प्रति उन्हें मिल गई थी। अंबिकापुर (म. प्र.) से एक पत्रिका 'साम्य' निकलती है, उसके ११वें अंक मे तुम्हारे ऊपर कमलाप्रसाद[1] का एक छोटा-सा लेख है। शायद देखा हो। इस वर्ष सोवियत भूमि पुरस्कार विशंभरनाथ उपाध्याय को मिला है। हरसिंगार के फूल गये। शरद जा रही है।

सस्नेह

रामविलास

बांदा

23-11-88

प्रिय डाक्टर,

ठीक चल रहा हूं। विदिशा नहीं जा सका। न खैरागढ़ जा सकूंगा। मेरे वश की बात नहीं है कि इधर-से-उधर लुढ़कता फिरूं और अचानक चल बसूं। अभी बहुत दिनों तक जीने की लालसा बलवती है। आयोजनों में अब कुछ होता

---

1. आलोचक। संप्रति, केशव पीठ, अ० प्र० सिंह, विश्वविद्यालय रीवा के निदेशक तथा 'पहल' के संपादक द्वय में से एक। [अ० त्रि०]

नहीं। व्यर्थ बकवास होता है। न साहित्य का मजा होता है—न काव्य का। उत्सवधर्मी लोग मिल बैठ कर चुहल कर लेते हैं। कमला[1] का पत्र आया है। बहुत आग्रह किया है। उन्हें भी न पहुचने की सूचना दे रहा हूं। बेटे का पत्र गोवा से आया है। शूटिंग में गया था। अब मद्रास लौट आया होगा। फिर पहली दिसंबर को शूटिंग पर जायेगा 'कोडइ कैनाल', 15 दिन के लिए। घर पर वहां ठीक है। बच्चे पढ़ते नहीं। उसे यही परेशानी रहती है। उसकी पत्नी चारों बेटों के साथ बड़े दिन की छुट्टी में बांदा आयेंगे [आयेगी]। चलो कुछ दिन सबके साथ बीतेंगे। फरवरी में बेटी किरन के बेटे मिन्टी (चेतन) की शादी दिल्ली में होगी। बेटी वाला वहीं आ जायेगा। किरन ने बुलाया है। पर वहा भी पहुच पाना असम्भव है। यात्रा में Balance बिगड़ जाता है दिमाग के केन्द्रों का। आशा है कि तुम सपरिवार ठीक होओगे। सबको यथायोग्य। कमला का लेख देखा है। खुशी हुई।

सस्नेह
केदार

नयी दिल्ली-१८
१२-१२-८८

प्रिय केदार,

बनारस से ६/१२ को लौटा। अगले दिन अवस्थी[2] के बेटे का ब्याह हुआ। कुछ लोग कल, बाकी आज यथास्थान गये। बनारस में ७-८ दिन लायब्रेरी में काम किया। कुछ पुस्तकें साथ ले आया। तुमने 'उत्सवधर्मी' लोगों की बात खूब कही है। मैं तुमसे पूरी तरह सहमत हू। जिसे कुछ समझना समझाना होता है, वह घर आ कर बात कर लेता है। बाकी आयोजनों में 'व्यर्थ बकवास' होती है। विदिशा नहीं गये, यह भी अच्छा किया। शरीर का ध्यान रखना। बहुत जरूरी है। 'अभी बहुत दिनों तक जीने की लालसा बलवती है' हमारा प्यारा दोस्त ज़िंदाबाद। उसकी बलवती कामना अवश्य सफल हो गी। बच्चों को अब माताएं ही पढ़ा सकती हैं। संतोष, शोभा और स्वाति - ये तीनों अपने बच्चों को पढ़ाने में काफी समय खर्च करती है। इसमे उनके धैर्य की परीक्षा भी होती है। ब्याह बारात मे जाने पर असभ्यता की नुमाइश देखने को मिलती है। जी घिनाता है, हम पैसे वाले हैं, हमारे ठाट देखो, महिलाओं की चमकदार साड़ियां देखो, दालदा मे सना पक्वान्न चखो। भीतर से सब खोखले। मेरा हाल ठीक है। कल से नियमित पढ़ाई-लिखाई चालू हो जाये गी।

सस्नेह रा० वि०

1. डॉ० कमलाप्रसाद [रा० वि०]
2. मेरे सबसे छोटे भाई।

बांदा (उ० प्र०)
PIN 210001
Dt 2-1-89
डियर,

नये साल की शुभकामनाएं। आजकल मद्रास मे बहू और पोते आये हुए है। ४/१ को इलाहाबाद जायेंगे—वहां मे 9/1 को मद्रास वापस जायेंगे।

दिनांक 12/12 के पत्र का उत्तर इसीलिए बिलम्ब से दे रहा हूं।

शरीर को साधे रखता हूं।

चहल-पहल है घर में।

क्या पढ़-लिख रहे हो ?

दिल्ली भी खूब ठंढी होगी।

बांदा भी गल रहा है मारे जाड़े के।

इधर कुछ लिख नही सका। एकाग्र होने पर फिर लिखूगा।

रामजी पाण्डेय[1] ने महादेवी के बारे मे मुझ मे संस्मरण मागे थे। लिख कर भेज चुका हू। उनकी तव की फोटो भेजना है। तयार होने पर भेज दूगा। मुशी महाशय क्या कहीं खो गये है ? कुछ पता नही चला। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

बांदा
१६-१-८६
प्रिय मुंशी,

—कल नव वर्ष की शुभकामना का तुम्हारा कार्ड मिला। खुशी हुई। कृतज्ञ हूं। आभारी हूं।

—कहो सब कुछ ठीक है न ?

—डाक्टर भी जमे होगे लिखने में।

—परिवार के सभी सदस्यों को मेरा नमस्कार।

इधर मौसम शीत का है।

धूप दगा दे जाती है।

आती है—चली जाती है।

बेवफाई करती है।

1. महादेवी जी के अभिन्न। आलोचक श्री गगाप्रसाद पांडेय के सुपुत्र। संप्रति : हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद के सहायक सचिव। (अ० त्रि०)

रुक कर अपनाये नहीं रहती।

अब धन्नो जी कैसी हैं? तबियत ठीक हुई या नही?

23/1 को भोपाल के सर्वभाषा कवि सम्मेलन में हिन्दी की कविता का पाठ करने पहुंचना है। यहां से 21/1 को जाऊंगा। तब वहां पाठ कर सकूगा।

ससनेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

बांदा
२५-१-८६
प्रिय डाक्टर,

—10/11 का पत्र मिला।

—यहां भी गलन ग्रस्त किये है।

——बहू और बच्चे 11/1 को मद्रास पहुच गये। कल पत्र आया। वहा जाडा की मार कहां!

— पुस्तक का पहला अध्याय अब तक पूरा लिख गया होगा।

—त्रिलोचन का 19/1 का लिखा हुआ पत्र मिला। पत्नी के चल बसने के बारे में था। मैंने पहले ही उन्हें पत्र लिख दिया था।

दूसरा पत्र 20/1 का कल आया कि 4 और 5/3 के साहित्य समारोह में सागर पहुंचूं। मैंने उन्हें आज ही अपनी असमर्थता का पत्र लिखा है।

—बेटी किरन के बेटे शेखर का ब्याह दिल्ली मे 5/2 को है। वहा भी न जा सकूंगा।

बेटा दिल्ली गया 17/1 को मद्रास से। फिर वहा से कश्मीर जायेगा। 23/1 तक वापस मद्रास पहुंचने की बात बहू ने लिख भेजी है। उसने कोई तमिल फिल्म बनाई है वह अच्छी बनी है। फरवरी में वहां प्रदर्शित होगी।

—यहां वही हाल है।

—दिन की धूप तो तेज होती है। पर रात गलन बहुत हो जाती है। ठीक हूं।

ससनेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

c/o Ashok Kumar
19, Thirumoorthy, Street
T, Nagar, Madras 17

Madras, 12-2-89
11 30 AM

प्रिय डाक्टर,

कल मद्रास से 7/2[1] PM उडा—हैदराबाद 9 PM पहुचा —वहा से 45 मिनट बाद उडा तो मद्रास 10 30 PM पहुचा- रास्ते मे प्लेन पर ही पेट भरा मद्रास मे पहले ही, हैदराबाद की उडान के समय फिर काफी और बिस्कुट का दौर। पोर्ट पर बेटा व उसका मित्र हरीश त्रिवेदी मोटर लेकर आये थे। सामान लेने मे कुछ समय लगा। घर 11 30 PM बजे पहुचा। रात मे नीद रफूचक्कर रही। सबेरे 5 AM उठ बैठा। फिर दैनिक कार्यक्रम शुरू। T V मे लडके जुते है। इतवार है न। शायद कल शान्ति [शान्ति] रहे। आज शाम बेटे की तेलगू फिल्म एक महाशय के घर मे देखूगा। सबको यथायोग्य। सबेरे ठढक थी। प्लेन मे सवारिया खचाखच भरी थी।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

सी-358, विकासपुरी, नयी दिल्ली-18
20-2-89

प्रिय केदार,

12 2 का कार्ड यथासमय मिल गया था। तुमने जाते ही कार्ड लिखा इससे बहुत प्रसन्नता हुई। तुम्हारे नाती नतेह, बहुत मिलनसार, हमे बहुत अच्छे लगे। वहा तो वे अलग रहते हो गे। अब तक तुम्हारा जीवन सामान्य हो गया हो गा और पोतो मे मन रम गया हो गा। वहा किताबे झाडने का नित्य कर्म तो तुम कर नही सकते। शायद जाघिया बनियान धोने पर भी पाबन्दी लगी हो। तुम्हारी कुछ पुरानी कविताओ मे मद्रास के किसी पार्क का सदर्भ है। वहा घूमने अब तक न गये हो गे तो जाने वाले हो गे। यहा अब भी सर्दी काफी है। चार-पाच दिन हम सूरज निकलने के बाद घूमने गये। पटना से कर्मेन्दु शिशिर ने लिखा है, तुम्हारा एक कविता सकलन कोर्स मे लग गया है, सभवत. जो बड़ा सकलन हमने किया था यह उसी का छोटा सस्करण है। अजय तिवारी बीमारी की चपेट मे आ गये थे। अभी तक ठीक न हुए। शायद अगले हफ्ते कालेज जाये, तुमसे मिल न पाने पर काफी दुखी हैं। हमसे भेट नही हुई। यह सब उनके दो कार्डों के आधार पर लिखा है।

1. सभवत. 7-1/2 [साढ़े सात] *P.M.* होगा। [प्र० सं०]

विजय भूस्खलन पर कई पुस्तकें ले आये हैं, उन से ऋग्वेद के कुछ अंश समझने में सहायता मिली है। सब लोगों को स्नेह सहित— रा० वि० शर्मा

19 Shirumoorthy Ttreet
'T' Nagar, Madras 17
Dt. 23-2-89
4 : 30 P.M.

प्रिय डाक्टर,

—20/2 का पत्र आज दोपहर बाद मिला। पढ़ने में बड़ा मज़ा आया। खूब हंसा। सबेरे का राष्ट्रीय श्रम यहां भी करता हूं। पुस्तकें तो मुझे देख कर पुकारने लगती हैं। भले ही वह मेरे पोतों की हूं [हों]—मेरी न हों। यह तो प्राणवंत् बनाये रहता है, दिन भर। पार्क आज गया था 7 A. M.। नाम हैं 'पनगल' पार्क। पर वहां [illegible] नहीं। फिर एक दिन भीतर जाऊंगा। 'नागलिंगम' फूल देखूंगा। यहां सरदी नहीं है। दिन में घर के अंदर पंखा खाता हू और तुम्हें याद करता हूं। ऋगवेद [ऋग्वेद] की चर्चा तुमने घर में की थी। 'दान' की वजह से दानव बना। मैंने समझ लिया। पटना में पाठ्य-क्रम में प्रवेश पा गई 'श्रम का सूरज' नाम की पुस्तक। मैं तुम्हें बधाई देता हूं। तुम्हारा श्रम सार्थक हुआ। अजय को मेरा नमस्कार लिख देना। मेरे पोते+पतोहूं तुम्हें भले लगे। उन्हें लिख भेजूंगा। और मेरे घर वाले तो तुमसे कतराते है—तुम्हारी विद्वता की वजह से। बेटे का [की] एक तेलुगू फिलम देखा [देखी] 'बरसात में लगी आग'। अभी रिलीज नहीं हुई। बढ़िया है। बहू के घुटने में गठिया का प्रकोप होता रहता है। वैसे ठीक है।

सस्नेह तु० केदार

नयी दिल्ली-१८
१-३-८९

प्रिय केदार,

२३/२ का कार्ड मिला। वैदिक कवियों के लिए जो महत्व सरस्वती का था, वही या उससे मिलता जुलता महत्व तुम्हारे (और तुम्हारी कविता के पाठकों के) लिए केन का है। एकाचेतत् सरस्वती नदी नाम्—नदियों में "यह एक ही सरस्वती नदी चेतनायुक्त सी चल रही है" (सातवलेकर) अर्थात् उसके किनारे जो लोग रहते है, उनकी चेतना जाग्रत है। हो सकता है बांदा में जाग्रत चेतना वाले एक से अधिक न हों, पर एक भी हो तो क्या कम है। अब केन की याद आने पर मद्रास

से भाग खड़े मत होना। मैं केन के बारे में केवल इसलिए लिख रहा हूं कि अखिल भारतीय स्तर पर नदी जलों के उपयोग की योजना में (येन केन प्रकारेण) केन भी शामिल कर ली गई है। इस योजना पर विजय की संक्षिप्त वार्ता दस मार्च को सबेरे पौने सात बजे आकाशवाणी दिल्ली ए से प्रसारित हो गी। उसमें केन का भी उल्लेख है। २३ मार्च को दोपहर साढ़े बारह बजे दिल्ली ए से संतोष की वार्ता भी प्रसारित हो गी—पर किसी रासायनिक विषय पर ! तुम पार्क हो आये, जान कर प्रसन्नता हुई।

सबको स्नेह सहित—रा. वि.

मद्रास/15-3-89

प्रिय डाक्टर,

—पत्र मिल गया था।

—मैं यहां प्रिय विजय की वार्ता दिल्ली ए की आकाशवाणी कार्यक्रम को न सुन सका इसका खेद है। मेरा रेडियो इसे पकड़ नहीं सका। मैं यहां से प्लेन के द्वारा कोयम्बटूर गया—वहां से कार द्वारा 'ऊटी' गया और बेटे अशोक के साथ सवाय ताज होटल में ५-६ दिन तक रहा। यात्रा अपने ढंग की रही। इधर का पर्वतीय सौंदर्य-प्रसार देखने को मिला। ऊंचे नीचे धरातल पर लोगों के घर बने देखे। बड़ी सुखद नयी अनुभूति हुई। अब कल ही शाम तो प्लेन से वापस घर आया हूं। तुम बहुत याद आये। मौसम सुहावना रुचिकर था। लिखना कि वार्ता में क्या कुछ आ पाया। उत्सुक हूं जानने को। शायद सतोष[1] जी की वार्ता भी उस दिन न सुनाई पड़े। यह दक्षिण है—यहां उत्तर की आवाज़ देर से पहुचती है, सिर्फ दक्खिन ही दक्खिन बोलता रहता है।

शरीर सधा है। चिन्ता न करना। अभी बांदा न जा सकू गा। यही रहना है कुछ दिनों तक। पत्र अवश्य देना। सबको राम राम।

सस्नेह तु०
केदार

नई दिल्ली-१८
१७-३-८९

प्रिय केदार,

तुम्हारा परसों का लिखा कार्ड हमें आज यहां मिल गया। पढ़ कर चित्त खूब प्रसन्न हुआ। खूब घूमो। दक्षिण भारत के अनेक प्रदेश बहुत सुन्दर हैं। केरल में

1. संतोष—मेरे पुत्र विजय मोहन की पत्नी।

प्रकृति का वैभव, तमिलनाडु में स्थापत्य और संगीत की समृद्धि—जितना ही देखो, उतना ही और देखने का मन होता है। जो सुख कविता पढ़ने में है, वही सुख बेटे के साथ रहने में है। जितने दिन बांदा से बाहर रह सको रहो, 'बड़ी सुखद नयी अनुभूति हुई।' प्राणवन्त कवि कभी बूढ़े नहीं होते। हिमालय की नदियों के जल ग्रहण क्षेत्र की तरह उनकी प्रतिभा नयी अनुभूतियां संजोती रहती है। विजय की वार्ता--नदियों की कविता से दूर, उनके उपयोगितावाद से संबधित थी; इनकी जल राशि का समुचित उपयोग कैसे किया जाये इस विषय पर थी। इसमें तुम्हारी केन नदी को किसी और नदी—शायद चंबल- से जोड़ कर उसे जल मे और भर देने की योजना थी। मद्रास तो इतनी दूर है, हमें बनारस में भी दिल्ली कम ही सुनाई देता था। लेकिन उस दिन तो दिल्ली में ही कुछ ऐसी गड़बड़ हुई कि थोड़ी देर बार इधर उधर की आवाजें आने लगीं और वार्ता सुनाई ही न दी! दो ट्रानजिस्टरों पर अलग-अलग एक सा हाल था। अच्छा होली की शुभकामनायें।

रा. वि.

19 Thirumoorthy Street
T Nagar, Madras 17
2-4-89

प्रिय डाक्टर,

'ऊटी' ने मन मोह लिया। दक्षिण निश्चय ही बहुत सुन्दर है। केरल तो नहीं देख सका। अब क्या जाऊंगा? यहां का स्थापत्य तो पहले ही मन में स्थापित हो चुका था। संगीत भी सुनता रहता हूं अपने ट्रांजिस्टर से। यहां तो बच्चे लोग कैसेट लाते और पश्चिमी धुनें बजाते और मांसल महामोद की छवियों से अभिभूत होते हैं। लड़कपन अभी बेलगाम दौड़ में दौड़ने को उत्सुक रहता है। पूरा देश इसी का समर्थक बनता जा रहा है।

प्रिय मुंशी और उनके परिवार के सभी सदस्यों का बधाई और शुभ कामनाओं का कार्ड मिला। खुशी हुई। उत्तर दे रहा हूं। वाचस्पति ने खटीवा से पत्र भेजा बधाई का—तुम्हें भी याद किया है। जो कविताएं 88 में लिखी थीं उन्हें सुधार कर नई कापी में उतार रहा हूं।

प्रिय नरेन्द्र चले गये। T. V. से सुना था। मन उदास हुआ। फिर उबार सका। डा० मुरली मनोहर प्रसाद सिंह[1] का पत्र बांदा गया था—हाशमी वाली

1. समीक्षक और शिक्षकनेता। [प्र० वि०]

घटना पर मेरा वक्तव्य मांगा था। देर हो गई थी न भेज सका।

[केदारनाथ अग्रवाल][1]

नई दिल्ली-१८

११-४-८९

प्रिय केदार,

तुम्हारा 2-4 का कार्ड यथासमय मिल गया था। दो दिन पहले मौसम काफी गरम हो गया था। फिर हिमाचल प्रदेश मे हिमपात हुआ और यहां भी ठढक हो गयी। साढ़े चार बजे, तीसरे पहर की नीद पूरी करने के बाद तुम्हे यह कार्ड लिख रहे है। आधे खुले दरवाजे से भीतर आती हल्की धूप मे गुलमुहर की पत्तिया छाया-नृत्य कर रही है। (छायानृत्य में छायावाद की गंध आये तो पाठान्तर इस प्रकार है, पत्तियों की छायाये नाच रही है। जो और भी घटिया है। खैर जाने भी दो बाहर कही जुही का पेड़ लगा है। देखना है, फूल आये या नही, शरद मे तो हर सिंगार ने खूब फूल दिये।) किसी प्रोड्यूसर के दिमाग मे जरूर आया होगा, कुछ दृश्यों की शूटिंग कन्याकुमारी के समुद्र तट पर होनी चाहिए। किसी हिंदी फिल्म में देखा भी था। क्या पता अशोक के साथ तुम्हे उधर जाना ही पड़े। (अच्छा अब चाय पी रहे है) पिछले महीने किरण ने फोन पर सूचना दी थी कि बेबी का संबंध पक्का हो गया है, मई में विवाह कार्य संपन्न होगा। दिन निश्चय होने पर लिखना, तुम इधर कब तक आओगे। ११ से १८ मई के बीच विजय सतोष के साथ, साढ़ू की बेटी के ब्याह में टाटा नगर जायेंगे। शेष कुशल।

सस्नेह रा. वि. (सी-३५८

विकासपुरी, न. दि.)

19 Thirumoorthy Street

T Nagar, Madras 17

24-4-89

3 P. M.

प्रिय डाक्टर,

अब मेरा व मेरे पोतों का शादी मे सम्मिलित हो सकना असम्भव हो गया है। यहां से ट्रेन में आरक्षण के लिए 13/5 से पहले की किसी तारीख के लिए बहुत भागदौड की गई। 2 माह पहले से जगहें भर गई है। हम लोगों को दुख हुआ।

1. इस पत्र के अंत में केदारजी के हस्ताक्षर नहीं हैं। [प्र० वि०]

किरन को पत्र लिख रहा हूं। वह बेचारी व बेबी बहुत दुखी होवेंगी। अब अशोक अकेले ही हवाई जहाज से जायें आयेंगे। इसी में बहुत धन खर्च होगा। हम लोग ऐसे जायें तो दिवाला पिट जायेगा। अब अभी जल्दी भेंट न हो सकेगी। दुःख हुआ। उमंग और उत्साह सब बह गये। गरमी पड़ रही है। यहीं रहूंगा। दर्शन वाली पुस्तक कहां तक पहुंची ? जब छपे तो एक प्रति मैं भी पाने का हकदार हूं। कुछ कविताएं लिखी थीं —उन्हें ही सुधार सका हूं।

तुम तो दिल्ली से बाहर नहीं जा रहे ?

मुंशी को बता देना।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

मदाग/27-4-89

प्रिय डाक्टर,

अब किरन की बिटिया की शादी 7/5 को दिल्ली में प्रगति मैदान की फुलवारी में होगी। पहले 13/5 थी। अब तो यहां से कोई भी न पहुंच सकेगा। 13/5 के लिए ट्रेन में आरक्षण न मिला किसी भी 13/5 से पहले की तारीख का। मुन्ना अकेले ही प्लेन से पहुंचते 13/5 को शामिल [होते]। अब वह दुबारा अपनी शूटिंग भी आगे पीछे, नहीं करा पा रहे। सब के हाथ-पांव फूल गये। किरन का पत्र कल आया था तभी 7/5 का पता चला। उसे भी आज यही मजबूरी लिख रहा हूं। फिर भी मुन्ना कोशिश में है कि सम्भव हो जाये तो वह प्लेन से 7/5 को शामिल होने के लिए पहुंच जायें। परन्तु यह असम्भव दिखता है। डियर, तुम भी पत्र पाते ही किरन को गाजियाबाद को फोन करके यह सूचित कर देना। किरन का फोन नं० है : 45217, शायद।

आशा है कि सब कुशल क्षेम होगी तुम्हारे यहां। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८
३-५-८९

प्रिय केदार,

तुम्हारे २४/४ और २७/४ के कार्ड मिले। विजय ने गाजियाबाद को फोन पर सूचना दे दी थी। तुमने कुछ कविताएं लिखी है, यह सुखद समाचार है। दर्शनवाली पुस्तक अब लगता है ऋग्वेद पर ही केन्द्रित रहे गी। भारतीय दर्शन की धाराएं

उससे कहां जुड़ी हैं, [इसका अध्ययन विचित्र][1] हो सकता है। यह काम जितना धीमा है उतना ही आनंददायक भी है। काम दस साल पहले उठाया होता तो इसे तीन खंडो मे पेश करते : १) ऐतिहासिक सामाजिक पृष्ठभूमि, २) दार्शनिक धाराए, ३) आदिम काव्यात्मक सांचे। पर समय कम है, इसलिए एक ही खंड में जो बन पडे गा, कह डालें गे। काम पूरा होने में देर है। छपने पर प्रति तुम्हें अवश्य मिले गी। गर्मियो में अभी तो कही जाने का कार्यक्रम नही है। यदि गये तो ८-१० दिन को आगरा जाए गे। विजय ११/५ को एक हफ्ते के लिए एक ब्याह मे शामिल होने टाटा नगर जायें गे। सब लोगों को स्नेह सहित।

रा० वि० शर्मा

नयी दिल्ली-१८
१२-७-८६

प्रिय केदार,

मैने पिछला कार्ड तुम्हें ३ मई को लिखा था। मई-जून-जुलाई (लगभग आधी) मे तुम्हारा कोई पत्र मुझे नही मिला। इधर कई लोगो के पत्र डाक की गडबड़ी से इधर उधर हो गये। अजय तिवारी ने इलाहाबाद से पत्र लिखा था। वह मुझे नहीं मिला। संभव है, तुम्हारे पत्र के साथ भी यही हुआ हो ? अजय को फोड़ों ने परेशान कर रखा है। कई महीने से भेंट नही हुई। मेरा हाल ठीक है। गर्मी यहां अब भी तेज़ है। मानसून का आगमन नही हुआ। आशा है मद्रास का मौसम यहां से अच्छा हो गा और तुम अभी वही हो गे। मुंशी ठीक है। अपना समाचार देना। वहा सब लोगो को स्नेह सहित—

रा० वि० शर्मा

19 Thirumoorthy Street,
T Nagar, Madras 17
17-7-89

प्रिय डाक्टर,

—12/7 का पत्र 15/7 को मिला। तुम कुछ चिन्तित रहे क्योंकि मैंने पत्र नही लिखा था ३ मई के बाद से। मैंने सोचा कि तुम्हें आगरे आदि जाना है। इसलिए जब फिर दिल्ली पहुचने की सूचना दोगे तो पत्र लिखूगा। ठीक ही

---

1. कोष्ठक के अन्दर की सामग्री अनुमान से दी गई है। वहां पत्र पर पानी गिर गया है। [प्र० वि०]

हू । वेटे के नये 3 बेडरूम वाले फ्लैट मे 15-7 को पूजा हुई—16/7 को सामान लादकर सबेरे नये फ्लैट मे आ गए । ग्राउड फ्लोर है इससे सीढी चढ़ने का प्रश्न नही उठता। पुराने घर मे आफिस रहेगा बेटे का । पत्र वगैरह अभी उसी पते पर आते-जाते रहेगे । रात नीद आई । दो दिन से जुकाम-ज्वर (हल्का) चल रहा है। गला खराब है। ठीक हो जायेगा।

अब अभी बादा जाना न हो पायेगा। कम से कम July भर तो निश्चय ही।

अजय इलाहाबाद मे भी रहे —अशोक त्रि० ने लिखा था —न पत्र-न कुछ। शायद कष्ट मे रहे हो। फिर भी पत्र दो लाइन का तो लिख ही सकते थे । न मन चला होगा।

लिफाफा नही है । इससे दो पोस्टकार्ड मे काम चलाता हू।

डा० जगदीश गुप्त ने 1 10 3/8 की अध्यक्षता —कवि दिवस —के लिए आमत्रित किया। मैंने इनकार किया। हिन्दुस्तानी अकादमी [इलाहाबाद] मे कार्यक्रम था । नरेन्द्र शर्मा की बडी बेटी वासवी ने सस्मरण मागे। युवा जीवन के—तबके सस्मरण लिख भेजे । दुर्ग के महावीर प्रसाद ने कई प्रश्नो के उत्तर चाहे। मैंने इनकार किया। फिर ४ के उत्तर चाहे। लिख भेजा।

नया फ्लैट ठीक है । अभी साज-सज्जा मे समय लगेगा। घर मे यहा सभी स्वस्थ और प्रसन्न है। बेटे को भी जुकाम है। पर काम मे व्यस्त है । यह फ्लैट दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के पास ही है। पास मे एक पार्क है। स्थान ठीक है।

.10/5 को अनुवाद कार्यशाला के कार्यक्रम मे सभा वाले ले गये थे— सम्मानित किया। भले लोग है। इधर तुम बाहर गये—क्या हाल है चौबे के और भुवन वगैरह के —बेटियो के। अब गरमी कम हुई है—पानी बरसा है यहा भी।

दिल्ली की साहित्यिक गति कैसी चल रही है। त्रिलोचन ने पत्र लिखा कि रूपतरग छप रही है। तुम्हारी दर्शन वाली पुस्तक कहा पहुची ? घर मे सबको यथायोग्य । मुशी आदि को भी।

तु० केदार

मद्रास/25-7-89

प्रिय डाक्टर,

--कल, बहुत दिक्कत के बाद, मेरा आरक्षण हो सका। 31/7 को 7-1/2 [साढे सात] P M G T से झासी के लिए Ac slipper [Sleeper] से प्रस्थान करूगा। सम्भवत 1/8 को ही दिन भर के बाद रात को झासी पहुचूगा। सबेरे. 2/8 को बादा की ट्रेन पकडूगा। आशा करता हू कि यात्रा का कष्ट झेल जाऊगा।

1. सपादक 'साक्षेप' । [प्र० त्रि०]

अब पत्र बांदा ही लिखना। नये फ्लैट का पता अभी मुझे नहीं मालुम। वैसे पुराना घर ही दफ्तर है। वहीं के पते से पत्र आये जायेंगे।

शेष ठीक-ठाक है।

पत्र बादा के पते पर अवश्य जल्दी ही लिखना। घर में सबको यथायोग्य। मुंशी भाई को सलाम। उनके परिवार के सदस्यों को भी नमस्कार।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

नई दिल्ली-१८
२५-७-८९
[२७-७-८९]

प्रिय केदार,

तुम्हारे १७/७ के कार्ड मिले। परसों अजय आये थे। बहुत झटक गये है। स्कूटर चलाने मे कठिनाई होती है, इसलिए कुछ मित्रों के साथ बस से आये थे। मैने तुम्हारे कार्डों के बारे मे उन्हें बता दिया था। उनके पिता को गुवाहाटी मे किसी अखबार मे काम मिल गया है। २५/७ को ही तुम मुझे कार्ड लिख रहे थे ! आज २७/७ को वह मिल गया। तो अब तुम बांदा आ रहे हो। राम करे, कुशल से वहा पहुच जाओ, कल यह कार्ड निकल जाये गा; आशा है मद्रास से चलने तक पहुच जाये गा। उधर तो बहुत पानी बरसा है। खास तौर से महाराष्ट्र और आंध्र में बाढ़ से बहुत लोग मरे है। इधर पानी कम बरसा है, धूप काफी तेज होती है। विजय कश्मीर गये हैं शनिवार तक लौटे गे। तन्मय पतनगर पहुच गये। चिन्मय कालेज जाने लगे हैं। मुशी से इधर भेंट नहीं हुई। दो तीन दिन बाद तुम्हे बादा के पते पर कार्ड लिखू गा। वहा सब लोगो को स्नेह सहित—

रा० वि० शर्मा

बांदा
३-८-८९

प्रिय डाक्टर,

—तुम्हारा पोस्टकार्ड ३१/७ का मद्रास में मिल गया था। उसी दिन मैं G. T से A. C. में सवार हो कर 10-1/4 [सवा दस] बजे रात स्लीपर में आराम से बांदा को चला। झांसी पहुंचा 1/-2-8-89 को 4-1/4 [सवा चार] बजे सुबह — वहा बादा से पंडित जी आ गये थे। दिक्कत नहीं हुई। ७-१/२ [साढ़े सात] सुबह

चम्बल से 2/8 को बांदा चला और ११ बजे दिन को पहुंच गया – सकुशल। अब तुम्हारी चिंता दूर हो जायेगी। साथ में कोई दूसरा था नहीं लेकिन मैं घबराया नहीं। आराम से आया। यहा सब ठीक है। कल फिर सफाई करता-कराता रहा घर में। आज फुरसत से आराम कर रहा हूं। अजय को मेरा नमस्कार कहना। उन्हें हो क्या गया था ? अब तो कुछ दिन में ठीक हो जायेंगे। श्रम कम करे। उनके पिता जी गोहाटी गये [।] ऐसा कौन अखबार है ? विजय लौट आये होगे ? घर में सबको यथायोग्य। मुशी अब दिन भर करते क्या रहते है। सुना नामवर ने इलाहाबाद में ढेले फेंके।

सस्नेह तु०
केदार

बांदा
७-८-८९
८ बजे सुबह
प्रिय डाक्टर,

—तुम्हारा 1/8 का पोस्टकार्ड मुझे 4/8 को मिल गया। मैं यहां 2/8 को 11 A. M. सकुशल पहुचा था।

—आते ही किताबें चिल्लाई। मैंने उनका मैल छुड़ाया। मेहनत की तो थका पर फिर नहाने पर चंगा हो गया।

हिन्दी अकादमी वालों ने आलोचक सम्राट को नारियल शाल आदि दे कर अपना कर्तव्य पूरा कर गये [लिया] बहुत अच्छा हुआ। रुपये तो तुमने पहले ही इनकार कर दिया था। पुनः बधाई।

गिरजा[1] 70 के हुए। वो हम सबसे कई साल छोटे है। जन्मदिन मे तुम्हें घेर कर ले जाना चाहते हैं। यह भी खूब है। अब तक तो सदा ही दूर बने रहे—अब महत्ता की हड़बड़ी हुई तो तुम याद आये। धन्य है। तुम अपने व्यस्त कार्यक्रम में लगे हो। भला जा कर समय नष्ट क्यों करो। ठीक है।

विजय लौट आये होंगे। मैं ठीक हूं। वहां सब ठीक था। कल मेरे प्रकाशक मुझे पांच ह० [हजार] यहां ५/८ को आ कर १-१/२ [डेढ़] दिन रह कर दे गये। अशोक त्रिपाठी और बालकृष्ण पाडे[2] भी आये थे। नया संकलन तैयार कर दे दूगा।

तु० केदार

1. श्री गिरिजाकुमार माथुर [प्र० त्रि०]
2. पुराने कामरेड, वरिष्ठ पत्रकार और लेखक, इलाहाबाद। [प्र० त्रि०]

नयी दिल्ली-१८
८-९-८६
९-८-८६[1]

प्रिय केदार,

तुम्हारा ३/८ का कार्ड मिला। सकुशल बांदा आ गये, बड़ी खुशी हुई। हमारे समधी पं० राधावल्लभ, कभी-कभी यहां दिल्ली में हमारे दामाद के पास आ जाते है। फिर उनको कानपुर की हुड़क उठती है और जल्दी ही भाग खड़े होते है। शायद तुम भी ज्यादा दिन बादा से बाहर नही रह सकते। वासवी को नरेन्द्र पर संस्मरण कल भेज दिया। हमारा गेस वर्क : नरेन्द्र, शमशेर ने अंग्रेजी में एम० ए० किया। इन्हें और बच्चन + बालकृष्ण राव को हिन्दी की ओर प्रवृत्त करने का श्रेय अमरनाथ झा और शिवाधार पांडेय को है। तुम्हारी क्या राय है?

तुमने एक दिन घर की सफाई में लगाया, 'आज फुरसत मे आराम कर रहा हूं'—पढ कर परमानंद प्राप्त हुआ। अजय फिर गायब है। कम ही मिलना होता है। उनके पिता किस अखबार मे गये, पता नही। विजय लौट आये। मुशी अब भी जब तब दफ्तर जाते है। बाकी समय पढ़ना-लिखना। सप्रेम रा० वि०

बादा १६-८-८६

प्रिय डाक्टर,

—९/८ का पोस्टकार्ड आज डाक से मिला। वहा, मद्रास मे, फ्लैट मे आगन नही है। कमरे मे अकेले कैद हो जाता था। कोई साथी नही था। घर के बच्चे जरूर थे। पर दिन-रात उन्ही उन्ही की संगत से मन को तृप्ति नही होती थी। फिर 6 महीने रहा -कम है क्या यह समय? बादा का घर—पेड़-पौधे और यहां के मेरे प्रियजन मुझे पुकारते रहते थे। मैं रुक न सका। चला आया। यहां भी कोई चिन्ता नही है। मन बहलेगा। अच्छा किया मैंने जो आ गया।

तुमने अच्छा किया जो नरेन्द्र पर संस्मरण लिख कर भेज दिये। वैसे नरेन्द्र तो स्वय प्रेमगीत गा गा कर हिन्दी के लोगों मे पहुंच चुके थे। हां, अमरनाथ झा ने उनकी पुस्तक 'शूल-फूल' की भूमिका लिख कर उन्हें प्रतिष्ठित किया था। शिवाधार के बारे में मुझे कुछ भी ज्ञात नही है। वह भी कविता लिखते थे। विभागाध्यक्ष थे अंग्रेजी [के]।

अजय का पत्र कुछ दिन पहले आया था। उत्तर दे दिया था। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तु०
केदार,

---

1. यही सही तिथि है। [रा० वि०]

नयी दिल्ली-१८
२४-८-८६

प्रिय केदार,

तुम्हारे ७ और १६/८ के कार्ड यथासमय मिले। विकासपुरी के ऊपर से बादल निकल गये, दिल्ली में पानी खूब बरसा, इतना कि जमुना ख़तरे के निशान से ऊपर बह रही हैं! ३० सितबर के भारत बंध [बंद] का मुकाबला करने के लिए सरकारी कर्मचारियों को आदेश है कि परिवहन की असुविधा का भय हो तो २६ को अपने दफ्तरों में सो रहें!—यह समाचार Voice of America से सुना। आज बेटी आरती के साथ अमृतलाल नागर आये। मुंशी भी सपरिवार आ गये थे। पहले से अच्छे हैं। वृंदावनलाल वर्मा समारोह में अगले महीने फिर आयेंगे। कोई चीज वाणी प्रकाशन को दे रहे हैं। 'रूपतरंग' में नरेन्द्र शर्मा का चित्र दे कर उसके साथ उन पर लिखा संस्मरण देने का विचार है। राजकमल वाले 'आस्था और सौन्दर्य' छापना चाहते हैं। मैंने हां कह दिया है। शेष कुशल।

सस्नेह रा० वि०

बांदा
५-६-८६

प्रिय डाक्टर,

पत्र मिल गया था। उत्तर देने में बिलम्ब हुआ।

नरेन्द्र के संस्मरण और उनकी फोटो अपने संग्रह में अवश्य दो। कब तक छप कर आयेगा?

मैं ठीक हूं। आशा है तुम सब लोग ठीक होओगे।

नागर जी बड़े हिम्मती हैं।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग वाले [ने] मुझे 14-15/10 को दिल्ली पहुंच कर उनके अधिवेशन में मानद उपाधि 'साहित्य वाचस्पति' लेने का आग्रह किया है। प्रभात शास्त्री का पत्र आया है।

पहुंचा तो अवश्य मिलूंगा। शरीर की स्थिति पर निर्भर है।

पत्र अवश्य दो।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

सी-३५८, विकासपुरी, नयी दिल्ली-१८
२०-९-८९

प्रिय केदार,

तुम्हारा ५/९ का कार्ड मिल गया था। अमृतलाल नागर १५/९ को यहां आने का वादा कर गये थे। १४/९ को साहित्य अकादमी के समारोह मे आये थे, उसी समय वापस चले गये, शायद वाहन की व्यवस्था नही कर पाये। वाणी प्रकाशन बहुत देर लगा रहा है। लगता है अगले साल कभी पुस्तक निकलेगी। नरेन्द्र का एक चित्र मिल गया है, उसका ब्लाक बन रहा होगा। अमृत के कहने से उनकी बेटी लावण्य ने भेजा है। वह शायद अपने पिता के घर पर ही रहती है। अगले महीने तुम्हारे इधर आने की संभावना है। जान कर बड़ी प्रसन्नता हुई। दिन और समय लिख दो तो विजय स्टेशन पर पहुंच जायेगे। और सब ठीक है। अजय मौन हैं !

सस्नेह
रामविलास

बादा (उ० प्र०)
27-10-89

प्रिय डाक्टर,

मै दिल्ली न पहुचा। शरीर को सम्हाले बादा मे ही बना रहा। सम्मेलन वाले अवश्य बुरा मान गये होगे। पहुचता तो तुमसे मिलता—बाते होती —नवोल्लास उत्फुल्ल करता। फिर भी रोज ही तुम्हे याद करता हू और अपने को तुम्हारी कर्मठता से अपने को जीवित और जागृत रखता हू। तुम न होते तो पता नही कैसे क्या होता ?

आशा है कि परिवार मे सभी सदस्य मुझे याद करते होंगे और स्वस्थ होगे। मै जानता हूं उन्हें मेरी फिकर रहती है। उनसे भी न पहुचने की विवशता व्यक्त करता हूं।

सभी को मेरा सलाम देना।

गुना भी नही गया। वजह मेरी शारीरिक दुर्बलता थी।

यहां से दो जने गये थे। हाल चाल मालूम हुआ।

पता नही डा० अशोक त्रिपाठी और सहाय साहब वहां पहुचे या नही। और तुमसे भेंट कर चुके या नहीं।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८
७-११-८९

प्रिय केदार,

तुम्हारा २६/१० का कार्ड मिल गया था। तुम दिल्ली न आये। बहुत अच्छा किया। इस उम्र में मुख्य बात है शरीर को संभाले रहना। सहाय और त्रिपाठी से भेंट नहीं हुई। कर्मेन्दु शिशिर[1] के पत्र से मालूम हुआ, दोनों सज्जन गुना के प्रगतिशील लेखक सम्मेलन में गये थे। तुम मुझे याद करते हो, मैं तुम्हें याद करता हूं; कुछ लोग हम दोनों को एक साथ याद करते है; 'रास्ते में बाबूजी केदारनाथ अग्रवाल और आपके दुर्लभ आत्मीय प्रसंगों के संस्मरण सुने।' श्रोता—कर्मेन्दु शिशिर; वक्ता—सहाय और त्रिपाठी। तीन-चार दिन पहले त्रिलोचन आये थे, पहले से स्वस्थ लग रहे थे। अभी सागर में टिके रहें गे।

राजकमल वाले हमारा पुराना निबंध संकलन 'आस्था और सौन्दर्य' छापना चाहते हैं। इसके लिए हमने एक नया निबंध लिखा है : 'फ्रांस की राज्य क्रांति और मानव जाति के सांस्कृतिक विकास की समस्या।' इसमे कुछ बाते गदर और भारतेन्दु युग पर भी लिखी हैं। शेष कुशल।

सस्नेह रामविलास

बांदा (उ० प्र०)
PIN : 210001/12-12-89

प्रिय डाक्टर,

—7/11 का पत्र 15/11 को डाक से मिला। उत्तर विलम्ब से दे रहा हूं।

—त्रिलोचन शास्त्री ने अपने एक प्रशंसक को पत्र लिख कर मुझे नमस्कार भेजा है।

—अशोक त्रिपाठी अपने ठौर-ठिकाने से लग पाने के लिए इधर से उधर जाते रहते हैं—अभी कहीं मुस्तकिल तौर से नियुक्ति नहीं पा सके। वैसे वे ठीक हैं। सहाय साहब और वे एक दिन यहां आने को है। ऐसा ज्ञात हुआ अशोक त्रिपाठी के पत्र से। पांडुलिपि लेने के लिए।

—तुम्हारा निबंध-संकलन जल्दी छप कर आये तो पढ़ूंगा और अपनी मानसिकता को ठीक करूंगा।

- समकालीनता के दौर में अधिकांश रचनाएं व्यक्तिगत दैनिक जीवन की तात्कालिक निजी छोटी-छोटी बातों का उल्लेख मात्र होती हैं—न सामाजिक

1. युवा कथाकार और आलोचक। [अ० त्रि०]

सरोकार का स्पर्श दे पाती हैं न यथार्थ के निकट जाती हैं। रेला चल रहा है वैयक्तिकता का कविताओं के नाम पर। फिर भी समकालीन कवि संतुष्ट दिखते है। मैं यह सब ठीक नहीं समझता।

आजकल बड़ी बिटिया श्याम इलाहाबाद से आई हुई है। दो-एक दिन मे वापस जायेगी। ठीक है। मन बहला।

आशा है परिवार के सभी सदस्य सकुशल होंगे। सबको यथायोग्य।

सस्नेह तु० केदार

बांदा (उ० प्र०)—PIN 210001—12-12-89

प्रिय भाई,[1]

—बहुत दिन बीत गये। 'सचेतक' तो आया ही करता है पर तुम्हारा कोई पत्र, भूल कर भी नहीं आया। आखिरकार कुछ तो शब्द मुझे भी पहुंचा दिया करो। अकेले मैं उन्हें चूसता रहूंगा 'लेमन ड्राप्स' की तरह और बच्चों वाली खुशी से स्फूर्ति पा लूंगा। इतना न बिसारो की गुम हो जाऊं।

—तुम्हें क्या. लिखूं कुछ समझ में नहीं आता। रूस और यूरुप के देशो मे बड़ी उथल-पुथल है। गोर्बाचोब भी विरोध के घेरे में घिर जाते हैं। कम्युनिज्म विरोध का दौर जोरों पर चल रहा है। इसका हो हल्ला रेडियो से सुनता रहता हूं। देखो किस करवट ऊंट बैठता है।

अपने देश में नयी सरकार केन्द्र में आ गई है। बदलाव आया। अब गाड़ी कैसे आगे बढ़ती है, यह प्रमुख प्रश्न है।

—साहित्य में भी बड़ी चिन्ताजनक स्थिति है। कोई किसी की सही बात न सुनता है, न मानता है। 'प्रलेस' और 'जलेस' भी इस नये दौर मे 'अकाल' की स्थिति में आ से गये है। यहां भी धूल-धक्कड़ का प्रसार है।

—मन न माना इसलिए यह सब तुम्हे लिख कर भेजता हूं डाक्टर को नही क्योंकि वह गम्भीर काम में लगे है। उन्हें उचाट न हो जाये। सब को यथायोग्य।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८

२६-१२-८९

प्रिय केदार,

बड़ी उथल-पुथल हो रही है दुनिया में। रूमानिया में चाउसेस्कू दम्पति को

1. यह पत्र श्रीरामशरण शर्मा 'मुंशी' को भेजा गया है। [प्र० वि०]

प्राणदंड अभूतपूर्व घटना है। इस समय समाजवाद और जनतंत्र परस्पर विरोधी अर्थ वाले शब्द बन गये हैं। जनतंत्र और पूजीवाद समानार्थी। पंजाब और कश्मीर में आतंकवाद प्रबल है, उत्तर प्रदेश मे ले कर आन्ध्र प्रदेश तक वर्ण युद्ध छिड़ा हुआ है। लंका में अलग मारकाट मची हुई है। दिल्ली की जोड़-तोड़ वाली सरकार हर तरह से कमजोर है। वामपक्ष इस सरकार को सलाह, सुझाव देता रहता है, जन आंदोलन के बारे में शायद सोचता भी नही है। तुम्हारे १२/१२ के कार्ड मे। सम-कालीनता'''छोटी-छोटी बातों का उल्लेख मात्र'' रेला चल रहा है वैयक्तिता [वैयक्तिकता] का—पूरा वाक्य समूह एक दम सटीक है। अपना काम ठीक चल रहा है। कल अजय तिवारी आये थे ठीक है पर पत्नी अस्वस्थ है। इलाहाबाद में है। यहां पानी बरसा, उसके बाद जोरों से सर्दी बढ़ी। एक दिन टी० वी० में सुलोचना बृहस्पति को देखा। संगीत सुन कर जो चित्र बनता है उससे यह सब उल्टा था।

नये वर्ष के लिए शुभकामना सहित। सस्नेह रा० वि० शर्मा

बांदा—6-1-90

प्रिय डाक्टर,

—२६/१२ का पोस्टकार्ड मिला। रूमानिया की घटना निश्चय ही अभूतपूर्व रही। समाजवाद [समाजवादी] देशो की हलचल ने सर्वत्र हडकम्प मचा दिया है। लोग कहते है कि मार्क्सवाद समाजवाद मर चुके। कहते हुए इन्हे शर्म नही लगती। यह नहीं जानते कि मार्क्सवाद सतत विकासशील मानवीय मूल्यो का जीवन दर्शन है। वह भला कैसे मर सकता है। जो हो रहा है वह उसके अमानवीय क्रियान्वयन का परिणाम है। जनतंत्र कभी, कही भी, यथास्थिति को ध्वस्त नही कर सकता — वह तो ऐसा भैसा है जो सब जगह की हरी घास चर लेता है और शासकीय निरंकुशता के सहारे मोटा होता रहता है। लोकतंत्र अब तक कोई जीवन-दर्शन नही दे सका। वह तरह-तरह की विसंगतियो [का] पालक और पोषक है। देश—अपना भी—आतंकवाद से ग्रस्त है। वर्ण-युद्ध हो रहा है चारो ओर। सरकार संकट में है। समस्याएं कैसे सुलझेंगी कह नही सकता। द्वन्द्व और सघर्ष में जीना पड़ेगा। शांति के शुभ लक्षण अभी प्रकट होते नही दिखते। अब आन्दोलन कौन करेगा। सभी परोसी पत्तल के सहारे जी रहे है। पेट भर रहे है। मैंने अपनी नई कविताओं के संकलन का नाम—अनहारी हरियाली—सोचा है। कैसा है ? कुछ-न-कुछ लिखता-पढ़ता रहता हूं। ठीक हूं। ठंढ इधर भी खूब रही और हवा अब भी, धूप में भी, शीत-प्रकोपी है।

सुलोचना बृहस्पति का गायन मैं टी० वी० में देखता पर सो गया था। अरे,

हर हमेश वही सिद्धि नहीं मिलती। संगीत साधना जान ले लेती है।

नया वर्ष तो शुभ होगा ही। यार है वह मेरा। तुम्हें भी शुभ हो।

सस्नेह केदारनाथ अग्रवाल

बांदा
16-1-90

प्रिय डाक्टर,

कल, रजिस्टर्ड पोस्ट से भेजी गई, 'रूप-तरंग और प्रगतिशील कविता की वैचारिक पृष्ठभूमि' की प्रति मिल गई। मैंने [मैं] श्री अशोक महेश्वरी को भी अभी पत्र द्वारा सूचित कर रहा हूं कि प्रति मिली—आभारी हूं।

अभी पढ़ना है।

टाइप छोटा है। बिजली भी धीमी आती है।

Rt पैर में मोच आ गई है। ४ दिन हुए। सेक रहा हूं। ठीक हो जायेगा। चलने मे दर्द होता है पर कम हो रहा है।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८
१६-१-६०

प्रिय केदार,

तुम्हारे ६/१ और १६/१ के दोनों कार्ड मिले। तुम्हारे पैर में मोच आने की बात जान कर दु:ख हुआ। आर्निका बड़ी अक्सीर दवा है। किसी होम्योपैथ से पूछ कर ले सकते हो। मोच आदि में लोग IODEX भी मल लेते हैं। धीमी बिजली में किताब न पढ़ना, दिन में कभी इधर-उधर देख लेना। उतना काफी हो गा। जनवरी के सोवियत लैंड में सांकेविच का हिन्दी कविता पर लेख है। नयी कविता का प्रगति विरोधी अभियान राजनीतिक विसर्जनवाद के कितना अनुकूल है, उस लेख से प्रकट होता है। जो काम हिटलर नहीं कर सका, वह अमरीका किये ले रहा है। इन्ही लोगों के सहयोग से। तुमने अपने कविता संग्रह का नाम 'अनहारी हरियाली' रखा है। सुनने में अच्छा लगता है। लेकिन अनहारी का अर्थ सबके लिए स्पष्ट न हो, यह संभव है। अन+हारी को लोग अन+अहारी (न खायी जाने वाली घास) समझें! भूमिका में अर्थ स्पष्ट कर देना। २४ को हम सब लोग जयपुर जा रहे है। स्वाति से मिल कर एक दिन को ललित से मिलने

सीकर जायें गे। ३० को मुकुल का ब्याह है। शेष कुशल।

सस्नेह —रामविलास

बांदा

८-२-९०

प्रिय डाक्टर,

कल रेडियो से समाचार सुना तो नाम सुन कर स्तब्ध हुआ—पर उम्र ७३ और ग्रंथों के नाम सुनने के बाद आश्वस्त हुआ—शांति मिली कि तुम अभी हमारे साथ हो—पर वाह रे उद्घोषक! इंदौर के रामविलास शर्मा तो कवि हैं—प्रख्यात आलोचक है नहीं। खैर। जनवरी का सो० लै० नहीं आया। साकेविच का [के] लेख का सारतत्व तुमने लिख दिया है। समझ गया। यही चल रहा है नासमझी का दौर। खैर। अकल दुरुस्त हो रही है वहां के दिग्गजों की। कम्युनिज्म के विरोध में भयंकर हो हल्ला उठ खड़ा हुआ है। सर्वथा गलत है।

भूमिका में स्पष्ट कर दूंगा।[1]

जयपुर वगैरह हो आये हो—वहां सब ठीक है? ललित कैसे हैं? स्वाती भी कुशल से होंगी? मुन्नी के यहां मुकुल का ब्याह हो गया होगा सकुशल। अच्छा समय बीता होगा। सबको यथायोग्य।

तु० सस्नेह

केदार

नयी दिल्ली-१८

१२-२-९०

प्रिय केदार,

नेलसन मंडेला की रिहाई पर सब लोग बहुत खुश हैं। इस खुशी में वह गुस्सा खो गया है जो उन्हें सत्ताईस साल जेल में रखने वालों पर आना चाहिए। रंग भेद का आर्थिक आधार द० अफ्रीका में लगी हुई जर्मन-ब्रिटिश-अमरीकी पूंजी है। उस आधार को ध्वस्त किये बिना द० अफ्रीका में लोकतंत्र पूरी तरह कायम नहीं हो सकता। आज के टाइम्स आफ इंडिया में एक लेख रूस पर जेम्स ब्लिट्ज का है, दूसरा उसी के नीचे विजय सिंह का अल्बानिया पर है। मिले तो जरूर पढ़ना। सही और गलत मार्क्सवाद का फर्क साफ दिखायी देता है। अल्बानिया के संविधान में विदेशी महाजनों से कर्ज लेने पर प्रतिबंध है। ये छोटे देश ज्यादा समझदारी से

1. संदर्भ : 'मनहारी हरियाली' के प्रथम का है। [प्र० वि०]

काम ले रहे हैं। वियतनाम, क्यूबा और अल्बानिया के आपसी संबंध बहुत अच्छे हैं। तुम्हारा ८/२ का कार्ड मिला। स्वाति ठीक है। रेडियो मे हमारे नामराशि के बारे मे समाचार सुन कर कुछ समय के लिए परेशान रही। फिर टेलीफोन पर हमारी आवाज़ सुन कर आश्वस्त हुई। ललित ठीक हैं। पति-पत्नी दोनो ही रिटायर्ड होने को है। मुकुल पत्नी सहित नैनीताल गये है। और सब लोग कुशल पूर्वक है।

सस्नेह
रामविलास

बांदा
२७-२-९०

प्रिय डाक्टर,

तुम्हारा १२/२ का पोस्टकार्ड मिला।

अपने अमृतलाल नागर २३/२ की शाम को लखनऊ के अस्पताल मे चल बसे। रेडियो से सुन कर आंखें डबडबा आई। कहूं तो क्या कहूं। तुम पर क्या बीती होगी। कल्पना कर सकता हूं। उन्होंने जो दिया वह जीवित रहेगा और वह भी स्वयं अपने दिये के साथ जीते रहेंगे। कल 'आज' समाचार पत्र मे कुमुद नागर उनकी चिता के पास हाथ जोड़े शोकाकुल दिखे। मान-सम्मान भी मिला। जनता ने भी अपने शोकाश्रु चढ़ाये। प्रसारण के दो-तीन कार्यक्रम आये —देखे-सुने। वह लखनऊ के बारे मे बोल रहे थे—अपने अंदाज में। लगा कि वह गये नही है—लखनऊ मे है—बोल जो रहे है।

कल मुन्नी का पत्र आया। शादी का हाल मिला।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८
५-३-९०

प्रिय केदार,

तुम्हारा २७/२ का कार्ड मिला। नागर की आंतों में सूझन [सूजन] आ गयी थी। पहले आयुर्वेदिक उपचार हो रहा था। फिर अस्पताल मे भर्ती हुए। ऊपर से वह हँसते थे, भीतर उनके मन में दुख घुमड़ता रहता था। एक छोटे भाई रतन का देहान्त तो काफी पहले हो गया; उनसे छोटे मदन का देहान्त उसके बाद हुआ। उनके बड़े दामाद का देहान्त हुआ और पत्नी भी न रहीं। अपनी पोती

दीक्षा की गले की बीमारी से काफी परेशान थे। उनका पचास वर्षों का सहायक सचित क्षय-ग्रस्त है। वह [उन्होंने] तिहत्तर पूरे करके चौहत्तर मे, अपनी समस्त आधिव्याधियों के साथ प्रवेश किया, यही बड़ी बात है। हिंदी भाषा और साहित्य की सेवा के लिए उन्होंने अपनी आयु का भरपूर उपयोग किया, यह नयी पीढ़ी के लिए एक उदाहरण है। रामचरितमानस के रूसी अनुवादक बरान्निकोव की जन्म शताब्दी का कोई आयोजन है। उनके पुत्र दिल्ली आये थे पर उनसे भेंट नही हो सकी। शेष कुशल।

सस्नेह

रामविलास

बांदा / २८-३-९०

प्रिय डाक्टर,

इधर मोच वाली तकलीफ से १ माह से परेशान रहा। अब ३ दिन मे डा० भार्गव की दवा से एक ही खुराक मे दर्द बहुत कम हो गया। अब खड़ा हो लेता हू। स्नान घर जा लेता हू। आज मैंने दवा नही खाई। डाक्टर ने कहा था बंद कर दो। मामला दर्द था—अब भी कुछ-न-कुछ है। पर ठीक हो जाऊंगा। पत्र नही लिखा मैंने कि चिन्ता मे पड जाओगे।

कहो, सादतपुर का कार्यक्रम हो गया? पर्चा तुमने पढ़ा होगा? क्या सुनाया था? संक्षेप [मे] लिखना। और सम्मलन कैसा रहा।

नागर जी पर लेख मांगा है 'उत्तर प्रदेश' ने। हो सका तो कुछ लिख दूंगा।

बारान्निकोब को टी० वी० पर देखा था। उनका बेटा नन्नु बरान्निकोव है। सबको यथायोग्य।

सस्नेह

केदार

नयी दिल्ली-१८

५-४-९०

प्रिय केदार,

तुम्हारा २८/३ का कार्ड मिला। लगता है, पिछले दिनो तुम्हे काफी तकलीफ रही। मोच का दर्द पुराना है? कमर मे हो तो तखत पर सोने से लाभ होगा। मैंने अपनी कमर का दर्द ऐसे ही ठीक किया है। एक होता है ताड आसन। दायां हाथ ऊपर उठाओ, पंजो के बल खड़े हो, दायें हाथ मे छत को छू लेने का सा प्रयास करो। फिर ऐसे ही बायें हाथ से। हाथो को ऊपर की ओर तानने से कमर

पर असर होता है और दर्द चला जाता है। इस आसन मे भी लाभ होता है। सादतपुर मे शील का अभिनदन होना है। मैने कह दिया था - मेरा आना न हो गा। बोले, कुछ लिख कर दे दीजिये। मैने कहा, वह कर द गा। परसो लेने आये गे, 'शील और प्रगतिशील समानार्थी है। जब से इनका विछोह हुआ तब से शील तो शील ही बने रहे पर प्रगतिशील शील विहीन हो गये'—कुछ इस ढग से लिखने का विचार है। बरान्निकोव यहा आये थे। उनके पिता के जन्म शताब्दी समारोह मे नही गया। मुशी भी आ गये थे। काफी बाते हुई। टी० वी० पर उनकी भेट वार्ता नही सुनी। पजाब की हत्याओ से बढ कर दु खद घटना महाराष्ट्र मे उस लडकी को दिन-दहाडे स्कूल मे जिन्दा जलाने की है। देश रसातल को जा रहा है।

सस्नेह रा० वि० शर्मा

बादा—उ० प्र०—PIN 21000 —दि० १३-४-९०

प्रिय डाक्टर,

—५/४ का पोस्टकार्ड मिला। मै पहले से ही तखत पर सोता हू। इसमे बहुत लाभ हुआ। अब दर्द नही रहा। कमरे मे चल कर स्नान घर वगैरह हो आता हू। नहा लेता हू। दैनिक काम भी कुछ कर ही लेता हू। अपनी भूख भी मिटा लेता हू - दो बार नाश्ता फल वगैरह लेकर [,] सुबह-शाम दो-दो रोटिया-दाल सब्जी खा कर।' अब उठ खडा हुआ हू। प्रकाशक । अशोक त्रिपाठी + राधारमण[1] इलाहाबाद म देखने आये 1-1/2 [डेढ] दिन रहे। त्रिपाठी दिल्ली गये। सहाय प्रयाग। मेरी पाडुलिपि भी ले गये— 'अनहारी हरियाली' की।

कसरत मै नही करता—इसके एवज मे हाथ-पैर से उतना ही काम कर लेता हू।

क्या महाराष्ट्र— क्या कश्मीर क्या पजाब— क्या उत्तर पूर्व —मे हिसा-हत्या बद नही हुई। दिन-पर-दिन आतक वृद्धि पर है। पता नही कब स्थिति सुधार पर होगी।

गरमी पडने लगी है। दिल्ली भी गरम होगी ही। अपनी तबियत का हाल लिखना अवश्य। मद्रास से बहू + पोते २३/४ को बादा आयेगे। सबको यथा-योग्य।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

---

1. कवि, अनुवादक, । [प्र० वि०]

नयी दिल्ली-१८
२५-४-९०

प्रिय केदार,

तुम्हारा १३/४ का कार्ड मिल गया था। दर्द नहीं है, जान कर खुशी हुई। 'दैनिक काम कुछ कर ही लेता हूं' –इसमें किताबो की धूल झाड़ना जरूर शामिल हो गा। वह अपने में बहुत अच्छी कसरत है। शिवकुमार सहाय और अशोक त्रिपाठी तुम्हें देखने आये थे और नया कविता संग्रह ले गये, यह अच्छा समाचार है। आशा है अगले साल पहली अप्रैल तक निकल जाये गा। उस समय मेरे साथ तुम्हारा पत्र-व्यवहार छप जाये तो कैसा रहे ? अपनी और तुम्हारी चिट्ठियां क्रम से लगा कर जेरोक्स करा ले गे। निराला जी पर पुस्तक लिखते समय, जो चिट्ठियां मैंने तुम्हें लिखी थी, मँगवा ली थीं। उसके बाद की चिट्ठियो को जेरोक्स कराके सीधे इलाहाबाद भेज देना या चिट्ठिया मेरे पास भेज देना। एक भूमिका लि. . . गे, जहा आवश्यक हो गा, टिप्पणिया दे दे गे। वहा वे लोगो सारी सामग्री टाइप करा ले गे। अशोक तुम्हारी हस्तलिपि पढने के आदी है। प्रेस कापी तैयार करने मे उन्हे कठिनाई न हो गी। इस सम्बन्ध मे चाहो तो तुम शिवकुमार सहाय को लिखना या फिर हम लिख दें गे। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। बहू पोते आ गये हो गे।

सबको स्नेह —
रा० वि०

केदार नाथ अग्रवाल
एडवोकेट

सिविल लान्इस
बांदा (उ० प्र०)
PIN 210001
दिनांक ५-५-९०

प्रिय डाक्टर,

—२५/४ का पत्र मिला।

–पत्र व्यवहार छप जाये तो ठीक ही रहेगा। लोग मुझे और घूर-घूर कर देखने लगेगे। अभी ही कुछ नासमझ लोग नकारने पर तुले है। कोई कुछ कहे—करे मुझे ढकेल कर गिरा नही सकता। कविता मुझे सिर पर चढ़ाये –उठाये-उठाये —लोक चेतना में ले गई है। मै खूब खिलखिला रहा हूं। नकारने वालो को ठेंगा दिखा रहा हूं। भले मानस, कुछ भी सोचते-समझते नही। अच्छी कविताओ की पहचान नही कर पाते। उनका दोष नहीं, उनकी 'अकल' कही घास चरने चली गई है और पगुरा रही है और बँबा रही है। खैर। लिखना न चाहिए था –ऐसा लिख दिया कि तुमसे क्या छिपाना।

(७१) मैं ये चिट्ठियां तुम्हारे पास भेजा रहा हूं। जो चाहो करो। मेरे बस की बात नही है। घर से बाहर निकलता नहीं। जेरोक्स क्या कराऊगा ? अब तुम सहाय साहब को भेजो या न भेजो। तुम्हारी मरजी। भूमिका अवश्य लिखना। टिप्पणियां भी दे देना।

बहुत खोजा —खखोया तब इतने पत्र मिले। न जाने कहा-कहां किस लिफाफे, फाइल में खोये पड़े थे तुम्हारे पत्र। अब और मेरे पास नही हैं।

बहू ज्योति और विशाल—आकाश और समीर (पोते) यहां २४/४ को दोपहर झासी होते हुए आ गये। ७/५ को सबेरे ३ या ४ बजे कानपुर जायेंगे —फिर वहां रह कर —इलाहाबाद— वहां बहू की दो बहनें हैं। ठीक हैं। समय अच्छी तरह मे बीत रहा है। न बेटा आया—न बेटे का बड़ा बेटा प्रशान्त आया। मद्रास में ही व्यस्त है। एक शूटिंग में—दूसरा घर की देख-रेख में। वे भी ठीक है।

इधर डॉ० अशोक त्रिपाठी का पत्र नहीं आया—न सहाय जी का। ठीक ही होंगे।

यह पत्र-प्रकाशन की बात कैसे उठ पड़ी ? मैंने तो कल्पना भी न की थी।

सबको यथायोग्य।

आज दो दिन मे मौसम ठीक-ठाक है। गरमी की ओर मे बचा हूं। कभी-कभी कूलर चला लेता हूं: पिछले दिनो ट्यूब वेल में मोटर बिगड गई तो ८-५ दिन पानी का कष्ट रहा। अब नयी मोटर लगी तो पानी धड़ल्ले से आ रहा है।

सस्नेह तु०
केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८
प्रिय केदार, १५-५-९०

तुम्हारा ५/५ का कार्ड जोरदार और बहुत जानदार था। हमने मुंशी के यहां पारिवारिक गोष्ठी मे उसे पढ़ कर सुनाया। सब लोग खूब प्रसन्न हुए। तुम्हें खिल-खिलाते नकारने वालो को ठेगा दिखाते देख कर मन उत्साह मे भर गया। चिट्ठियां मिल गयी। पावती की सूचना तुरंत आवारा जी को भेज दी थी। अगले साल अस्सी के हो रहे हो। हमने सोचा, जन्मदिवस तक कविता संग्रह के साथ यह पत्र संग्रह भी छप जाये तो अच्छा रहे गा। यहां अजय तिवारी के साथ उनके ससुर जी आये थे। हमने उन्हे सब बातें समझा कर शिवकुमार सहाय जी को संदेशा भेजा है। अलग मे उन्हे और अशोक त्रिपाठी को पत्र भी लिखे है। चार महीने में छाप लें तो नवम्बर तक सामग्री भेज दें गे।

सस्नेह
रा० वि०

बांदा
११-६-६०
प्रिय डाक्टर,

—१५/५ का पत्र मिल गया। समाचार मालुम हुए। उत्तर देने की कोई बात नही थी। इससे अब तक पत्र न लिख सका। आज मन हुआ—तबियत कुछ ठीक है इसलिए लिख रहा हू कि स्वस्थ हू। दिन १२ बजे से ५-६ बजे शाम तक का समय काटे नही कटता। पढ नही सकता। हरूफ छोटे होते है। रोज कुछ लिखने की आदत नही है। बस ट्राजिस्टर सुनता हू सोचता हू—तख्त पर पड़ा सबको याद करता हूं—कभी-कभी तुम्हारी किताबे पढता हूं। परन्तु उदास नही होता। यह तो बुढापा है—इसे भी जी-जान मे प्यार मे जिऊगा।

आशा है कि तुम ठीक होओगे। गरमी तो वहा भी फुफकार छोडती होगी। घर मे सबको मेरा यथायोग्य। प्रिय मुशी को तथा उनके परिवार के सदस्यो को मेरा [मेरा] किसानी 'राम राम'।

—डा० अशोक त्रिपाठी का पत्र पहले आया था—तुम्हे भी उन्होने पत्र लिखा था।

सस्नेह तु० केदार।

नयी दिल्ली-१८
१०-७-६०

प्रिय केदार,

तुम्हारा ११/६ का कार्ड यथासमय मिल गया था। मंत्री के प्रति आत्माराम के पैर की हड्डी मे घाव है। पिछले महीने यहा डाक्टर को दिखाया था। दवा लिख दी थी। चले गये थे। किंतु फिर आना पडा। ७ जुलाई को आपरेशन हुआ १६/७ को टाके कटे गे, अभी सेवा और भुवन यही है। 'सचेतक' ने अपने जीवन के दस वर्ष पूरे किये। नया अंक विशेषाक हो गा। उसके सम्पादन का काम आज पूरा हो गया। कल दूरदर्शन वाले आये थे। भेंट वार्ता रिकार्ड कर ले गये। कहते थे, २०/७ की शाम को पत्रिका मे प्रसारित करे गे। तुम्हारे नाम मेरी काफी चिट्ठिया अशोक त्रिपाठी के पास थी। उनकी फोटो प्रतिलिपिया उन्होने भेज दी है। शिव कुमार सहाय का पत्र आया है। वादा किया है कि तुम्हारे जन्म दिन तक पत्र सग्रह निकाल दे गे। अजय तिवारी पहले से अच्छे है। आज क्षिप्रा के साथ आये थे। ऋग्वेद वाली पुस्तक का काम रुक गया था। कल से फिर शुरू करू गा। यहा पानी बरसा है। पूर्वी क्षेत्र मे तो बाढ आ रही है। बादा का मौसम भी बदला हो गा।

सस्नेह
रामविलास

बादा (उ० प्र०) PIN 210001
दि० १३-११-६०
डियर,

तीन पोस्टकार्ड भेजे—किसी का भी उत्तर नही।

—हे मौन व्रतधारी महाराज अब तो बोलो, हे महावीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवारि सुमति के सगी। अब तो हमारी कुमति हरो और अपनी सुमति का परिचय दो। हमने इस बुढापे मे अब हनुमान चलीसा का पाठ किया और जोर-जोर से कहा : जय जय जय हनुमान गोसाई - कृपा करहु गुरुदेव की नाई। 'जो यह पढे हनुमान चलीसा। होय सिद्ध साखी गौरीशा'— पर हम न सिद्ध कर सके अपनी साधना—क्या करे कुछ समझ मे नही आता। हमारी तो अनहारी हरियाली हार मान गई तुमसे।

कुछ तो लिखो—क्या क्या लिख डाला हम भी जाने। खुशी होगी।

हम तो अकेले पडे मच्छर मारते है। बहुत हो गये है। कभी कभार लिख लेते है। आखे अधिक पढ़ने पर कष्ट देती है।

आजकल हमारे आगन मे बुलबुले आने लगी है पानी पीती है फुर्र से उड़ जाती है। हम देख कर जी भर लेते है।

आशा है कि घर मे सब स्वस्थ और प्रसन्न होगे।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८
१६-११-६०

प्रिय केदार

१३-११ का कार्ड मिला। पढ कर आनद आ गया। तुम्हारी लिखावट पहले से ज्यादा सधी हुई दिखाई दी। फिर तुम्हे हनुमान चालीसा पढ़ते देख कर तुम्हारे मन की उमग की कल्पना करके हमारी बाछे खिल गयी, (बाछे क्या होती है?) तुम्हारे तीन कार्ड हमे नही मिले। पिछले दिनो आरक्षण विरोधी अभियान के समय यहा डाक की गडबडी रही है। तीन दिनो मे मिलने वाले पत्र पन्द्रह दिनों में मिले और कुछ मिले ही नही। इन्ही के साथ तुम्हारे तीनो कार्ड भी शहीद हो गये। क्या-क्या लिखा, इसके बारे मे आगे कभी लिखे गे। इस समय वामपक्ष के बारे मे जो हम सोच रहे है वह लिखते है। सारा वामपक्ष लोहियावादी हो गया है। सामाजिक न्याय वर्गों के आधार पर नही, जाति-बिरादरी के आधार पर देना है। इसलिए वी० वी० सिंह को समर्थन देना ठीक। यदि बी० जे० पी० वी० पी० सिंह का समर्थन करे तो ठीक, यदि कांग्रेस चद्रशेखर का समर्थन करे तो गलत। इस समय

अमरीका ने लाखों सैनिक सऊदी अरब में जमा किए हैं। उधर अच्छी फसल के बावजूद रूस में अकाल पड़ रहा है। अमरीका और उसके पिट्ठुओ के हौसले बुलंद हैं। सब लोग यहां ठीक हैं।

सस्नेह—रामविलास

नयी दिल्ली-१८
२६-११-९०

प्रिय केदार,

कल विजय ने 'हिंदू' में पढ़ कर सुनाया, तुम्हे म०प्र० सरकार का मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार मिला है। बहरे सुनने लगे, अंधे देखने लगे हार्दिक बधाई।

एक प्रकाशक हमारे राजनीतिक निबंध छाप रहा है। उस संकलन के लिए हमने एक नया निबंध लिखा है: 'स्वाधीनता आन्दोलन की गदर परम्परा और स्वदशी।' इसमे गदर से ले कर गांधी जी तक स्वदेशी आन्दोलन की रूप रेखा है तथा वर्तमान परिस्थितियों में उसकी प्रासंगिकता का विवेचन है। आरक्षणगत जातिवाद, संप्रदायवाद और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियो पर भी कुछ बाते कही हैं। राजपाल एण्ड सस अमृतलाल नागर की रचनावली छाप रहे हैं। उसकी भूमिका लिखनी है। आधी लिख ली है। दो एक अच्छी पुस्तके दर्शन और पुरातत्व की मिल गयी। उन्हे पढ़ कर टिप्पणी लिख रहा हूं। उसे इतिहास-दर्शन पुस्तक में शामिल कर लूंगा। लगता है, राजीव गाधी के दबाव से सरकार की पजाब संबंधी नीति बदली है।

शेष कुशल / सस्नेह
रामविलास

बांदा 1-12-90/PIN 210001

प्रिय डाक्टर,

—तुम्हारा एक पत्र 16/11 का और दूसरा 26/11 का मुझे मिला।

—तुम ठीक हो। काम कर रहे हो। यह जान कर बेहद खुशी हुई। मै तो तुम्हारे मौन से त्रस्त हो गया था। अब पत्र पा कर खिल उठा कि तुम न रुष्ट हो, न उदासीन। तुम्हे मेरा ध्यान सदैव बना रहता है। डियर, यही तो मेरे जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है कि मैं तुम्हे पा सका और आदमी बन सका। न भ्रष्ट हो सका— न गर्त मे गिर सका। तुम्हारी पुस्तके समय-समय पर फिर-फिर यहां-वहां से पढ़ लिया करता हूं और भ्रम और भटकाव से बचा रहता हूं।

—पुरस्कार की तुम्हारी बधाई भी बेहद प्यारी रही और हृदय को झनझना

गई। वैसे मुझे किसी सम्मान या पुरस्कार की लालसा कभी नहीं रही। मेरे पास तो तुम हो। यही मेरे जीवन का लक्ष्य था—मैंने पा लिया है।

हां, जो पुस्तकें तुम प्रकाशित करो उनकी एक-एक प्रति अवश्य भेजवाना। पढ़ूंगा ही। अपनी मानसिकता सुधारूंगा ही। सब को यथायोग्य। मुशी को भी नमस्कार कहना।

सस्नेह तु० केदारनाथ अग्रवाल

नयी दिल्ली-१८
७-२-९१

प्रिय केदार,

नये साल का पहला महीना बीत गया। तुम्हारा कोई समाचार नहीं। हमने पिछले साल २६/१२ को तुम्हें पत्र लिखा था, वह तुम्हें मिला या नही ? हम ठीक हैं। 'नव जागरण की परंपराएं और क्रांतिकारी आंदोलन' लेख पूरा किया है। पलासो के युद्ध के बाद बंगाल में दुर्भिक्ष, सन्यासी विद्रोह, वन्देमातरम् का गीत और आनंदमठ यह एक परंपरा है। गुजरात में बाघेर जनजाति ने १८५७-५९ में अंग्रेजों से युद्ध किया। स्वामी दयानद इससे परिचित थे और सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने बड़े शानदार ढंग से बाघेरों की वीरता का उल्लेख किया है। रामप्रसाद बिस्मिल तो आर्य समाजी थे ही भगतसिह के बाबा भी आर्य समाजी थे। १६/२ को जयपुर जाने का प्रोग्राम है। २३/२ तक लौटेंगे, और सब ठीक है। अपना समाचार लिखो।

सस्नेह
रामविलास

बांदा—(उ० प्र०) PIN 210001
दि० १२-२-९१

प्रिय डाक्टर,

— ७/२ का पोस्टकार्ड आज मिला।

—तुम्हारा पहले वाला पत्र मिला था। मैने उत्तर भी दे दिया था। पता नहीं वह क्यों तुम्हें न मिल सका। वैसे कोई खास बात नहीं थी उस पत्र में। नये साल का आना क्या हुआ कि खाड़ी युद्ध शुरू कर दिया मिस्टर 'झाड़ी'[1] ने। इतना भयंकर 'खूंखार' आक्रमण तो वियतनाम में भी न हुआ था। उफ़ ! इतनी

1 अमेरिकी राष्ट्रपति बुश का हिन्दी अनुवाद। [अ० वि०]

बमबाजी -- इतना संहार किसी भी तरह से न्याय संगत नही है। अमरीकी शासनाध्यक्ष तो यमराज हो गया है।

तुमने अपना लेख पूरा किया पढ़ कर प्रसन्न हुआ। छपेगा कब तक ?

-- तुम १६/२ को जयपुर जा रहे हो। वहां सबको मेरी शुभ कामनाए देना। बहुत याद आना है मुझे जयपुर। लौटने के बाद तो पत्र लिखोगे ही। वहां से भी एक पत्र डाल देना।

यहां १५/२ को श्री विश्वम्भर नाथ उपाध्याय आ कर मुझसे मिलते हुए चित्रकूट जायेंगे।

—मैं ठीक ही हूं। कभी-कभी पढ़ने में दिक्कत बहुत होती है।

सस्नेह तु० केदार

नयी दिल्ली-१८

२८-२-९१

प्रिय केदार,

तुम्हारा १२/२ का कार्ड मिला। इससे पहले वाला पत्र डाक की गड़बड़ी मे नही मिला, इसका दुःख है। खैर, तुम्हें तस्वीरे मिल गयी थी, यह प्रसन्नता की बात है। राजनीतिक निबंधों का एक संकलन छपने वाला है उसी मे लेख आयेगा। हां, नये साल के साथ खाडी युद्ध आया। तैयारी तो अमरीकी इजारेदार बहुत दिन से कर रहे थे। कोरिया के युद्ध मे चीनी लड़े, वियतनाम में अकेले वियतनामी लड़े, पर समाजवादी देशों से उन्हें मदद मिलती रही थी। इस समय समाजवादी देश मार्केट इकॉनामी के निर्माण में लगे हैं। इराकी अकेले पड़ गये है। फिर भी लड़ रहे है। कोरिया - वियतनाम--इराक की लड़ाइयां एक ही शृंखला की कड़िया है। अमरीकी साम्राज्यवाद जितना ही विश्व प्रभुत्व की ओर बढ़ता है, उतना ही विश्व जनता से उसका अंतर्विरोध बढ़ता है। हार आखिर में उसी की होगी। पाकिस्तानियों ने बड़ा ज़ोर लगाया, पर काबुल सरकार को गिरा न पाये। रूस में अभी मार्क्सवादी हैं। सही नीति के लिए वे भी लड़ रहे है। बेशक अभी कम्युनिस्ट विरोधियों का पलड़ा भारी है।

और सब ठीक है।

सस्नेह रा० वि०

बांदा (उ० प्र०)/PIN 210001
दि० १४-३-६१
प्रिय डाक्टर,

—२६/२ का पोस्ट कार्ड मिला।

—खाडी युद्ध खा गया आदमियो को। ध्वस कर धरती का तेलक्षेत्र, अमरीका ने अपना नरसहारी रूप प्रकट कर दिया और अब तो दुष्टो का सरदार बन कर विश्व को हथिया रहा है। मुझे तो शुरू से इसके शासनाध्यक्षो से घृणा रही है। 'झाडी' ने हद कर दी। हवाई बमबारी मे तबाही ला दी। उधर गोर्बाचोव पर आफत आये दिन मडराती है। वाह रे वहा के उद्दड निवासी जो सो० स० छोड कर अपना स्वतत्र राज्य बनाना चाहते है। भला कहा रह पायेगे ये अकेले पड गये लोग ? वह भी विदेशी पेट मे एक-न-एक दिन समा जायेगे।

पर द्वन्द्व तो निरतर चलता ही रहेगा। कभी कम या ज्यादा क्या कोई भी सिद्धात न जी सकेगा—न जिला सकेगा ? वाह रे आदमी। वाह रे पेट-पूजा —वाहरे व्यक्ति स्वातत्र्य ? राम बचाये हमको इस बीमारी से। जब तक जिये उन्नत मस्तक सत्यार्थी रह कर जिये।

ठीक हू। पर ढलता सूर्य हू। देखो कब तक टिका रहता हू। जीने की लालसा और समाज का अनुराग बरकरार है। सबको यथायोग्य।

सस्नेह केदार

पुनश्च—

कल नया 'सचेतक' मिला—पढ डाला पूरा—केदार

नयी दिल्ली-१८
२५-३-६१

प्रिय केदार,

पहली अप्रैल जिदाबाद ! अशोक त्रिपाठी ने लिखा है कि उस दिन वह बादा पहुचे गे। उनके साथ कुछ लोग अवश्य आये गे। बादा के मित्र भी इकट्ठे हो गे। आशा है। दिन अच्छा बीते गा। हम उस दिन स्वाति के पास जयपुर मे हो गे। और तुम्हे याद करके मिठाई खाये गे। २७/३ को चिन्मय यहा आ रहे है। ३१/३ को हम उनके साथ जाये गे, दस बारह दिन मे लौट आये गे। तुम्हारा १४/३ का कार्ड मिला। सोवियत सघ मे गोर्बाचेव गणतत्रो की आर्थिक स्वाधीनता का समर्थन करते है। उनकी अलग अलग कम्युनिस्ट पार्टिया बनाने का समर्थन करते है—सोवियत पार्टी मे पृथक रूस ने अपनी पार्टी बना ली है। सोवियत पार्टी अब अनेक कम्युनिस्ट पार्टियो का ढीला ढाला सघ रह गयी है। इसी तरह सोवियत

संघ गणतन्त्रो का ढीला ढाला सघ है। जो चाहे रहे, जो चाहे न रहे। योजनाबद्ध विकास का सबसे ज्यादा विरोध गोर्बाचेव करते है। २७ वी और २८ वी पार्टी काग्रेसो मे गोर्वाचेव की रिपोर्टो मे जमीन आसमान का फर्क है। एक मे समाजवाद है, दूसरी मे उसकी शव यात्रा।

सस्नेह रामविलास

बादा / 25-4-91/210001

प्रिय डाक्टर,

—मद्रास मे मेरी बहू ज्योति और मेरा पोता समीर हवाई जहाज से बादा आये।

—खजुराहो तक प्लेन मे— फिर वहा से यहा तक भतीजे की कार मे। १० दिन रहे। आज सवेरे ४ बजे की ट्रेन मे दोनो कानपुर गये। वहा ज्योति की बडी बहन तिलक नगर मे रहती है। परसो दोसा बनाया खिलाया, इडली भी खाई। साभर भी बना। स्वाद से खाया। मौसम गरम है। बिजली कभी कभी दगा दे जाती है। पर आ जाती है। कूलर जल गया था। सात दिन बाद कूलर बन कर लग गया। अब चलाऊगा। वैसे मै कम ही चलाता हू। ठीक हू।

— इधर पहली अप्रैल को जन्म दिन मनाया गया। इलाहाबाद मे दूधनाथ सिह आ गये थे - प्रकाशक और डा० अशोक त्रिपाठी। रात ग्यारह बजे तक कार्यक्रम चला। ठीक रहा। मना किया था पर यहा के मित्र न माने। फिर १४/४ को दूसरा कार्यक्रम रहा। तीन मत्र मे डा० कमला प्रसाद, डा० मोहन अवस्थी आये थे। पाठशाला मे यह कार्यक्रम हुआ डा० द्विवेदी उरई से आये थे। चर्चा होती रही। हा यहा के जडिया ने गीत शास्त्रीय स्वर मे गाया —'मै घूमूगा केन किनारे'। बडा बढिया गायन हुआ। मुग्ध हो गये लोग। मै भी गदगद हो गया। आशा है कि सपरिवार सकुशल होओगे। मुन्नी की याद आती है। कह देना।

तु० केदार

'मित्र संवाद' से गुजरते हुए

भूमिका मे रामविलासजी ने लिखा है 'प्रेस के लिए पत्र संग्रह की कापी तैयार करने की जिम्मेदारी उनकी [अशोक त्रिपाठी की] है। यह काम आसान नही है।'

मुझे लिखे हुए अपने १८-७-९१ के पत्र में लिखते है —'पत्र संग्रह के साथ तुम जो परिश्रम कर रहे हो, पत्र पढ़ते समय तुम्हारी जो प्रतिक्रिया हुई, उस पर अपना वक्तव्य पुस्तक में दे दो।'

सबसे पहले 'यह काम आसान नही है' का खुलासा।

'यह काम आसान नही है।' -पढ़कर शुरू में लगा कि रामविलासजी इमे शायद औपचारिक स्नेहवश लिख गये होगे। यह कौन-सा मुश्किल काम है! पर ज्यों ही पत्र मैंने प्रेम को दिखाये, मुश्किल शुरू! प्रेस ने कहा कि इसे टाइप करा के दीजिए। मैंने कहा—आप ही व्यवस्था करा दीजिए। उन्होने हामी भरी और हम निश्चिन्त हो गए। पत्र लेकर मै चला आया और प्रेस-कॉपी की जगह टंकण-कॉपी तैयार करने में लगा। जो पत्र लेटरहेड और अंतर्देशीय या सादे कागज पर थे, उन्हे तो वैसे ही तिथि-क्रम मे संवाद-शैली मे सयोजित किया, पर जो पोस्टकार्ड पर थे, उन्हें अलग-अलग सादे कागज पर इस तरह चस्पा किया कि इबारत भी खराब न हो और वे दोनो तरफ पढ़ लिए जायँ।

टंकण-कापी प्रेस मालिक श्री मिश्रीलाल शर्मा को दी गयी। उनके टंकणकर्त्ता ने माफी मांग ली। कहा—मेरे बूते का नही है, इसे टाइप करना। मिश्रीलालजी के सुपुत्र रमेशजी ने कहा मैं इसे सीधे कम्पोज कराता हूँ। मैं बड़ा खुश हुआ — सोचा एक बार के संशोधन की मेहनत से निजात मिली। प्रूफ आया। पूरा प्रूफ संशोधन से भर गया—तिल रखने को भी जगह न बची— फिर भी कुछ संशोधन अंकित होने से वंचित रह गये। प्रूफ प्रेस गया। कम्पोजीटरों ने भी तोबा कर ली— टंकित कराये बिना काम नही होगा। कुछ टंकणकर्त्ताओं से बात की—उन्होने भी कापी देखकर पनाह मांग ली। अन्त मे मेरे मित्र सोमदत्त शर्मा ने बाँह गही और मुझे उबार लिया—आभारी होना ही पड़ेगा। उन्होने अपने प्रभाव से एक टाइपिस्ट को तैयार किया। बेचारा तैयार तो हो गया पर परिणाम वही—'नौ दिन चले अढाई कोस'- दिन-भर में ८-१० पेज से ज्यादा नही कर पाता था। मैं अपने को बड़ा तीसमारखाँ समझता था और टाइपिस्ट पर खीझ रहा था पर कुछ कहने की हिम्मत नहीं कर रहा था कि कही उसने भी मना कर दिया तो, सारी प्रेस-कॉपी मुझे हाथ मे लिखनी पड़ेगी—पुस्तक तो छपनी ही थी। लेकिन जब संशोधन

करने बैठा तो रात को डेढ़-दो बजे तक संशोधन करता और जब पेज गिनता ७-८ पृष्ठ से अधिक नहीं हो पाता था--दिन में चाकरी करता था। रात में ही काम कर पाता था। छुट्टियों में बहुत किचकिचाता था तो २०-२२ पृष्ठ निकाल पाता था। कारण यह था कि दोनों मित्रों की 'लिखावट' की जो अपनी 'विशेषताएँ' हैं, [केदारजी की हिन्दी-अंग्रेजी दोनों की और रामविलासजी की अंग्रेजी की] वही अक्सर मुझे ललकार देती थीं --और मै उन्हें अनसुनी न कर देने के लिए बाध्य था। एक-एक शब्दों को लेकर घंटों सिर खुजलाना पड़ता था-- अंग्रेजी शब्दों के लिए शब्दकोश छानना पड़ता था [इसी काम के लिए मैंने आक्सफोर्ड डिक्शनरी खरीदी]। इस पर भी जब वे ललकारते ही रहते थे तो फिर रामविलासजी की शरण में जाता था। उन्हें पत्र लिखता था। वह तुरंत पत्र से मेरी पीठ थपथपाते हुए, उबार लेते थे। उन्होंने मुझ नौसिखिये को समुद्र में तैरने के लिए फेंक तो दिया था पर कगार पर खड़े रहकर बराबर कनखियों से ताकते रहते थे कि अगर कहीं डूबने लगँ तो उबार लें। उनके निर्देशों का अनुपालन करते हुए, समुद्र पार तो कर गया हूँ, पर खूबसूरती से तैर कर या यूँ ही हाथ-पाँव चलाकर, यह तो रामविलासजी और इस पत्र के सुधी पाठक ही बता सकते हैं; क्योंकि मेरी अपनी समझ की सीमाएँ भी तो हैं।

अब मेरी 'प्रतिक्रिया' !

'मित्र संवाद' की प्रेस कापी तैयार करने से लेकर मुद्रणादेश देने तक इन पत्रों को कम-से-कम साढ़े तीन बार मैंने पढ़ा है। एक बार टंकित प्रतियाँ संशोधित करते समय, दो बार प्रूफ संशोधित करते समय और आधी बार इन पत्रों को टंकण के लिए टंकण-कॉपी तैयार करते समय। पत्रों को संवाद-शैली में तिथिवार संयोजित करते समय अक्सर पत्रों को पढ़ने का लोभ संवरण नहीं कर पाता था। मैं बार-बार अपने को सचेत करता था [क्योंकि समय कम था और एक निश्चित समय-सीमा के अन्दर ही काम पूरा होना था] पर अपने को रोक नहीं पाता था--मैं क्या करता, ये पत्र ही इतने दिलचस्प हैं। इन पत्रों में मुझे एक नये केदारजी और नये रामविलासजी दिखाई पड़ रहे थे-- अपने लेखन से अधिक खुले हुए, अनौपचारिक सहज और प्राणवंत, निजी-पारिवारिक जिंदगी के इन्द्रधनुषी रंगों के साथ दमदमाते हुए, सुख-दुख, हर्ष-विषाद की धूपछाँही मे सीना तानकर खिलखिलाते हुए—दुख और विषाद को ठेंगा दिखाकर महाकाल को डपटते हुए, मस्ती से रूट मार्च करते हुए।

'मित्र संवाद' के पत्र महज पत्र नहीं हैं--आज के युग के लिए दुर्लभ, अकुंठ और अनाविल मैत्री के जीवंत दस्तावेज़ हैं। इन पत्रों से गुजरना मेरे लिए ब्राह्ममुहूर्त की, फूलों की ताजी खुशबू से भरी, विलबित लय में चलने वाली बयार से गुजरना था। छप्पन वर्षों की परवान चढ़ती मैत्री, हर सोपान पर एक प्रीति-

कर ताजगी से उत्फुल्ल कर देती थी—अन्दर तक सराबोर हो जाता था। पत्र पढ़ते-पढ़ते भावोद्रेक में गला रुँधा है, आँखों में पानी की चादर बुन उठी है और अक्सर कब होठों पर मुस्कराहट खेल गयी --पता ही नही चला।

दोनों मित्र-पुरुषों में एक-दूसरे के प्रति इतना गहन अपनाया, एक-दूसरे की एक-एक साँस की अनुभूति करना, मन की आँखों से हर क्रियाकलाप पर नजर रखना, एक के मन में क्या हो रहा है, बिना कहे ही उसे सुनते रहना, एक की चोट पर दूसरे को उसकी पीड़ा होना, एक-दूसरे के खाने-पीने, सोने-जागने, उठने-बैठने, घूमने-टहलने, रोजी-रोजगार, दवा-दारू, लिखने-पढ़ने, आने-जाने, परिवार के सभी सदस्यों, मित्रों के बारे में लगातार सरोकार रखना, एक-दूसरे की उपलब्धि को अपनी ही उपलब्धि मानना—आज व्यवहार में कहाँ मिलेगा इस लेन-देन वाली संस्कृति में! कुछ उद्धरण देने का मोह मैं छोड़ नहीं पा रहा हूँ—मालकिन [रामविलासजी की पत्नी] को चोट लगने पर केदारजी लिखते हैं—'मालकिन को चोट आई। हमें भी दर्द हुआ।' [८-४-७४]

रामविलासजी के हाथ में फ्रैक्चर होने की सूचना अखबार में पढ़कर केदारजी तड़फड़ा जाते है। न पहुँच पाने की बेबसी पर खीझते हुए लिखते है—'न पहुंचने पर भी तुम्हारे पास हूं। तुम्हें देख रहा हूं। तुम रात को सो रहे हो, मैं आंखें खोल-खोल कर तुम्हारे हृदय की धड़कने और उस घायल हृदय की दृढ़ता को देख-सुन रहा हूं। यह न समझो कि कान ही सुनते है। आंखें भी ऐसे क्षणों मे सुनने लगती है। कान तो दिन-भर के कोलाहल से सुन्न पड जाते है। तुम हंस भी रहे हो। यही जानदार आदमी की सबसे बड़ी पहचान है; तुम मेरी तरह रो नही देते—जरूर कहीं-न-कहीं मेरे दिल पर आक्रांत हो कर बैठ गया है और अपनी (दिल की) स्थिरता गवां चुका है। सब घर के लोग परेशान होंगे, व्याकुल होंगे। वह बड़ा घर जैसे स्वयं पट्टी बांधे पड़ा होगा।' (१७-३-६३)

डाक से 'निराला की साहित्य साधना' पाने पर, केदारजी की आत्म-विभोरता—'देखा मेज पर 'निराला की साहित्य साधना' रखी है। बड़ी देर तक बार-बार आदि से अंत तक पन्ने खोल-खोल कर देखता रहा—न जाने क्यों पढ़ कुछ न सका। इतना भावोद्रेक हो गया कि सिवाय मुग्ध होने के कुछ न कर सका। मैं पुस्तक तो इस उद्रेक के कम होने पर पढ़ूंगा ही। अभी तो इसे रात-भर बार-बार छुऊंगा-देखूंगा-पलटूंगा और उसी तरह सूंघूंगा जैसे कोई अपने लगाए पेड़ के बेले के फूलों को सूंघता है। बड़ी महक मारते हैं। खुश हूं।···यकीन जानो कि मेरी मनोदशा इस समय वैसी ही है, जैसी एक मां की होती है, जिसने पुत्र को अभी-अभी जन्म दिया है और मुह देख कर बार-बार चूम लेती है। हालांकि तुमने जनम दिया है; इस पुस्तक को। क्या खूब हूं कि ममता उमड़ पड़ी है।'
[१-३-६९]

हमारी नयी पीढी इनसे क्या कुछ सबक लेकर अपने मनुष्य होने की प्रतीति करा सकेगी ?

बादा मे बैठकर केदारजी लखनऊ, आगरा, दिल्ली, बनारस मे रह रह रामविलासजी का और इन जगहो पर• रहते हुए रामविलासजी बाँदा और मद्रास मे रह रहे केदारजी का मुजरा लेते रहते है जब चाहते है दोनो मित्र अपने-अपने हृदय को एक-दूसरे की फ्रीक्वेन्सी पर समस्वरित कर लेते है और एन्टिना की दिशा घुमाकर एक-दूसरे को देख-सुन लेते है ।

स्वर्ण जयन्ती की सीमावधि पार करने वाली मैत्री की इस ऊर्ध्वमुखी यात्रा मे, सान्निध्य के अवसर विरल ही है —मैत्री की गहराई और विस्तार को देखते हुए लगभग अविश्वसनीय, लेकिन मन के स्तर पर शायद ही कोई ऐसा अभागा दिन होगा जबकि दोनो गले न मिले हो, बतियाये न हो। रामविलासजी ने कई जगह उल्लेख किया है कि जब वे लिखते है तो केदारजी बराबर उनके ध्यान मे उपस्थित रहते है । ओर केदारजी तो माला की तरह जपते ही रहते है कि 'रामविलास ने ही मुझे विवेक दिया —आदमी बनने मे मदद की' ।

ऐसा नही है कि उनकी मित्रता किसी स्वार्थ या 'परस्पर-प्रशसा' की नीति की उपज है या उसके सहारे जीवत है । इन पत्रो मे आपको इस गिजगिजे-लिजलिजेपन की हवा भी न लगेगी । रामविलासजी साफ-साफ लिखत है 'तुम मेरे कहने से कुछ लिखने लगो यह तो अन्याय हो गा, दोना क साथ । तुम अचल नही हो । मेरी राय एक दोस्त की राय है । उसे सुनो —झगडो । करो हमेशा वही जो जँचे । कलाकार की यही परख है ।' [८-१२-४३] केदारजी करते भी यही है । रामविलासजी केदारजी के हृदय मे किस ऊचाई पर विद्यमान है, हम-आप कल्पना से भी वहाँ नही पहुँच सकते, फिर भी वह रामविलासजी की हर बात को आप्त-वाक्य मानकर नही स्वीकार करते । मुक्त छद और 'उर्वशी' को लेकर दोनो मित्रो के बीच जो कटा जुज्झ हुई है और रामविलासजी का अन्त मे चाहे खीझकर या रीझकर पनाह माँगनी पडी वह इसका दिलचस्प प्रमाण है । मुक्त-छद वाली बहस तो बहुत ही दिलचस्प दौर से गुजरी, इतनी दिलचस्प कि केदारजी की मुक्त छंद के प्रति आसक्ति देखकर रामविलासजी को उन्हे एक पत्र मे 'फ्रीवर्स मेरी-जान' सम्बोधित करना पडा और 'उर्वशी' पर प्रहार-दर-प्रहार देखकर रामविलासजी ने लिखा 'उर्वशी के बारे मे तुमसे आकर ही बाते करूँगा।' [१०-५-६२]। एक बहस मे रीझते-से लगते है तो दूसरी मे खीझते-से ।

इस तरह के अनेक प्रसग है । स्वय केदारजी की कविताओ को लेकर दोनो के बीच खुलकर धर्मयुद्ध हुआ है । केदारजी की कविताओ के जितने निर्मम आलोचक रामविलासजी रहे है, उतने तो उनके ईर्ष्यालु विरोधी भी नही रहे होगे । लेकिन एक की निर्ममता के पीछे चिकित्सक की सदाशयता है तो दूसरे की निर्ममता के

पीछे परपीडक की रुग्ण तुष्टि।

दोनो मित्रो के बीच कई बार वैचारिक सघर्ष हुआ है और खूबी यह रही है कि जितना ही द्वन्द्व हुआ है, मित्रता की नीव उतनी ही पुख्ता हुई है, उसकी इमारत और बुलद हुई है। जहाँ कही मौका मिला है, एक दूसरे की जमकर खिचाई की है, ताने-मेहने भी दिये है, शिकवा-शिकायत भी की है पर अनर्धारा के रूप मे प्यार-ही-प्यार उमडता रहा है, जितनी तीखी शिकायत, उतना ही गहरा लाड, बेतकल्लुफी ऐसी कि फागुन भी शरमा जाये, बडे-बडे मुँहफट पानी भरे। गजब यह कि इन सबमे रामविलासजी चार हाथ आगे। पर एक दूसरे के प्रति सवेदनशीलता की मर्यादा यह कि क्या मजाल कि एक दूसरे की कथनी-करनी से किसी के भी मन पर 'दर्पण पर पडे साँस के निशान' जैसे दाग भी पड सके।

दोनो मित्र एक दूसरे की चिंता उसी प्रकार करते है, जैसे कि कोई मा अपने बच्चे की चिता करती है। बच्चे को छीक भर आई नही मा छटपटाने लगती है कि कैसे इसे इस तकलीफ से उबार ले —वह बच्चे की सारी पीडा अपने अन्दर भोगने लगती है। वही व्याकुलता यहाँ भी देखने को मिलती है। केदारजी को मोच आने की खबर पाते ही दिल्ली से रामविलासजी पोस्टकार्ड पर दौडे हुए आते है और दवाइयो, सुझावो, हिदायतो की झडी लगा देते है। लगता है जैसे वे केदारजी को नादान बच्चा समझते हो। एक दूसरे और एक दूसरे की पत्नी की अस्वस्थता की खबर मात्र से दोनो मित्र आकुल-व्याकुल हो जाते है और तनिक भी सुधार की खबर सुनकर आनद मे विभोर हो जाते है— दोनो ही मित्र आस्था और सघर्ष के उपासक जो है।

मा अधिक परेशान न हो, इसलिए समझदार और सवेदनशील पुत्र अपनी तकलीफ अक्सर अपनी मा से छिपाता भी है। यह प्रवृत्ति दोनो ओर दिखाई देती है। ठीक होने पर लिखते है –'तुम्हे इसलिए नही बताया कि तुम चितत होते।'

वैसे चाहे दोनो लोग महीनो पत्र न लिखे लेकिन जब किसी को किसी तकलीफ मे महसूस करते है तो तुरत पत्र लिखते है और तब तक लगातार लिखते रहते है जब तक कि आश्वस्त नही हो जाते कि अब 'सब कुछ ठीक-ठाक' है।

'मित्र सवाद' मे केदारजी के स्वर मे रामविलासजी के प्रति आश्वस्तिपरक निर्भरता का स्वर सुनाई पडता है। कुछ-कुछ उस तरह की आश्वस्ति कि जैसे कोई अपने सरपरस्त से अपने मन की शका-आशका, चिन्ता-दुश्चिन्ता आदि कहकर निश्चिन्त भाव मे हल्का हो जाता है कि मैने उन्हे बता दिया, अब वह जाने और उनका काम जाने। इस आश्वस्ति भाव की रक्षा रामविलासजी पूरे अपनापे और सम्मान मे करते है, बिना बडप्पन बघारे हुए बहुत ही सहज आत्मीयता से, प्यार से उनकी शकाओ, चिताओ का समाधान करते है। समाधान मिल जाने पर केदारजी पूरी उत्फुल्लता से, बच्चो की निश्छल ईमानदारी के साथ आभारी होते

हैं। यह आभार औपचारिकता का निर्वाह मात्र नही होता, मनुष्य होने का सहज और अनिवार्य प्रमाण होना है। बडी दुखद और चिन्ताजनक स्थिति यह है कि यह कृतज्ञता धीरे-धीरे गायब होती जा रही है और हम धीरे-धीरे मनुष्य न होने की ओर बढ रहे है।

रामविलासजी के प्रति केदारजी ने अक्सर कृतज्ञता ज्ञापित की है —अपने लेखों मे, वक्तव्यों में, साक्षात्कारो मे। पहले मैं इसे यूँ ही, मानता था। लेकिन इन पत्रों को पढने के बाद, मैं इस कृतज्ञता के मर्म को समझ सका। सचमुच जिसे कहते है अंगुली पकड़कर सिखाना, कुछ-कुछ उसी प्रकार रामविलासजी ने केदार जी की चेतना को विकसित करने के लिए, अतुल जलराशि के नीचे कविता के खिले हुए फल को हस्तगत करने के लिए, पग-पग पर स्फूलिंग की है और केदारजी ने बार-बार कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उसे आत्मसात् किया है। यह कृतज्ञता आज की काम निकालू चापलूसी का पर्याय नही है, हृदय से निकली हुई सच्ची [illegible] है। कौन करता है, किसी के लिए इतना, और कोई करे भी तो कौन कृतज्ञ होना जानता है इस व्यावसायिक संस्कृति के युग मे! आज की पीढ़ी अगर इनमे कुछ सीखना चाहेगी, तो ये पत्र उसे पूरी आत्मीयता मे सिखाएँगे।

अपनी प्रिया प्रियम्वद श्रीमती पार्वती देवी को, मद्रास के विजय नर्सिंग होम मे, महाकाल से सघर्ष करते हुए देखकर केदारजी बार-बार हिल जाते है, ऐसे में रामविलासजी लगातार पत्र मे ऐसे-ऐसे उद्धरण बराबर लिखते रहते है जिनसे मनुष्य टूटने से अपने को बचा सकता है। वह अपने विवेक मे केदारजी को बार-बार सहारा देते है, उन्हें ताकत देते है, कुछ-कुछ वैसे ही जैसे कृष्ण अर्जुन को उबारते है। यही रामविलासजी हमे यह भी बताते है कि शोक को ऊर्जा मे परिवर्तित किया जा सकता है। निराला की 'राम की शक्तिपूजा' और वाल्मीकि के 'शोक: श्लोकत्वमागत.' का हवाला देते हुए वह लिखते है —'शोक, प्रेम से अभिन्न रूप से जुडा हुआ शोक, कर्म की जबर्दश्त प्रेरणा बन सकता है।' [२३-१-८६] इसके पहले के एक पत्र मे लिखते है—'वह [कवि] परिवार का है इसके साथ वह देश का है देश का ध्यान उसे टूटने से बचाता है।" [२२-१२-८५]

ये पत्र है तो सिर्फ दो व्यक्तियो के लेकिन इनमें दुनिया-जहान की बातें मिलेगी —तटस्थता के साथ नहीं एक गहरे सरोकार के साथ। दुनिया मे क्या हो रहा है और मनुष्यता के साथ उसका कैसा रिश्ता बन रहा है—मनुष्य पर उसका क्या प्रभाव पड़ेगा, इस चिन्ता के साथ पड़ोस की घटना से लेकर विश्व के किसी भी कोने में घटने वाली घटना इन्हे उत्तेजित करती है। इन घटनाओ पर इनकी सार्थक टिप्पणियाँ है। ईराक पर अमरीका की अगुआई मे बहुराष्ट्रीय सेनाओं के आक्रमण से केदारजी के मन में अमरीका की अमानवीय चौधराहट के प्रतीक राष्ट्रपति 'बुश' के प्रति कितनी नफरत और कितना गुस्सा है इसके लिए एक

शब्द पर्याप्त है और वह है 'बुश' का हिन्दी रूपान्तर 'झाड़ी'। इस संदर्भ में केदार जी के ३-४ पत्र हैं और सबमें उन्होंने बुश को 'झाड़ी' ही कहा है। पढ़कर मजा आ गया।

वैसे तो दोनों मित्र एक दूसरे से लम्बे पत्रों की ही दरकार रखते हैं। छोटे पत्र मिलते हैं तो संतुष्ट नही होते —शिकायतें करते हैं। ये शिकायतें बडी मज़ेदार हैं। शिकायत भरे पत्र खूब गुदगुदाते हैं। भाषा को एक नयी दीप्ति देते हैं ·शैली को एक नया अंदाज। रामविलासजी कहते हैं, मुझे 'Quality' के साथ 'Quantity' भी चाहिए। लेकिन जब दोनों मित्र किसी गहन वेदना में होते है, तो पत्र तो जरूर चाहते हैं, लेकिन सिर्फ़ दो पंक्तियों का विस्तार की अपेक्षा नहीं करते।

दोनों प्रकृति के अन्यतम प्रेमी हैं। बहुत कम पत्र ऐसे हैं जिनमें मौसम का, हवा का, बादल का, वर्षा का, गर्मी का, सर्दी का, वसंत का, आस-पास के पेड़-पौधों का, फूलों का, गिलहरी का, बया का, धूप का, चांदनी का जिक्र न हो और उन पर एक संक्षिप्त लेकिन टिकाऊ टिप्पणी न हो। कुछ पत्रों में तो जिक्र से आगे जाकर सुन्दर चित्रण तक मिलता है। गेंदा दोनों को बहुत प्रिय है और सरसों तो बारहो मास दोनो के हृदय में सरसराती झूमती रहती है। मौसम की सुघड़ रगीनी दोनों को बावला बना देती है। नदियां इन्हें अंक में भरती है और समुद्र इन्हें बेसुध कर देता है। धूप तो दोनों मित्रों के प्राणों में बसती है। आगरा में जब यूक्लिप्टस के पेडो वाला मकान छोड़ना पड़ता है तो उसकी कचोट बहुत दिनो तक मन को सालती रहती है। दोनो मित्र प्रकृति की एक-एक हरकत को बड़ी पैनी निगाह से देखते है। ओस की बूदे जब पत्तों से टपकती है उस पर रामविलासजी केदारजी को लिखते है 'आम के पत्ते, पीपल के पत्ते, बरगद के पत्ते, सबसे ओस की बूदें टपकने का स्टाइल अलग-अलग था।' [१७-१२-८७]

प्रकृति की ही तरह दोनों मित्रों के मित्रगण भी इनकी जिन्दगी के अनिवार्य हिस्से है। अमृतलाल नागर, नागार्जुन, शमशेर, नरोत्तम नागर आदि इनके अनेक मित्रो को इन दोनों मित्रो के नजरिये से देखने का मजा ही कुछ और है। नागार्जुनजी के बारे में केदारजी लिखते है —उनकी घुमक्कड़ी और हर परि-स्थितियों मे रच-बस जाने को लक्ष्य करके—नागार्जुन 'हिन्दुस्तान का नकशा हो गये है। हर एक प्रदेश के अंक मे हिल रहे है।' [२-२-८३]

इन पत्रो में कब, कहाँ, कोई दुर्लभ, सटीक और सीधा लक्ष्य वेध करने वाला कोई वाक्य मिल जाएगा, कहना बड़ा मुश्किल है। भारत मे क्रांति के भविष्य को लेकर आज की क्रांतिकारी पार्टियों पर रामविलासजी की यह चपत, हमें सोचने को विवश करती है —

'भारत मे क्रांति तो होगी पर जरा देर से। क्रांतिकारी पार्टियों के केन्द्रीय दफ्तरो मे, उनके केन्द्रीय संगठनों में अंग्रेजी चलती है और अंग्रेजी के चलते मज-

दूरों की पार्टी में मजदूर कभी नेता नहीं बन सकता। सांस्कृतिक क्रांति होगी, तब हर विश्वविद्यालय में एक बड़ा ताल होगा जिसमें सैकड़ों कमल खिले होंगे। इसमें और भी देर है।' [२४-७-७८]

केदारजी मानते हैं —'क्रांति भी अतीत के अन्दर से अपनी जड़ें निकालती है और अंकुरित हो कर जो भी है उसी से शाखें फैलाती है। Con radict on के साथ ही क्रांति का सौंदर्य फूटता है —मन मोहता है।' [१२-४-७६]

उ० प्र० हिन्दी संस्थान पर रा० वि० जी का यह रद्दा बहुत सटीक है — 'हिन्दी संस्थान कोई साहित्यिक संस्था नहीं है, इससे उसके पुरस्कार का महत्व हम आर्थिक दृष्टि से आंकते हैं।' [३१-७-७८]

पाश्चात्य आलोचना पर भी उनकी यह टिप्पणी दिलचस्प है —'पाश्चात्य आलोचना जहां शास्त्र है, वहां दरिद्र है। जहां कवियों के अनुभव प्रस्तुत करती है, वहां वह मनन के योग्य है।' [६-४-७८]

पैसे का फूहड़ प्रदर्शन करने वाली दावतों पर भी एक झन्नाटेदार तमाचा— 'ब्याह बारात में जाने पर असभ्यता की नुमाइश देखने को मिलती है। जी घिनाता है, हम पैसे वाले है, हमारे ठाठ देखो, महिलाओं की चमकदार साड़ियाँ देखो, दालदा में सना पक्वान्न चखो। भीतर से सब खोखले।' [१२-१२-८८]

इसी संदर्भ मे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय पर रामविलासजी की और दिल्ली पर केदारजी की टिप्पणिया बडी झनाकेदार है।

इन टिप्पणियो की ही तरह कब कहा चुपके से कोई चीज परिभाषित हो जायेगी शायद पहले न वह जानते थे और न हम जान सकते हैं। कला की यह परिभाषा इसी तरह फूट पड़ी है —

'मौत से आदमी की कभी न खत्म होने वाली लड़ाई का नतीजा है कला। जो अशाश्वत है, उसे दूसरो के लिए अपेक्षाकृत शाश्वत बना कर छोड़ जाती है कला ---शाश्वत का चित्रण करके नही, अशाश्वत को उसी क्षण में हमेशा के लिए बंदी बना कर।' [रा० वि० १२-५-७७]

इन पत्रों में बहुत सारे संदर्भ और बहुत सारी टिप्पणियाँ ऐसी है, जिन पर इन दोनों मित्रों ने शायद यहाँ पहली और अन्तिम बार प्रस्तुत की हों। जिगर साहब की शायरी पर, उनके कुछ शेरों के साथ केदारजी का चार-चार हाथ करना एक ऐसा ही वाकया है। जिगर की शायरी को इतनी बारीकी से पहचानने और विश्लेषित करने की कोशिश, कविता की विश्लेषण शैली को एक नयी यथार्थपरक रोशनी देती है। दिलचस्प है यह लेखनुमा पत्र [४-३-६१]।

कीट्स मिल्टन्, वाल्ट ह्विटमैन, कालिदास, भवभूति, वाल्मीकि, कबीर, सूर, तुलसी आदि पर दोनों मित्रों की टिप्पणियाँ, इन कवियों की रचनाओं के कई नये आयाम उद्घाटित करती हैं। ये टिप्पणियाँ साहित्य की अनूठी निधियाँ हैं। सूर

के एक छद को लेकर दोनों मित्रो के बीच जो सवादनुमा विवाद चला, उसमे उस छद के अर्थ-दर-अर्थ खुलते गए, उसे एक नयी अर्थ-दीप्ति मिली। कबीर के दो दोहों की जो व्याख्या रामविलासजी ने की है वह कबीर को परखने की एक दूसरी ही कोशिश की ओर सकेत करती है। भवभूति के बारे मे यह कहना कि 'केवल भवभूति को पढने के लिए सस्कृत सीखनी चाहिए'—वाल्मीकि और कालिदास को ही सर्वश्रेष्ठ मानने वालो के लिए किसी चुनौती से कम नही है। इसका यह तात्पर्य कदापि नही है कि रामविलासजी वाल्मीकि या कालिदास को कमतर आँकते है। वाल्मीकि की तो वह बराबर प्रशसा करते है और कालिदास को पढने के लिए केदारजी से कहते है 'सुसरे सस्कृत पढ' ।

मै इन पत्रो के गद्य पर अपनी प्रतिक्रिया नही दर्ज कर रहा हूँ। रामविलास जी के गद्य पर केदारजी ने अपने पत्रो मे कई जगह अपनी राय जाहिर की है। मैं तब लिखूँ जब मै उससे अलग कुछ कहने की हैसियत रखूँ। केदारजी के गद्य पर स्वय रामविलासजी ने टिप्पणियाँ की है अपने पत्रो मे भी और कुछ विस्तार मे उनका खुलासा किया है अपनी भूमिका मे। लेकिन यहाँ मै केदारजी के गद्य पर, रामविलासजी की जो प्रतिक्रिया है, उस प्रतिक्रिया पर, केदारजी की जो प्रतिक्रिया है, उस बारे मे एक निवेदन जरूर करना चाहूँगा।

अपने गद्य की तारीफ केदारजी को पसन्द नही है और रामविलास जी है कि बार-बार उनके पत्रो के गद्य की तारीफ करते है। आज से नही मैत्री और पत्राचार के प्रारभिक वर्षो से ही। ३१-८-३८ के पत्र मे ही रामविलासजी केदारजी के गद्य से प्रभावित होकर इनके प्रकाशन पर बल देते है —'तुम्हारा पत्र बहुत सुन्दर था। गद्यकाव्य। गद्य पर सुन्दर आधिपत्य। बाद मे ये पत्र प्रकाशित होने चाहिए।' अपनी गद्य-प्रशसा को केदारजी अपनी कविता की उपेक्षा महसूस करते है, तभी तो एक पत्र मे लिखते है कि पता होता कि मेरे गद्य के आगे मेरी कविता को महत्त्व न मिलेगा तो मै पत्र ही नही लिखता। खैर अब तो गलती कर ही बैठे। अभी तक तो केवल रामविलासजी ही प्रशसा करते थे, अब तो अनगिनत प्रशसक हो जाएगे। एक गलती तो यह की कि पत्र लिखे —जैसा कि उन्होने खुद कहा है —और दूसरी गलती यह की कि इन पत्रो को छपने दिया —यह मै कह रहा हूँ।

कविता की प्रशसा पर खुश होना और गद्य की प्रशसा पर चिढना! आखिर क्यो? दोनो उन्ही की सतति है। मुझे लगता है चूकि केदारजी कविता के लिए हाड-तोड किस्म की मेहनत करते है, उसके लिए कलकते है, उसे बार-बार पकडने की कोशिश करते है और वह बार-बार फिसल जाती है, पकड मे कभी-कभी ही आती है—इसलिए इससे उन्हे प्यार की इन्तिहा तक प्यार है—मशक्कत से मिली है न! और गद्य! यह तो अनायास मिल गया है, इसलिए इसे वह इतना महत्त्वपूर्ण

नहीं समझ पाते। केदारजी में कविता के लिए इतनी निष्ठा, तड़प और समर्पण है कि उसके सामने प्रिया प्रियंवद तक को महत्त्व नहीं देते, और यही उन्हें अपने गद्य की प्रशंसा पर खिझवाता है। कविता लिखते समय यदि कवि-प्रिया बिना कुछ कहे भी पलंग पर आ विराजती हैं तो केदारजी कहते तो कुछ नहीं पर उन्हें नागवार ज़रूर लगता है और इसकी शिकायत, शिकायत रामविलासजी से करने में नहीं चूकते। हालाँकि एक बार मद्रास में लिखते हैं – 'अब गद्य ही गद्य दागूँगा।' पर भविष्यकाल के लिए किया गया यह संकल्प भविष्य की ही प्रतीक्षा में है।

इन दोनों मित्रों के गद्य को पढ़ने के बाद हिंदी भाषा की अभिव्यक्ति और अभिव्यंजना-क्षमता का एक नया आयाम खुलता है। जो लोग अज्ञानवश या सिर्फ चालाकीवश यह कहते है कि हिन्दी अभी समर्थ भाषा नहीं बन सकी है - उनके लिए, वैसे तो रामविलासजी का ही अकेला गद्य चुल्लू भर पानी मुहैया करा देता है -बशर्ते की उनमें तनिक भी हया बाकी हो, तो फिर दोनों की सम्मिलित गद्य-शक्ति की चकाचौंध में उनकी क्या स्थिति होनी चाहिए, कल्पना की जा सकती है।

इन पत्रों में लिखित भाषा का व्याकरण पानी भरता नजर आता है। लगता हम उन्हें पढ़ नहीं रहे है, बल्कि सुन रहे हैं। तभी तो केदारजी पत्र लिखते-लिखते चौंककर पूछ बैठते है -'सुन रहे हो न ?'

उम्र के लिहाज से वैसे तो दोनों मित्र बूढ़े हो चले है, मित्रता भी पचासा पार करके साठा के नजदीक पहुँच रही है, पर पत्रों में कहीं, इनके बुढ़ापे की झलक तक नहीं मिलती। उसमें तो यौवन की वही छलछलाती उमंग, यौवन का वही उल्लास, उत्फुल्लता, साहस जिंदादिली, संघर्ष और महाकाल को हड़काए रहने का दबंग स्वर ही गूँजता है। इन पत्रों से हम एक सार्थक और सम्पूर्ण जीवन जीने का रहस्य हस्तामलकवत् कर सकते है। जिंदादिली तो इन पत्रों का प्राण है -पढ़िये और मन ही मन गुदगुदी से भीजते रहिये।

मित्रता एक महत्त्वपूर्ण जीवन मूल्य है –इसे हम इन पत्रों से ही प्रमाणित पाते हैं। मित्रता करने के पहले हमें अपने सम्भावित मित्र की कमजोरियों से परिचित होना अनिवार्य है। अगर हम उन कमजोरियों से भी उतना ही प्यार कर सकें जितनी उसकी अच्छाइयों से तब तो हमें मित्रता का हाथ बढ़ाना चाहिए, अन्यथा हाथ खींचे रहना ही दोनों के हित में है। अपेक्षा मित्रता का दूसरा बड़ा शत्रु है। मित्रता के बीच में इसे कभी नहीं आने देना चाहिए, इसके आते ही मित्रता शत्रुता में तब्दील होने लगती है। ये सारी बातें ये पत्र हमें बताते है। इन दोनों मित्रों की मित्रता, केदारजी की कविता के शब्दों को उधार लेकर कहूँ तो कहूँगा कि 'फल के भीतर फल के पके स्वाद' की-सी तृप्ति देती है— मन मे बार-बार हुडक-सी उठती है कि काश मैं भी ऐसी मित्रता जी सकता। हम भले ही ऐसी मित्रता न जी सकें

लेकिन मैं अपने को बड़भागी मानता हूँ कि मैं ऐसी मित्रता को जीते देख रहा हूँ और उससे प्रेरित हो रहा हूँ—मनुष्य होने का और मनुष्य होकर जीने का रहस्य मेरे सामने खुल रहा है। मैं अन्दर तक मित्रता-रस से भीज और सीझ रहा हूँ।

दोनों मित्र-पुरुषों में—को बड़ छोट ? कहत अपराधू।

दोनों मित्र एक दूसरे को पाकर धन्य है और गौरवान्वित है- यह इन्ही की स्वीकारोक्ति है। मै अपने को इनमे दुगुना भाग्यवान और गौरवान्वित महसूस करता हूँ कि मुझे दोनों गौरव-पुरुषो का अकुंठ स्नेह प्राप्त है। इन्ही के साथ अगर मैं अग्रज तुल्य, इस यज्ञ के संपन्नकर्त्ता श्री शिवकुमार सहाय के स्नेह को शामिल कर लूँ तो मेरी गर्वोक्ति है कि—मो सम कौन इहाँ बड़भागी ?

'मित्र संवाद' जिन-जिनके प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोग से आप तक पहुँच सका, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित न करना मनुष्यता का अपमान करना होगा। इसके प्रकाशक सहायजी के प्रति कृतज्ञता का कोई तुक नही है क्योंकि यह सब तो उन्ही की माया है। लेकिन इसके मुद्रक शांति मुद्रणालय के रमेशजी ने जिस लगन और निष्ठा से अनेक असुविधाओं को सहते हुए इस काम को एक निश्चित समय-सीमा मे सम्पन्न किया इसके लिए निश्चय ही मै उनका आभारी हूँ। इम्पैक्ट के भाई राधेश्यामजी अग्रवाल ने इस पुस्तक के आवरण को अतिरिक्त तवज्जो देकर, अपनी कला से सजाया, सँवारा और सार्थक आकर्षण प्रदान किया—मै हृदय में कृतज्ञ हूँ।

इस पुस्तक के सम्पादन-प्रकाशन के दौरान मैं अपने कई मित्रो और संबंधियो के पत्रो का सम्मान नही कर सका -इससे उन्हें जो तकलीफ पहुँची होगी, उसके प्रति मैं क्षमा-याचना के साथ कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। पत्नी श्रीमती सावित्री, पुत्र सौरभ और पुत्रियाँ श्रुति व स्मृति के प्रति भी इधर बहुत उपेक्षा बरती है। इनको मिलने वाले समय में से कटौती की है— दशहरे के अवकाश में मेरी प्रतीक्षा ही उनके हाथ लगी— इसलिए इनका ऋणी हूँ।

अन्त मे यही मंगल कामना है कि इन दोनो श्रेष्ठ मित्र-पुरुषो की स्नेहिल छाया हम सबको आगे आने वाले अनेक वर्षो तक मिलती रहे। दोनो ही मित्रो को कर्मठ और सार्थक अस्सी वर्ष जीने के लिए हार्दिक बधाई और आशीष की आकांक्षा में विनत प्रणाम !

—अशोक त्रिपाठी